ZHUANGZI
ज्हुंग्ज्ही

Chapters	**अध्याय**
1. Free and Easy Wandering	१| सहज और सरल जीवन
2. On Leveling All Things	२| सभी वस्तुओ की एकात्मकता पर
3. The Secret Of Caring For Life	३|जीवन जीने का रहस्य
4. This Human World	४| इस मनुष्यों के संसार में
5. The Sign Of the Virtue Complete	५|सामर्थ्य के सम्पूर्ण चिन्ह
6. The Great and Venerable Teacher	६|एक महान और श्रद्धेय गुरु
7. Dealing with Emperors and Kings	७|राजाओ और सम्राटो से सरोकार
8. Webbed Toes	८|जुडी हुई उंगलिया
9. Horse's Hooves	९| अश्व खुर
10. Rifling Trunks	१०|तिजोरियो का भरना
11. Let It Be, Leave It Alone	११|जो है उसे वैसा ही रहने दो, उसे वैसा ही छोड़ दो
12. Heaven and Earth	१२|स्वर्ग और पृथ्वी
13. The Way of Heaven	१३|स्वर्ग का मार्ग
14. The Movement of the Heavens	१४|स्वर्ग की गती
15. Unalterable Opinions	१५|अटल सिद्धांत
16. Trying to Repair What's Natural	१६| उसे सुधारने का प्रयत्न करना जो प्राकृतिक है
17. The Autumn Floods	१७|वर्षाकालीन बाढे
18. Perfectly Happy	१८|पूर्ण प्रसन्नता
19. The Full Understanding of Life	१९|जीवन की पूर्ण समझ
20. The Mountain Tree	२०|पर्वतीय वृक्ष
21. Tian Zi Fang	२१|तियन जी फंग
22. Knowledge Wanders North	२२|ज्ञान की यात्रा
23. Geng Sang Chu	२३|गेंग संग छू
24. Xu Wu Gui (One Without Secrets)	२४|क्सु वू गुई (बिना रहस्यों के)
25. Peng Yang (Persistent Optimist)	२५|पेंग यंग
26. External Things	२६|बाह्य वस्तुए
27. Suggestions	२७|सुझाव
28. Handing Over Rulership	२८|साम्राज्य का आगे बढ़ाना
29. Robber Zhi	२९|डाकू जही
30. A Discussion of Swords	३०|वह तलवारों की चर्चा
31. The Old Fisherman	३१|बुढा मछुआरा
32. Lie Yu Kou (aka Liezi)	३२|लिए यु कोऊ (लिएज़ी)
33. The World	३३|यह संसार

The Old Master

Lao Tzu

Lao Tzu also known with names such as Lao-Dan, Laozi, Leizi is a sage and a philosopher who is believed to first wrote of the 'Tao'. He is best known as the reputed author of the *Tao Te Ching. Some* Other scholars feel that the Tao Te Ching, is really poems written by several Taoists using the pen-name, Lao Tzu. There is also a close association between Lao Tzu and the legendary Yellow Emperor, *Huang-Di*.

He is known as the 'Old Master' and considered as the 'Pure One'. He is also worshipped under the name "Supreme Old Lord" and treated as a deity. Laozi was said to have emerged as a grown man with a full white beard and long earlobes, both symbols of wisdom and long life.

According to legend Lao Tzu was keeper of the archives at the imperial court. When he was eighty years old he set out for the western border of China, saddened and disillusioned that men were unwilling to follow the path to natural goodness. At the border, a guard, Yin Xi (Yin Hsi), asked Lao Tzu to record his teachings before he left. He then composed in 5,000 characters the Tao Te Ching (The Way and Its Power).

Lao Tzu taught that all straining, all striving are not only vain but counterproductive. One should endeavor to do nothing . But what does this mean? It means not to literally do nothing, but to discern and follow the natural forces -- to follow and shape the flow of events and not to pit oneself against the natural order of things. First and foremost to be spontaneous in ones actions. On the other hand they believed that by doing so one could ultimately harness the powers of the universe. By 'doing nothing' one could 'accomplish everything.'

महान गुरु लाओ जी

लाओ तजु

लाओ तजु को लाओ-दान, लाओ-जि, लि-जी आदि नामो से भी जाना जाता है वो एक महान गुरु और ज्ञानी थे | उन्हें माना जाता है की उनके द्वारा पहली बार ताओ के विषय में लिखा गया है | उन्हें ताओ-ते-चिंग के लेखक के तौर पर भी अच्छी प्रकार से जाना जाता है | कुछ दुसरे विद्वान् मानते है की वास्तव में ताओ-ते-चिंग कविताएँ है जिन्हें बहुत से ताओ विद्वानों द्वारा लाओ-तजु के एक उपनाम से लिखा गया है | यहाँ पर लाओ तजु और येलो सम्राट हुंग दि के बीच भी बहुत ही गहरा संपर्क प्रतीत होता है |

उन्हें बूढ़े गुरु के नाम से भी जाना जाता है और 'तीन शुद्धो' में से एक समझा जाता है | उन्हें परम गुरु के नाम से भी जाना जाता है और देवताओं की तरह पूजा जाता है | लाओ-ज़ि के बारे में कहा जाता है की वे एक पूर्ण मनुष्य के रूप में प्रकट हुए थे जिनकी बड़ी श्वेत दाढ़ी थी और बड़े बड़े कुंडल थे, ये दोनों ही ज्ञान और दीर्घ जीवन के सूचक है |

किंवदंतियों के अनुसार लाओ-तजु शाही दरबार में अभिलेखों के नियंत्रक थे | जब वे अस्सी साल के हो गए वे चीन की पश्चिमी सीमा पर जाने के लिए निकल लिए, उदास और मोहभंग हुआ वह व्यक्ति प्राकृतिक पथ का अनुगमन करने में अनिच्छुक था तब एक द्वारपाल ने उनसे उनकी शिक्षाओं को लिखने के लिए कहा इससे पहले की वो छोड़ कर चले जाए | तब उन्होंने ५००० शब्दों वाली ताओ-ते-चिंग का निर्माण किया |

लाओ तजु ने सिखाया की सभी कठिनाईया और सभी संघर्ष सभ व्यर्थ है और एक दुसरे को जन्म देने वाले है |व्यक्ति को हमेशा निष्काम कर्म में स्थापित रहना चाहिए | लेकिन इसका क्या अर्थ था? इसका अर्थ था वस्तुतः कुछ नहीं करना, बल्कि वास्तविकता को जानना तथा प्राकृतिक प्रवाह का अनुगमन करना (नियत कार्य करना) - वह मनुष्य घटनाक्रमों के प्रवाह का अनुगमन करता है और वस्तुओ की प्राकृतिक व्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं करता है | सबसे प्रथम तथा सबसे महत्वपूर्ण हमे अपने कर्मो में सहज तथा स्वतः प्रवर्तित होना चाहिए | दूसरी तरफ वे मानते थे की इस तरह कुछ नहीं करके वे इस ब्रह्मांड की महान उर्जा का संचार कर रहे होते है | 'कुछ नहीं करके' वे 'सभ कुछ प्राप्त कर लेते है' |

Zhuang Zhou

Zhuang Zhou, often known as **Zhuangzi** ("Master Zhuang") was a great sage who is supposed to be the writer of the book ‘Zhuangzi’. The ‘*Zhuangzi’* is named for and attributed to Master Zhuang. He is a philosopher who lived around the 4th century BC during the Warring States period, a period corresponding to the summit of Chinese philosophy, the Hundred Schools of Thought.

Zhuangzi, who was born around 369 BC in the state of Song, near the borders of modern Henan and Shandong provinces, and died around 286 BC.

Almost nothing is concretely known of Zhuangzi's life. He is thought to have spent time in the southern state of Chu, as well as in Linzi, the capital of the state of Qi. It is generally agreed that in the book ‘*Zhuangzi*’ the first seven chapters, the “inner books,” are for the most part from the hand of Zhuangzi himself, whereas the “outer books” (chapters 8–22) and the miscellany (chapters 23–33) are believed to be the product of his later followers.

Zhuangzi appears as an unpredictable and eccentric sage who seems careless about personal comforts or public esteem. His clothing is shoddy and patched, and his shoes have to be tied to his feet with string in order to keep them from falling apart. Nevertheless, he does not consider himself to be miserable, only poor.

Potential officials throughout Chinese history drew on the authority of non-Confucian sages, especially Laozi and Zhuangzi, to deny serving any ruler at any time. Zhuangzi, Laozi's most famous follower in traditional accounts, had a great deal of influence on Chinese literati and culture.

Zhuangzi taught that enlightenment comes from the realization that everything is one and The Dao is limitless and words cannot describe it. He said that words are like a fish net: once the meaning is caught, one should forget the words, just as the net is only useful for catching the fish, but can be put aside once the fish has been caught. He thought that the world is flux and we must learn to adapt.

ज्होंग ज्होऊ

ज्हुंग ज्होऊ, इन्हें ज्हुंग्ज़ी (आचार्य ज्हुंग) के नाम से भी जाना जाता था, वे एक महान ज्ञानी महात्मा थे और उन्हें *ज्हुंग्ज़ी* पुस्तक का लेखक कहा जाता है | *ज्हुन्ग्ज़ी* पुस्तक का नामकरन उनके नाम से प्रभावित होकर ही किया गया है | वो एक तत्ववेता थे जो जो ४वीं सदी B.C के दौरान रहे थे (वार्रिंग स्टेट्स समय के दौरान) वह समय चीनी दर्शनशास्त्र के शिखर का समय था तथा विचारो के सैकड़ो पंथो का समय भी यही था |

ज्हुंग्ज़ी का जन्म ३६९ B.C में सोंग राज्य में हुआ था, हेनान और शांदोंग प्रान्त की सीमा के नजदीक और उनकी मृत्यु २८६ B.C में हो गयी | ज्हुंग्ज़ी के बारे में लगभग कुछ भी सही तौर पर नहीं जाना जाता है | उनके बारे में जाना जाता है की उन्होंने अपना समय छू राज्य के दक्षिणी हिस्से में बिताया था तथा कुछ समय उन्होंने 'की' राज्य की राजधानी 'लिंजी' में भी बिताया था | इस बात पर आम तौर पर विश्वास किया जाता है की *ज्हुंग्ज़ी* पुस्तक के पहले सात अध्याय स्वयं ज्हुंग्ज़ी द्वारा लिखे गए है जबकि अध्याय (८-२२) तथा बाकि मिश्रित अध्याय(२३-३३) उनके बाद में उनके अनुयायी और शिष्यों द्वारा सम्पादित है |

ज्हुंग्ज़ी एक ऐसे अप्रत्याशित और विलाक्षित महात्मा की तरह प्रतीत होते है जो निजी सुखो तथा सामाजिक प्रतिष्ठा के बारे में बेपरवाह है | उनके वस्त्र जीर्ण तथा फटे हुए होते है और उनके जुते डोर से उनके पैरो से बंधे हुए होते है ताकि वे टूट कर अलग न गिर जाए | लेकिन इसके बावजूद भी वे स्वयं को केवल दरिद्र मानते है लेकिन अभावग्रस्त कभी नहीं मानते है |

पुरे चीन के उच्च अधिकारी कोन्फुसियन को न मानने वाले साधुओ के सामर्थ्य से आकर्षित तथा प्रभावित थे, विशेषकर लाओजी और ज्हुंग्ज़ी के, उन्होंने किसी भी शासक के लिए काम करने से मन करने के कारण | ज्हुंग्ज़ी, जो की पौराणिक कथाओ में लाओजी के सबसे प्रतिष्ठित अनुयायी है उनका चीनी साहित्य तथा संस्कृति पर बहुत गहरा प्रभाव है |

ज्हुंग्ज़ी ने सिखाया की परम बोध की उत्पत्ति यह जानने से होती है की सभी वस्तुए एक है तथा ताओ असीमित है जिसकी व्याख्या शब्दों द्वारा नहीं की जा सकती है | उनका कहना था की शब्द मछली पकड़ने के जाल की तरह होते है: एक बार जब अर्थ समझ आ जाए, शब्दों को भुला देना चाहिए वैसे ही जैसे की जाल तभी महत्वपूर्ण होता है जब मछली को पकड़ना होता है और मछली को पकड़ने के बाद उसे दूर रख दिया जाता है | वे सोचते थे की यह संसार एक प्रवाह जो निरंतर प्रवाहित हो रहा है और हमे इसके अनुरूप होकर सामंजस्य स्थापित करना चाहिए |

Confucius

Confucius' family and personal name respectively was **Kong Qiu** (孔丘 *Kǒng Qiū*). His courtesy name was **Zhong Ni** (仲尼 *Zhòngní*). In Chinese, he is most often known as **Kong Zi** (孔子 Kǒng Zǐ, literally "Master Kong").
Living in the State of Lu during the Spring and Autumn Period (770 BC - 476 BC), Confucius was a great educationalist, ideologist and the founder of Confucianism and private schools in China. He was born on September, 8th, 551 BC in the state of Lu. He died in 479 BC aged 71-72 years also in the state of Lu.

His father died when he was young, and his mother brought him up under humble circumstances. Confucius founded a school of philosophy called Confucianism, which stressed ethics in personal and political life and which contended for acceptance during the era called the Hundred Schools of Philosophy in China that lasted between approximately 600 and 300 BC.

Confucius saw himself not as a reformer or innovator but as a conservator and transmitter of traditional virtues. His goal was to return China to the golden ages of antiquity, to the era of the legendary sage-kings Yao, Shun, and Yu, and more recently to the era of the wise founders of the Zhou dynasty, Kings Wen and Wu, and the Duke of Zhou. The philosophy of Confucius emphasized personal and governmental morality, correctness of social relationships. He sought government service, but with a mission, which was to reform morals and bring peace.

During his life Confucius decided to dedicate himself to serve his motherland. However, he only served the government for four years. Although he contributed greatly to the development of the country and was promoted, due to disagreements with the ruler his political career was ended. During the following fourteen years, he left his country and traveled around other countries to present his ideas to different rulers. Finally, because his ideas were not adopted, he returned home, still not recognized by the king.

Because humans are social beings living in society, Confucius inculcated the following ideals of conduct. One was li, which indicated rites, ritual, or proper good conduct under all circumstances. Another was ren (jen), which demanded love and benevolence toward all beings. They should be practiced together to achieve full meaning. Since the family is the basic unit of society, Confucius also taught the virtue of Xiao (Hsiao), or filial piety, which is the honor and respect that children owe their parents. Confucius expounded that there are five key relationships in life, as follows: between parents and children, husband and wife, elder and younger siblings, king and subjects, and friends and neighbors. Three of the five are within the family, because family is the microcosm of society, and it is in the family that the young learn their first lessons.

Confucius is traditionally credited with having authored or edited many of the Chinese classic texts including all of the Five Classics. He used most of his life to teach and help students solve problems. He himself studied hard and pursued truth, dreams and a perfect personality. He had integrity and was kind, humble, polite and faithful to his country and people. He loved education and students, and was tireless in teaching. He always treated his disciples equally. During his life about 3,000 students studied under his guidance. Due to his great reputation, many students from other countries like Qi, Chu, Wei and Jin came a long way to have him as their teacher. His students reached great achievements. In virtues, Yan Yuan and Zhong Gong, were the prominent ones; in language study, Zai Wo and Zi Gong were outstanding and in politics, Ran You and Zi Lu showed great talent. During the period of traveling in other countries, he brought his disciples. All his disciples respected him as their father and compiled his famous sayings in the book 'The Analects of Confucius'. Most of his teachings were compiled in this book. In the '*Analects*' Confucius presents himself as a "transmitter who invented nothing".

One of his teachings is stated as conversation between him and his favorite discipline Zi-Gong:

己所不欲，勿施於人。
"What you do not wish for yourself, do not do to others."
子貢問曰："有一言而可以終身行之者乎"？子曰："其恕乎！己所不欲、勿施於人。"
Zi Gong [a disciple] asked: "Is there any one word that could guide a person throughout life?"
The Master replied: "How about 'reciprocity'! Never impose on others what you would not choose for yourself."

कांफुसियस

इनका पारिवारिक नाम और पहला नाम कोंग कुई था | उनका शाही दरबार में नाम ज्होंग-नि था | और चीनी भाषा में उन्हें अधिकतर कोंग-ज़ि (आचार्य कोंग) के नाम से जाना जाता है | वसंत और पतझड़ समय (७७० B.C - ४७६ B.C) के दौरान वे लू राज्य में रहते थे, कांफुसियस एक महान शिक्षवादी, सिद्धांतकार और कांफुसियन मत के संस्थापक थे | उनका जन्म ८ सितम्बर ५५१ B.C में लू राज्य में हुआ था और उनकी मृत्यु ४७९ B.C में ७१-७२ वर्ष बुजुर्ग होकर हो गयी |

उनके पिता की मृत्यु हो गयी जब वो जवान थे और उनकी माता ने उनका लालन पोषण बहुत ही कठिन परिस्तिथियों में किया | कांफुसियस ने एक नए दार्शनिक मत की शुरुआत की जिसे कांफुसियन कहा जाता है, जो निजी तथा राजनितिक जीवन में मूल्यों पर महत्व देता है और जिसने 'विचारो के सैकड़ो पंथो' के समय में संघर्ष किया जो की करीब सन ६०० B.C से ३०० B.C तक था |

कोंफुसियस स्वयं को एक सुधारक और अन्वेषक की बजाय पारंपरिक मूल्यों का संरक्षक और उन्हें कहनेवाला (समझाने वाला) समझते थे | उनका लक्ष्य चीन को फिर से महान साधू राजा याओ, शुन और यु के स्वर्णिम दौर में ले जाने का था और इसे वे उस युग में ले जाना चाहते थे जब ज्होऊ साम्राज्य की स्थापना हुई थी राजा वें और वू तथा सम्राट ज्होऊ के द्वारा | कांफुसियस के विचार प्रकाश डालते थे निजी जीवन तथा अधिकारो की नैतिकता पर तथा समाजिक संबंधो के सही होने पर | उन्होंने अधिकारिक पद को प्राप्त किया लेकिन एक लक्ष्य के साथ की वे नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों में सुधर कर सके और शांति स्थापित कर सके |

अपने जीवन के दौरान कांफुसियस ने स्वयं को मातृभूमि की सेवा में न्योछावर कर दिया | हालाँकि उन्होंने सरकार में अपनी सेवाएँ केवल चार वर्ष के लिए प्रदान की | यद्यपि उन्होंने देश के विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया और उन्हें पदोन्नति मिली, लेकिन राजा के साथ उनके मतभेदों के कारण उनका राजनीतिक जीवन समाप्त हो गया | इससे अगले चौदह वर्ष के दौरान उन्होंने अपने देश को छोड़ दिया और बाकि राज्यों की यात्रा की अपने सिद्धांतो को विभिन्न शासको के सामने प्रस्तुत करने के लिए| आखिरकार क्योंकि उसके सिद्धांतो को स्वीकार नहीं किया गया वो वापस अपने घर लौट आये, अब भी राजा से अलग हुए |

क्योंकि मनुष्य एक समाजिक जीव है जो इस समाज में रहता है इसलिए कांफुसियस ने व्यवहार के इन विभिन्न आदर्शो को मनोगत किया | एक था 'लि' जो अनुष्ठानो, रस्मो और सभी परिस्तिथियों में अच्छे व्यवहार को बताता था | दूसरा 'रेन' था जो सभी वस्तुओ के प्रति परोपकार और धर्म को कहता था | इन दोनों का अभ्यास एक साथ करना चाहिए इनके पूर्ण अर्थ को समझने के लिए | चूँकि एक परिवार समाज की एकता का मुख्य कारण होता है इसलिए कांफुसियस ने क्सिओं के सामर्थ्य के बारे में सिखाया और आदर सम्मान के बारे में, उन्होंने कहा की हमेशा आदरभाव और सम्मान को बच्चो को अपने माता पिता के लिए रखना चाहिए | कांफुसियस ने बताया की जीवन में पांच मुख्य संबंध होते है जो की इस प्रकार है: माता पिता और बच्चो का, पति और पत्नी का, छोटे और बड़े भाई बहन का, राजा और प्रजा का, मित्रो और पड़ोसियों का | इन पांच में तीन परिवार के अन्दर है क्योंकि परिवार ही इस समाज की महत्वपूर्ण इकाई है और परिवार ही होता है जहाँ बच्चे अपना पहली सीख सीखते है |

कांफुसियस को माना जाता है की उन्होंने बहुत सारे चीनी साहित्य के ग्रंथो को लिखा है तथा सम्पादित किया है जिनमे पांच मुख्य ग्रन्थ भी शामिल है | उन्होंने अपना ज्यादातर जीवन पढ़ने और शिष्यों को परिस्तिथयो का हल निकालना सिखाने में व्यतीत किया | उन्होंने स्वयं भी कठोर अध्ययन किया और यथार्थ को जानने, अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा एक आदर्श व्यक्तित्व को पाने का प्रयत्न किया | वो इमानदार, स्त्यानिष्ट, दयालु, विनम्र तथा अपने देश तथा लोगो के प्रति इमानदार थे | वो शिक्षा तथा शिष्यों से बहुत लगाव रखते थे और पढ़ाने से उन्हें बहुत प्रेम था | उन्होंने हमेशा अपने संही शिष्यों से एक समान व्यवहार किया | अपने जीवन के दौरान उन्होंने लगभग ३००० शिष्यों का मार्गदर्शन किया | उनकी इस प्रतिष्ठा के कारण बहुत सारे शिष्य अलग अलग राज्यों जैसे की की, छू, वेई और जिन आदि से चलकर उनके पास शिक्षा प्राप्त करने के लिए आये | उनके शिष्यों ने बहुत सारी उपलब्धिया प्राप्त की | सामर्थ्य में यान-युआन और ज्होंग-गोंग संबसे उत्तम थे; भाषा साहित्य में जे-वो और ज़ि-गोंग सबसे उत्कृष्ट थे और राजनीती में रन-यू और ज़ि-लू को बहुत ही हुनर और कौशल था | दुसरे राज्यों में अपनी यात्रा के दौरान वो अपने शिष्यों को अपने साथ ले जाते थे | उनके सभी शिष्य उन्हें अपने पिता की तरह मानते थे और आदर करते थे तथा उन्होंने उनके सभी वचनों और कथनों को एक करके एक पुस्तक को लिखा जिसे 'कोंफुसियस अनालेक्ट्स' के नाम से जाना जाता है | उनकी ज्यादातर शिक्षाए इस पुस्तक में लिखी गयी है | इस पुस्तक में कांफुसियस ने स्वयं को एक ऐसे अन्वेषक के तौर पर प्रस्तुत किया है जिसने कुछ भी अविष्कार किया |

उनकी शिक्षाओं में से एक को उनके तथा उनके प्रिय शिष्य ज़ि-गोंग के बीच वार्तालाप के मध्यम से कहा गया है:

"जिसे तुम स्वयं के प्रति होने देना नहीं चाहते हो उसे दुसरो के प्रति मत करो "

ज़ि-गोंग ने पूछा :"क्या कोई एक शब्द है जो एक व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन में मार्गदर्शन कर सके ?"

आचार्य ने कहा :" पारस्परिकता के बारे में क्या विचार है! कभी भी दुसरो के लिए वह मत करो जिसे तुम अपने लिए नहीं चाहते हो |"

The Five Emperors

Huang Di (Yellow Emperor)

Of the Five Emperors, there were *Huangdi*, *Zhuan Xu*, *Yao*, *Shun*, *Yu*. Known as the Yellow Emperor, *Huangdi* was the founding ruler and primordial ancestor of the ancient Chinese. Before the Yellow Emperor, China was in chaos and the various ruling lords brought death and destruction to the people. Raising an army, the Yellow Emperor rode forth and broke the power of the lords and brought order to the realm. Having brought internal stability, the Yellow Emperor then sought to face external challenges. He fought a great battle against the barbarians to secure the Yellow river region for his people. Some legends also spoke of the *Yan* Emperor who was subdued by the Yellow Emperor as another primordial ancestor of the Chinese people. The Yellow Emperor invented the bow and arrow, boats, carts, ceramics, writing, and silk (invented by his wife).

Zhuan Xu

Of his successor, *Zhuan Xu*, little can be said except that he invented the patriarchal family institution, forbade close-kin marriages, and passed the mantel of leadership to *Yao*.

Yao

Now on examining into the ancient Emperor, *Yao*, we must say that he was vastly meritorious, reverential, and intelligent; his external accomplishments and internal reflections were easy and unconstrained; he was sincerely respectful, and capable of yielding, while his fame extended to the four distant quarters, reaching to heaven above and the earth beneath.

He was able to display superior virtue, in order to bind closer the nine degrees of kindred; the nine kindred's being rendered harmonious, he equalized and illumined the people of the Imperial domain; his own people having become intelligent, he harmonized the various states of the Empire, and the black-haired people.

Yao invented the calendar and the rituals of the ancient Chinese. Knowing that his own son was unworthy of leadership, Yao selected a virtuous and talented common man to succeed him – this was Shun. Yao spent thirty years shaping Shun into a worthy successor, entrusting him with many difficult political tasks. Finally Yao abdicated in his favor and Shun became emperor.

Shun

Shun, a poor peasant, won merit by his filial piety shown in his devotion to his blind father and evil stepmother. He married *Yao's* daughters and succeeded him. As a ruler he was known for promoting to positions of authority only people of integrity and simple conduct – fair-minded, public spirited, compassionate, wise and harmonious people. Shun was noted for his self-control and moderation.

Concerning the selection of Shun by Yao the following tale is known:
The Emperor (*Yao*) said, "Oh! you, President of the four eminences, I have now been on the throne seventy years, and since you are able to follow out my regulations, I will resign my throne to you."

The President said, "With my poor qualities, I should only disgrace the Imperial throne." The Emperor replied, "Bring to light those who are in brilliant stations, and set forth those of low rank." All the courtiers then address the Emperor saying, "There is a solitary individual, in a mean station, called *Shun* of *Yu*."

The Emperor said, "Good! I have heard of him; but how are his qualities?" The President said, He is a blind man's son, his father is stupid, and his mother insincere, while *Xiang* (his brother) is overbearing; but he has been able to harmonize them by his filial piety, so that they have gradually advanced toward self-government and have not gone to the extreme lengths of wickedness." The Emperor said, "Had I not better take him on trial! I will marry my daughters to this man, and thus observe his manner of acting with my two daughters."

Yao and Shun were greatly revered over the centuries. Unlike the others, they performed no miracles or amazing feats, but governed their people by virtue of their exemplary behavior. Both *Yao* and *Shun* were unable to prevent floods so *Shun* appointed *Yu* for his merit shown in solving the floods.

YU

Yu, known as *Yu* the Great, dredged canals to solve the flooding and these became the rivers of north China. According to records, the legendary engineer-emperor *Yu* the Great was praised for having mastered the waters and caused them to flow in great channels. He bored through mountains, turned rivers out of their courses, sank landscapes, and made fields rise above the floods. His success in solving the flooding problems was a result of cumulative experience. His father was sentenced to death (some said turned into stone) for trying to staunch floods by building dams with raw materials that expanded when it got wet. *Yu* learnt from his father that the power of nature could be diverted and not stopped. So he built great channels and drains to allow the waters to flow forth without harming the people.

After controlling the floodwater, Yu organized people to develop agriculture by fully utilizing water and soil. He let his son teach people how to plant rice and other crops. In addition, fish, ducks, and geese were bred under the guidance of Yu.

Being devoted to solving the flood problems, Yu passed his own home several times without pausing to greet his wife and newborn child that he had never met. Being successful in solving the floods, Shun appointed Yu as his successor. Yu divided the realm into nine regions and gave each a bronze vessel as a symbol of authority. When Yu passed away, the people ignored his chosen successor and appointed his son to lead them. Thus, Yu and his son became the first two kings of the Xia dynasty and the system of succession through merit was broken.

पांच सम्राट

हुंग-दि (येलो सम्राट)

पांच सम्राटो में थे हुंग-दि, जहां-क्सु, याओ, शुन और यु | हुंद दि जिन्हें येलो सम्राट के नाम से भी जान जाता है वे सबसे पहले शासक और प्राचीन चीन के प्रथम पूर्वज थे | येलो सम्राट से पहले चीन बहुत ही कोलाहल की स्तिथि में था जहाँ विभिन्न सामंत लोगो तथा प्रजा के लिए मृत्यु तथा विध्वंस उत्पन्न कर रहे थे | एक सेना बनाकर येलो राजा ने सभी सामंतो को हरा दिया और पुरे क्षेत्र में शांति तथा व्यवस्था की स्थापना की | आंतरिक व्यवस्था की स्थापना करने के बाद तब येलो राजा को बाह्य खतरों का सामना करना पड़ा, उन्होंने बर्बरिंस के साथ एक बहुत बड़ा युद्ध किया येलो नदी के क्षेत्र को अपने लोगो को सुरक्षित रखने के लिए | कुछ किंवदंती 'यान' सम्राट के बारे में भी कहते है जिन्हें येलो सम्राट द्वारा अधीन किया हुआ था और जो चीन के एक और पूर्वज थे | येलो सम्राट ने धनुष और बाण, नावे, गाड़िया, लेखन, रेशम आदि कई चीजों का अविष्कार किया |

जहाँ-क्सु

उनके उत्तराधिकारी की तौर पर जहां-क्सु के बारे में बहुत कम की कहा जाता है इसे छोड़कर की उन्होंने पारिवारिक वृक्ष तथा कुल की स्थापना की, एक ही खून के विवाह को निषेध किया तथा फिर साम्राज्य को याओ को सौंप दिया |

याओ

पौराणिक सम्राटो में याओ के चरित्र पर प्रकाश दालने से पता लगता है की वे एक बहुत ही पुण्यात्मा, गुण संपन्न और ज्ञानी थे | उनकी बाह्य उपलब्धिया और आंतरिक विचार बिलकुल ही सहज तथा स्वेच्छिक थे | वे बहुत ही विनम्र तथा आदरणीय थे और अनुरूप होने में योग्य थे, जबकि उनकी प्रतिष्ठा चारो दिशाओ में फैली हुई थी और स्वर्ग की उचाई तथा पृथ्वी की गहराई तक पहुची हुई थी |

वो सामर्थ्य को धारण किये हुए थे जो सभी नौ संबंधो को एक साथ बांधे हुए था; नौ सबंध तब आपस में मधुर थे, उन्होंने शाही परिवार तथा बाकी लोगो को एक समान समझा तथा बराबर अधिकार दिए; उसके अपने लोग ही ज्ञानी बन गए और उसने साम्राज्य के सभी क्षेत्रो में सामंजस्य तथा माधुर्य की स्थापना की |

याओ ने तिथि तथा महीनो वाले कैलेंडर का और विभिन्न अनुष्ठानो का अविष्कार किया | यह जानकार की उसका अपना पुत्र उसके साम्राज्य के योग्य नहीं है उसने अपने साम्राज्य के उत्तराधिकारी के लिए एक और सामर्थ्यवान तथा निपुण आम व्यक्ति शुन को चुना | याओ ने शुन को साम्राज्य के लिए योग्य बनाने में तीस वर्ष बिताये और उसने उस पर विश्वास किया तथा उसे कई बार उसे परखने के लिए कठिन कार्य करने के लिए दिए गए | आखिरकार अंत में उसने अपना साम्राज्य शुन को सौंप दिया |

शुन

शुन एक गरीब किसान था, उसने श्रेष्टता को प्राप्त किया अपने अंधे पिता और अपनी क्रूर सौतेली माता के प्रति निष्ठा तथा धर्म को अपनाकर | उसने याओ की पुत्रियों से विवाह किया तथा उसका उत्तराधिकारी बना | एक शासक के तौर पर उसे जाना गया अधिकारिक पदों पर केवल उन लोगो को नियुक्त करने के लिए जो सहज तथा सादे थे - मुक्त स्वभाव के, प्रजा का ध्यान रखने वाले और संयम तथा संतुलन बरतने वाले |

याओ द्वारा शुन के चुनाव को लेकर ये कहानी प्रचलित है :
राजा याओ ने सभापति से कहा:"ओ! चारो क्षेत्रो के नियंत्रक ! मै अब सिंहासन पर सत्तर सालो से हूँ और चूँकि आप मेरे नियमो का संचालन करने में सफल रहे मैं अपने सिंहासन को तुम्हे सौंपता हूँ |

सभापति ने कहा :"अपनी तुच्छ योग्यताओ के कारण मैं इस सिंहासन के सम्मान का केवल ह्रास ही करूगा|'

राजा याओ ने कहा :"उनको प्रकाशित करना जो हुनरमंद है और उन्हें आगे करना जो निम्न पदों पर है |"

तब सभी दरबारियों ने एक साथ राजा से कहा:"एक असाधारण व्यक्ति है जो वहा निचे रहता है, उसे शुन के नाम से पुकारा जाता है |"

राजा ने कहा :"अच्छा है! मैंने उसके बारे में सुना है; लेकिन उसमे क्या गुण है ?"

सभापति ने कहा :"वह एक अंधे व्यक्ति का पुत्र है और उसकी माता निष्ठाराहित है, जबकि उसका भाई क्सिंग घमंडी है; लेकिन फिर भी वह उनमे सामंजस्य स्थापित करने में सफल रहा है अपनी धर्मनिष्ठता के कारण, और इसी कारण से वह अब उनको स्वयं के संचालन के प्रति सहज कर पाया है और वे अपने दुराचार पर नियंत्रण रखने में थोडा सफल हुए है |"

राजा ने कहा:"क्या यह बेहतर नहीं होगा की पहले मैं उसे परखू! मै उस व्यक्ति के साथ अपनी पुत्रियों का विवाह कर दुगा ताकि मैं जान सकू की उसका व्यवहार कैसा है |"

याओ और शुन बहुत ही सदियों से श्रद्धेय थे | औरो से भिन्न उन्होंने कोई चमत्कार या अद्भुत कार्य नहीं किया लेकिन फिर भी अपने सामर्थ्य और उत्कृष्ट व्यवहार से अपने लोगो का संचालन किया | याओ और शुन दोनों ही बाढ़ पर नियंत्रण करने में असमर्थ रहे इसलिए शुन ने यु को उसकी इस सन्दर्भ में योग्यता के कारण अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया |

यु

यु को यु महान के नाम से भी जान जाता है उसने नहरों का निर्माण किया भयंकर बाढ़ की स्थितियों से निपटने के लिए जो बाद में उत्तरी चीन की नदियो के रूप में स्थापित हो गयी | आलेखों के अनुसार महान राजा यु की प्रशंसा की जाती है उसकी जल के ऊपर नियंत्रण की योग्यता के कारण और उसका नहरों में प्रवाह करने के कारण | उसने पहाड़ो में रास्ते निकले, नदियों के प्रवाह को बदला, और खेतो को बाढ़ के जल से ऊपर उठाने का कार्य किया | उसकी बाढ़ के जल को नियंत्रण में करने की योग्यता उसके निरंतर अनुभवों के कारण से थी | उसके पिता को मृत्यु दंड दिया गया बाढ़ के जल को बाँध बनाकर रोकने के लिए जो की कच्चे पदार्थो से बना हुआ था और ढह गया जब वह गिला हुआ | यु ने अपने पिता से सिखा की प्राकृतिक शक्ति को रोका नहीं जा सकता है बल्कि उनके प्रवाह को बदला जा सकता है | इसलिए उसने बड़ी बड़ी नहरों तथा जल धाराओ का निर्माण किया जल की निकासी के लिए जिससे की जल बिना लोगो को क्षति पहुचाये प्रवाहित हुआ |

बाढो पर नियंत्रण के बाद यु ने लोगो को व्यवस्थित किया खेती का विकास करने के लिए जल तथा भूमि का उपयोग करके | उसने अपने पुत्र को लोगो को चावल उगाना सिखाने के लिए नियुक्त किया | इसके आलावा मछली, बतख आदि पालने की शुरुआत भी यु के समय में हुई |

बाढ़ की समस्या की समाधान में तत्पर होकर यु ने कभी अपने परिवार की तरफ भी ध्यान नहीं दिया, वह कई बार अपने घर के पास से निकला लेकिन कभी भी अपनी पत्नी को खुश करने या फिर अपने नवजात बच्चे से मिलने के लिए नहीं रुका जिसे उसने कभी नहीं देखा | बाढो पर नियंत्रण करने में सफल होने के कारण शुन ने अपना साम्राज्य यु को सौंप दिया | यु ने पुरे क्षेत्रो को नौ प्रान्तों में बाटा और प्रत्येक को एक ताम्बे का मर्तबान दिया गया उसके अधिकार के चिन्ह के स्वरूप | जब यु की मृत्यु हो गयी लोगो ने उसके चुने हुए उत्तराधिकारी को अनदेखा कर दिया और उसके पुत्र को उनका राजा नियुक्त किया | इस प्रकार, यु और उसका पुत्र पहले दो राजा थे 'क्सिया' राजवंश के और जिन्होंने गुणों के अनुसार उत्तराधिकारी वाली प्रथा को तोडा था |

Land

Various States in the River Basins during the time period and distribution of land:
Chu, Qi, Lu, Wu, Wei, Qin, Jin, Zhou, Zheng, Chen, Cai, Cao, Zheng, Song, Yan

Major States during 260 BC

Rivers

Yellow River

In ancient times, it was believed that the Yellow River flowed from Heaven as a continuation of the Milky Way.
Historical documents from the Spring and Autumn period and Qin Dynasty indicate that the Yellow River at that time flowed considerably north of its present course.

The Yellow River is one of several rivers that are essential for China's very existence. At the same time, however, it has been responsible for several deadly floods, including the only natural disasters in recorded history that have killed more than a million people. The Yellow River has been considered a blessing as well as a curse and has been nicknamed both "China's Pride" and “China’s Sorrow”. The Yellow River is called "the cradle of Chinese civilization", because its basin was the birthplace of ancient Chinese civilization, and it was the most prosperous region in early Chinese history. However, frequent devastating floods and course changes produced by the continual elevation of the river bed, sometimes above the level of its surrounding farm fields, has also earned it the unenviable names China's Sorrow and Scourge of the Sons of Han.

When the Yellow River flows clear.
The Yellow River running clear" was reported as a good omen during the reign of the Yongle Emperor, along with the appearance of such auspicious legendary beasts as *qilin* (an African giraffe brought to China) and *zouyu* (not positively identified) and other strange natural phenomena.

Yangtze River

The **Yangtze River** is also known in China as the **Chang Jiang** or **Yangzi**, it is the longest river of China. The Yangtze river plays a large role in the history, culture and economy of China. For thousands of years, people have used the river for water, irrigation, sanitation, transportation, industry, boundary-marking and war. The Yangtze River is important to the cultural origins of southern China. Human activity has been verified in the area as far back as 27,000 years ago, and by the 5th millennium BC, the lower Yangtze was a major population center occupied by the Hemudu and Majiabang cultures, both among the earliest cultivators of rice. The "Yue" people of the lower Yangtze possessed very different traditions – blackening their teeth, cutting their hair short, tattooing their bodies, and living in small settlements among bamboo groves – and were considered barbarous by the northerners.

From the Han Dynasty, the region of the Yangtze River became more and more important to China's economy. The establishment of irrigation systems (the most famous one is Dujiangyan, northwest of Chengdu, built during the Warring States period) made agriculture very stable and productive. By the Song dynasty, the area along the Yangtze had become among the wealthiest and most developed parts of the country, especially in the lower reaches of the river.
Historically, the Yangtze became the political boundary between north China and south China several times (see History of China) because of the difficulty of crossing the river. This occurred notably during the Southern and Northern Dynasties, and the Southern Song.

नदिया

येलो नदी

पौराणिक समय में यह माना जाता था की येलो नदी स्वर्ग से बहती है हमारी आकाश गंगा से निकलते हुए | वसंत और पतझड़ समय के और किन साम्राज्य के कुछ प्राचीन आलेख बताते है की उस वक़्त येलो नदी अपने प्रवाह से थोडा उत्तर की तरफ बहती थी | येलो नदी उन नदियों में से एक है जो चीन के अस्तित्व के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है | हालाँकि दूसरी तरफ यह बहुत सारी विनाशकारी बाढो के लिए भी जिम्मेदार है जिनमे से इस दुनिया की वह विध्वंसक महाप्रलयकारी बाढ़ भी शामिल है जिसमे लाखो लोगो ने अपनी जान गवाई थी | येलो नदी एक वरदान भी है और एक अभिशाप भी है इसलिए इसे दोनों नामो से जाना जाता है 'चीन का गर्व' भी और 'चीन का दुःख भी' | इसे चीन की सभ्यता को पालने वाला कहा जाता है क्योंकि इसके तटो पर पूरी चीन की सभ्यता फली फूली है और उसका विकास हुआ है | हालाँकि लगातार आने वाली बाढो के कारण जो की कभी इसके पथ के बदलने से होती है तो कभी कभी इसके जल के खेतो में तबाही करने के कारण इसे चीन के दुःख के नाम से भी संबोधित किया जाता है |

जब येलो नदी स्वच्छ रूप से बहती है - इसे बहुत ही सुभ संकेत माना जाता था 'योंगले' सम्राट के क्षेत्र में, ऐसे शुभ संकेतो के साथ बहुत सारे शुभ कार्या भी किये जाते थे जैसे की कीलिन पशु का आना (एक अफ़्रीकी जिराफ जिसे चीन लाया गया था) तथा और भी कई अजीब प्राकृतिक कार्य थे जिन्हें इस समय शुभ माना जाता था |

यांग्तज़े नदी

यांग्तज़े नदी को चीन में चंग-जिंग और यांग्ज़ी नाम से भी जाना जाता है यह चीन की सबसे लम्बी नदी है | यांग्ज़े नदी का चीन के इतिहास, संस्कृति और अर्थव्यवस्था में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है | हजारो सालो से लोगो ने इस नदी का उपयोग जल के लिए, सिंचाई, व्यवसाय, परिवहन तथा युद्धों के समय किया है | यांग्तज़े नदी दक्षिणी चीन की संस्कृति के उत्थान में बहुत ही महत्वपूर्ण है | इस नदी के क्षेत्र में मनुष्य की गतिविधियों के प्रमाण २७००० वर्ष पूर्व के भी मिले है, यांग्तज़े नदी के निचले हिस्से ने हेमादु तथा मजिअबंग सभ्यता की बहुत सारी आबादी को धारण किये हुए था, ये दोनों सबसे पहले चावल के उत्पादक थे | युए कबीला जो की नदी के निचले हिस्से में था उसकी परम्पराये बहुत ही भिन्न थी - वे लोग अपने दांतों को काला करते थे, अपने बालो को छोटा रखते थे, अपने शरीर पर टैटू छापते थे और छोटे छोटे समूह में रहते थे बांस के पेड़ो के बीच - और इन्हें उत्तर वालो द्वारा बर्बरोउस कहा जाता था |

हान साम्राज्य के समय से ही, यांग्तज़े नदी का क्षेत्र चीन की अर्थव्यवस्था के लिए बहुत महत्वपूर्ण बन गया था | सिंचाई तंत्र की स्थापना ने खेती को बहुत ही सुगम तथा उत्पादक बना दिया था | सोंग साम्राज्य के समय तक यांग्तज़े नदी का क्षेत्र विशेषकर नदी के निचले हिस्सों वाला क्षेत्र पुरे देश में सबसे समृद्ध तथा विकसित बन गया था |

इतिहास में यांग्तज़े नदी ने कई बार उत्तरी चीन और दक्षिणी चीन के बीच की सीमा का काम किया है, इसको पार करने में आने वाली कठिनाई के कारण | यह बहुत बार घटित हुआ विशेषकर उत्तरी साम्राज्य और दक्षिणी साम्राज्य के समय में और दक्षिणी सोंग राज्य के समय में |

Three Dynasties

Xia Dynasty
Xia dynasty of China is the first dynasty to be described in ancient historical chronicles, the Xia Dynasty was established by the legendary Yu the Great after Shun gave his throne to him, and was later defeated and replaced by the Shang. Yu was successful in stopping the flooding and increased the produce from farming (since the floods usually destroy the crops), the Xia tribe's influence strengthened and Yu became the leader of the surrounding tribes. This succession of Yu as the king is the start of the Xia Dynasty. Soon before his death, instead of passing power to the person deemed most capable to rule, Yu passed power to his son, Qi, setting the precedence for dynastic rule or the Hereditary System. The Xia Dynasty began a period of family or clan control. Jie, the last ruler, was said to be a corrupt king. He was overthrown by Tang, the first king of the Shang dynasty.

Shang Dynasty
The Shang Dynasty or Yin Dynasty was, according to traditional sources, the second Chinese dynasty, after the Xia Dynasty. They ruled in the northeastern regions of the area known as "China proper", in the Yellow River valley. According to Chinese tradition, the Shang dynasty was founded by a rebel king who overthrew the last Xia ruler in the Battle of Mingtiao. Shang Zhou, the last Shang king, committed suicide after his army was defeated by the Zhou people. Legends say that his army betrayed him by joining the Zhou rebels in a decisive battle that took place.

Zhou Dynasty
Zhou Dynasty followed the Shang Dynasty and was followed by the Qin Dynasty in China. The Zhou dynasty lasted longer than any other dynasty in Chinese history — though the actual political and military control of China by the dynasty only lasted during the Western Zhou.
During the Zhou Dynasty, the origins of native Chinese philosophy developed, its initial stages beginning in the 6th century BC. The greatest Chinese philosophers, those who made the greatest impact on later generations of Chinese, were Confucius, founder of Confucianism, and Laozi, founder of Taoism. Other philosophers, theorists, and schools of thought in this era were Mozi, founder of Mohism, Mencius, a famous Confucian who expanded upon Confucius' legacy, Shang Yang and Han Feizi, responsible for the development of ancient Chinese Legalism (the core philosophy of the Qin Dynasty), and Xunzi, who was arguably the center of ancient Chinese intellectual life during his time, even more so than iconic intellectual figures such as Mencius.

Warring States Period
Warring States Period also known as the Era of Warring States, covers the period from 475 BC to the unification of China under the Qin Dynasty in 221 BC. It is nominally considered to be the second part of the Eastern Zhou Dynasty, following the Spring and Autumn Period, although the Zhou Dynasty ended in 256 BC, 35 years earlier than the end of the Warring States period. During these periods, the Chinese sovereign (king of the Zhou Dynasty) was merely a figurehead.

Three Kingdoms Period
Just as the name implies, the Three Kingdoms were made up of three kingdoms - the Kingdom of Wei, Kingdom of Shu and Kingdom of Wu. As a single dynasty, the Three Kingdoms Period originated in 220 AD when the Kingdom of Wei replaced the Eastern Han Dynasty (25 AD-220 AD) and ended in 280 AD when the Kingdom of Wu was defeated by the Court of Jin. It is considered to be a special historical period full of power struggles and sophisticated military strategies.

तीन राजवंश

क्सिया राजवंश

क्सिया राजवंश चीन का पहला राजवंश था जिसकी व्याख्या हम इतिहास में पाते है, क्सिया राजवंश की स्थापना महान यु द्वारा की गयी थी जब राजा शुन ने उन्हें साम्राज्य सौंपा था, और उसके बाद इस राजवंश को उन्हें हराकर शांग द्वारा इसे ले लिया गया था | यु बाढो को रोकने में सफल हुआ और जिससे खेतो में उत्पादन बढा, तब क्सिया कबिला मजबूत हो गया और यु वहां सभी कबीलों का मुख्या बन गया | यु का राजा बनाने में सफल होना क्सिया काबिले की शुरुआत थी | उसकी मृत्यु के बाद अपने साम्राज्य को सबसे काबिल व्यक्ति को देने के बजाय यु ने इसे अपने पुत्र 'की' को सौंप दिया (क्योंकि लोग ऐसा चाहते थे) जिसे की योग्य उत्तराधिकारी बनाने वाली पद्धती का अंत हुआ | क्सिया राजवंश का नियंत्रण पारिवारिक तौर पर था, एक कुल के पास था | जिए, जो की आखिरी शासक था उसे एक भ्रष्ट राजा कहा जाता है | उसे तंग द्वारा हरा दिय गिया जो की शांग राजवंश का पहला राजा था |

शांग राजवंश

शांग राजवंश या फिर यिन राजवंश चीन के इतिहास में दूसरा राजवंश था (क्सिया राजवंश के बाद) | उन्होंने उत्तर पूर्वी क्षेत्र में शासन किया येलो नदी की घाटी में | चीन के इतिहास के अनुसार शांग राजवंश की स्थापना एक विद्रोही राजा द्वारा की गयी थी जिसने आखिरी क्सिया राजवंश के राजा को हरा दिया था मिन्ग्तिओं के युद्ध में | शांग ज्होऊ जो की आखिरी शांग राजा था उसने आत्महत्या कर लि जब उसकी सेना को ज्होऊ लोगो द्वारा हरा दिया गया | किंवदन्तियो के अनुसार उसकी सेना उसे दोखा देकर ज्होऊ विद्रोहियों से मिल गयी थी और एक निर्णायक युद्ध हुआ था |

ज्होऊ राजवंश

ज्होऊ राजवंश शांग राजवंश के बाद अस्तित्व में आया और किसी भी अन्य राजवंश से ज्यादा समय तक चीन के इतिहास में रहा - इस राजवंश का वास्तव में नियंत्रण पश्चिमी ज्होऊ तक रहा था | ज्होऊ राजवंश के दौरान ही मूल चीनी दर्शनशास्त्र की उत्पत्ति हुई, और इसकी प्रारंभिक शुरुआत ६वी सदी B.C में हुई | महान चीनी दार्शनिक जिनका प्रभाव आने वाली पीढियों पर भी रहा वे थे कांफुसियस जिसने कोंफुसियस मत की स्थापना की, लाओ-ज़ि जिन्होंने ताओ के बारे में कहा | बाकि दार्शनिक तथा सिद्धांतवादी जो इस युग में थे वे थे मोजी - मोहिस्त पंथ का संस्थापक, मेंसिउस - जिसने कनफुसियस मत का विस्तार किया, शांग यंग और हाँ फ़िजी - जो की जिम्मेदार थे प्राचीन चीनी कानून के और क्सुन्ज़ी - जो की केंद्र था प्राचीन चीनी बुद्धिमता का अपने समय के दौरान |

वार्रिंग स्टेट युग

वार्रिंग स्टेट समय जिसे की वार्रिंग स्टेट युग के नाम से भी जाना जाता है यह ४७५ से किन राजवंश के समय तक (२२१ B.C तक जब चीन का एकीकरण हुआ) था | वसंत और पतझड़ समय के बाद इसे आम तौर पर पूर्वी ज्होऊ राजवंश का दूसरा हिस्सा कहा जाता था, यद्यपि ज्होऊ र्राज्वंश का अंत २५६ B.C में हो गया, जो की था ३५ वर्ष पहले वार्रिन स्टेट समय के समाप्त होने से तथा इस समय के दौरान चीनी शासक केवल मात्र अधिकार रखते थे |

तीन साम्राज्यों का समय

जैसा की नाम से प्रतीत होता है तीन साम्राज्यों का समय तीन राज्यों को मिलकर बना हुआ था - वेई साम्राज्य, शु साम्राज्य और वू साम्राज्य | एक राजवंश की तरह तीन साम्राज्यों के समय की शुरुआत २२० A.D में हुई जब वेई के साम्राज्य ने पूर्वी हाँ राजवंश पर अधिकार किया और इसका अंत २८० A.D में हुआ जब वू साम्राज्य को जिन के दरबार में हरा दिय गया | इस समय को एक विशिष्ट ऐतिहासिक समय माना जाता है इसमें हुए युद्ध संघर्षो और परिष्कृत सैनिक नीतियों के कारण |

1: Free and Easy Wandering

In the northern ocean there is a fish, called the Kun, I do not know how many thousand li in size. This Kun changes into a bird, called the peng. Its back is I do not know how many thousand li in breadth. When it is moved, it flies, its wings obscuring the sky like clouds.

When on a voyage, this bird prepares to start for the Southern Ocean, the Celestial Lake. And in the Records of Marvels we read that when the peng flies southwards, the water is smitten for a space of three thousand li around, while the bird itself mounts upon a great wind to a height of ninety thousand li, for a flight of six months' duration. There mounting aloft, the bird saw the moving white mists of spring, the dust-clouds, and the living things blowing their breaths among them. It wondered whether the blue of the sky was its real color, or only the result of distance without end, and saw that the things on earth appeared the same to it.

If there is not sufficient depth, water will not float large ships. Upset a cupful into a hole in the yard, and a mustard-seed will be your boat. Try to float the cup, and it will be grounded, due to the disproportion between water and vessel.

So with air. If there is not sufficient a depth, it cannot support large wings. And for this bird, a depth of ninety thousand li is necessary to bear it up. Then, gliding upon the wind, with nothing save the clear sky above, and no obstacles in the way, it starts upon its journey to the south.

A cicada and a young dove laughed, saying, "Now, when I fly with all my might, 'tis as much as I can do to get from tree to tree. And sometimes I do not reach, but fall to the ground midway. What then can be the use of going up ninety thousand li to start for the south?"

He who goes to the countryside taking three meals with him comes back with his stomach as full as when he started. But he who travels a hundred li must take ground rice enough for an overnight stay. And he who travels a thousand li must supply himself with provisions for three months.

Those two little creatures, what should they know?

Restricted knowledge isn't as good as expansive knowledge. Having few experiences isn't as good as having many experiences. How do we know this is so? The fungus plant of a morning knows not the alternation of day and night. The cicada knows not the alternation of spring and autumn. Theirs are short years. But in the south of Chu there is a mingling (tree) whose spring and autumn are each of five hundred years' duration. And in former days there was a large tree which had a spring and autumn each of eight thousand years. And Peng Zu (a legendary man who is said to have lived for eight hundred years) even today is considered special for his long life. Everyone wants to match him - doesn't that cause them much grief!

It was on this very subject that the Emperor Tang spoke to Chi(one of his wise ministers), as follows: "At the north of Chiungta, there is a Dark Sea, the Celestial Lake. In it there is a fish several thousand li in breadth, and I know not how many li in length. It is called the Kun. There is also a bird, called the peng, with a back like Mount Tai, and wings like clouds across the sky. It soars up upon a whirlwind to a height of ninety thousand li, far above the region of the clouds, with only the clear sky above it. And then it directs its flight towards the Southern Ocean.
"And a lake sparrow laughed, and said: Pray, what may that creature be going to do? I rise but a few yards in the air and settle down again, after flying around among the reeds. That is as much as anyone would want to fly. Now, wherever can this creature are going to?" Such, indeed, is the difference between small and great.

Therefore a man who has wisdom enough to fill one office effectively, good conduct enough to impress one community, virtue enough to please one ruler, or talent enough to be called into service in one state, has the same kind of self-pride as these little creatures. Sung Jung-Tzu (a philosopher who taught simple living) would certainly burst out laughing at such a man. The whole world could praise Sung Jung-Tzu and it wouldn't make him exert himself; the whole world could condemn him and it wouldn't make him mope. He was comfortable with accepting the difference between what was within him and how he was perceived from the outside. For Sung can distinguish between essence and superficialities, and understand what is true honor and shame. Such men are rare in their generation. But even he has not established himself.

Now Laozi could ride upon the wind. Sailing happily in the cool breeze, he would go on for fifteen days before his return. Among mortals who attain happiness, such a man is rare. Yet although Liehtse could dispense with walking, he would still have to depend upon something. What if a person could ride on the course of the sky and the earth, and manage the six disagreeable energies, traveling without becoming exhausted - that would show how awful it is to have to depend on anything! Thus it is said, "The perfect man ignores self; the divine man ignores achievement; the true Sage ignores reputation."

The Emperor Yao tried to give over the world to Xu Yu, saying:
"When the sun and moon come out, yet the light bulbs keep on burning, doesn't their brightness seem unnecessary! When the rain starts pouring, and yet one keeps watering the plants, doesn't all that work just create a swamp! A ruler can just stand aside when the whole world is peacefully governed. Since any opinions I come up with seem to be coming from a statue, I don't even know what I'm doing here. Please take over the world."

"You are ruling the Empire, and the Empire is already well ruled," replied Xu Yu. "Why should I take your place? Should I do this for the sake of a name? A name is but the shadow of reality, and should I trouble myself about the shadow? The tit, building its nest in the mighty forest, occupies but a single twig. The beaver slakes its thirst from the river, but drinks enough only to fill its belly. I would rather go back: I have no use for the empire! If a proper chef isn't in charge of the kitchen, there'd only be a corpse left around to accept gratitude for the wine and prepared food."

Jian Wu asked of Lian Shu:
"I heard Chieh Yu talk on high and fine subjects endlessly. I was greatly startled at what he said, for his words seemed interminable as the Milky Way, but they are quite detached from our common human experience."

Lian Shu asked:
"What did he say?"

Wu replied:
"He said there's a holy man living in the Miao GU She Mountains. His skin is like ice and snow - as soft and tender as a young maiden. He doesn't eat what others eat, but inhales the wind and drinks the dew. He rides on the clouds, holding the reins of a flying dragon, and travels beyond the four seas. His spirit is so concentrated that he can keep illness away from other creatures and make sure there's a rich harvest every year. I think he's nuts and don't believe a word he says."

"You would!" said Lien Shu. "We can't expect a blind man to appreciate beautiful patterns or a deaf man to listen to bells and drums. And blindness and deafness are not confined to the body alone - the understanding has them too, as your words just now have shown. This man, with this virtue of his, is about to embrace the ten thousand things and roll them into one. Though the age calls for reform, why should he wear himself out over the affairs of the world? There is nothing that can harm this man. Though flood waters pile up to the sky, he will not drown. Though a

great drought melts metal and stone and scorches the earth and hills, he will not be burned. From his dust and leavings alone you could mold a Yao or a Shun! Why should he consent to bother about mere things?"

A man of the Sung State carried some ceremonial caps to the Yueh tribes for sale. But the men of Yueh used to cut off their hair and paint their bodies, so that they had no use for such things. The Emperor Yao ruled all under heaven and governed the affairs of the entire country. After he paid a visit to the four sages of the Miao-ku-yi Mountain, he felt on his return to his capital at Fenyang that the empire existed for him no more.

Hui Tzu said to Zhuangzi, "The king of Wei gave me some seeds of a huge gourd. I planted them, and when they grew up, the fruit was big enough to hold five piculs. I tried using it for a water container, but it was so heavy I couldn't lift it. I split it in half to make dippers, but they were so large and unwieldy that I couldn't dip them into anything. It's not that the gourds weren't fantastically big - but I decided they were no use and so I smashed them to pieces."

"It was rather you did not know how to use large things," replied Zhuangzi. "There was a man of Sung who had a recipe for salve for chapped hands, his family having been silk-washers for generations. A stranger who had heard of it came and offered him a hundred ounces of silver for this recipe; whereupon he called together his clansmen and said, 'We have never made much money by silk-washing. Now, we can sell the recipe for a hundred ounces in a single day. Let the stranger have it.' "The stranger got the recipe, and went and had an interview with the Prince of Wu. The Yueh State was in trouble, and the Prince of Wu sent a general to fight a naval battle with Yueh at the beginning of winter. The latter was totally defeated, and the stranger was rewarded with a piece of the King's territory. Thus, while the efficacy of the salve to cure chapped hands was in both cases the same, its applications were different. Here, it secured a title; there, the people remained silk-washers.

"Now as to your five-bushel gourd, why did you not make a float of it, and float about over river and lake? And you complain of its being too flat for holding things! I fear your mind is stuffy inside."

Hui Tzu said to Zhuangzi, "I have a large tree, called the ailanthus. Its trunk is so irregular and knotty that it cannot be measured out for planks; while its branches are so twisted that they cannot be cut out into discs or squares. It stands by the roadside, but no carpenter will look at it. Your words are like that tree — big and useless, of no concern to the world."

"Have you never seen a wild cat," rejoined Zhuangzi, "crouching down in wait for its prey? Right and left and high and low, it springs about, until it gets caught in a trap or dies in a snare. On the other hand, there is the yak with its great huge body. It is big enough in all conscience, but it cannot catch mice. Now if you have a big tree and are at a loss what to do with it, why not plant it in the Village of Nowhere, in the great wilds, where you might loiter idly by its side, and lie down in blissful repose beneath its shade? There it would be safe from the ax and from all other injury. For being of no use to others, it should be able to get some peace and quiet!"

१| सहज और सरल जीवन

उत्तरी समुन्द्र में एक विशालकाय मछली रहती थी उसका नाम कन था वह मछली आकार में बहुत ज्यादा बड़ी थी| फिर वह कन नामक मछली तब बदल गयी एक विशालकाय पक्षी में, जिसका नाम था पैंग| कहते है की जब वह पक्षी आकाश में उड़ता था तो धरती पर घने बादलो जैसे छाया हो जाती थी|

एक बार उस पक्षी ने दक्षिणी समुन्द्र की पवित्र झील पर जाने के लिए यात्रा प्रारम्भ की, और हम प्राचीन अभिलेखों में पढ़ते है की जब उस पक्षी ने दक्षिणी समुन्द्र की लिए उड़ान भरी तो उसके आसपास समुन्द्र का जल तीन हजार फुट की चोड़ाई तक सिमट गया| उस पक्षी ने तब नौ हजार फुट की ऊँचाई पर पहुच कर उड़ना प्रारंभ किया और वह लगातार छह महीनो के लिए उडा| इतना ऊँचा उड़ते हुए उसने देखा श्वेत पानी के झरनों को, धुंध भरे बादलो को और अपना जीवन व्यापन कर रहे छोटे छोटे जीवो को तब उसको आश्चर्य हुआ की क्या आकाश का रंग वास्तव में नीला है या यह परिणाम है इसकी अनंत गहराई का और उसने यह भी जाना की इस अनंत आकाश के लिए धरती की सभी वस्तुए एकस्वरूप है|

जहाँ गहराई पर्याप्त नही होती वहा नाव नहीं तैर सकती, जबकि एक छोटे प्याले में सरसों का दाना भी दाल दिया जाये तो वह उसमे नाव के जैसे तैरने लग जायेगा| लेकिन अगर उसी प्याले को अगर जल में दाला जाये तो वह डूब जाता है, यह होता उस प्याले और जल की आपसी विषमता के कारण| यही बात वायु के साथ होती है अगर वायु की ऊँचाई पर्याप्त न हो तो बड़े पक्षी उसमे नही उड़ पाते है, जबकि इतने बड़े पक्षी के लिए तो उड़ने के लिए कम से कम नब्बे हज़ार फुट की ऊँचाई जरूरी है| तब इतनी ऊंचाई पर पहुचकर जहाँ उसके मार्ग में कोई बाधा नही आ सकती थी उस पक्षी ने दक्षिण के लिए यात्रा आरंभ की|

उस पक्षी को देखकर एक छोटी चिड़िया हँसी और एक दूसरी चिड़िया से उसने कहा की:
"जब मै अपना पूरा जोर लगाकर उडती हूँ तभी मै एक पेड़ से दुसरे पेड़ पर पहुँच पाती हूँ और कभी कभार तो मै मार्ग में ही जमीन पर गिर जाती हूँ, तो फिर दक्षिण की और जाने के लिए नब्बे हज़ार फुट की ऊंचाई पर जाना क्या योग्य है? इसका क्या लाभ है? क्योंकि अगर कोई साथ वाले राज्य में भी जाता है वह भी अपने साथ तीन समय का भोजन साथ लेकर चलता है तभी वह सही से वापस पहुँच पाता है, और अगर कोई दुसरे देश जाता है तो वह चावल की पूरा बोरा अपने साथ लेकर जाता है, जबकि उसे जिसे जाना हो दक्षिण की तरफ कई हज़ार कोस तो उसे तो कम से कम तीन महीनो के भोजन का नियोजन अपने साथ करना पड़ता है|"

ये दो छोटे पक्षी, ये क्या जानते है?

कुछ ज्ञान का होना व्यापक ज्ञान के होने के बराबर नही होता है ऐसे ही कुछ अनुभवों का होना बराबर नहीं होता है बहुत ज्यादा अनुभवों के होने के| मै यह सभ कैसे जानता हूँ? क्योंकि एक कीट जिसका जीवन केवल कुछ ही घंटो का होता है नही जानता है दिन और रात्रि के बारे में, वैसे ही एक छोटी चिड़िया जिसका जीवन केवल एक ऋतु का होता है नही जानती वसंत और शरद ऋतु के बारे में| क्योंकि वे केवल थोड़े समय के लिए ही होते है|
लेकिन चाऊ राज्य के दक्षिण में के एक मिंगलिंग पेड़ है जिसका की वसंत और शरद, दोनो ही है पांच सौ सालो के जबकि पुराने दिनों में एक और पेड़ था जिसके वसंत और शरद दोनों थे आठ सौ सालो के| और पैंग-जु जो की जिया था आठ सौ सालो के लिए उसे आज भी जाना जाता है अपनी लम्बी आयु के लिए| हर कोई आज भी उस जितना जीना चाहता है, क्या यह लोगो को डराता नहीं है?

इसी विषय पर सम्राट तैन्ग ने अपने मंत्री ची से कहा था:"उत्तरी समुन्द्र में एक विशालकाय मछली रहती थी उसका नाम कन था वह मछली आकार में बहुत ज्यादा बड़ी थी, फिर वह कन नामक मछली तब बदल गयी एक विशालकाय पक्षी में, जिसका नाम था पैंग| जब वह पक्षी आकाश में उड़ता था तो धरती पर घने बादलो जैसे छाया हो जाती थी| और वह उड़ता था नब्बे हज़ार फुट की ऊंचाई पर, बादलो से भी ऊपर जहाँ उसके उड़ने के लिए रह जाता था केवल खुला आकाश| तब उसने यात्रा आरंभ की दक्षिणी समुन्द्र के लिए और उसे देखकर एक छोटी चिड़िया हँसी और एक दूसरी चिड़िया से बोली की'ये इतने बड़े पक्षी यह सभ कर के क्या करना चाहते है, मै थोड़ी देर के लिए उडती हूँ और फिर आसपास घूमकर निचे बैठ जाती हूँ| हर कोई बस इतना ही उड़ना चाहता है, फिर ये इतने बड़े पक्षी कहाँ जाना चाहते है?" वास्तव में यही भेद है छोटा होने में और महान होने में|

इसीलिए कहा गया है की एक व्यक्ति जिसके पास पर्याप्त ज्ञान है स्वयं के अधिकार में आने वाले कार्य अच्छी तरह करने की, या फिर व्यावहारिकता है उचित प्रकार से समाज में रहने की, या फिर उसमे है पर्याप्त सामर्थ्य और प्रतिभा अपने राजा और राज्य की सेवा के लिए, तब उसके पास है उतना ही वैसा ही स्वाभिमान है जैसा की उस छोटी चिड़िया के पास है| सुंग-जुंग-तजु (एक व्यक्ति जो सहज जीवन जीना सिखाता था) निश्चित ही हँसेगा ऐसे व्यक्ति पर| ये संसार चाहे सुंग-जुंग-तजु की कितनी ही प्रशंसा करे पर इससे वह घमंदी नही होगा और चाहे ये संसार उसकी कितनी भी निंदा करे यह उसे हतोत्साहित नही करेगी| क्योंकि वह सहज है खुद के प्रति और उसे स्वीकार्य है जो की वह है और जैसा की उसे औरो दवारा देखा जाता है| वह भेद जानता है वास्तविक कर्म में और दिखावे में तथा वह समझता है की क्या उपाधि है और क्या कलंक है| ऐसा व्यक्ति पुश्तो में दुर्लभ होता है फिर भी वह स्वयं को इस बारे में सिद्ध नही करना चाहता|

आज हम जानते है की लाओजी हवा में चल सकता है, खुशी से मंद हवाओ में टहल सकता है और वह हफ्तों तक आसमान में रह सकता है| नश्वर मनुष्यों में कौन है जो आजकल इतना खुश है, ऐसा व्यक्ति दुर्लभ होता है| यदयपि लाओजी जमीन के बिना भी चल सकता है लेकिन फिर भी उन्हें इसके लिए किसी चीज पर तो निर्भर रहना पड़ता है| जबकि तब क्या हो जब कोई व्यक्ति धरती और आकाश के जैसे चले वह भी बिना थके हुए और फिर भी अपनी सभी असाध्य उर्जाओं को समेटे हुए नियंत्रित किये हुए| यह आपको बताता है कितना भयावह है किसी वस्तु पर निर्भर होना! इसीलिए यह कहा गया है"उत्तम व्यक्ति स्वयं के प्रति आसक्त नही होते है; आदर्श व्यक्ति सफलता में आसक्त नही होते और जो ज्ञानी होते है वे पर्सिद्धि में आसक्त नही होते है|"

सम्राट याओ ने अपना सारा राज्य क्सु-यु को देने की इच्छा करते हुए कहा :
"जैसे सूर्य और चन्द्र के उदित होने के बाद दिया जलाने का तात्पर्य नहीं होता है, जैसे वर्षा होने के बाद पौधों में पानी देना अनिवार्य नही होता है यह करना वहाँ दलदल बना देता है वैसे ही जब एक राज्य स्वयं से अच्छी प्रकार से संचालित हो रहा हो तो एक सम्राट के होने का कोई तात्पर्य नही रहता| क्योंकि मेरे ये विचार मुझे मेरे ह्रदय से आते प्रतीत हो रहे है| इसीलिए अब मै यह भी नही समझ पा रहा हूँ की मै यहाँ कर क्या रहा हूँ| कृपया करके आप मेरे राज्य को स्वीकार कीजिये|"

यह सुनकर क्सु-यु ने कहा :
“आप राज्य का संचालन कर रहे है और राज्य अच्छी प्रकार भलीभाति संचालित हो रहा है तो मुझे आपका राज्य लेने की क्या जरूरत है? अगर मै आपका राज्य लेना भी चाहू अपनी पर्सिद्धि की लालसा से और अपना नाम कमाने की लालसा से, लेकिन नाम का होना तो केवल वास्तविकता की परछाई होता है इसलिए क्या मै केवल परछाई के लिए स्वयं को इतने बड़े संकट में दालू| एक पक्षी विशाल वन में अपना घोंसला बनाता है पर वह रहता है केवल एक छोटी टहनी पर, एक जानवर नदी में से पानी पीता है पर केवल इतना की जिससे उसकी प्यास बुझ सके| वैसे ही मेरी आपका राज्य पाने की कोई लालसा नहीं है; मेरे लिए इस राज्य का कोई काम नही है| अगर एक सैनिक की जगह एक एक किसान युद्ध में जाये तो केवल हार ही आपके पास एक विकल्प बचती है|“

जियान-वू ने लिआन-शु से पूछा:
“मैंने सुना है की चिएह-यु गहन और सूक्ष्म विषयो पर वार्तालाप कर सकता है| मै आश्चर्यचकित हो जाता हूँ उसके विचारो को सुनकर, मुझे उसके विचार आकाशगंगा की गहराई से भी गहन प्रतीत होते है| तथा उसके विचार हम जैसे साधारण मनुष्यो जैसे नहीं होते है|”

लियान-शु ने पूछा:
“ऐसा वह क्या कहता है?”

जिआन-वू ने बताया:
“वह कहता है की एक पुण्यात्मा व्यक्ति रहता है मिओं-गु-शे की पहाडियों पर| उसकी त्वचा बर्फ जैसे मुलायम है, वह नाजुक है जैसे की एक कुंवारी होती है| और वह नहीं खाता जो की हम खाते है, लेकिन वह केवल हवा और औंस की बूंदों को पिता है| वह बादलो की सवारी करता है और ड्रैगन पर बैठकर चार समुन्दरो से भी परे की यात्रा करता है| उसका मन और आत्मा इतनी एकाग्र है की वो सभी प्राणियों को रोग और व्याधियो से बचा सकता है और आश्वस्त कर सकता है अच्छी फसल पुरे साल के लिए| लेकिन मै मानता हूँ की यह सभ मिथ्या है मै उसकी बातो में विश्वास नहीं रखता हूँ|”

लिआन-शु ने कहा:
“आपको विश्वास करना चाहिए! क्योंकि एक नेत्रहीन व्यक्ति से हम अपेक्षा नही रखते है सुन्दर द्रश्यो की प्रशंसा की और वैसे ही एक बहरे से संगीत की प्रशंसा की| जबकि नेत्रहीन होना और बहरा होना केवल हमारे शरीर तक सिमित नहीं है बल्कि हमारी समझ भी ऐसे होती है जैसा की मुझे तुम्हारे विचारो से प्रतीत हो रहा है|
चूँकि वह व्यक्ति समाविष्ट किये हुए है दस हज़ार वस्तुओ को एकस्वरूप कर अपने सामर्थ्य से| चाहे यह समय की मांग ही क्यों न हो, फिर भी उसे क्या सरोबार इस दुनिया के घटनाकर्म और मुद्दों से| ऐसी कोई वस्तु नहीं है है जो इस व्यक्ति को हानि पंहुचा सके| चाहे समुद्र का पानी आकाश तक क्यों न पहुच जाये इससे वह दूब नहीं सकता| चाहे एक भयानक आग में सब वस्तु और धातु क्यों न जल जाये पर उस व्यक्ति को नहीं जला पायेगी| ऐसे व्यक्ति के किंचित मात्र तप से तुम बना सकते हो कई व्यक्ति राजा याओ और राजा शुन जैसे! तो फिर भी उस व्यक्ति को इन किंचित मात्र वस्तुओ से क्या परेशानी हो सकती है?”

सुंग राज्य का एक व्यक्ति ले गया कुछ अनुष्ठानिक टोपियां युएह कबिले में बेचने के लिए लेकिन युएह कबिले के व्यक्ति अपने रीती रिवाजों के अनुसार अपने सिर को गंजा व् अपने शरीर को चित्रित रखते थे तो फिर इन वस्तुओ का उनके लिए क्या काम था| राजा याओ ने सम्पूर्ण संसार पर शासन किया पर जब वह मिओं-कु-यी पर्वत के चार साधुओ से मिलकर अपनी राजधानी फेन्यंग वापस आया तो उसे प्रतीत हुआ की यह राज्य अब उसके लिए नही है (उसे वैराग्य हो गया)|

हुई-तजु ने ज़ुहंग्ज़ी से कहा:
"वेई के राजा ने मुझे एक बीज दिया था, एक बहुत बड़े कद्दू की नस्ल का| मैंने उसे बो दिया और जब उस पेड पर फल आया तो वह आश्चर्य चकित रूप से पांच हाथो जितना बड़ा था| मैंने उसे एक जल रखने के बर्तन की तरह इस्तेमाल करना चाहा पर वह वजन में बहुत भारी था इसलिए उसका इस्तेमाल नहीं कर पाया, और भी मैंने उसे कई कामो के लिए सोचा पर वह मेरे किसी काम नहीं आया| मैंने फिर उसे छोटे छोटे हिस्सों में काटने का निश्चय किया क्योंकि इतना आश्चर्य चकित रूप से बड़ा होते हुए भी वह मेरे किसी काम का नहीं था|”

इस बात को सुनकर ज़ुहंग्ज़ी ने कहा:
"यह तो तुम हो जो बड़ी वस्तुओ का ठीक से उपयोग करना नहीं जानते हो क्योंकि सही जगह उपयोग करने से वे भी काम में लायी जा सकती है| एक बार सुंग राज्य में एक व्यक्ति रहता था उनका पुश्तो से ही कपडे धोने का धंधा था इस प्रकार उस व्यक्ति को फटे हुए हाथो के लिए मरहम बनाने का ज्ञान था| एक बार एक अजनबी उसके पास आया और उस मरहम की विधि जानने के लिए उसको सौ सोने की मोहरे देने की पेशकश की, यह सुनकर उस व्यक्ति ने अपने कुल के सभी सदस्यों को बुलाया और कहा की हम आजतक कपडे धो कर इतना नहीं कम पाए जितना की यह व्यक्ति हमे एक दिन में दे रहा है, उन सभने उससे सहमती जताई और उन्होंने वह विधि उस अजनबी व्यक्ति को बता दी| वह अजनबी वह विधि जानकर वू राज्य के राजा के पास गया और उसको वह विधि बता दी| उन दिनों वू राज्य का युएह कबीले के साथ युद्ध चल रहा था और वह भी कड़ाके की ठण्ड में इसलिए यह मरहम वू राज्य के सैनिको के बहुत काम आई और वे युद्ध जीत गए| इससे खुश होकर राजा ने उस व्यक्ति को तोहफे में एक छोटे कसबे का सरदार नियुक्त कर दिया| इसलिए हम कह सकते है चूँकि उस मरहम का उपयोग कटे हुए हाथो पर लगाना ही था पर उसका अमल हुआ अलग अलग परिस्थितयो में जिसका की वो अजनबी सही उपयोग कर पाया और वे धोबी हमेशा के लिए धोबी ही रह गए|
इसी तरह तुम उस इतने बड़े कद्दू का इस्तेमाल नदी या झील में नाव की तरह कर सकते हो जबकि तुम शिकायत कर रहे हो उसका इतना बड़ा होने की और उसको वस्तुओ के लिए अनुपयोगी होने की| लगता है तुम्हारा मन वस्तुओ की व्यर्थ इच्छाओ से भरा हुआ है|”

हुई-तजु ने ज़ुहंग्ज़ी से कहा:
"हमारे यहाँ एक पेड़ है उसका नाम ऐलान्थुस है वह इतना बड़ा और अनियमित है की उसे सीधे तौर पर मापा नहीं जा सकता और उसकी टहनियां इतनी टेढ़ी मेढ़ी है की उन्हें किसी काम के लिए भी काटा नहीं जा सकता| वह बिलकुल सड़क के किनारे ही है फिर भी कोई लकडहारा उसकी तरफ नहीं देखता है| तुम्हारे शब्द भी मुझे उस जैसे प्रतीत हो रहे है बड़े लेकिन व्यर्थ जिनका इस संसार के लिए कोई लाभ नहीं है|”

यह सुनकर ज़ुहंग्ज़ी ने कहा:

"क्या तुमने एक जंगली बिल्ली को नहीं देखा है शिकार करने के लिए इधर उधर भटकते हुए, छिपते छिपाते हुए और ऐसा करते हुए वह खुद शिकार हो जाती है जबकि एक याक हर सन्दर्भ में बड़ा होता है लेकिन अपने पुरे सामर्थ्य से वह एक चूहा भी नहीं पकड़ सकता है| इसलिए क्योंकि अब तुम्हारे पास है एक बड़ा पेड़ जिसका तुम्हारे लिए कोई उपयोग नहीं है क्यों ना तुम उसे गाँव के बाहर कही लगा दो वहाँ वह कमसे कम रास्ते में छाया के काम तो आएगा, राहगीर उसके निचे आराम तो कर सकेगे और वह किसी लकडहारे की कुल्हाड़ी से भी बचा रहेगा| औरो के लिए किसी काम का न होकर उसे कम से कम शांति और आराम तो मिलेगा|"

2. On Leveling All Things

Tsechi of Nankuo sat leaning on a low table. Gazing up to heaven, he sighed and looked as though he had lost his mind.

Yencheng Tseyu, who was standing by him, exclaimed, "What are you thinking about that your body should become thus like dead wood, your mind like burnt-out cinders? Surely the man now leaning on the table is not he who was here just now."

"My friend," replied Tsechi, "your question is apposite. Today I have lost my Self... Do you understand? ... Perhaps you only know the music of man, and not that of Earth. Or even if you have heard the music of Earth, perhaps you have not heard the music of Heaven."

"Pray explain," said Tseyu.

"The breath of the earth," continued Tsechi "is called wind. At times, it is inactive. But when active, all crevices resound to its blast. Have you never listened to its deafening roar?
"Caves and dells of hill and forest, hollows in huge trees of many a span in girth — some are like nostrils, and some like mouths, and others like ears, beam-sockets, goblets, mortars, or like pools and puddles. And the wind goes rushing through them, like swirling torrents or singing arrows, bellowing, sousing, trilling, wailing, roaring, purling, whistling in front and echoing behind, now soft with the cool blow, now shrill with the whirlwind, until the tempest is past and silence reigns supreme. Have you never witnessed how the trees and objects shake and quake, and twist and twirl?"

"Well, then," inquired Tseyu, "since the music of Earth consists of hollows and apertures, and the music of man of pipes and flutes, of what consists the music of Heaven?"

Tsechi replied "It blows on each of the thousands of things differently, but makes each of them follow their own patterns. By themselves they all attain what's right for them, so is there anyone who'd really be able to enslave them?”

Great understanding is broad and unhurried; little understanding is cramped and busy. Great words are clear and limpid; little words are shrill and quarrelsome.
When sleeping there's a connection with the spirit. When awake other shapes are revealed.

Connecting and meeting together, each day our hearts and minds compete. We may become apathetic, depressed and secretive. Small fears create worry and concern. Big fears create apathy and seclusion. They shoot out like arrows from a crossbow, trying to take control of what they determine to be Right or Wrong. They kill as easily as autumn turns to winter, using words that vanish in the course of a day. They indulge in their own motivated actions, not being able to turn away from them. Their disgust closes in on them, and they use words that have become as stagnant as sewer water. Nearly dead in their hearts, nothing can cause them to return to seeing the bright side of things. All they experience is happiness/anger, sorrow/pleasure, worry/distress, adaptability/restrictions, stress/laziness, and openness/pretense.

Enjoyment can arise from what was once empty, just like mushrooms can be produced by the vapors on the soil. Day and night naturally follow each other, and no one knows how that happens.
Let it be! Let it be! [It is enough that] morning and evening we have them, and they are the means by which we live. Without them we would not exist; without us they would have nothing to take hold of. This comes close to the matter. But I do not know what makes them the way they are. It would seem as though they have some True

Master, and yet I find no trace of him. He can act - that is certain. Yet I cannot see his form. He has identity but no form.

The hundred joints, the nine openings, the six organs, all come together and exist here [as my body]. Which part of it should I love best? Do you not cherish all equally, or have you a preference? Do these organs serve as servants of someone else? Since servants cannot govern themselves, do they serve as master and servants by turn? Surely there must be some True Lord among them. But whether I succeed in discovering his identity or not, it neither adds to nor detracts from his Truth.

"But whether or not we ascertain what is the true nature of this soul, it matters but little to the soul itself. For once coming into this material shape, it runs its course until it is exhausted. To be harassed by the wear and tear of life, and to be driven along without possibility of arresting one's course — is not this pitiful indeed? To labor without ceasing all life, and then, without living to enjoy the fruit, worn out with labor, to depart, one knows not whither — is not this a just cause for grief?"

"Men say there is no death — to what avail? The body decomposes, and the mind goes with it. Is this not a great cause for sorrow? Can the world be so dull as not to see this? Or is it I alone who am dull and others not so?"

Now if we are to be guided by our prejudices, who shall be without a teacher? What need to make comparisons of right and wrong with others? And if one is to follow one's own judgments according to his prejudices, even the fools have them! But to form judgments of right and wrong without first having a mind at all is like saying, "I left for Yueh today, and got there yesterday." Or, it is like assuming something which does not exist to exist. If you claim that what doesn't exist exists, then even the holy sage Yu couldn't understand you, much less a person like me!

Words are not just wind. Words have something to say. But if what they have to say is not fixed, then do they really say something? Or do they say nothing? People suppose that words are different from the peeps of baby birds, but is there any difference, or isn't there?

How can Tao be obscured so that there should be a distinction of true and false? How can speech be so obscured that there should be a distinction of right and wrong? Where can you go and find Tao not to exist? Where can you go and find that words cannot be proved? Tao is obscured by our inadequate understanding, and words are obscured by flowery expressions. Hence the affirmations and denials of the Confucian and Motsean schools, each denying what the other affirms and affirming what the other denies. Each denying what the other affirms and affirming what the other denies brings us only into confusion. Then the best thing to use is clarity.

Things are merely a That or a This. If you look at something as a That, it can't be seen clearly. If you have knowledge of yourself, others can be understood.
Therefore, it's been said:
"That stems from This, and This is also on account of That." That and This make comparisons about life with their own theories (There is nothing which is not this; there is nothing which is not that. What cannot be seen by what (the other person) can be known by myself. Hence I say, this emanates from that; that also derives from this. This is the theory of the interdependence of this and that (relativity of standards).

So.......
One may compare life to death; one may compare death to life;
One may compare what's suitable with what's not suitable; One may compare what's not suitable with what's suitable;
The reason there is Right is because there is Wrong,
The reason there is Wrong is because there is Right.

Therefore, a wise person doesn't follow that course of reasoning, but reflects on what comes from the heavens, using this reasoning:
This is also That. That is also This.

That has a set of Rights and a set of Wrongs. This has a set of Rights and a set of Wrongs.
Does that result in there still being a That and a This? Is the result that there is no longer a That and a This? When That and This find nothing to keep them apart - that's referred to as the pivot of Dao(This also has its 'right' and 'wrong', and that also has its 'right' and 'wrong.' Does then the distinction between this and that really exist or not? When this (subjective) and that (objective) are both without their correlates, that is the very 'Axis of Tao.)
Only when the pivot is in the middle of an unbroken ring can it respond endlessly. What's Right is part of the endless circle. What's Wrong is part of the endless circle. That's why it's been said: "You really have to be sharp-sighted."

To use a finger as a representation to show what's a finger and what's not a finger, isn't as good as using something that's not a finger as a representation of what's a finger and what's not a finger. To use a horse as a representation to show what's a horse and what's not a horse, isn't as good as using something that's not a horse as a representation of what's a horse and what's not a horse. Heaven and earth are fingers. The ten thousand things are horses.

The possible is possible: the impossible is impossible. Tao operates, and the given results follow; things receive names and are said to be what they are, things are so because they are called so. What makes them so? Making them so makes them so. What makes them not so? Making them not so makes them not so. Things all must have that which is so; Things are so by themselves and have possibilities by themselves. There is nothing which is not so and there is nothing which may not become so.

For this reason, whether you point to a small shoot of grass or a great pillar, a leper or the beautiful Hsi-shih, things ribald and shady or things grotesque and strange, the Way makes them all into one. Their dividedness is their completeness; their complete-ness is their impairment. Nothing is either complete or impaired, but all are made into one again.

Only the man of far- reaching vision knows how to make them into one. So he has no use [for categories], but relegates all to the constant. The constant is the useful; the useful is the passable; the passable is the successful; and with success, all is accomplished. He relies upon this alone, relies upon it and does not know he is doing so. This is called the Way.

But to wear out your brain trying to make things into one without realizing that they are all the same - this is called "three in the morning." What do I mean by "three in the morning"? When the monkey trainer was handing out acorns, he said, "You get three in the morning and four at night." This made all the monkeys furious. "Well, then," he said, "you get four in the morning and three at night." The monkeys were all delighted. There was no change in the reality behind the words, and yet the monkeys responded with joy and anger. Let them, if they want to. So the sage harmonizes with both right and wrong and rests in Heaven the Equalizer. This is called walking two roads.

The understanding of the men of ancient times went a long way. How far did it go? To the point where some of them believed that things have never existed - so far, to the end, where nothing can be added. Those at the next stage thought that things exist but recognized no boundaries among them. Those at the next stage thought there were boundaries but recognized no right and wrong. Because right and wrong appeared, then they really lost their way. Losing their way, they began to cherish their own accomplishments. Could there really be any sense of accomplishment while one was so lost? Could there be no sense of accomplishment while one was so lost? Feeling a sense of accomplishment while lost, clansman Chao (a famous musician) would play the lute. Not feeling a sense of accomplishment while lost, clansman Chao wouldn't play the lute

Chao Wen played the lute. Shi Kuang wielded his baton. Hui Zi leaned against a shade tree. How much did these three gentlemen know? All of them were prosperous, so they were famous for the rest of their lives. Each of them were so good at what they did that they acted like it was easy enough for anyone to have the ability to be as talented as they were. However, other people didn't have the same talents as they did, even though they had abilities in different areas. So their determination to teach others was in vain and their talent died with them. Furthermore, all of Wen's students kept fiddling with the strings for the rest of their lives, but in all that time they didn't accomplish anything. If that can be called an accomplishment, then I've also accomplished things. If that can't be called accomplishment, then neither I nor anyone else has accomplished anything. Therefore, slipping into doubt about what's dazzling, that's what a wise person uses as a map. Instead of looking for what's useful, but rather accepting that everything is simply ordinary, that's called really being sharp-sighted.

Now I am going to make a statement here. I don't know whether it fits into the category of other people's statements or not. But whether it fits into their category or whether it doesn't, it obviously fits into some category. So in that respect it is no different from their statements. However, let me try making my statement.
If there was a beginning, then there was a time before that beginning, and a time before the time which was before the time of that beginning. If there is existence, there must have been non-existence. And if there was a time when nothing existed, then there must have been a time when even nothing did not exist. All of a sudden, nothing came into existence. Could one then really say whether it belongs to the category of existence or of non-existence? Even the very words I have just now uttered — I cannot say whether they say something or not.

In the whole world there's nothing larger than the tip of an animal's hair, and a huge mountain is small. Nothing has a longer life than a stillborn child, and Peng Zu (a man who lived for eight hundred years) is young. Heaven and earth were born at the same time I was, and the ten thousand things are one with me.

We have already become one, so how can I say anything? But I have just said that we are one, so how can I not be saying something? The one and what I said about it make two, and two and the original one make three. If we go on this way, then even the cleverest mathematician can't tell where we'll end, much less an ordinary man. If by moving from nonbeing to being we get to three, how far will we get if we move from being to being? Better not to move, but to let things be!

Now Tao by its very nature can never be defined. Speech by its very nature cannot express the absolute. Hence arise the distinctions. Such distinctions are: "right" and "left," "relationship" and "duty," "division" and "discrimination, "emulation and contention. These are called the Eight Predicables.

Beyond the limits of the external world, the Sage knows that it exists, but does not talk about it. Within the limits of the external world, the Sage talks but does not make conclusions about any of it. With regard to the ancient records of the first kings (historical events), a wise person will come to their own conclusions, but not get into arguments over it. Therefore, even with detachment there is non-detachment. With disagreements, there are no arguments. One might ask: "How can that be?" A wise person holds on to what he believes, whereas everybody else argues trying to make their point.

And therefore it is said that one who argues does so because he cannot see certain points. Now perfect Tao cannot be given a name. A perfect argument does not employ words. Perfect kindness does not concern itself with (individual acts of) kindness. Perfect integrity is not critical of others. Perfect courage does not push itself forward.

For the Tao which is manifest is not Tao. Speech which argues falls short of its aim. Kindness which has fixed objects loses its scope. Integrity which is obvious is not believed in. Courage which pushes itself forward never accomplishes

anything. These five are, as it were, round (mellow) with a strong bias towards squareness (sharpness). Therefore that knowledge, which stops at what it does not know, is the highest knowledge.

Who knows the argument which can be argued without words, and the Tao which does not declare itself as Tao? He who knows this may be said to enter the realm of the spirit. To be poured into without becoming full, and pour out without becoming empty, without knowing how this is brought about — this is the art of "Concealing the Light."

A long time ago, Yao asked some questions of Shun (his prime minister), saying:
"I want to attack the states of Zong, Kuai and Xu Ao. Even though I'm sitting here on a throne with so much power, I still feel uncomfortable about it. What's causing me to feel this way?"

Shun replied:
"The rulers of those three states are still living among cottontails and mugwort (undeveloped states and thus easily conquered). How could you not feel uncomfortable? A long time ago ten suns all came out at once. All living things were exposed by that brightness, And how much greater is virtue than these suns!"

Nie Que (Cracked and Missing Teeth) asked of Wang Ni (Master of Bewilderment):
"Do you know of anything that everyone would agree is Right?"
Ni said:
"How would I know that!"
Ni Que said:
"Do you know what you don't know?"
Ni said:
"How would I know that!
Ni Que said:
"If that's true, then doesn't anyone know anything?"
Ni said:
"How would I know that! Nevertheless, I will try to tell you. How can it be known that what I call knowing is not really not knowing and that what I call not knowing is not really knowing? Now I would ask you this, If a man sleeps in a damp place, he gets lumbago and dies. But how about an eel? And living up in a tree is precarious and trying to the nerves. But how about monkeys? Of the man, the eel, and the monkey, whose habitat is the right one, absolutely? Human beings feed on flesh, deer on grass, centipedes on little snakes, owls and crows on mice. Of these four, whose is the right taste, absolutely? Monkey mates with the dog-headed female ape, the buck with the doe, eels consort with fishes, while men admire Mao Chiang and Li Chi, at the sight of whom fishes plunge deep down in the water, birds soar high in the air, and deer hurry away. Yet who shall say which is the correct standard of beauty? In my opinion, the doctrines of humanity and justice and the paths of right and wrong are so confused that it is impossible to know their contentions."
Ni Que said:
"If you don't know what's beneficial or harmful, then a fully achieved person wouldn't know what's beneficial or harmful either!"
Wang Ni replied:"
A fully achieved person is like a spirit! The great marshes could be set on fire, but she wouldn't feel hot. The rivers in China could all freeze over, but she wouldn't feel cold. Thunder could suddenly echo through the mountains, wind could cause a tsunami in the ocean, but she wouldn't be startled. A person like that could ride through the sky on the floating clouds, straddle the sun and moon, and travel beyond the four seas. Neither death nor life can cause changes within her, and there's little reason for her to even consider benefit or harm."

Qu Que Zi (Mr. Startled Squawking Bird) asked of Chang Wu Zi (Mr. Full Grown Shade Tree):

"I've heard my Master (Confucious) say that a wise person is considered to be someone who doesn't get involved in a career. They don't strive for profit, don't look to avoid bankruptcy, don't find enjoyment in competition, and have no reason to get involved in those things. There's no way to describe him, and any description of him is inadequate since he travels outside the dust and dirt (troubles of everyday life). My Master thinks that's a pretty hasty and impulsive way of looking at things, but I think it's the way of moving with mysterious Dao. How does it seem to you, my friend?"

Chang Wu Zi said:
"Even the Yellow Emperor would be confused if he heard such words, so how could you expect Confucius to understand them? What's more, you're too hasty in your own appraisal. You see an egg and demand a crowing cock, see a crossbow pellet and demand a roast dove. I'm going to try speaking some reckless words and I want you to listen to them recklessly. How will that be? "How does the Sage seat himself by the sun and moon, and hold the universe in his grasp? He blends everything into one harmonious whole, rejecting the confusion of this and that. Ordinary men strain and struggle; the sage is stupid and blockish. He takes part in ten thousand ages and achieves simplicity in oneness. For him, all the ten thousand things are what they are, and thus they (The universe itself, too, conserves and blends all in the same manner) enfold each other.

"How do I know that love of life is not a delusion after all? How do I know but that he who dreads death is not as a child who has lost his way and does not know his way home?

Lady Li was the daughter of the border guard of Ai.21 When she was first taken captive and brought to the state of Chin, she wept until her tears drenched the collar of her robe. But later, when she went to live in the palace of the ruler, shared his couch with him, and ate the delicious meats of his table, she wondered why she had ever wept. How do I know that the dead do not wonder why they ever longed for life?

"He who dreams of drinking wine may weep when morning comes; he who dreams of weeping may in the morning go off to hunt. While he is dreaming he does not know it is a dream, and in his dream he may even try to interpret a dream. Only after he wakes does he know it was a dream. And someday there will be a great awakening when we know that this is all a great dream. Yet the stupid believe they are awake, busily and brightly assuming they understand things, calling this man ruler, that one herdsman - how dense! Confucius and you are both dreaming! And when I say you are dreaming, I am dreaming, too. As for what I've said, it could be called a flight of fancy. If in all the generations to come we could meet up with someone who had such great wisdom that they knew how to explain all this, it would be like dawn and sunset occurring at the same time.

"Suppose we have an argument with each other. If you beat me instead of me beating you, are you necessarily Right and I'm Wrong? If I beat you instead of you beating me, am I necessarily Right and you're Wrong? Must one of us be Right, and the other Wrong? Could both of us be Right, and both of us be Wrong? Since If you and I don't know the answer, then other people are bound to be even more in the dark. Should we ask someone else to decide who's Right? What if we ask someone who agrees with you? Since he already agrees with you, how can he make the decision! What if we ask someone who agrees with me? Since he already agrees with me, how can he make the decision! What if we ask someone who disagrees with both of us? Since he already disagrees with both of us, how can he make the decision! What if we ask someone who agrees with both of us? Since he already agrees with both of us, how can he make the decision! Since that's so, then you and I and others wouldn't be able to come to any agreement. Do we depend on other people's opinions?

"Each changing tone of sound might be waiting for another sound to reverberate with, or it might not seem to be waiting for anything, but they're harmonized within the scope of the heavens. In that way they spread out gracefully then fade away after running their course. What's meant by being 'harmonized within the scope of the heavens?' One could say: Right may not be Right; So may not be So. If Right was no different from Non-Right, then there'd be

no reason for arguments about what was Right and what was Non-Right. If So was no different from Non-So, then there'd be no reason for arguments about what was So and what was Non-So. Forget the passage of time; forget righteousness. Vibrate with boundlessness. In that way totally dwell in boundlessness."

The Penumbra said to the Umbra, "At one moment you move: at another you are at rest. At one moment you sit down: at another you get up. Why this instability of purpose?"

"Perhaps I depend," replied the Umbra, "upon something which causes me to do as I do; and perhaps that something depends in turn upon something else which causes it to do as it does. Or perhaps my dependence is like (the unconscious movements) of a snake's scales or of a cicada's wings. How can I tell why I do one thing, or why I do not do another?" (Note: Penumbra: A space of partial illumination [as in an eclipse] between the perfect shadow on all sides and the full light. The luminous outline around a shadow.)

A while ago I, Zhuangzi, dreamed I was a butterfly. Happily absorbed in being a butterfly, I was thrilled to fly around and do what butterflies do. I didn't even know I was Zhuangzi. When I woke up, I suddenly found that I was Zhuangzi. I didn't know if I was Zhuangzi dreaming I was a butterfly, or if I was a butterfly dreaming I was Zhuangzi. There must be something that separates Zhuangzi from the butterfly. This is called the Transformation of Things.

२| सभी वस्तुओ की एकात्मकता पर

नानुको गाँव का त्सेची एक मेज पर बैठा हुआ था और स्वर्ग को ध्यान से देख रहा था तभी अकस्मात ही उसने गहरी साँस ली और उसका व्यव्हार ऐसा नीरस और उदासीन हो गया जैसे की उसने अपने किसी महत्वपूर्ण हिस्से को खो दिया है, जैसे की उसका मन कही खो गया है|

येन्चेंग त्सेयु जो की उसके साथ में ही खड़ा था उसने उससे पूछा:
"आप ऐसा क्या सोच रहे थे जिससे की आप अचानक एक मृत व्यक्ति जैसे बेजान हो गए थे और लगा की आपका मन बिलकुल नीरस हो गया था| यह निश्चित ही है की जो व्यक्ति थोड़ी देर पहले वहा मेज पर बैठा हुआ था वह व्यक्ति वो नहीं है जो अब मेरे सामने है|"

त्सेची ने कहाँ:
"मै सोचता हूँ की अभी तुम्हारे प्रश्न की उत्तर देना सही नहीं है पर फिर भी मै तुम्हे इसे कहता हूँ| उस समय मैंने स्वयं को खो दिया था, तुम समझ रहे हो ना मै क्या कह रहा हूँ| तुमने मनुष्य के स्वर को सुना होगा पर क्या तुमने कभी इस धरती के स्वर को सुना है अगर तुमने इस धरती की स्वर को भी सुना है तो क्या तुमने कभी स्वर्ग के स्वर को सुना है|"

"क्या आप विस्तार से समझायेगे" त्सेयु ने कहा|

त्सेची ने कहा:
"श्वास इस धरती का जो की कहलाता है वायु, कभी यह शांत होती है और कभी यह उदित| लेकिन जब यह प्रचंड होती है तो यह बहुत ही उग्र होती है, क्या तुमने कभी इसकी गर्जना को नहीं सुना है?
ऊँचे पहाड़, जंगल और गुफाऐ में वे इसके नाक की तरह होते है और मुख और कानो जैसे भी| उनमे से बहती हुई, गर्जना करती हुई, आर्तनाद करती हुई, दुबकी लगाती हुई, कभी सिटी बजाती हुई तो कभी गूंजती हुई| कभी मंद तो कभी बवंडर की तरह कहर मचाती है, क्या तुमने कभी नहीं देखा कैसे यह पेड़ो और विभिन्न वस्तुओ को हिलाती जुलाती हुई, तोडती मरोड़ती हुई चलती है|"

त्सेयु ने कहा:
"जैसा की आप बता रहे है की इस धरती का स्वर जो की निहित होता है गुफाओ और जंगलो में तो आप अब मुझे स्वर्ग के स्वर के बारे में भी कुछ बताये|"

त्सेची ने कहा:
"यह सभी वस्तुओ के लिए भिन्न भिन्न होता है और यह वैसा होता है जैसा की सभी वस्तुए इसे स्वयं से बनाती है| वे सभ खुद से ही जो सही होता है उसे उत्पन्न करती है उसकी रचना कर लेती है| और क्या अब भी तुम कहते हो की कोई चीज उन्हें प्रभावित कर सकती है?"

उत्क्रष्ट ज्ञान सपष्ट एव स्थिर होता है जबकि कुछ ज्ञान का होना धुंधला और चंचल होता है| महान शब्द स्पष्ट एव मधुर होते है जबकि अशिष्ट शब्द तीखे और चिडचिडे होते है| जब हम निद्रा में होते है तो हम अपनी आत्मा के साथ एकरूप होते है और जब उठ जाते है तो हमारा वस्तुओ के प्रति लगाव हो जाता है|

एक दुसरे से मिलते हुए और बाते करते हुए हम आपस में प्रतिस्पर्धा सी करते रहते है, हम एक दुसरे के प्रति उदास और रहस्यमयी रहते है| छोटा सा डर उन्हें (लोगो को) बड़ी चिंताए और दुःख देता है| बड़े डर उन्हें उदासीन और अकेला कर देते है| वे ऐसे चिल्लाते रहते है है जैसे एक कमान से तीर छोड़ा गया हो, तथा उन सभी चीजो को अपने नियंत्रण में करना चाहते है जिन्हें वे सही और गलत के नाम से पुकारते है| वे हत्या करते है इतनी आसानी से जैसे की दिन रात में बदल जाता है, और बोलते है तीखे निरर्थक शब्दों को| वे खुद की वासनाओ में ही आसक्त हो चुके है और अब उनसे बाहर नहीं आना चाहते| वे एक दुसरे से नफरत करते है और एक दुसरे के प्रति ज़हरीले वाक्य कहते है| वे ह्रदय से मर चुके है और अब उन्हें चीजो को सार्थक नजरिये से जानना कोई नहीं सिखा सकता| वह सभ जिसे वे अनुभव करते है होता है केवल सुख या दुःख, ख़ुशी या गुस्सा, अनुकूलता या बंदिशे, उदासीनता और आलस्य, ढोंग और दिखावे|

खुशियाँ आती है उनसे जिन्हें हम कभी निरर्थक समझते है जैसे की एक मशरुम केवल मिटटी की विषाद से उत्पन्न हो जाता है| दिन और रात स्वाभाविक रूप से एक दुसरे का अनुकरण करते है और कोई नहीं जनता की यह सभ कैसे होता है|
इसे ऐसे ही होने दो! इसे ऐसे ही रहने दो! हमारे पास दिन और रात तो है{क्या यह काफी नहीं है}, और ये वही चीजे है जिनसे हम जिंदा रहते है| इनके बिना हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं है; और हमारे बिना उनके लिए क्या कार्य है; अब यह मुददे के निकट आता प्रतीत हो रहा है| पर मै नहीं जानता की उन सभ को ऐसा कौन बनाता है| ऐसा लगता है की इनको बनाने वाला इनका कोई एक अटल स्वामी है फिर भी मै उसको जान नहीं पा रहा हूँ| यह निश्चित है की उसी से यह सभ हो रहा है पर उसका मुझे उसका कोई रूप प्रतीत नहीं हो रहा है| मै उसको जानकर भी नहीं जान पा रहा हूँ|

शरीर के सभी एक सौ जोड़, नौ द्वार और सभी अंग ये सभी समन्वय से कार्य करते है और मेरे शरीर के रूप में प्रकट है| तो क्या मुझे इनमे से किसी एक अंग को ज्याद महत्व देना चाहिए? क्या तुम सभको बराबर नहीं समझते हो या फिर किसी एक को ज्यादा महत्व देते हो? या फिर ये सभी अंग किसी अन्य के लिए कार्य करते है? चूँकि ये खुद से ऐसे कार्य नहीं कर सकते है, तो क्या ये किसी स्वामी के लिए कार्य कर रहे है और उसी के लिए ऐसे इस प्रकार बने हुए है? निश्चित ही इन सभके बीच कोई अटल स्वामी है जिसे मै जान नहीं पा रहा हूँ| पर मै उसे चाहे पहचान पाऊ या फिर नहीं इससे उस सत्य के होने को कोई फर्क नहीं पड़ता है|

लेकिन चाहे हम आत्मा का सच्चे स्वरूप का पता लगा पाए या नहीं यह उस आत्मा के लिए ज्यादा महत्व नहीं रखता है| एक बार हमारे इस नश्वर शरीर में आ जाने के बाद यह अपने प्रवाह में तब तक चलता है तब तक की यह समाप्त नहीं हो जाता है| ज़िन्दगी के सुख दुखो को सहते हुए यह प्रवाह एक तेज घोड़े की तरह दौड़ता नजर आता है और कोई इसे रोक नहीं सकता है| क्या यह बहुत ही दयनीय नहीं है? ऐसे ही ज़िन्दगी के अंत तक मेहनत करते रहना, पसीना बहाते रहना बिना किसी सफलता की उम्मीद के| ऐसे ही संघर्ष करते रहना बिना किसी चीज़ को जाने, क्या यह बेतुका नहीं है?

मनुष्य अमर होने को सोचता है, लेकिन क्या हासिल करने के लिए? यह शरीर नष्ट हो जाता है और मन इसके साथ चला जाता है, क्या यह उसे उदास नहीं करता है? क्या यह संसार संवेदनाशुन्य हो गया है जो इस चीज़ को समझ नहीं पा रहा है या फिर केवल मै ही इस सभ में ज्यादा संवेदनशील हो गया हूँ|

अगर मनुष्य का मार्गदर्शन उसके खुद के ज़मीर से हो तो कौन रह जाता है बिना मार्गदर्शन के? हमे क्या ज़रुरत है खुद के ज्ञान की औरो के साथ तुलना करने की? मनुष्य और ज्यादा ज्ञान पाने के लिए उस ज्ञान को दुसरो में ढूंढता है{बल्कि ज्ञान तो मूर्खो में भी होता है } और स्वयं में समाविष्ट सच्चे ज्ञान को भुला देता है| वास्तव में सही और गलत के वास्तविक स्वरुप को जाने बिना यह निर्णय करना की सही क्या है गलत क्या है यह तो ऐसे हुआ जैसे आज कही जाने के लिए निकलना और कल वहा पर पहुचना{जबकि पहुचना तो आज था} या फिर किसी अवास्तविक वस्तु को वास्तविक मानना| अगर आप ऐसा करते हो तो आपको महान ज्ञानी यु भी नहीं समझ पायेगा, तो फिर मेरे जैसा तो कर भी क्या सकता है|

शब्द केवल हवा की तरह नहीं होते है, उनके होने का कुछ तात्पर्य होता है| पर जब उनका अर्थ निर्धारित नहीं होता है तो क्या वास्तव में उनका कोई तात्पर्य रह जाता है| और ये लोग इन शब्दों को चिड़िया की ची-ची चु-चु से अलग समझते है| क्या वास्तव में उनमे(लोगो मे और चिड़िया में) कोई भेद रह जाता है?

ताओ इतनी अस्पष्ट और आच्छादित क्यों हो गयी है की सही और गलत में भेद उत्पन्न है? शब्द इतने अस्पष्ट और आच्छादित क्यों हो गए है की उनके अर्थ में सही और गलत की असहमति होती है? क्या कोई जगह है जहा ताओ नहीं है? क्या कोई शब्द है जिनका सही और गलत कोई अर्थ नहीं है? ताओ इतनी आच्छादित हो गयी है हमारी सांसारिक सोच से, हमारी अपर्याप्त समझ से जो की केवल सही और गलत जानना चाहती है| जबकि शब्द आच्छादित हो गए है उनमें छिपे हुए दिखावे से| इसी कारण आज ये इतनी सारे मत उत्पन्न हो गए है इनमे कोई कॉनफूसीअस है तो कोई मोइस्त है और वे आपस में एक दुसरे के मतों को काटने में लगे हुए है| जो एक कहता है उसे दूसरा गलत मानता है और जो दूसरा कहता है उसे पहला गलत मानता है| ऐसा करना केवल भ्रान्ति और भर्म उत्पन्न करता है| तब इन सभसे निपटने का एक ही रास्ता बचता है और वह है सपष्टता|

वस्तुओ का केवल यह या वह होना ही मात्र नहीं होता है| जब आप एक वस्तु को केवल इस यह {या फिर उस वह} केवल एक नजिरये से देखते हो तो आप वास्तविकता से परे होते हो| अगर आप स्वयं को समझ लेते हो तो बाकि चीजो को आप आसानी से समझ लेते हो इसीलिए यह कहा गया है:

"जो ‘यह’ है उसकी उत्पत्ति ‘वह’ से होती है और ‘वह’ होने का कारण ‘यह’ से होता है| ‘यह’ में और ‘वह’ में भेद करने के कारण ही विभिन्न सिद्धांतो की उत्पत्ति होती है {जबकि ऐसी कोई वस्तू ‘यह’ नहीं है जो ‘वह’ नहीं है और ऐसी कोई ‘वह’ नहीं है जो ‘यह’ नहीं है}| कोई दूसरा मेरे बारे में नहीं जान सकता जो मै स्वयं खुद के बारे में जानता हूँ| इसीलिए मै यह कहता हूँ की इस ‘यह’ की उत्पत्ति ‘वह’ में से है और ‘वह’ के होने का कारण ‘यह’ से है| यही सिद्धांत है वस्तुओ की परस्पर निर्भरता का {सापेक्षता का सिद्धांत}|

इसीलिए
आप तुलना कर सकते है जीवन की मृत्यु से और मृत्यु की जीवन से|
आप कर सकते है तुलना जो उपयोगी है उसकी अनुपयोगी से और जो अनुपयोगी है उसकी उपयोगी से|
अच्छाई के होने का कारण यह है की बुराई भी है और बुराई के होने का कारण है की अच्छाई भी है|

इसीलिए एक बुद्धिमान व्यक्ति किसी वस्तु के प्रति तर्क वितर्क का रास्ता नहीं चुनता बल्कि जो निर्धारित है उसी को परावर्तित करता है क्योकि वह यह बात जनता है की ‘यह’ का होना है ‘वह’ का भी होना और ‘वह’ का होना है ‘यह’ का भी होना|

जो ‘यह’ है उसके पास होता है अपना सही या गलत का समूह और जो ‘वह’ है उसके पास भी अपने सही या गलत का समूह होता है| मतलब ‘यह’ के पास भी अपने सही या गलत होते है और ‘वह’ के पास भी अपने सही और गलत होते है| क्या इसका परिणाम है की अब भी ‘यह’ और ‘वह’ का अस्तित्व है या फिर क्या इस सबका परिणाम है की अब ‘यह’ और ‘वह’ का कोई अस्तित्व नहीं है? जब ‘यह’ और ‘वह’ में पृथकता का कोई कारण नहीं रह जाता और वे एकरूप हो जाते है तब इसे ही कहते है ताओ का प्रवाह केंद्र या उसकी धुरी और जब धुरी सही तरह से चक्र में समाविष्ट होती है तभी वह निरंतर किर्यान्वित रहता है तथा सही और गलत इसी अंतहीन चक्र के भाग होते है| इसीलिए यह कहा गया है की इसको समझने के लिए आपको बहुत ही ज्यादा ध्यान और आत्मज्ञान की ज़रुरत है|

एक ऊँगली को उदहारण के तौर पर पेश करना यह दिखाने के लिए की क्या एक ऊँगली का होना होता है और क्या एक ऊँगली का नहीं होना होता है, तब यह अच्छा नहीं होता है उससे जब हम प्रस्तुत करते है एक वस्तु को जो की एक ऊँगली नहीं है यह दिखाने के लिए की क्या एक ऊँगली का होना होता है और क्या एक ऊँगली का नहीं होना होता है|
एक घोड़े को उदहारण के तौर पर पेश करना यह दिखाने के लिए की क्या एक घोडा होता है और क्या एक घोडा नहीं होना होता है, तब यह अच्छा नहीं होता है उससे जब हम प्रस्तुत करते है एक अन्य वस्तु को जो की एक घोडा नहीं है यह दिखाने के लिए की क्या एक घोडा होता और क्या एक घोडा नहीं होना होता है| पृथ्वी और स्वर्ग इन उंगलियों की तरह है और बाकि दस हज़ार वस्तुए घोड़ो की तरह है|

जो संभव है वह संभव है और जो असंभव है वह असंभव है| ताओ चलती रहती है और परिणाम उसका अनुकरण करते है| वस्तुओ को नाम दिया जाता है, और जो वे होती है उन्हें वह कहा जाता है, वे ऐसे होती है क्योंकि उन्हें ऐसा कहाँ जाता है| ऐसा उन्हें कौन बनाता है? उन्हें ऐसा बनाना उन्हें ऐसा बनाता है| उन्हें ऐसा नहीं होना कौन बनाता है? उन्हें ऐसा नहीं होना उन्हें ऐसा नहीं होना बनाता है| वस्तुओ के पास जरूर होता वह जो उन्हें ऐसा बनाता है, वे ऐसे होती है खुद से और उनमे ऐसा होने की सम्भावनाए भी खुद से होती है| कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो की ऐसी नहीं है और कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो की ऐसी नहीं बन सकती है|

इसी प्रकार चाहे तुम एक घास के तिनके को विशिष्ट करो या फिर बड़े स्तंभ को, एक कोढ़ी को या फिर खुबसूरत हसी-शिह(एक महिला जो जानी जाती थी अपनी खूबसूरती के लिए) को, साधारण को या फिर अद्भुत को लेकिन ताओ इन सभ को एकरूप कर देती है| उनकी पृथकता उनकी पूर्णता है और उनकी पूर्णता उनकी पृथकता है| कोई वस्तु पूर्ण या फिर पृथक नहीं है, पर सभी वस्तुए एकरूप ही होती है| वस्तुओ में पृथकता को देखने से उनका परिणाम होता है और परिणाम के होने से फिर से उनका होना होता है|

एक दूरदृष्टि वाला व्यक्ति ही जान पता है की वो कैसे एक(एकरूप) होती है इसीलिए उसके लिए वस्तुओ के वर्गीकरण का कोई उद्देशय नहीं रहता बल्कि वह इसे उनकी स्वाभाविक प्रवृति समझकर उन्हें एक ही सत्य मानता है| वह उनके महत्व को नहीं देखता बल्कि उन सभको साधारण मानकर चलता है, क्योंकि महत्व के होने से ही कोई वस्तु अधिक महत्वपूर्ण या कम महत्वपूर्ण बनती है| इसीलिए केवल यही सत्य ही महत्वपूर्ण है, जो महतवपूर्ण है वही स्वीकार्य है, जो स्वीकार्य है वही सफल है

और जो सफल है वही प्रमाणित है| वह व्यक्ति इसी पर निर्भर होता है और इस पर निर्भर होते हुए वह नहीं जानता की वो इस पर निर्भर है| और यही कारण है की वह इस सत्य में समाविष्ट हो पाता है|

अपनी बुद्धि का उपयोग करना सभी वस्तुओ को एक मानने की कौशिश में यह समझे बिना की वे तो पहले से ही एक है - यह तो पुरानी बंदरो की कहानी जैसा है जिसमे एक बंदरो का प्रशिक्षक उन बंदरो को खाना देते हुए कहता है:'तुमको तीन केले सुबह मिलेगे और चार केले रात को' इसे सुनकर सभी बन्दर गुस्सा हो जाते है, तो वह फिर कहता है 'ठीक है तुमको चार केले सुबह मिलेगे और तीन केले रात को' यह सुनकर सभी बन्दर फिर से खुश हो जाते है| यहाँ पर शब्दों की वास्तविकता में कोई बदलाव नहीं हुआ पर फिर भी बंदरो ने ख़ुशी और दुःख के भाव प्रकट किए| उन्हें करने दो अगर वे चाहते है तो| एक साधू हमेशा सही और गलत दोनों में सामंजस्य स्थापित कर संतुलन बनाये रखता है| इसी को कहते दो रास्तो पर एक साथ चलना|

प्राचीन काल के व्यक्तियों की सोच बहुत ही गहण थी| वह कितनी गहण थी? - उस सीमा तक जहाँ उनमे से कुछ तो मानते थे की वस्तुओ का कोई अस्तित्व ही नहीं है, कुछ नहीं है और ना ही कुछ हो सकता है| उससे अगली सोच वाले वे थे जो वस्तुओ के अस्तित्व को तो मानते थे पर उनके लिए सही और गलत का कोई भेद नहीं था| फिर वो आये जो सही और गलत में भेद करते थे| क्योंकि वे सही और गलत में भेद करते थे तभी वे रास्ते से भटक गए| और रास्ते से भटककर वे खुद की उपलब्धियों का गुणगान करने लगे| क्या इन उपलब्धियों का वास्तव में कोई अर्थ रह जाता है जब कोई अपने मार्ग से इतना भटक जाता है| संगीतकार चाओ विणा बजाता था - यह मार्ग रहित होकर भी इन उपलब्धियों का आभास रहता है इसका उदहारण है| संगीतकार चाओ विणा नहीं बजाता था - यह मार्ग रहित होकर इन उपलब्धियों का आभास नहीं रहता है इसका उदहारण है|

चाओ वेन विणा बजाता था; शी कुवांग लाठी घुमाता था और हुई-झी पेड़ पर रहता था| हम इन तीनो के बारे में क्या जानते है? - ये सभी अपने हुनर में संपन्न लोग थे और इसी कारण बाकि लोगो इनकी कुशलता का गुणगान करते नहीं थकते है| ये जो करते थे उसमे ये बहुत ही निपुण थे| उनमे अपने कार्य के प्रति इतनी प्रतिभा थी कोई भी उनकी प्रतिभा का मुकाबला नही कर सकता था| अगर किसी के पास इतनी प्रतिभा होती भी तो वह कम से कम उनके क्षेत्र में तो उनसे मुकाबला कभी नहीं कर पाता| वे अपनी कला में इतने कुशल थे की उसे करते वक़्त खुद को भूल जाते थे और उस कार्य में ही समाविष्ट हो जाते थे| क्योंकि वे अपनी कला से बहुत प्यार करते थे इसीलिए वे इसे औरो को भी सिखाना चाहते थे लेकिन वे इसे किसी को भी नहीं सिखा पाए| इसलिए क्योंकि वे लोगो को वह सिखाना चाहते थे जो उनमे प्राकृतिक रूप से था, उनका स्वाभविक गुण था| केवल इसी कारण ही वे अपनी कला को किसी को सिखा नहीं पाए और उनकी कला उन्ही के साथ ख़त्म हो गयी| इसके साथ ही चाओ वेन के शिष्य ज़िन्दगी भर विणा के तार को खीचते रहे पर कभी वो उसमे कुशल नहीं हो पाये| अगर इसे ही सफलता कहते है तो मै कहता हूँ की मै भी सफल हूँ| और अगर इसे सफलता नहीं कहते है तो न तो मै सफल हूँ और न ही कोई और सफल है| इसीलिए एक बुद्धिमान व्यक्ति चकाचोंध करने वाली वस्तुओ में आसक्त नहीं होता है बल्कि हर वस्तु को साधारण ही समझता है| इसीको तो कहते है वास्तव में सूक्ष्म दृष्टि होना|

अब मै एक कथन कहता हूँ| मै नहीं जानता की यह बाकि लोगो की कथन की परिभाषा के अनुसार है या नहीं| पर चाहे यह उनके अनुसार हो या नहीं पर यह किसी के अनुसार तो होगा ही और अगर यह किसी की भी कथन की परिभाषा के अनुसार है तो निश्चित ही यह कथन बाकि कथनों से भिन्न नहीं है| कुछ भी हो, चलो मै इसे कहता हूँ|
अगर इस ब्रह्माण्ड का कोई आरंभ है तो उस आरंभ के पहले का भी कोई समय होगा और अगर कोई आरंभ के आरंभ का समय है तो उसके भी आरंभ का समय होगा| अगर हमारा अस्तित्व है तो हमारा अस्तित्व नहीं भी होगा| और अगर उस समय का अस्तित्व है जब कुछ नहीं था तो उस समय का भी अस्तित्व होगा जब कभी भी कुछ भी नहीं था| तब अचानक ही कुछ नहीं होने का अस्तित्व आ गया| क्या कोई समझ पा रहा की क्या यह अस्तित्व होने या अस्तित्व ना होने - किससे संबंध रखता है? जबकि मै भी नहीं कह सकता की जो कथन मैंने कहा है वास्तव में वह कुछ कह रहा है या नहीं|

इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में ऐसा कुछ भी नहीं है जो एक जीव के रोम से बड़ा हो, एक पर्वत भी उससे छोटा है| और ऐसा कोई भी नहीं है जो ज्यादा जिए एक अजन्मे शिशु से| और हम कह सकते है की पेंग-झु{जिसे जाना जाता है अपनी लम्बी आठ सौ सालो की उम्र के लिए} वह भी एक अल्पायु था| तथा यह भी कह सकते है की पृथ्वी और स्वर्ग भी मेरे साथ ही जन्मे है| मै और दस हज़ार वस्तुए सभी एक ही है|

हम तो एकरूप हो चूके हूँ तो मै कुछ कैसे कह सकता हूँ? - पर अभी तो मैंने कहा की हम एक हो चुके है तो यह कैसे हो सकता है की मै कुछ नहीं कह रहा हूँ? - जो एक है और उसके बारे में जो भी मैंने कहा है ये मिलकर दो बन जाते है और ये दो और जो सबसे पहले कहा था उसे मिलाकर तीन बन जाते है| अगर हम ऐसे ही चलते रहे तो इसके अंत को कोई बुद्दिमान गणितज्ञ भी नहीं बता सकता फिर मेरे जैसा साधारण व्यक्ति तो कर ही क्या सकता है| कुछ न होने से कुछ होने की स्थिति तक पहुचने में ही हम तीन हो जाते है तो फिर तब कितने होगे जब हम कुछ होने से होने की स्थिति में ही जायेगे| अच्छा होगा की हम और आगे न बढे बल्कि जैसा है वैसा उसे रहने दे|

ताओ अपने निहित गुण के कारण परिभाषित नहीं हो सकती है| शब्द अपने निहित गुण के कारण परमतत्व का व्याखान नहीं कर सकते है| यही से विभिन्नताओं की उत्पत्ति होती है - वे है सही और गलत, रिश्ते और कर्तव्य, पृथकता और भेदभाव, चेष्टा और संतोष| इन्ही को ही आठ विषमताए कहा जाता है|

इस संसार के बंधनों से परे एक साधू जानता की वह {परमतत्व} है, पर तब वह उसके बारे में बात नहीं करता है| जबकि इस संसार की मर्यादा(बंधनों) में रहकर वह उसकी बात करता है पर तब वह उसके बारे में निष्कर्ष व् सिद्धांत नहीं निकालता है| अगर हम बात करे सबसे प्राचीन तथ्यों की तो एक साधू अगर अपने निष्कर्ष और सिद्धांत मानता भी है तो तब वह उन पर वाद विवाद नहीं करता है| इसीलिए वैराग्य के साथ वैराग्य का नहीं होना भी है और मतभेद के साथ मतभेद का नहीं होना भी है| कोई यह भी पूछ सकता है की यह यह कैसे हो सकता है| पर एक साधू हमेशा संयमित रहता है जिस पर वह विश्वास करता है जबकि बाकि लोग अपने मत को सही ठहराने के लिए तर्क वितर्क करते रहते है|

इसीलिए कहा गया है जो वाद विवाद करते है वो यथार्थ को नहीं जानते, वे केवल अपने नजरिय्र से किसी चीज़ को देखते है और उस पर वाद विवाद करते है| जैसे पुर्णभुत ताओ को नाम नहीं दिया जा सकता है वैसे ही आदर्श तर्क होता है बिना शब्दों का, वह मौन है| तथा एक सच्चा दयालु वह होता है जो खुद को दयालुता के साथ ना जोड़े| सम्पूर्ण अखंडता वह होती है जो औरो के लिए महत्वपूर्ण ना समझी जाये| और एक सच्चे साहसी आदमी को घमंड नहीं होता है|

ताओ के संदर्भ में जो व्यक्त है वह ताओ नहीं है| शब्द जो तर्क करते है, अपने अर्थ से भटक जाते है| दयालुता जो किसी एक चीज़ की लिए निर्धारित हो, ख़त्म हो जाती है| अखंडता जो स्पष्ट हो उस पर विश्वास नहीं किया जाता है| एक साहसी व्यक्ति जिसको को खुद पर घमंड हो कुछ हासिल नहीं कर सकता है| ये सभ तो ऐसे होते जैसे नर्म हो पर उनका झुकाव कठोरता की तरफ हो| इसिलिय ज्ञान जो रुक जाये वहा जाकर जहाँ वह कुछ नहीं जानता हो वही परम ज्ञान है|

जो जानता है उस तर्क को जो की बिना शब्दों के हो और ताओ को जिसकी कोई परिभाषा न हो वही अपनी आत्मा की गहराइयो तक पंहुचा हुआ होता है| वह तो एक ऐसे पात्र की तरह होता है जिसमे कुछ भी डाले पर वो भरे नहीं और चाहे उसमे से कुछ भी निकले पर वो खाली न हो पाए तथा वह जानता भी ना हो की यह सभ कैसे हुआ, इसी को तो कहते है ज्ञान का परमप्रकाश होना|

बहुत समय पहले की बात है राजा याओ ने अपने मंत्री शुन से कुछ प्रश्न पूछे|
राजा याओ ने कहा:
"जोंग, कुवाई और क्सु राज्य पर मै हमला करना चाहता हूँ| मै यहाँ बैठा हुआ हूँ इतने बड़े शक्तिशाली राज्य के सिंहासन पर, फिर भी मै इसके बारे में मैं सहज महसूस नहीं कर रहा हूँ और मन विचलित हो रहा है| मेरे इतना विचलित होने का क्या कारण हो सकता है|"

शुन ने कहा:
"इन राज्यों के लोग अब भी बहुत गरीब है और वे अपना जीवन निर्वाह भी मुश्किल से कर पाते है, आप उन्हें कभी भी कैसे भी हरा सकते है| फिर भी आप जैसा शक्तिशाली राजा ऐसा असहज कैसे हो सकता है? बहुत समय पहले दस सूर्य एक साथ आसमान में निकले| उनके तेज से सभी जीव प्रकाशमय हो गए तो क्या अब आप सामर्थ्य को उनसे ज्यादा सोचते है!"

नी-कउए ने वांग-नि से पूछा:
"क्या तुम किसी भी ऐसे चीज़ के बारे में जानते हो जिससे सभी सहमत हो?"

वांग-नि ने कहा:"मै कैसे जान सकता हूँ?"

नी-कउए ने पूछा:"क्या तुम जान सकते हो जिसे तुम नहीं जानते हो?”

वांग-नि ने कहा:"मै कैसे जान सकता हूँ?”

नी-कउए ने पूछा:
"क्या यह यथार्थ है की कोई कुछ नहीं जानता है?"

वांग-नि ने कहा:
"मैं यह कैसे जान सकता हूँ फिर भी मै आपको बताने का प्रयत्न करुगा| मै यह कैसे जान सकता हूँ की जिसे मै वास्तव में जानना कहता हूँ वो नहीं जानना नहीं है? और जिसे मै नहीं जानना कहता हूँ वो वास्तव में जानना नहीं है?
अब मै आपसे यह पूछता हूँ अगर कोई व्यक्ति एक बड़े पेड़ के निचे सोता है और एक शूल लगने के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है| लेकिन इस स्थिति में यदि एक बन्दर हो जो उसी पेड़ पर रहता हो तो तब उसके लिए आप क्या कहेगे? तब उस व्यक्ति और बन्दर में से किसने रहने के लिए सही स्थान चुना है?
यह स्पष्ट है की मनुष्य अन्न खाता है , हिरण घास खाता है, नेवला छोटे सांप खाता है, वैसे ही सांप चूहे खाता है| इनमे से सबसे ज्यादा स्वादिष्ट क्या है?
यह स्पष्ट है की एक बन्दर को पसंद होती है एक मादा बन्दर, एक हाथी को पसंद होती है एक हथिनी, एक घोड़े को पसंद होती है घोड़ी वैसे ही एक मनुष्य को पसंद होती है माओ-चिंग और ली-ची जैसे सुंदर स्त्रिया जिनकी आह से ही मछलिय गहरे पानी में गोते लगाने लगाती है, पक्षी आसमान में उड़ने लगते है और हिरण आसपास दौड़ने लगते है| तब भी कौन बता सकता है की इनमे से किस को सुंदर माना जाये?
मेरी राय में मानवता और न्याय के मतों में और सही और गलत में इतनी भ्रान्ति उत्पन्न है की उनके बिच की स्पर्धा को समझना बहुत मुश्किल है|

नी-कउए ने पूछा:
"अगर तुम नहीं जानते हो की क्या लाभदायक है और क्या हानिकारक तो क्या एक सिद्धपुरुष भी नहीं जानता होगा लाभ और हानि के बारे में|

वांग-नि ने कहा:
"एक सिद्ध परुष एक पवित्र आत्मा की तरह होता है| बड़े से बड़े जंगल अग्नि से जलकर राख हो सकते है पर अग्नि उसको छु भी नहीं पायेगी| सर्दी से सारे चीन की नदिया जम सकती है पर उसे थोड़ी सी भी सर्दी नहीं लगेगी| गर्जना से पर्वत कांप उठते है और तेज आंधी से समुंद्र में सुनामी आ जाती है पर इनसे वह जरा सा भी विचलित नहीं होगा| ऐसा व्यक्ति हवा में बहते बादलो के ऊपर चल सकता है, सूरज और चाँद तक भी पहुचने की चेष्टा कर सकता है और वह चारो महासागरो से भी परे यात्रा कर सकता है| जन्म और मृत्यु उसमे कोई परिवर्तन नहीं कर सकते है और उसके लिए लाभ और हानि का थोडा सा भी महत्व नहीं होता है|”

कुय-कउए-ज़ि ने चांग-वू-ज़ि से पूछा:
“मैंने अपने गुरु कॉनफूसीअस को कहते हुए सुना है की एक एक बुद्धिमन व्यक्ति कभी किसी कार्य में निहित नहीं होता है| वे मुनाफे के लिए संघर्ष नहीं करते अपनी गरीबी को मिटाने के लिए| उन्हें कोई ख़ुशी नहीं मिलती है प्रतिस्पर्धा करने में तथा उनके पास कोई कारण नहीं होता है इन सभ में शामिल होने का| उनका वर्णन कैसे किया जाए इसके लिए कोई शब्द नहीं है तथा कोई भी शब्द उनके बखान के लिए पर्याप्त नहीं है इसलिए क्योंकि वे सभ इस सांसारिक मोह माया से दूर है| मेरे गुरू सोचते है की यह बहुत ही गलत और अव्यवहारिक तरीका है वस्तुओ के अवलोकन करने का पर मै सोचता हूँ की यही तो रास्ता है रहस्यमयी ताओ के साथ होने का| तुम इसे कैसा समझते हो मेरे मित्र?"

चांग-वू-ज़ि ने कहा:
"येल्लो सम्राट भी ऐसे वाक्य सुनकर भर्मित हो सकता है तो तुम कैसे सोच सकते हो की कॉनफूसीअस इन्हें समझ सकता है? क्या तुम भी इसका मूल्यांकन करने में बहुत जल्दबाज नहीं हो? तुम कोई भी अंडा देखकर उसमे से एक शानदार मुर्गे की इच्छा

रखते हो और सिर्फ एक तीर कमान को चलता देख कबुतर के शिकार की उम्मीद रखते हो| मै तुम्हे कहने जा रहा हूँ कुछ अविचारू वाक्य और तुमको भी उन्हें ऐसे ही समझना होगा| यह कैसे हो सकता है? - एक साधू स्वयं को सूर्य और चंद्रमा की तरह कैसे देख सकता है| वह ऐसे इस ब्रह्माण्ड को कैसे नियंत्रित कर सकता है? - वह सभी वस्तुओ को एकात्मक कर देता है, यह वस्तु 'यह' है और यह 'वह' है इसका भरम मिटाकर| साधारण मनुष्य जोर लगाते है और संघर्ष करते है जबकि एक साधू एक बेवकूफ और मुर्ख की तरह व्यवहार करता है| वह दस हज़ार वस्तुओ के साथ सामंजस्य रखता है और उनमें एकात्मकता प्राप्त करता है| उसके लिए तो ये दस हज़ार वस्तुए वही होती है जो की वे है और इस प्रकार वे वस्तुए और यह ब्रह्माण्ड भी उसके साथ ऐसे ही तरीके से स्थित होते है {वे स्वयं उस साधू के साथ एकात्मक होते है}|"

आखिरकार तुम यह कैसे जान सकते हो की जीवन का मोह एक प्रकार की भ्रान्ति नहीं है? मै ये कैसे जानता हूँ की वो जो मृत्यु से डरता है वह होता है एक गुम हुए बच्चे की तरह जो अपने घर वापस जाने का रास्ता नहीं जनता हो|

राज्य की सीमाओ के रक्षक अई की बेटी थी सुंदर 'ली', लेकिन जब उसे बंदी बनाकर चेइन राज्य में लाया गया तो वह रोई जब तक की उसके आसू न सुख गए| लेकिन जब उसे राजा के महल में रहने के लिए ले जाया गया और जब उसे सोने के लिए गर्म बिस्तर मिले और खाने के लिए अच्छा खाना तो उसे आश्चर्य हुआ की वह इतनी क्यों रोई| फिर मै यह कैसे जान सकता हूँ की मुर्दे भी आश्चर्य चकित होते होगे यह सोचकर की हम इतना क्यों जीये?

जो रात को सपने देखता है बढ़िया मदिरा के वो सुबह उठकर रो भी सकता है और जो सपने देखता है रोने के वो सुबह उठकर शिकार पर भी जा सकता है| क्योंकि जब वह सपने देख रहा होता है तो वह नहीं जानता है की वो सपना देख रहा है और वह अपने स्वप्न में भी एक और स्वप्न देख सकता है| जब वह जागता है तभी उसे अनुभव होता है की यह एक सपना था| और एक दिन वह इस तरह जागेगा की उसे अनुभव होगा के यह सब ज़िन्दगी एक स्वप्न थी| यह जानते हुए भी एक मुर्ख सोचता है की वह जागा हुआ है और शान से ज़िन्दगी को समझना चाहता है, किसी मनुष्य को राजा कहता है तो किसी को गुलाम - कितना अजीब है ना?
कॉनफूसीअस और तुम दोनों एक स्वप्न देख रहे हो| और जब मै कहता हूँ की तुम स्वप्न देख रहे हो तब मै भी एक तरीके से स्वप्न देख रहा होता हूँ और अब तक जो भी मैंने कहा है यह मेरी कल्पना की कल्पना भी हो सकती है| अगर सभी पीढियों में(जो आ चुकी, जो है और जो आनेवाली है) हम मिले एक ऐसे व्यक्ति से जिसके पास हो इतना ज्ञान की यह सभ बाते वह हमको समझा सके तो यह सूर्योदय और सूर्यास्त के एक साथ होने जैसा होगा|

मानो की हम दोनों एक दुसरे से तर्क करते है| यदि तुम मुझे उस तर्क में हरा देते हो मेरे तुमको हराने की जगह तो इसका मतलब की तुम सही हो और मै गलत? लेकिन अगर मै तुमको उस तर्क में हरा देता हूँ तो इसका मतलब मै सही हूँ और तुम गलत| तो क्या तब हम में से कोई एक तो जरूर सही होना चाहिए और कोई एक जरूर गलत? यदि हम दोनों ही सही हो या हम फिर हम दोनों ही गलत हो तो? क्योंकि अब हम से ना तो तुम और ना ही मै इसका जवाब जानते है तो और लोग तो पहले से ही अंधकार में खोये हुए है| क्या हमे इसका निर्णय किसी और से करवाना चाहिए? तब क्या हमने जिससे पूछा हो वो तुम्हे सही बताए? चूँकि वो अब तुम्हे ही सही मानता है तो वह इसका सही ढंग से निर्णय कैसे कर सकता है? तब क्या जब हमने जिससे पूछा हो वो मुझे सही बताए? चूँकि वो अब मुझे ही सही मानता है तो वह इसका सही ढंग से निर्णय कैसे कर सकता है? तब क्या, जब वो हम दोनों से ही सहमत हो? चूँकि वो अब हम दोनों से ही सहमत है तो वह इसका सही निर्णय कैसे कर सकता है? चूँकि अब हम दोनों ही किसी निर्णय पर सहमत नहीं हुए है तो क्या हमे और लोगो के मतों पर निर्भर रहना चाहिए?

हर बदलती संगीत की धुन का इंतजार करती है कोई नई धुन उसकी जगह लेने के लिए और कई बार वो किसी का इंतजार ना करती हुई भी प्रतीत होती है लेकिन वह तब भी स्वर्ग के मधुर सानिध्य में होती है| इस तरह वे अपने पथ पर अच्छी तरह सुशोभित होती है और फिर अपना कार्य पूर्ण कर समाप्त हो जाती है|"स्वर्ग के सानिध्य में होना"इससे से क्या मतलब है? कोई कह सकता है की जो सही है वह सही नहीं है, जो है वह नहीं है| अगर सही होना भिन्न ना हो सही ना होने से तो सही और गलत पर तर्क वितर्क करने का कोई तात्पर्य नहीं रह जाता है| अगर जो है वो भिन्न ना हो उससे जो नहीं है तो जो है और जो नहीं है उस पर वाद विवाद करने का कोई तात्पर्य नही रह जाता है|

एक बार पेनुम्बरा ने उम्बरा से पूछा:
"एक समय तो तुम गती में होती हो और अगले ही क्षण तुम स्थिर होती हो| किसी समय तो तुम नीची होती हो और किसी समय तुम ऊपर उठ जाती हो| तुम्हारी यह इतनी अस्थिरता क्यों है?"

उम्बरा ने कहा:
"संभवत कोई और चीज़ है जो मुझे ऐसा करने के लिए बाध्य करती है तथा जिस पर मुझे निर्भर रहना पड़ता है| या संभवत मेरी निर्भरता ऐसे है जैसे एक सांप अपनी केचुली पर निर्भर होता है और एक पक्षी अपने पंखो पर| इस प्रकार मै तुम्हे यह कैसे बता सकती हूँ की मै एक समय कुछ और होती हूँ और दुसरे समय कुछ और| {पेनुम्बरा एक चमकदार प्रकाशमय क्षेत्र को कहते है जो परछाई के चारो तरफ होता है जैसा की एक चन्द्र या सूर्य ग्रहण के वक़्त होता है जबकि उम्बरा परछाई वाले क्षेत्र को कहते है}"

कुछ समय पहले मै, ज्हुंग्ज़ी ने एक स्वप्न देखा जिसमे मै एक तितली बना हुआ था और चारो तरफ ख़ुशी ख़ुशी घूम रहा था, वह कर रहा था जो तितलिया करती है| मै तब यह भी नहीं जानता था की मै ज्हुंग्ज़ी हूँ| पर जब मै जागा तो मैंने खुद को ज्हुंग्ज़ी पाया| अब मै यह नहीं जानता की मै ज्हुंग्ज़ी सपना देख रहा था की मै एक तितली था या मै तितली सपना देख रही हूँ की मै ज्हुंग्ज़ी हूँ| यहाँ जरूर कुछ है जो तितली को ज्हुंग्ज़ी से अलग करता है| इसी को कहते है वस्तुओ का रूपांतरण|

3. The Secret Of Caring For Life

YOUR LIFE HAS A LIMIT but knowledge has none. If you use what is limited to pursue what has no limit, you will be in danger. If you understand this and still strive for knowledge, you will be in danger for certain! If you do good, stay away from fame. If you do evil, stay away from punishments. Follow the middle; go by what is constant, and you can stay in one piece, keep yourself alive, look after your parents, and live out your years.

Cook Ding was cutting up an ox for Lord Wen Hui (Kind Gentle Official). With his hands in place, his shoulders hunched, his foot thrust forward, and his knee bent - every slice of meat fell in front of him as his knife seemed to hum a melody. With a steady rhythm, it didn't miss a beat. It was equal to the dancing performed to the music of "The Mulberry Grove," and as skillful as the musicians playing "The Jing Shou."
Lord Wen Hui said:
"Oh, excellent! How did you come up with such a perfect technique?"

Cook Ding set down his knife and replied:
I have always devoted myself to Tao, which is higher than mere skill. When I first began to cut up bullocks, I saw before me whole bullocks. After three years' practice, I saw no more whole animals. Nowadays, I sense with my spirit instead of looking with my eye. My brain knows when to stop and let my spirit take over. Following the natural grain, noting the large gaps between the cartilage and observing the huge hollows - they already provide me with a map. When I come upon places where muscle and bone connect, that's the only time I need to be forceful!
A good cook changes his knife every year because he cuts. An ordinary cook changes his knife every month because he hacks. I've had my knife for nineteen years, and I've butchered over a thousand oxen. It's as sharp now as it was when it was first honed. There are spaces between the joints, and the blade of the knife has really no thickness. If you insert what has no thickness into such spaces, then there's plenty of room - more than enough for the blade to play about it. That's why after nineteen years the blade of my knife is still as good as when it first came from the grindstone.
"However, whenever I come to a complicated place, I size up the difficulties, tell myself to watch out and be careful, keep my eyes on what I'm doing, work very slowly, and move the knife with the greatest subtlety, until - flop! the whole thing comes apart like a clod of earth crumbling to the ground. I stand there holding the knife and look all around me, completely satisfied and reluctant to move on, and then I wipe off the knife and put it away."

Lord Wen Hui said:
"Excellent! What I've gotten from your words is how to nourish life."

When Hsien, of the Kungwen family, beheld a certain official, he was horrified, and said, "Who is that man? How came he to lose a leg? Is this the work of God, or of man?"

"Why, of course, it is the work of God, and not of man," was the reply. "God made this man one-legged. The appearance of men is always balanced. From this it is clear that God and not man made him what he is."

A pheasant of the marshes may have to go ten steps to get a peck, a hundred to get a drink. Yet pheasants do not want to be fed in a cage. For although they might have less worries, they would not like it.

When Lao Dan (Lao Zi) died, Qin Shi mourned for him by uttering three howls and leaving.
A disciple asked:
"Weren't you a friend of the Master?"
"Yes, I was."
"If that's so, then can you really be comfortable mourning in this way?"

"Yes, I can. At first I thought of him as a man, but now I don't. When I went in to mourn, there were a lot of old people crying - as though they were crying for the loss of their own children. A few of them cried as though they were crying for the loss of their own mothers. When these people meet, they must have said words on the occasion and shed tears without any intention. (To cry thus at one's death) is to evade the natural principles (of life and death) and increase human attachments, forgetting the source from which we receive this life. The ancients called this 'evading the retribution of Heaven.' When it was appropriate for him to come, the Master took that opportunity. When it was appropriate for him to leave, the Master submitted. By peacefully accepting the opportunity and later comfortably submitting, sorrow and happiness don't enter the picture. In ancient times this was called dismissing the ruler from his earthly responsibilities."

If you keep pointing at stuff you'll become like firewood. The flame will keep burning you up and you won't know when it'll stop.

३|जीवन जीने का रहस्य

तुम्हारी ज़िन्दगी की एक सीमा है पर ज्ञान की कोइ सीमा नहीं है| अगर तुम उसका उपयोग करते हो जो की सीमित है(जीवन) वह पाने के लिए जो की सीमित नहीं है(ज्ञान) तो तुम स्वयं को संकट में दाल लेते हो| अगर तुम इसे समझते हो और अब भी ज्ञान पाने के लिए संघर्ष करते हो तो तुम निश्चित ही स्वयं को संकट में दाल रहे हो| अगर तुम अच्छा करते हो तो प्रसिद्धि के मोह से मत करो और अगर तुम बुरा करते हो तो तो दंड से मत डरो| बिच का रास्ता चुनो, जो हमेशा निरंतर रहता है उसी के साथ चलो और हमेशा एकजुट रहो, खुद को तैयार रखो, अपने माता पिता की सेवा करो और अपनी जिंदगी जीते रहो|

डिंग नामक कसाई राजा वें-हुई के लिए काम करता था| अपने हाथो को सही स्थान में रखकर, अपने कंधे मोड़कर, अपने एक पैर को आगे बढाकर और अपने घुटने को थोडा झुककर वह मांस को ऐसे काटता था जैसे की उसका छुरा कोई नई धुन गा रहा हो| उसकी इसी स्थाई निरंतरता के साथ वह एक भी बार नहीं चुकता था| यह ऐसे था जैसे वह किसी गाने पर झूम रहा हो या फिर किसी कुशल संगीतकार की तरह वाद्ययंत्र बजा रहा हो|

राजा वें-हुई ने उससे पूछा:
"बहुत सुंदर तुम यह सभ कैसे करते हो|"

उस कसाई डिंग ने अपना छुरा निचे रखते हुए कहा:
"मैंने खुद को ताओ को समर्पित कर रखा है जो की मेरी इस नाम मात्र कुशलता से बहुत ही महान है| जब मैने शुरू में मांस काटना आरंभ किया था हूँ तो पहले मै केवल उस पुरे मृत जानवर को देखता था लेकिन अब तीन साल के अभ्यास के बाद मै उस सम्पूर्ण हिस्से को जानवर की तरह नहीं देखता| अपनी आँखों से देखने के बजाय मै उसको अपनी आत्मा द्वारा महसूस करता हूँ| मै जानता हूँ की मुझे कहा रुकना है और कहा से मुझे अपनी आत्मा द्वारा उसे महसूस करना है| उसके प्राकृतिक ढांचे को जानकार, उसकी हड्डियों और मांसपेशियों के ठीक स्थान को समझकर और बीच में रहने वाले खाली स्थान को देखकर उन सभका मेरे दिमाग में एक मानचित्र सा बन जाता है और जब मुझे मांसपेशी और हड्डी के जोड़ पर से काटना पड़ता है तभी मुझे आवश्यक विशेष ध्यान की जरूरत पड़ती है| एक अच्छा कसाई साल में अपना चांकू एक बार जरूर बदलता है क्योंकि वह उससे बहुत दिनो से काट रहा होता है| एक साधारण कसाई साल में में नौ बार अपना चाकू बदलता है क्योंकि वह चाकू खूंटा हो जाता है, पर मैंने अपना चाकू पिछले उन्नीस सालो से नहीं बदला है जबकि इसने अब तक इससे हजारो से भी ज्यादा जानवर को काटा है यह अब भी उतना ही धारदार है जितना की यह पहले था| कुछ जोड़ो के बीच बहुत ही कम रिक्त स्थान होता है पर वहाँ मेरा छुरा मोटाई रहित सा प्रतीत होता है और वह जिसकी कोई मोटाई नहीं होती है तो उसे किसी भी ऐसी संकरी जगह में डालो उसके लिए वह बहुत ज्यादा ही होती है| यही कारण है की मेरा छुरा अब भी वैसा ही है जैसा की यह पहले बनकर मेरे पास आया था|
हालाँकि जब मै किसी ज्यादा मुश्किल हिस्से का सामना करता हूँ तो पहले ही मै उसमे निहित कठिनाइयों को समझ लेता हूँ, अपने आप को सावधान रखता हूँ और अपनी आँखों को उस पर केन्द्रित रखता हूँ, धीरे धीरे काम करता हूँ और अपने छूरे को बड़ी सावधानी के साथ चलाता हूँ, जब तक की वह कट ना जाए मेरे सामने वह पूरी वस्तु ज़मीन पर पड़े हुए एक बड़े डब्बे जैसे होती है| तब मै वहा पर खड़ा होकर चारो तरफ देखकर खुद को संतुष्ट करता हूँ और जब कभी भी मेरी इच्छा नहीं होती है तो मै अपने छुरे को साथ में रखकर हट जाता हूँ|"

राजा वें-हुई ने कहा:
"उत्तम तुम्हारे शब्द सुनकर मैंने सिखा है की जीवन का पोषण कैसे किया जाये|"

व्हेन-हिसएँ जो की कुंग्वें परिवार से था उसने अपने मंत्री को बुलाया और एक व्यक्ति के बारे में पूछा जिसे देखकर वो बहुत डर गया था, उसने पूछा:
"वह व्यक्ति कौन था? उसकी एक टांग कैसे कट गयी? क्या यह भगवन की मर्जी थी या फिर इंसान का कर्म?"

उसके मंत्री ने जवाब दिया:
"निश्चित ही यह भगवन की मर्जी थी उसी के कारण उस व्यक्ति की एक टांग कटी| भगवन मनुष्य के रूप-रंग को हमेशा संतुलन में रखता है| इससे यह स्पष्ट है की यह भगवन की मर्जी है ना की मनुष्य का कर्म|"

जब लाओजी की मृत्यु हुई तो किन शिन उसके शोक पर आया और केवल तीन बार विलाप(क्रंदन) करके चला गया|
उसके एक शिष्य ने पूछा"
"गुरूजी क्या आप उनके मित्र नहीं थे?"

"मै बिलकुल था"
"यदि ऐसा है तो क्या आप केवल इस तरह से विलाप करके संतुष्ट है"

"हाँ मै संतुष्ट हूँ| उसकी मृत्यु से पहले मै उसे एक व्यक्ति की तरह जानता था लेकिन अब वो वह नहीं था| जब मै वहा पर गया तो वहा पर बहुत से उम्रदराज लोग रो रहे थे ऐसा लग रहा था की मानो वे अपने स्वयं के पुत्र के लिए रो रहे हो और कुछ ऐसे रो रहे थे जैसे की उनकी स्वयं की माँ की मृत्यु हो गयी हो| जब ये लोग मिलते है ऐसे अवसर पर तब वे उस मृत व्यक्ति के लिए कुछ शब्द जरूर कहते है और वे रोते है न की इसलिए की वह व्यक्ति मर गया है बल्कि इसलिए की मरे हुए व्यक्ति के लिए रोया जाता है(ऐसा पहले से चला आ रहा है)| यह करना प्रकृति के विधान के खिलाफ है और सांसारिक मोह माया को बढ़ावा देता है तथा इसमें हम उसे भूल जाते है जिसने हमे जीवन दिया है - प्राचीन लोग इसे स्वर्ग की इच्छा से बचना चाहना कहते थे| एक बुद्धिमान व्यक्ति जब उसका समय पूर्ण हो जाता है तो वह इसे समझता है और इसे स्वयं से जानकार खुद को प्रकृति को समर्पित कर देता है| इस तरह वह विधि के विधान को समझकर पूरी तरह से समर्पित हो जाता है और सुख दुःख उसको छू भी नहीं पाते है - प्राचीन लोग इसे सांसारिक बंधनों से मुक्त होना कहते थे"

अगर तुम ऐसे ही वस्तुओ के पीछे भागते रहोगे तो तुम जलती हुए लकड़ी की तरह भभकते रहोगे| वह ज्वाला तुम्हे ऐसे ही पीड़ित करती रहेगी और तुम्हे पता भी नहीं होगा की इसे कैसे रोका जाए|

4. This Human World

Yan Hui (a disciple of Confucius) went to see Zhong Ni (Confucius) and asked his permission to take a hiatus.
"Where are you going?"

"To the state of Wei."
"What for?

Hui replied:
"The news reports that the prince of Wei is acting like a spoiled brat. He's taking advantage of his position and can't see the mistakes he's making. He thinks nothing at all of his people dying, and their bodies litter the countryside like weeds in a swamp. The people can't do anything about it. I remember something you once said, Master: 'If a country is in order, leave it. If a country is in turmoil, go to it.' The doctor's offices are filled with sick people. If you can share with me your thoughts about this, I'd like to come up with a way to reform all or at least some of what's going on there."

Zhong Ni said:
"you will probably go and get yourself executed, that's all. The Way doesn't want things mixed in with it. When it becomes a mixture, it becomes many ways; with many ways, there is a lot of bustle; and where there is a lot of bustle, there is trouble - trouble that has no remedy! The Perfect Man of ancient times made sure that he had it in himself before he tried to give it to others. When you're not even sure what you've got in yourself, how do you have time to bother about what some tyrant is doing?
In addition, do you know how virtue is wasted and how knowledge is expressed? Virtue is wasted on trying to become famous, and knowledge is expressed in disputes. One who tries to become famous steps on others, and one who wants to show off their knowledge uses it as a weapon in debates. Both of those are terrible methods, and neither will get you anywhere.

Though your virtue may be great and your good faith unassailable, if you do not understand men's spirits, though your fame may be wide and you do not strive with others, if you do not understand men's minds, but instead appear before a tyrant and force him to listen to sermons on benevolence and righteousness, measures and standards - this is simply using other men's bad points to parade your own excellence. You will be called a plaguer of others. He who plagues others will be plagued in turn. You will probably be plagued by this man.

"Besides, the prince might not have any preference for those who are worthy, nor may he hate those who are unworthy. What would be the use in asking him to change his ways? If you spend too much time pondering over how to instruct him, the prince would inevitably take advantage of your lack of preparedness. Then your eyes would start to burn, your expression would go dumb, your mouth would drop open, your shape would go limp, and your mind for the time being would take in everything he said. This would be like using fire to fight fire or using water to try to stop a flood. Then you'd just be increasing what was already there. Start out that way and it'd never end. On the other hand, if you gave a hint that you didn't believe in the profound words he was saying, that would put you in serious trouble, and you'd probably end up being killed right there in front of such a violent person!

"Keep in mind that Jie (a tyrant) killed Guan Long Feng (his minister), and Zhou (a tyrant) killed Prince Bi Gan (his minister).Their victims were both men who cultivated themselves and cared for the good of the people, and thus offended their superiors. Therefore, their superiors got rid of them, because of their goodness. This was the result of their love for fame. "As for some other ancient rulers - Yao attacked the states of Cong, Zhi and Xu Ao; Yu attacked You Hu. Those states were laid to waste, bodies were tortured and killed, their warfare continued, and yet there was no end to their thirst for material gain. Haven't you heard of their obsession with fame and possessions? The desire

to become rich and famous is something even a wise person couldn't overcome, much less you! “Okay, since you must have had something in mind to begin with, give me the gist of it."

Yan Hui said:
"What if I were to remain level-headed and open, devoting serious effort and being single-minded in my purpose? How about that?
"Huh? What are you thinking? That man (the prince) creatively puts on a showy display of greatness, but you can't be sure from all those theatrics what's really in his spirit. Ordinary people won't disobey him because he makes mandates on their feelings and controls what's in their hearts. A person like that is gradually diminishing their own virtue, while having a strong belief their virtue is great! He'll hold on to that belief and refuse to change, shutting himself off from any advice coming from others while not finding anything to criticize within himself. How could he find any use for you! Though he may make outward signs of agreement, inwardly he will not give it a thought! How could such an approach succeed?"

"Why, then," (replied Yen Huei) "I can be inwardly straight, and outwardly yielding, I could keep centered within myself, but be so adaptable on the outside that I'd appear to be like him. Keeping what I know to be right to myself, I could follow on the tails of the actions of the heavens. Since I'd simply be following the actions of the heavens, I know the emperor would look on me like a child of the heavens. Then how could my words be taken as seeking approval from others or seeking their disapproval? Being this way, people would call me childish, as though I was merely a follower of the heavens. Being adaptable on the outside, I'd simply be a follower of the people.
Offering sacrifices, kneeling in submission, bowing down, and beating my chest with my fist - these are the rituals performed by respectful people. All people do that, so why would I dare to act otherwise? By conducting myself in this way, people wouldn't be able to find fault with me, and in that way I'd be seen as a follower of the people. Being successful at appearing to be like him (the prince), I would thus be seen as a follower of the respected ancients. My words would echo what they taught and be substantial for that reason. I'd be citing what the ancients believed, not what I myself believe. In that way I'd be echoing what's true and correct, not acting from my own self-interest. If I'm just citing what the ancients said in the past, then would that do?"

Zhong Ni replied:
"Huh? What are you thinking? For the most part you're right, although your methods are a little shaky, but you'd manage to get away without being accused of any crime. Even though someone might stop and listen to you, how would that really get anyone to make any drastic changes! You'd still sound a bit like a preacher."
Yan Hui said:
"I don't know what else to try. I'm asking for your suggestions."

Zhong Ni replied:
"Go on a fast, then I'll tell you what I think. Do you think it's easy to come up with a plan of action? If you think it's easy, then you're not in tune with the heavens."
Yan Hui said:
"My household is poor. I don't remember having a drink of wine or a bite of meat in several months. Can that be considered fasting?"
"That's the kind of fasting one does for religious rituals, not the fasting of the heart/mind."
Hui asked:
"Can I ask what's the fasting of the heart/mind?"
Zhong Ni replied:
"Make your will one! Don't listen with your ears, listen with your mind. No, don't listen with your mind, but listen with your spirit. Listening stops with the ears, the mind stops with recognition, but spirit is empty- and waits on all things.

"Then," said Yen Huei, "the reason I could not use this method was because of consciousness of a self. If I could apply this method, the assumption of a self would have gone. Is this what you mean by the receptive state?"

"Exactly so," replied the Master. "Let me tell you. Enter this man's service, but without idea of working for fame. Talk when he is in a mood to listen, and stop when he is not. Do without any sort of labels or self- advertisements. Keep to the One and let things take their natural course. Then you may have some chance of success. It is easy to stop walking: the trouble is to walk without touching the ground. As an agent of man, it is easy to use artificial devices; but not as an agent of God.
You have heard of winged creatures flying. You have never heard of flying without wings. You have heard of men being wise with knowledge. You have never heard of men wise without knowledge "Look at that emptiness. There is brightness in an empty room. Good luck dwells in repose. If there is not (inner) repose, your mind will be galloping about though you are sitting still. Let your ears and eyes communicate within but shut out all knowledge from the mind. Then the spirits will come to dwell therein, not to mention man. This is the method for the transformation (influencing) of all Creation. It was the key to the influence of Yu and Shun, and the secret of the success of Fu Hsi and Chi Chu. How much more should the common man follow the same rule?"

When Zi Gao (the Duke of She in the state of Chu) was about to depart on a mission to the state of Qi, he asked Zhong Ni (Confucius):
"This is a really important bridge the king is sending me to build (between our nations), and Qi is waiting for me as an emissary. I must show the utmost respect and not be impatient. Even ordinary people can't be pushed to do something, let alone princes and dukes! I'm really scared. Master, you once told me this about bridging the gap of different cultures: 'Dealing with ordinary affairs can appear small or large. Few who don't follow Dao will enjoy success. If affairs are unsuccessful, then it would certainly bring a series of troubles from the way people would react. If affairs are successful, then it would certainly upset the balance of nature. To evade trouble whether there's success or failure - only someone with virtue can do that.' I eat whatever is handy, have no skill at cooking, and so my kitchen doesn't get overheated. This morning I received my instructions, and by the evening I was drinking ice water to cool off - I'm feeling so hot inside! I haven't even found out the details of what I'm supposed to do yet, but I'm already feeling like my nature is topsy-turvy. If I'm not successful in this mission, certainly I'll have a series of troubles from the way people will react. I'm already getting the worst of it in both ways. As a minister of the state, I'm completely inadequate for this task. Master, do you have any words of advice?"

Zhong Ni said:
"There are two universal mandates in this world. One of them is fate and the other is duty. A child's love for their parents is fated, and it can't be driven from their heart. A subject's service to his ruler is duty, because if he didn't follow along and tried to oppose the ruler, there'd be no place in the whole world he could escape. These are called universal mandates. To be of service to your parents, despite their position, and to be comfortable with that is the utmost in filial piety. To be of service to your ruler, despite the tasks requested of you, and to be comfortable with that is the most complete loyalty. To be of service to your own heart, despite the fact that joy or sorrow have overcome you and realizing that they are part of fate and that neither of them will last for long, is the attainment of virtue. One who acts as a subject or child to others would certainly not be out to get anything for themselves. Being so involved in the needs of others and forgetting about oneself, when would there be any spare time for thinking about whether you're enjoying life and dreading death! My dear friend, that's the way to proceed!

"Please let me tell you something I heard: Ordinarily those in intimate relationships must blend with each other's beliefs. If they're physically apart from each other then they must use words to express their friendship, and those words usually have to be passed on by someone. To pass on words that might express the delight or the anger of one of the parties is the most difficult thing in the world to do. To properly express joyful tidings requires exaggerated compliments. Passing on angry words requires much venom. Ordinarily these exaggerations can get pretty ridiculous. If they're ridiculous enough then no one would believe they're true, and the messenger would be

doomed. Therefore, it's said in the Fa Yan ("Book of Rules"): 'Pass on what has been actually said, not with exaggerated words, then most likely you'll remain whole (not suffer amputation or death).'

"Another thing to remember: A skillful and strong fighter (martial artist) starts out openly showing his moves then will usually end up being more deceptive. The longer the fight lasts, the more unexpected moves he uses. One who's at a party drinking liquor starts out in control of himself then will usually end up getting out of control. The more they drink, the more they laugh like lunatics. Ordinary affairs are much the same. What begins with sincerity often ends up in rudeness. They begin simply enough, but they usually eventually become much more complex. One who speaks can cause a stormy sea (disturbance), and one who acts on it can lose sight of reality. Disturbances can easily cause one to take actions. Losing sight of reality can easily cause one to be in danger. Therefore, anger can arise for no apparent reason other than as a reaction to harsh and biased words. The Way gathers in emptiness alone. Emptiness is the fasting of the mind."

"An animal doesn't choose which sound to make when it dies. Its last exhalation is so suddenly expelled that feelings of terror arise in both the hunter and the hunted. If you push someone too much, then they won't respond from their heart, and not even know they're doing that. If they don't even know they're doing that, who knows where it'll end up? Therefore, it's said in the Fa Yan: 'Without making demands; without pushing for success - that's when the most beneficial outcome will result.' Making demands and pushing for success would be dangerous in this matter. A fine settlement takes time. A bad settlement is irreparable. You can't be too cautious!
"For the time being let things ride and follow your heart. Figure that you probably won't necessarily get fulfillment yourself, but look for what would appease both sides. Then you'll know you've finished with it. How would you be affected by reporting back what happened on the mission? Nothing other than the fact that what happened was caused by destiny. You're the one who makes it more difficult than that."

Yan He (a scholar from the state of Lu) was about to become tutor of the eldest son of Duke Ling in the state of Wei, so he asked of Qu Bo Yu (a minister of the state of Wei):"Here is this man who by nature is lacking in virtue. If I let him go on with his unruliness I will endanger the state. If I try to impose some rule on him, I will endanger myself. He knows enough to recognize the faults of others, but he doesn't know his own faults. What can I do with a man like this?"

"A very good question," said Qu Bo Yu. "Be careful, be on your guard, and make sure that you yourself are in the right! In your actions it is best to follow along with him, and in your mind it is best to harmonize with him. However, these two courses involve certain dangers. Though you follow along, you don't want to be pulled into his doings, and though you harmonize, you don't want to be drawn out too far. If in your actions you follow along to the extent of being pulled in with him, then you will be overthrown, destroyed, wiped out, and brought to your knees. If in your mind you harmonize to the extent of being drawn out, then you will be talked about, named, blamed, and condemned. If he wants to be a child, be a child with him. If he wants to follow erratic ways, follow erratic ways with him. If he wants to be reckless, be reckless with him. Understand him thoroughly, and lead him to the point where he is without fault.
"Haven't you heard the story of the praying mantis? It got so mad that it stretched out its arm trying to stop a speeding car. It didn't know that it didn't have the ability to do that, but got carried away with thinking it could be good at doing anything. Be on guard, be cautious! One who thinks they're good at tearing down what has already built up momentum will be offensive, and will soon come to an end.

"Don't you know how the tiger trainer goes about it? He doesn't dare give the tiger any living thing to eat for fear it will learn the taste of fury by killing it. He doesn't dare give it any whole thing to eat for fear it will learn the taste of fury by tearing it apart. He gauges the state of the tiger's appetite and thoroughly understands its fierce disposition. Tigers are a different breed from men, and yet you can train them to be gentle with their keepers by following along with them. The men who get killed are the ones who go against them.

"The horse lover will use a fine box to catch the dung and a giant clam shell to catch the stale. But if a mosquito or a fly lights on the horse and he slaps it at the wrong time, then the horse will break the bit, hurt its head, and bang its chest. The horse lover tries to think of everything, but his affection leads him into error. Can you afford to be careless?"

A master carpenter named Shi (Stone Face), on his way to the state of Qi, arrived at the town of Qu Yuan where he saw an oak tree that served as a local shrine. It was so big that an ox standing behind it wouldn't be visible, and it measured a hundred spans around. It was as tall as the mountains in the background. Its branches extended out for eighty feet, and at least ten of the branches were large enough to be used to build the side of a boat. Sightseers were packed together as if in a marketplace. The distinguished carpenter paid it no mind and just kept going without pausing. When his assistant had his fill of gazing at it, he ran to catch up with carpenter Shi and said:
"I've been carrying this heavy ax around and following you, Master, and we haven't yet seen such great building material until now. Why, sir, were you not even willing to look at it, but just kept walking on?"

"Stop it! Don't say another word! The wood of that tree is defective. Use it to make a boat, and it would sink. Use it to make coffins, and they'd quickly rot. Use it to make tools, and they'd quickly fall apart. Use it to make any kind of door and the knotholes would let in moisture. Use it to make a fence post and it'd be infested with worms. That wood isn't good for anything, and is completely useless. That's why it's been able to grow so old."

When carpenter Shi returned home, the oak used as a shrine appeared to him in a dream and said:

"With what else would you choose to compare me? Would you compare me with trees that have intricately fine grains? Or with the peach, pear, tangerine, grapefruit - on which the fruit hang down like gourds? When their fruit ripens, they're stripped and left naked. The large branches are broken, and the small branches are torn to shreds. They have a painful life, and thus they don't live out their natural life span but come to a premature end in the middle of their time. Just by the nature of what they are they're open to the assaults of the vulgar world. Of living things, nothing seems to escape that. I'd been trying to find out how to be useless for a long time, and although I almost died, now I've figured it out, and it's been a big help to me. If I'd made myself to be of any use whatsoever, how could I have managed to grow this huge? Since you and I are connected just like everything else, what's the point in estimating something by its appearance? You, a worthless man about to die-how do you know I'm a worthless tree?"

Carpenter Shi woke up and related the story in his dream. His assistant asked:
"If it was so intent on being useless, then why does it continue to be a shrine?"
"Shush! Don't say another word! It's only resting there. By acting like it doesn't know what it is, any cruelty toward it is averted. If it didn't allow itself to be treated like a shrine, there'd be many who'd want to chop it down! It provides a place where many different kinds of people can feel protected, but if it was judged by how it could be used in a more conventional way, it wouldn't have gotten this far!"

When Nan Bo Zi Qi (Exalted Count of Southern Darkness) was traveling in the hills of Shang (Busy Metropolis), he saw a large and unusual tree. A group of a thousand chariots could be hidden under the cover of its shade.
Zi Qi said:
"What kind of tree is this? It must be very strange timber!"
He turned his face up and looked at its thin branches which were so bent and twisted that they couldn't be used as rafters and beams. He bent down and looked at the tree's roots which were so gnarled and knotty that they couldn't be used to make coffins. He touched one of the leaves to his tongue, and it stung his mouth and left a sore. He smelled it then became like a mad man and had a hangover for more than three days.
Zi Qi said:

"This tree really is incapable of providing anything useful. That's how it's been able to grow so large. Aha! - it is this unusableness that the Holy Man makes use of!"

In the state of Song there's an area called Jing Shi, where there are catalpas, cypress and mulberry trees. Those trees that have grown so large that you can't get both hands around their trunks are cut down by people who want to make posts to tie up their monkeys. Those that are three or four spans around are chopped down by people to make decorations for their palatial homes. Those seven or eight spans around are chopped down by officials and rich merchants to make sides for their family altars. Therefore, they don't live out their natural life span, but come to a premature end by the use of axes and hatchets in the middle of their growth. That's the trouble with having material value.
Therefore, when preparing for a sacrificial offering, oxen with white foreheads, pigs with turned up snouts, and people who are suffering from diarrhea can't be used in the River Sacrifices. This is something all respected shamans know about, as it's considered to bring bad luck. On the other hand, these are the things a holy man considers to be very lucky.

There was a deformed man called Shu (Dislocated). His chin was hidden in his bellybutton, his shoulders were higher than the top of his head, the top of his spine was like a finger pointing to the sky, his five vital organs protruded to the outside, and both of his thigh bones were forced up next to his ribs. By mending and washing clothes he was able to make enough to feed himself. By beating the husk off rice and sorting it, he was able to make enough to feed ten people. When the emperor sent out officials to round up an army from the civilian population, he was excused when he exposed his deformed body. When the emperor sent out officials to round up a group of laborers, he was excused because he constantly got sick and didn't have any stamina. When the emperor sent out officials to distribute food to the ill and sickly, he received three times as much as anyone else as well as ten bundles of firewood. If a person who's been denied a normally formed body from birth can still find a way to feed himself and live out his natural life span, then so too should someone who's been denied Virtue!

When Confucius visited Ch'u, Chieh Yu, the madman of Ch'u, wandered by his gate crying, "Phoenix, phoenix, how his virtue failed! The future you cannot wait for; the past you cannot pursue. When the world has the Way, the sage succeeds; when the world is without the Way, the sage survives. In times like the present, we do well to escape penalty. Good fortune is light as a feather, but nobody knows how to hold it up. Misfortune is heavy as the earth, but nobody knows how to stay out of its way. Leave off, leave off - this teaching men virtue! Dangerous, dangerous - to mark off the ground and run! Fool, fool - don't spoil my walking! I walk a crooked way - don't step on my feet. The mountain trees do themselves harm; the grease in the torch burns itself up. The cinnamon can be eaten and so it gets cut down; the lacquer tree can be used and so it gets hacked apart. All men know the use of the useful, but nobody knows the use of the useless!"

४| इस मनुष्यों के संसार में

यां-हुई {ज्होंग-नि का एक शिष्य }एक बार ज्होंग नि से मिलने के लिए गया और एक यात्रा पर जाने के लिए उनकी अनुमति मांगी|
ज्होंग नि ने पूछा:
"तुम कहा जा रहे हो?"

“वेई राज्य में"
“क्या करने के लिए?"

हुई ने कहा:
"मैंने सुना है की वेई का राजा एक क्रूर व्यक्ति की तरह शासन कर रहा है| वह अपने पद और शक्ति का लाभ उठाकर अपनी खुद की गलतियों को नदरंदाज़ कर देता है| उसके लोग मर रहे है और उनकी लाशे ऐसे ही बिखरी हुई है पर इससे उसे कोई फर्क नहीं पड रहा है| लोग भी इस बारे में कुछ भी नहीं कर पा रहे है| आचार्य एक बार मैंने आपको कहते हुए सुना था की’अगर कोई राज्य ठीक ढंग से शासित हो तो उसे ऐसे ही रहने दो लेकिन कही ठीक ना हो तो वहा जाकर सुधर करो|’ चिकित्सको के कार्यालय मरीजो से भरे पड़े है| अगर आप अपने विचार इस संदर्भ में मुझे बतायेगे तो मेरे लिए जो हो रहा है उसे बदलने का सामर्थ्य आएगा|”

ज्होंग नि ने कहा:
"अगर तुम वहा जायोगे तो खुद की मृत्यु का ही कारण बनोगे, यही सही है है, प्रकृति वस्तुओ को इस तरह से मिश्रित नहीं करती है क्योंकि जब वे ऐसा हो जाती है तो वे कई बन जाती है और जब वे कई बन जाती है तो इससे केवल उलझने पैदा होती है और जहाँ उलझने पैदा होती है वहा संकट जरूर आता है तथा इस संकट से बचने का कोई उपाय नहीं होता है| प्राचीन समय के बूद्धिमान पुरुष उस चीज को पहले अपने पास निश्चित कर लेते थे जिसे वो औरो सिखाना चाहते थे या देना चाहते थे| जब तुम्हे इस बात की भी असमंजस हो की तुम ऐसा कर पाओगे या फिर नहीं तो तुम वहा जाकर उस क्रूर तानाशाह में कैसे परिवर्तन ला पाओगे?
और यह भी जान लो की सामर्थ्य कब निरर्थक हो जाता है और ज्ञान को कैसे उपयोग किया जाता है| जब कोई अपने सामर्थ्य का उपयोग ख्याति पानी के लिए करता ही और अपने ज्ञान को इसके लिए हथियार बनाता है तो ये दोनों बहुत ही भयानक तरीके है इनके उपयोग के और ऐसा करने से केवल हानि ही होती है|
तुम्हारा सामर्थ्य बहुत ज्यादा हो सकता है और तुम्हारा विश्वास अतुलनीय पर जब तक तुम स्वयं के आत्मिक स्वाभाव को नहीं समझ पाओगे तब तक चाहे तुम्हारी ख्याति कितनी ही क्यों ना हो तब भी तुम संघर्ष ही करते रहोगे| जब तक तुम लोगो के मन को नहीं समझ पाओगे और फिर भी उन क्रूर लोगो के सामने जाकर अपनी धार्मिकता और सिद्धांत भरी बातो को उनके सामने रखोगे तो तब उस समय तुम कर रहे होगे उनकी बुराई का उपयोग अपनी अच्छाई को साबित करने के लिए और वे तुम्हे दुसरो को भड़काने वाला कहेगे तथा जो व्यक्ति दुसरो को भड़काने का काम करता है आखिर में वो उनसे खुद ही भड़क उठता है|
और साथ ही क्या पता वहा के राजा के लिए ऐसे काम के लोगो के लिए कोई जगह ना हो और वह घृणा करता हो ऐसे लोगो से जो किसी काम के ना हो| इस प्रकार तुम्हारा उसको बदलने के लिए कहने का क्या तात्पर्य है? अगर तुम अपना सारा समय इसी तरह राजा को समझाने में लगा दोगे तो वह तुम्हारी इस कमजोरी का फायदा उठाएगा| तब तुम्हारी आँखों में जलन होगी, तुम्हारे भाव बहुत ही निराशाजनक होगे और तुम उसकी बातो का खंडन करना शुरू कर दोगे| इस तरह तब तुम आग को बुझाने के किये आग का ही सहारा ले रहे होगे या फिर बाढ़ से बचने की लिए पानी का| तब तुम उस चीज़ को बढ़ावा दे रहे हो जो वो पहले से ही है| इस तरह से की गयी शुरुआत का अंत कभी नहीं होगा| दूसरी तरफ अगर तुम ऐसा प्रतीत होओगे की तुम्हे उसकी बातो से कोई मतलब नहीं है, फिर तुम केवल स्वयं को गहरे संकट में दाल रहे होगे और निश्चित ही वह ऐसे दुस्साहसी व्यक्ति की मृत्यु का आदेश देगा|”
“यह ध्यान में रखो की ‘जिए’ ने अपने मंत्री गुआन-लॉन्ग-फेंग को मारा था और ज्होऊ ने राजकुमार बी-गन की हत्या की थी| इन दोनों ही परिस्थितियों में उनके शिकार वो थे जो अपने ज्ञान और दयालुता से लोगो का भला करना चाहते थे और इसी कारण उन्होंने अपने वरिष्टो की अवहेलना की| इसलिए ही उन लोगो की उनके वरिष्टो द्वारा हत्या कर दी गयी| यह परिणाम था उन लोगो द्वारा अपनी ख्याति बढाने के लिए लोगो में ज्ञान बाटने का| मै तुम्हे और भी प्राचीन राजाओ के संदर्भ में बताता हूँ जैसे

राजा याओ ने कांग, जही और क्सु-औ के राज्यों पर हमला किया| वे राज्य तबाह हो गए और वहा के लोगो को क्रूरता से मार दिया गया| युद्ध ऐसे ही चलते रहे और उनका लालच और सत्ता की भूख कभी नहीं मिटी|क्या तुमने उनके ख्याति और वस्तुओ के प्रति निरंकुश जूनून के बारे में नहीं सुना| धनवान और मशहूर बनने की चाहत ये दो चीजे ऐसे होती है जिन पर एक बुद्धिमान पुरुष को संयम रखना चाहिए और तुमको भी| ठीक है अगर तुम्हारे दिमाग में वहा जाकर कुछ करने की सोची भी है तो उसे मुझे बताओ|"

यां-हुई ने कहा:
"तब क्या जब मै वहा जाकर खुले दिमाग से संतुलन बनाकर सोचु तथा लग्न और मेहनत से एकाग्र होकर अपना कार्य करू? यह कैसा रहेगा?

"क्या? तुम यह क्या सोच रहे हो? वह राजा बड़ी कुशलता से अपनी महानताओ का दिखावा करता रहता है और इस प्रकार तुम यह भी नहीं पता लगा पाओगे की क्या वह वास्तव में है और किस चीज़ का वह दिखावा करता है| साधारण लोग उसकी आज्ञा की अवहेलना नहीं करते क्योंकि वह उनके दिल और दिमाग पर पूरी तरह से हावी हो चूका है| एक ऐसा व्यक्ति स्वयं ही अपने सामर्थ्य को खो रहा होता है और फिर भी मानता है की उसका सामर्थ्य महान है| वह स्वयं पर ही कायम रहता है और बदलना चाहता ही नहीं है, वो उनके मुख बंद कर देता है जो उसकी निंदा करते है| तो उसके लिए तुम्हारा क्या उपयोग होगा! चाहे बाहरी तौर पर वह तुम से सहमत भी हो पर अपने मन में वह तुमको बेवकूफ ही समझेगा| इस तरह तुम्हारी बात कैसे सफल हो सकती है?"

येन-हुई ने कहा:
"क्यों? मै अंदरूनी तौर पर बिलकुल सही हूँ और बाहरी तौर पर स्वीकार्य हूँ? मै खुद को एकाग्र रख सकता हूँ और बाहरी तौर पर इतना लचीला हूँ की उसकी हाँ में हाँ मिला सकता हूँ| जो सही है वह कार्य करकर मै तो स्वर्ग के पदचिन्हों पर चल रहा होगा| और चूँकि मै स्वर्ग के अनुसार होता हूँ तो वह राजा मुझे स्वर्ग के एक अनुयायी की तरह देखेगा| फिर वह कैसे मेरे शब्दों को इस तरह से नदरंदाज़ कर पायेगे| उनके लिए मै एक भोले बच्चे की तरह होगा और वे मुझे स्वर्ग का अनुयायी मानेगे| बाहर से उनके प्रति इतना अनुकूलनिय होने के कारण मै तो उन लोगो का अनुशरण करूँगा| बलिदान देना, समर्पित होना, बड़ो के सामने झुकना, अपनी छाती को अपने हाथो से थपथपाना ये तो वे नियम है जो माननीय लोगो द्वारा किये जाते है| सभ लोग ये करते है तो मै इन्हें क्यों ना करू? मेरे द्वारा इस तरह का आचरण करने से उनको मुझमे कोई दोष ही नहीं मिलेगा, इस तरह से उन्हें मै उनका अनुयायी प्रतीत होउगा और राजा के सामने भी इसी तरह से पेश आकर तो मै प्राचीन महापुरुषो का अनुयायी लगुगा| मेरे विचार उन महापुरुषों के शब्दों की गूंज की तरह होगे और वे उसके लिए काफी होगे| मै तो बस जो प्राचीन काल से हो रहा है उसका पालन करने वाला प्रतीत होऊगा ना की उसको करने वाला जिसे मै मानता हूँ की होना चाहिए| इस तरह मै जो सच और सही होगा उसी को प्रोत्साहित करुगा ना की अपने विचारो को| तो फिर क्या मै वही कहू जो पहले के लोग कहा करते थे? क्या यह काम करेगा?

ज्होंग नि ने जवाब दिया:
"क्या? ये तुम क्या सोच रहे हो! इनमे से ज्यादातर में तो तुम सही हो पर तुम्हारे तरीके इससे और भी ज्यादा उलझे हुए है लेकिन यहाँ पर तुमने स्वयं को दोषी बनने से बचालिया| फिर भी अगर कोई तुम्हारी बात को सुनता भी है तो तुम यह कैसे आशा कर सकते हो की वह केवल तुम्हारी बात सुनकर एकदम से बदल जायेगा, तुम अब भी एक उपदेशक जैसे प्रतीत हो रहे हो|

यां-हुई ने कहा:
"मै नहीं जानता की और मै किस तरह से कौशिश करू, मै आपसे ही यह पूछता हूँ|

ज्होंग नि ने कहा:
"तुम उपवास करो तब मै तुम्हे बताउगा की मै इस बारे में क्या सोचता हूँ| तुम यह सोचते हो की इस तरह से पहले से ही बनी हुई योजना से तुम यह काम आसानी से कर लोगे? अगर तुम सोचते हो की यह आसन है तो तुम सही मार्ग पर नहीं चल रहे हो"

यां-हुई ने पूछा:

"मै एक गरीब परिवार से हूँ| मै ये भी नहीं जानता की मैंने पिछली बार कब अच्छी तरह से खाना खाया था, क्या इसे एक उपवास की तरह नहीं समझा जा सकता है?"

"यह जो तुम उपवास कह रहे है वो धार्मिक रीती रिवाजों के लिए किया जाता है जबकि मै तुमको हृदय और मन के उपवास के बारे मै कह रहा हूँ"

हुई ने पूछा:
"क्या मै यह जान सकता हूँ की हृदय और मन के उपवास से क्या तात्पर्य है?"

ज्होंग नि ने कहा:
"अपनि इच्छाशक्ति को एकाग्र करो अपने कानो से न सुनकर अपने मन से सुनने की कौशिश करो! नहीं अपने मन से सुनने की बजाय अपनी आत्मा से सुनने की कौशिश करो| कानो के बंद होने के साथ ही सुनना बंद हो जाता है, मन के शांत होने के साथ ही पहचान मिट जाती है पर आत्मा तो पहले से ही रिक्त है और हर वस्तु के लिए है"

तब येन-हुई ने पूछा:
"मै इस प्रणाली का इसलिए उपयोग नहीं कर रहा क्योंकि मुझे अब तक मेरे स्वयं के होने का अहसास अब भी है अगर मै आपके तरीके को उपयोग करता हूँ तो मेरे होने का वजूद तो समाप्त ही हो जायेगा, क्या इस कही गयी स्थिति का मतलब इसी से है?"

"बिलकुल" ज्होंग नि ने जवाब दिया "चलो मै तुम्हे बताता हूँ, मानवता की सेवा करो पर अपनी ख्याति की चाहत रखे बिना| उससे(राजा से) बात करो जब उसका कुछ सुनने का मन हो वरना चुप हो जाओ| अपने खुद के दिखावे से ऊपर होकर कुछ भी करो| एकात्मक बनो और चीजो को उनके प्राकृतिक पथ पर ही रहने दो| तुमने अभी उस बिना ज्ञान वाले बुद्धिमान व्यक्ति के बारे में नहीं जाना है "उसको पहचानो"| एक अँधेरे कमरे में भी प्रकाश होता है संघर्ष के दिनों में भी भाग्य तुम्हारे साथ होता है| अगर तुम्हे अंदरूनी शांति नहीं है तो मन अब भी वस्तुओ के इर्द गिर्द घूम रहा होगा फिर चाहे तुम एक जगह शांत ही क्यों ना बैठे हो, अपने कानो और आँखों को सब कुछ ग्रहण करने दो पर अपने सारे ज्ञान और मन को उससे हटा लो| इस तरह तुम्हारी आत्मा के प्रकाश का उदय होगा| यही मार्ग है सभी वस्तुओ में परिवर्तन होने का, उनके प्रभावित होने का| और यही मार्ग है यु और शुन के प्रभावित होने का और फु-हसी और ची-चु की सफलता का| अगर कोई साधारण मनुष्य भी इन तरीको का अनुशरण करता है तो कहना ही क्या|

जब 'छू' राज्य के 'ज़ि-गो' राजा के आदेश से किसी कार्य के लिए 'की' राज्य जा रहा था तो उसने ज्होंग-नि से पूछा:
"यह दोनों देशो के संबंधो को और मजबूत करेगा इसलिए राज मुझे वहां भेज रहे है तथा 'की' राज्य मुझे एक दूत की तरह देख रहा है| मुझे उनको पूरी इज्ज़त देनी चाहिए और शांति से कार्य करना चाहियें| साधारण मनुष्यों को भी इसमें(ऐसे कार्यो में) घबराहट होती है फिर राजा और सरदारों के तो कहने ही क्या यही कारण मै बहुत ही घबराया हुआ हूँ| गुरूजी एक बार आपने मुझसे कहा था दो अलग देशो के बिच मधुर संबंध स्थापित करने के बारे में की:
'समस्याओ का हल करते वक़्त चाहे वे बड़ी हो या छोटी हमे हमेशा ताओ के अनुसार होना चाहिए| यदि समाधान होना नहीं हो पाये तो यह बहुत बड़ा संकट होता है जो की मुख्यतः लोगो के विपरीत भावो के कारण होता है| अगर उसका समाधान नहीं होता है तो यह प्राकृतिक संतुलन को भी बिगाड़ सकता है इसीलिए इन दोनों से बचने के लिए किसी सामर्थ्य वाले व्यक्ति का होना बहुत ज़रूरी है|' मुझे जो मिलता है वह मै खाता हूँ पर मुझे खाना बनाना अच्छा नहीं लगता है इसीलिए मेरी रसोई कभी गन्दी नहीं होती है| इस सुबह मुझे अपने लिए वहा जाने के आदेश मिला जबकि शाम तक मै बर्फ वाला पानी पी रहा था अपनी गर्मी को शांत करने के लिए| क्योंकि अभी तक मुझे पूरी जानकारी भी नहीं मिली है की मुझे वहा जाकर क्या करना है इसलिए मुझे अभी से कुछ अजीब सा लग रहा है| अगर मै अपने इस कार्य मै सफल नहीं हो पाया तो निश्चित ही तब मेरे लोगो के मेरे लिए होने वाले व्यवहार से मुझे बहुत ही परेशानी होने वाली है| मूझे दोनों तरफ से संकट ही दिख रहा है इस राज्य का मंत्री होने के नाते मै इस काम के लिए खुद को योग्य महसूस नहीं कर रहा हूँ| अब आप ही मेरा मार्गदर्शन कीजिये|"

ज्होंग नि ने कहा:
"इस संसार में दो चीजे निश्चित है एक तो विश्वास दूसरा कर्तव्य| एक बच्चे का अपने माता पिता के लिए प्यार उसके विश्वास से है और इसे उसके हृदय से निकला नहीं जा सकता है| अपने राज्य की सेवा करना किसी का भी कर्तव्य है और वह इससे इंकार नहीं कर सकता है, चाहे वह इस संसार में कही पर भी चला जाए पर इससे वह बच नहीं सकता है| इसीलिए इन दोनों को

सभ के लिए निश्चित कहा गया है| अपने माता पिता की सेवा करना बिना उनकी स्थिति जाने यही तो कर्तव्य धर्म होता है| अपने राजा की सेवा करना चाहे वो तुम्हे कोई भी कार्य सोंपे, उसे पूरी ज़िम्मेदारे के साथ करना यही तो पूर्णतय वफ़ादारी होती है| अपने ह्रदय के साथ होना बिना सुख दुःख की परवाह किये यह जानते हुए की ये सभ तो जीवन का एक हिस्सा होता है, एक आता है तो दूसरा चला जाता है तब यही तो सामर्थ्य का होना है| एक व्यक्ति जो एक बच्चे की तरह व्यवहार करता है निश्चित ही वह अपने लिए कुछ नहीं करता है| वह औरो के कार्य में इतना मग्न होता है की स्वयं को भूल जाता है, उसके लिए तो यह सोचने का ही समय नहीं होता की वह जीवन में खुश है या दुखी है| मेरे मित्र यही तो रास्ता होता है आगे बढ़ने का|"

चलो मै तुम्हे वह बताता हूँ जो मैंने सुना है:

"अगर दो व्यक्तियों में घनिष्ट समबन्ध होते है तो उन्हें एक दुसरे की इज्ज़त करनी चहिये| अगर वे एक दुसरे से दूर हो तो किसी और के द्वारा अपने शब्दों को पहुचाकर उन्हें शब्दों से अपना प्यार जताना चाहिए| दो लोगो के इन प्यार भरे और गुस्सा भरे शब्दों को उन तक पहुचना इस संसार के सबसे मुश्किल कार्यो में से एक है| क्योंकि उनके ख़ुश होने को जताने के लिए आपको और ज्यादा हाव भावो की ज़रुरत पड़ती है और गम को जताने के लिए आपको और ज्यादा हिम्मत की ज़रुरत होती है| कई बार तो ये बनावटी हाव भाव जो आप जताते है बिलकुल बेतुके हो जाते है इतने बेतुके की कोई उन पर विश्वास ही नहीं करता है और तब जो इनको पहुचाता है उसको भुगतना पड़ता है| इसीलिए फ-यां की किताब में कहा गया है: 'जो कहा गया हो उसे ही जाकर कहना ये आपको दुख और हानि के होने से बचाता है|'

और एक बात हमे ध्यान में रखनी चाहिए जो योद्धा पहले अपने दावो को स्पष्ट रखता है लेकिन धीरे धीरे उसके दांव रहस्यमयी होते जाते है तब आखिर में वही जीतता है| जितनी देर तक लड़ाई चलती है उतने ही अप्रतायाशित उसके दांव हो जाते है तथा एक समाहरो में मदिरा पीने वाला व्यक्ति जितना स्वयं को नियन्त्रण में रखने की कौशिश करता है उतना ही अनियंत्रित वह आखिर में हो जाता है| जो जितनी सावधानी से कार्य शुरू करता है उतना ही बाद में वो अपने मार्ग से भटक जाता है हमारे सामने मुददे और विषय भी कुछ ऐसे ही होते है| वे छोटे से प्रतीत होते है और अचानक ही बहुत बड़े बन जाते है| तब जो बोलता है वह उनको और अनियंत्रित करता है और जो कुछ करने की कौशिश करता है वह उनको और उलझा देता है| उनका अनियंत्रित होना कुछ करने के लिए मजबूर करता है और उस स्थिति में कुछ करने से हम वास्तविकता से दूर हो जाते है| वास्तविकता से दूर होकर हम संकट में पड जाते है| इसीलिए तो नफरत और गुस्सा पैदा होता है, केवल कुछ अनसुलझे वाक्य कहने से| ताओ हमेशा रिक्त और एकाग्र होती है और ह्रदय और मन से रिक्त होना ही उनका उपवास है|

एक जानवर को नहीं पता होता है की वो कौन सी आवाज़ निकाले मरते वक़्त| उसकी आखिरी साँस इतनी अकस्मात होती है की यह शिकार और शिकारी दोनो मे ही भय पैदा करती है| अगर तुम किसी को ज्यादा दबाओगे तो वे ह्रदय से कार्य नहीं करेगे और न ही उन्हें इस बात का ज्ञान होगा| और अगर उन्हें पता ही नहीं होगा की यह सभ कैसे हो रहा है तो किसी को नहीं पता होगा की यह सभ कैसे समाप्त होगा| इसलिए फ-यां किताब में यह कहा गया है की बिना कोई इच्छा रखे बिना सफलता के पीछे भागे, तभी कोई सफल हो पाता है| जबकि हाथ धोकर केवल सफलता को ही सबकुछ मानना तो आपको मुसीबत में दाल सकता है| ठीक तरह से कार्य होने में समय लगता है जबकि गलती तो तभी हो जाती है| इसीलिए हमे बहुत ही संयम की ज़रुरत होती है|

कुछ समय के लिए चीजों को खुद से होने दो और अपने ह्रदय की सुनो| यह जानो की जो तुम कर रहे हो क्या वास्तव में तुम्हे उससे संतुष्टि मिलेगी भी या नहीं| तब तुम स्वयं को सही दिशा में पाओगे| तुम जिस कार्य के लिए जा रहे हो उसका परिणाम बताते वक़्त क्यों घबराते हो| कुछ भी इस तथ्य से नया नहीं है की जो होगा वो भाग्य के द्वारा ही होगा| तुम्ही वो होते जो इसे इतना मुश्किल बना देते हो|"

'की' राज्य में 'यां-ही' राजा लींग के पुत्र का शिक्षक बनने वाला था इसीलिए उसने वहा के एक मंत्री कु-बो-यु से पूछा:

"यह जो व्यक्ति (राजा का पुत्र) है थोडा स्वाभाव से क्रूर ही मालूम पड़ता है अगर मै उसे उसी के अनुसार चलने दुगा तो राज्य पर संकट आ जायेगा और अगर मै उसको अपने नियमो के अनुसार चलने की कहुगा तो मेरे जीवन पर संकट आ जायेगा - क्योंकि वह औरो के दोष देखना तो जानता है पर अपनी गलती कभी नहीं मानता है| मुझे ऐसे व्यक्ति के साथ क्या करना चाहिए?"

"बहुत ही अच्छा सवाल है" कु-बू-यु-ने कहा "सावधान रहना, खुद को सतर्क रखना, और यह देखना की तुम सही कार्य कर रहे हो| तब उसका अनुशरण करना ही तुम्हारे लिए अच्छा है| तुम्हारे मन में उसके साथ सामंजस्य बनाना अच्छा है पर इन दोनों मार्गो में कुछ खतरा तो ज़रूर है| क्योंकि तुम उसका अनुशरण कर रहे होगे तो ऊसके कार्यो का दोष तुम पर नहीं आएगा और तुम उसके साथ सामंजस्य में होगे इससे वह बहुत कुछ गलत कर भी नहीं पायेगा| अगर तुम उसका अनुशरण नहीं करते हो तो तुम्हे

समाप्त कर दिया जायेगा लेकिन अगर तुम उसके साथ सामंजस्य स्थापित करते हो तो तुम्हारा बहुत नाम होगा| अगर वो एक बच्चे की तरह पेश आये तो तुम भी एक बच्चे की तरह पेश आना| अगर वो कुछ ठीक नहीं करे तो तुम भी उसका वैसे ही अनुशरण करना, उसको बिलकुल गहराई से समझना और जानना की वो कहा ठीक है|
क्या तुमने एक शिकारी मेन्टिस की कहानी नहीं सुनी है? वो इतना बेवकूफ हो गया था की एक तेज गाड़ी को केवल अपने एक हाथ से रोकना चाहता था पर वह यह नहीं समझता था की यह उसकी क्षमता से परे की चीज़ है| लेकिन फिर भी उसने यह कार्य यह सोचकर किया की यह उसके लिए अच्छा है| इसीलिए सावधान रहना क्योंकि जो ऐसा सोचते है वे उसे बदल देगे जो की वह पहले से ही बन चूका है उनका अंत ज़ल्द ही होता है|

क्या तुम नहीं जानते हो की एक सर्कस में शेर प्रशिक्षक यह सभ (उनका नियंन्त्रण) कैसे करता है| वह कभी भी शेरो को जिंदा शिकार नहीं देता खाने के लिए क्योंकि उसको पता है की इससे शेरो को शिकार करने में होने वाले आनंद का अनुभव हो जायेगा| वो उनको कभी बहुत बड़ा मांस का टुकड़ा भी नहीं देता क्योंकि इससे शेरो को चिर-फाड़ करने का अनुभव हो जायेगा| वह शेरो की भूख का अनुमान लगाकर छोटे छोटे टुकडो में उसे भोजन देता है जिससे की वे शेर एक बच्चे की तरह शांत रहते है| शेर मनुष्य से पृथक प्रजाति होती है फिर भी वह प्रिशिक्षक उनका अनुशरण करके उनको अपने आपे में रखता है| और जो कोई उनका अनुशरण नहीं करता है उसका अंत मृत्यु कर देती है|

एक लकडहारे ने जिसका नाम शोऊ था, उसने 'की' राज्य में जाते वक़्त कुयुँ-युआन कसबे में बहुत बड़े ओक वृक्ष को देखा जो वहा पर एक धार्मिक स्थल के रूप में स्थापित था| वह इतना बड़ा था की अगर कोई बड़ी वस्तु उसके पीछे खड़ी हो जाए तो वह दूसरी ओर दिखे भी नहीं तथा वह सौ फुट जितना ऊँचा था, उसकी टहनिय अस्सी फुट बड़ी थी और इतनी बड़ी थी की उनसे एक नाव भी बनाई जा सकती थी| लोग वहा ऐसे इकट्ठा होते थे जैसे की कोई बाज़ार लगा हो| जबकि उस लकडहारे ने उस वृक्ष को कोई तवज्जो नहीं दी और बिना रुके वहा से चला गया|
जब उसके सहायक ने उसको देखा तो वह उसके पास आया और बोला:
"उस्ताद मै कितने दिनों से आपके पीछे यह भारी कुल्हाड़ी लेकर चल रहा और हमे इतने दिनों बाद एक वृक्ष दिखा है जिससे की हम एक मकान बना सकते है फिर भी आप ऐसे ही चल दिए|"

"चुप हो जाओ! कुछ और मत कहना! क्योंकि उस वृक्ष की लकड़ी ख़राब है अगर तुम उससे कोई नाव भी बनाते हो तो वह डूब जाएगी अगर तुम इससे अलमारी बनाते हो तो वह ज़ल्द ही गल जाएगी, तुम इससे औजार बनाते हो तो वे ज़ल्द ही टूट जायेगे और अगर तुम इससे दरवाजे बनाते हो तो वह हवा को रोक नहीं पायेगे| वह हमारे किसी काम का नहीं है और बिलकुल बेकार है और अपनी इस निरर्थकता के कारण ही तो उसके लिए इतने साल तक जी पाना संभव हुआ है"

जब वह लकडहारा घर आया तो वह धार्मिक स्थल वाला ओक वृक्ष उसके स्वप्न में आया और कहा:
"और किस वस्तु के साथ तुम मेरी तुलना करना चाहते हो? क्या तुम मेरी तुलना अच्छी लकड़ी वाले सेब और लीची के वृक्षों से करोगे जिनपर की फल लदे रहते है| जब फल पाक जाते है तो वे निचे गिर जाते है और वृक्ष खाली हो जाता है| उनकी बड़ी टहनिय टूट जाती है और छोटी सुख जाती है उनकी ज़िन्दगी बहुत ही कठोर होती है तथा वे अपना जीनकाल भी पूरा नहीं कर पाते क्योंकि उन्हें बीच में ही काट दिया जाता है| अपने प्राकृतिक स्वाभाव से ही वे शिकार बनते है इस क्रूर संसार का| मै यह लम्बे समय से सोच रहा था की कैसे निरर्थक बना जाए जबकि अब मै मरने ही वाला हूँ मैंने इस बात का पता लगा लिया है और इस बात ने मेरी बहुत मदद की है| कुछ भी हो इससे (निरर्थक होने के कारण) मै कम से कम इतना बड़ा तो हो पाया हूँ| चूँकि हम जुड़े हुए है एक दुसरे से बाकि चीजों की तरह तो फिर किसी को उसके रूप-रंग को देखकर अनुमानित करना क्या सही है? तुम एक बेकार मनुष्य हो जो की अब कुछ दिनों में ही मरने वाला है और तुम मुझे एक बेकार वृक्ष बताते हो?"

जब उस लकडहारे ने यह बात जागकर अपने सहायक से बताई तो उसने कहाँ:
"अगर उस पेड़ को अपने बेकार होने से इतना ही लगाव है तो वह एक धार्मिक स्थल की तरह क्यों बना हुआ है"

"चुप हो जाओ! और कोई शब्द भी मत कहना! इस तरह से वहा रहने से वह नहीं जानता की वह क्या कर रहा है और उसके पास जाने वाली हर मुसिबत टल जाती है| अगर वह खुद को धार्मिक स्थल की तरह नहीं पूजने देगा तो उसे जल्द ही काट दिया जायेगा लेकिन अब वहां बहुत से लोग उसके निचे सुरक्षित व अच्छा महसूस करते है| जबकि अगर उसे किसी और नजरिये से देखा जाता तो वह अब तक काट दिया जाता|

जब नान-बो-ज़ि-की यात्रा कर रहा था शांग की पहाडियों में तब उसने एक अद्भुत वृक्ष को देखा जिसके निचे बहुत सारे चरवाहे अपनी रक्षा के लिए छिपे हुए थे, यह देखकर उसने कहा:
"यह कौन सा पेड़ है! मुझे यह बहुत अजीब सा मालूम हो रहा है"

उसकी शाखाये बहुत ही टेढ़ी मेढ़ी थी और उसकी जड़े बहुत ही उलझी हुई थी इस तरह से की उनका कोई काम ना आ सके| उसने उसकी एक पत्ति को तोडा और उसको जीभ से चखा, उसे यह बहुत ही तीखा लगा जिससे उसका मुह कड़वा हो गया| उसने उसको(पेड़ की पत्तियों को) सुंघा तो उसे सूंघकर वह तीन दिनों तक होश में नहीं आया और एक पागल की तरह हो गया|

ज़ि-कु ने कहा:
"यह पेड़ वास्तव में कुछ भी उपयोग का नहीं है; इसी कारण तो यह इतना विशालकाय हो पाया है| ओह! क्या यही काम का नहीं होना होता है जिसका की साधू लोग उपयोग करते है|"

सोंग राज्य के एक गाँव में बहुत सरे कैतापस, साईप्रस और मुल्ल्बेरी के पेड़ उगे थे वे सभ इतने बड़े थे की दो हाथो के फैलाव में भी नहीं आए, उनको देखकर लोगो ने उन्हें काटना शुरू कर दिया अपने जानवरो को बांधने के लिए| और जो तीन से चार हाथ बड़े थे उनको काटा गया घरो को सजाने के लिए| जो सात से आठ हाथ बड़े थे उनको अमिर लोग काट ले गए अपना फर्नीचर बनवाने के लिए| इस प्रकार वो अपना पूरा जीवन भी नहीं जी पाए और पहले ही समाप्त हो गए लोगो की कुल्हाड़ी और आरी से| यही तो समस्या है इस संसार के लिए लाभदायक होने की|
इसी लिए तो बलि देते वक़्त नाक कटे सूअर और अंग कटे मनुष्य की बलि नहीं दी जाती है, ऐसा की तांत्रिक लोग मानते है की यह करना बुरी किस्मत को लेन वाला होता है| जबकि दूसरी तरफ एक साधू व्यक्ति को बहुत ही भला और अच्छा भाग्य प्रदान करने वाला समझ जाता है|

एक बार एक शु नामका विकृत व्यक्ति था उसका शरीर बहुत ही टेढ़-मेधा विकृत हो चूका था, लेकिन वह लोगो के कपडे धोकर अपना काम चला लेता था| चावल को छिलकों से निकलकर वह इतना कमा लेता था की दस लोगो का पेट भर सके| जब राजा ने फ़ौज में भर्ती के लिए अपने मंत्रियो को भेजा तो उसको उसके विकृत शरीर के कारण नहीं लिया गया और जब मजदूरों की भर्ती हुई तो उसे उसके ख़राब स्वास्थ्य के कारण नहीं लिया गया, लेकिन जब प्रजा के बीच अनाज और भोजन बात गया तो उसको अपने विकृत शरीर के कारण सबसे तीन गुना ज्यादा मिला| अगर एक जन्म से ही विकृत व्यक्ति अपना गुजरा चला सकता है और अपना जीवन व्यतीत कर सकता है तो फिर बाकि लोगो में इतना सामर्थ्य क्यों नहीं है!

जब झोंग-नि चु-यु राज्य की सरहद पर गया तो वहा का द्वाररक्षक उसे देखकर चिल्लाया:
"फेओनिक्स! फेओनिक्स (एक पक्षी जिसे भविष्य बताने वाला जाना जाता है)! तुम्हारे वचन किस प्रकार गलत हो सकते है? जो तुम भविष्य का इंतज़ार नहीं कर सकते और भुत को नहीं देख सकते| जब यह संसार ठीक चल रहा होता है तभी एक साधू सफल होता है और जब यह संसार गलत होता है तो यह साधू बच जाता है| वर्तमान में तो हम दंड से बच जाते है| अच्छा भविष्य (भाग्य) तो एक पंख जैसा हल्का होता है पर कोई इसे पकड़कर रखना नहीं जानता है| जबकि बुरा भविष्य (भाग्य) धरती जितना भारी होता है फिर भी लोग उससे दूर नहीं रह पाते| चले जाओ! चले जाओ! चले जाओ सामर्थ्य सिखाने वाले व्यक्ति| खतरा है! खतरा है यहाँ चलने में यहाँ से भागो| मुर्ख मुझे तंग मत करो| पर्वतो के पेड़ खुद को स्वयं ही संकट में दाल लेते है, दिए में रहने वाला तेल खुद को ही जलाता है, फलो को खाया जाता है इसी कारण तो उन्हें पेड़ से तोडा जाता है जबकि चिड वृक्ष को उपयोग में लाया जाता है इसी कारण तो उसे कटा जाता है| सभी लोग जानते है की उपयोगी का उपयोग कैसे किया जाए लेकिन कोई नहीं जानता है की जो उपयोगी नहीं है उसको उपयोग में लाया जाए!"

5. The Sign Of the Virtue Complete

In the state of Lu there's a person named Wang Tai (Great Lame Horse) who lost one of his feet. He has throngs of followers, about the same number as Zhong Ni (Confucius).
Chang Ji (Ordinary Younger Brother) asked Zhong Ni:
"Wang Tai, who has lost a foot (by amputation as punishment for a crime), has as many followers as you do, Master, throughout the state of Lu. When he stands up he doesn't preach, and when he sits down he doesn't carry on discussions. Those who go to him empty return fulfilled. How can someone who's unconcerned with teaching with words and has a mutilated body still have a completed heart? What kind of person is he?"

Zhong Ni said:
"This Master is a Sage. I'm always so behind the times that I haven't had a chance yet to go and listen to him. I'll go learn from him, and surely those who aren't the least bit like me would do the same. Why should it be limited to the state of Lu? I'll attract the whole world to follow him."
Chang Ji said:
"That guy's missing a foot, yet he's a respected teacher, which makes him quite extraordinary. How can a person like that remain so single-hearted?"
Zhong Ni said:
"Life and Death are indeed changes of great moment," answered Confucius, "but they cannot affect his mind. Heaven and earth may collapse, but his mind will remain. Being indeed without flaw, it will not share the fate of all things. It can control the transformation of things, while preserving its source intact."
Chang Ji asked:
"What do you mean by that?"

Zhong Ni said
"If you look at things from the point of view of their differences, then the liver and gall bladder are as far apart as the states of Chu and Yue. If you look at things from the point of view of their similarities, then all living things share a unity. At that point, such a person not only doesn't evaluate things with his ears and eyes, but lets his heart and mind float with the harmony of his own nature. He looks at the unity of things, and doesn't look for what they're lacking. He regards losing his foot as though he was shaking off a clump of mud."
Chang Ji said:
"By losing his own sense of separateness, he's able to achieve an understanding of his heart, and use his heart to achieve a sense of durability in his heart. Why do others want to be sheltered by him?"

Zhong Ni replied:
"A man does not seek to see himself in running water but in still water. Only what is still can still the stillness of other things. Of those that receive life from the earth, the pine and cypress alone are best - they stay as green as ever in winter or summer. Of those that receive life from Heaven, Yao and Shun alone are best - they stand at the head of the ten thousand things. Luckily they were able to order their lives, and thereby order the lives of other things. Proof that a man is holding fast to the beginning lies in the fact of his fearlessness.

one brave soldier would feel powerful enough to penetrate nine armies. The only goal that kind of person has in mind is seeking to make a name for himself. Suppose someone set their mind to being controlled by both the heavens and the earth, to being compensated by all living things, to align all the limbs of their body, to observe clearly using their eyes and ears, to know the unity of their awareness, and to never allow their mind to deteriorate! That kind of person would just get up and leave one day, and if people followed after him, what would he care about what anyone else was doing?"

Shen Tu Jia (Admired Straightforward Student), who'd lost a foot (as punishment for having committed a crime), and Zi Chan of Zheng (Prime Minister of Zheng) both had Bo Hun Wu Ren (Professor Confused Nonentity) as their teacher.
Zi Chan said to Shen Tu Jia:
"If I leave first, then you wait and go later. If you leave first, then I'll wait and go later."
The next day both of them were again sitting on the same mat in the hall.
Zi Chan said to Shen Tu Jia:
"If I leave first, then you wait and go later. If you leave first, then I'll wait and go later. Now I'm about to leave, so can you wait a while? Why would you refuse? When you come across a Prime Minister and don't obey him, is that because you think you're equal to him?"
Shen Tu Jia said:
"Can there be a Prime Minister as rude as this within my teacher's gates? You think simply because you've been appointed Prime Minister that other people should cater to you? There's a well-known saying: 'If a mirror is bright, then no dust has settled on it. If dust has settled, then it's not bright. Spend a lot of time with someone who's upright, and you'll be faultless.' Now, you've come to seek guidance from our great Master, but you're still able to speak like you did. Who's really the guilty person here?"
Zi Chan said:
"You've already gotten yourself into this situation (losing a foot), yet you still think you could compete with Yao as to which of you is better. Why don't you take a cold hard look at yourself and see if you can come up with anything virtuous there at all?"
Shen Tu Jia said:
"There are lots of people who have the appearance of having committed a crime even though they weren't guilty. There are some people who don't have the appearance of committing a crime even though they were guilty. To realize that certain things can't be changed and quietly accept destiny, only a person with a clear heart can do that. One might wander into the middle of a field where Yi is practicing archery. If they're standing there right out in the open and still don't get hit by the arrow, that's destiny. When someone who has both feet laughs at me because I don't have as many feet as they have, I get angry and go into a rage. But when I come to visit my teacher, then I calm down and change my attitude. How can I know if my master's bathed me in goodness, or if I've just settled down peacefully on my own? I've been following my Master for nineteen years, and he still hasn't acknowledged the fact that I've lost a foot. Now you and I are connected by something much deeper than how many appendages we each have, but you keep trying to separate us by excluding me due to my outer appearance. Who's really the guilty person here?"
Zi Chan, taken aback, changed his attitude and took on a new demeanor, saying:
"You don't have to say another word."

In the state of Lu there's a mutilated man named Shu Shan the Toeless. Walking on his heels, he came to see Zhong Ni (Confucius).
Zhong Ni said:
"You weren't careful in the first place, and by committing crimes you brought this disaster on yourself. What's the point of coming to see me now!"
Toeless said:
"It was only because I didn't understand what I was supposed to be doing and took my body lightly that I lost part of my feet. Now I come here showing as much respect as someone who has feet, striving to keep what I have remaining of my body whole. There's nothing the heavens doesn't cover with a protective shield. There's nothing the earth doesn't bear the burden of. I thought you were a Master of the heavens and earth. Where's your knowledge, Master, that you could treat me this way!"
Kong Zi (Confucius) said:
"That was really narrow-minded of me. Sir, why don't you come on in? Please allow me to explain to you what I have to share."

Toeless left.
Kong Zi said to his attentive disciples:
"That man was mutilated by having his toes chopped off, but he still wants to take on the task of looking back and learning from his previous mistakes. How much more so should those who think they have perfect Virtue!"

Toeless told this story to Lao Dan (Laozi) and then said:
"I thought Zhong Ni was a perfected person, but he's not there yet, is he? Why do so many disciples keep treating him as though he were a respected guest? He's seeking to become famous by being considered extraordinary and unusual. Doesn't he know that a perfected person would view being treated that way as being shackled?"
Lao Dan said:
"Why not straighten him out by showing him how life and death are linked on a single branch, and how approval and disapproval are linked on a single thread? That would release him from his shackles, wouldn't it?"
Toeless said:
"Since he thinks his punishment is coming from the heavens, how could he possibly be released!"

Duke Ai of the state of Lu asked Zhong Ni (Confucius):
"There was an ugly man in the state of Wei named Ai Tai Ta (Sad-Looking Horse Face). The adult men who hung out with him thought so highly of him that they couldn't leave his presence. When unmarried women saw him, they'd beg their parents: 'I'd rather be that man's concubine than the wife of a well-to-do gentleman.' That happened dozens of times and keeps happening over and over. He's never been known to speak out for himself, but always blends harmoniously with other people and that's all. He's never been in a position of authority that would allow him to save anyone from death, nor does he earn the kind of money that would allow him to support anyone. Besides that, he's probably the ugliest person in the whole world. He blended with others but didn't speak out for himself, and he didn't know anything other than what went on in his immediate environment, yet males and females both found him compelling. This guy must have some very unusual qualities. I demanded that he come to me so I could have a look at him, and determined that he surely must be the ugliest person in the world. I also demanded that he stay with me for a month so I could get a better idea of what kind of person he was. He's been here for almost a year, and I've come to trust him completely. As my state is without a Prime Minister, I offered him the job. He looked indecisive about how to respond, as though he was looking for a reason to decline. I was so embarrassed that I immediately turned over the position to him. Without even saying goodbye to me, he left. I was really sorry to lose him, as though there was nothing else that could bring me pleasure any more in the whole country. What sort of person was he?"

Zhong Ni said:
"I was once on a mission to the state of Chu, and along the way I saw some young piglets nursing on their dead mother. In a short time they all withdrew from her and went away. They no longer saw her as resembling themselves, nor did she seem to be similar to them in any way. The love they had for their mother wasn't based merely on loving her physical form, but a love of what her physical form could provide. When a soldier dies in battle, they have no need for a fancy coffin or funeral. When a person has lost their feet, they have no reason to love shoes. In all the instances mentioned above, something they once placed a lot of importance on had vanished.
"Those who've passed the requirements to become the Emperor's assistants no longer need to file their nails or pierce their ears (make themselves outwardly attractive in order to gain prominence). A man who's acquired a wife no longer needs to adorn his outer appearance nor seek a higher position (make themselves more attractive in order to get a wife). Their outer form was already sufficient enough to gain them acceptance. How much more so would that be for someone who'd perfected their virtue! Now Ai Tai Ta didn't need to say a word, but you completely trusted him. He didn't show any achievements, but you wanted to keep him close to you. You wanted to give him your entire country, and you were afraid he wouldn't take the offer. Indeed he must be the one whose talents are perfect and whose virtue is without outward form!"

"And what is virtue without outward form?"
"When standing still," said Confucius, "the water is in the most perfect state of repose. Let that be your model. It remains quietly within, and is not agitated without. Virtue is the establishment of perfect harmony. Though virtue takes no form, things cannot break away from it."

On another day, Duke Ai explained this story to Min Zi (one of Confucius' disciples):
"I used to sit on my throne facing South (the direction a ruler's throne faced) and ruled the whole world. I held in my hands the ability to determine the course of people's lives, and grieved at their deaths. I considered myself to be one who had attained expertise in everything. Now that I've heard the words of a true expert, I'm afraid I have no substance whatsoever, have taken too lightly the appearance my body gave off, and thus could lose my country. Kong (Confucius) and I don't relate to each other like ruler and servant - we're merely friends who share virtue."

Hunchback-Deformed-No-Lips spoke with Duke Ling of Wei and the Duke took a fancy to him. As for the well-formed men, he thought their necks were too scraggy. Big-Jar-Goiter spoke with Duke Huan of Chi, and the Duke took a fancy to him. As for the well-formed men, he thought their necks were too scraggy. Thus it is that when virtue excels, the outward form is forgotten. But mankind forgets not that which is to be forgotten, forgetting that which is not to be forgotten. This is forgetfulness indeed!

And thus the Sage sets his spirit free, while knowledge is regarded as extraneous growths — agreements are for cementing relationships, goods are only for social dealings, and the handicrafts are only for serving commerce. For the Sage does not contrive, and therefore has no use for knowledge; he does not cut up the world, and therefore requires no cementing of relationships; he has no loss, and therefore has no need to acquire; he sells nothing, and therefore has no use for commerce. These four qualifications are bestowed upon him by God, that is to say, he is fed by God. And he who is thus fed by God has little need to be fed by man.

Hui Zi said to Zhuangzi:
"Are there humans without sentimentality?"
Zhuangzi:
"There are."
Hui Zi said:
"If a person has no sentimentality, how could they be called a person?"
Zhuangzi replied:
"Dao gives him his demeanor, the heavens give him a physical shape, so how could he not be called a person?"
Hui Zi said:
"Since it's already been determined he's a person, how could he not have sentimentality?"
Zhuangzi said:
"Having a sense of right and wrong is what I call sentimentality. Someone I'd refer to as being without sentimentality - that kind of person wouldn't allow his likes and dislikes to cause physical harm to his body. They would constantly follow what naturally occurs without looking to profit from life."
Hui Zi said:
"If someone doesn't look to profit from life, how would they still be able to have a body?"
Zhuangzi said:
"Tao gives him his expression, and God gives him his form. He should not permit likes and dislikes to disturb his internal economy. But now you are devoting your intelligence to externals, and wearing out your vital spirit. Lean against a tree and sing; or sit against a table and sleep! God has made you a shapely sight, yet your only thought is the hard and white."

५|सामर्थ्य के सम्पूर्ण चिन्ह

लू राज्य में वांग-तै नाम का एक व्यक्ति रहता था जिसका एक पैर कटा हुआ था| लेकिन उसके पास उतने ही अनुयायी थे जितने की झोंग-नि के पास थे|

चांग-जी जो की उसका (वांग-तै का) भाई था उसने झोंग-नि से पूछा :
"गुरूजी, वांग-तै जिसका की एक पैर कटा हुआ है (जो की काटा गया था एक अपराध की सजा के तौर पर) उसके पुरे लू राज्य में उतने ही अनुयायी है जितने की आपके है| उसे खड़ा होकर कोई उपदेश भी नहीं देना पड़ता है और उसे किसी के साथ बैठकर वाद विवाद भी नहीं करना पड़ता है| जो लोग उसके पास खाली हाथ जाते है वे साथ कुछ ना कुछ लेकर आते है| कोई भी व्यक्ति जो उपदेश देने से भी इतना बेफिक्र है और फिर भी विकृत होते हुए भी ह्रदय से इतना पूर्ण कैसे हो सकता है? वह किस प्रकार का व्यक्ति है?"

ज्होंग नि ने कहा:
"वह व्यक्ति एक साधू है अगर मुझे दोबारा अपना पुराना समय मिले तो मै वहा जाकर उसकी बातो को सुनुगा| मै वहा जाकर उससे सीखूगा (शिक्षा प्राप्त करूगा) और निश्चित ही अगर कोई और भी थोडा सा भी मेरा जैसा होगा तो वह भी यही करेगा| यह सभ (उस साधू के अनुयायी) लू राज्य तक ही सिमित क्यों हैं? जबकि उसे (उस साधू को) तो पुरे संसार को द्वारा जाना जाना चाहिए|"

चांग-जी ने कहा:
"उस व्यक्ति का एक पैर कटा हुआ है तब भी वह एक आदर्श गुरु है, उसका ऐसा होना उसको सबसे अलग बनता है| कोई भी व्यक्ति ऐसे ह्रदय से एकाग्र कैसे हो सकता है?"

ज्होंग नि ने कहा:
"जन्म और मृत्यु वास्तव में ही परम सत्य है पर ये उसको प्रभावित नहीं करते है, धरती और आकाश चाहे टकरा जाए पर वह एकाग्र ही रहेगा| वास्तव में बिना किसी त्रुटी के होना, यह वस्तुए के विश्वास को नहीं बांटता है| यह वस्तुओ के परावर्तन को भी नियंत्रित कर सकता है जबकि उनकी अखंडता को बरकरार रखे हुए|"

चांग जी ने पूछा:
"आपका इससे क्या अर्थ है?"

ज्होंग नि ने कहा:
"अगर तुम वस्तुओ को विभिन्नता के नजरिये से देखो तब यकृत और अमाशय इतने दूर होते है जितने की 'छू' राज्य और 'युए' राज्य| और अगर तुम वस्तुओ को समरूपता से देखो तो सभी वस्तुए एकरूप ही होगी, एक ऐसा व्यक्ति केवल अपनी आँखों और अपने कानो से वस्तुओ को नहीं समझता है बल्कि अपने मन और ह्रदय को अपनी वास्तविक प्रकृति के साथ सामंजस्य में रखता है|
वह वस्तुओ की समरूपता को देखता है ना कि उसको जिसका उनमे आभाव है| वह अपने कटे हुए पैर को ऐसे देखता है जैसे को वो उसके लिए कुछ था ही नहीं"

चांग नि ने कहा:
"एक व्यक्ति स्वयं को शांत जल में देखना चाहता है ना की बहते हुए में| क्योंकि जो शांत है वही दुसरो की स्थिरता को स्थिर कर सकता है| वो जो इस धरती से उगे है उनमे केवल देवदार और संवर का वृक्ष ही उत्तम है क्योंकि वे ही हमेशा सर्दी और गर्मी में सदा रहते है तथा जिनको स्वर्ग से जीवन मिला है उनमे याओ और शुन महान है क्योंकि दस हज़ार वस्तुओ का भी संचालन उन्होंने किया है| उन्होंने अपने जीवन को अपने भाग्य के अनुसार नियम से व्यतीत किया और इस तरह वे अपनी प्रजा के जीवन को भी नियमित कर पाए| इस बात का प्रमाण की एक व्यक्ति कितना अपने आरंभ के साथ जुडा हुआ है यह उसकी निर्भयता से पता चलता है|

एक वीर सैनिक जो नौ सेनाओ को भी पराजीत कर सकता है, इस प्रकार के (उस सैनिक जैसे) व्यक्ति के लिए केवल ख्याति पाना ही एक लक्ष्य होता है| मानो अगर कोई व्यक्ति अपने मन को धरती और स्वर्ग द्वारा प्रेरित करता है और सभी प्राणियों के साथ दयाभाव रखता है, अपने शरीर और इन्द्रियों पर संयम रखता है और हमेशा अपने आँखों और कानो द्वारा वस्तुओ को अच्छी तरह से ग्रहण करता है, वह अपने मन को एकाग्र रखता है और कभी उसे बिगड़ने नहीं देता है! तब वह इस प्रकार का व्यक्ति एक बार खड़ा होगा और फिर छोड़ कर चला जायेया और अगर लोग उसका अनुशरण भी करते है तो उसे इससे क्या फर्क पड़ता है की और लोग क्या कर रहे है?"

शेन-तू-जिया जिसका की एक अपराध की सजा के तौर पर एक पैर काट दिय गया था तथा ज़ि-चन जो की प्रधानमंत्री था झेंग राज्य का, ये दोनों ही बो-हूँ-वू-रेन के शिष्य थे|

ज़ि-चन ने शेन-तू-जिया से कहा:
"अगर मै पहले यहाँ से जाता हूँ तो तुम इंतज़ार करना और बाद में जाना और अगर तुम पहले जाते हो तो मै इंतज़ार करुगा और बाद में जाऊँगा|"

अगले दिन दोनों ही उसी जगह पर कमरे में बैठे हुए थे|

ज़ि चन ने शेन-तू-जिया से कहा:
"अगर मै पहले यहाँ से जाता हूँ तो तुम इंतज़ार करना और बाद में जाना और अगर तुम पहले जाते हो तो मै इंतज़ार करुगा और बाद में जाऊँगा| चूँकि अब मै पहले जा रहा हूँ तो तुम थोड़ी देर इंतज़ार कर सकते हो, तुम मना नहीं करोगे! जब तुम एक प्रधानमंत्री के सामने होते हो और उसकी अवहेलना करते हो क्या तुम यह इसलिए करते हो की तुम स्वयं को उसके बराबर समझते हो?"

शेन तू जिया ने कहा:
"क्या मेरे गुरु के द्वार पर आकर भी कोई प्रधानमंत्री इतना अक्खड़ हो सकता है? तुम बड़ी आसानी से यह समझते हो की लोग तुम्हारी अवशयक्ताओ का ध्यान रखेगे क्योंकि तुम्हे प्रधानमंत्री बनाया गया है? एक जानी पहचानी कहावत है 'अगर दर्पण चमकता है तब उस पर कोई धुल नहीं होती है और अगर उस पर धुल होती है तो वह चमकता नहीं है'| किसी अच्छे व्यक्ति के साथ कुछ व्यक्त बिताओ और आप भी निर्दोष हो जाते हो| चूँकि अब तुम आये हो हमारे महान गुरु से मार्गदर्शन करने लेकिन फिर भी यहाँ आकर तुम वही बोल रहे हो जो तुम बोला करते हो, अब हम में से कौन यहाँ पर दोषी है?"

ज़ि चन ने कहा:
"तुम पहले ही स्वयं को इस स्थिति में पंहुचा चुके हो (एक पैर कटवाकर) और तुम अब भी यह सोचते हो की तुम याओ के बराबर हो सकते हो| तुम स्वयं का निरिक्षण ध्यान से क्यों नहीं करते हो और देखो की क्या तुम में थोडा सा भी सामर्थ्य है?"

शेन तू जिया ने कहा:
"बहुत से व्यक्ति होते है जो अपराधी जैसे प्रतीत होते है जबकि उनका कोई दोष नहीं होता है| और कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते है जो की अपराधी होते है पर उनका कोई दोष सिद्ध नहीं होता है| इस चीज़ का एहसास होना की कुछ चीजों को बदला नहीं जा सकता बल्कि भाग्यवश उन्हें स्वीकार करना ही होता है - जिस व्यक्ति का ह्रदय शुद्ध हो वही ऐसा कर सकता है|
कोई भी टहले उस मैदान में जहाँ 'यी' अपने धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा हो और अगर फिर भी उसे कोई तीर नहीं लगे तो इस भाग्य कहते है| जब कोई जिसके पास दोनों पैर होते है और वे मुझ पर आकर हँसते है तो मुझे बहुत इर्ष्या होती है| पर जब मै अपने गुरु के पास आता हूँ तो मै शांत हो जाता हूँ और मेरा रवैया बदल जाता है| मै यह सभ कैसे जान सकता हूँ की मेरे गुरु ने मुझे ये संस्कार दिए है या यह (मेरा मन) केवल मेरे कारण ही शांत हो पाता है? मै पिछले उन्नीस वर्षो से अपने गुरु सेवा कर रहा हूँ पर उन्होंने कभी इस बात का ध्यान नहीं दिया की मै अपना एक पैर खो चूका हूँ| क्योंकि अब हम एक दुसरे से जुड़े हुए है बहुत ही गहराई से उसी तरह जिससे की कोई भी वस्तु हमारे साथ जुडी हुई है फिर भी तुम मुझे भिन्न बताते हो केवल मेरे बाह्य रूप को देखकर? अब हम में से कौन वास्तव में दोषी है?"

ज़ि-चं हतप्रभ हो गया और उसने अपने रैवये को बदल कर नए स्वर से कहा:
"आपको और कुछ कहने की ज़रुरत नहीं है|"

लू राज्य में एक विकृत व्यक्ति रहता था उसका नाम शु-शुन था (उसके पैर के पंजे कटे हुए थे)| अपनी एडियों पर चलते हुए वह ज्होंग-नि से मिलने पंहुचा|

ज्होंग-नि ने कहा:
"तुम पहले से ही सावधान नहीं हो इसीलिए तो अपराध करते हुए तुमने इस विपात्ति को स्वयं के लिए बुलाया| अब मुझसे मिलने आने में तुम्हरा क्या अर्थ है?"

उस व्यक्ति ने कहा:
"यह केवल इसलिए है क्योंकि मैंने नहीं समझा था जो की मै करने जा रहा हूँ और मैंने उसे बहुत ही हलके में लिया इसी कारण से मैंने अपने पैर के हिस्से को खो दिया| अब मै यहाँ आया हूँ अपने बाकि बचे हुए हिस्से के साथ संघर्ष करते हुए उतने ही आदर से जीतना की कोई सम्पूर्ण शरीर वाला आता है| ऐसा कुछ नहीं है जिसकी स्वर्ग द्वारा रक्षा नहीं की जाती और ऐसा कुछ भी नहीं है जिसका की यह धरती भार नहीं उठाती है| मै समझता था की आप इस स्वर्ग और धरती के स्वामी है| आपका ज्ञान कहा गया जो आप मेरे साथ इस तरह का आचरण कर रहे है!"

ज्होंग नि ने कहा:
"यह मेरी बहुत ही संकीर्ण सोच थी जो ऐसा आचरण किया, श्रीमान आप अंदर प्रवेश कीजिये कृपया मुझे उसे कहने का मौका दे, जो मै आपके साथ बाँटना चाहता हूँ|

वह व्यक्ति वहां से चला गया|

ज्होंग-नि ने वहा उपस्थित अपने शिष्य से कहा:
"यह व्यक्ति विकृत था क्योंकि उसके पैर का हिस्सा कटा हुआ था, फिर भी उसमें पिछे मुड़कर अपने गलतियों से सिखने की चाहत थी| फिर उनके बारे में क्या कहा जा सकता है जो समझते है की उनके पास पर्याप्त सामर्थ्य है!"

उस व्यक्ति ने यह वाकया लाओ-ज़ि को जाकर बताया और कहा:
"मै सोचता था की ज्होंग-नि एक सिद्ध पुरुष है पर वह अब तक वहा नही पहुच पाया है, क्या वह? फिर भी इतने शिष्य उसका इतना आदर क्यों करते है जैसे वो उनका मेहमान हो? वह प्रसिद्ध होने की चाहत रखता है कुछ अलग या असाधारण करके| क्या वह नहीं जानता की सिद्ध पुरुष ऐसे व्यवहार करने को केवल बेडियो में बंधना मानते है?"

लाओ-ज़ि ने कहा:
"उसे सही मार्ग क्यों नहीं दिखाते यह दिखाकर की जन्म और मृत्यु एक ही टहनी के साथ जुड़े हुए है, पसंद या नापसंद एक ही सूत्र में बंधे हुए है? यह उसको उसके बंधनों से मुक्त कर देगा, क्या यह नहीं करेगा?"

उस व्यक्ति ने कहा:
"चूँकि उसका दंड स्वर्ग द्वारा निर्धारित है तो क्या वह इससे मुक्त हो सकता है!"

लू राज्य के सम्राट 'ई' ने ज्होंग नि से पूछा:
"इस राज्य में एक बदसूरत व्यक्ति था उसका नाम ई-तै-ता था| जब कोई व्यक्ति उसे देख लेते था तो उसके साथ ही रहना चाहता था और जब कोई कुंवारी स्त्री उसे देख लेती थो वो अपने माता पिता से कहती थी 'मै किसी संपन्न पुरुष की पत्नी होने से अच्छा तो इस व्यक्ति के साथ रहू'| ऐसा कई बार हुआ और निरंतर ही होता रहा| वह कभी अपनी प्रसंशा नहीं करता था फिर भी लोग उसकी सराहना करते नहीं थकते थे| उसके पास कोई ऐसे अधिकार भी नहीं था की किसी दण्डित व्यक्ति को मृत्यु से बचा सके न हीं इतना धन था की किसी की मदद कर सके इसके अलावा वह दुनिया का सबसे भद्दा पुरुष भी था| वह सभके साथ घुल मिलके रहता था पर अपने बारे में कुछ नहीं कहता था और उसे जो हो रहा होता था उसके अलावा कुछ पता भी नहीं होता था फिर भी सभी स्त्री और पुरुष उसे बहुत ही आकर्षक पाते थे| जरूर उस व्यक्ति के पास कुछ असाधारण गुण था| मै चाहता था की वो मेरे पास आये ताकि मै देख सकू और निश्चित कर सकू की वही दुनिया का सभसे भद्दा इंसान है| मै यह भी चाहता था की मै उस व्यक्ति के साथ एक महीने तक रह सकू ताकि मै यह अच्छी प्रकार समझ सकू की वह किस प्रकार का

व्यक्ति है| अब वह यहाँ एक साल से है और मेरा उस पर पूरी तरह से विश्वास भी हो गया है| क्योंकि मेरे राज्य का अब कोई प्रधानमंत्री नहीं है मैंने उसे इस पद का प्रस्ताव दिया| पर वह बहुत ही निर्णयहिन प्रतीत हो रहा था की कैसे प्रतिक्रिया दू, ऐसा लग रहा था की मानो वह मना करने का कोई कारण तलाश रहा हो| मै यह देखकर इतना लज्जित हुआ की मैंने उसी वक्त वह पद उसे सौंप दिया| लेकिन मुझे अलविदा कहे बिना ही वह वहा से चल दिया| उसको खोकर मुझे बहुत पछतावा हो रहा है मुझे लग रहा है की मानो इस राज्य में कोई वस्तु नहीं है जो मुझे ख़ुशी दे सके| आप मुझे बताये की वह किस प्रकार का व्यक्ति था?"

ज्होंग नि ने कहा:
"एक बार मै किसी काम से 'छू' राज्य में जा रहा था, मैंने रास्ते में कुछ सूअर के बच्चो को अपनी मरी हुई माँ के इर्द गिर्द बैठे हुए देखा, कुछ ही समय बाद वे उसे छोड़कर वहा से चले गए| क्योंकि अब वे उसे (अपनी माँ को) अपने जैसा नहीं मान रहे थे और ना ही उन्हें वह उन जैसे प्रतीत हो रही थी| उनका अपनी माँ के लिए प्यार उसके बाह्यरूप के लिए नहीं था बल्कि वह प्यार ऐसा था जिसे बाह्य रूप द्वारा दिया जा सकता था, दिखलाया जा सकता था| जब एक सैनिक युद्धभूमि में मरता है तो उसे किसी कफ़न या मातम की ज़रुरत नहीं होती| जब किसी व्यक्ति के पैर नहीं होते है तो जूतों से प्यार करने का उसका कोई तात्पर्य नहीं रहता है| इन सभी वाक्यों में जो मैंने तुम्हे बताया की जिस वस्तु को वे कभी बहुत प्यार करते थे वह समाप्त हो चुकी है| इसी प्रकार जिनको राजा का मंत्री बनने की कोई लालसा नहीं होती वे अपने व्यवहार और रीती रिवाजों का दिखावा नहीं करते है|एक व्यक्ति जिसका विवाह हो चूका होता है उसे ज्यादा सजने सवारने या अपना सामर्थ्य दिखने की (आकर्षक लगने की लिए ताकि उसकी शादी हो सके) ज़रुरत नहीं होती| इस बाह्य रूप द्वारा वे इतना कुछ पा सकते है तो उसके बारे में क्या जिसने अपना सामर्थ्य सिद्ध कर लिया हो! चूँकि अब ई-तै-ता ने कुछ कहने की ज़रुरत नहीं समझी क्योंकि आप उस पर विश्वास करते हो| उसने अपनी कोई उपलब्धि नहीं दिखाई फिर भी आप उसे अपने पास रखना चाहते हो| आप उसे अपना पूरा राज्य देना चाहते हो, और आप डरते भी हो की वह इसे स्वीकार नहीं करेगा| वास्तव में ही वह उन लोगो में से है जिनका सामर्थ्य सिद्ध है और जो बाह्य वस्तुओ के पीछे नहीं दौड़ते है|"

"उसके सामर्थ्य के सिद्ध होने और बाह्य वस्तुओ के पीछे नहीं दौड़ने से क्या तात्पर्य है?"

ज्होंग नि ने कहा:
"जब जल स्थिर होता है तभी वह शांति की स्थिति को प्राप्त करता है, तुम इसे अपनी प्रेरणा मानो| इसी तरह से स्थिर रहो और अंदर से शांत| सामर्थ्य सम्पूर्ण सामंजस्य का प्राप्त होना है| क्योंकि सामर्थ्य का कोई रूप नहीं होता है इसीलिए वस्तुए उससे पीछे नहीं हटती है|"

किसी और दिन सम्राट ई ने यह कहानी मं-ज़ि को बताई जो की ज्होंग नि का शिष्य था:
"मै अपने दक्षिण के तरफ मुख किये सिंहासन पर बैठकर सम्पूर्ण संसार पर शासन करता था| मेर हाथ में होता था लोगो के जीवन प्रवाह को नियंत्रित करना और उनकी मृत्यु पर शोक मानना| मै स्वयं को मानता था जिसे सभ चीजो में दक्षता हासिल हो गयी है| क्योंकि मैंने अब किसी सच्चे शिक्षक के शब्द सुने है तो मै डरा हुआ हूँ की मेरे पास कुछ भी नहीं है| ज्होंग नि और मै एक दुसरे के राजा और प्रजा जैसे नहीं है लेकिन हम मित्र है जो एक दुसरे के साथ अपना सामर्थ्य साँझा कर रहे है|"

एक कुबड़े और पूरी तरह से विकृत व्यक्ति ने सम्राट लिंग से कुछ कहा और सम्राट ने उसे पूरी तरह से समझा| जबकि एक पूरी तरह से सम्पूर्ण व्यक्ति सोचता है की वे (दरिद्र व विकृत) सभ क्षीण और तुच्छ है| एक घेंगे ने 'ची' राज्य के सम्राट हुआन से कुछ कहा और सम्राट ने उसे समझा जबकि लोगो के लिए वह (वह घेँगा) हंसी का पात्र था| इसी प्रकार कहा गया है की जिनके पास सामर्थ्य होता है उनका बाह्य रूप कैसा है इसका महत्व नहीं रहता है, उसे (बाह्यरूप को) भुला दिया जाता है| पर आज लोग जिसे भुला देना चाहिए था उसे न भूलकर जिसे नहीं भूलना चाहिए था उसे भूल गए है| यही तो वास्तव में भुला हुआ होना होता है|

इस प्रकार एक साधू स्वयं को इनसे मुक्त रखता है और जहाँ ज्ञान की ज़रुरत ना हो वहा ज्ञान को भी केवल अप्रासंगिक ही समझता है| जैसे समझोते संबंध सुधरने के लिए होते है, अच्छे कार्य समाज के लिए होते है और हस्तकला केवल आर्थिक हालत ठीक करने के लिए होती है| इस प्रकार एक साधू काल्पनिक नहीं होता है, उसे किसी वस्तु में आसक्ति नहीं होती है और इस प्रकार फिर उसे ज्ञान की भी कोई आवश्यकता नहीं होती है| उसके लिए तो संबंध बिगड़े ही नहीं होते जो की वह उनको सुधारना चाहे, उसे किसी वस्तु को खरीदने की आवश्यकता ही नहीं होती ताकि वो इसके लिए किसी वस्तु को बेचे, उसका कुछ खोया हुआ

ही नहीं होता इसीलिए वो किसी चीज़ को पाने की इच्छा नहीं रखता है, ये चार गुण तो उसमे इश्वर द्वारा निहित होते है| इसीलिए कहा गया है उस पर इश्वर का आशीर्वाद होता है| और जिस पर इश्वर का आशीर्वाद होता है उसे मनुष्यों के रीती रिवाजों से क्या लाभ और क्या हानि|

हुई ज़ि ने ज्हुंग्ज़ी से कहा:
"क्या मनुष्यों में भावनाए नहीं होती है?"

ज्हुंग्ज़ी:
"नहीं भी होती है"

हुई-ज़ि ने कहा:
"अगर एक मनुष्य में भावनाए नहीं होती है तो हम उसे मनुष्य कैसे कह सकते है?"

ज्हुंग्ज़ी ने ज़वाब दिया:
"ताओ से उसे आचरण और व्यवहार मिला हैं, स्वर्ग से उसे ये शरीर और बाह्य रूप मिला है तो हम उसे मनुष्य कैसे नहीं कह सकते है"

हुई ज़ि ने कहा:
"चूँकि अब यह सिद्ध हो चूका है की वो मनुष्य होता है तो उसमे भावनाए कैसे नहीं होती है?"

ज्हुहंग्ज़ी ने कहा:
"सही और गलत का बोध होना वह है जिसे मै भाव समझता हूँ| और ऐसे व्यक्ति का तात्पर्य जिसे मै भावना रहित समझता हूँ उस व्यक्ति से है जो अपनी पसंद या नापसंद को अपने शरीर को नहीं प्रभावित करने देता है| वह केवल उसी का अनुशरण करता है जो प्राकृतिक रूप से और विधिवत उसके लिए होता है और इसमें वह जीवन से कोई लाभ नहीं देखता|

हुई ज़ि ने कहा:
"अगर कोई जीवन में लाभ ही नहीं देखता है तो उसके लिए इस शरीर का क्या अर्थ रह जाता है?"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा:
"ताओ ने उसे भाव दिए है स्वर्ग ने उसे रूप दिया है| उसे छोड़कर जो की उसके अंदर निहित है मनुष्य को अपनी रूचि या अरुचि पर निर्भर नहीं रहना चाहिए| पर अब तुम अपनी बुद्धि से बाह्य वस्तुओ को समर्पित होकर अपनी आत्मा को स्वयं से अलग मानते हो तो फिर तुम चाहे पेड़ के निचे बैठकर गाना गा सकते हो या फिर बिस्तर पर लेटकर सो सकते हो! इश्वर ने तुमको दृष्टि दी है और तुम उससे केवल सही और गलत देख रहे हो|"

6.The Great and Venerable Teacher

He who knows what it Is that Heaven does, and knows what it is that man does, has reached the peak.

Knowing what it is that Heaven does, he lives with Heaven. Knowing what it is that man does, he uses the knowledge of what he knows to help out the knowledge of what he doesn't know, and lives out the years that Heaven gave him without being cut off midway - this is the perfection of knowledge.

However, there is a difficulty. Knowledge must wait for something before it can be applicable, and that which it waits for is never certain. How, then, can I know that what I call Heaven is not really man, and what I call man is not really Heaven? There must first be a True Man' before there can be true knowledge.

What do I mean by a True Man? The True Man of ancient times did not rebel against want, did not grow proud in plenty, and did not plan his affairs. A man like this could commit an error and not regret it, could meet with success and not make a show. A man like this could climb the high places and not be frightened, could enter the water and not get wet, could enter the fire and not get burned. His knowledge was able to climb all the way up to the Way like this.

The True Man of ancient times slept without dreaming and woke without care; he ate without savoring and his breath came from deep inside. The True Man breathes with his heels; the mass of men breathe with their throats. Crushed and bound down, they gasp out their words as though they were retching. Deep in their passions and desires, they are shallow in the workings of Heaven.

The True Man of ancient times knew nothing of loving life, knew nothing of hating death. He emerged without delight; he went back in without a fuss. He came briskly, he went briskly, and that was all. He didn't forget where he began; he didn't try to find out where he would end. He received something and took pleasure in it; he forgot about it and handed it back again. This is what I call not using the mind to repel the Way, not using man to help out Heaven. This is what I call the True Man.

Since he is like this, his mind forgets;2 his face is calm; his forehead is broad. He is chilly like autumn, balmy like spring, and his joy and anger prevail through the four seasons. He goes along with what is right for things and no one knows his limit. Therefore, when the sage calls out the troops, he may overthrow nations but he will not lose the hearts of the people. His bounty enriches ten thousand ages but he has no love for men

Therefore, trying to transfer happiness into other living things will not make one a sage. Experiencing intimate personal relationships will not make one benevolent. Trying to keep in time with the heavens will not make one worthy. One who isn't able to reconcile advantage with disadvantage will not be a good ruler. One who loses himself seeking fame won't be a good student. One who inadvertently loses his body won't be good at serving others. Those like Hu Pu-hsieh, Wu Kuang, Po Yi, Shu Ch'i, Chi Tzu, Hsu Yu, Chi T'o, and Shen-t'u Ti(men who were moralists and reformers in ancient times who ended up being killed or committing suicide)-all of them slaved in the service of other men, took joy in bringing other men joy, but could not find joy in any joy of their own.3

A true person of ancient times appeared to be acting properly, even though she didn't conform to the norm. She seemed to be lacking, but didn't grovel for favors. She had some rough edges, but wasn't obstinate. She was extensively empty, but didn't superficially attract anything. She brightly lit up everything around her as though she was ecstatic! She soared like an eagle as though there was no need to find a place to land! Her facial expression took on a glowing quality. What she was willing to concede stopped with her own virtue. She seemed harsh to those of her own generation! She was so diverse that there was no way to control her. When there was a new fad or trend she didn't follow it. She was so inattentive that she forgot what she was going to say.

She regarded suffering as a compression of the body, rituals as flights of fancy, knowledge as opportunity, and virtue as a means of protection. Because she regarded suffering as a compression of the body, she was gentle with reprimands. Because she regarded rituals as flights of fancy, she went along with the times. Because she regarded knowledge as an opportunity, she used what was available in dealing with her affairs. Because she regarded virtue as a means of protection, she encouraged others to walk on their own feet in order to reach the pinnacle and people genuinely attended to what they were involved with.

So, she united with what was enjoyable, and she united with what wasn't enjoyable. Being united is unity, and not being united is unity. Being united, she followed the heavens. Being not united, she followed people. When the heavens and people join together, there's no need for one to be victorious over the other. A true person is said to be like this.

Death and life are destined. They're as certain as the the sky progressing from night into dawn. There are certain things a person can't do anything about. All living things are in that situation. There are those who set up a special figure as the Father of the Heavens (God) and are only able to love the image they have of him as a person. There might be something even above that! People set up someone who they believe has special powers to heal them, but their bodies eventually die anyway. There might be something even more effective than that!
When a stream dries up the fish gather together in a crater on the land. They moisten each other with their saliva and splatter each other with foam. It'd be better for them to be swimming freely in rivers and lakes than to be concerned with having to do these things to keep each other alive. Rather than to praise Yao and condemn Jie, it would be better to forget both of them and how different their Ways were.

The great clump of earth (the world) is loaded down with our physical forms, struggles to keep us alive, cradles us in our old age, and provides a place to rest our bodies after we die. Therefore, what's good at keeping us alive will also be good at providing a place for us to die.

A man may try to hide away a boat in a gully, which would be like trying to hide a mountain in a swamp, but he believes it's in a secure place. Even so, around midnight a strong person might come along and hoist the boat onto his shoulders and walk away with it. Since it was so dark outside, no one would know. Hiding something small within something larger might seem like the appropriate thing to do, yet anything could still be carted off. If a man were to hide everything in the world within the world, there would be no place left for anything to be removed to. Living things are already constantly in this great situation. Someone might have an especially attractive body, and they'd be pleased about that. However, a human shape can be changed by any number of things, and those changes might not necessarily ever come to an end. Is there pleasure to be found in counting the victories? Therefore, a wise person will travel where things take them rather than trying to constrain things where they don't belong.

Whether it's better to die young or to live to an old age; whether things will start out good or end up good - people just keep looking for ways to find meaning in those things. It's like everyone is looking for more things to be concerned about, as though they're waiting for one thing to come along and change everything!
Dao expresses itself and provides evidence of itself, but not by taking actions or showing a shape. It doles out things, but doesn't take anything back. It can enter within you, but can't be perceived. It was rooted in itself and grew from its own roots before there was a universe. It was so ancient that it was there before anything existed. It provided vital energy for both demons and gods. It gave life to both the heavens and the earth. It reaches higher than the ether of the sky, but doesn't become tall. It reaches lower than the core of the earth, but doesn't become deep. It began before the heavens and earth, but can't be measured by time. It was around from the most remote ages, but doesn't become old.

The clansman Shi of Wei got it so as to support the heavens and earth.
Fu Xi got it and found the key to the breath of Mother Nature.

Wei Dou (a star in the constellation Sagittarius considered to be the center point of our galaxy) got it so as to eternally stay true to its course.
The sun and moon got it so as to constantly keep moving.
Kan Pi (a spirit, said to have a human face and the body of an animal) got it so as to penetrate the Kun Lun mountains.
Ping Yi (a spirit of the Yellow River) got it so as to travel through the great river.
Jian Wu (a mountain spirit) got it so as to dwell on Mount Tai.
Huang Di got it so as to rise up into the clouds in the heavens.
Zhuan Xu got it so as to dwell in the Black Palace.
Yu Qiang (god of the North Sea) got it and stood on the North Pole.
Xi Wang Mu got it and sat on Shao Guang. No one knows where it (this mountain) begins or ends.
Peng Zu got it and was able to live from the time of the beginning of the Zhou dynasty through the succession of five rulers (five lifetimes for most people).
Fu Yue got it so as to become Prime Minister to Wu Ding. Then he suddenly was in control of the whole empire, perching on the hand of Sagittarius and riding into Scorpio's basket as though he was a shooting star.

Nan Bo Zi Qi (Exalted Count of Southern Curiosity) asked of Nu Yu (Independent Woman):
"You're old in years, but your face beams like a child. Why is that?"
"I've learned about Dao."
Nan Bo Zi Qi said:
"Can Dao be obtained through studying?"
"What? How could that be possible? You're not the kind of person who could do that anyway. There was a guy named Bu Liang Yi (Rigidly Biased Fortuneteller) who had the ability to become a sage, but wasn't wise enough to learn about Dao. I'm wise enough to learn about Dao, but don't have the ability to become a sage. I really wanted to teach him. Oh, what great hopes I had that he'd end up becoming a true sage! It's not so easy to change one who has the ability to become a sage into one who is wise enough to learn about Dao simply by explaining it to them. Yet I kept a close watch on him and tried to explain it. After three days he could disregard the world. After he disregarded the world, I still kept at him. After seven days he could disregard living things. After he disregarded living things, I still kept at him. After nine days he could disregard life. After he disregarded life, he could then penetrate everything like the first rays of sun in the morning. Being able to penetrate everything like the first rays of sun in the morning, he could then see each thing individually. Being able to see each thing individually, he could then overcome a sense of past and future. Being able to overcome a sense of past and future, he could then enter where there is no death and no birth. What kills life isn't death. What brings forth life isn't birth. As for how he related to things - without following, without rejecting, without constructing, without destroying. A name for this would be Embracing Contentment. One who embraces contentment - embraces and then becomes complete.
Nan Bo Zi Qi asked:
"Are you the only one who's heard about this?"
"I heard about this from Master of Various Texts. Master of Various Texts heard about it from Oral Tradition. Oral Tradition heard about it from Clear Sightedness. Clear Sightedness heard about it from Midday Whisperer. Midday Whisperer heard about it from Humble Servant. Humble Servant heard about it from Oblivious Chanter. Oblivious Chanter heard about it from Dark Mysteries. Dark Mysteries heard about it from Solitary Star. Solitary Star heard about it from Uncertain Beginning."

Zi Si (Great Sacrificial Attendant), Zi Yu (Great Charioteer), Zi Li (Great Plowman) and Zi Lai (Great Messenger) all came together to have a chat saying:
"Who can consider what doesn't exist as his head, life as his spine and death as his buttocks? Whoever knows that life and death, surviving and perishing, are part of the same whole, I'd like to take them as a friend."
The four of them all looked at each other and laughed. They felt a profound intimacy with each other in their hearts, and they knew they'd formed a deep friendship with each other.

Sometime later, Zi Yu got sick. Zi Si went to see how he was doing.
"How remarkable! This thing I've been turned into, that's become so inflexible and stiff!"
His back had become curved and hunched, his five vital organs protruded to the outside, his chin was hidden in his bellybutton, his shoulders were higher than the top of his head, and his fingers were curved into hooks that pointed up to the sky. Even though his vital energy seemed to be completely out of whack, his heart was clear and he didn't seem concerned. He dragged himself over to the well, looked at his image in the water and said:
"Ugh! Look at this thing I've been turned into, and how inflexible and stiff it is."

Zi Si asked:
"Do you hate it?"
"What's the point in hating what's been taken away or what's been given to me! Supposing my left arm gradually turned into a chicken - then I could use it to tell when it was nighttime. Supposing my right arm gradually turned into a crossbow - then I could use it to shoot down a bird to roast. Supposing my buttocks gradually turned into a wheel and my spirit into a horse - then I could ride on it. What need would I have for any other means of transportation!
"Furthermore, whatever is received comes at the right time. Whatever has been lost must be adapted to. Calmly accepting and dwelling in compliance, then neither grief nor joy would be able to creep in. This is what's been called being released from bondage, and for those who can't find a release, there will always be something to put them into bondage. Besides, living things can't be victorious over what Nature has been causing to occur since the beginning of time. What reason could I find for hatred!"
Sometime later, Zi Lai became ill, panting and gasping while near death. His wife and children were grouped around him sobbing. Zi Li went to see how he was doing and said to them:
"Shame on you! Get away from him! Don't show sadness - he's merely going through changes."
He then leaned against the door jamb and said to his friend:
"How remarkable! The changes you're experiencing! What will you become next - what will you turn into? Will you become a rat's liver? Will you become an insect's arm?"

Zi Lai said:
"When a father and mother produce a child, east, west, south and north converge at a point that sets the destiny he must follow. When those multiple energies within a person converge, he's directed by them as though they were his father and mother. They've brought me close to death, and if I try to prevent it then I'm being foolhardy. How silly to look at this as some sort of crime that's been committed! The great clump of earth (the world) is loaded down with my physical form, struggles to keep me alive, cradles me in my old age, and provides a place to rest my body after I die. Therefore, that which is good at keeping me alive will also be good at providing a place for me to die. Now if a great blacksmith was pounding some metal, and the metal jumped up at him and said: 'I absolutely must be made into Mo Ye (a famous ancient Chinese double edged sword)', the blacksmith would think that piece of metal was an ill omen. Now, if I were ever to try to go against the shape my form has taken and say: 'Make me a whole person, nothing but a whole person', then Mother Nature would think that this person was an ill omen. Now, if the universe is like one great big oven, and Mother Nature is like a master blacksmith, where is it that we shouldn't go? As naturally as we fall into a sound sleep, we just as naturally suddenly wake up."

Zi Sang Hu (Great Silkworm Cultivator), Meng Zi Fan (Elder Great Mercenary) and Zi Qin Zhang (Great Lute Stringer) were three friends who got along well with each other.
One of them said:
"Who can join with others while not joining with others; act with others while not acting with others? Who can ascend to the heavens, travel on the mist, stirring up things without any end in sight, all the while forgetting about life without getting exhausted?"
The three of them all looked at each other and laughed. Feeling a profound intimacy with each other in their hearts, they knew they'd formed a deep friendship with each other.

Not long after that Zi Sang Hu died. When he had not yet been buried, Kong Zi (Confucius) heard about it and sent Zi Gong (a disciple of Confucius) to go see what was going on. One of the friends was composing a tune while the other was playing music.

They sang together:
"Oh, Sang Hu has arrived!
"Oh, Sang Hu has arrived!
"And already returned to his original being,
"While we're still serving as humans!"
Zi Gong rushed into the room and asked:
"How in the world could you both be singing over a dead body - is that proper conduct?"
The two friends looked at each other and laughed, then said:
"How could that guy know what proper conduct is?"
Zi Gong returned to tell Kong Zi what had happened:
"What kind of people are those guys? They can't even control their behavior and have no respect for their friend's physical body. They sit right next to the dead body singing without showing any signs of adapting their demeanor to the situation, in complete disorder. What kind of people are they?"

Kong Zi said:
"They both wander around outside the set boundaries, whereas I wander within the limits set by society. Those outside and those inside don't mingle with each other, and it was stupid of me to send you there to console them. The only boundaries those two adhere to are those set on people by Nature, and they wander among the singular essence of the universe. They consider life to be an insignificant attachment hanging there like a wart, and death to be the final removal of the ulcerated growth. Being that way, how would they have any conception of life and death or past and future! They avail themselves of the strange anatomy of their bodies, rely on the harmony of their vessel, forget about their internal organs, don't pay much attention to their ears and eyes, and repeatedly experience endings and beginnings without having a clue what's going on. In that way they pace back and forth through the dust and dirt while not being affected by it - free and unfettered without acting like they have something to gain. How could they be troubled or anxious about society's rules and mandates, or be troubled about being observed by everybody else's eyes and ears!"

Zi Gong said:
"That being so, Master, why do you rely on the boundaries?"
"I'm the heaven's sacrificial lamb. That's something I could share with you."
Zi Gong said:
"Then I'd appreciate hearing more about boundaries."
Kong Zi said:
"Fish were established together in water. People were established together in Dao. Those who are established together in water penetrate to the depths of a pond and find nourishment. Those who are established together in Dao don't cater to others and their lives are easier. Therefore it's been said: 'Fish forget about each other when in rivers and streams. People forget about each other when on the path of Dao.' "
Zi Gong said:
"May I ask about the non-conformist?"
"As for the nonconformist, he seems odd to other people, but is tuned in to the heavens. Therefore it's been said: 'Someone who has little to do with Nature would be looked up to by people. Someone who is looked up to by people would have little to do with Nature.' "

Yan Hui asked Zhong Ni (Confucius):

"When Meng Sun Cai's mother died, he wept without shedding a tear, didn't feel sadness in the center of his heart, and mourned without wailing. Although he didn't do any of those three things, he's still thought of as the best mourner in the state of Lu. How can someone who's evidently so superficial to their core still receive accolades? I, for one, find this astonishing."
(Note: Part of the rituals mandated in China at the time considered to be proper behavior at a funeral were the three mentioned above: Crying uncontrollably while shedding many tears, giving the appearance that one's heart was broken, and wailing loudly at the loss.)

Zhong Ni said:
"Mr. Meng Sun has reached a pinnacle! He's advanced beyond mere knowledge. By being at ease with what's been taken away, that shows a bit of being at ease. Mr. Meng Sun doesn't think much about life, nor does he think much about death. He doesn't think much about what happened in the past, nor about what's going to happen in the future. He seems to adapt to whatever happens around him. By waiting for events to come about on their own without trying to figure them out, he's already adapted to them!
"Moreover, if limitations eventually change, how can perceptions not change along with them? If limitations remain the same, does that mean that perceptions will stop changing? Maybe you and I are peculiar in that we're dreaming and haven't yet awakened?
"That guy (Meng Sun) was startled by the transformation of a shape (his mother's death), but his heart wasn't damaged by it. He dwells where each moment is like a new dawn, and isn't affected emotionally by death. Mr. Meng Sun is uniquely awake. If people cry, he too cries. That's because he can put himself in their place. Moreover, he can make connections beyond what I can hear with my own ears. So how could I really know about myself simply by listening to the words I speak? You might dream you're a bird and soar up into the sky, or dream you're a fish and sink to the bottom of a deep pond. We can't tell whether the words we're using are based on being awake or if they're coming from a dream.
"Trying to make a situation more pleasant isn't as good as laughing out loud. Faked laughter isn't as good as the kind that naturally erupts. Be comfortable with those eruptions and give up trying to modify them - only then can one enter into the boundless unity of Nature."

Yi Er Zi (Mr. Trace of a Beard) went to see Xu You (a legendary hermit).
Xu You said:
"How has Yao enriched you?"
Yi Er Zi replied:
"Yao told me: 'You must bow down with benevolence and righteousness while speaking clearly about Right and Wrong.' "
Xu You said:
"Then why have you driven all the way out here? Since the Great Yao has already stained you with ideas about benevolence and righteousness, and stunted you with ideas about Right and Wrong, how will you be able to wander in many directions, swinging freely with reckless abandon, spinning down a path that constantly moves?"
Yi Er Zi replied:
"You might be right, but I'd still like to check out that kind of path by walking along side it."
Xu You said:
"That's not remotely possible. A blind man can't truly appreciate the pleasures of seeing beautiful things and outstanding colors. One who has impaired eyesight can't even tell the difference between green and yellow embroidery on a robe."
Yi Er Zi said:
"Wu Zhuang lost all sense of her beauty. Ju Liang lost all sense of his strength. Huang Di abandoned all sense of his knowledge. All of them eventually became refined by picking up on what was sent out. How can I know if some great force might come along and get rid of my stains and replace what was stunted, making me able to ride along with you and follow you as my teacher?"

Xu You said:
"Humph! But then, you never can tell. I'll give you the general outline of what I'd say to you:
"My teacher! My Teacher!
"Gave to all living things, but not because that's righteous.
"Promoted clarity throughout all generations, but not because that's benevolent.
"Increased from the beginning of time, but not because that's admirable.
"Enabled the universe to contain all the shapes which have been cut and carved, but not because that's a special skill.
"From this place begin your wandering."

Yan Hui said:
"I've reached a new plateau in my cultivation."
Zhong Ni (Confucius) asked:
"What do you mean by that?"
"I've forgotten all about benevolence and righteousness."
"That's great, but you're still not finished."
On another day they met again and Hui said:
"I've reached a new plateau in my cultivation."
"What do you mean by that?"
"I've forgotten all about rituals and celebrations"
"That's great, but you're still not finished."
On another day they met again and Hui said:
"I've reached a new plateau in my cultivation."
"What do you mean by that?"
"I sit in forgetfulness."
Zhong Ni perked up at this and asked:
"What do you mean by sitting in forgetfulness?"
Yan Hui replied:
"My bones seem to droop like branches overloaded with fruit. My intelligence and cleverness become overshadowed by darkness. Any knowledge has evaporated as well as any sense of my own shape. I feel embraced by a great openness. That's what I mean by sitting in forgetfulness."
Zhong Ni said:
"Being embraced in that way, then you'd be without preferences. Transforming in that way, then you'd easily change. As a result, you've become almost a Sage! I beg you to allow me to take you as my teacher and follow you."

Zi Yu (Great Charioteer) and Zi Sang (Great Silkworm Cultivator) were friends. When there had been a continuous downpour for ten days, Zi Yu said, "Zi Sang might have gotten sick!" So he packed up some food and went to feed his friend. When he reached Zi Sang's door, he heard what sounded like something between a song and wailing. A voice accompanied by a drum and lute sang out:
"Father? Mother? The heavens! Mankind!"
The sounds were all jumbled and didn't seem to make sense, as though the lyrics were so rushed that parts were missing. Zi Yu went into the house and said:
"I've just heard the lyrics to your song. What are you trying to say?"
"I was just wondering what's caused me to get to such an extreme state, but I can't figure it out. Would my father and mother have wanted me to end up so poor? The heavens are impartial as to what it will protect. The earth is impartial as to what it will support. Why would the heavens and the earth make me in particular so poor? I keep asking what it is that's done this to me, but I can't get an answer. If it can just happen that one could reach this extreme state, it must be due to destiny."

६|एक महान और श्रद्धेय गुरु

जो जानता है की क्या स्वर्ग करता है और क्या इंसान करता है वह शिखर पर पंहुचा हुआ होता है |
यह जानकर की क्या स्वर्ग करता है वह स्वर्ग के साथ जीता है और यह जानकार की इंसान क्या करता है, तब वह अपने ज्ञान का जिसे वह जानता है उसका उपयोग जिस ज्ञान को वह नहीं जानता है उसके अनुसार होने के लिया करता है, और वह अपने जीवन का व्यापन करता है जो की स्वर्ग ने उसे दिया है| मध्यमार्ग से हटे बिना इसी को कहते है ज्ञान की चरम सीमा|

फिर भी इसमें कुछ कठिनाई है| ज्ञान को भी ठहरना पड़ता है उस चीज़ के इंतजार में जहा उसका उपयोग हो सके, और जिस चीज़ का वह इंतज़ार करता है वह निश्चित नहीं होती है| तब मै यह कैसे कह सकता हूँ की जिसे में स्वर्ग कहता हूँ वास्तव में वो इंसान नहीं है और जिसे मै इंसान कहता हूँ वो वास्तव में स्वर्ग नहीं है? यहाँ पहले जरूर होना चाहिए एक सही इंसान, सही ज्ञान के होने से पहले|

एक सही इंसान से मेरा क्या तात्पर्य है? पुराने समय में सही व्यक्ति इच्छाओ के पीछे नहीं दौड़ते थे और उनके पास स्वाभिमान की बहुतायत भी नहीं होती थी और वे अपने कार्यो की योजना पहले से ही नहीं बनाते थे| ऐसे व्यक्तियो से चाहे गलती भी हो जाए पर इसका उन्हें कोई पछतावा नहीं होगा, उन्हें सफलता मिले पर वे इसका दिखावा नहीं करेगे| वे बिना डरे हुए सबसे ऊँचे स्थान पर चढ़ सकते है और बिना भीगे जल में प्रवेश कर सकते है, वे अग्नि में भी प्रवेश कर सकते है पर उन्हें इससे कोई हानि नहीं होगी| उनका ज्ञान उन्हें हर रास्ते से इसी रास्ते पर ले आता है|

पुराने समय के वे व्यक्ति बिना स्वप्नों के सोते थे और बड़ी सतर्कता से उठते थे| वे बिना स्वाद की परवाह किये खाते थे और उनके श्वास बड़ी गहराई से लिए जाते थे - उन व्यक्तियों का श्वास उनके एडियो से शुरु होता था : जबकि आजकल के इंसान अपने गले से ही श्वास ले लेते है और फिर उसे छोड़ देते है, वे अपने शब्द ऐसे बोलते है जैसे जुगाली कर रहे हो| वे अपनी वासनाओ और इच्छाओ में आसक्त होते है और तब उन्हें स्वर्ग के अनुसार दम्भी व्यक्ति माना जाता है|

पुराने समय के वे व्यक्ति जीवन के प्रति प्यार के बारे में भी नहीं जानते थे और मृत्यु से भी घृणा नहीं करते थे| वे बिना किसी हर्ष उल्लास के आते थे और बिना कोई हंगामा किये जाते थे, वे तेजी से आते थे और तेजी से जाते थे, यही सबकुछ होता था| वे कभी नहीं भूलते थे जहाँ से उन्होंने शुरू किया है और नहीं तलाशते थे उसे जहाँ उनका अंत होगा| उन्हें जो कुछ मिलता है उसी में उनको ख़ुशी होती है और इस ख़ुशी में वे आसक्त भी नहीं होते तथा इसे भूलकर अपने कार्यो में लग जाते है| इसे ही मै कहता हूँ 'सही मार्ग पर होना'| और इसे ही मै एक सही इन्सान का होना भी कहता हूँ| क्योंकि जब वह ऐसा होता है तब उसका मन भूलना जानता है और उसका मुख शांत होता है| वह शीतल होता है जैसे की शरद ऋतू होती है और सुहावना होता है जैसे की वसंत होती है और वह चारो ऋतुओ में सुख दुःख को जीत लेता है| वह उसी के साथ जाता (करता है) है जो वस्तुओ के लिए सही होता है और कोई इसकी (उसके कार्यो की) सीमा को नहीं पहचानता है| इसीलिए अगर वह कभी सेना को भी बुलाता है तो वह बड़े राष्ट्रों को भी पराजीत कर सकता है और फिर भी वह लोगो के दिलो में भी बना रहेगा| उसकी पीढ़िय चाहे दस हज़ार साल के लिए भी हो पर उसके लिए उनका कोई महत्व नहीं है|

इस प्रकार, सभी वस्तुओ को खुशिया प्रदान करने की कौशिश करना किसी को साधू नहीं बना देता है और किसी के साथ अपनापन दिखाना उसे दयालु नहीं बना देता है| स्वर्ग के साथ रहने की कौशिश करने से कोई मूल्यवान नहीं हो जाता है| जो लाभ और हानि दोनों को नहीं समझता है वह एक अच्छा राजा नहीं हो सकता है और जो केवल अपने ख्याति को चाहता हो वो एक अच्छा शिष्य नहीं हो सकता है| जो लापरवाही पूर्वक अपने शरीर को खो देता है वह एक अच्छा सेवक नहीं हो सकता है| हु-पु-हिसएह, वू-कुंग, पो-यी, शु-ची, ची-तजु, हसू-यु, ची-तो और शेन-तू (इनको इनके मूल्यों और उसूलो और सामाजिक बदलाव के लिए जाना जाता था पर इन सभ की हत्या कर दी गयी थी) ये सभी मनुष्यता की भलाई के लिए तत्पर थे, ये दुसरो के सुख में आनंदित होते थे लेकिन अपने सुख से कोई वास्ता नहीं रखते थे|

पुराने समय के वे व्यक्ति बिलकुल सही कार्य करते थे जबकि वे किन्ही मानदंडो का पालन भी नहीं करते थे| उनके पास अभाव होता था फिर भी वे किसी की मदद नहीं मांगते थे| वे किसी कार्य के लिए जिद भी नहीं करते थे| वे पुर्णतः खाली ही होते थे पर किसी वस्तु को आकर्षित भी नहीं करते थे| वे हर जगह ऐसे रौशनी फैलाते थे जैसे इसमें उन्हें बहुत आनंद मिल रहा हो और बाज़ की तरह ऊँची उड़ान भरते थे जैसे उन्हें उतरने के लिए कोई जगह खोजनी हो! उनके मुख पर बहुत ही तेज होता था| और

जिसे वे पाना चाहते थे वो उनके सामर्थ्य से बड़ा नहीं होता था|वे अपने ही पीढ़ी के लोगो के साथ कठोर भी होते थे और वे इतने भिन्न भी होते थे की उन्हें नियंत्रित कर पाना मुश्किल होता था| जब कोई नया प्रचलन आता था तो वे उसके पीछे नहीं पड़ते थे और वे इतने लापरवाह होते थे की वे भूल जाते थे की वो क्या कह रहे है|

वे दुखो को शरीर का संपीडन मानते थे और रिवाजों को काल्पनिक, ज्ञान केवल एक अवसर होता था और सामर्थ्य रक्षा का माध्यम| क्योंकि वे दुखो को केवल शरीर का संपीडन मानते थे इसीलिए इनके साथ वे उदार थे| क्योंकि वे रिवाजों को काल्पनिक मानते थे इसीलिए वो समय के साथ चल पाए| क्योंकि वे ज्ञान को केवल अवसर मानते थे इसीलिए वो कार्यो को ढंग से कर पाए| क्योंकि वे सामर्थ्य को रक्षा का माध्यम मानते थे इसलिए वो औरो को प्रेरित कर पाए स्वयं के पैरो पर खड़ा होने को और अपने कार्यो में अच्छी तरह से सम्मिलित होने को|

इस प्रकार वे एक हो गए उसके साथ जो आनंदमय था और उसके साथ भी एक हो गए जो आनंदमय नहीं था| उनके लिए एक होना भी एकता थी और एक नहीं होना भी एकता थी| एक होकर उन्होंने स्वर्ग का पालन किया| और एक ना होकर उन्होंने लोगो का पालन किया| जब स्वर्ग और इंसान आपस में जुड़ जाते है तो एक दुसरे पर विजय करने का कोई तात्पर्य नहीं होता है| एक सच्चे इंसान को केवल ऐसा ही कहा जाता है|

जीवन और मृत्यु हमारे भाग्य में लिखे हुए है| वे इतने ही निशित है जितने की दिन और रात| कुछ चीजे ऐसे होती है जिनके बारे में मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता है| और सभी वस्तुओ के लिए यह स्थिति अनिवार्य होती है| कुछ लोग ऐसे होते है जो स्वर्ग की एक पिता जैसी छवि बनाते है और उस इश्वर को नाम और व्यक्ति के तौर पर देखते है| वे लोग उसे ऐसा भी मानते है की उनके घाव भरने की उसके पास अद्भुत शक्तिया है लेकिन वे लोग भी आखिरकार मर जाते है| यहाँ कोई इससे भी अद्भुत है!

जब कोई जलधारा सूख जाती है तो उसकी मछलिया वहा एक गड्ढे में इकट्ठा हो जाती है| और एक दुसरे को अपनी लार द्वारा गिला रखती है| यहाँ पर उनके लिए किसी नदी या झील में तैरना अच्छा है ना की ऐसे जीवित रहने के लिए एक दुसरे को लार लगाना| याओ (महान राजा) की प्रशंसा करने और जिए (कुख्यात डाकू) की निंदा करने से तो अच्छा है उन दोनों को भूल जाना और भूल जाना की वो क्यों भिन्न थे|

यह संसार हमारे विभिन्न रूपों से भरा हुआ है, हमारे जीवित रहने के लिए संघर्ष करता है, बुढ़ापे में सहारा देता है और मरने के बाद हमे आराम करने के लिए ज़मीन देता है| इस प्रकार जो अच्छा है हमे जीवन देने के लिए वह हमारे मरने की जगह देने के लिए भी अच्छा है (कारण है)|

एक व्यक्ति कौशिश कर सकता है एक नाव को एक सड़क पर छुपाने की लेकिन यह एक पर्वत को एक सूखे ढेर में छुपाने जैसा होगा, पर वह सोचता है की यह एक सुरक्षित जगह होगी| तब मध्यरात्रि को एक ताकतवर इंसान आता है और उस नाव को अपने कंधो पर उठा कर चला जाता है| क्योंकि बहुत अँधेरा होता है तो कोई जान भी नहीं पाता की क्या हुआ| एक छोटी वस्तु को एक बड़ी वस्तु में छिपाना सही है पर फिर भी उसे खोजा जा सकता है| यदि एक मनुष्य इस संसार की किसी वस्तु को इसी संसार में छुपाये तो ऐसे कोई जगह नहीं है जहाँ उसे खोजा न जा सके| जीवित प्राणी निरंतर ही इस बढ़िया परिस्थिति में है| किसी के पास आकर्षक शरीर हो सकता है और इसकी उसे बहुत ख़ुशी भी हो| पर मनुष्य के शरीर को विभिन्न वस्तुओ द्वारा बदला जा सकता है और इन वस्तुओ का कोई अंत भी नहीं होता है| क्या यही ख़ुशी मिलती है इतने युद्धों में विजय प्राप्त करने की? इसलिए एक बुद्धिमान व्यक्ति वहा जाता है जहाँ उसकी प्रकृति निहित होती है ना कि वो उसको (प्रकृति को) बदलने के लिए संघर्ष करता है| ताओ खुद को व्यक्त करती है और स्वयं के वजूद का प्रमाण देती है, पर वह कोई कार्य नहीं करती है और न ही उसका कोई रूप होता है, वह सभ को कुछ ना कुछ देती है पर वापस कुछ नहीं लेती है| वह तुम्हारे अंदर समा सकती है पर फिर भी तुम उसे देख नहीं पाओगे| उसका मूल उसी में है और अपने मूल से ही वह बढती है तथा इस ब्रह्माण्ड से पहले से भी व्याप्त है| यह इतनी प्राचीन है की हर वस्तु से पहले से भी व्याप्त है| यह देवताओ और राक्षशो दोनों को शक्ति प्रदान करती हैं| इसी ने धरती और स्वर्ग दोनों को जन्म दिया है| यह ब्रह्माण्ड से भी ज्यादा ऊँची है फिर भी यह बड़ी नहीं है यह धरती के केंद्र में भी है फिर भी यह गहरी नहीं है| यह स्वर्ग और धरती से पहले से है फिर भी इसके समय को जाना नहीं जा सकता| यह समय से भी बहुत ही प्राचीन है फिर भी यह पुरानी नहीं हुई है|

वेई राज्य के 'सही' ने इसे समझा धरती और आकाश को धारण करने वाला|

फु-क्सी ने इसे समझा प्रकृति का महान श्वास|
वेई दोउ (जिसे हमारी आकाशगंगा का केंद्र समझा जाता है) ने इसे समझा एक ऐसा तारा जो की हमेसा अपने पथ पर होता है|
सूर्य और चंद्रमा ने इससे समझा हमेशा चलते रहना|
'कण-पी' (एक आत्मा जो की मानव का मुख और जानवर का शरीर लिए हुए है) ने इससे समझा कुन-लूँ पर्वत को भेदना|
जियन-वू (एक पर्वतीय आत्मा) ने इससे समझा तै पर्वत पर रहना|
पिंग-यी (येल्लो नदी की आत्मा) ने इससे समझा हमेशा बहते रहना नदी की धारा में|
हुंग दी ने इससे समझा बादलो पर घूमना|
जहां-क्सु ने इससे समझा अँधेरे महल में रहना|
यु-किंग (दक्षिणी सागर का देवता) ने इससे समझा दक्षिणी ध्रुव पर रहना|
क्सी-वांग ने इसे समझा और चला गया शो-गुंग पर्वत पर| कोई नहीं जानता की उसकी शुरुआत और आखिरी छोर कहा है|
पेंग-जू ने इसे समझा और वह ज्होऊ साम्राज्य से लेकर पांच पीढियों तक जीवित रहा|
फु-युए ने इसे समझा और वह वू-डिंग राज्य का प्रधान मंत्री बन गया और फिर अचानक सारा राज्य उसके हाथ में आ गया| और ऐसा प्रतीत हुआ की वो एक चमकता हुआ तारा है|

नान-बो-ज़ि-की ने एक औरत नु-यु से पूछा:
"आप उम्र में बहुत बड़ी है फिर भी आपका चेहरा एक नवजात बच्चे जैसा है| ऐसा क्यों है?"

'मैंने ताओ के बारे में समझा है"

नान-बो-ज़ि-की ने पूछा:
"क्या ताओ को शिक्षा द्वारा प्राप्त किया जा सकता है"

क्या? यह कैसे संभव हो सकता है? तुम इस प्रकार के व्यक्ति नहीं हो जो ऐसा कर सकते हो|एक व्यक्ति था जिसका नाम बू-लिंग्यी था उसके पास एक साधू होने का पूरा सामर्थ्य था पर वो ताओ को समझने में सक्षम नहीं था| जबकि मै ताओ को थोडा समझ पाई हूँ फिर भी मेरे में एक साधू बनने की शक्ति नहीं है| मै उसको यह वास्तव में सिखाना चाहती थी| ओह!, मेरी कितनी इच्छा थी उसको एक सच्चा साधू बनाने की! पर यह उतना आसन नहीं होता किसी को ताओ के बारे में समझाना उसको केवल ताओ के बारे में थोडा बहुत बताकर| फिर भी मैंने कौशिश की और उसे समझाने का प्रयत्न किया| तीन दिनों बाद वह इस संसार को भूल गया| इस संसार को भूलने के बाद भी वह स्वयं को जानता रहा| सात दिनों बाद वह सभी जीवित वस्तुओ को भूल गया| उन जीवित वस्तुओ को भूलने के बाद भी वह स्वयं को जानता रहा| नौ दिनों बाद वह जीवन को भूल गया और जीवन को भूलते ही वह सूर्य की किरणों जैसा प्रकाशमय हो गया| ऐसा प्रकाशमय होने के साथ ही वह विभिन्न वस्तुओ को सूक्ष्मता से देख सकता था| इस प्रकार की सूक्ष्म दृष्टि से वह भुत और भविष्य के होने से भी ऊपर आ गया| भुत और भविष्य पर विजय प्राप्त करने से अब वह वहा भी पहुच सकता है जहा ना जन्म है और ना ही मृत्यु| जीवन का अंत मृत्यु से नहीं होता और न ही जन्म से जीवन की उत्पति होती है| उसके लिए वस्तुओ से संबंध होना ऐसा है जैसे - उनका पीछा नहीं करना (उनके पाने के लिए नहीं दौड़ना), उनको दोष नहीं देना, उनका समन्वय नहीं करना - उनको समाप्त नहीं करना| इसके (इस स्तिथि को) लिये कोई नाम दिया जाए तो वह है एकात्मक संतोष| और जिसका संतोष एकरूप हो जाता है तो उसे कहते है एक होकर संतुष्ट होना|

नान-बो-ज़ि-की ने पूछा:
"क्या तुम अकेली हो जिसने इस बारे में सुना है?"

"मैंने इसे विभिन्न पुस्तकों को पढने वाले गुरुओ से सुना है और उन्होने इसे अपने गुरुओ के मुख से सुना है और उन गुरुओ ने इसे अपनी सूक्ष्म दृष्टि द्वारा देखा है| सूक्ष्म दृष्टि ने इसे धीरे धीरे फुसफुसाते हुए सुना है और उस (फुसफुसाहट) ने इसे विनर्म सेवक से सुना है| विनर्म सेवक ने इसे स्पष्ट मन्त्रो वाले से सुना है और उस स्पष्ट मंत्रो वाले ने इसे अँधेरे रहस्यों से सुना है| अँधेरे रहस्यों ने इसे एकांत तारे से सुना है और एकांत तारे ने इसे अनकही शुरुआत से सुना है|"

ज़ि-सी, ज़ि-यु, ज़ि-ली और ज़ि-लाई ये सभ इकठा हुए और एक वार्ता आरंभ की यह कहते हुए:

"कौन यह जानता है की जो नहीं है (जिसका अस्तित्व नहीं है) वह उसके सिर जैसा है, जीवन उसके रीढ़ में है और मृत्यु उसके कुल्हो में है? जो यह जानता है की जन्म और मृत्यु, जीना और मरना एक ही वास्तविकता के दो हिस्से है, मै उसे अपना मित्र बनाना चाहुगा|"

उन चारो ने एक दुसरे की तरफ देखा और चारो हंसने लगे| उन्हें एक दुसरे के साथ अथाह आत्मीयता का ह्रदय से अनुभव हुआ और उनकी आपस में गहरी मित्रता हो गयी|

कुछ समय बाद ज़ि-यी बीमार हो गया| ज़ि-सी उसे देखेने के लिए गया की वह कैसा है|
"कितना विशिष्ट है की यह शरीर अब रुखा और सख्त हो गया है!"
उसकी कमर अब झुक गयी थी उसके सभी अंग अब सुख गए थे, उसकी थोड़ी अंदर की तरफ घुस गयी थी, उसके कंधे क्षीण हो गए थे और उंगलिया स्वयं से ही घूम गयी थी| जबकि उसके पास अब कोई जीवन शक्ति भी नहीं बची थी लेकिन अब भी उसका ह्रदय साफ़ और एकाग्र था| उसने स्वयं को एक कुए के पास पहुचाया और उसमे अपना प्रतिबिम्ब देखकर बोला:"आह! इसे देखो मै अब क्या बन गया हूँ, कितना रुखा और सख्त|"

"क्या तुम्हे इससे नफरत है" ज़ि-सी ने पूछा|

जो मै बन गया हूँ या जो मै नहीं बना हूँ उससे नफरत करने में क्या लाभ है| मानो की अगर मेरी दाहिनी भुजा एक मुर्गे में बदल जाए तो कम से कम यह सुबह समय तो बताएगी| या फिर मेरी बायीं भुजा एक तीर कमान में बदल जाए तो कम से कम यह शिकार के काम तो आएगी और मानो की मेरे कुल्हे एक पहिये में बदल जाए और मेरी आत्मा एक अश्व की तरह बदल जाये तो मै कम से कम इनकी सवारी तो कर सकुगा| फिर तुम सोचो की बाकि परिवर्तनों से जो मेरे लिए होगे उनसे मै क्या-क्या कर सकुगा| फिर भी जो भी मुझे मिला है वह बिलकुल सही समय पर मिला है और जो भी मैंने खोया है उसे स्वीकार करना चाहिए, शांति से उसे अपनाना चाहिए और इसका अनुपालन करना चाहिए| इस तरह ना तो सुख और ना ही दुःख मुझे प्रभावित कर पायेगे| इसे ही हम कहते है बंधनों से मुक्त होना| और जो मुक्ति को नहीं देख पाते है उनके लिए इन बंधनों में पड़ने का कोई ना कोई कारण जरूर होता है| इसके आलावा जीवित वस्तुए उस पर विजय नहीं पा सकती है जो प्रकृति ने समय की शुरुआत से हमारे लिए निर्धारित किया है| तो फिर इससे नफरत करने का क्या लाभ!"

कुछ समय बाद ज़ि-लाई बीमार होकर अपनी मृत्यु के लिए हांफ रहा था| उसकी पत्नी और बच्चे उसके चारो तरफ बैठकर रो रहे थे| ज़ि-ली उसको देखने के लिए गया और उनसे कहा:
"तुम सभ पर दया आती है! इससे दूर हो जाओ! दुःख मत दिखाओ - यह मात्र परिवर्तन से गुजर रहा है|

फिर उसने द्वार के पास खड़े होकर अपने मित्र से कहा:
"कितना विशिष्ट है परिवर्तन जो तुम अनुभव कर रहे हो तुम अब क्या बनने जा रहे हो - तुम किस चीज़ में बदलोगे? क्या तुम एक चूहा बन जाओगे? या फिर एक छोटा जीव बन जाओगे?"

ज़ि-लाई ने कहा:
"जब मात पिता एक शिशु को जन्म देते है तब चारो दिशायें एक होकर उस बच्चे के भाग्य को निर्धारित करती है जिसके पीछे उसको चलना पड़ता है| लेकिन जब उसके अंदर की शक्तिया एक हो जाती है तो ऐसा लगता है वही उसको (उस बच्चे को) चला रही है और वही उसकी माता पिता है| अब उन्ही(उन शक्तियों) के कारण मै मृत्यु के करीब आ गया हूँ, और अगर मै इससे बचना चाहता हूँ तो वास्तव में ही मै एक मुर्ख हूँ| यह कैसी मुर्खता है इसको ऐसे देखना की जैसे तुमने कोई अपराध किया है| यह संसार हमारे विभिन्न रूपों से भरा हुआ है, हमारे जीवित रहने के लिए संघर्ष करता है, बुढ़ापे में सहारा देता है और मरने के बाद हमे आराम करने के लिए भूमि देता है| इसीलिए जो अच्छा है हमे जीवन देने के लिए वह अच्छा है (कारण है) हमारे मरने की जगह देने के लिए भी| मानो यदि अब मै एक कुशल लोहार होता और लोहे को पिघला कर उसे ढालने की कौशिश कर रहा होता लेकिन तभी अचानक से वो लोहा मुझसे कहे की मै मो-ये (एक प्रसिद्द तलवार) में ढलना चाहता हूँ| तो तब लोहार सोचेगा की इस लोहे का दिमाग भ्रष्ट हो गया है| यदि इसी प्रकार से मै कहूँ की मै भी अपने पूर्ण रूप में ही रहना चाहता हूँ केवल और केवल पूर्ण रूप में तब माँ प्रकृति सोचेगी की यह स्वार्थी हो गया है| यदि ये ब्रह्माण्ड उस लोहे की भट्टी की तरह है और माँ प्रकृति उसका लोहार तो ऐसे कौन सी जगह है जहाँ हम नही जा सकते है? जिस तरह से हम अगर सो भी जाते है तो उसी तरह से हम अचानक से जाग भी जाते है|"

ज़ि-संग-हु, मेंग-ज़ि-फेन और ज़ि-किन-जहाँग तीन मित्र थे जो एक दुसरे के साथ बहत ही घनिष्ट थे|
उनमे से एक ने कहा:
"कौन है वो जो औरो के साथ सम्मिलित हो जाता है बिना उनमे सम्मिलित हुए और जो कार्य कर लेता है बिना कुछ किये? कौन है वो जो स्वर्ग तक ऊपर जा सकता है और बादलो पर चल सकता है, वस्तुओ को निहार सकता है बिना दृष्टि खोये और यह सभ कर सकता है स्वयं को भूलकर बिना रुके?"

उन तीनो ने एक दुसरे की तरफ देखा और तीनो हसने लग गए| उन्हें एक दुसरे के साथ अथाह आत्मीयता का ह्रदय से अनुभव हुआ और उनकी आपस में गहरी मित्रता हो गयी|

थोड़े समय पश्चात जब ज़ि-संग की मृत्यु हो गयी और तब तह उसे दफनाया नहीं गया था| कोंग-नि ने इसके बारे में सुना और अपने शिष्य ज़ि-गोंग को वहा क्या हो रहा है यह जानने के लिए भेजा| उसने वहा जाकर देखा की एक मित्र तो धुन बजा रहा था और दूसरा गाना गा रहा था|

वे दोनों गा रहे थे
"ओह! संग-हु आ गया
"ओह! संग-हु आ गया
"और वह अपने सच्चे स्वरूप में चला गया
"जबकि हम अब भी इंसानों की तरह है

ज़ि-गोंग जल्दी से उनके पास गया और पूछा:
"इस संसार में तुम दोनों कैसे एक मृत व्यक्ति के लिए गा सकते हो| क्या यह सही आचरण है?"

उन दोनों मित्रो ने एक दुसरे की तरफ देख और हंसने लग गए और पूछा:
"तुम लोग यह कैसे जान सकते हो की सही आचरण क्या होता है"

ज़ि-गोंग ज्होंग नि के पास वापस आया और उसने बताया जो वहा हुआ:
"ये दोनों किस प्रकार के व्यक्ति है? वे अपने व्यवहार को भी नियंत्रित नहीं कर सकते और उनके लिए उनके मित्र की मृत्यु का भी कोई शोक या आदर नहीं| वे उसके शव के साथ बैठकर गाना गा रहे थे और उनके आचरण में स्थिति के प्रति कोई शोक नहीं था, वे पागल हो चुके ही| वे किस प्रकार के व्यक्ति है?"

ज्होंग नि ने कहा:
"वे समाज द्वारा निर्धारित सीमाओ से मुक्त है जबकि मै अब भी इनमे बंधा हुआ हूँ| और जो मुक्त है और जो बंध है उनमे कोई मेल नहीं होता है, यह तो मेरी मुर्खता थी जो की तुम्हे वहा सांत्वना देने भेजा| कोई सीमा जिसका वे पालन करते है वह है जो प्रकृति द्वारा बनी हुई है और वे इस ब्रहमाण्ड के साथ समरूपता के साथ स्थित है| वे जीवन को केवल एक तुच्छ आसक्ति मानते है जो उनके साथ एक तरह से जुडी हुई है और मृत्यु को केवल इससे मुक्त होना मानते है| इस प्रकार उनमे जन्म और मृत्यु, भुत और भविष्य के लिए क्या समझ हो सकती है! वे जो उन्हें मिला है उसका उपयोग करते है और भूल जाते है स्वयं के रूप और शरीर के बारे में| वे सभी के आरंभ और अंत का अनुभव करते है और उन्हें नहीं पता होता की क्या चल रहा है| इस प्रकार इस मोह माया से प्रभावित हुए बिना वे अपना जीवन व्यतीत कर रहे है| वे इस तरह का कोई दिखावा भी नहीं करते इसलिए उनके पास कुछ ना कुछ उपयोग करने के लिए जरूर होता है| वे कैसे चिंतित और प्रभवित हो सकते है समाज के नियमो और रिवाजो से या फिर औरो द्वारा उनकी समीक्षा किये जाने से!"

ज़ि-गोंग ने कहा"
"अगर ऐसा है आचार्य तो आप क्यों बंधे हो इन सीमाओ से?"

जहों नि ने जवाब दिया:
"मै तो बलि का बकरा हूँ, फिलहाल यही मै तुमको बता सकता हूँ"

ज़ि-गोंग ने पूछा:
"तब तो मुझे ख़ुशी होगी इन सीमाओ के बारे में और सुनने में"

कोंग ज़ि ने कहा:
"मछलिया जल में एक साथ इकट्ठा होती है| इंसान ताओ में एक साथ स्थित होते है| जो जल में साथ स्थित होते है वो आसानी से उसकी गहराई तक जा सकते है और पोषण पा सकते है| जो ताओ में एक साथ स्थित होते है वे औरो पर निर्भर नहीं होते है और अपने जीवन का आसानी से व्यापन करते है|
इसीलिए यह कहा गया है "मछलिय एक दुसरे के बारे में भूल जाती है जब वे जल में होती है और इन्सानो को एक दुसरे का विस्मरण हो जाता है जब वे ताओ के मार्ग में होते है|

ज़ि--गोंग ने पूछा:
"क्या मै ऐसा नहीं करने वालो के बारे में पूछ सकता हूँ?"

ज्होंग नि ने कहा:
"इसको न मानने वाला औरो से भिन्न प्रतीत होता है पर वह स्वर्ग के सामंजस्य में होता है|
इसीलिए यह कहा गया है जो प्रकृति के साथ नहीं होते उनका पालन लोगो द्वारा होता है और जो लोगो के अनुसार नहीं होते उनका पालन प्रकृति करती है|"

यां हुई ने ज्होंग नि से पूछा:
"जब मेंग-सुन-की की माता की मृत्यु हुई तो उसने बिना कोई आंसू बहाए विलाप किया, उसके ह्रदय में कोई दुःख नहीं था, उसने बिना क्रंदन किए शोक मनाया| चूँकि उसने इन तीनो में से कुछ नहीं किया फिर भी उसे लू राज्य में सबसे अच्छा विलाप करने वाला समझा जाता है| ऐसा कैसे हो सकता है की कोई इतने स्पष्ट रूप से अपने मूल से जुडा हुआ हो और फिर भी लोग उसे अच्छा समझे| मै तो इसे बहुत ही आश्चर्यजनक मानता हूँ|

ज्होंग नि ने कहा:
"श्रीमान मेंग-सुन शिखर पर पहुचे हुए है, वे ज्ञान से भी परे है| इस चीज़ को हल्के से लेना की आपको क्या मिला है और क्या खोया है यह आपका इस तरह का होना दर्शाता है|"
मेंग-सुन ना ही तो जीवन के बारे में इतना सोचते है और न हीं मृत्यु के बारे में| वह यह भी नहीं सोचते है भूतकाल में क्या हुआ और भविष्य में क्या होने वाला है| उन्हें वह स्वीकार्य है जो उनके साथ हो रहा है| जो होता है उसका वह इंतजार करते है और उसे बदलने की कौशिश नहीं करते क्योंकि वह उन्हें स्वीकार्य होता है|
फिर भी अगर कुछ बदल भी जाता है तो इसके साथ उनकी वह समझ नहीं बदलती है? और वह नहीं बदलता इसका यह मतलब नहीं है की उसकी समझ बदलना छोड़ देगी? हो सकता है की हम असामान्य है यह सभ बोलते हुए और अभी तक इसे समझ नहीं पाए है?
वह व्यक्ति वस्तुए के बदलाव से (अपनी मा की मृत्यु से) थोडा विचलित तो हुआ लेकीन उसके ह्रदय पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा| उसके लिए हर पल एक नयी सुबह जैसा है और उसके भाव् मृत्यु से प्रभावित नहीं होते| श्रीमान मेंग-सुन बहुत ही विलिक्षित रूप से बौद्धित है|अगर लोग रोते है तो वह भी रोते है, यह इसीलिए की वो स्वयं को उनकी जगह ले लेते है| उनका बोद्ध हमारी समझ और इन्द्रियों से भी गहरा है| फिर मै अपने बारे में केवल कुछ शब्द सुनकर जो की मैंने ही कहे है, स्वयं को कैसे जान सकता हूँ? तुम स्वप्न देख सकते हो की तुम एक पक्षी की तरह आकाश में उड़ते हो या फिर एक मछली की तरह समुद्र में गोता लगाते हो पर तुम यह नहीं बता सकते हो की तुम जो शब्द बोल रहे हो उनको कहते वक़्त तुम जागे हुए हो या फिर स्वप्न में हो| केवल जोर जोर से हसने से परिस्थितियों को अपने अनुरूप बनाने की कौशिश करना अच्छा नहीं होता है|
स्वाभाविक रूप से खिलखिलाने से मिथ्या हँसना अच्छा नहीं होता है| और इस तरह सहज होना खिलखिलाते हुए बिना उसे बदलने की कौशिश किये - तभी कोई इस असीमित प्रकृति से एक हो सकता है|"

यी-एर-ज़ि एक बार क्सु-यू को देखने गए| क्सु-यु ने कहा:
"याओ ने तुम्हारा पोषण किस प्रकार किया है?"

यर-इ-ज़ि ने जवाब दिया:

"याओ ने हमे विनर्मता और आदर के साथ सहज होना सिखाया है जब आप सही और गलत के बारे में बात कर रहे हो|"

क्सु-यु ने कहा:
"तब तो तुम व्यर्थ ही यहाँ आये| क्योकि महान याओ ने पहले ही तुम्हे विनम्रता और दयालुता के बारे में विचार दे दिए है और तुम्हारे विचारो को सही और गलत के बारे में भी निर्धारित कर दिया है| फिर तुम किस प्रकार इस तरह असावधान और बेफिक्र होकर इतनी दिशाओ में भटक सकते हो, एक एसे मार्ग पर जो निरंतर बदलता रहता है?"

यी-एर-ज़ि ने कहा:
"तुम ठीक हो सकते हो फिर भी मै इसके साथ चलकर इस मार्ग का निरिक्षण करना चाहुगा|"

क्सु-यु ने कहा:
"यह इतनी दूर से ही संभव नहीं है| एक अँधा व्यक्ति सुन्दरता की प्रशंसा नहीं कर सकता है और एक बहरा व्यक्ति संगीत की प्रशंसा नहीं कर सकता है|"

यी-एर-ज़ि ने कहा:
"वू-ज्हुंग ने अपनी सुन्दरता का बोद्ध खो दिया था और जू-लिंग ने अपने सारे सामर्थ्य का| हुंग-दी ने अपना ज्ञान और विवेक छोड़ दिया था| ये सभ उसे जानकार शुद्ध हो गए थे जो इन्हें बताया गया था| तो फिर मै यह कैसे जान सकता हूँ की कोई ऐसे शक्ति आयेगी जो मेरी सभी विचारधारा और विकारो को समाप्त करके मुझे शुद्ध कर देगी? मुझे अपने साथ सिखने दे, मै आज से आपको आपको अपना गुरु मानता हूँ?"

क्सु-यू ने कहा:
“पर तब तुम कुछ कह नहीं सकते हो| मै तुमको केवल आभास देता हूँ जो तुमने कहा है|”

"मेरे गुरूजी! मेरे गुरूजी!"
"सभी जीवित वस्तुओ को कुछ न कुछ प्रदान करते हो केवल इसलिए नही की वो सही है”
"सभी पीढियों को सहजता सिखाई है केवल इसीलिए नहीं की वे दयालु है”
"बढ़ रहे हो समय की शुरुआत से केवल इसलिए नहीं की यह प्रशंसनिय है”
"इस ब्रह्माण्ड के पास सभी वस्तुओ को धारण करने की शक्ति है चाहे वे वस्तु कैसे भी हो केवल इसीलिए नहीं की यह इसका एक विशिष्ट गुण है”
इस प्रकार तुम्हारी शिक्षा आरंभ होती है|

यां हुई ने ज्होंग-नि से कहा:
"मैंने अपने ध्यान में नए शिखर को पाया है”

ज्होंग-नि ने पूछा:
"तुम्हारा इससे क्या मतलब है”

"मुझे सभी विनम्रता और दयालुता का विस्मरण हो गया है"
"यह अच्छा है पर तुम्हारा कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है”

एक दुसरे दिन वो दोबारा मिले और हुई ने कहा:
"मैंने अपने ध्यान में नए शिखर को पाया है”

ज्होंग ने ने पूछा:
"तुम्हारा इससे क्या मतलब है”

"मुझे सभी रीती रिवाजो का विस्मरण हो गया है"
"यह अच्छा है पर तुम्हारा कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है”

एक दुसरे दिन वो फिर दोबारा मिले और हुई ने कहा:
"मैंने अपने ध्यान में नए शिखर को पाया है"

ज्होंग ने ने पूछा:
"तुम्हारा इससे क्या मतलब है"
"मुझे विस्मरण का भी विस्मरण हो गया है, स्मृति-लोप हो गया है"

ज्होंग नि अचानक से खड़ा हुआ और पूछा:
"स्मृति-लोप से तुम्हारा क्या अभिप्राय है"

यां-हुई ने जवाब दिया:
"मुझे अपनी हड्डिय ऐसे प्रतीत हो रही है जैसे फल गिरने के बाद टहनी होती है, छाया द्वारा मेरा ज्ञान और मेरी चतुरता का लोप हो चूका है| मेरे अंदर से कोई भी ज्ञान चला गया है और मुझे स्वयं का भी बोद्ध नहीं है| मैं स्वयं को बहुत ही मुक्त अनुभव कर रहा हूँ| मेरा स्मृति-लोप से यही अभिप्राय है|

ज्होंग नि ने कहा:
"इस तरह से आलान्गित होकर तुम्हारे लिय कोई प्राथमिकताये नहीं बची है| इस तरह रूपांतरित होकर तुम आसानी से परावर्तित हो सकते हो| इस तरह तुम एक हो गए हो! मै आपसे विनती करता हूँ की मुझे अपना शिष्य बना लीजिये|"

ज़ि-यु और ज़ि-संग आपस में मित्र थे जब दस दिन तक लगातार वर्षा हुई तब ज़ि-यु ने सोचा की ज़ि-संग बीमार हो गया है! इसीलिए उसने कुछ भोजन बांधा और उसको खिलाने के लिए चल पड़ा| जब वह ज़ि-संग के दरवाजे पर पंहुचा तब उसे आभास हुआ की जैसे एक गाना बज रहा है और उसे वाद्य यंत्रो की आवाज़ के साथ यह सुना:
"माता और पिता? स्वर्ग और मनुष्य?

तब उसने कहा मैंने तुम्हारे गाने के शब्दों को सुना| तुम क्या कहने की कौशिश कर रहे थे?"

"मै सोच रहा था की किस कारण से मै इस स्थिति में पहुच गया हूँ, मै इसका पता नहीं लगा पा रहा हूँ| क्या मेरे माता और पिता चाहते थे की मै इतना निर्धन बनु? या फिर मै ऐसा स्वर्ग के कारण हूँ की वो मेरी रक्षा करता है| या फिर धरती के कारण की वो मझे धारण करती है| क्यों स्वर्ग और धरती ने मुझे ही इतना निर्धन बनाया है? मै यह निरंतर पूछता रहता हूँ यह मेरे साथ क्या हो गया है, पर मुझे कभी इसका जवाब नहीं मिलता है|अगर कोई इन परिस्थितियों में पहुचता है तो ज़रूर ही यह ऐसा भाग्यवश होता है|"

7.Dealing with Emperors and Kings

Nie Que (Cracked and Missing Teeth) asked Wang Ni (Master of Bewilderment) four questions, and four times he (Wang Ni) said he didn't know. Nie Que jumped up with great delight and ran to tell Pu Yi Zi (Mr. Cattail Coat) about it.
Pu Yi Zi said:
"Is this something new to you? Clansman You Yu (Emperor Shun) wasn't as good as Clansman Tai (a legendary ruler, possibly Fu Xi). As for Clansman You Yu, he still hid behind benevolence in order to coerce people. In that way he got what he wanted from the people, but he could never give up seeing the faults of people. As for Clansman Tai, he would lie down completely at ease and wake up refreshed. In one moment he could become a horse and in the next moment become an ox. His knowledge was sensitively honesty, his virtue was extremely genuine, and he'd never even consider the faults of others."

Jian Wu went to see Kuang Jie Yu (Lunatic Hit by a Chariot).
Kuang Jie Yu asked:
"What did Ri Zhong Shi (Sleeps Until Midday) tell you?"
Jian Wu replied:
"He said to me that the nobleman who has authority over people should set a personal example by proper regulations, law and practices. The corollary of this will be that no one will disobey him and everyone will be transformed as a result"
Jie Yu said:
"That would ruin Virtue. If someone tries to govern everything below Heaven in this way, it's like trying to stride through the seas or cut a tunnel through the river or make a mosquito carry a mountain. When a great sage is in command, he doesn't try to take control of externals. He first allows people to do what comes naturally and he ensures that all things follow the way their nature takes them. The bird flies high in the sky and thereby escapes from the risk of being shot with arrows. The mouse burrows down under the hill of the spirits and thus escapes being disturbed. Don't you even have as much understanding as these two creatures?"

Tien Ken was travelling to the south of Yin Mountain. He reached the river Liao, where he met the Man without a Name and said to him, 'I wish to ask you about governing everything under Heaven.'

The Man without a Name said, 'Get lost, you stupid lout! What an unpleasant question! I am travelling with the Maker of All. If that is too tiring, I shall ride the bird of ease and emptiness and go beyond the compass of the world and wander in the land of nowhere and the region of nothing. So why are you disturbing me and unsettling my heart with questions about how to rule all below Heaven?'

Tien Ken asked the same question again. The Man without a Name replied,

'Let your heart journey in simplicity.
Be one with that which is beyond definition.
Let things be what they are.
Have no personal views.
This is how everything under Heaven is ruled.'

Yan Tzu Chu went to visit Laozi and he said, 'Here is a man who is keen and vigilant, who has clarity of vision and wisdom and who studies the Tao without ceasing. Such a person as this is surely a king of great wisdom?'

'In comparison to the sage,' said Laozi, 'someone like this is just a humble servant, tied to his work, exhausting himself and distressing his heart. The tiger and the leopard, it is said, are hunted because of the beauty of their

hides. The monkey and the dog end up in chains because of their skills. Can these be compared to a king of great wisdom?'

Yang Tzu Chu was startled and said, 'May I be so bold as to ask about the rule of a king who is great in wisdom?'

Laozi said, 'The rule of a king who is great in wisdom! His works affect all under Heaven, yet he seems to do nothing. His authority reaches all life, yet no one relies upon him. There is no fame nor glory for him but everything fulfils itself. He stands upon mystery and wanders where there is nothing.'

In Chen there was a shaman of the spirits called Chi Hsien. He could foretell when people would die and be born; he knew about good fortune and failure as granted by Heaven; he knew about happiness and distress, life and its span, knowing the year, month, week and day, as if he Were a god himself. As soon as the people of Cheng saw him coming, they would run away. Lieh Tzu went to see him and was fascinated by him. Coming back to Hu Tzu, he said, 'I used to believe, Master, that your Tao was perfection. Now I have found something even better.'

Hu Tzu said, 'What I have shown you is the outward text of my teaching, but not what is central. How can you think you have grasped my Tao? If you have hens but no cockerel, how can you have eggs? You flaunt your Tao before the world. This is why this man can read your fortune. Bring this shaman to me and let us meet.'

The next day Lieh Tzu brought the shaman to visit Hu Tzu. And as he left Hu Tzu's house with Lieh Tzu, the shaman said, 'Oh dear! Your Master is dying. There's virtually no life left — he has maybe a week at most. I saw a strange sight — it was like wet ashes!'

Lieh Tzu went in again, weeping so copiously that tears soaked his coat, and told Hu Tzu what had been said. Hu Tzu said, 'I made myself appear like the earth. I was as solid as the mountain, showing nothing to him. He probably perceived me to be a closed book, apparently without virtue. Bring him again if you can

The next day Lieh Tzu came again with the shaman to see Hu Tzu. As they went out, the shaman said to Lieh Tzu, 'How lucky for your Master that he has met me. He is getting better. Indeed he is truly alive. Life is flowing again.'

Lieh Tzu went back in and commented on this to Hu Tzu. Hu Tzu said, 'I made myself appear to him like Heaven, without fame or fortune on my mind. What I am wells up in me naturally. He saw in me the full and natural workings of life. Bring him again if you can."

The next day they came again to see Hu Tzu. As they went out, the shaman said to Lieh Tzu, 'Your Master is never the same. I cannot grasp the fortune shown in his face. If he returns to some constancy then I will come and see him again.'

Lieh Tzu went back in and reported this to Hu Tzu. 'I showed him myself as the great Void where all is equal,' said Hu Tzu. 'He almost certainly saw in me the harmony of my innate forces. When water moves about, there is a whirlpool; where the waters are calm, there is a whirlpool; where the waters gather, there is a whirlpool. There are nine types of whirlpool and I have shown him just three. Bring him back again if you can.'

The next day they both came again to see him. However, before he had even sat down, the shaman panicked and ran off. Hu Tzu said, 'Follow him!'

Lieh Tzu ran after him. But he could not catch up with him. Coming back to Hu Tzu, he said, 'He has gone, I've lost him. I couldn't catch him.'

Hu Tzu said, 'I just appeared to him as hitherto unrevealed potential. I presented myself as not knowing who is who, nor what is what. I came flowing and changing as I willed. That's why he bolted.'

As a result of this, Lieh Tzu realized that he had so far learnt nothing real, so he returned home. For three years he did not go out. He cooked for his wife and tended the pigs as if they were humans. He showed no interest in his studies. He cast aside his desires and sought the truth. In his body he became like the ground itself. In the midst of everything he remained enclosed with the One and that is how he remained until the end.

Without seeking to become famous after death;
Without seeking to become a scheming politician;
Without seeking to become an event planner;
Without seeking to become a smart ruler;
Endlessly allowing the body to be guided by the spirit within, and wandering without a purpose;
Endlessly receiving from the heavens, and not looking for results;
Allowing emptiness to be regained - and that's all.
A perfected person's attention is like a mirror. Without a will or a face of its own. Free flowing and unhidden.
In that way they have the ability to win over things without harming them

The emperor of Nan Hai (the South Sea) is known as Shu (The Fixer). The emperor of Bei Hai (the North Sea) is known as Hu (Nonchalant). The emperor of what lies between the two extremes is known as Hun Dun (Chaos [the primordial blob out of which heaven and earth divided]). The Fixer and Nonchalant often met with each other on the territory of Chaos, and Chaos was very considerate towards them. The Fixer and Nonchalant were trying to figure out a way to repay Chaos for his kindness.
"People all have seven apertures so they can see, hear, eat and breathe. He's the only one without them, so let's try and bore some for him."
Each day they bore one aperture into him. On the seventh day Chaos died.

७|राजाओ और सम्राटो से सरोकार

नी कउए ने वांग-नि से चार प्रश्न पूछे और चारो बार वांग नि ने जवाब दिया की मुझे नहीं पता| यह सुनकर मी-कउए को बहुत हर्ष हुआ औ उसने यह बात पु-यी-ज़ि को जाकर बताई|

पु-यी ज़ि ने कहा:
"क्या यह तुम्हारे लिए नया है?
राजा शुन राजा फु-क्सी के जितने अच्छे नहीं थे| और राजा शुन दयालुता को ही अपनाते थे लोगो को नियंत्रित करते वक़्त| इस तरह से वो हमेशा पा लेते थे जो वो अपने लोगो से पाना चाहते थे पर उन्हें कभी लोगो के दोष नजर नहीं आते थे| जबकि राजा फु-क्सी सहजता के साथ आराम करते थे और तरोताजा होकर जागते थे| किसी पल वो एक अश्व बन जाते थे और किसी पल वो एक बैल बन जाते थे| उनका ज्ञान पूरी तरह से न्यायप्रिय था और उनका सामर्थ्य सत्यानिष्ट, और वे कभी दुसरो के दोष भी नहीं देखते थे|"

जियन-वू देखने गया जिएन-वू को|
कुंग-जिए-वू ने पूछा:
"ज्होंग-सही ने तुम्हे क्या बताया है?"

जियन-वू ने जवाब दिया:
"उसने मुझे बताया की एक सच्चा और इमानदार व्यक्ति जिसके पास अधिकार होते है उसे चाहिए की वह नियमो औरो कानूनों को अच्छी तरह से लागु करे| जिसका परिणाम यह हो की कोई उनकी अवहेलना न कर पाए और परिणामस्वरूप हर कोई बदल जाएगा|”

जिए-यु ने कहा:
“यह (ऐसा करना) सामर्थ्य का नाश कर देगा| अगर कोई भी स्वर्ग के सानिध्य में आने वाली इन वस्तुओ को ऐसे नियंत्रित करेगा तो यह समुद्र में सुरंग बनाने और एक मच्छर द्वारा पर्वत को उठाने जैसा होगा| जब एक ज्ञानी मनुष्य अधिकार लेता है तो वह बाह्य वस्तुओ को नियंत्रित करने की नहीं सोचता है| वह लोगो को करने देता जैसा प्राकृतिक रूप से वहा होता है और वहाँ जाता है जहाँ प्रकृति उन्हें ले जाती है| पक्षी आकाश में जितना ऊँचा उड़ते है उतना ही वे तीर लगने के भय से बचे रहते है| एक चूहा पर्वत में गहरा बिल बनाता है और वह वहा शांति से रह पाता है| क्या तुममे इन छोटे जीवो जितनी भी समझ नहीं है?"

तिएन-केन यिन पर्वत के दक्षिण में यात्रा कर रहा था जहाँ वह एक ऐसे व्यक्ति से मिला जिसका कोई नाम नहीं था उसने उनसे कहा:
"मै आपसे पूछना चाहता हूँ की स्वर्ग के अधीन होकर लोगो का संचालन कैसे किया जाए|”

उस बिना नाम वाले व्यक्ती ने कहा:
"मुर्ख यहाँ से चले जाओ! कितना बेहूदा सवाल है! मै यात्रा कर रहा था सभको बनाने वाले के साथ और अगर यह भी थकाने वाली है तो मै सहज और सुने हुए पक्षी की सवारी कर इस संसार के मानचित्र में से दूर कही चला जाऊँगा जहाँ कुछ भी नहीं होगा| फिर तुम मुझे परेशान क्यों कर रहे हो मेरे ध्यान को क्यों भटका रहे हो यह पूछकर की स्वर्ग के अधीन लोगो का संचालन कैसे किया जाए|”

तिएन केन ने वही सवाल दोबारा पुछा और उस बिना नाम वाले व्यक्ति ने जवाब दिया
“अपने ह्रदय को सहज एवं सदा शांत रखो
उसके साथ हमेशा एक रहो जो की अप्रिभाषित है
वस्तुओ को होने दो जो वे होना चाहती है
अपने स्वयं के कोई विचार मत रखो|
यही स्वर्ग के अधीन शासन करने का तरीका है|”

यां-तजु-चु एक बार लाओजी से मिलने गया उसने कहा:
"यहाँ एक व्यक्ति है जो बहुत ही बुद्धिमान और सतर्क है उसकी दृष्टि बहुत ही सूक्ष्म है, ज्ञान बहुत ही शुद्ध है वह बिना रुके हुए ताओ का अध्ययन करता है| इस प्रकार के व्यक्ति के पास निश्चित ही ज्ञान का भंडार होगा?"

लाओजी ने कहा:
"वह साधू, उस प्रकार का व्यक्ति केवल एक विनम्र सेवक होता है, जो की हमेशा अपने कार्य से बंधा होता है वह अपने ह्रदय को हानि पहुचकर स्वयं को ही हानि पहुचाता है| चीते और तेंदुए का शिकार उनकी सुंदर खाल के लिये किया जाता है| एक बन्दर और एक कुते को उनकी योग्यता देखकर पाला जाता है| फिर तुम ऐसे व्यक्ति को ज्ञान का भंडार कैसे संबोधित कर सकते हो?"

यंग-तजु-चु चकित रह गया और बोला:
"क्या मै योग्य हूँ यह पूछने के लिए की अपार ज्ञान का स्वामी कौन होता है?"

लाओजी ने कहा:
"अपार ज्ञान का स्वामी वह होता है जिसके कार्य स्वर्ग के अधीन हर वस्तु को प्रभावित करे फिर भी वो कुछ करता हुआ न प्रतीत हो| उसके अधिकारों से सभको लाभ पहुचे फिर भी कोई उस पर निर्भर न हो| उसके लिए ना ही तो सम्मान हो और न ही कीर्ति हो बल्कि स्वयं से ही वस्तुए अपना कार्य करे| वह रहस्यों में और जहाँ कुछ ना हो वहा विचरण करता हो|

चेन राज्य में एक अध्यात्मिक व्यक्ति है उसका नाम ची-ह्सिएँ है| वह भाग्य बता सकता है की लोगो का जन्म कब हुआ और मृत्यु कब होगी, वह भविष्य भी बता सकता है की यह अच्छा होगा या फिर बुरा होगा| वह सब कुछ ऐसे जान लेता है जैसे की वही भगवान हो| जब भी चेन राज्य के लोग उसे आता हुआ देखते है वे इधर उधर भागने लग जाते है|

लिएह-तजु ने उसे देखा और उसे देखकर चकित रह गया फिर उसने हु-तजु से कहा:
"गुरूजी मै सोचता था की आपकी ताओ ही सिद्ध है पर मैंने अब आपसे भी सिद्ध पुरुष को देखा है"|

हु-तजु ने कहा:
"जो मैंने तुम्हे अब तक दिखाया है वह मेरी शिक्षाओ का वो केवल तुच्छ सा अंश था न की वह उनका केंद्र था| तुम कैसे सोच सकते हो की तुम मेरी ताओ के बारे में जानते हो? अगर तुम्हारे पास केवल मुर्गिया है मुर्गे नहीं है तो अंडे कहाँ से मिलेगे? तुम अपनी ताओ का दिखावा करते हो| यही कारण है की वह व्यक्ति तुम्हारे भाग्य को जान लेता है| उस अध्यात्मिक व्यक्ति को मेरे पास लाओ फिर मै तुम्हे बताता हूँ|"

अगले ही दिन लिएह-तजु उस अध्यात्मिक व्यक्ति को अपने गुरु के पास लाया, उसके गुरु को देखकर वह बोला:
"प्रिय वत्स! तुम्हारे गुरु की मृत्यु नजदीक है, अब उनका जीवन नहीं बचा है वो केवल एक दो दिन के मेहमान है| मैंने कुछ अजीब देखा है लगता ये गीली राख जैसा है!"

लिह-तजु रोता हुआ अपने गुरु के पास गया और बताया जो उस व्यक्ती ने कहा|
हु तजु ने कहा:
"मैंने स्वयं को उसे पृथ्वी जैसा दिखाया| मै उसे वक़्त पर्वत जैसा सख्त प्रतीत हुआ और वह बाकि कुछ नहीं देख पाया| उसने जरूर मुझे एक सामर्थ्य रहित व्यक्ति समझा होगा| उसे दोबरा मेरे पास लाओ अगर तुम ला सकते हो तो|"

अगले दिन लिएह-तजु उस अध्यात्मिक व्यक्ति को अपने गुरु के पास फिर लाया, उसके गुरु को देखकर वह बोला:
"तुम कितने भाग्यवान हो जो तुमने मुझे अपने गुरु से मिलाया, मुझसे मिलकर अब वो ठीक हो रहे है, जीवन का संचार उनमे फिर से हो गया है जबकि मै कहुगा की वो अब ठीक से जी रहे है"

लिह-तजु फिर से अपने गुरु के पास गया और बताया जो उस व्यक्ति ने कहा|
हु तजु ने कहा:
"मैंने उसे स्वयं को स्वर्ग जैसा दिखाया बिना किसी अपने स्वाभिमान या फिर भाग्य के| उसे दिखाया जो मेरे अंदर प्रकृति द्वारा निहित है| इसीलिए उसने मुझमे जीवन के सम्पूर्ण संचार को देखा| उसे दोबारा मेरे पास लाओ|"

अगले ही दिन वे दोनों हज़ू-तजु के पास पहुचे और उस अध्यात्मिक व्यक्ति ने कहा तुम्हारे गुरु कभी एक जैसे होते ही नहीं है मै उनके भविष्य का अनुमान नहीं लगा सकता हूँ| अगर उनमे थोड़ी स्थिरता आती है तो मै उन्हें दोबारा देखने आउगा|
लिह-तजु फिर से अपने गुरु के पास गया और बताया जो उस व्यक्ति ने कहा|

हु तजु ने कहा:
"मैंने स्वयं को उसे महान शुन्य जैसा दिखाया जहाँ सभी वस्तुए एकसमान होती है| उसने जरूर ही मेरी निहित उर्जाओ को समस्वरूप में देखा| जहाँ पर जब जल घूमता है तो वहां भंवर बन जाता है और जब जल शांत होता है तब भी भंवर बनता है और जब जल इकट्ठा होता है तब भी भंवर बनता है| इस प्रकार नौ प्रकार के भंवर होते है मैंने तो अभी तक उसे तीन ही दिखाए है| उसे दोबारा मेरे पास लाओ अगर तुम ला सको|"

अगले ही दिन वे दोनों फिर हज़ू-तजु के पास पहुचे और वह अध्यात्मिक व्यक्ति वहाँ बैठने से पहले ही परेशानी में भाग खड़ा हुआ|

हु-तजु ने कहा:
"जाओ उसे पकड़ो '|

लिएह-तजु उसके पीछे भागा पर उसे पकड़ नहीं पाया|
फिर वह हु-तजु के पास वापस आकर उसने कहा:
"वह जा चूका है मै उसे पकड़ नहीं पाया"

हु-तजु ने कहा:
"मैंने ऊस व्यक्ति को अन्तर्निहित अज्ञात असीमित सामर्थ्य को दिखाया| मैंने उसको दिखाया की मै नहीं जानता की कौन व्यक्ति कौन है और क्या वस्तु क्या है| मै बहता रहा और बदलता रहा जैसा मै चाहता था| इसी कारण वह व्यक्ति अचंभित रह गया|

परिणामस्वरूप लिएह-तजु को एहसास हुआ की अभी तक उसने कुछ भी वास्तविक नहीं सिखा है इसीलिए वो घर चला गया| तीन सालो तक वो बाहर नहीं निकला और अपनी पत्नी के लिए खाना बनाया, अपने पालतू जानवर की देखभाल की जैसे की वो भी इंसान ही हो| उसने अपने अध्ययन में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई| उसने अपनी इच्छाओ को जाने दिया और सच से परिचित हुआ| उसका शरीर पृथ्वी जैसा हो गया, वह सभ वस्तुओ के बिच उन जैसा ही हो गया और अंत तक बचा रहा|

मरने के बाद बिना सम्मान की चाहत रखे|
बिना कोई चालक मंत्री बनने की चाहत रखे|
बिना कोई कार्य निर्धारित करने की चाहत रखे|
बिना कोई महान राजा बनने की चाहत रखे|
निरंतर अपने शरीर को अपनी आत्मा द्वारा प्रेरित करते हुए घूम रहा था बिना किसी उद्देश्य के;
स्वर्ग से कर्मो की प्राप्ति करते हुए बिना परिणामो को चाहते हुए;
बस शुन्य में स्थित हुए - बस यही सभ कुछ है|

एक सिद्ध पुरुष एक दर्पण जैसा होता है| उसका अपना कोई चेहरा या इच्छा नहीं होती| स्वेच्छा से बहता हुआ और रहस्यमय| इस प्रकार उनमे सामर्थ्य होता है वस्तुए को पाने का बिना उनको क्षति पहुचाये|

दक्षिणी समुद्र के सम्राट को शु नाम से जाना जाता है| उत्तरी समुद्र के सम्राट को बी-है नाम से जाना जाता है| और वह सम्राट जो इन समुद्रो के बीच में आता है (कोलाहल जो धरती और स्वर्ग के बीच का होता है) उसे हूँ-दूँ के नाम से जानते है| वे दोनों सम्राट हमेशा कोलाहल के क्षेत्र में एक दुसरे से मिलते है और तब कोलाहल का सम्राट उनकी इसमें मदद करता था| अब वे दोनों सम्राट उसकी इस दयालुता के लिए उसको धन्यवाद देने का तरीका खोजते है यह कहते हुए:
"लोगो के पास सप्त अंग होते है देखने, सुनने, खाने और श्वास लेने के लिए, चलो कोलाहल सम्राट के पास ये नहीं है उसको ये भेंट करते है"
हर दिन उन्होंने उसमे एक अंग के लिए छेद किया| सातवे दिन कोलाहल सम्राट की मृत्यु हो गयी|

8.Webbed Toes

Joined toes and extra fingers seem to come from nature, yet, functionally speaking they are superfluous. Goiters and tumors seem to come from the body, yet in their nature, they are superfluous. And (similarly), to have many extraneous doctrines of charity and duty and regard them in practice as parts of a man's natural sentiments is not the true way of Tao. For just as joined toes are but useless lumps of flesh, and extra fingers but useless growths, so are the many artificial developments of the natural sentiments of men and the extravagances of charitable and dutiful conduct but so many superfluous uses of intelligence.

People with superfluous keenness of vision put into confusion the five colors, lose themselves in the forms and designs, and find fault with the greens and yellows embroidered on a blue robe. Is this not so?
That's what happened to Li Zhu.
Doesn't one who tries to make their ears more sensitive to sound beyond what's normal mix up the five sounds, listen for additional notes played by a pitch pipe, and find fault with the sounds of all the musical instruments in an orchestra playing the "Huang Zhong" and "Da Lu" (two popular musical compositions of the time)?
That's what happened to Shi Kuang.
Doesn't one who tries to add benevolence to themselves destroy their own nature in order to attract fame and good reputation, cause the rest of the world to look like miscreants, and look to find fault with those who don't follow their rules?
That's what happened to Zeng Shen and Shi Qiu.
Doesn't one who adds webbing to their debates work hard to contain and tie up their words into strong forceful sentences, letting their minds swim with thoughts of the "hard" and the "white", getting caught up in what is "the same" and what is "different", and look to find fault with what they consider to be useless words used by those seeking immediate fame?
That's what happened to Yang and Mo (Yangzi and Mozi).
Therefore, all of those methods are simply ways to add numerous webs and unnecessary fingers, and are diversions to really getting right with the world.

He who would be the ultimate guide never loses sight of the inner nature of life. Therefore with him, the united is not like joined toes, the separated is not like extra fingers, what is long is not considered as excess, and what is short is not regarded as wanting. For duck's legs, though short, cannot be lengthened without dismay to the duck, and a crane's legs, though long, cannot be shortened without misery to the crane. That which is long in nature must not be cut off, and that which is short in nature must not be lengthened. Thus will all sorrow be avoided. I suppose charity and duty are surely not included in human nature. You see how many worries and dismays the charitable man has! Besides, divide your joined toes and you will howl: bite off your extra finger and you will scream. In the one case, there is too much, and in the other too little; but the worries and dismays are the same. Now the charitable men of the present age go about with a look of concern sorrowing over the ills of the age, while the non-charitable let loose the desire of their nature in their greed after position and wealth. Therefore I Suppose charity and duty are not included in human nature. Yet from the time of the Three Dynasties downwards what a commotion has been raised about them!

Moreover, those who rely upon the arc, the line, compasses, and the square to make correct forms injure the natural constitution of things Those who use cords to bind and glue to piece together interfere with the natural character of things. Those who seek to satisfy the mind of man by hampering it with ceremonies and music and affecting charity and devotion have lost their original nature. There is an original nature in things. Things in their original nature are curved without the help of arcs, straight without lines, round without compasses, and rectangular without squares; they are joined together without glue. and hold together without cords. In this manner all things live and grow from an inner urge and none can tell how they come to do so. They all have a place in the scheme of things and none can tell how they come to have their proper place. From time immemorial this has always been so,

and it may not be tampered with. Why then should the doctrines of charity and duty continue to remain like so much glue or cords, in the domain of Tao and virtue, to give rise to confusion and doubt among mankind? Now the lesser doubts change man's purpose, and the greater doubts change man's nature. How do we know this?

Ever since the time when Shun made a bid for charity and duty and threw the world into confusion, men have run about and exhausted themselves in the pursuit thereof. Is it not then charity and duty which have changed the nature of man? Therefore I have tried to show (42) that from the time of the Three Dynasties onwards, there is not one who has not changed his nature through certain external things. If a common man, he will die for gain. If a scholar, he will die for fame. If a ruler of a township, he will die for his ancestral honors. If a Sage, he will die for the world. The pursuits and ambitions of these men differ, but the injury to their nature resulting in the sacrifice of their lives is the same. Tsang and Ku were shepherds, and both lost their sheep. On inquiry it appeared that Tsang had been engaged in reading with a shepherd's stick under his arm, while Ku had gone to take part in some trials of strength. Their pursuits were different, but the result in each case was the loss of the sheep. Po Yi died for fame at the foot of Mount Shouyang. (43) Robber Cheh died for gain on the Mount Tungling. They died for different reasons, but the injury to their lives and nature was in each case the same. Why then must we applaud the former and blame the latter? All men die for something, and yet if a man dies for charity and duty the world calls him a gentleman; but if he dies for gain, the world calls him a low fellow. The dying being the same, one is nevertheless called a gentleman and the other called a low character. In regard to damaging their lives and injuring their nature, then Robber Zhi is the same as Bo Yi. However, the noble and the base dislike each other because of their differences!

Furthermore, I wouldn't say that one who subordinates their nature to benevolence and righteousness, even though they might be like Zeng Shen or Shi Qui, were generous. I wouldn't say that one who subordinates their nature to the five flavors, even though they may be like Yu Er, had fine taste. I wouldn't say that one who subordinates their nature to the five sounds, even though they may be like Shi Kuang, had excellent hearing. I wouldn't say that one who subordinates themselves to the five colors, even though they may be like Li Zhu, was clear-sighted. When I refer to someone who's generous, it's not the same as the common understanding of benevolence and righteousness. Generosity comes from the virtue of what one is, and that's all. When I refer to someone who has fine taste, it's not the same as the common understanding of benevolence and righteousness. Fine taste comes from acceptance of one's own nature and destiny, and that's all. What I mean when I refer to someone who has excellent hearing, it's not the same as the common understanding of being able to listen to other things, but to be able to listen to oneself and that's all. What I mean when I refer to someone who is keen sighted, it's not the same as the common understanding of being able to observe other things, but in being able to observe oneself and that's all.

He who does not look at himself but looks at others, who does not get hold of himself but gets hold of others, is getting what other men have got and failing to get what he himself has got. He finds joy in what brings joy to other men, but finds no joy in what would bring joy to himself. And if he finds joy in what brings joy to other men, but finds no joy in what would bring joy to himself, then whether he is a Robber Chih or a Po Yi he is equally deluded and perverse. Conscious of my own deficiencies in regard to Tao, I do not venture to practise the principles of charity and duty on the one hand, nor to lead the life of extravagance on the other.

८|जुडी हुई उंगलिया

आपस में जुड़े हुए अंगूठे या फिर एक ज्यादा अंगुली अगर हाथ या पैर में होती है तो हमे वो प्रकृति से ही मिल होते है लेकिन हम उनके बारे में बात करते है तो उन्हें फालतू ही समझते है|
इसी प्रकार पुण्य और कर्तव्य के बारे में बहुत ज्यादा मतों का होना और उनको केवल मनुष्य के भाव समझन, यह ताओ का सही रास्ता नहीं है| जैसे की आपस में जुड़े हुए अंगूठे केवल मांस का फालतू टुकड़ा ही होते है और एक ज्यादा ऊँगली केवल अतिरिक्त विकास ही होता है उसी प्रकार मनुष्य के कई बनावटी भावो का उत्पन्न होना और अतिरिक्त पुण्य और कर्तव्य के मतों का होना केवल ज्ञान का बेवजह इस्तेमाल ही है|

लोग जो अतिरिक्त उत्सुक्ता के साथ देखते है वे पांचो रंगों को भी भ्रम की स्थिति में कर देते है| वे उनसे विभिन्न रूप और प्रारूप तैयार करते है| और उनकी नजरो को पीले और हरे रंग के नीली पोशाक पर होने में भी दोष दीखता है| क्या यही बात नहीं है?
यही है जो ली-जहू के साथ हुआ था|

क्या जो ध्वनी से भी परे सुनना चाहता है वह नहीं मिला देता है पांचो ध्वनियो को आपस में| जो सुनता है केवल एक अतिरिक्त धुन को जो की बजती है केवल एक यंत्र से तब वह सभी वाद्य यंत्रो के संगीत में दोष बताता है जब वे "हुंग-ज्होंग" और "डा-लू" की धुन बजा रहे हो|(उस समय के दो प्रसिद्द संगीत)
यही है जो सही-कुंग के साथ हुआ था|

क्या यह नहीं है की जो ख्याति और नाम की खातिर स्वयं को दयालु बनाते है वो स्वयं को ही नष्ट कर लेते है| वो बाकि संसार को पाखंडी बताते है और जो लोग उनके नियमो को नहीं मानते है उनको दोष देते है?
यही है जो ज़ंग-शेन और शि-कुए के साथ हुआ था|

क्या जो वाद विवादों में अपने पक्ष को मजबूत बनाने के लिए अतिरिक्त बेवजह के तर्क जोड़ते है और केवल सही और गलत के विचारो में अपने मन को बहने देते है और तब वे उलझ जाते है की क्या एकरूप है और क्या भिन्न है| वे दोष निकालते है उन शब्दों में जो दुसरे बोलते है, क्या केवल अपना नाम कमाने के लिए?
यही है जो मांग और मो के साथ हुआ था|

इसीलिए ये सभी तरीके कितनी ही फालतू उंगलियो को बेवजह जोड़ने के केवल आसान से रास्ते है और ये मन को इस संसार के साथ वास्तव में सही होने से हटा देते है|

वह जो परम धैर्यवान होता है कभी भी जीवन की गहराई को समझने की अपनी सूक्ष्म दृष्टि को नहीं खोता है इसीलिए उसके द्वारा उन उंगलियों को फालतू नहीं समझा जाता है, जो ज्यादा होता है उसे अतिरिक्त नहीं समझा जाता है और न ही जो कम होता है उसकी और अपेक्षा की जाती है| जैसे एक बतख के पैर छोटे होते है लेकिन बिना बतख को चोट पहुचाये उनको बड़ा नहीं किया जा सकता है तथा जैसे एक सारस के पैर लम्बे होते है उन्हें बिना सारस को चोट पहुचाये छोटा नहीं किया जा सकता| इसीलिए इस प्रकृति में जो लम्बा है उसे छोटा करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए और जो छोटा उसको लम्बा करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए| इस प्रकार सभी दुखो से बचा जा सकता है| मै समझता हूँ की धर्म और कर्तव्य को तो मनुष्य के स्वभाव में होना ही नहीं चाहिए| आप जानते है की एक धार्मिक व्यक्ति को कितनी व्यर्थ चिंता होती है! इसके अलावा अगर तुम अपने जुड़े अंगूठो को अगर अलग करते हो तो तुम्हे बहुत पीड़ा पहुचेगी और अगर तुम उस अतिरिक्त ऊँगली को काटते हो तो तुम करहा उठोगे| इस एक स्थिति में तो हमारे पास बहुतायत है और एक में बहुत ही कम लेकिन दोनों परिस्थितियों में पीड़ा और चिंता एक ही है| अब अगर वर्तमान समय का एक धार्मिक व्यक्ति संसार के दुखो को देखकर हमेशा दुखी ही रहता है और एक व्यक्ति जो धार्मिक नहीं होता है वह अपने अंदर छिपी वासनाओ के कारण धन और वैभव के पीछे दौड़ता रहता है| इसीलिए मै कहता हूँ की धर्म और कर्तव्य को तो मनुष्य जीवन में होना ही नहीं चाहिए| फिर भी तीन साम्राज्यों के समय से ही इन दोनों के लिए कितना हो-हल्ला मचा हुआ है|

फिर भी जो एक रेखा पर, प्रकार पर और चतुर्भुज पर रेखाचित्र बनाने के लिए निर्भर होते है वो वस्तुए के प्राकृतिक ढांचे को क्षति ही पहुचाते है| जो रस्सी से उनको बांधते है है और गोंद से उनको आपस में चिपकाते है वे केवल उनके प्राकृतिक गुणों को ही प्रभावित करते है| जो मनुष्य के मन को अच्छे संगीत, रिवाजों, परोपकार और श्रद्धा से बांधना चाहते है, खुश करना चाहते है वे उनकी वास्तविक प्रकृति को ही दबाते है| वस्तुओ की एक वास्तविक प्रकृति होती है| और वे अपनी वास्तविक प्रकृति में बिना किसे रेखा या फिर चतुर्भुज की सहायता से ही होती है; वे बिना किसी गोंद के ही आपस में जुडी होती है और उन्हें इकट्ठा रखने के लिए रस्सी की आवश्यकता नहीं होती है| इस प्रकार सभी वस्तुओ का विकास उनकी निहीत आत्मिक शक्ति द्वारा होता है और कोई नहीं बता सकता की यह कैसे हुआ है| उन सभका इस महान योजना में सही स्थान होता है और कोई नहीं बता सकता की वे अपने सही स्थान पर कैसे आई है| अनंतकाल से ही यह ऐसे ही चला आ रहा है और हमे इसके साथ छेडछाड नहीं करनी चाहिए| फिर क्यों ये परोपकर और कर्तव्य, रस्सी और गोंद इस तरह हमसे चिपके हुए है और ताओ और सामर्थ्य के अनुक्षेत्र में मनुष्यता के किये दुविधा और संशय पैदा कर रहे है| और यह भी है की थोडा संशय मनुष्य के उद्देश्य को बदल देता है और इसका अधिक होना मनुष्य की प्रकृति को ही बदल देता है| मै यह कैसे जानता हूँ?

उस समय से ही जब राजा शुन ने परोपकार और कर्तव्य की बात चलाई थी तभी से इस संसार को दुविधा में दाल दिया है, मनुष्य तब से इनके पीछे भाग रहा है और इनको पाने की चाहत में वास्तविकता को भूल गया है| क्या यह नहीं है की परोपकर और कर्तव्य ने मनुष्य के निहित स्वभाव को बदल दिया है? इसीलिए मै यह बात तीन राजवंशो के समय से ही बताने की कौशिश कर रहा हूँ की ऐसा कोई नहीं है जो इन बाहय वस्तुओ के कारण नहीं बदला है| अगर कोई साधारण मनुष्य होता है वो वह मरता है लाभ के कमाने के लिए, अगर कोई विद्वान् होता है वो मरता है नाम कमाने के लिए| अगर कोई राजा होता है तो वह अपने पैतृक सम्मान के लिए मरता है और अगर कोई साधू होता है तो वह इस संसार की भलाई के लिए मरता है| इन सभके उद्देश्य और चाहत भिन्न है पर इन इच्छाओ का जो परिणाम होता है वह सभके लिए एक समान है|
त्सांग और कु दो गडरिये थे उन दोनों की भेडे कही खो गयी| बाद में जाँच से पता चला की जब उन दोनों की भेड़ खो गयी त्सांग तो अपनी लाठी को बगल में रखकर किताब पढ़ रहा था और 'कु' कही जाकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहा था| इन दोने के कार्य भिन्न थे पर उनका परिणाम एक ही हुआ की उन् दोनों की भेड़े खो गयी | पो-यी अपना नाम कमाने के लालच में शौयंग पर्वत पर मर गया| लुटेरा 'चेह' धन कमाने के लालच में तुन्गिलंग पर्वत पर मर गया| वे अलग अलग कारणों के लियी मरे पर उन दोनों को मिले जीवन का अंत और हानि दोनों के लिए एक ही था| फिर हम क्यों एक को दोष देते है और दुसरे का गुणगान करते है? हर व्यक्ति किसी चीज़ के लिए तो ज़रूर मरता है फिर भी जो धर्म और कर्तव्य के लिए मरते है उन्हें क्यों हम एक अच्छे व्यक्ति के तौर पर जानते है; और अगर कोई लाभ कमाने के चक्कर में मरता है तो हम उसे नीच मानते है| मरना सभ के लिए समान है पर एक को सज्जन कहा जाता है और दुसरे को नीच कहा जाता है| अपने जीवन को क्षति पहुचने और अपने स्वभाव को दबाने के संबंध में लुटेरा जही और बो-यी एक सामान है| पर फिर भी वे (लोग) एक दुसरे को उनकी पृथकता के कारण भिन्न समझते है!

इसके अतिरिक्त मै यह नहीं कह सकता की जो स्वयं के स्वाभाव को दयालु और विनम्र समझता हो वो ज़ंग-शेण और सही-कउए जितना उदार हो| मै नहीं समझता की जो अपनी प्रकृति को पांचो तत्वों को समझने वाला मानता हो वह ली-जहू जितना सूक्ष्म दृष्टा हो| जब मै कहता हु उदार होना इसका तात्पर्य उस दयालुता और विनम्रता की सामान्य समझ के साथ नहीं है बल्कि यह तो वह है जो स्वयं के अंदर निहित है, और यही सभ कुछ है| जब मै कहता हूँ सूक्ष्म दृष्टा होना तो इसका तात्पर्य उस पांचो तत्वों की सामान्य समझ के साथ नहीं है बल्कि यह तो वह है जो स्वयं के अंदर उनका मूल तत्व समाया हुआ है, और यही सभ कुछ है|

वह जो स्वयं को नहीं देखता है बल्कि दुसरो को देखता है, जो स्वयं का समझने की कौशिश न करते हुए दुसरो को समझने की कौशिश करता है वह तब उसको नहीं देख पाता है जो स्वयं उसके अंदर निहित है| वह उस हर वस्तु को ज्यादा तवज्जो देता है जिसको दुसरे मानते है की इससे उनको ख़ुशी मिलती है पर उसको भूल जाता है जिससे उसे ख़ुशी मिलती है और यदि वह उस वस्तु को ज्यादा तवज्जो देता है जिसको दुसरे मानते है की इससे उन्हें ख़ुशी मिलती है पर उसको भूल जाता है जिससे उसे ख़ुशी मिलती है तो लुटेरा चेह और महात्मा पो-यी एक जैसे धोखेबाज़ और भ्रष्ट थे| स्वयं के विकारो से अवगत होकर ताओ के संबंध में - मै न ही तो एक तरफ धर्म और कर्तव्य के मतों को मानता हूँ और न ही दूसरी तरफ बहुतायत का जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ|

9.Horse's Hooves

Horses have hooves to carry them over frost and snow, and hair to protect them from wind and cold. They eat grass and drink water, and fling up their tails and gallop. Such is the real nature of horses. Even if it had access to luxurious terraces and elegant bedrooms, it wouldn't have any use for those things.

One day Polo (famous horse-trainer), appeared, saying, "I am good at managing horses." So he burned their hair and clipped them, and pared their hooves and branded them. He put halters around their necks and shackles around their legs and numbered them according to their stables. The result was that two or three in every ten died. Then he kept them hungry and thirsty, trotting them and galloping them, and taught them to run in formations, with the misery of the tasselled bridle in front and the fear of the knotted whip behind, until more than half of them died. The potter says, "I am good at managing clay. If I want it round, I use compasses; if rectangular, a square." The carpenter says, "I am good at managing wood. If I want it curved, I use an arc; if straight, a line." Yet, would it be the nature of a tree or clay to want to be shaped to fit a perfect circle, an L-square, a compass or a plumb line?

Nevertheless, generation after generation praise those people, saying:
"Polo was good at controlling horses, and the potter and carpenter are good at controlling clay and wood."
This is also true for those who think they're good at controlling the world - they go to excess. In my opinion, those who who think they're good at controlling the world really aren't. Each person has their own constant nature. They weave in order to get clothing and plow the fields in order to get food. This is the virtue by which each of them live. They do what needs to be done without preference, and allow destiny to reveal to them what the heavens require. Such instincts may be called "Heaven born."

So in the days of perfect nature, men were quiet in their movements and serene in their looks. At that time, there were no paths over mountains, no boats or bridges over waters. All things were produced each in its natural district. Birds and beasts multiplied; trees and shrubs thrived. Thus it was that birds and beasts could be led by the hand, and one could climb up and peep into the magpie's nest. For in the days of perfect nature, man lived together with birds and beasts, and there was no distinction of their kind. Who could know of the distinctions between gentlemen and common people? Being all equally without knowledge, their virtue could not go astray. Being all equally without desires, they were in a state of natural integrity. In this state of natural integrity, the people did not lose their (original) nature. And then when Sages appeared, crawling for charity and limping with duty, doubt and confusion entered men's minds. They said they must make merry by means of music and enforce distinctions by means of ceremony, and the empire became divided against itself.

If a log isn't chopped up, what could be used to make sacrificial bowls? If chunks of pure jade aren't broken up, what could be used to make medals and emblems of power? If Dao and De aren't abandoned, who would need to adopt benevolence and righteousness? If one's natural disposition isn't discredited, who would have use for those types of rituals and music? If the five colors aren't unnaturally blended, what could be used to create official patterns? If the five sounds aren't considered unharmonious, what need would there be to follow the six mandated tones? To destroy something's natural shape in order to create tools and utensils is the crime of the craftsman. To make over Dao and De to fit the confines of benevolence and righteousness is the fault of the Sage

As for horses, if they roam freely across the land they eat grass and drink water. When they're happy they entwine their necks and nuzzle each other. When they're angry they rear back and raise their hooves. Horses have instincts about these things. If they're weighed down with saddles and harnesses and forced into rows with blinders on, then a horse's instinct would be to look scornfully at the restraints meant to keep it under control, and pretend to be obedient while secretly planning how to bite through the bridle. Therefore, horses know that they've been abducted, and Polo was the one to blame.

In the time of He Xu the people stayed at home without being concerned about what they were doing, and went out without being concerned about where they were going. They were happy to have food in their mouths and went about patting their full bellies. The people were able to simply do that. Then along came the Sages, bowing down and humbling themselves to ceremonial music as though they were out to rectify the shape of those in the world, twisting and distorting the concept of benevolence and righteousness as though they were out to comfort the hearts of those in the world, and it was only then that the people began to feel that what they thought of as good was actually crippled and distorted. All sorts of disputes broke out about what was really beneficial, and they couldn't stop. That was the fault of the Sages.

९| अश्व खुर

घोड़ो के पास खुर होते है जो उनकी सख्त और बर्फीली जगहों पर चलने में सहायता करते है, उनके पास लम्बे बाल होते है जो उन्हें हवा और सर्दी से बचाते है| वे घास खाकर और पानी पीकर अपने पेट को भरते है और अपनी भूख मिटाते है| यदि उनको आलीशान महलो में लाया जाए और गर्म मुलायम बिस्तर आराम करने के लिए दिया जाए तो यह उनके किसी काम का नहीं होता है|

एक दिन पोलो (एक प्रसिद्द घोडा प्रशिक्षक) आया और बोला'मै घोड़ो का नियंत्रण करने में निपुण हूँ'| इस प्रकार उसने उनके बाल कटवा दिए, खुरो को छिलवा दिया और उन्हें सजा-धजा दिया| उसने उनके गले में लगाम दाल दी, उनके पैरो में बेडिया और एक ही अस्तबल में बहुत सारे घोड़ो को भर दिया| परिणाम यह हुआ की हर दस घोड़ो में से दो या तीन मर गए| तब वह उनको भूखा और प्यासा रखने लगा और उनको एक सीध में भागना सिखाने लगा| इस प्रकार एक तरफ भूख प्यास और लगाम तो दूसरी तरफ तेज चलती छड़ी इसके डर से उनमे से आधे मर गए|
एक कुम्हार कहता है'मै मिटटी को ढालने में सक्षम हूँ| मै अगर उसे गोल करना चाहता हूँ तो मै एक वृत का उपयोग करता हूँ और अगर उसे सीधा करना चाहता हूँ तो उसे एक रेखा खींच कर करता हूँ'|
फिर भी किसी रूप में ढलना वृत और पनसाल की सहायता से क्या यह मिटटी का स्वभाव है?
कभी नहीं हो सकता, पीढियों से इन लोगो को यह बताया जा रहा है|
"पोलो निपुण था घोड़ो को नियंत्रित करने में और कुम्हार सक्षम था मिटटी को किसी रूप में ढालने के"|
यह उनके लिए भी सत्य है जो मानते है की हम इस संसार को नियंत्रित कर रहे है - यह बिलकुल निरर्थक है| मेरी राय में जो ऐसा मानते है की हम इस संसार को नियंत्रित करने में सक्षम है वे गलत है| हर व्यक्ति का अपना खुद का स्वभाव होता है| वे वस्त्र पहनते है सर्दी से बचने के लिए और खेत जोतते है अपने भोजन के लिए| यही वह सामर्थ्य है जिसके कारण वे जीवित है| इनको यह बिना किसी प्राथमिकता से करना होता है और फिर भाग्य के सहारे होना पड़ता है की स्वर्ग ने उनके लिए क्या लिखा है| इस प्रकार की प्रवृति को स्वर्ग द्वारा निर्मित कहा गया है|

उस समय जब मनुष्य का स्वाभाव प्राकृतिक होता था तो मनुष्य अपने चाल चलन में सादा और पहनावे में सरल होता था| उस समय पर्वतो के ऊपर कोई रास्ते नहीं हुआ करते थे और पानी में कोई नाव नहीं होती थी| हर वस्तु की उत्पत्ति उसके प्राकृतिक स्वभाव से ही होती थी| तब सभी पशु-पक्षी और पेड़-पौधे समृद्ध थे और फल फूल रहे थे| तब कोई भी आराम से पेड़ पर चढ़कर एक चिड़िया के घोंसले में भी जा सकता था| उस समय मनुष्य पशु पक्षियों के साथ रहता था और उनमे कोई भेद नहीं था| उस समय कौन जनता था एक सज्जन पुरुष और एक पशु में भेद? हर कोई बिना किसी ज्ञान के न होने के कारण एक था और उनका सामर्थ्य भटका हुआ नहीं था| वे सभी बिना किसी इच्छाओ के होने के कारण प्राकृतिक समरूपता की स्थिति में थे| वे अपनी वास्तविक प्रकृति को भूले नहीं थे| लेकिन उसी समय महात्माओ का उदय होता है और वे लोगो को धर्म और कर्तव्य के लिए कार्य करना सिखाते है और इसी से ही मनुष्य के मन में सभ दुविधाओ और संसय का आरंभ होता है| वे लोगो को संगीत से आनंदमयी होना और रिवाजों में सम्मान होना सिखाते है जिससे की विभिन्न राज्यों का अस्तित्व आता है|

एक लकड़ी के लठे को जब तक नहीं काटा जाता है तब तक उससे वस्तुए नहीं बनायीं जा सकती है! यदि लोहे को पिघलाया नहीं जाए तब तक उससे तलवार और तीर नहीं बनाये जा सकते है! अगर इसी तरह यदि ताओ और ते का त्याग ही नहीं होगा तो हमें धर्म और दयालुता की क्या ज़रुरत है? अगर किसी का प्राकृतिक स्वाभाव पूर्ण है तो उसे क्या अरूरत है संगीत और रीती रिवाजों की आनंदमयी होने के लिए? जब तक पांचो रंगों को आपस में नहीं मिलाया जाता है तब तक कौन उनसे विभिन्न रूप बना सकता है? जब पांचो धुनों को पवित्र नहीं समझा जाता है तो क्या ज़रुरत रह जाती उनको बजाने की? वस्तुए से विभिन्न उपकरण और साधन बनाने के लिए उनके प्राकृतिक रूप के साथ छेदछाड़ करना यही एक शिल्पकार की सबसे बड़ी गलती होती है और ताओ और ते को धर्म और दयालुता के साथ जोड़ना याही एक साधू महात्मा की गलती होती है|

घोड़े अगर वे मैदान में आजाद दौड़ते है तभी वे घास और पानी से अपनी भूख प्यास मिटा सकते है| जब वे खुश होते है तब अपनी गर्दन से एक दुसरे को सहलाते है प्यार करते है और जब वे गुस्सा होते है तो अपने पैरो और पीठ को ऊपर उठाकर इसका इज़हार करते है| वस्तुओ के प्रति घोड़ो की यही प्रवृति होती है| और जब एक घोड़े को साज और सज्जा के समान के साथ लाद दिया जाता है और लगाम से बांध दिया जाता है तब वे चाहे आपके नियंत्रण में भी हो पर वे केवल आपको अपनी लात से मारना ही चाहता है| इस प्रकार घोड़े जानते है की उनके साथ अन्याय हुआ है और इसके लिए पोलो ही ज़िम्मेदार है|

हे-क्सु के समय लोग अपने घरो में ही रहते थे बिना इसकी परवाह किये की वो क्या कर रहे है और वे परवाह नहीं करते थे की वो कहा जा रहे है| वे अपने मुह में भोजन को लेकर खुश होते थे और उसे खाकर अपने पेट को थपथपाते थे| वे सहजता से इसे करते थे |तब ही साधू महात्मा आये और उन्होंने लोगो को एक दुसरे के आदर में झुकना सिखाया| लग रहा था की मानो वे संसार को अपने अनुसार बदलना चाहते है| उन्होंने उनके शांत ह्रदय को धर्म और दयालुता का पाठ पढ़ाकर दुविधा में दाल दिया लगता था की जैसे वे ही उन लोगो के ह्रदय को शांत करना जानते हो| तभी लोगो में कौन सही है और कौन गलत है इसके विचार उत्पन्न हुए| उसी से सभी प्रकार के वाद विवादों का जन्म हुआ और उन्हें रोका भी नहीं जा सका| यही दोष है एक साधू महात्मा का|

10.Rifiling Trunks

If one is to guard and take precautions against thieves who rifle trunks, ransack bags, and break open boxes, then he must bind with cords and ropes and make fast with locks and hasps. This the ordinary world calls wisdom. But if a big strong thief might come along and hoist the safe on his shoulders, lift up the boxes, sling the bag over his shoulder and rush away with them, fearing only that the rope, cord, clasps and bolts wouldn't be secure enough. In that case, the man who earlier was called wise was in fact only piling up goods for the benefit of a great thief.

Let me try explaining what I mean. What the ordinary world calls a wise man is in fact someone who piles things up for the benefit of a great thief, is he not? And what it calls a sage is in fact someone who stands guard for the benefit of a great thief, is he not? How do I know this is so?

In the old days, in the state of Qi, people in neighboring villages could watch over each other and listen to the sounds made by their chickens and dogs. The area in which they spread their hunting nets and traps, and plowed their fields was over 2000 li square (equal to about 600 square miles). Within their four boundaries they erected communal ancestral shrines and set up district offices for the rural areas. They followed the ideas of the sages!
However, Lord Tian Cheng in one day was able to kill the Duke of Qi and take over his country. As for the theft, was it only the country he stole? He also stole their wise and sagely laws. Therefore, Lord Tian Cheng might have been called a robber and thief, but he ended up resting there as comfortably as Yao and Shun. Small states didn't dare to oppose him, large states didn't dare to seek retribution, and for twelve generations his family ruled the state of Qi. They used the wise and sagely laws to guard the safety of robbers and thieves!

Let's talk a little more about this. What's commonly thought of as being smart doesn't take into account the idea of a really big thief! If someone had real wisdom, wouldn't they be on guard against the biggest thief of all? How can we know that's so?
In the old days, Long Feng was beheaded, Bi Gan had his heart cut out, Chang Hong was disemboweled, and Zi Xu's corpse was left to putrefy. Even though those four were worthy gentlemen, they couldn't avoid having their bodies slaughtered.
When Zhi's (Robber Zhi) followers asked him:
"Do thieves also have Dao?"
Zhi responded:
"What could possibly proceed without having Dao? Being able to quickly determine where valuables are hidden in a room - that's wisdom. By entering first - that's bravery. By leaving last - that's righteousness. Knowing when the task should be aborted - that's intelligence. Dividing up the booty - that's benevolence."
One who didn't have those five attributes could never become a great thief in this world. Looking at it that way, if a person was good at something but couldn't achieve the way of a Sage, he wouldn't be able to establish himself. If Zhi couldn't achieve the way of a Sage, he wouldn't have been any good at what he did. Since there are so few good people in the world, and so many bad people, it stands to reason that the Sage's beneficial contributions to the world are few and their harmful contributions are numerous.

There are some sayings:
"When the lips are worn away, the teeth get cold.
"When the wine of the state of Lu was diluted, Han Dan was surrounded."
(Note: At a great feast in the state of Chu the Lord of Lu provided cheap wine while the Lord of Zhao provided good wine. A mischievous steward switched them, and the ruler of Chu was so offended at the poor wine that he attacked Zhao and sacked their capital city, Han Dan.)

With the birth of Sages, great thieves arise. If the idea of anyone being a Sage was disregarded and ignored, the idea of great thieves would also be released and abandoned, and the world could then begin to govern itself. Rivers are

run dry and valleys are forced to be empty. Hills are leveled and pits are filled up. Once the Sages have been done away with, great thieves won't arise, and the world will even everything out. If Sages aren't done away with, great thieves will be rampant. The more importance that's placed on the need for Sages to govern the world, the more benefits people like Robber Zhi will try to steal.

If pecks and bushels are used for measurement, the pecks and bushels themselves will also be stolen, along with the rice. If scales and steel yards are used for weighing, the scales and steel yards themselves will also be stolen along with the goods. If tallies and signets are used for good faith, the tallies and signets will also be stolen. If charity and duty are used for moral principles, charity and duty will also be stolen.

How is this so? Steal a hook and you hang as a crook; steal a kingdom and you are made a duke. (The teachings of) charity and duty remain in the duke's domain. Is it not true, then, that they are thieves of charity and duty and of the wisdom of the Sages? Therefore, one after the other the great thieves try to claim they're Dukes and Princes, cunningly stealing benevolence and righteousness right alongside the pecks, bushels, hundredweights, tons, payments and allotments for their own benefit. Even though they've already been rewarded with carriages and crowns, that's not enough to get them to quit. Even if they're threatened with hatchets and axes, they still don't have the ability to resist acquiring more. Those are important benefits to people like Robber Zhi, and they just can't resist them. This can only be blamed on the Sages.

Therefore it has been said, "Fishes must be left in the water; the sharp weapons of a state must be left where none can see them." (49) These Sages are the sharp weapons of the world; they must not be shown to the world.

Therefore, get rid of wisdom, abandon knowledge, and only then will the great thieves stop robbing. Smash the jade, crush the pearls, and petty thieves won't arise. Burn the account books, tear up the ledgers, and people will simply assess what they have at the moment. Break apart the measuring devices, snap apart the weighing devices, and the people will no longer haggle. Abolish any remnants of what are considered to be wise laws in this world, and people can then start to discuss their own ideas with each other. Don't make restrictions on what kind of music can be played, allow all the strings of musical instruments to blend naturally on their own, put a cork in Gu Kuang's ear, and the people of the world will begin to cherish their own preferences in music. Get rid of fancy ornaments, spin the color wheel, glue shut Li Zhu's eyes, and the people of the world will begin to cherish their own clear-sightedness. Crumble to smithereens the curve and plumb line and throw away the compass and T-square, smack the back of Chui's fingers with a ruler, and the people of the world would appreciate their own artistry.

There's an old saying:
"Great talent seems clumsy."
Wipe out all traces left by Zeng and Shi, gag the mouths of Yang and Mo, push away and discard benevolence and righteousness, and the virtues of the world would mysteriously mesh. When each person embraces their own clear-sightedness, then the world wouldn't seem so scattered. When each person embraces their own preferences in music, then the world wouldn't be boring. When each person embraces their own knowledge, then the world wouldn't be confused. When each person embraces their own virtue, then the world wouldn't feel isolated. Those people: Zeng, Shi, Yang, Mo, Music Master Kuang, Master Carpenter Chui and Li Zhu all tried to establish virtue outside of themselves, and thus threw the whole world into a chaotic mess. The world has no use for such mandates.

Don't you know about the era in which only Masters attained virtue? Long ago, there was Rong Cheng (Embodiment of Success), Da Ting (Great Palace), Bo Huang (Self-appointed Official), Zhong Yang (Official Mediator), Li Lu (Disease Resistant), Li Xu (Raiser of Beautiful Horses), Xuan Yuan (Chariot Inventor), He Xu (Fire Walker), Zun Lu (Potion Distiller), Zhu Rong (Sacrificial Preacher), Fu Xi (fabled inventor and creator of the written language) and Shen Nong (a legendary pre-dynastic emperor who is said to have invented agriculture).

During that time, the people tied knots in ropes to keep records, enjoyed the flavor of their food, found beauty in the clothes they wore, found pleasure in their local customs and felt secure in their homes. They visited back and forth with those in neighboring communities and listened to the sounds made by their chickens and dogs. People eventually got old and died, but didn't pay attention to each other's comings and goings. It seems that people in those times had already found a good method for governing themselves.

Nowadays, in order to reach satisfaction, people feel they have to stretch out their necks and stand on tiptoe saying: "There's a virtuous Sage nearby."

They pack up provisions and head off to find him. They disregard the intimate ties they've made with their families and quit their jobs. Their footprints extend beyond the borders of their own countries, and the tracks made by their carts go even further, extending for hundreds of miles. All this excess is done in a search of what's considered to be superior knowledge. If what's considered to be superior is actually knowledge, but not of Dao, then the whole world is thrown into great confusion. How can we know that's so?

As knowledge increases about how best to use bows, crossbows, hunting nets and stringed arrows, then birds will fly around chaotically. As knowledge increases about how best to use hooks, bait, fishing nets and basket traps, then fish will swim about chaotically. As knowledge increases about how best to use small hunting knives, wooden traps, nets, pitfalls and cages, then animals will become chaotic in the wilderness. As more variations about how best to use knowledge, pretension, deception, prohibitions, vague discussions about philosophy, and contentious disputes about similarities and differences increases, then individuals will argue in confusion. Therefore, everything in the world would be repeatedly thrown into chaotic confusion, and the blame rests with a preference for knowledge.

So, it seems like everyone in the world knows how to ask about what they don't know, but no one knows how to ask about what they already know. They know how to be opposed to what they consider to be bad, but they don't know how to be opposed to what they've already considered to be good. That's why there's so much confusion. So, by trying to contradict the brightness of the sun and moon above, inflame the essence of the mountains and rivers below, subjugate the natural gifts of the four seasons in the middle (on this earth), bring plants and insects into compliance, force all living things to conform, nothing will escape losing its naturalness. That's going too far! Utter chaos in the world is the result of a fondness for knowledge.

Ever since the time of the Three Dynasties downwards, it has been like this. The simple and the guileless have been set aside; the specious and the cunning have been exalted. Tranquil inaction has given place to love of disputation; and disputation alone is enough to bring chaos upon the world.

१०|तिजोरियो का भरना

अगर किसी को रक्षा करनी हो चोरो और लुटेरो से जो तिजोरी को खाली करते है और और धन को लुट ले जाते है तो उसे अपने बक्सों को जरूर ही रस्सियों से बांधना चाहिए और उन पर मोटा ताला लगा कर रखना चाहिए| इस विधि को इस सामान्य संसार द्वारा बुद्धिमता कहा गया है| पर यदि एक बड़ा और शक्तिशाली चोर आये तो वह उन तालो को तोड़ने की ज़रुरत ही नहीं समझेगा उसे तो केवल उस पुरे बक्से को ही अपने कंधो पर उठाना होगा और उसे लेकर भागना होगा फिर तब उसको मात्र यही भय होगा की कही रस्सिया जोर से न बंधी हो| इस स्थिति में जिस व्यक्ति को बुद्धिमान कहा गया वह केवल उस बड़े चोर के लिए परिस्थितियों को और आसन कर रहा होता है|

मुझे समझाने दो जो मै कह रहा हूँ| जिस व्यक्ति को लोग बुद्धिमान कहते है वह केवल उस बड़े चोर के लिए परिस्थितियों को और आसन कर रहा होता है, क्या वह नहीं करता है? और जिसे हम साधू कह रहे होते है वह तो केवल उस चोर की रक्षा कर रहा होता है, क्या वह नहीं कर रहा होता है? मै यह कैसे जानता हूँ?

पुराने दिनों में 'की' राज्य में, पडोसी गांवो के लोग एक दुसरे के लिए निगरानी करते थे और वे सुनते थे शोर को जो उनके कुत्तो और मुर्गो द्वारा किया जाता था| जो जगह उन्होंने अपने शिकार और खेतो के लिए छोड़ी हुई थी वह बारह लाख वर्ग मीटर से भी बड़ी थी| अपनी चारदिवारी के अंदर ही उन्होंने अपने पौराणिक मंदिर बनाये थे और उसी जगह में उनके गाँव के लिए जिला दफ्तर बनाया गया था| वे साधू महात्मा के नियमो का पालन कर रहे थे! लेकिन फिर एक बार सम्राट तियन-चेंग 'की' राज्य के सम्राट को मारने में सफल हुआ और उसने 'की' राज्य को हथिया लिया| एक तरह से उस चोर ने केवल उस राज्य को चुराया था? पर साथ ही उसने वहा बनाये गए उन बुद्धिमान और साधुओ के नियमो को भी चुरा लिया था| फिर चाहे हम सम्राट तियन-चेंग को चोर या लुटेरा कहे पर वह बाकि की ज़िन्दगी राजाओ की तरह जीया बिलकुल राजा याओ ओर राजा शुन जैसे| छोटे राज्य उसका विरोध नहीं कर पाए और बड़े राज्य युद्ध में होने वाले अपनी हानि को सोचते हुए उसके साथ नहीं लडे इस तरह उसने बारह पीढियों तक 'की' राज्य में शासन किया| उन्होंने चोरो और लुटेरो की रक्षा के लिए उन्ही साधू और बुद्धिमानो द्वारा बनाये गए नियमो और कानूनों का पालन किया|

चलो इसके बारे में थोडा और बाते करते है| जिसे आमतौर पर बुद्धिमान समझा जाता है उस वृतांत में हम एक बड़े चोर के होने के विचार को भूल जाते है| अगर किसी के पास वास्तविक बुद्धिमता होती है तो क्या इसका उपयोग एक बड़े चोर से रक्षा के लिए नहीं किया जा सकता है? यह होता है, मै यह कैसे जानता हूँ?

पुराने दिनों में लॉन्ग-फेंग का सिर काटा गया, बी-गन का हृदय निकाल लिया गया, चंग्ग-होन्ग को फांसी दी गयी और ज़ि-क्सु के शव को सड़ने के लिए छोड़ दिया गया| जबकि ये चारो सज्जन पुरुष थे पर इनके साथ जो हुआ उसे ये नहीं रोक पाये|

जब जही (डाकू जही) के साथी ने उससे पूछा 'क्या डाकुओ के पास भी ताओ होती है?'
तो जही ने जवाब दिया 'ताओ के बिना क्या आगे बढ़ सकता है? किसी कक्ष में जाते ही यह पता लगाना की कीमती सामान कहा छुपा हो सकता है यह ज्ञान है| और उस कमरे में घुसना - यह साहस है| सभ साथियों के बाद वहा से निकलना - यह त्याग है| किसी काम को कब अंजाम देना है यह जानना - यह बुद्धिमता है| उस धन को आपस में बाँटना - यह उदारता है|'

जिसके पास ये पांचो गुण है, कभी भी एक डाकू नहीं बन सकता है| अगर इस तरह से देखा जाए तो यदि एक व्यक्ति किसी चीज़ में अच्छा है और वह एक संत नहीं बन पाता है तो वह अपने को स्थापित ही नहीं कर पायेगा|
अगर जही के पास वह संत वाला रास्ता नहीं होता और वे संतो वाले गुण नहीं होते, तो वह जो वह करता था उसे कभी नहीं कर पता| क्योंकि इस संसार में अच्छे लोग बहुत कम है और बुरे लोग बहुत ज्यादा फिर तो यह निर्धारित होता है की संतो के लिए इस संसार के लिए लाभदायक कार्य कम है और हानिकारक ज्यादा|

यहाँ पर कुछ कहावते है :
"जब होंठो को खोल दिया जाता है तो दातो को सर्दी लग जाती है|"
और जब लू राज्य की मदिरा ख़त्म हो गयी तब उस पर हमला कर दिया गया|"

संतो के जन्म के साथ ही बड़े डाकुओ का उदय भी होता है| अगर किसी के संत होंने के विचार को भुला दिया जाए, इसे नहीं माना जाए तो तब डाकू होने का विचार भी अपने आप ही समाप्त हो जायेगा| और ये संसार स्वयं से अपना संचालन करेगा| नदिया सुख जाएगी और घाटिया सुनी हो जाएगी| पर्वत सतह पर आजाएगे और सभी गड्ढे भर जायेगे| यदि संत एक बार हट जाते है तो डाकुओ का भी उदय नहीं होगा और इस संसार में सभ कुछ सम हो जायेगा| यदि संत आते है तो डाकुआ का भी कहर आता है| जितना महत्व संतो को दिया जाता है इस संसार को नियंत्रित करते वक़्त उतना ही लाभ डाकू जही जैसे लोग इस सभसे चुरा लेते है|

यदि चावल के साथ तराजू और वजन को रखा जाता है है तो चावल के बोर के साथ उनको भी चुरा लिया जाता है इसी तरह अगर धर्म और कर्तव्य को जोड़ा जाए नैतिक सिधान्तो के साथ तो वे भी भ्रष्ट हो जाते है|

यह कैसे होता है? एक गहना चुरा के देखो तुम्हे फांसी दी जाएगी लेकिन अगर एक राज्य को चुरा के देखो तुम सम्राट बन जाओगे| धर्म और कर्तव्य के सिद्धांत सम्राट के कार्यक्षेत्र में आते है| क्या यह सही नहीं है की तब वे उस समय चोर होते है धर्म और कर्तव्य के और संतो के ज्ञान के? इसीलिए एक के बाद एक डाकू अपने को राजा या सरदार मानता है और बाकि वस्तुओ के साथ चतुराई से धर्म और दयालुता को चुरा लेता है केवल अपने स्वार्थ और लाभ के लिए| जबकि उनको पहले ही नवाज्जा जा चूका होता है कीमती सामान और सिंहासन से लेकीन फिर भी यह उनको शांत करने के लिए काफी नहीं होता है| अगर उनको तलवार और कुल्हाडियो से धमकाया भी जाए तो यह भी उनको रोकने में नाकाफी है| यही तो लाभ होता है डाकू जही जैसे लोगो के लिए और वे इसे ठुकरा भी नहीं पाते है| इसका दोष केवल संतो को दिया जाना चाहिए|

इसीलिए यह कहा गया है:
"मछलियों को पानी में रहने दिया जाए; एक देश के हथियारों को वहा छिपाना चाहिए जहाँ उनको कोई देख ना पाए| इस प्रकार संत तो इस संसार के लिए तेज हथियार है फिर उन्हें तो इस संसार को नहीं दिखाना चाहिए|

इसीलिए ज्ञान को भूल जाओ, बुद्धि का त्याग कर दो तभी डाकूओ का भी अंत होगा| जेड (एक हीरा) को तोड़ दो, सोने के आभुषनो का त्याग कर दो, इससे डाकुओ का जन्म ही नहीं होगा| हिसाब किताब की किताबो को जला दो, इससे लोग उसी का इस्तेमाल करेगे जो उनके पास होगा| मापतोल के यंत्रो को तोड़ दो, इससे लोगो का आपस में झगडा बंद हो जायेगा| उपेक्षा कर दो उसकी जिन्हें बुद्धिमानो द्वारा बनाये गए नियम समझा जाता है और तब लोग स्वयं के विचार एक दुसरे के साथ बाँटना शुरू कर देगे| इस चीज़ पर प्रतिबंध मत लगाओ की कौन सा संगीत बजना चाहिए, और उसे समझो जो वाद्य यंत्रो द्वारा स्वयं से उत्पन्न होता है| गु कुंग के कानो में रुई भर दो, और लोग खुद की पसंद के संगीत को बनाना शुरू कर देगे| चमकते आभुषनो को फ़ेंक दो, ली-जहू के नजरिये को भूल जाओ, और लोगो में स्वयं की सूक्ष्म दृष्टि उत्पन्न हो जाएगी| चुई के चित्रों को पानी में फ़ेंक दो और जहू की कला को भूल जाओ, और लोग अपनी ही कला की प्रशंसा करेगे|

एक पुराणी कहावत है 'महान हुनर धुंधला दीखता है'
धर्म और न्याय को भूल जाओ, और लोगो का सामर्थ्य एकरूप हो जायेगा| जब हर कोई व्यक्ति अपने ही विचारो का समाविष्ट करेगा तब यह संसार इतना बिखरा हुआ प्रतीत नहीं होगा| जब हर कोई व्यक्ति अपनी ही धुन को समाविष्ट करेगा तब यह संसार इतना उबाऊ नहीं लगेगा| जब हर व्यक्ति अपने ज्ञान को समाविष्ट करेगा तब यह संसार इतना दुविधा में नहीं होगा| जब हर व्यक्ति अपने सामर्थ्य को समाविष्ट करेगा तब यह संसार इतना पृथक प्रतीत नहीं होगा| ज़ंग-सही, यंग, मो, संगीत उस्ताद कुंग, मुख्य बढई ली-जहू इन सभ व्यक्तियों ने अपने सामर्थ्य को बाह्य रूप देने की कौशिश की और इस प्रकार पुरे संसार को कोलाहल में दाल दिया| इस संसार के लिए इन सभके सिद्धांतो का कोई महत्व नहीं है| क्या तुम उस समय को नहीं जानते जब आचार्यो ने सामर्थ्य को पाया था? बहुत पहले रोंग-चेंग, डा-टिंग, बो-हुंग, ज्होंग-यंग,ली-लू,ली-क्सु, क्सुँ-युआन, हे-क्सु, जून-लू, जहू-रोंग, फु-क्सी और शु-नोंग इन सभी ने सामर्थ्य को पाया था|

उस समय लोग जो उन्हें मिलता था उस खाने को खाकर खुश होते थे और उन्हें वे ही वस्त्र सुंदर लगते थे जो वो पहनते थे| स्थानीय रिवाजो से खुश होते थे और अपने घरो में सुरक्षित महसूस करते थे| वे अपने आस पड़ोस के गाँव में जाते रहते थे और वहा के पालतू कुत्तो और मुर्गो की आवाजे भी उन्हें सुनती थी| वे लोग स्वभाविक रूप से वृद्ध होते थे और फिर मर जाते थे पर वे एक दुसरे के जन्म मृत्यु को इतना महत्व नहीं देते थे| लगता है उन लोगो ने खुद के जीने के लिए एक अच्छा सिद्धांत खोज लिया था|
लेकिन आजकल लोग संतुष्टि पाने के लिए स्वयं को आखरी हद तक ले जाते है फिर भी उन्हें कुछ नही मिलता है|

"यहाँ पर एक सिद्ध महात्मा रहते थे”
सभी ने भोजन बांधा और उन्हें खोजने के लिए निकल पड़े| उन्होंने (उन सभ लोगो ने) इसके लिए अपने परिवार से संबंध को दरकिनार किया और अपनी नौकरियों को छोड़ दिया| वे अपने देश से भी बहुत दूर चले गए और उनके जानवर तो और दूर तक चले गए, वे सभ बहुत कोस आगे तक चले गए उस साधू महात्मा को खोजने के लिए| उनको और उनके (साधू महात्मा के) श्रेष्ठ ज्ञान को पाने के लिए हर संभव पर्यास किया गया| पर अगर ज्ञान को श्रेष्ठ समझा जाए और ताओ को नहीं तो यह सम्पूर्ण संसार मार्ग से भटक जाता है| मै यह कैसे जानता हूँ?

जब इस ज्ञान की वृद्धि होती है की कैसे तीर को कमान से अच्छी तरह छोड़ा जाए और शिकार कैसे किया जाए तो आसमान में पक्षी कोलाहल में उड़ने लगते है| जब यह ज्ञान बढ़ता है की कैसे लंगर को सही जगह डाला जाए और मछलियों को कैसे फसाया जाए तो मछलिय कोलाहल में तैरने लगती है| इसी तरह अगर ज्ञान बढ़ता है की कैसे चाकू और शिकारी जाल का उपयोग किया जाए तो जंगली जानवर कोलाहल में इधर उधर भागने लगते है| जब बहुत ज्यादा विभिन्नताये आती है की कैसे ज्ञान का सही उपयोग किया जाए और दर्शनशास्त्र के, धोखे के और प्रतिबंधो के ज्यादा विचार आते है तो केवल लोगो में संशय और दुविधा ही पैदा होती है, उनमे सही गलत का भेद पैदा होता है और उनके स्वयं के विचारो को भुला दिया जाता है| इस प्रकार इस संसार की सभी वस्तुओ में कोलाहल भर जाता है और ज्ञान की चाहत को ही इसका दोषी माना जाता है|

यह लगता है की इस संसार में हर कोई जानता है की उसे कैसे पूछे जिसे वो नहीं जानते है पर कोई नहीं जनता पूछना जिसे वे पहले से ही जानते है| वे जानते है उसका बहिष्कार करना जिसे वे बुरा समझते है पर वे नहीं जानते बहिष्कार करना जिसे वे पहले से ही सही समझते है| यही कारण है की इतना संशय पैदा हो गया है| इसीलिए सूर्य और चन्द्र की रोशनी के परस्पर प्रतिरोध से, चारो ऋतुओ जो की प्रकृति का उपहार है उसे अधीन करके, पेड़-पोधो और जीवो का पालन करके और सभी जीवित वस्तुए के लिए अनुकूलता लाकर, ऐसे कोई भी अपनी प्रकृति को खोएगा नहीं| यह बहुत दूर तक जाने वाला है! ये इस संसार में इतना कोलाहल केवल ज्ञान के प्रति लगाव का परिणाम है|

तीन राजवंशो के समय से ही यह ऐसे ही है| सादे और इमानदारो को एक तरफ कर दिया जाता है और जो चतुर चालक होते है वे आगे आ जाते है| निष्क्रिर्य और शांत कर्म से ही सभ वाद विवाद को स्थान मिला है और यही वाद विवाद इस संसार के लिए कोलाहल का कारण है|

11.Let It Be, Leave It Alone

I've heard of being actively involved in the world, and of quietly accepting the world, but I haven't heard of being able to control the world. If one is actively involved in it, they'd be afraid the world might pervert their nature. If one is quietly accepting of it, they'd be afraid the world might change their virtue. If the world couldn't pervert one's nature nor change one's virtue, why would there be a need for anyone to control the world! AND I HAVE HEARD OF LETTING the world be, of leaving it alone; I have never heard of governing the world. You let it be for fear of corrupting the inborn nature of the world; you leave it alone for fear of distracting the Virtue of the world. If the nature of the world is not corrupted, if the Virtue of the world is not distracted, why should there be any governing of the world?

In olden times when Yao was in control of the world, he caused the world to be filled with delightful activities. All that excitement affected people's natures, and they took no time out to rest. When Jie was in control of the world, he caused the world to be filled with oppression. All the hardships affected people's natures, and they found no time to be joyful. If there's no time for rest or no time for joy, there can be no virtue. If there's no virtue, no one in the world would be able to last for long.

What if people have too much pleasure? They're overloaded with Yang. What if they have too much anger? They're overloaded with Yin. Being overloaded with either Yang or Yin would prevent the four seasons from naturally occurring, would prevent heat and cold from complimenting each other, and thus would definitely cause harm to the shape of everything on the earth! By making someone be excessively happy or angry it would cause them to lose their balance, live in a place of constant upheaval, always be worried that they might be missing out on something, and lose focus because they got stuck where they were. At that point the world would begin to be besieged with arrogant criticism and proud ferocity, and from that point on people like Robber Zhi, Zeng Shen and Shi Qiu would prevail.

Offer the entire world as rewards for the good or threaten the wicked with the dire punishments of the entire world, and it is still insufficient (to reform them).Huge as the world is, it cannot supply sufficient reward or punishment. From the Three Dynasties on down, there has been nothing but bustle and fuss, all over this matter of rewards and punishments. How could people have any leisure to rest in the true form of their inborn nature and fate!

Do men delight in what they see? - they are corrupted by colors. Do they delight in what they hear? - they are corrupted by sounds. Do they delight in benevolence? - they bring confusion to Virtue. Do they delight in righteousness? - they turn their backs on reason. Do they delight in rites? - they are aiding artificiality. Do they delight in music? - they are aiding dissolution. Do they delight in sageness? - they are assisting artifice. Do they delight in knowledge? - they are assisting the fault-finders. As long as the world rests in the true form of its inborn nature and fate, it makes no difference whether these eight delights exist or not. But if the world does not rest in the true form of its nature and fate, then these eight delights will begin to grow warped and crooked, jumbled and deranged, and will bring confusion to the world. And if on top of that the world begins to honor them and cherish them, then the delusion of the world will be great indeed! You say these are only a fancy that will pass in time? Yet men prepare themselves with fasts and austerities when they come to describe them, kneel solemnly on their mats when they recommend them, beat drums and sing to set them forth in .dance. What's to be done about it I'm sure I don't know!

So, a respectful prince has no choice but to observe all this happening in the world, and realize it's best to take no action whatsoever. Taking no action, but simply contemplating his own nature and destiny. So, if value is placed on what a person can actually do in this world, then it can provide support for the world. If a person shares love with the world, then it can protect the world.

Also, if a respectful prince is able to not allow his five organs to be corrupted, nor painstakingly try to accentuate his hearing and eyesight; rest comfortably like a corpse while appearing like a dragon; be silent as a deep hole while sounding like thunder; move with his spirit while following the heavens; at all times dwelling in non-action while every living thing completes the efforts of their own labors - I wonder what leisure time any of us would have to think about ruling the world!

Cui Qu (Anxious Mountain Bird) asked Lao Dan (Laozi):
"If you don't control the world, how could you influence people's minds?"
"Be careful," replied Lao Tan, "not to interfere with the natural goodness of the heart of man. Man's heart may be forced down or stirred up. In each case the issue is fatal. By gentleness, the hardest heart may be softened. But try to cut and polish it, and it will glow like fire or freeze like ice. In the twinkling of an eye it will pass beyond the limits of the Four Seas. In repose, it is profoundly still; in motion, it flies up to the sky. Like an unruly horse, it cannot be held in check. Such is the human heart.

Of old, the Yellow Emperor first interfered with the natural goodness of the heart of man, by means of charity and duty. In consequence, Yao and Shun wore the hair off their legs and the flesh off their arms in endeavoring to feed their people's bodies. They tortured the people's internal economy in order to conform to charity and duty. They exhausted the people's energies to live in accordance with the laws and statutes. Even then they did not succeed. So Yao then exiled Huan Dou (Loud Protester) to Chong Mountain, banished the three Miao tribes (ethnic minorities in SouthWest China) to San Wei, and sent Gong Gong (Meddlesome Revolter) away to You Dou. Which shows he had not succeeded.

By the time the kings of the Three Dynasties appeared, the world was in great consternation indeed. On the lowest level there were men like the tyrant Chieh and Robber Chih, on the highest, men like Tseng and Shih, and the Confucianists and Mo-ists rose up all around. Then joy and anger eyed each other with suspicion, stupidity and wisdom duped each other, good and bad called one another names, falsehood and truth slandered one another, and the world sank into a decline. There was no more unity to the Great Virtue, and the inborn nature and fate shattered and fell apart. The world coveted knowledge and the hundred clans were thrown into turmoil.5 Then there were axes and saws to shape things, ink and plumb lines to trim them, mallets and gouges to poke holes in them, and the world, muddled and deranged, was in great confusion. The crime lay in this meddling with men's minds. So it was that worthy men crouched in hiding below the great mountains and yawning cliffs, and the lords of ten thousand chariots fretted and trembled above in their ancestral halls.

In the world today, the victims of the death penalty lie heaped together, the bearers of cangues tread on each other's heels, the sufferers of punishment are never out of each other's sight. And now come the Confucianists and Mo-ists, waving their arms, striding into the very midst of the fettered and manacled men. Ah, that then should go this far, that they should be so brazen, so lacking in any sense of shame! Who can convince me that sagely wisdom is not in fact the wedge that fastens the cangue, that benevolence and righteousness are not in fact the loop and lock of these fetters and manacles? How do I know that Tseng and Shih are not the whistling arrows that signal the approach of Chieh and Chih? Therefore I say, cut off sageness, cast away wisdom, and the world will be in perfect order.

The Yellow Emperor sat on the throne for nineteen years, and his laws obtained all over the empire. Hearing that Guang Cheng Zi was living on Mount K'ungt'ung, he went there to see him, and said, "I am told that you are in possession of perfect Tao. May I ask what is the essence of this perfect Tao? I desire to obtain the essence of the universe to secure good harvests and feed my people. I should like also to control the yin and yang principles to fulfill the life of all living things."

"What you are asking about," replied Guang Cheng Zi, "is merely the dregs of things. What you wish to control are the disintegrated factors thereof. Ever since the empire was governed by you, the clouds have rained before thickening, the foliage of trees has fallen before turning yellow, and the brightness of the sun and moon has increasingly paled. You have the shallowness of mind of a glib talker. How then are you fit to speak of perfect Tao?"

The Yellow Emperor withdrew. He resigned the Throne. He built himself a solitary hut, and sat upon white straw. For three months he remained in seclusion, and then went again to see Kuangch'engtse.

The latter was lying with his head towards the south. The Yellow Emperor approached from below upon his knees. Kowtowing twice upon the ground, he said, "I am told that you are in possession of perfect Tao. May I ask how to order one's life so that one may have long life?"

Guang Cheng Zi jumped up with a start. "A good question indeed!" cried he. "Come, and I will speak to you of perfect Tao. The essence of perfect Tao is profoundly mysterious; its extent is lost in obscurity. "See nothing; hear nothing; guard your spirit in quietude and your body will go right of its own accord.

"Be quiet, be pure; toil not your body, perturb not your vital essence, and you will live forever.
"For if the eye sees nothing, and the ear hears nothing, and the mind thinks nothing, your spirit will stay in your body, and the body will thereby live forever.
"Cherish that which is within you, and shut off that which is without for much knowledge is a curse.
"Then I will take you to that abode of Great Light to reach the Plateau of Absolute Yang. I will lead you through the Door of the Dark Unknown to the Plateau of the Absolute Yin.
"The Heaven and Earth have their separate functions. The yin and yang have their hidden root. Guard carefully your body, and material things will prosper by themselves.
"I guard the original One, and rest in harmony with externals. Therefore I have been able to live for twelve hundred years and my body has not grown old."

The Yellow Emperor kowtowed twice and said, "You speak words coming directly from the heavens!".

Guang Cheng Zi said:
"Let's go further! I've even more to tell you. That (ultimate Dao) within things can never be exhausted, yet people all tend to believe there's an end point. That within things can never be measured, yet people all tend to believe they can find the beginning and the end. One who achieves my Dao will be both higher than an emperor and lower than a king. One who misinterprets my Dao will look up to the brightness but remain in the dirt below. Today, in regards to the many things that flourish here, all of them are born from dirt and return to dirt.
"So, I'm going to leave you now, to enter the doorway to infinity and travel to the limits of boundlessness. I'll join with the brightness of the sun and the moon. I'll share the constancy of the sky and the earth. Whatever I come into contact with, I'll make a bright connection with! Whatever has passed me by, I'll merely observe as a shadow! People exhaust themselves and die, but I alone keep on living!"

Yun Jiang (Cloud General) was traveling east when he came upon some branches that had been thrown about by a passing tornado, and happened to run into Hong Meng (Silly Goose). Hong Meng was walking next to Yun Jiang patting his belly and jumping around joyfully. Yun Jiang looked him over, paused for a minute, and asked admiringly:
"Hey, old man, who are you? What are doing, old man?"
Hong Meng just kept on patting his belly and jumping around joyfully as he answered Yun Jiang:
"Skipping along."
Yun Jiang said:
"I have a very sincere question to ask you."
Hong Meng raised his head and looked directly at Yun Jiang saying:

"Uh oh!"

Yun Jiang said:
"The essence of the heavens is not in harmony. The essence of the earth is constricted. The six vital energies (possibly: anger, joy, pain, pleasure, love and hate) are all mixed up together. The four seasons are out of control. Now, what I want to do is find a way to bring together the six vital energies and make them perfectly in tune in order to educate the masses about life. Do you know how that can be done?"
Hong Meng was still patting his belly and jumping around joyfully, and he turned away saying:
"I don't know anything! I don't know anything!"
Yun Jiang wasn't able to ask any more questions. Three years later, as Yun Jiang was again traveling in the east through the wilderness of the state of Song, he bumped into Hong Meng. Yun Jiang was delighted, and he raced to catch up with him then said:
"Heavenly one, have you forgotten me? Heavenly one, have you forgotten me?"
Bowing his head deeply to the ground, he showed his desire to learn more from Hong Meng.

Hong Meng said:
"I just flit about and don't know what I'm looking for. Like a dog who wanders from place to place, I don't know where I've been. Being one who just skips about slapping the soles of my shoes on the ground, I merely observe without being presumptuous. What could I possibly know?"
Yun Jiang said:
"I also consider myself to be like a dog who wanders from place to place, but people still follow me around as though I'm actually going someplace. I have no alternative but to be around other people, and now they never leave me alone. I wish you'd share with me at least one word of advice."
Hong Meng said:
"If you confuse the constant strands of Heaven and violate the true form of things, then Dark Heaven will reach no fulfillment. Instead, the beasts will scatter from their herds, the birds will cry all night, disaster will come to the grass and trees, misfortune will reach even to the insects. Ah, this is the fault of men who `govern'!"

Yun Jiang said:
"Okay, but then what am I to do?"
Hong Meng said:
"keep quiet and go home in peace!"

"It is not often," urged Yun Jiang, "that I meet with your Holiness. I would gladly receive some advice."

"Ah," said Great Hong Meng, "nourish your heart. Rest in inaction, and the world will be reformed of itself. Forget your body and spit forth intelligence. Ignore all differences and become one with the Infinite. Release your mind, and free your spirit. Be vacuous, be devoid of soul. Thus will things grow and prosper and return to their Root. Returning to their Root without their knowing it, the result will be a formless whole which will never be cut up. To know it is to cut it up. Ask not about its name, inquire not into its nature, and all things will flourish of themselves."

"Your Holiness," said Yun Jiang, "has informed me with power and taught me silence. What I had long sought, I have now found." Thereupon he kowtowed twice and took leave.

Nowadays it's common for people to all be delighted when they come across others who feel the same way they do, but to loathe people who think differently. They want to be around those who are similar to themselves. They don't want to be around those who are different, so they isolate themselves from that type of people. If they isolate themselves from that type of people, then how could they not constantly be isolating themselves from most of the

people? If one continues to associate with certain people it's because one prefers listening to what they have to say, unless one feels like they can't measure up to the skill of those people.
Furthermore, those who want to get involved in what's going on in their country will latch on to the benefits provided by the three kings (rulers of the three states: Xia, Shang and Zhou), but won't pay attention to the troubles they're causing others. That’s like adopting for oneself the good fortune of all the people in a country, but how many can adopt all that good fortune yet avoid neglecting what's really happening to the country's people? The chances of saving all the people in the country are one thousand to one. The chances of devastating all the people in the country are more than ten thousand to one, which leaves a higher possibility of devastation. How sad it is that those who are in possession of all this territory aren't aware of this.

For to have a territory is to have something great. He who has something great must not regard the material things as material things. Only by not regarding material things as material things can one be the lord of things. The principle of looking at material things as not real things is not confined to mere government of the empire. Such a one may wander at will between the six limits of space or travel over the Nine Continents unhampered and free. This is to be the Unique One. The Unique One is the highest among men.

The Great Man in his teaching is like as shadow to form, as echo to sound. Ask and it responds, fulfilling its abilities as the help-mate of humanity. Noiseless in repose, objectless in motion, he brings you out of the confusion of your coming and going to wander in the Infinite. Formless in his movements, he is eternal with the sun. In respect of his bodily existence, he conforms to the universal standards. Through conformance to the universal standards, he forgets his own individuality. But if he forgets his individuality, how can he regard his possessions as possessions? Those who see possessions in possessions were the wise men of old. Those who regard not possessions as possessions are the friends of Heaven and Earth.
That which is low, but must be let alone, is matter. That which is humble, but still must be followed, is the people. That which is always there but still has to be attended to, is affairs. That which is inadequate, but still has to be set forth, is the law. That which is remote from Tao, but still claims our attention, is duty. That which is biased, but must be broadened, is charity. Trivial, but requiring to be strengthened from within, that is ceremony. Contained within, but requiring to be uplifted, that is virtue. One, but not to be without modification, that is Tao. Spiritual, yet not to be devoid of action, that is Heaven.

Therefore, a wise person:
Observes the heavens but doesn't but into its actions;
Achieves virtue but doesn't try to pump it up;
Flows with Dao but doesn't turn it into a religion;
Adopts benevolence but doesn't expect it from others;
Extends righteousness but doesn't get bogged down by it;
Deals with rituals but doesn't hide behind them;
Deals with personal matters and doesn't shirk responsibility;
Looks for equality in laws and doesn't let them become senseless;
Depends on other people but not to their detriment;
Appreciates the usefulness of things but doesn't trash them.
Most things don't get him riled up enough to cause him to take action, but he doesn't stop acting completely.
One who fails to understand the heavens can't possibly practice virtue.
One who doesn't connect with Dao can never know themselves.
One who fails to understand Dao will surely end up being a very unhappy person!
How can Dao be explained? There is the Dao of the heavens and the Dao of people. To not intentionally interfere but obey the natural order is heaven's Dao. To interfere until exhaustion sets in is people's Dao. That which leads is heaven's Dao. That which enslaves is people's Dao. Heaven's Dao when compared with people's Dao are really very far away from each other. One mustn't fail to observe that.

११|जो है उसे वैसा ही रहने दो, उसे वैसा ही छोड़ दो

मैंने इस संसार में किर्यशील होने के बारे में सुना है और इस संसार को स्वीकार करने के बारे में सुना है लेकिन मैंने कभी भी इस संसार को नियंत्रित करने के बारे में नहीं सुना है| अगर कोई इस संसार में सक्रिय रूप से सम्मिलित होता है तो उसे भय होता है की कही ये संसार उनकी प्रकृति को विकृत ना कर दे| अगर कोई इस संसार को स्वीकारता है तो उसे भय रहता है कही ये संसार उनके सद्गुणों को न बदल दे| यदि यह संसार न ही किसी की प्रकृति को बदले और न ही किसे के सद्गुणों को बदले तो किसी के लिए इस संसार को नियंत्रित करने का क्या उद्देश्य रह जाता है| और मैंने सुना है: जैसा ये संसार है इसे वैसा ही रहने दो इसे वैसा ही छोड़ दो; मैंने कभी किसी को इस संसार को नियंत्रित करते हुए नहीं सुना और न ही देखा| तुम ऐसा करते हो इस संसार के सहज स्वभाव को भ्रष्ट करने के लिए; तुम इसे छोड़ते हो इसके सद्गुणों का ध्यान भंग करने के लिए| अगर इस संसार का स्वभाव भ्रष्ट ना हो और इसका सामर्थ्य का ध्यान भंग न हो तब क्या जरूरत रह जाती है इसे नियंत्रित करने की?

पुराने समय में जब राजा याओ का शासन था उसने इस संसार को आनंदित करने वाले किर्यकलापो से भर दिया| इस सभी उतेजना से लोगो की प्रकृति पर प्रभाव पड़ा और वे विश्राम करना भूल गए| जब राजा जिए इस संसार का नियंत्रक था तो यह संसार दमनकारी नीतियों से भर गया, इस कठोरता से लोगो की प्रकृति पर प्रभाव पड़ा और वे खुश रहना भूल गए| यदि ना तो विश्राम के लिए समय होता है और ना ही कोई ख़ुशी होती है तो लोगो का सामर्थ्य बिखर जाता है| और अगर सामर्थ्य ही नहीं होता है तो कोई नहीं बच सकता है|

क्या हो यदि लोगो के पास बहुत सारा सुख हो? वे यंग से अतिभारित हो जायेगे| क्या हो यदि उनके पास बहुत सारा क्रोध हो? वे यिन से अतिभारित जायेगे| इस तरह यिन ओर यंग से अतिभारित होना चारो ऋतुओ को अपने प्रकृति अनुसार आने से रोक देगा और यह सर्दी और गर्मी के संतुलन को बिगड़ देगा जिससे की संसार की सभी वस्तुओ को हानि पहुचेगी| किसी को अतिसुख या अति क्रोधित होने से उनका संतुलन बिगड़ जाता है, उन्हें हमेशा डर रहता है की वे कुछ खो रहे है, इससे उनका ध्यान भटक जाता है और वे जहाँ है वही रह जाते है| तब यह संसार कठोर आलोचनाओ से और भयानक उग्रता से भर जाता है| और इस स्थिति में डाकू जही, ज्हेंग शेन और सही-किउ जैसे लोग प्रभावशाली हो जाते है|

उनको चाहे इस पुरे संसार को भेंट में दे दो या फिर कठोर से कठोर मृत्यु दंड उन्हें दो पर ये उनको बदल नहीं पाते है| इस संसार जितनी बड़ी भेंट या सजा भी उनके लिए कम पड जाती है| तीन राजवंशो के समय से ही कुछ सही नहीं है केवल कोलाहल मचा हुआ है वह भी केवल इस दंड और पुरुस्कार के लिए| इस प्रकार कैसे लोग अपनी वास्तविक सहज प्रकृति और विश्वास में रह पायेगे!

क्या लोग जो वे देखते है उससे खुश हो जाते है? - क्योंकि वे वर्णों से भ्रष्ट हो जाते है| क्या लोग खुश हो जाते है जो वे सुनते है उससे? - क्योंकि वे ध्वनी से भ्रष्ट हो जाते है| क्या वे खुश हो जाते है जिसे वे दयालुता समझते है उससे? - वे सामर्थ्य के प्रति दुविधा पैदा करते है| क्या वे रीती रिवाजो में खुश हो जाते है? - क्योंकि वे वास्तविक नहीं होते है| क्या वे संगीत से खुश हो जाते है? - वे मदद करते है विघटन की| क्या वे संत होने से खुश हो जाते है? - वे केवल अवास्तविकता को बढ़ावा देते है| क्या वे ज्ञान में खुश हो जाते है? - वे केवल अज्ञान को बधावे दे रहे होते है| जब तक यह संसार अपनी वास्तविक प्रकृति में सम्मिलित होता है तब तक इसे इन आठ बताये गए सुखो को कोई आवश्यकता नहीं होती है लेकिन जब यह संसार अपने वास्तविक स्वभाव में नहीं होता है तब ये आठ सुख अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर देते है और इस संसार को अपने लपेटे में लेकर इसको अव्यवस्थित कर देते है और यह कोलाहल से भर जाता है| अगर यह संसार उन सुखो में आसक्त हो जाता है तो यहाँ और भी बुरी स्थिति उत्पन्न हो जाती है| क्या तूम सोचते हो की ये (सुख-दुःख) बस कल्पना है और समय के साथ चले जाते है? - फिर भी मनुष्य जब उनका वर्णन करता है तब उपवास करता है पूजा अर्चना करता है और अपने घुटनों पर बैठकर उनकी अनुशंसा करता है, मृदंग बजता है और नाच गाना करता है| इसके बारे में क्या किया जाए इसे मै निश्चित ही नहीं जानता हूँ!

इस प्रकार एक विनम्र राजा के पास बैठकर इस संसार का अवलोकन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता है| उसे इसका एहसास होता है की यहाँ कोई प्रतिक्रिया नहीं देनी है कभी भी| बिना कोई प्रतिक्रिया दिए केवल अपनी प्रकृति और भाग्य में ध्यानपरायण होना| इस तरह अगर इस बात को महत्व दिया जाए की वह व्यक्ति इस संसार में क्या करता है तो तब वह केवल इस संसार का समर्थन करता है| यदि कोई व्यक्ति इस संसार के साथ स्नेह रखता है वही इस संसार को बचा सकता है|

यह भी है की वह विनम्र राजा अपनी इन्द्रियों को भ्रष्ट नहीं होने देता है और एक ड्रैगन की तरह दीखता है लेकिन अंदर से वह केवल आराम से विश्राम कर रहा होता है; वह तूफान की तरह गर्जता हुआ भी बिलकुल शांत होता है; वह स्वर्ग का अनुशरण करते हुए अपनी आत्मा से प्रभावित होता है| हर वक़्त वह शांति में रहता है और वस्तुए अपना कार्य स्वयं से कर लेती है| मै आश्चर्यचकित होता हूँ यह सोचकर की हमारे पास कितना वक़्त होता है यह सोचने के लिए की इस संसार को कैसे नियंत्रित किया जाए|

की-कु ने लाओ-दान से पूछा:
"अगर तुम इस संसार को प्रभावित नहीं करते हो तो तुम लोगो के मन को कैसे प्रभावित करते हो?"

लाओजी ने जवाब दिया:
"सावधान रहो की कही तुम लोगो के हृदय की प्राकृतिक शुद्धता को तो नहीं प्रभावित कर रहे हो| अगर मनुष्य के हृदय का दमन किया जाए या उसे बाधित किया जाए तो केवल घातक परिणाम ही होते है| उदारता से कठोर से कठोर हृदय को भी पिघलाया जा सकता है| पर इसका दमन या फिर इसको बदलने की कौशिश करोगे तो यह अग्नि की तरह प्रजवलित हो जायेगा और बर्फ की तरह सख्त हो जाएगा| आँखों के पलक झपकने के समय में ही यह सारो समुद्रो से भी परे पहुच जाता है| आराम करते वक़्त यह बिलकुल शांत होता है और कार्यान्वित होते समय यह आसमान से भी ऊपर हो जाता है| एक स्वतंत्र अश्व की तरह इसे बांधा नहीं जा सकता| इसी प्रकार का होता है यह मनुष्य का हृदय|

पुराने समय में दयालुता और परोपकार को बताकर सम्राट येल्लो ने पहली बार मनुष्य के हृदय की शुद्धता के साथ हस्तक्षेप किया था| याओ और सुन ने अपने लोगो की भूख मिटाने का प्रयत्न करते हुए अपने शरीर के मांस को ही न्योछावर कर दिया| उन्होंने परोपकार और पुण्य के कार्य करवाने के लिए लोगो की आर्थिक स्थिति के साथ दखल किया| उन्होंने नियमो और कानूनों से जोड़कर लोगो की कार्यशक्ति को समाप्त कर दिया| चूँकि फिर भी वे सफल नहीं हुए| तब याओ ने देश निकाला दे दिया हुआन-दू (मुख्य विरोध करता) को, तीन मिओं कबीलों को चोंग पर्वत पर निर्वासित कर दिया और गोंग-गोंग को कही दूर भेज दिया| यह सभ दिखता है की वह कभी सफल नहीं हुआ|

तीन राजवंशो के समय से ही यह संसार वास्तव में बहुत ही व्याकुलता में है| निचले स्तर पर डाकू जही और क्रूर चेइह जैसे लोग है और उच्च स्तर पर त्सेंग, शिह जैसे लोग है इसके आलावा कॉनफ़ुसियस और मोइस्त को मानने वाले लोग हर जगह है| तब हर्ष और क्रोध एक दुसरे को विरोधी नजर से देखते है, ज्ञान और अज्ञान एक दुसरे को चिड़ाते है, अच्छे और बुरे एक दुसरे के नाम बुलाते है, सच्चाई और झूट एक दुसरे की निंदा करते है और इस संसार का ह्रास होता है| उस समय हमारी उस महान प्रकृति के साथ कोई एकात्मकता नहीं रहती तथा विश्वास और सामर्थ्य बिखर जाते है| तब लोग ज्ञान के लिए आकांक्षित हो जाते है लोगो में अशांति बढ़ जाती है| तब वस्तुओ को रूप देने के लिए कुल्हाड़ी और आरी होती है, मुंगर और गोलची उनमे छेद करने के लिए और स्याही और दवात इस सभ् को बढ़ावा देने के लिए और यह संसार इस प्रकार अव्यवस्थित और क्षीण हुआ दुविधा में होता है| यह सभ मनुष्य के मन के साथ हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप होता है| इसीलिए यह कहा जाता है है की वास्तविक ऋषि मुनि स्वयं को ऊँचे पर्वतो पर छिपाए रखते है और महान सम्राट अपने पौराणिक महलो में ही रहना पसंद करते है|

आज इस संसार में मृत्यु दण्ड पाने वाले की संख्या बढती ही जा रही है| और अब तो पहले से ही बेडियो में जकड़े हुए इस मनुष्य के पास अपने हाथो को हिलाते हुए लम्बे डंग भरते हुए ये कांफुसियन और मओशियन भी आ गए है| वे इसको और आगे ले जाना चाहते है और इनको इसमें लज्जा भी नहीं आती है, किंचित ही उनमे कोई लज्जा बची है! कौन मुझे गलत सिद्ध कर सकता है इस संदर्भ में की एक संत का धर्म और परोपकार केवल इन बेडियो में बाँधने के ही कारण होते है| मैं यह कैसे जनता हूँ की त्सेंग और शिह के विचारो ने केवल चेइह और चिह के सिद्धांतो को अवसर प्रदान किया था| इसीलिए मै कहता हूँ की इस साधुपन को दूर हटाओ, ज्ञान को भूल जाओ और यह संसार स्वयं से ही सही व्यवस्थित हो जायेगा|

येल्लो राजा ने उन्नीस साल तक शासन किया और उसके कानून हर राज्य में लागु थे | फिर यह सुनकर की गुंग-चेंग-ज़ि कुंग्तुंग पर्वत पर रहता है वह उन्हें देखने गया और पूछा:
"मैंने सुना है की आपके पास परम ताओ का आधिपत्य है| क्या मै यह जान सकता हूँ की परम ताओ के होने में क्या तत्व है? मै यिन और यंग के सिद्धांतो को भी नियंत्रित करना सीखना चाहुगा इस संसार की सभी वस्तुओ की भलाई के लिए|

गुंग-चेंग-ज़ि ने पूछा:
"तुम ये क्या पूछ रहे हो| तुम जिनको नियंत्रित करना चाहते हो स्वयं से ही विघटित है| जब से तुमने शासन करना आरंभ किया है बादल समय से पहले ही बरसने लगे है, पेड़ो के पते पीले होने से पहले गिर जाते है और सूर्य और चन्द्र का प्रकाश धुंधला हो गया है| तुम्हारे पास एक निरर्थक बाते करने वाले व्यक्ति जैसी क्षुद्रता है, फिर तुम ताओ के बारे में बात करने के लिए कैसे योग्य हो सकते हो?

राजा येल्लो वहा से चला गया उसने सिंहासन को त्याग दिया| उसने एक निर्जन स्थान पर अपनी कुटिया बनायीं और तीन महीनो तक वह एकांत में रहा फिर वह दोबारा गुंग-चेंग-ज़ि को मिलने गया|

जो पहले सिंहासन पर दक्षिण की तरफ मुख करके बैठता था आज वह अपने घुटनों पर बैठकर सिर झुकाकर कह रहा था:
“मैंने सुना है की आपके पास परम ताओ का आधिपत्य है| क्या मै यह जान सकता हूँ की कैसे एक व्यक्ति के जीवन को व्यवस्थित किया जाये जिससे की वो वह दीर्घ आयु हो सके?"

गुंग-चेंग-ज़ि ने साँस लेते हुए कहा:
"निश्चित ही यह पहले से अच्छा प्रश्न है| आओ मै तुम्हे परम ताओ के बारे में बताता हूँ| परम ताओ का तत्व बहुत ही गूढ़ है| यह बहुत ही अस्पष्ट है| कुछ मत देखो| कुछ मत सुनो केवल अपनी आत्मा को शांतिपूर्वक जानो और तुम्हारा ये ये शरीर स्वेच्छा से ही अनुरूप हो जाएगा|

शांत रहो! शुद्ध रहो! अपने शरीर से अत्याधिक परिश्रम मत करवाओ, अपनी जीवनशक्ति को हानि मत पहुचाओ और इस तरह तुम हमेशा के लिए जियोगे”
“यदि तुम्हारी आंखे कुछ नहीं ग्रहण करती है, तुम्हारे कान भी कुछ नहीं ग्रहण करते है और तुम्हारा मन कुछ नहीं सोचता है, तो तुम्हारी आत्मिक शक्ति का उदय होगा और तुम्हारा जीवन अनंत होगा|
"जो तुम्हारे अंदर समाया हुआ है उसे जानो और उस सभ को जो अत्यधिक ज्ञान से उत्पन्न है भूल जाओ|
"तब मै तुम्हे वहा ले जाऊगा जहाँ महान यंग का तेज प्रज्वल्लित है, मै तुम्हे अनजाने अँधेरे से निकलकर वहा ले जाउगा जहाँ महान यिन का तेज प्रज्जवलित है|
"पृथ्वी और स्वर्ग के अलग अलग कार्य होते है| यिन और यंग की जड़े बहुत ही गूढ़ है| अपने शरीर को रक्षित करो और सभी वस्तुए स्वयं से ही खुशहाल हो जाएगी|
"मै हमेशा अपने सच्चे स्वरूप में रहता हूँ इसीलिए तो सभ बाह्य वस्तुए के साथ मेरा सामंजस्य है| इसीलिए तो मै बारह सौ सालो से जी रहा हूँ और अब तक बुढा नहीं हुआ हूँ|"

राजा येल्लो ने दो बार सिर झुकाकर प्रणाम किया और कहा:
"आपके शब्द स्वर्ग के शब्द प्रतीत हो रहे है|”

गुंग-चेंग-ज़ि ने कहा:
"चलो आगे बढ़ते है! मेरे पास तुम्हे बताने के लिए और भी है| जो वस्तुओ के अंदर निहित है उसे कभी समाप्त नहीं किया जा सकता है| फिर भी लोग सोचते है की एक अंत भी है| जो ताओ को समझ लेता है वह दोनों होता है एक सम्राट से श्रेष्ट भी और एक राजा से क्षुद्र भी| और जो इस ताओ को अच्छी तरह नहीं समझता है वह इसके तेज को तो देखता है पर इसको कभी वास्तव में नहीं समझ पाता है| आज, जितनी भी वस्तुए है वह इसीसे पैदा होती है और इसीमें मिल जाती है|

"अब मै उस अनंत के साथ एक होने के लिए तुम्हे यहीं छोड़ कर जा रहा हूँ| मै सूर्य और चन्द्र के प्रकाश के साथ भी एक होने जा रहा हूँ| मै इस पृथ्वी और आकाश के निरंतरता के साथ समरूप हो जाउगा| जो भी मेरे संपर्क में आएगा मै उसके साथ मधुर संबंध बनाउगा! और जो गुजर चूका है उसे मैं किंचित ही परछाई की तरह देखूगा! लोग स्वयं को समाप्त कर लेते है और मर जाते है पर में अकेला जीता रहूँगा!"

यूँ-जिंग पूर्व की और यात्रा कर रहा था तो उसने मार्ग में एक तूफान द्वार गिरे हुए पेड़ की टहनियों को देखा, यह देखकर वह होन्ग-मेंग के पास भागा हुआ गया| होन्ग मेंग जो की उसके साथ ही चल रहा था आराम से उछल कूद करता हुआ, आनंदित हुआ| युंग-जिंग ने उसकी तरफ देखा और एक क्षण के लिए रूककर बोला:

"हे बुजुर्ग आप कौन हो? आप क्या कर रहे है?"

होन्ग मेंग ऐसे ही आनंदित हुआ उछल कूद करते हुए उससे बोला:
"अकेला चल रहा हूँ|"

यूँ जिंग ने कहा:
"मेरे पास बहुत ही अच्छा प्रश्न आपसे पूछने के लिए|"

होन्ग-मेंग ने अपना सर उठाया और सीधा यूँ-जिंग की आँखों में देखकर कहा:
"बहुत बढ़िया|"

यूँ जिंग ने कहा:
"लगता है की स्वर्ग की उर्जाशक्ति अब संतुलन में नहीं ही| पृथ्वी की उर्जाशक्ति को दबा दिया गया है| छः मुख्य जीवन शाक्तिया अब आपस में संयुक्त हो गयी है (संतुलन में नहीं है)| चारो ऋतुए अब नियंत्रण से परे है| अब मै इन छः प्राण शक्तियों को फिर से व्यवस्थित कर जीवन के साथ सामंजस्य में लाना चाहता हूँ| क्या आप जानते है की यह कैसे किया जा सकता है?"

होन्ग मेंग अब भी ऐसे ही आनंद में नाच रहा था और वह मुडकर बोला:
"मै कुछ नहीं जनता हूँ! मै कुछ नहीं जनता हूँ!"

यूँ-जुंग कोई और प्रश्न उससे पुछ ही नहीं सका| तीन साल बाद, जब यूँ जिंग पूर्व के सोंग राज्य के जंगलो में से फिर से यात्रा कर रहा था तो उसकी मुलाकात फिर से होन्ग-मेंग से हुई वह उनके पास आनंदित होकर गया और बोला:
"हे देवता, क्या आप मुझे भूल गए है? हे देवता क्या आप मुझे भूल गए है?"

अपने सिर को उनके सामने ज़मीन तक झुकाकर उसने उनसे और सिखने के इच्छा जताई|

होन्ग-मेंग ने कहा:
"मै यहाँ ऐसे ही घूम रहा था और मुझे नहीं पता था की मै क्या कर रहा हूँ| जैसे एक आवारा कुत्ता इधर उधर घूमता रहता है, मै नहीं जनता की मै कहाँ हूँ| वह होकर जो केवल अपने जूतों को धरती पर पटकता हुआ कूदता रहता है मेरा किसी वस्तु के बारे में कोई अनुमान नहीं है| फिर कदाचित ही मै क्या जान सकता हूँ?"

यूँ-जिंग ने कहा:
"मै स्वयं को भी एक कुते की तरह देखता हूँ जो बस एक स्थान से दुसरे स्थान पर अनजान घूम रहा है पर फिर भी लोग मेरे पीछे आते है जैसे की मै वास्तव में ही कही जा रहा हूँ| मेरा पास कोई विकल्प नहीं बचा है लोगो के बिच में रहने के अलावा, और अब वे मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ने वाले है| मै आशा करता हूँ की आप मेरा कुछ तो मार्गदर्शन करेगे|"

होन्ग-मेंग ने कहा:
"अगर तुम स्वर्ग के नियमो को अव्यवस्थित करते हो और वस्तुओ की वास्तविक प्रकृति के साथ छेडछाड करते हो तो इस स्वर्ग के लिए कोई तुष्टि नहीं होगी| इसके अलावा जानवर अपने झुंडो से बिखर जायेगे, पक्षी सारी रात विलाप करेगे, पेड़ पोधो के लिए विपत्ति आ जाएगी और यह विपत्ति छोटे जीवो पर भी कहर बरपाएगी| यही दोष है मनुष्य का जो करन चाहता है 'नियंत्रण'!

यूँ-जिंग ने कहा:
"ठीक है पर तब मुझे क्या करना चाहिए?"

होन्ग-मेंग ने कहा:
"शांत रहो और आराम से अपने घर जाओ!"

यूँ जिंग ने विनती कि:

“मरा साक्षात्कार आप जैसे देवता से बहुत दुर्लभ ही होता है कृपया करके मेरा मार्गदर्शन की जीये|"

महान होंग मेंग ने कहा:
“अपने ह्रदय क पोषण करो, निष्क्रियता में स्थापित रहो और यह संसार स्वयं से ही बदल जायेगा| अपने शरीर को और जो तुम जानते हूँ उस ज्ञान को भूल जाओ| सभी विभिन्नताओ को जाने दो और उस अनंत के साथ एकरूप हो जाओ| अपने मन को छोड़ दो और अपनी आत्मा को मुक्त कर दो| शुन्य हो जाओ! और आत्मा से भी शुन्य हो जाओ| इस प्रकार वस्तुए स्वयं से ही बढ़ेगी और विकसित होगी और आखिरकार अपने मूल में समाविष्ट हो जाएगी |अपने मूल में समाविष्ट होना बिना उसको जाने इसका परिणाम फल रहित होता है और इसे विकृत नहीं किया जा सकता| लेकिन इसको जानना की यह कैसे हुआ तब यह इसे विकृत करना है| इसके नाम को मत पूछो, इसके स्वभाव को मत पूछो और वस्तुए स्वयं से पनपने लगेगी|"

यूँ-जिंग ने कहा:
"हे महात्मा! आपने मुझे ध्यान करना सिखाया है और मुझे शांत होना सिखाया| जिसे में बहुत समय से पाना चाहता था और अब वह मुझे प्राप्त हो गया है|"

इस प्रकार यूँ-जिंग ने दो बार झुककर प्रणाम किया और वहा से चला गया|

आजकल लोग उनके साथ आनंदित होते है जो उन जैसे होते है पर उनसे घृणा करते है जो उनसे अलग होते है| वे उनके साथ रहना चाहते है जो उनके जैसे है| और वे उनके साथ नहीं रहना चाहते जो उनके जैसे नहीं है इसीलिए वो इस प्रकार(अपने से भिन्न) के लोगो से स्वयं को अलग कर लेते है| यदि वे स्वयं को इन अपने से भिन्न लोगो से अलग कर लेते है तो क्या वे बहुत सारे लोगो से स्वयं को अलग नहीं कर रहे होते है? यदि कोई अपने जैसे लोगो के साथ जुडा रहता है क्योंकि वह जो वह उनसे कहते है उसे वे महत्व देते है, तब इस प्रकार वे उन लोगो के गुणों से वंचित हो रहे होते है जिन्हें वे अपने से भिन्न मानते है|

यह भी की अगर कोई इसमें सम्मिलित होना चाहता है की उनके देश में क्या चल रहा है तो वह स्वयं के लिए तो तीन राजवंशो द्वारा दिए गए उन लाभों को पा लेते है लेकिन वे इस बात पर ध्यान नहीं देते की इससे औरो को क्या नुकसान पहुच रहा है| यह ऐसा होता है जैसे अपने लिए, उन सभी लोगो के अच्छे भाग्य को चुरा लेना| पर कोई उनके भाग्य को यह जाने बिना की उनके साथ क्या हो रहा है कैसे चुरा सकता है? यह स्थिति की एक राज्य के सभी लोगो को बचा लिया जाए एक हज़ार में एक होती है| और एक राज्य के सभी लोगो को मार दिया जाए यह सम्भावना एक में से एक हज़ार होती है| इससे सिद्ध होता है की तबाही की सम्भावना कितनी अधिक होती है| यह कितना निराशजनक है की जिनके पास इसके सभी अधिकार होते है वे इस बात से जागरूक ही नहीं होते है|

किसी के पास ये अधिकार होना उसके पास कुछ बहुत महत्वपूर्ण होने जैसे है| और जिसके पास कुछ बहुत महत्त्व पूर्ण होता है उन्हें इन भौतिक वस्तुओ को भौतिक वस्तुओ की तरह नहीं देखना चाहिए| इन भौतिक वस्तुओ को भौतिक वस्तुओ की तरह नहीं देखकर ही वह उनका स्वामी बन सकता है| इन भौतिक वस्तुओ को वास्तविक न मानने का सिद्धांत केवल उस राज्य के शासन तक ही सिमित नहीं होता है| ऐसा कोई (इसे समझने वाला) इस ब्रहमाण्ड की सीमाओ से भी परे जा सकता है और नौ महाद्वीपों में बिना किसी प्रतिबंध के आज़ाद घूम सकता है| वह अद्वितीय होता है और जो अद्वितीय अद्भुत होता है वह मनुष्यो में श्रेष्ठ होता है

एक महान व्यक्ति अपने ज्ञान में ऐसा होता है जैसे की किसी वस्तु की परछाई या फिर किसी ध्वनी की गूंज| अपनी योग्यताओ से मनुष्यता को सहारा देता हुआ जब उससे कुछ पूछो तभी वह कुछ जवाब देगा| प्रतिक्रिया में शांत और चेष्टा में वस्तुरहित, वह तुमको तुम्हारे अस्तित्व की दुविधा से निकलता है और उस अनंत के साथ एकरूप होता है| वह अपनी गति में निराकार होता है, वह सूर्य जैसा नित्य होता है| अपनी भौतिक अस्तित्व के संदर्भ में वह इस ब्रहमाण्ड के नियमो के अनुरूप होता है|और इनके अनुरूप होते हुए भी वह स्वयं के अस्तित्व को भुला हुआ होता है| लेकिन यदि वह स्वयं को भुला हुआ होता है तो वह अधिकारों में अधिकार होना कैसे देख सकता है| वे जो अधिकारो में भी अधिकारों का होना देखते है वही व्यक्ति मनुष्यों में सबसे बुद्धिमान होते है और जो व्यक्ति अधिकारों के नहीं होने में भी अधिकार देखते है वे तो स्वर्ग और धरती के सानिध्य में होते है|

वह जो हल्का है और फिर भी अकेला छोड़ा जाता है वह पदार्थ है| वह जो विनम्र है और फिर भी उसका अनुशरण किया जाता है वह मनुष्य है| वे जो हमेशा होते है फिर भी उन पर ध्यान देने की जरूरत होती है वे मुददे होते है| वह जो अपर्याप्त होते है फिर भी उन्हें आगे आने की जरूरत होती है वे नियम होते है| वह जो ताओ से बहुत परोक्ष है फिर भी वह हमारा ध्यान खींचता है वह है कर्तव्य| वह जो झुका हुआ है फिर भी उसके उत्थान की जरूरत है वह है परोपकार| वह जो कमज़ोर है जिसे पुनर्जीवन देने की ज़रुरत है वह है अनुष्ठान| हमारे अंदर समाहित है पर फिर भी उसे जानने की ज़रुरत है वह है सामर्थ्य| जो एक है पर बिना किसी रूपांतरण के हुए नहीं - वह ताओ है| वह जो अध्यात्मिक है फिर भी कर्म रहित है वह है स्वर्ग|

इसीलिए एक बुद्धिमान व्यक्ति :
स्वर्ग का अवलोकन करता है पर उसके कार्यो का नहीं;
सामर्थ्य प्राप्त करता है पर इसे सीमाओ से परे नहीं बढ़ाना चाहता;
ताओ के साथ होता है पर इसे धर्म नहीं बनाता है;
दयालुता को अपनाता है पर दुसरो से इसकी कामना नहीं करता|
रीती रिवाजो का अनुशरण करता है पर उन पर निर्भर नहीं होता है;
वह दुसरो पर निर्भर होता है तो उन्हें हानि नहीं पहुचता है;
वह नियमो को समरूप देखता है पर उनको अर्थहीन नहीं होने देता;
व्यक्तिगत मामलो को देखता है पर अपनी जिम्मेदारियों से नहीं भागता;
वस्तुओ की उपयोगिता की सरहाना करता है पर उनसे नफरत नहीं करता;
कई वस्तुए उसे कर्म करने से रोकना चाहती है पर यह उसे अपने कर्म करने से प्रभावित नहीं करता;
जो स्वर्ग को समझने में सफल नहीं होता है वह सामर्थ्य को नहीं पा सकता है;
जो ताओ को नहीं समझता है वह कभी स्वयं को भी नहीं समझ सकता है;
और जो ताओ को समझने में असफल हो जाता है वह निश्चित ही निराश जीवन व्यतीत करता है|
ताओ की व्याख्या कैसे की जा सकती है? यहाँ स्वर्ग की भी ताओ है और मनुष्य की भी ताओ है| प्रकृति के नियमो में हस्तक्षेप नहीं करना उनको स्वीकार करना - यह स्वर्ग की ताओ है| हस्तक्षेप करना जब तक की उनका शुन्यीकरण न हो जाए - यह मनुष्य की ताओ है| वह जो संचालन करती है वह स्वर्ग की ताओ है| और वह जो अनुशरण करती है वह मनुष्य की ताओ है| स्वर्ग की ताओ की तुलना मनुष्य की ताओ के साथ करना यह एक दुसरे से बहुत ही भिन्न है| व्यक्ति को इस बात का अवलोकन करते हुए असफल नहीं होना चाहिए|

12. Heaven and Earth

Heaven and earth are huge, but they are alike in their transformations. The ten thousand things are numerous, but they are one in their good order. (Human beings are many they are all subjects of the sovereign)Although people put out individual effort in their lives, they're all still directed by a ruler.. The ruler's (course) should proceed from the qualities (of the Tao) and be perfected by Heaven, when it is so, it is called 'Mysterious and Sublime.' The ancients ruled the world by doing nothing;-- simply by this attribute of Heaven.

View spoken words through in the light of the Tao, and it can be seen that the ruler has made everything right in the world. View the differences between things in the light of the Tao, and it can be seen clearly that the ruler is righteous to everyone. View the abilities of things in the light of the Tao, and officials would be appointed to their proper positions. View the natural flow of everything in the light of the Tao, and every creature would be prepared to respond to anything.

Therefore, what connects the heavens and earth is virtue, and what moves along with all living things is Dao. What has the most control over people is their own personal affairs. What provides them with certain abilities is their inborn skill. Skill is commingled with one's affairs; one's affairs are commingled with righteousness; righteousness is commingled with virtue; virtue is commingled with Dao; Dao is commingled with the heavens.
Therefore, it's been said:
"Those in ancient times who nourished and cultivated the world were without personal desires, and the world had everything it needed. They didn't interfere, and all living things transformed on their own They were as silent as a deep abyss, and the rest of the people became tranquil."
It's been written:
"Deeply connect with the source of all beings and every task will fulfill itself. Without using one's mind to attain anything, one's spiritual guides will be at one's beck and call."

A Master said:
"Dao is what covers all things from above and supports them from below. It's as large and vast as a huge ocean! An aware person can't avoid cutting through the arrogance of their mind.
"To act without interfering with things is called heavenly.
"To speak without interfering with things is called virtuous.
"A loving person who benefits things is called benevolent.
"To not differentiate but seek similarities is called great.
"To behave in a way that doesn't demand respect or reciprocation is called generosity.
"To have many things despite their unconventionality is called wealth.
"To capture and hold on to what's in one's heart is called putting oneself in proper order.
"Succeeding in acting from the heart is called standing firmly on the ground.
"Abiding by Dao is called being prepared.
"Not trying to cause the defeat of another's will is called the final touch that completes.
"If an aware person has received insights from these ten things, then their heart becomes like a great sheath to all events that might beset them, and their sense of abundance will remain even if all the other things leave them. And so, gold is left stored in the mountains and pearls are left stored in the deep ponds. He doesn't profit from selling or bartering, nor from holding on to precious treasures. He doesn't find pleasure in the idea of a long life nor does he become sad at the idea of an early death. He doesn't honor those in high places, nor does he look down on those who are poor. He doesn't try to limit the benefits others gain in order to get more for himself by cheating, nor does he seek to be the ruler of the world for the sake of his own appearance. He appears then as luminous. All living things become united in their own sense of self-importance in this world, and live and die on the same level."

A Master said:

"The Master said, 'How still and deep is the place where the Tao resides! How limpid is its purity! Metal and stone without It would give forth no sound. They have indeed the (power of) sound (in them), but if they be not struck, they do not emit it. Who can determine (the qualities that are in) all things?
"A person of kingly virtue can pass by unnoticed due to her plainness, and would be ashamed to think she understood what was actually going on. Her roots are established in an ever-flowing pond and she takes on the appearance of a spirit. Her virtue spreads out like a vast meadow, emitting from her heart, and allowing other things to select what they will from her. Therefore, anything that goes against Dao is lifeless. A life that goes against virtue is meaningless. Could someone who preserves their form throughout their life while being well-established in virtue and insightful about Dao be going against their prescribed virtue? When fired by inspiration, it suddenly exudes from her, and she excitedly moves about, and all living things join with her! This is called being a person with their own prescribed virtue. Looking deeply at the shadowy darkness, she listens attentively to sounds that can't be heard. She may be completely surrounded by pitch dark, yet she only sees the dawn breaking. She may be completely surrounded by silence, yet she only hears harmonious notes. Therefore, reaching deeply and deeper still she's able to perceive things. Reaching into her spirit and going beyond spirit she's able to touch on essence. In that way she can be intimate with all living things. From what's vanished she's able to freely find what's been looked for. The hours pass quickly even though an entire night has passed. To her, what's large is the same as what's tiny; what's long is the same as what's short; what's near is the same as what's far."

Yellow Emperor had reached the northern end of the Red River when he climbed to the top of one of the hills in the Kun Lun mountains and looked southward. He realized that somewhere on his return trip he'd lost his precious dark pearl. He sent Knowledge to search for it, but he couldn't find it. He sent Li Zhu (a legendary person with such acute eyesight that he could see the tip of a feather and spot a needle in a haystack) to search for it, but he couldn't find it. He sent Chi Gou (Inquisitive Speaker) to search for it, but he couldn't find it. It was only when he sent Xiang Wang (Non-seeker) that Xiang Wang found it.
Yellow Emperor said:
"Isn't it strange that Xiang Wang was the only one who was able to find it?"

Yao's teacher was Xu You. Xu You's teacher was Nie Que. Nie Que's teacher was Wang Ni. Wang Ni's teacher was Bei Yi.
Yao asked Xu You:
"Could Nie Que be used to gain a better bond with the heavens? I'm sure I could persuade Wang Ni that I really needed to rely on him (Nie Que) right now."
Xu You said: “That would be a dangerous thing to do! It could turn the whole world upside down. As a person, Nie Que is intelligent, clever and knowledgeable. He's talented at being perceptive and sharp-witted, and he naturally outshines others in those areas, so he's able to help people to be satisfied with what they get from the heavens. Those talents allow him to look into how he can prevent people from being excessive, but he doesn't know much more than recognizing excesses. And you think he could assist you in bonding with the heavens? He can offer up his own talents to help, but that would have nothing to do with the heavens. His viewpoint comes from his own explorations into himself and others around him. His deep respect for this type of knowledge would run amok like a forest fire, causing all sorts of things to begin to take place. It would cause creatures to act like tormented animals, which would cause them to try to comply to whatever was being thrown at them. Trying to comply with what the rest of the people considered to be suitable, everything would start transforming at random without having come from a place of stability first. That guy would be of no use in assisting you to bond with the heavens! There's someone who's looked up to as a guide in every group of people. The actions of the group can be a reaction to the mandates handed down by this father figure, but the actions of the group can't possibly react to both the mandates of the father figure and the mandates of the father figure's father figure. That kind of governing would be like leading everyone into chaotic disorder - bringing disaster to those who enact the mandates and destruction to the ruler."

Ao was making an inspection of Mount Hua when the person who was given charge over the fief of Hua said:
"Wow! A Sage! Please let me express my good wishes to you, Sage. May the Sage live a long life."
Yao said:
"No, thanks."
"May the Sage become rich."
Yao said:
"No, thanks."
"May the Sage have many male sons."
Yao said:
"No, thanks."
The feudal lord said:
"A long life, riches, and many male sons is what people wish for. Are you the only one who doesn't want those things?"
Yao said:
"Having many male sons would make a person worry about how they were going to act. Becoming rich would make a person have to get involved in lots of business affairs. Attaining a long life would make a person feel a sense of shame. Those three things can hinder a person from cultivating virtue, so I'd rather decline them all."
The feudal lord said:
"At first I mistakenly thought you were a Sage. Now it's obvious you're actually a person who's been entrusted with a role of leadership. When all the different types of people were born, they were each given certain things to do. If someone is given many sons, they've each already been set on a course, so what's there to worry about? If someone is given wealth all they have to do is divide it up between others, so what other affairs would be necessary?
"The Sage dwells like a quail (staying close to the ground) and eats like a hatchling (feeding on what's given to it). When he takes to flight like a bird, he doesn't make a spectacle with his wings. When the world has Dao, then he prospers along with all things. When the world is without Dao, then he cultivates his virtue to break through the barriers. After ten thousand years, when he gets tired of dealing with the world, he can take off to the mountains and become an Immortal. Riding along beside the white clouds, he'd be like the emperor of all the land he passed over.
"The three things that worry you so much mean nothing to him, so he never brings disaster upon himself. Then how could he ever feel a sense of shame for anything?"
The feudal lord started to walk away, and Yao went after him saying:
"Can you wait a minute, as I have something to ask you."
The feudal lord said:
"Go away and stop bothering me."

When Yao was in power over the world, he appointed Bo Cheng Zi Gao (Mr. Successfully Promoted) to the position of Duke. Yao then gave over the throne to Shun. Shun then gave over the throne to Yu. At that point, Bo Cheng Zi Gao retired as Duke and went into the fields to become a farmer. Yu went to visit him and found him plowing in an open field. Yu rushed up to him, placing himself in an inferior position (facing north) and asked:
"Long ago when Yao was the ruler of the world, he appointed you to the position of Duke. Yao gave over the throne to Shun, and Shun gave over the throne to me, whereupon you retired your position and became a farmer. I'd really like to know why you did that?"
Zi Gao said:
"Back in the days when Yao ruled the world, he offered no rewards to the people, but they kept on with their work. He threatened no punishments, but the people were respectful. Nowadays you've instigated both rewards and punishments, and the people are heartless. Their own virtue has declined as the threat of punishment has overcome them. Future generations will become even more unsettled because of what you've started! Why don't you just go away? Leave me to my work."
With that he went back to plowing the rows in his field and completely ignored Yu's presence.

In the peaceful time before anything was created, there was nothing and namelessness. Out of that arose a One, but this One had no form. Then things sprouted up and each of them was given what is called a virtue. What had no shape divided and congealed into what is called destiny. Through stillness and motion things eventually came to life, and as their textures evolved they came to be called forms. The physical structure of each thing is built to protect it's spirit, and each one has their own characteristics which are called their inborn natures. Their inborn natures allow them to cultivate ways to return to their own virtue, and their virtue allows them to fit in with the time before anything was created. Fitting in this way allows them to become empty, and that emptiness allows them to become great. Join what comes out of one's mouth with the chirping of birds. If what comes out of one's mouth has joined with the chirping of birds, then one has become joined with the heavens and earth. Once this union is made, it's the connecting thread of all things, and although one might seem to be foolish and confused, to become this way is called connecting with one's deepest virtue. Fitting things together in this way is the great concordance.

A Master (Confucius) asked Lao Dan (Laozi):
Some men regulate the Tao (as by a law), which they have only to follow;-- (a thing, they say,) is admissible or it is inadmissible; it is so, or it is not so. (They are like) the sophists who say that they can distinguish what is hard and what is white as clearly as if the objects were houses suspended in the sky. Can such men be said to be sages?
Lao Dan said:
"A person like that would wear himself out by always trying to force his mind to keep up with the different theories that came up. A dog is held still with a leash because he has the instinct to chase after small animals in the fields. Apes and monkeys confine themselves to the mountain forests because that's where they can best use their innate abilities (climbing trees, etc.). Qiu (Confucius), let me try to tell you something that you don't really have the ability to hear, as well as something you don't have the ability to speak about. It's quite ordinary to have a head and toes, but there are many without minds and ears. Of those who have a specific form, they can't imagine what it would be like not to have a form, yet everything that exists seems bent on trying to be what they're not. They move and stop, live and die, rise up and fall down - and they end up constantly being in either one extreme or the other. Those are the things that govern people's existence. Being able to forget about those things and forget about the heavens - that would be called self-forgetting. A person who forgets themselves - they would be referred to as someone who has entered the heavens."

Jiang Lu Mian (Striving for a Backbone) went to visit Ji Che (Supportive Younger Brother) and said:
"The ruler of the state of Lu requested my presence and said to me: 'Please share with me some of your teachings.' I politely refused because it wasn't an official order from him. Even though I refused, he wouldn't take no for an answer. So, I went ahead and told him some things, but I don't know whether I hit the mark or not. Please let me give you a sampling of my recommendations to him. I told the ruler of Lu: 'You must present yourself respectfully and modestly and raise in rank those who show loyalty and faithfulness, but not those who are owed favors. Then who among the people wouldn't curry your favors!' "
Ji Che broke out laughing and said:
"Even though those are some pretty masterful words, to think they could reach into the nature of a king or emperor would be like an angry mantis thinking he could stop a car by waving his arms around. He could never succeed at that task! And if they did what you suggested, people would surely put themselves into a dangerous position. He'd sit on his terrace observing everything, while those who wanted to deceive him would rush around pretending to be something they weren't."
Jiang Lu Mian got an expression of shock and amazement on his face and said:
"I'm bewildered that you wouldn't agree with those masterful words! Even so, I wish you'd tell me in your own words what you would have said."
Ji Che said:
"When a great sage governs the world, he sways the people's hearts, making it easy to teach them new methods to follow which would extinguish the meanness in their hearts and move on as though it was of their own volition. They

would be following their own nature, and they wouldn't know how it happened. Once they'd become that way, what need would he have to look for guidance from the teachings of Yao and Shun or go to the murky depths that beleaguer those who are trying to guide anyone? Their desire would merely be to dwell in their minds and conform to virtue!"

Zi Gong had wandered south of the state of Chu and was returning through the state of Jin. As he passed along the sunny side of the Han River, he spotted an elderly man who was working in his vegetable garden. He'd dug a well, and was in the process of carrying the water back to irrigate his garden in a small jar, and was working himself to the bone. He was really exerting himself, but had little to show for his efforts.

Zi Gong said:
"A machine has been invented which would allow you to completely soak a hundred vegetable gardens in one day. It requires very little effort, but provides great results. Wouldn't you want one of them, sir?"
The man looked up from his garden, saw the stranger, and said:
"How does it work?"
He replied:
"The machine is made from a long piece of wood that's been chiseled so it's heavier in the back and lighter in the front. The water can then be lifted out of the well quite easily and quickly, like a dog lapping water from a bowl, then sprayed out over a large area. It's called a Gao."
The gardener gave him a dirty look then laughed and said:
"I've heard from my master that those who possess machines must end up becoming mechanical in their affairs. Those who are mechanical in their affairs must end up becoming mechanical in their hearts and minds. If a mechanical heart is situated in one's chest, then one can't prepare oneself to receive pure simplicity. If one can't be prepared to receive pure simplicity then the spirit becomes unsettled, and Dao has no place to enter. It's not that I wasn't aware of such machines, but that it would be disgraceful to end up that way."
Zi Gong lowered his eyes in embarrassment and couldn't find any words for a response.
After a few moments the gardener asked:
"And what do you do, sir?"
"I'm a disciple of Kong Qiu (Confucius)."
The gardener asked:
"Aren't you the people who are trying to learn how to emulate sages, thus placing yourselves on a higher level than other people, while crying a mournful song about how alone you are simply in order to gain a reputation in the world? You guys forget about your spiritual essence, cause degeneration to your physical body, and for what? You don't even have the ability to set yourselves straight, let alone set anything straight in the world! Please go away. I'm not lacking anything in my work."
Zi Gong hunched his shoulders down and turned pale. He became completely disoriented and lost any sense of self-contentment. It wasn't until he had walked for ten miles that he regained his composure.

One of his disciples asked him:
"What kind of man was that? Why was it that after you met him your whole attitude changed, you turned pale, and for the rest of the day you weren't yourself at all?"
"I used to think there was only one person in the world who could really reach me, but that was before I'd come across this man. I'd heard from my Master that in order to deal with affairs and be successful at them, one must use as little effort as possible while achieving many things. That's the Dao of a sage. Now I've found that's not so. In order to grasp Dao one has to make their virtue whole. One who makes their virtue whole has to make their form whole. One who makes their form whole has to make their spirit whole. One who's made their spirit whole - that's the Dao of the sage. By trusting life to take him along with different people without knowing what's really going on, his capacity for purity is boundless! The rewards and benefits obtained by clever machines must be forgotten in the mind of such a person. A person like that would oppose what wasn't coming from their own will as well as opposing

actions that weren't coming from their own heart. Even if the whole world were to praise him and accept what he had to say, he'd consider it to be frivolous talk and ignore it. If the whole world opposed him and rejected what he had to say, he'd figure he didn't fit in with their group mentality and not let it bother him. The world's praise or opposition wouldn't harm him, and that's what's called being a person whose virtue is whole! I'm someone who still gets disturbed by other people."
When he returned to the state of Lu, he went and told Kong Zi about it.

Kong Zi said:
"He is one of those bogus practitioners of the arts of Mr. Chaos." He knows the first thing but doesn't understand the second. He looks after what is on the inside but doesn't look after what is on the outside. A man of true brightness and purity who can enter into simplicity, who can return to the primitive through inaction, give body to his inborn nature, and embrace his spirit, and in this way wander through the everyday world - if you had met one like that, you would have had real cause for astonishment.14 As for the arts of Mr. Chaos, you and I need not bother to find out about them."

Zhun Mang (Diligent Explorer) decided to go east in search of the great ravine when he happened to meet up with Yuan Feng (Contained Wind) at the seashore of the East China Sea.
Yuan Feng asked:
"Where are you heading off to?"
"I'm heading to the great ravine."
"Why are you doing that?"
"The great ravine is something that no matter how much you pour in, it won't get filled up, and no matter how much is drained out, it won't get used up. I'm going to wander there."
Yuan Feng said:
"Master, don't you care at all about the turbulence people are dealing with? I'd sincerely like to hear about the rule of a sage."
Zhun Mang said:
"The rule of a sage? He'd appoint officials to carry out his orders by observing their suitability for the job, make promotions by observing their abilities, and determine their competence and their passion for their work by watching how they act. If his words were competently expressed by his actions, then the whole world would be transformed. Simply by waving his hand or pointing his finger, he'd be listened to by all the people in the land, and not one of them wouldn't join together in unity. That would be a description of the rule of a sage."
"I'd sincerely like to hear about the virtuous person."
"A person with virtue resides wherever his heart takes him, moves about without being stealthy, and doesn't shelter himself in ideas of right/wrong or good/evil. He shares in the benefits of what's provided by everything within the four seas (the world as it was known at the time) and he calls that joyfulness. Giving back what he has to offer, he calls that comforting. Open-eyed with wonder! Like an infant who's lost his mother. Open to others! Like a traveler who's lost his way. He has enough wealth to spare, but doesn't know how he got it in the first place. He always has enough to eat and drink, but doesn't know where it came from. This is a description of the appearance of a virtuous person."
"I'd sincerely like to hear about the spiritual person."
"A spiritual person rides high above on beams of light while his form seems to be extinguished and vanishes. This is called mirroring space. Relinquishing his fate and extending his situation, he finds pleasure in what is of both the heavens and the earth and his involvement in worldly affairs melts away and vanishes. All living things return to their own natures. That is called blending with the unexplored shadows."

Men Wu Gui (Funeral Director) and Chi Zhang Man Ji (Keeper of a list of the names of the dead) were observing the army of King Wu.
Chi Zhang Man Ji said:

"This army is inferior to that of the clansman Yu (Shun)! That's why we're left with so much anxiety!"
Men Wu Gui asked:
"Was the world already being equitably ruled when the clansman Yu took over the government? Or was it in chaos before that happened?"
Chi Zhang Man Ji replied:
"Keeping the world equitably ruled is what anyone would try to do, but why count on the clansman Yu to have done that! When the clansmen of Yu treated a sore with medicine, it was like trying to style the hair of a person who was already bald. They wouldn't seek a doctor until they were already on their death bed. They were like a dutiful son clutching desperately to the medicine to be used on his kindly father after his face looks like charred wood. A sage would be embarrassed by them.
"In an age when virtue was whole, there was no need to praise the virtuous, nor to train people how to use their talents. The superiors were like sheltering branches of a tree, and the people were like wild deer who frolicked below. They were upright, but didn't consider themselves to be righteous. They loved each other but didn't consider themselves to be benevolent. They were solid to each other but didn't consider themselves to be loyal. They valued each other but didn't consider themselves to be faithful. They assisted each other through hardships but didn't consider themselves to be generous. Due to that, they left no traces of their movements, nor did they leave a record of their affairs."

A dutiful son who doesn't flatter his parents and a loyal minister who doesn't curry favor with his overlord are magnificent children and ministers. If a child considers everything his parents say to be correct and considers everything they do to be good, then he's commonly referred to as an unworthy child. If a minister considers everything his overlord says to be correct and considers everything his overlord does to be good, then he's commonly referred to as an unworthy minister. However, haven't we yet realized the extent to which this must be so? If a person considers something to be so because the common opinion states it's so, and considers something to be good because the common opinion states it's good, he isn't called a servile self-seeking flatterer! That being so, then isn't common opinion more strict than a parent and more respected than an overlord? If someone is called a boot-licker, they'll suddenly fly into a rage. If someone is called a flatterer, they'll angrily try to defend themselves. Nevertheless, they'll remain boot-lickers and flatterers for the rest of their lives. Using fancy words and pretentious airs they aim to gather many people around them, from start to finish and bottom to top, without ever taking a break. Draping himself in ornate clothing made of the appropriate colors, giving off the appearance of one who is respectable, and using that to impress those around him, he still doesn't consider himself to be a servile self-seeking flatterer. He goes along with what's been done by those before him, sharing their opinions of what's right and wrong, but he thinks of himself as different from the rest of the people. He's the personification of "Monkey see, monkey do." One who's aware of the fact they're acting like a silly monkey isn't the most foolish. One who's aware of their own confusion isn't the most confused. One who's the most confused will go through their whole lives without being liberated. One who's the most foolish will go through their whole lives being a dolt. If three people are traveling to a specific destination and one of them is confused, they'll still reach their destination because the one who's confused is in the minority. If two of the people are confused, then their journey will be laborious and they won't ever arrive because those who are confused are in the majority. These days the whole world is confused, and even though I have some guidance to offer no one wants it. Isn't anyone else sad about this?

Lofty music isn't received well by the ears of those who live in villages, but upon hearing "Breaking the Willows" and "The Bright Flowers" (simple ditties or bubble-gum music) they all crack a smile and laugh. By the same token, lofty words don't sit well in the hearts of those who listen to their own small group, and words that hit right to the core of things aren't spoken. Common opinions are the words that win out. Confuse the sounds of earthenware jars with metal bells, and one would never get to the source of the sound. Nowadays the world is confusing like that, and even though I have some guidance to offer, how can it be used daily? Knowing it can't be done, yet still trying to force it on them just adds to my confusion. It seems like the only thing left for me to do is cull through them rather

than trying to push anything on them. By not pushing anything, then who among them would have to share in my grief!
When a diseased person gives birth to a child during the night, they'll rush to get a lantern to look at the child for fear that it might resemble them.

A hundred year old tree is cut down and carved in order to make a sacrificial vessel, which is then decorated with green and yellow paint, while the leftover scraps are thrown into the middle of a ditch. Comparing the sacrificial vessel with the scraps in the ditch, one is considered to be beautiful and the other is considered to be ugly, but the one thing they have in common is that they've both lost their original nature. Comparing Robber Zhi with Zeng Shen and Shi Qiu, there are differences in the ways they approached righteousness, although the loss of their original natures is the same.
There are five things that can lead to the loss of one's original nature:
The five colors bewilder the eyes and make vision blurred.
The five sounds bewilder the ears and make listening inattentive.
The five odors poison the nose and plug up the sinuses.
The five flavors muddy the mouth and make the taste buds diseased and insensitive.
Preferences and aversions distract the mind and causes one's nature to swiftly scatter.
These five are all harmful to one's life. Yang Chu and Mo Zi are just now starting to leave behind older ways of thinking and stand on their own two feet, and they think they've actually achieved something. That's not what I'd call achieving anything. By thinking they've achieved something, they're just boxing themselves in. Can that be called achieving anything? If so, then the pigeon and owl who find themselves enclosed in a cage have also achieved something.
Furthermore, preferences, aversions, sounds and colors are like huge boards that block them up on the inside. Leather caps decorated with bird feathers on the crown and jingling tablets hanging from their belts constrain them like ropes on the outside.
(Note: Scholars at the time wore a uniform as described above to distinguish them from the common people.)
Inside they're caged within the barricades of their own making, and outside they're weighed down with all sorts of ropes and cords. With large eyes they look out from the middle of their confinement and consider themselves to have achieved something. If that were true, then a prisoner with his arms and legs in shackles, and a tiger or leopard that's been thrown into a bag or cage would also be considered to have achieved something.

१२|स्वर्ग और पृथ्वी

स्वर्ग और पृथ्वी बहुत ही विशाल है पर अपने कार्यो में वे भिन्न है| दस हज़ार वस्तुए बहुत अधिक है पर अपनी सही व्यवस्था में वे सभ एक है| चूँकि लोग अपने अपने जीवन में अलग अलग चेष्टाये करते है पर फिर भी उनका संचालन एक ही शासक द्वारा किया जाता है| उस शासक का रास्ता ताओ के सानिध्य से निकलता है और उसे स्वर्ग द्वारा सिद्ध किया जाता है, जब ऐसा होता है तब इसे कहा जाता है 'प्रौढ़ और गूढ़ '| जो प्राचीन थे उन्होंने शासन किया बिना कुछ किये :- केवल स्वर्ग के गुणों पर विभूषित होकर|

दिए गए आदेशो को ताओ के सहारे देखो और तुम जानोगे की एक शासक ने इस संसार में सभी वस्तुओ को सही कर दिया है| वस्तुओ की पृथकता को ताओ के सहारे देखो और तुम जानोगे की एक शासक की सभी वस्तुए की साथ उदारता है| वस्तुओ की क्षमताओं को ताओ के समरूप होकर देखो, और सभी अधिकारी अपने यथायोग्य पदों पर होगे| वस्तुओ के प्राकृतिक प्रवाह को ताओ के समरूप होकर देखो और सभी जीव हर वस्तु के प्रति प्रतिकिर्या देने के लिए तैयार हो जायेगे|

इस प्रकार जो पृथ्वी और स्वर्ग को जोड़ता है वह सामर्थ्य है और जो सभी वस्तुओ के साथ संचालित है वह ताओ है| किसका सबसे ज्यादा नियंत्रण होता है लोगो के विषयों पर? कौन उनको प्रदान करता है विभिन्न क्षमताए जो की उनकी नैसर्गिक कुशलता होती है? कुशलता जुडी होती है व्यक्ति के विषयों के साथ; व्यक्ति के मुददे जुड़े होते है दयालुता के साथ; और दयालुता जुडी होती है सामर्थ्य के साथ; सामर्थ्य जुदा होता है ताओ के साथ और ताओ जुडी होती है स्वर्ग के साथ|

इसीलिए यह कहा गया है'जो प्राचीन समय में इस संसार का पोषण करते थे और इसे विकसित करते थे वे बिना अपनी किसी व्यक्तिगत इच्छाओ के होते थे और इस संसार के पास वह सबकुछ होता था जो इसे चाहिये था| वे कोई हस्तक्षेप नहीं करते थे और सभी वस्तुए स्वयं से ही बदल जाती थी| वे गहरी खाई जितने गहरे होते थे और बाकि लोग स्वयं से ही शांत हो जाते थे|'
इसीलिए यह लिखा गया है:
"वस्तुओ की उत्पत्ति के स्त्रोत के साथ गहराई से जुडो और हर कार्य स्वयं से ही सम्पूर्ण हो जायेगे| अपने मन का उपयोग किये बिना, किसी चीज़ को पाने के लिए एक व्यक्ति की अध्यात्मिक शक्ति ही उसका समर्थन करती है|"

एक महापुरुष ने कहा है :
'ताओ वह है जिसने सभी वस्तुओ का ऊपर से आवरण किया है और धरा पर निचे आश्रय प्रदान किया है| यह एक समुद्र से भी विशाल और भव्य है! एक बुद्धिमान व्यक्ति जिसके मन में अभिमान होता है वह उस अभिमान को कभी नहीं टाल सकता है|
"कर्म करना बिना वस्तुओ के साथ हस्तक्षेप किये - इसे नैसर्गिक कहा गया है|
"बोलना बिना वस्तुओ को प्रभावित किये - इसे धार्मिक कहा गया है|
"एक स्नेही मनुष्य जो वस्तुओ को लाभान्वित करता है - उसे दयालु कहा गया है|
"विषमताओ को भूलकर समानताओ को देखने वाले को - महान कहा गया है|
"बिना किसी सम्मान या फल की चाहत रखे व्यवहार करने वाले को - उदार कहा गया है|
"वस्तुओ का होना बिना उनमे आसक्त हुए इसे ही धन कहा गया है|
"और अपने ह्रदय में जो है उसके साथ सही होना और उसे समझना- इसे ही सही तरह व्यवस्थित होना कहा गया है|
"और अपने ह्रदय से किर्यशील होने को ही अपने मूल पर अड़े रहना कहा गया है|
"ताओ पर टिके रहने को ही हमेशा तैयार रहना कहा गया है|
"और किसी को हराने की इच्छा नहीं रखना इसे ही वो आखिरी गुण कहा गया है जो सम्पूर्ण बनता है|
"उस व्यक्ति ने जिसने इन दस चीजों की सूक्ष्मता को समझा है उसका ह्रदय एक ऐसे म्यान की तरह हो जाता है जिसमे सभी वस्तुए समां सकती है और उसकी पुर्णता तब भी बनी रहेगी चाहे उसमे से सभी वस्तु निकल भी आये| इसीलिए तो मोती गहरे समुद्र में और सोना चांदी ऊँचे पार्वतो में छिपा होता है| उसके लिए कोई महत्व नहीं होता है सोने चांदी का या फिर खजाने का| ना ही उसे दीर्घ जीवन में कोई लाभ दीखता और न ही वो जल्दी मृत्यु की कल्पना से डरता है| वह ना ही जो ऊँचे पदों पर होते है उनको सम्मानित करता है ना ही वह जो गरीब होते है उनसे घृणा करता है| वह औरो को जो लाभ होता है उसे अपने फायदे के लिए चुराने की कौशिश नहीं करता है और नहीं वह अपना नाम कमाने के लिए इस संसार का शासक बनना चाहता है| इस प्रकार वह हमेशा प्रकाशमय प्रतीत होता है| इस संसार में सभी वस्तुए अपने महत्व को देखकर अपने ही बोद्ध द्वारा एकरूप हो जाती है और एक ही आसन पर जन्म या मृत्यु पाती है!"

एक महापुरुष ने कहा है :
"एक महात्मा ने कहा 'कितना स्थिर व् गूढ़ है वह स्थान जहाँ ताओ रहती है! कितनी स्पष्ट है उसकी शुद्धता! धातु और पत्थर के होते हुए भी वहाँ कोई आवाज़ नहीं आती| ऐसा नहीं है की उनके (पत्थरो के पास) पास सामर्थ्य (आवाज़ निकलने का) नहीं है पर जब तक उन्हें टकराया न जाए तब तक उनसे आवाज नहीं निकलती है| कौन बता सकता है उन गुणों को जो सभी वस्तुओ में समाये होते है?

"एक महान सामर्थ्य वाला व्यक्ति कहीं से भी बेखबर निकल सकता है, लेकिन उसे बहुत लज्जा आएगी यह जानकर की यदि उसे वास्तव में वहा क्या हो रहा है यह समझ आ रहा हो| उसका मूल एक हमेशा प्रवाहित होने वाले जलाशय में स्थापित होता है और उसकी आत्मा जैसे उसकी उपस्थिति प्रतीत होती है| उसका सामर्थ्य मैदान जितना विशाल होता है जो की सीधा उसके ह्रदय से होता है| उसके प्रति वस्तुओ के पास अवसर होता है की उससे वे कैसे होगी| इसी प्रकार जो कुछ भी ताओ के प्रतिकूल होता है वह जीवंत नहीं होता है| और जो सामर्थ्य के प्रतिकूल होता है वह अर्थहीन होता है| क्या कोई जिसने पूरा जीवन सामर्थ्य और ताओ में स्थापित होते हुए स्वयं को समर्थित किया है और उसके पास सूक्ष्मता हो तो क्या वह इस विश्लेषित सामर्थ्य के प्रतिकूल हो सकता है? अंतःकरण से प्रेरित होकर, वह चलता है तो सभी वस्तुए उसके साथ संयोजित होती है! इसी व्यक्ति के पास तो कहा जाता है सामर्थ्य का होना है| गहरे अंधकार में वह अति सूक्ष्मता से देखता हुआ उन अवाजो को भी सुन सकता है जिन्हें सुना ना जा सके| अगर उसका जीवन अंधकार से भर भी जाए तो भी केवल उसे उसमे आने वाली सुबह ही प्रतीत होगी| चाहे उसका वातावरण सन्नाटे से भर जाए तभ भी उसे केवल मधुए ध्वनीया ही सुनेगी| इस प्रकार गूढ़ होकर, और गूढ़ होते हुए भी वह वस्तुओ का बोद्ध कर सकता है| अपनी आत्मा के क्षेत्र में रहकर या उससे भी परे होकर वह तत्व को पहचानता है इस प्रकार उसके सभी जीवित वस्तुओ के साथ मधुर संबंध होते है| जो लुप्त हो गया है इसके साथ ही वह यह जानने में भी सफल होता है की क्या आने वाला है| समय तेजी से चलता है जैसे कुह ही घंटो में सारी रात बित गयी हो| उसके लिए जो विशाल है वह तुच्छ के सामान ही है; और जो लम्बा है वह छोटे के सामान ही है; और जो दूर है वह नजदीक के सदृश ही है|

येल्लो राजा लाल नदी के अंतिम उत्तरी छोर पर पहुच गया था जब उसने कुन-कुन पर्वत की पहाडियों पर चढ़कर दक्षिण की तरफ देखा| तब उसे अचानक एहसास हुआ की अपनी यात्रा के बिच में उसने कही पर अपने कीमती गहरे काले मोती को खो दिया है| उसने इस मोती को ढूंढने के लिए आदमी भेजे पर वह उसे ढूंढ नहीं पाये| उसने ली-जहू (एक तेज सूक्ष्म दृष्टि वाला व्यक्ति) को भी उस मोती को खोजने के लिए भेजा पर वह भी उसे नहीं खोज पाया| फिर उसने ची-गोउ को खोजने के लिए भेजा पर वह भी खाली हाथ ही लोट आया| उस मोती को राजा येल्लो तभी खोज पाया जब उसे खोजने के लिए क्सिंग-वांग (जिसे खोजने की कोई जिज्ञासा नहीं थी) को भेजा|
येल्लो राजा ने कहा 'क्या यह अजीब नहीं है की क्सिंग-वांग ही अकेला वह है जो इस मोती को खोज पाया?'

याओ का गुरु क्सु-यू था| क्सु-यू का गुरु नि-कउए था| नि-कउए का गुरु वांग-नि था| और वांग-नि का गुरु बी-यी था|

याओ ने अपने गुरु क्सु-यू से पूछा:
"क्या नी-कउए के स्वर्ग के साथ बहतर संबंध हुआ करते थे? मै यह निश्चित हूँ की मै वांग नि को विश्वास दिला सकता हूँ की मुझे उनकी अभी बहुत ज्यादा ज़रुरत है|"

क्सु-यू ने कहा:
"यह एक बहुत ही खतरनाक कार्य होगा करने के लिए| व्यक्तिगत तौर पर नी-कउए बहुत ही बुद्धिमान है और चतुर है| उसका ज्ञान बहुत ही प्रत्यक्ष है और वह इन विषयों में दुसरो को आसानी से मात दे देता है| इस प्रकार वो लोगो की मदद करता है उन्हें उससे संतुष्ट करकर जो उन्हें स्वर्ग से मिला है| उसकी यह प्रतिभा लोगो को बहुतायत से रोकने के लिये उसकी सहायता करती है पर वह बहुतायत को समझने के बारे में ज्यादा नहीं जानता| और तुम सोचते हो की वह तुम्हारी मदद करेगा स्वर्ग के साथ जुड़ने में| उसके तर्क स्वयं के अंदर विचार करने से आते है और अपने प्रतिवेश को समझने से उसका ज्ञान के प्रति इतना गहरा सम्मान उसे उन्मादी कर देता है| यह उसके अंदर हिंसक जंगली आग की तरह है और इसी पर निर्भर होकर वह सभी कार्यो को करता है| यह सभी प्राणियों को जंगली पशु की तरह व्यवहार करने का कारण देता है और यही कारण है की वे उसका प्रतिउत्तर देते है जो भी उन पर फेंका जाता है| उस चीज़ का पालन करने की कौशिश करना जिसे लोग उचित समझते है, इससे सभी वस्तुए थोडी बहुत भी स्थिरता को पाए बिना ही स्वयं से ही बदलना शुरू हो जाती है| तुम्हे स्वर्ग के साथ होना सिखाने में इस व्यक्ति का कोई लाभ नहीं है! यहा लोगो के हर समूह में कोई होता है जो एक मार्गदर्शक की तरह होता है| उस समूह के लोगो

के कर्म केवल प्रतिबिम्ब है जो उस मार्गदर्शक द्वारा बताया जाता है पर उनके ये कर्म प्रतिबिम्ब नहीं हो सकते जो उसके मार्गदर्शक के मार्गदर्शक द्वारा बताया जाता है| इस प्रकार का मार्गदर्शन लोगो को केवल कोलाहल भरी स्थिति में ले जाता है - और यह जो इसको मानते है उनको हानि पहुचता है तथा विध्वंस कर देता है उस शासक का जो उन्हें बनाता है|"

याओ एक बार 'हुआ' पर्वत का निरिक्षण कर रहा था, तब उसे उस पर्वत के सामंत ने कहा :
"धन्य है! एक संत! (राजा याओ को देखकर) कृपया मुझे अपनी शुभकामनाए आपके लिए अभिव्यक्त करने दीजिये| ईशवर करे आप दीर्घायु हो|"

याओ ने कहा:"नहीं धन्यवाद|"

"इश्वर करे यह संत धन सम्पदा से परिपूर्ण हो|"

याओ ने कहा:"नहीं धनयवाद|"

"इश्वर करे इस संत के बहुत सारे पुत्र हो|"
याओ ने कहा:"नहीं धन्यवाद"

तब उस सामंत ने कहा:
"एक दीर्घ आयु हो होना, बहुत सारे पुत्रो का होना ही होता है जिनके लिए ज़्यादातर मनुष्य कामना करते है| क्या तुम अकेले वो हो जो यह सभ नहीं चाहते हो?"

याओ ने कहा :
"बहुत ज्यादा पुत्रो का होना एक व्यक्ति को इस बात को लेकर चिंतित कर देता है की वे पुत्र कैसे होगे| बहुत ज्यादा धनवान होना व्यक्ति को बहुत सारी चिन्ताओ से घेर देता है| और दीर्घ आयु होने से व्यक्ति के अंदर से धीरे धीरे लज्जा ख़त्म हो जाती है| ये तीनो वस्स्तुए एक व्यक्ति को सामर्थ्य की परिशुद्धि करने से रोकती है|

उस सामंत ने कहा:
"पहले मैंने तुम्हे एक संत की तरह समझा था| अब यह स्पष्ट हो की तुम वास्तव में एक व्यक्ति हो जिस पर एक शासक की तरह विशवास किया जा सकता है| जब हर प्रकार के व्यक्तियों का जन्म होता है उनमे से प्रत्येक को करने के लिए कुछ ना कुछ कार्य दिया जाता है| अगर किसी को बहुत सारे पुत्र दे दिए जाते है तो उनके कार्य पहले से ही निर्धारित होते है फिर चिंता करने की क्या बात होती है? अगर किसी को बहुत सारा धन दिया जाता है तो उनको बस इसे सभ के बीच बाटना होता है फिर इसमें चिंता की कौन सी बात है?"एक संत हमेशा अपने मूल में निवास करता है और एक छोटे बच्चे की तरह खाता है (जैसे छोटे बच्चे वही खाते है जो उन्हें दिया जाता है)| जब वह आकाश में पक्षी की तरह उड़ान भरता है तो उसके पंख कोई आवाज़ नहीं करते है| जब इस संसार के पास ताओ होती है तब यह संसार उसी के साथ उन्नति करता है| और जब यह संसार ताओ के बिना होता है तब यह विभिन्न बाधाओ से निपटने के लिए सामर्थ्य को अपनाता है| दस हज़ार साल बाद जब वह यह करते हुए थक जाता है तब वह सभ कुछ छोड़कर पर्वतो पर एकांत मे चला जाता है और वहा पर अमर बन जाता है|वह श्वेत बादलो पर बैठकर उनकी सवारी करता है, और वह जिस भी स्थान से वो गुजरता है वहाँ का सम्राट जैसा होता है|
जो तीन वस्तुए तुम्हे इतना चिंतित करती है वे उसके लिए अर्थहीन होती है, इस प्रकार वह इनसे होने वाली विपदा से बचा होता है| फिर वो कैसे किसी वस्तु के लिए लज्जा अनुभव करे?"

उस सामंत ने वहा से जाना शुरू किया और याओ उसके पीछे दौड़ता हुआ बोला:
"क्या आप एक क्षण के लिए ठहर सकते है मेरे पास आपसे पूछने के लिए कुछ है|"

उस सामंत ने कहा:
"चले जाओ और मुझे परेशान करना बंद करो|"

जब याओ इस संसार का सम्राट था तब उसने बो-चेंग-ज़ि-गाओ को सम्राट के पद पर नियुक्त कर दिया| फिर याओ ने अपना सिंहासन शुन को दे दिया| तब शुन ने अपना सिंहासन यु को दे दिया| इसी समय बो-चेंग-ज़ि सम्राट के पद से निवृत हो गया

और खेतो में जाकर एक किसान बन गया| यु उनसे मिलने गया, उसने उनको खेतो को जोंतते हुए पाया| यु उनके पास गया और स्वयं को निचे झुकाकर उत्तर की तरफ मुख करके बोला:
"बहुत समायी पहले याओ इस संसार का सम्राट था उन्होंने फिर आपको सम्राट बना दिया| फिर याओ ने अपना सिंहासन शुन को दिया और शुन ने इसे मुझे सौंप दिया तब आप ने अपना पद त्याग दिया और एक किसान बन गए| मै वास्तव में यह जानना चाहता हूँ की आपने ऐसा क्यों किया?"

बो-चेंग-ज़ि-गाओ ने कहा:
"पुराने दिनों में जब याओ इस संसार का सम्राट था तब उस समय लोग के लिए ना ही तो किसी पुरुस्कार का प्रावधान था और ना ही दण्ड का| लेकिन इन दिनों तुमने इन दोनों को अस्तित्व में ला कर खड़ा कर दिया है और लोग अब इससे (इस कारण) ह्रदय रहित हो गए है| उनका अपना सामर्थ्य ख़त्म हो गया है क्योंकि इसकी जगह उनके ह्रदय में अब दण्ड के भय ने ले ली है| जो तुमने शुरू किया है यह आगे आने वाले पीढियों में तो और अधिक होगा! क्यों नही तुम चले जाते हो यहाँ से? मुझको मेरे कार्य में छोड़कर|"

इसीके साथ ही वह दोबारा से अपने खेतो को जोंतने में लग गया और उसने याओ की उपस्थिति को पूरी तरह से नकार दिया|

उस शांतिपूर्ण समय में जब कुछ उत्पन्न नहीं हुआ था, जब कुछ भी नहीं था और कोई नाम नहीं था| तब इससे 'एक' की उत्पत्ति हुई, उस एक का कोई रूप नहीं था| तब उस एक में से वस्तुओ की उत्पत्ति होना प्रारंभ हो गया और उन्हें वह मिला जिसे हम सामर्थ्य कहते है| जिसके पास कोई रूप नहीं था वह विभाजीत हो गया और उसमे जम गया जिसे हम भाग्य कहते है| इस स्थिरत और चंचलता से तब सभी वस्तुए अकस्मात ही अस्तित्व में आ गयी, और जिसे हम रूप कहते है उन्हें वह बनावटी ढांचा मिला| वस्तुओ को भौतिक रूप मिला जो उनकी आत्मा की रक्षा करता था, और प्रत्यके वस्तु के गुणों की उत्पत्ति हुई जिन्हें उनकी सहज परिवर्ती कहा जाता है| उनकी इस नैसर्गिक प्रकृति ने उनको अपने सामर्थ्य को फिर से विकसित करने में सहायता की और इस सामर्थ्य ने उन्हें वही उपयुक्त कर दिया उस समय में जब कुछ नहीं था| इस तरह से उपयुक्त हो जाने से वे शून्य हो गए और इसी शुन्यता ने उन्हें महान बना दिया| जो किसी के मुख से निकलता (शब्द और आवाजे) है उसे पक्षियों की ची-चि आहट से मिलकर देखो, अगर ये आपस में मिल जाते है तो वह स्वर्ग और धरती के साथ एकरूप हो जाता है| जब यह एकरूपता हो जाती है तो यह सभी वस्तुओ को जोड़ने वाला सूत्र होती है और इस वक़्त कोई इससे अनजान भी हो सकता है लेकिन इस तरह होना सबसे गूढ़ सामर्थ्य के साथ जुड़ना होता है| इस तरह स्थापित होना सबसे महान सामरस्य है|

एक महत्मा ने लाओ-दान से पूछा:
"कुछ लोग ताओ को नियंत्रित करते है जैसे की वो एक नियम है जबकि उन्हें तो केवल उसका अनुशरण करना होता है - स्वीकार्य है या स्वीकार्य नहीं है; यह ऐसे है या ऐसे नहीं है| वे ऐसे मिथ्यावादी होते है जो सही और गलत में पृथकता को इतनी स्पष्टता से कहते है जैसे की वस्तुओ को हवा में ही रोक दिया जाए| क्या ऐसे व्यतियो को संत कहा जा सकता है?

लाओ-दान ने कहा:
"इस प्रकार का व्यक्ति अपने स्वयं का दिखावा करता है अपने मन को उन विभिन्न सिद्धांतो में उलझाये हुए जो उसके मन में उत्पन्न होते है| एक कुते को पट्टी से बाँधा जाता है क्योंकि उसकी प्रवृति इधर उधर घुमने और ऐसा करते हुए छोटे जानवरों का पीछा करने की होती है| बंदर और गोरिल्ला ज़्यादातर वन में ही रहते है क्योंकि वहा वे अपनी कुदरती क्षमताओ का उपयोग कर सकते है जो उन्हें जन्म से मिली है जैसे की कूदना, लटकना आदि|
कुई (कोंग-जि) मुझे तुम्हे बताने दो की तुम्हारे पास वास्तव में इस सभ को सुनने की योग्यता नहीं है और तुम्हारे पास यह सभ बोलने की भी कुछ योग्यता नहीं है| सिर और पैरो का होना यह बिलकुल साधारण होता है पर यहाँ कई है जो बिना मन के और कानो के है| वे जिनके पास कोई रूप है उनमे उसको समझने की क्षमता नहीं होती है जिसका कोई रूप नहीं होता है फिर भी हर कोई जो अस्तित्व में है, वह बनना चाहता है जो की वह नहीं है| वे चलते है और रुकते है, जीते और मरते है, उठते है और गिरते है और वे या तो 'इसमें' या फिर 'उसमे' लगातार रहते है| यही वो चीज़ है जो लोगो के अस्तित्व को नियंत्रित करती है| इस चीज़ के बारे में भूल जाना और स्वर्ग के बारे में भूल जाना ही वास्तव में स्वयं को भूल जाना है| एक व्यक्ति जो स्वयं को भूल जाता है वह स्वर्ग में पंहुचा हुआ होता है|

जियन वुंग मियन एक बार जी-ची से मिलने गया और उसने कहा:

"लू राज्य के शासक ने अपने दरबार में मेरी उपस्थिति का अनुरोध किया और मुझसे कहा 'कृपया करके अपने कुछ विचारो को हमसे कहिये'|"

मैंने इसे विनम्रता से मना कर दिया क्योंकि यह उसका कोई अधिकारिक आदेश नहीं था| चूँकि मैंने मना कर दिया था फिर भी वे कभी ना सुनना पसंद नहीं करते| इसीलिए मै आगे बढ़ा और उन्हें कुछ बाते बताई, पर मै यह नहीं जानता की वे(कथन) अपना उद्देश्य सफल कर पायी या नहीं| अपनी उस वार्ता का कुछ अंश मै तुम्हे बताता हूँ|
मैंने लू राज्य के राजा से कहा:
"तुम्हे स्वयं को विनम्रता और उदारता के साथ प्रस्तुत करना चाहिए और उन्हे सम्मान देना चाहिए जो तुम्हारे प्रति वफादार और विस्वसनीय है लेकिन उन्हें नहीं जो तुम्हारा पक्ष लेते है| फिर उन लोगो में से तुम्हारी चापलूसी कौन नहीं करेगा!"

जिए-ची हँसने लग गया और बोला:
"भले ही तुम्हारे ये शब्द कुछ ठीक लग रहे है, पर यह सोचना की वे एक राजा या शासक को ऐसे प्रभावित कर देगे की जैसे एक मैंटिस तेज गाडी को केवल अपने हाथो को थोडा घुमाकर रोक देता है| ऐसा बिलकुल भी नहीं हो सकता है! और अगर वह जो तुमने सुझाया है ऐसा करता है तो लोग निश्चित ही स्वयं को संकट की स्थिति में रख रहे होते है| वह अपने सिंहासन पर बैठकर एक परिदर्शक की तरह होगा और तब जो उसके विश्वासघाती होगे वे बिना कोई इस प्रकार का व्यवहार किये अपना कार्य कर रहे होगे|

जिंग-लू-मियन के मुख पर बहुत ही विस्मय के भाव उत्पन्न हुए और उसने कहाँ:
"मै भोंचाक्का रह गया हूँ की तुम उन सिद्ध शब्दों से भी प्रभावित नहीं हो! अगर ऐसा है तो मै जो आप अपने शब्दों से कहना चाहते है उसे जानना चाहुगा|"

जिए-छे ने कहा:
"जब एक साधू इस संसार का शासक होता है तो वह लोगो के ह्रदय के द्वारो को खोलता है जो उनको नए तरीके सिखने में मदद करते है जिससे उनके ह्रदय से स्वार्थ की भावना का त्याग होता है| वे अपने स्वयं की ही प्रकृति के अनुसार ही कार्य कर रहे होते है और वे नहीं जानते होते है की क्या हो रहा है| जब वे इस तरह से होते है तो उन्हें क्या ज़रुरत होती है याओ और शुन के सिद्धांतो को सिखने की या फिर अँधेरी गुफाओ में ज्ञान पाने के लिए जाने की? उनकी इच्छाए नाम मात्र ही उनके मन में होती है और उनका सामर्थ्य इसके अनुरूप होता है!"

ज़ि-गोंग दक्षिण के चु राज्य में घूमकर वापस आ रहा था जिन राज्य से तब वह हाँ नदी के किनारे गुजर रहा था से, तभी उसका ध्यान एक बूढ़े व्यक्ति पर गया जो अपने सब्जियों के बगीचे में काम कर रहा था| उसने एक कुआँ बनाया हुआ था, और उस कुए में से वह छोटे छोटे सुराही में पानी भरकर अपने बगीचे की सिंचाई कर रहा था| वह इस कार्य में अपना खून पसीना एक किये हुए था| वह अपने आप को बेवजह ही इतना परेशान कर रहा था क्योंकि इस सिंचाई से होने वाला परिणाम उसकी मेहनत के लिए बहुत ही कम था|

ज़ि-गोंग ने उससे कहा:
"एक यंत्र का अविष्कार किया गया है जो एक दिन में सौ सब्जियों के बगीचों को सींचने की क्षमता रखता है| उसमे बहुत ही कम मेहनत करने की जरूरत पड़ती है और उसके परिणाम बहुत ही प्रभावशाली है| महोदय क्या आपको अपने लिए एक चाहिए?"

"वह काम कैसे करता है?"

उसने जवाब दिया:
"वह यंत्र लकड़ी के एक लम्बे टुकड़े से बनाया हुआ है, उसे इस तरह तराशा गया है की वो पीछे से वजनदार है और आगे से हल्का है| जिससे की जल को कुए में से आसानी से और शीघ्रता से निकला जा सकता है, जैसे की एक कुता पानी के गड्ढ़े में खेल कूद करता हुआ पानी को चारो तरफ फैला देता है| उस यंत्र का नाम गाओ है|"

उस बगीचे के माली ने उसे बहुत ही अजीब ढंग से देखा और तब हंसने लग गया और उसने कहा:

"मैंने अपने गुरु से सुना है जो अपने जीवन में यंत्रो को इतना महत्व देते है वे आखिर में वे अपने कार्यो से यंत्रवत ही होकर रह जाते है और जो अपने कार्यो से यंत्रवत होते है उनका ह्रदय और मन भी यंत्रवत ही हो जाता है| यदि किसी के सीने में एक यंत्रवत ह्रदय होता है तो वह कैसे शुद्धता और सहजता को पा सकता है| अगर कोई शुद्ध और सहज नहीं होता है तो उसकी आत्मा भी अस्थिर हो जाती है और उसका संयोजन ताओ के साथ से हट जाता है| ऐसा नहीं है की मै इन यंत्रो से परिचित नहीं हूँ पर मै इस तरह से शर्मनाक तरीके से समाप्त नहीं होना चाहता|"

ज़ि-गोंग ने लज्जापूर्वक अपनी आंखे निचे झुका ली और उसे कहने के लिए कोई शब्द नहीं मिला|

कुछ क्षणों पश्चात उस बूढ़े माली ने उससे पूछा:
"और आप क्या करते हो श्रीमान?"

"मै कोंग-नि का एक शिष्य हूँ"

उस माली ने पूछा:
"क्या यह नहीं है की तुम लोग साधुओ जैसा अनुकरण करते हो, और इस प्रकार अपने आप को दुसरे लोगो से ऊँचे स्थान पर रखते हो जबकि साथ में इस चीज़ का दिखावा करते हो की तुम कितने अकेले हो केवल अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान को पाने के लिए? तुम अपने आत्मिक तत्व को भूल गए हो और अपने शरीर को हानि पंहुचा रहे हो, वह भी किस लिए? जबकि तुम्हारे पास स्वयं को सही रखने की भी क्षमता नहीं है, तो फिर क्यों न तुम किसी भी वस्तु को स्वयं से ही सही होने दो! चले जाओ तुम यहाँ से| मुझे अपने कार्य में किसी वस्तु की कोई कमी नहीं है|"

ज़ि-गोंग ने अपने कंधे झुका लिए और उसका मुख पीला हो गया| वह सभ कुछ भूल गया और उसे स्वयं का भी विस्मरण हो गया| और वह जब वहा से दस मील दूर चला गया तभी उसे कुछ आत्मसंयम प्राप्त हुआ|

उसके शिष्यों में से एक ने उससे पूछा:
"वह किस प्रकार का व्यक्ति था? और ऐसा क्यों है की उससे मिलने के बाद आपका पूरा स्वभाव ही बदल गया है, आपका मुख पीला हो गया है और पुरे दिन तक आपको स्वयं का ही विस्मरण हो गया?"

ज़ि-गोंग ने कहा:
"मै यह सोचता था की इस संसार में केवल एक ही व्यक्ति मुझको कुछ समझाने की क्षमता रखता है पर यह सोच केवल उस व्यक्ति से मलने के पहले तक ही थी| मैं अपने आचार्य से सुना है की मुद्दों और विषयों का समाधान करते वक़्त उनमे सफल होने के लिए एक व्यक्ति को वस्तुओ को प्राप्त करते हुए कम से कम प्रयत्न करना चाहिए| यही ताओ है एक साधू की| पर अब मैंने पाया है की ऐसा नहीं है| ताओ को पाने के लिए एक व्यक्ति को अपना पूरा सामर्थ्य चाहिए होता है| जो अपना पूर्ण सामर्थ्य रखता है वही अपने प्रारूप को पूर्ण रख पाता है| और जिसका प्रारूप पूर्ण होता है उसकी आत्मा भी पूर्ण होती है| जिसकी आत्मा सम्पूर्ण होती है यही एक साधू की ताओ है| जीवन पर विश्वास रखकर की वह उसे सभी लोगो के साथ सही ले जा रहा है बिना यह जाने की वास्तव में हो क्या रहा है तभी उसकी शुद्धता असीमित होती है| इस प्रकार के व्यक्ति के मन में चतुर लोगो के लाभ और गुणों का कोई स्थान नहीं होता है| इस प्रकार का व्यक्ति अपने मन और ह्रदय में उठने वाली इच्छाओ से भी शांत रह सकता है| अगर यह सारा संसार उसकी प्रशंसा करे और उसका अनुशरण करे तब भी उसे कोई फर्क नहीं पड़ेगा, वह केवल इसकी अवज्ञा कर देगा और यदि यह सारा संसार उसका विरोध करे और उसे अस्वीकृत भी कर दे, तभ भी यह उसे परेशान नहीं करेगा| जब संसार की स्वीकृति और अस्वीकृति से उसे कोई फर्क नहीं होता है तभी ऐसे व्यक्ति के सामर्थ्य को सम्पूर्ण कहा जाता है| और मै अब भी वो व्यक्ति हूँ जो औरो के द्वारा प्रभावित होता है|"

जब वह लू राज्य में वापस आया तो उसने इस वाकये के बारे में कोंग-जी को बताया|

कोंग-ज़ि ने कहा:
"वह इस कला को सिखने वाला केवल एक दम्भी अभ्यासी है| वह इस सन्दर्भ में पहली वस्तु को तो समझता है पर इस प्रकार पहली को समझते हुए दूसरी की अवज्ञा कर देता है| वह वस्तुओ के आंतरिक को तो जानता है पर उनके बाह्य स्वरूप की अवहेलना करता है| एक शुद्ध स्वरूप वाला व्यक्ति जो प्रकाश और सहजता को प्राप्त करता है, जो अपरिषकृत को प्राप्त होता है

वह अपनी निष्क्रियता द्वारा अपने शरीर को सहज स्वभाव प्रदान करता है और अपनी आत्मा को आलंगित करता है| इस प्रकार वह इस संसार में विचरण करता है| अगर तुम वास्तव में ऐसे व्यक्ति से मिले हो तभी तुम्हारे पास इस प्रकार विस्मयमयी होने का वास्तविक कारण है| उस व्यक्ति की कला के लिए मुझे और तुम्हे इस बारे में पता लगाने के लिए परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है|"

जहन-मांग ने एक बार पूर्व की ओर विशाल दर्रे की खोज में जाने का निश्चय किया तब वह पूर्वी समुद्र के तट पर युआन-फैंग से मिला|

युआन फैंग ने पूछा:
“तुम कहाँ पर जा रहे हो?"

“मै विशाल दर्रे के तरफ जा रहा हूँ|"

“तुम वहाँ पर क्यों जा रहे हो?"

"मैंने सुना है की विशाल दर्रा ऐसा है की उसमे तुम कुछ भी डालो वह उसमे समा जाएगा और उसमे से कुछ भी निकालो वह रिक्त नहीं होगा| मै यह सभ देखना चाहूता हूँ|

युआन-फंग ने कहा:
"गुरूजी| क्या आपको लोगो की विप्पतियो की परवाह नहीं है? मै विनती कर आपसे एक साधू जैसे शासन के बारे में जानना चाहुगा|"

जहन-मैंग ने कहा:
"एक साधू का शासन? वह अधिकारियो को उनकी योग्यता का निरिक्षण करके और अपनी कार्य के प्रति उनके कौशल और समर्पण को देखकर ही उनकी नियुक्ति करता है| अगर उसके द्वारा कहे गए शब्द वैसे ही कर्मो में बदल जाए तो यह सम्पूर्ण संसार बदल जाएगा | केवल अपने हाथ को ऊपर उठाकर या फिर अपनी ऊँगली से इशारा करके वह अपने राज्य के सभी लोगो के विचारो को सुन सकता है और कोई भी इकट्ठा होकर खड़ा नहीं होगा| यही विश्लेषण है एक साधू के शासन का|"

"मै विनतीपुर्वक एक सामर्थ्यवान व्यक्ति के बारे में भी सुनना चाहुगा|”

एक सामर्थ्यवान व्यक्ति जहाँ भी उसका ह्रदय उसे ले जाता है वहा निवास करता है, वह बड़ी स्थिरता से चलता है और स्वयं को सही और गलत के विचारो में नहीं फंसता है| वह खुश होता है उसमे जो चारो महान समुद्रो द्वारा सभी लोगो को दिया गया है और वह इसीको आनंद कहता है| उसको वापस करना जो उसे मिला है इसे वो सहजता कहता है| विस्मित हुआ जैसा की एक बच्चा अपनी माँ से बिछुड़ने पर होता है| औरो के प्रति विनम्र हुआ जैसा की एक राह भटका हुआ पथिक होता है| उसके पास खर्चने के लिए पर्याप्त धन होता है पर उसे नहीं पता होता की इसका उपयोग कैसे किया जाए| यही विश्लेषण है एक सामर्थ्यवान व्यक्ति के रूप का|”

"मै एक अध्यात्मिक व्यक्ति के बारे में भी जानना चाहुगा|"

"एक अध्यात्मिक व्यक्ति प्रकाश से भी परे निवास करता है जबकि उसका रूप और काया समाप्त हुई से प्रतीत होते है, इसे ही कहते है प्रतिबिंबित आकाश| अपनी परिस्थितयों और विश्वास का त्याग कर उसे आनंद मिलता है उसमे जो उसे स्वर्ग और धरा दोनों से प्राप्त होता है| उसका हस्तक्षेप सांसारिक विषयों में ख़त्म हुआ होता है| और सभी प्राणी अपने प्राकृतिक स्वरूप को प्राप्त होते है| इसे ही कहते है अनन्वेषित आभासो के साथ एक होना|"

में-वू-गुई और ची-जंग-मन-जी राजा वू की सेना का निरिक्षण कर रहे थे|
ची-जंग-मन-जी ने कहा:
"यह सेना राजा शुन की सेना से बहुत ही नगण्य है| यही कारण है की मैं इतना चिंतित हो रहा हूँ!"

में-वू-गुई ने पूछा:
"क्या जब राजा शुन ने उस सेना का दायित्व संभाला यह संसार अच्छे से व्यवस्थित था या फिर पहले से ही कोलाहल से भरा हुआ था?"

ची-जंग-मन-जी ने जवाब दिया:
"इस संसार को सही ढंग से समानता से शासित करना, हर कोई यही करना चाहता है| लेकिन ऐसा क्यों कहा जाए की राजा शुन ही ऐसा करना चाहता था| राजा शुन ने औषधियों से घावो को भरने की कौशिश की यह ऐसा था जैसे एक गंजे व्यक्ति द्वारा अपने केशो को संवारना| उन्हें एक वैध की ज़रुरत नहीं पडेगी जब तक की वे अपनी आखिरी सांस न ले| वे तो ऐसे है जैसे अपने व्याधित पिता के ठीक होने की कामना के लिए एक कर्त्वयनिष्ठ पुत्र निराश होकर केवल औषधियों का साथ पकडे हुए है| एक साधू को तो इससे लज्जा आ जायेगी|
उस समय जब सामर्थ्य सम्पूर्ण हुआ करता था, किसी विशेष सामर्थ्यवान की प्रशंसा करने का महत्व नहीं होता था और न हीं लोगो को अपने कौशल का उपयोग करने का प्रशिक्षण दिया जाता था| जो बड़े होते थे वे एक वृक्ष की शाखाओ की तरह होते थे और बाकी उनके निचे रहने वाले हिरण की तरह होते थे| वे सरल होते थे लेकिन कभी इसका दिखावा नहीं करते थे| वे एक दुसरे को प्रेम करते थे लेकिन स्वयं को दयालु नहीं कहते थे| वे एक दुसरे के प्रति इमानदार थे पर वे इस प्रकार स्वयं को वफादार नहीं कहते थे| वे एक दुसरे को महत्व देते थे पर इस प्रकार अपने को विस्वसनीय नहीं मानते थे| वे एक दुसरे का पूर्ण समर्पण के साथ सहयोग करते थे पर इस प्रकार वे स्वयं को उदार नहीं बताते थे| इस प्रकार वे अपने कार्यो का कोई अनुरेख नहीं छोड़ते थे, न ही वे अपने कार्यो का कोई प्रमाण देते थे|”

एक कर्त्वयनिष्ठ पुत्र जो हमेशा अपने माता पिता को मिथ्याखुश करने की कौशिश नहीं करता है और एक वफादार मंत्री जो अपने राजा की हमेशा चापलूसी नहीं करता है,वे दोनों ही सभ से अच्छे पुत्र और मंत्री होते है| अगर कोई पुत्र अपने माता पिता की कही हुई प्रत्येक बात को सही मानता है और उनके किये हुए हर कार्य को अच्छा बताता है तो वास्तव में ही वो एक अयोग्य पुत्र होता है| अगर कोई मंत्री अपने राजा के दिए गए प्रत्येक आदेश को सही मानता है और उनके किये हुए हर कार्य को अच्छा बताता है तो वास्तव में ही वो एक अयोग्य मंत्री होता है| फिर भी हम अब तक नहीं समझ पाए है की ऐसा यह किस सीमा तक होता है? अगर कोई व्यक्ति किसी वस्तु को मानता है इसलिए की सभ की राय में वह ऐसे है, और वह यदि किसी वस्तु को अच्छा मानता है क्योंकि और लोग उस वस्तु को अच्छा मानते है तो फिर उस व्यक्ति को केवल एक दासो जैसा चापलूस ही कहा जा सकता है| इस प्रकार होकर तब उनको यदि कोई ज्यादा कठोर माता पिता हो या फिर एक राजा हो, उनसे सर्व सम्मति नहीं होती है? अगर किसी को एक चापलूस कहा जाए तो वे अचानक ही इस बात पर भड़क जाते है| यदि किसी को अगर दम्भी कहा जाता है तो वे क्रोधित होकर अपना समर्थन करते है| यद्यपि अपने पुरे जीवन के लिए वे चापलूस और दम्भी ही रहते है| अपने दिखावटी और आडम्बरकारी शब्दों का प्रयोग करके शुरू से आखिर तक बिना रुके वे केवल ज्यादा से ज्यादा लोगो का ध्यान अपनी तरफ खींचना चाहते है| स्वयं को विभिन्न प्रकार के रंगों के महंगे कपड़ो से आभूषित करके, इस प्रकार वे स्वयं को ऐसा रूप देते है की जैसे वे बहुत ही सम्मानजनक व्यक्ति है| इसका उपयोग वो लोगो पर प्रभाव डालने के लिए करते है और अब ऐसा करते हुए भी वे स्वयं को चापलूस और दम्भी नहीं मानते है| वे केवल जो पहले लोगो ने किया है उसका अनुशरण करते है लेकिन यह करते हुए भी वे स्वयं को और लोगो से भिन्न समझते है और वे जो उनके विचारो में सही गलत होता था उसे ही सही और गलत मानते है| यह तो इस प्रकार का व्यक्तित्व है जैसे”बन्दर जो देखते है वही वो करता है”| जो इस बात से अवगत होता है की वह उन मुर्ख बंदरो जैसा नहीं है वह उनमे सबसे मुर्ख नहीं होता है| जो अपनी दुविधा को समझता है वह सबसे उलझा हुआ नहीं होता है| और जो सबसे उलझा हुआ होता है वो अपने सारे जीवन में मुक्त नहीं हो पाता है| जो सबसे बनावटी होता है वह अपना सारा जीवन एक दुखी व्यक्ति की तरह व्यतीत करता है| अगर तीन व्यक्ति कही जा रहे हो और उनमे से कोई एक दुविधा में हो की जाना कहा है तो वे तब भी अपनी मंजिल तक पहुच जाते है क्योंकी वह दुविधा वाला व्यक्ति अल्पसंख्या में है| यदि उनमे से दो दुविधा में हो तो उनका सफर बहुत ही परिश्रम भरा होगा और फिर भी वे अपनी मंजिल तक नहीं पहुच पायेगे क्योंकि जो नहीं जानते है वो बहुसंख्यक है| लेकिन इस समय यह सम्पूर्ण संसार (सभी) दुविधा में है मै कुछ मार्गदर्शन करने की कौशिश भी कर रहा हूँ पर कोई इसे मान ही नहीं रहा है| क्या कोई इस बात से उदास नहीं है?

उत्कृष्ट संगीत को उन द्वारा सही समझा नहीं जाता जो गाँव में रहते है लेकिन ढोल और बाजे को सुनकर वे खुश होते है और हँसते है| इसी प्रकार उत्कृष्ट शब्दों का उनके लिए कोई महत्व नहीं होता जो छोटे समूहो में रहते है, और जो शब्द सही होते है वे उनके समूहो में कहे नहीं जाते है| सर्व सम्मति वे शब्द होते है जो आखिर में सफल होते है| धातु की घंटियों के संगीत को बांसुरी के संगीत से मिश्रित कर दो फिर कोई उनके उद्गम को नहीं जान पायेगा| इस समय यह संसार भी इस दुविधा में है, मै

मार्गदर्शन करना चाह रहा हूँ, पर ऐसा करने का कोई उपयोग कैसे हो सकता है? इसको (संसार) जाना नहीं जा सकता है, फिर भी इसे लागु करने का प्रयत्न करना केवल मेरी दुविधा को बढ़ा रहा है| लगता है मेरे लिए कोई काम रह गया है तो वह है इन सबसे निवारण कर लेना है उनको किसी चीज़ के लिए बाध्य किये हुए बिना| उनको बिना किसी चीज़ के लिए बाध्य किये कौन मेरे इस दुःख में मेरा साथ देगा|
जब एक रोगी (व्याधित) एक शिशु को रात्रि में जन्म देता है तो लोग उसे प्रकाश की तरफ लेकर भागते है यह देखने के लिए की कही वह शिशु तो उस जैसा (व्याधित) नहीं है|

एक सौ साल प्राचीन वृक्ष को काटा गया और उसे तराश कर पवित्र मर्तबानो में ढाला गया, फिर उन्हें पीले और हरे रंग से सजाया गया, जबकि बचे हुए टुकडो को खाई में फ़ेंक दिया गया | उन सुसज्जित मर्तबानो की उन खाई में फेके गए टुकडो के साथ तुलना करके कोई भी सुंदर और कुरूप का विचार कर सकता है लेकिन उन दोनों में एक समान बात यह थी की उन् दोनों ने अपने वास्तविक रूप को खो दिया था| डाकू जही की तुलना ज़ंग-शेन और सही-कउए की साथ करके हम उनकी पृथकता को तो समझते है की कैसे वो सही थे या नहीं, लेकिन हमें इसका विस्मरण हो जाता है की ऊन सभने अपने प्राकृतिक स्वरूप को खो दिया था|

यहाँ मुख्य रूप से पांच वस्तुए होती है जो मूल प्रकृति के ह्रास का कारण बनती है:
पांचो रंग हमारी आँखों को चकाचोंध कर देते है जिससे हमारी दृष्टि धुंधला जाती है|
पांचो ध्वनीया हमारे कानो को चकाचोंध कर देती है जिससे हमारी सुनने की शक्ति असावधान हो जाती है|
पांचो गंध हमारे नाक को दूषित कर देती है, हमारे शिरानाल को अस्थिर कर देती है|
पांचो स्वाद हमारे मुंह को दूषित करते है जिससे हमारा स्वाद व्याधित हो जाता है|
प्राथमिकताए और घृणाए उनके मन को भटकाती है और उनके शुद्ध स्वरूप को खंडित कर देती है|

ये सभी पांचो जीवन के लिए बहुत ही हानिकारक है| यंग-चु और मो-ज़ि (नए धर्म के संस्थापक) ने अब पुराने विचारो और तौर तरीको को मानना छोड़ दिया है उन्होंने अपनी खुद की विचारधारा बनाई है, और वे सोचते है की उन्होंने कुछ हासिल कर लिया है| मै इसे किसी चीज़ का हासिल होना नहीं मानता| यह सोचकर की उन्होंने कुछ हासिल कर लिया है इस प्रकार वो स्वयं को बंद पिंजरों में ही सीमित कर रहे है| क्या इसे कुछ प्राप्त करना कहा जा सकता है? यदि ऐसा है तो एक कबूतर और एक उल्लू जो की पिंजरों में बंद है उन्होंने भी कुछ ना कुछ तो हासिल कर ही लिया है|

और भी ये सभ प्राथमिकताए, घृणाए, ध्वनीया और रंग एक विशाल सांचे की तरह है जो आन्तरिक दृष्टि को आच्छादित करती है| चमड़े की टोपिया जो मुकुट पर चिड़िया के पंखो द्वारा आभूषित होती है और जिंगल जो उनकी कमर से लटकी हुई होती है, वे सभ चीज़े होती है रस्सियों की तरह जो की उन्हें इस प्रकार बांधे हुए होती है |

आंतरिक तौर पर वे अपनी स्वयं की रचनाओ के बंदी होते है और बाह्य तौर पर वे बंधे होते है इन रस्सियों और तारो के द्वारा| अपनी बड़ी आँखों द्वारा वे अपने परिरोध के मध्य से देखते है और सोचते है की उन्होंने कुछ हासिल कर लिया है| अगर यह सच है तो एक बंदी जिसके की हाथ और पैर बेडियो में जकड़े हुए है और एक तेंदुआ या शेर जो की पिंजरे में बंद है उनको भी सोचना चाहिए की उन्होंने कुछ हासिल कर लिया है (ऐसे पिंजरे में बंद होंकर)|

13.The Way of Heaven

The Way (Dao) of Nature is to continue moving without stopping to accumulate anything, thus all living things flourish. The Way (Dao) of the emperor is to continue moving without stopping to accumulate anything, thus the whole world responds. The Way (Dao) of the sage is to continue moving without stopping to accumulate anything, thus everything on earth submits.

One who receives clarity from Nature, communications from sages, and travels unimpeded in the six directions while mastering the four seasons with the virtue of emperors and kings, has herself become like all of them. Even when in the dark, she'd invariably remain calm. The calmness of a sage isn't due to the fact that calmness is considered to be good and therefore she's calm. It's because no living thing is sufficient enough to hinder her that she's calm. When water is calm, the hairs in beards and eyebrows can be clearly seen reflected in it, and it's so precisely level in the middle that a great carpenter can take it as a model for his work. When water is both calm and clear, it can reflect essence and spirit. That's how calm the heart of a sage is! She's a reflection of the heavens and the earth, and a mirror to all living things.

Emptiness, calmness, peacefulness, indifference, stillness, boundlessness and non-interference are what keep the heavens and the earth on an even keel, and Dao and De whole. Therefore, the emperors, kings and sages can rest. Resting, they then become empty; empty, they then become satisfied; and one who's satisfied has order within himself. Empty, they then become calm; calm they then can move; their movements can then achieve something. Calm, they then don't interfere with anything; using non-interference, those who are in a position to have to deal with affairs will act appropriately. Since they don't interfere, they become agreeable. For one who is agreeable, worries and anxieties can't find a foothold, and they can live a long life.

Emptiness, calmness, peacefulness, indifference, stillness, boundlessness and non-interference are at the root of all living things. The clarity of this was exemplified when Yao acted as ruler by facing southward toward the country. The clarity of this was exemplified when Shun acted as minister by turning his face to the north.

(Note: The ruler was always supposed to face the south as a superior, and his officials were supposed to face north as inferiors.)

Occupying the higher position was the virtue of monarchs, kings and emperors. Occupying the lower position was the way (Tao) of undistinguished sages and minor rulers. Keeping to this idea, one who chooses to retire and wander among the rivers and oceans will serve as a scholar to those in mountains and forests. Keeping to this idea, one who chooses to proceed with actions in order to foster those in his generation will then achieve great fame and position by uniting the world. The calmness of a sage, or the movements of a king - without interfering, then they'd both be respected. Being in a natural and untainted state, there'd be no one in the world who'd be able to disagree with that kind of magnificence.

One who has a crystal clear understanding of the virtue of the heavens and the earth is said to have connected with the "great root" and "great ancestor", thus is in harmony with the heavens. If one can then use that to unilaterally adjust the world, they are in harmony with people. One who's in harmony with people is said to have humanly joy. One who's in harmony with the heavens is said to have heavenly joy.

Zhuangzi said:

"My teacher! My teacher! He discards what's unsavory in all things, but not because he's judgmental. He rids all the ages of impurities, but not because he's benevolent. He's older than the beginning of time, but not because he has a long life. He covers from above and supports from below both the heavens and the earth while carving and shaping all the different forms, but not because he's skillful. That's what's called heavenly joy.

"Therefore, it's been said: 'One who knows heavenly joy - during his life flows along with Nature, and at his death transforms with other things. In calmness he shares the same virtue as Yin. In motion he shares the same surge as Yang.'

"Therefore, one who knows heavenly joy isn't curtailed by Nature, isn't condemned by people, isn't strained by things, and isn't punished by demons.

"Therefore, it's been said: 'He who moves like the heavens and remains as still as the earth can keep his mind steady and fixed, and in that way be a king in the world. He who isn't haunted by external demons nor wearied by his internal spirit can keep his mind steady and fixed in a way that causes all things to submit.'
"In other words, emptiness and calmness allow one to grasp what arises from the heavens and the earth and to connect with all living things. That's what's called heavenly joy. The heart of a sage in that way nourishes the whole world."

The virtue of emperors and kings is to take the heavens and the earth as their ancestor (progenitor due respect and obedience), to take Dao and De as their guiding principles, and to take non-action as their norm. Through non-action, they can use the world and it will still provide a surplus. If they were to take actions, they'd end up being used by the world and would never be able to stand up to that task.
Therefore, people in ancient times really treasured those who took no actions. If those in positions of power didn't act, and those below them also didn't act, then those who are below would have the same virtue as those above. If those below had the same virtue as those above, then there'd be no one to carry out orders. If those below took action, and those in positions of power also took action, those above would be on the same Path as those below. If those above were on the same Path as those below, then there'd be no one to give the orders. Those above must be without actions in order to use the world. Those below must take actions in order to be used by the world. This is the way things always have to be.
Therefore, those who ruled the world in ancient times had knowledge as though it had fallen from the heavens and earth, but they personally didn't make plans. They could pose arguments as though cutting through to the core of all living things, but didn't personally put forth their theories. They had abilities that could extend to everything within the four seas (the world), but didn't personally take actions. The heavens doesn't become more elaborate, yet all things evolve. The earth doesn't get any larger, yet all things are nourished. The emperors and kings take no actions, yet all in the world accomplish their work.
Therefore, it's been said:
"Nothing is more spiritual than the heavens; nothing is more abundant than the earth; nothing is greater than the emperors and kings."
Therefore, it's been said:
"The virtue of emperors and kings is on a par with the heavens and the earth."
This is the way to jump on the chariot of the heavens and the earth, harness all living things to it, and make use of the joint efforts of everyone.
The higher-ups form a strong foundation like the roots of a tree, while the underlings form the tentacles that reach out like the branches of a tree. The master establishes the essentials, while the worker bees see to the details.
The utilization of the three armies (standard subdivisions of a feudal state) and the five weapons (spear, halberd, ax, shield and bow) is the branch of virtue.
Rewards, fines, promotions, dismissals and executing the five punishments (branding, cutting off the nose, cutting off the feet, castration and execution) are the branches dealing with getting people to fall into line.
Rituals, laws, regulations, imprisonment, demotions and promotions are the branches of government.

Determining the correct sounds of bells and drums, and the proper appearance of feathers and banners are the branches of festivals.
Crying, wailing, funeral attire, and swift attention to funeral services are the branches of mourning.
These five branches must be carried out from the essence of one's spirit, and they have to be enacted by those with skill for such things, then everyone would comply with them.
People in ancient times did study these branches, but they weren't the first to come up with the idea. The monarch leads, and the minister follows. The father leads, and the son follows. The elder brother leads, and the younger brother follows. Those who are older lead, and those who are younger follow. The man leads, and the woman follows. The husband leads, and the wife follows. Being high or low, first or last, is in accord with the heavens and the earth, so the sage takes that for his model. The heavens are high and the earth is low, which creates a position of

clarity for what's in between. Spring and summer come first and autumn and winter follow, which creates an order to the four seasons. All living things can then rise up and transform, sprouting in the areas which are most conducive to their growth, adapting to Nature's pruning, and flowing through their transformations and changes. If the heavens and the earth can complete their missions by accepting the natural order of high and low, first and last - then how much more so could the ways of people! In the ancestral temples, it's blood relatives who are honored. In the royal courts, it's the senior officials who are honored. In the local towns and villages, it's the elderly who are honored. In business affairs, it's the ones in control who are honored. That's the orderliness of Great Dao. If we speak about Dao and oppose its order, that's in opposition to Dao. If we speak about Dao and oppose its way, how could we grasp Dao?

Therefore, those in ancient times who clarified Great Dao first found clarity in the heavens, and Dao and De came next. After clarifying Dao and De, then benevolence and righteousness came next. After clarifying benevolence and righteousness, then distinctions came next. After clarifying distinctions, then forms and names came next. After clarifying forms and names, then appointments and positions came next. After clarifying appointments and positions, then close inspections came next. After clarifying close inspections, then right and wrong came next. After clarifying right and wrong, then rewards and punishments came next. After clarifying rewards and punishments, then the foolish and knowledgeable were relegated to their proper positions.

The highly valued and the unesteemed went to their proper places in the pecking order. The humane, the officious and the unworthy were assigned positions in keeping with their essence. They had to be sorted through to determine what their abilities were, and in that way received their proper titles. Hence, affairs were taken care of by those above and agriculture was taken care of by those below. All things were governed properly and their physical needs were taken care of. There was no longer a need for plots and schemes, so they were able to retreat to the heavens. This is called "Peace and Tranquility" - when government has reached perfection.
Therefore, there was created a document for recording descriptions and titles of people. Even though the ancient people had descriptions and names, they didn't consider them to be of the utmost importance. When the ancients spoke of Great Dao, it was only after going through five transformations that they'd raise the issue of descriptions and titles. It was only after nine transformations that they'd speak of rewards and punishments. If they were too quick to bring up descriptions and titles, they'd have no understanding of the basis of them. If they were too quick to speak of rewards and punishments, they'd have no understanding of where they began. If their words approached Dao backwards, then some would resist the theories about Dao. In order for people to be governed, you have to have an innate ability to govern people. Rushing to speak about descriptions, titles, rewards and punishments is considered to be a tool for government, but it's opposite to knowing about how Dao governs. In that way one might end up being used by the world, but wouldn't be able to use the world. Those are the means used by a faulty scholar and a crooked way for anyone to be thinking. The ancients had rituals, laws, regulations, imprisonment, demotions and promotions, but they were means for the underlings to serve those above, not a means for those above to cater to the underlings.

Long ago, Shun asked Yao:
"As emperor, how do you use your mind?"
Yao replied:
"I don't ignore those who have no one else to tell their troubles to, nor do I abandon the poor. I grieve with those who have suffered the death of someone close to them, rejoice at the birth of children and sympathize with overworked or abused women. Those are the ways in which I use my mind."
Shun said:
"It's wonderful to show so much kindness, but that kind of thing won't make you Great."
Yao asked:
"If that's true, then what else is there to be done?"
Shun said:

"The virtue of the heavens promotes contentment. The sun and moon shine, and the four seasons proceed. It seems like day and night have a common thread pulling them along. The clouds move through the sky and rain offers their gifts."
Yao said:
"I've been stuck! I'm so stuck in keeping my hands in the problems of others. More problems! You've joined with the heavens while I've joined with people."
It was the heavens and the earth that the ancients believed to be Great, and what Huang Di, Yao and Shun all shared in admiring. Therefore, how were the kings of antiquity who ruled the world supposed to act? Like the heavens and the earth, and that's all.

Kong Zi (Confucius) went west to deposit some books into the library in the state of Zhou.
Zi Lu (one of his disciples) gave him this suggestion:
"It's fairly well known that the one in charge of receiving books at the library in Zhou was the librarian known as Lao Dan (Laozi), but he's since retired and returned to his home. If you, Master, want to deposit books there, then you might consider asking him about how to do it."
Kong Zi said:
"Good idea."
He went to see Lao Dan, but Lao Dan wasn't able to help. So, he unrolled the bamboo slips containing the Twelve Classics and started reading out loud. Lao Dan interrupted his speech and said:
"You're using a lot of words. I'd rather simply hear a summary."
Kong Zi said:
"To summarize, it's about benevolence and righteousness."
Lao Dan said:
"May I ask, are benevolence and righteousness part of human nature?"
Kong Zi replied:
"They are. If a noble person isn't benevolent, then he's inadequate. If he's not righteous, then he's stagnant. Benevolence and righteousness are definitely part of human nature. What else could they be?"
Lao Dan said:
"May I ask, what do you mean by benevolence and righteousness?"
Kong Zi replied:
"To experience joy from the center of one's heart for all things, and to feel universal love for everything impartially - these are the characteristics of benevolence and righteousness."
Lao Dan said:
"Oh dear. Be careful with those last words! As to universal love, that can also become dogmatic! With impartiality, there also arises partiality. Master, it sounds like you're trying to prevent everyone in the world from straying far away from what nourishes them? Then you might consider this:
"The heavens and the earth from the beginning were constant;
"The sun and the moon from the beginning were bright;
"The stars and planets from the beginning were aligned in a set pattern;
"The birds and the beasts from the beginning were grouped by species;
"The trees and plants from the beginning grew erect.
"Master, if you also release yourself to your own virtue as you travel along, and abide by Dao as you hurry through life, then you've already reached perfection. Why are you so dauntless in your mission to search out benevolence and righteousness as though you were beating a drum and searching for a lost child? Oh dear, Master, your own human nature is in complete disarray."

Shi Cheng Qi (Elegantly Attired Scholar) went to see Laozi and asked:
"I've heard, Master, that you're a sage. I wasn't deterred by the long journey since I sincerely wanted to see you for myself. I traveled for one hundred days without daring to stop for a breather even though I developed serious

blisters on my feet. Now that I've had a chance to observe you, you're not a sage at all. Your leftover vegetables are strewn around by mice in the dirt, and it's inhumane not to provide that extra food to those in need. All sorts of raw vegetables and prepared meals are brought and placed in front of you endlessly, but you just sit here and let it accumulate without an end in sight."
Laozi remained aloof and didn't respond.
Shi Cheng Qi returned the next day to see him and said:
"Yesterday I found a lot about you to criticize, but today my heart goes out to you. Why is that?"
Laozi said:
"A person is considered to be a sage if he's clever, knowledgeable and spiritual. For myself, I've cast off those ideas. If you'd come to me yesterday and shouted that I was an ox, then I'd accept being called an ox. If you shouted that I was a horse, then I'd accept being called a horse. If there's some truth to the words a person uses and you don't accept it, then you'll have to endure even more problems. I merely submitted because I usually submit. I didn't submit just for the sake of being submissive."

Shi Cheng Qi stumbled backward so as to remove himself from the spotlight, then purposely stepped forward and asked:
"What can I do to break down my harshness?"
Laozi replied:
"Your appearance is haughty, your eyes are piercing, your forehead is wrinkled, your mouth is grimacing and your demeanor is self-righteous. You look like a wild horse who's been tethered but is raging at his bit. You're like an arrow anxious to be released from a crossbow. You inspect everything like you're ready to cast judgments. You're so involved in your own knowledge and cleverness that you can't find any peace. You've become distrustful of everything. If you came upon a person out in the wilderness, you'd find a way to label him as a conniving thief."

Shi Cheng Qi (Elegantly Attired Scholar) went to see Laozi and asked:
"I've heard, Master, that you're a sage. I wasn't deterred by the long journey since I sincerely wanted to see you for myself. I traveled for one hundred days without daring to stop for a breather even though I developed serious
blisters on my feet. Now that I've had a chance to observe you, you're not a sage at all. Your leftover vegetables are strewn around by mice in the dirt, and it's inhumane not to provide that extra food to those in need. All sorts of raw vegetables and prepared meals are brought and placed in front of you endlessly, but you just sit here and let it accumulate without an end in sight."
Laozi remained aloof and didn't respond.
Shi Cheng Qi returned the next day to see him and said:
"Yesterday I found a lot about you to criticize, but today my heart goes out to you. Why is that?"
Laozi said:
"A person is considered to be a sage if he's clever, knowledgeable and spiritual. For myself, I've cast off those ideas. If you'd come to me yesterday and shouted that I was an ox, then I'd accept being called an ox. If you shouted that I was a horse, then I'd accept being called a horse. If there's some truth to the words a person uses and you don't accept it, then you'll have to endure even more problems. I merely submitted because I usually submit. I didn't submit just for the sake of being submissive."

Shi Cheng Qi stumbled backward so as to remove himself from the spotlight, then purposely stepped forward and asked:
"What can I do to break down my harshness?"
Laozi replied:
"Your appearance is haughty, your eyes are piercing, your forehead is wrinkled, your mouth is grimacing and your demeanor is self-righteous. You look like a wild horse who's been tethered but is raging at his bit. You're like an arrow anxious to be released from a crossbow. You inspect everything like you're ready to cast judgments. You're so

involved in your own knowledge and cleverness that you can't find any peace. You've become distrustful of everything. If you came upon a person out in the wilderness, you'd find a way to label him as a conniving thief."

People nowadays place a lot of value on what's written in books about Dao, since the written word is an expression of our language, and language is valued. What's valued about language is the ideas it expresses, and those ideas offer something that can be followed. Even though the ideas themselves may be followed, they can't really be passed on through words, yet people nowadays continue to value the words written in books. Although this generation values them, I'm the kind of person who doesn't find enough in them to value because what others find of value in them isn't what's really of value. By looking around one can see shapes and colors, and by listening one can hear names and sounds. How sad it is that people today think that through shapes, colors, names and sounds they can reach into the essence of each other. Shapes, colors, names and sounds are merely outward manifestations, but they're insufficient to enable anyone to reach into the essence of another. So,
One who understands won't be willing to use words;
One who uses words won't be willing to understand.
But how could anyone nowadays really understand that?

Duke Huan was reading a book at the upper end of his courtyard while Bian, a wheelmaker, was carving a wheel down below. Setting aside his hammer and chisel, he went up to Duke Huan and asked:
"May I ask, Your Highness, what words you're reading?"
The Duke replied:
"The words of a sage."
"Is the sage alive?"
The Duke replied:
"No, he died a while ago."
"If that's so, then what your majesty is reading is the rotten leftovers of those from ancient times."
Duke Huan said:
"I, a ruler, am reading this book, and yet you, a mere wheelmaker, feels comfortable giving your opinion about what I'm reading? If you can provide a good explanation for this then I'll accept it. Otherwise, you'll be put to death."
Bian the wheelmaker replied:
"I'm just a servant, so I look at things from the perspective of my own work. When I'm carving a wheel, if I work too slowly then I'd be enjoying myself but the wheel wouldn't be sturdy. If I work too quickly then I'm just damaging myself and the spoke won't fit. I had to learn not to move too slowly nor too quickly, with a hands-on approach and respond to what's in my heart. You can't really express it with words, as a particular skill seems to exist when you simply open up to it. I haven't been able to make my son aware of how to do this work, and my son also hasn't been able to receive the ability from me. I've spent seventy years and grown old while I've been carving wheels. The people in ancient times also have something they can't pass on after they've died. That being so, then what your majesty is reading is the rotten leftovers of those from ancient times."

१३|स्वर्ग का मार्ग

प्रकृति का रास्ता यही है निरंतर चलते रहने बिना की चीज़ के लिए ठहरे या बिना किसी वस्तु को प्राप्त करने की कोशिश किये| इस प्रकार सभी प्राणियों का पोषण होता है| एक शासक का रास्ता भी लगातार चलते रहने ही है बिना किसी वस्तु के लिए ठहरे| इस प्रकार सारा संसार कार्यान्वित रहता है| एक साधू का भी रास्ता लगातार चलते रहने ही है बिना किसी वस्तु के लिए ठहरे इस प्रकार इस पृथ्वी की सभी वस्तुए उसके लिए समर्पण कर देती है

वो जिसे प्रकृति द्वारा शुद्धता प्राप्त होती है, और संतो का सानिध्य प्राप्त होता है, वह चारो ऋतुओ का स्वामी होकर आठो दिशाओ में निर्विघ्न यात्रा कर सकता है| राजा और सम्राटो जैसे सामर्थ्य के साथ वह स्वयं ही उन जैसा बना हुआ होता है| अँधेरे में भी वह बिना अस्थिर हुए शांत रह सकता है| एक संत स्थिर और शांत इसीलिए नहीं होता की शांति और स्थिरता को अच्छा समझा जाता है, यह उसके लिए कारण नहीं होता है| यह इसीलिए होता है की कोई भी जीवित वस्तु उसकी शांति और स्थिरता को बाधा पहुचने के लिए प्रयाप्त नहीं होती है| जब जल शांत और स्थिर होता है तब कोई भी उसमे अपनी आँखों और मुह के प्रतिबिम्ब को आसानी से देख सकता है, और यह इतना स्पष्ट होता है की कोई भी चित्रकार इसी देखकर अपने चित्र को पूरा कर सकता है| जब जल शांत और स्पष्ट होता है तब यह हमारी आत्मा का परावरतक होता है| ऐसे ही होता है एक साधू का शांत ह्रदय! वह परावरतक होता है स्वर्ग और पृथ्वी का और प्रतिबिम्ब होता है सभी जीवित वस्तुओ का|

शुन्यता, स्थिरता, शांति, अपृथकता, असीमितता ये सभ स्वर्ग और धरती को एक सूत्र में रखते है तथा ताओ और ते को सम्पूर्ण रखते है| इस प्रकार ही शासक, राजा और साधू विश्राम कर सकते है, विश्राम करते हुए वे शुन्य हो जाते है| शुन्य होकर वे स्थिर हो जाते है| और स्थिर होकर वे कार्यशील होते है, ऐसे कार्यशील की तब वे कुछ भी प्राप्त कर सकते है| और स्थिर हुए वे किसी वस्तु के साथ हस्तक्षेप भी नहीं करते है| और उनमे जो विषयों और मुद्दों पर कार्य करते है तब ऐसे वही उनका सही समाधान कर पाते है| क्योंकि वे हस्तक्षेप नहीं करते इसी कारण वे स्वीकार्य होते है| और जो स्वीकार्य होते है उन्हें कोई दुविधा या चिंता नहीं रहती, इस प्रकार वे दीर्घायु होते है|
शुन्यता, स्थिरता, शांति, अपृथकता, असीमितता ये सभ सभी जीवित वस्तुओ का मूल है| इन सभ की शुद्धता का प्रमाण तब से मिलता है जा याओ और शुन ने दक्षिण की तरफ सिंहासन का मुख करके अपने राज्यों का शासन किया था| इन सभ की शुद्धता का प्रमाण तब से मिलता है जब शुन ने उत्तर की तरफ मुख करके अपने राज्यों का मंत्री पद संभाला था|

उच्च पदों पर विराजमान होना यह राजाओ और शासको का सामर्थ्य है| निम्न पदों पर पदस्थ होना यह रास्ता है मंत्रियो का और साधुओ का| इस सिद्धांत को ध्यान में रखकर, जो निवर्त होकर नदियों तथा समुद्रो में घूमना चुनता है वह एक शिष्य जैसा होता है जो जंगलो और पर्वतो में होते है| इस सिद्धांत को मानकर, जो चुनता है आगे बढ़ना कर्म करते हुए और उनको प्रोत्साहन देते हुए जो उसकी पीढी में है तब वह इस संसार को एक करते हुए महान प्रतिष्ठा और पद पाता है| एक साधू की स्थिरता या एक राजा के कार्य - बिना हस्तक्षेप किये, तभी इन दोनों का सम्मान किया जाता है| अपनी प्राकृतिक और शुद्ध स्वरूप में होना - इस संसार में कोई नहीं है जो इस प्रकार के वैभव को अस्वीकार कर सके|

वह जिसमे पृथ्वी और स्वर्ग के सामर्थय को समझने की एक हीरे जैसे स्पष्टता और पारदर्शकता होती है उसे उस महान मूल और प्राचीनो के साथ संबंध वाला कहा जाता है, इस प्रकार वह पृथ्वी और स्वर्ग के सानिध्य में होता है| यदि कोई तब इस संसार को व्यवस्थित करने के लिए इनका उपयोग करता है तब वह लोगो में तालमेल स्थापित करता है| जो लोगो के साथ स्नेह में होता है उसे मनुष्यों में आनंदित कहा जाता है और जो स्वर्ग के साथ स्नेह में होता है उसके पास नैसर्गिक आनंद होना कहा जाता है|

ज्हूंग्ज़ी ने कहा:
"मेरे गुरु! मेरे गुरु! वह घृणा को नहीं मानता है जो सभी वस्तुओ में होती है, इसीलिए नहीं की वो इसका चुनाव करता है| वह सभी अशुद्धियो को शुद्ध कर देता है इसीलिए नहीं की वो दयालू है| वह समय से भी ज्यादा प्राचीन है इसीलिए नहीं की वह दीर्घायु है| वह सभी वस्तुओ को व्यवस्थित करते हुए ऊपर से उनका का आवरण किये हुए होता है और निचे उनको सहारा देता है इसलिए नहीं के वह कौशलपूर्ण है| और इसी कारण तो इसे नैसर्गिक आनंद कहा जाता है|

इसीलिए यह कहा गया है:

"जो नैसर्गिक आनंद को जानता है - वह अपने जीवन काल में प्रकृति के साथ बहता है और मृत्यु के बाद सभी वस्तुओ में परावर्तित हो जाता है| स्थिरता में वह उसी सामर्थ्य को रखता है जो यिन में होता है| और अस्थिरता में उसमे वही गति होती है जो यंग में होती है|"

इस प्रकार जो नैसर्गिक आनंद को जानता है वह प्रकृति द्वारा हस्त्क्षेपित नहीं होता है, मनुष्यों द्वारा उसे दण्डित नहीं किया जाता है, वस्तुओ द्वारा कष्ट नहीं दिया जाता है और राक्षसों द्वारा उसे सताया नहीं जाता है|

इस प्रकार यह कहा गया है:
"जो स्वर्ग की तरह गतिशील होते हुए और पृथ्वी की तरह स्थिर होते हुए अपने मन को एकाग्रित व् शांत रखता है, तब इस प्रकार वह इस सम्पूर्ण संसार का राजा होता है| और वह जो राक्षसों से भयभीत नहीं होता है और नहीं कुम्लाहता है अपनी आत्मा से तथा अपने मन को शांत व एकाग्र रखता है उसे सभी वस्तुए समर्पण करती है|"

"दुसरे शब्दों में स्थिरता और शून्यता उसे उस चीज़ को पाने में सहायता करती है जो पृथ्वी और स्वर्ग से उत्पन्न होती है और वह सभी वस्तुओ को एक सूत्र में बांधता है| इसीलिए इसे नैसर्गिक आनंद कहा गया है| एक साधू का ह्रदय इसी प्रकार से इस सम्पूर्ण संसार का पोषण करता है|"

शासको और राजाओ का सामर्थ्य स्वर्ग और पृथ्वी को अपना पूर्वज मानने में है, ताओ और ते को अपना मार्गदर्शक मानने में है और अकर्मण्यता को अपनी प्रकृति मानने में है| अकर्मण्यता के द्वारा वे इस संसार का उपयोग करते है और उनके लिए हमेशा कुछ ना कूछ होता है| लेकिन यदि वे कोई कार्य करते है तो तब यह संसार उनका उपयोग करता है और वे समाप्त हो जाते है और वे कभी उस कार्य को नहीं कर पाते है|

इस प्रकार, पुराने समय के लोग उन्हें बहुमूल्य समझते थे जो अकर्मण्य होते थे| जब ऊँचे पदों पर आसीन लोग अकर्मण्य होते है तब निचे पदों पर आसीन लोग भी अकर्मण्य हो जाते है तब उन सभ का सामर्थ्य एक सामान होता है| और जब सभका सामर्थ्य एक समान होता है तो आदेशो की कोई ज़रुरत नहीं होती है| अगर जो निचे होते है वे कर्म करते है तो जो ऊपर आसीन होते है वे भी कर्म करते है, और वे उसी पथ पर होते है जिस पर वे छोटे पदों वाले होते है| और अगर सभी एक ही पद पर होते है तो आदेश देने की कोई ज़रुरत ही नहीं होती है| इस संसार का सही ढंग से संचालन करने के लिए जो ऊँचे पदों पर होते है उन्हें हमेशा अकर्मण्यता में ही विश्वास रखना चाहिए| और जो उनसे निचे होते है उन्हें कर्म करना चाहिए इस संसार द्वारा उनका पालन होने के लिए| यही वो रास्ता है जिसे वस्तुओ को हमेशा अपनाना चाहिए|

इसीलिए, जिन्होंने प्राचीन समय में शासन किया था उनके पास ज्ञान था जैसे की वो स्वर्ग से और धरती से मिला हो पर वे व्यक्तिगत तौर कोई योजना नहीं बनाते थे| वे वाद विवाद को सभी वस्तुओ के प्रति हानिकारक मानते थे और अपने कोई सिद्धांत नहीं बनाते थे| उनकी पास क्षमता थी जिसे चारो समुद्रो तक सभी वस्तुओ के लिए विस्तृत किया जा सकता था पर वे व्यक्तिगत तौर पर कोई कार्य नहीं करते थे| स्वर्ग और ज्यादा विस्तृत नहीं हुआ फिर भी सभी वस्तुओ की उत्पत्ति हुई, पृथ्वी का और विस्तार नहीं हुआ फिर भी सभी वस्तुओ को इससे पोषण मिला| शासको और राजोओ ने कोई प्रतिक्रिया नहीं की फिर भी इस संसार ने अपना कार्य किया|

इसीलिए यह कहा गया है:
"स्वर्ग से ज्यादा अध्यात्मिक कुछ नहीं है, पृथ्वी से ज्यादा परिपूर्ण कुछ नहीं है, और राजा से महान कोई नहीं है|"

इसीलिए यह कहा गया है:
"शासको और राजाओ का सामर्थ्य स्वर्ग और पृथ्वी के साथ होने में है|"

यही तरीका है स्वर्ग और धरती के रथ पर विराजमान होने का, सभी जीवित वस्तुओ को इसके साथ जोड़े रखने का और सभके सामूहिक प्रयत्नों को सफल बनाने का|

जो उच्च होते है वे एक वृक्ष की जड़ो की तरह सहारा देते है और बाकि सभ उस वृक्ष की उन टहनीयो जैसे होते है जो चारो तरफ फैले हुए होती है| एक बुद्धिमान मुख्य केंद्र को स्थापित करता है और बाकि सभ कर्ता शेष कार्यो को करते है| तीनो सेनाओ और पांचो शस्त्रों का उपयोग सामर्थ्य में ही निहित है|

पारितोषिक, जुर्माना, पदोन्नति करना, पदच्युत करना और पांचो दण्डो का संचालन करना ये सभ शाखाए है जो की लोगो को बांधे रखती है|
रीती-रिवाज, नियम, कानून, सजा, पदावनति, पदोन्नति ये सभ सरकार की शाखाए ही है|
ढोल-नगाडो और घंटियों से सही स्वर की उत्पत्ति और लोगो की रंग बिरंगे कपड़ो और पंखो लगान कर नाच गाना उपस्थिति यह सभ उत्सव की शाखाये है|
विलाप, चिल्लाना , अंत्येष्टि, अंत्येष्टि संस्कारो का पालन करना यह सभ शोक की शाखाए है| इन पांचो शाखाओ का पालन आत्मिक भाव से होना चाहिए और जो इनमे प्रशिक्षित है उन्हें इनका पालन हमेशा करना चाहिए तभी हर कोई उनका पालन करेगा|

प्राचीन समय में लोग इन शाखाओ का अध्ययन करते थे, पर वो प्रथम नहीं थे जो इन सिद्धांतो को मानते थे| एक राजा मार्ग दिखाता चलता है और उसके दरबारी उसका अनुगमन करते है| एक बड़ा भाई मार्ग दिखता हुआ चलता है और छोटा भाई उसका अनुगमन करता है| जो बुजुर्ग होते है वो मार्ग दिखाते है और जो युवा होते है वे अनुगमन करते है| पुरुष आगे चलता है और स्त्री उसका अनुगमन करती है| पति आगे चलता है और पत्नी उसका अनुगमन करती है| ऊचा या निचे होकर, प्रथम या आखिरी होकर स्वर्ग और धरती के साथ सांजस्य से एक साध इस प्रकार इसको अपना प्रतिरूप मानता है| स्वर्ग बहुत ऊँचा है और धरती बहुत निचे है इस प्रकार यह बहुत ही प्रांजलता की स्थिति होती है जो मध्य में होते है| वसंत और ग्रीष्म प्रथम आते है और शरद और पतझड़ उनका अनुगमन करते है इस प्रकार चारो ऋतुओ का क्रम व्यवस्थित होता है| सभी जीवित वस्तुओ का तब उत्थान होता है और उनका रूपांतरण होता है, फिर उन परिस्थितियों में उनका सृजन होता है जो उनके लिए बहुत ही सहायक होती है, फिर वे विभिन्न बदलावों और परिवर्तनों से प्रवाह करती हुई प्रकृति के अनुसार अनुकुलशील हो जाती है| अगर प्रकृति के कर्म को स्वीकार करके पृथ्वी और स्वर्ग भी अपने विशेष कार्यो को करते है तो क्या मनुष्य का रास्ता भी ऐसा नहीं होना चाहिए! पुराने समय में जिनके साथ खून का रिश्ता होता था उन्हें आदरणीय माना जाता था, राजदरबारो में जो उच्च अधिकारी होते है उन्हें आदरणीय माना जाता है| छोटे गांवो में बुजुर्गो को आदरणीय माना जाता है और किसी भी कार्य में प्रबंधको को आदरणीय माना जाता है| यही क्रम है महान ताओ का| अगर हम ताओ के बारे में बाते करे लेकिन उसकी व्यवस्था का प्रतिरोध करे तो यह ताओ का भी प्रतिरोध है |अगर हम ताओ के बारे में बाते करे और और उसके मार्ग का प्रतिरोध करे तो हम कैसे ताओ के सानिध्य को पा सकते है?

पुराने समय में जिन्होंने ताओ की शुद्धता को ग्रहण किया था उन्होंने पहले स्वर्ग की शुद्धता को ग्रहण किया था तब उन्होंने ताओ और ते को समझा था| ताओ और ते की शुद्धता को ग्रहण करने के बाद तब परोपकार और धर्म का स्थान आया था| और परोपकार और धर्म के आने के बाद विभिन्नताओ को स्थान मिला| विभिन्नताओ के आने से नाम और रूप को स्थान मिला| नाम और रूप को स्थान मिलने से पदों और अधिकारों को स्थान मिला और पदों और अधिकारों को स्थान मिलने से न्याय को स्थान मिला और न्याय को स्थान मिलने से तब सही और गलत का उत्थान हुआ| सही और गलत के आने के बाद दंड और पुरुस्कार का प्रावधान हुआ| और दंड और पुरुस्कार के प्रावधान होने से मुर्ख और बुद्धिमान सभी अपने अपने सही स्थानों पर विराजमान हो गए|

तब अति महत्वपूर्ण और अल्प महतवपूर्ण सभी अपने स्थानों पर व्यवस्थित हो जाते है| जो मानवीय होते है, जो आधिकारिक होते है और जो अयोग्य होते है उन्हें उनके सारांश के अनुसार उनके स्थानों पर नियुक्त कर दिया जाता है| उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार श्रेणीबद्ध किया जाता है और इसी के अनुसार उन्हें पदवी दी जाती है| इस प्रकार जो ऊँचे पदों पर होते है वे प्रसंगों व् विषयों को सँभालते है और जो निम्न स्थान पर होते है उनके द्वारा खेती को संभाला जाता है| सभी वस्तुओ का नियमन अच्छे प्रकार से किया जाता है और जो उनकी जरूरते होती है उनका भी ध्यान रखा जाता है| इस प्रकार योजनाओ और प्रबंधन की कोई जरूरत ही नहीं होती है और इस प्रकार में वे स्वर्ग की तरह कार्यान्वित होते है| इसे कहते है "शांति और स्थिरता" - जब शासन की प्रवीणता पूर्ण होती है|
इस प्रकार एक आलेख बनाया गया लोगो के नामो और पदवियो को दर्ज करने के लिए| यदयपि प्राचीन लोगो के भी नाम और उपाधिय होती थी पर वे उन्हें महत्वपूर्ण नहीं समझते थे| जब वे प्राचीन ताओ के बारे में कहते थे यह तभी होता था जब वे पांचो

परिवर्तनों से परावर्तित होकर नाम और उपाधि को पूरी तरह से नकार चुके होते थे| यह नौ परिवर्तनों के बाद ही होता था की वे दंड और पुरुष्कार के बारे में बाते करे| अगर वे नाम और उपाधियो के संदर्भ में अपने विचारो में बहुत शीघ्रता करते थे तब इसका मतलब उन्हें इनके मूल के बारे में कोई ज्ञान था ही नहीं| अगर वे बहुत शीघ्र थे दंड और पुरुस्कार के बारे में अपने विचारो में तो इसका मतलब वे जानते ही नहीं थे की इनकी शुरुआत कहा से हुई है| अगर शब्द ताओ का आच्छादन करे तो किसी को तो इन सिद्धांतो को जरूर रोकना चाहिए| लोगो पर शासन करने के लिए यह जरूरी है तुम में वह सहज योग्यता जरूर हो| नाम और उपाधियो को जानने के लिए और दंड और पुरुस्कार का निर्णय करने के लिए उतावले होना, यह एक सरकार का कार्य समझा जाता है, पर यह विपरीत ही होता है जैसे ताओ के द्वरा नियमन होता है| इस प्रकार यह संसार उनका उपयोग करेगा और वे समाप्त हो जायेगा लेकिन वास्तव में, वे इस संसार का उपयोग नहीं कर पायेगा| ये वे तरीके होती है जो अकुशल शिष्यों द्वारा अपनाये जाते है और ये किसी के उलझे हुए विचारो से ही उत्पन्न होते है| जो प्राचीन थे उनके पास नियम थे, कानून थे, रीती रिवाज थे, दंड था और पारितोषिक था पर ये सभ तरीके जो अधीनस्थ थे उनके द्वारा जो उनसे उच्च थे उनकी सेवा करने के थे और ये सभ जो उच्च पद पर आसीन थे उनके लिए केवल आवश्यकताए पूरी करने के लिए नहीं थे|

बहुत समय पहले राजा शुन ने याओ से पूछा;
"एक शासक के तौर पर आप अपनी बुद्धि का उपयोग किस प्रकार करते है?"

याओ ने जवाब दिया:
"मै जो दुखी होते है उनकी उपेक्षा नहीं करता और न ही मै जो निर्धन होते है उनका त्याग करता हूँ | मै उनकी पीड़ा को साँझा करता हूँ जिन्होंने किसी अपने को खोया है, किसी शिशु के जन्म पर आनंदित होता हूँ और शोषित महिलाओ और कामगारों के साथ सहानभूति रखता हूँ| यही वो तरीका है जिससे मै अपनी बुद्धि का उपयोग करता हूँ|"

शुन ने कहा:
"यह अद्भुत है की आप इतनी दयालुता दिखाते है लेकिन इस प्रकार के कार्य आपको महान नहीं बनाते?"

याओ ने पूछा:
"अगर यह वास्तविक है तो तब मुझे क्या करना चाहिए?"

शुन ने कहा:
"स्वर्ग का सामर्थ्य तृष्टि को जन्म देता है| सूर्य और चन्द्र प्रज्वलित होते है और चारो ऋतुए प्रवृत होती है| लगता है की दिन और रात एक ही सूत्र से बंधे जिसके कारण वे क्रमन्वय है| बादल आकाश में विचरण करते है और वर्षा इस धरा को शुशोभित करती है|"

याओ ने कहा:
"मै उलझ गया था! मै बहुत ही उलझ गया था लोगो के परेशानियों में हस्तक्षेप करते करते| और बहुत ज्यादा दिक्कत में था! आप स्वर्ग के साथ सांजस्य में थे जबकि मैं लोगो के सांजस्य में था|”

यह स्वर्ग और धरती ही है जिसे प्राचीन लोग महान मानते थे और जिसकी हुंग-दी, याओ और शुन सभ प्रशंसा करते थे| इस प्रकार उन प्राचीन कालीन राजाओ ने कैसे कार्य किया इसे कैसे समझा जाए? - इसे की धरती और स्वर्ग करते है बस इसी प्रकार|

कोंग-ज़ि पश्चिम में ज्होऊ राज्य के पुस्तकालय में कुछ पुस्तके जमा करवाने के लिए गया|
ज़ि-लू जो की उसका एक शिष्य था उसने उन्हें एक सुझाव दिया:
"यह सभ अच्छी प्रकार से जानते है की वहा जो पुस्तकों को जमा करने वाला पुस्तकालयाध्यक्ष है उसे लाओ-ज़ि के नाम से जाना जाता है, पर अब वे अपने पद से निवृत हो चुके है और अपने घर चले गए है | अगर आचार्य आप इन पुस्तकों को जमा करवाना चाहते है तो यह अच्छा रहेगा के एक बार आप उनसे जाकर सलाह ले|”

कोंग-ज़ि ने कहा:
"अच्छा विचार है”|

तब वे लाओ-दान से मिलने के लिए गए पर लाओ दान उनकी सहायता करने में सक्षम नहीं हुआ| तो उन्होंने बारह साहित्यों के बांस के अभिलेखों को खोला और उन्हें जोर से पढना शुरू कर दिया| लाओ-दान ने उन्हें बीच में टोका और कहा:
"आप बहुत ज्यादा शब्दों का इस्तेमाल कर रहे है| मै तो केवल सारांश सुनना चाहूँगा|"

कोंग-ज़ि ने कहा:
"इसका सरांश, यह तो परोपकार और धर्म के बारे में है|"

लाओ-दान ने कहा:
"क्या मै पुछ सकता हूँ की, क्या परोपकार और धर्म मनुष्य के स्वभाव का हिस्सा है?"

कोंग-ज़ि ने कहा:
"वे है| अगर एक उत्तम पुरुष परोपकारी नहीं है तो यह अपर्याप्त है| अगर वह धार्मिक नहीं है तो वह गतिहीन है| परोपकार और धर्म निश्चित ही मनुष्य के स्वभाव का हिस्सा है| और इससे अलग वे क्या हो सकते है?"

लाओ-दान ने कहा:
“क्या मै पूछ सकता हूँ की आप परोपकार और धर्म से क्या समझते है?"

कोंग-ज़ि ने जवाब दिया:
"अपने ह्रदय से सभी सभी वस्तुओ के लिए आनंद अनुभव करना और सभी वस्तुओ के लिए बिना भेद किये उस सर्वव्यापी प्रेम का अनुभव होना ये परोपकार और धर्म की विशिष्टता है”|

लाओ-दान ने कहा:
“प्रिय मित्र! अपने उन आखिरी शब्दों के साथ सतर्क रहो! जो सर्व्यापक प्रेम के संदर्भ में है, वह सिद्धांतवादी भी हो सकता है! निष्पक्षता के साथ पक्षपात का भी उदय होता है| हे शिक्षक, लगता है तुम सभ लोगो को उससे अलग करने की कौशिश कर रहे जो उनका पोषण करता है? तब तुम यह मान सकते हो की :
"स्वर्ग और पृथ्वी समय के आरंभ से ही निरंतर है;
"सूर्य और चन्द्र शुरुआत से ही प्रज्वलित है;
"गृह और तारे शुरुआत से ही एक एक श्रृंखला में सुशोभित है;
"पशु और पक्षियों को शुरुआत से उनके जातिगत भेदों द्वारा वर्गीकृत कर दिया गया है;
"पेड़ और पोधे शुरुआत से ही सीधे उगते है|
“हे शिक्षक, अगर तुम मार्ग पर चलते हुए स्वयं को अपने सामर्थ्य को समर्पित कर देते हो, और अपना जीवन प्रवाह करते हुए ताओ का अनुगमन करते हो तब तुम पहले से ही सम्पूर्ण व् सिद्ध हो चुके होते हो| फिर तुम अपने इस विशेष कार्य में इतने बेबाक कैसे हो जैसे की तुम ढोल बजाकर एक गुम हुए बच्चे की तलाश कर रहे हो? हे प्रिय शिक्षक तुम्हारा अपनी मानवीय प्रकृति ही क्रमभंग व् अव्यवस्थित है|"

सही-चेंग-की लाओजी से मिलने गया और पूछा:
“आचार्य मैंने सुना है की आप एक साधू है| मैं इतनी लम्बी यात्रा करके भी विचलित नहीं हुआ क्योंकि मैं केवल एक बार आपको स्वयं की आँखों से देखना चाहता था| मैं बिना कही पर थोड़े भी विश्राम के लिए रुके लगातार सौ दिनों से चला और मेरे पैरो पर बहुत सारे छाले हो गए| अब जब मुझे मौका मिला है आपको ध्यान से देखने का तो आप मुझे एक साधू प्रतीत नहीं हो रहे हो| आपके द्वारा बची हुई सब्जियों के टुकड़े गंदे पड़े हुए है और चूहों का भोजन बन रहे है क्या यह अमानवीय नहीं है बचे हुए भोजन को उनको नहीं देना जिनको इसकी जरूरत हो| सभी प्रकार के व्यंजन और स्वादों को आपके लिए लाया जाता है पर फिर भी आप यहाँ बैठे है और बिना ध्यान दिए उन्हें ऐसे ही छोड़ रहे है|"

लाओजी अलग बैठे रहे और कोई प्रतिउत्तर नहीं दिया|

सही-गेंग-की उनके पास अगले दिन वापस लोटा और कहा:
"कल मेरे पास आपकी आलोचना के लिए बहुत कुछ था लेकिन आज मेरा ह्रदय आपके प्रति सहज है| यह सभ कैसे है?"

लाओजी ने कहा:
“एक व्यक्ति को साधू माना जाता है अगर वह चतुर हो, ज्ञानी हो और अध्यात्मिक हो| लेकिन स्वयं के सदर्भ में मैंने इन मतों का त्याग कर दिया है| अगर तुम कल मेरे पास आकार कहते की मै एक बैल हूँ तो मै इसे भी स्वीकार कर लेता| अगर तुम कहते की मै एक घोडा हूँ तो मै स्वयं को घोडा कहना भी स्वीकार कर लेता| अगर किसी व्यक्ति के शब्दों में थोड़ी सी भी सच्चाई है तो तुम इसे स्वीकार न करके अपने लिए और विपत्तिया उत्पन्न कर रहे होते हो| मैंने इस प्रकार स्वीकार किया क्योंकि आमतौर पर मै ऐसे ही स्वीकार करता हूँ| मैंने स्वीकार नहीं किया क्योंकि इससे मै केवल स्वीकर्य ही रह जाउगा, और यह तो अस्वीकार्यता की उपेक्षा होगी|"

सही-चेंग-की पीछे की और लडखडा गया और अपनी नजरो को झुका लिया फिर वह उदेश्यपूर्ण आगे की और बढ़ा और पूछा:
"अपनी इस निष्ठुरता से मुक्त होने के लिया मै क्या करू?"
लाओजी ने उत्तर दिया:
"तुम्हारी यहाँ उपस्थिति अभिमानी है, तुम्हारी आंखे तीष्ण है और तुम्हारा माथा सिकुड़ा हुआ है, तुम्हारा मुह चिड़ा हुआ है और तुम्हारा आचरण अंहकारी है| तुम एक ऐसे जंगली घोड़े की तरह हो जिसे बांध दिया गया है लेकिन फिर भी वह अपनी लगाम तोड़कर अपना प्रकोप दिखने की कौशिश कर रहा हो| तुम एक तीर की तरह हो जो एक कमान से अतिशीघ्रता से निकलने को उत्सुक है| तुम हर वस्तु का निरिक्षण करते हो जैसे की तुम अभी उसके बारे में निर्णय सुनाने ववाले हो| तुम अपने बुद्धिमानी और चतुरता में इतने आसक्त हो गए हो की तुम शांति नहीं पा सकते हो| तुम्हारा किसी पर विश्वास ही नहीं है| यदि आप इस संसार में एक ऐसे व्यक्ति से मिलते हो तो तुम उसे केवल एक दिखावटी चोर ही कहते हो|"

आजकल लोग इस बात को बहुत ज्यादा महत्व दे रहे है की ताओ के बारे में पुस्तकों में क्या लिखा हुआ है, चूँकि लिखे हुए शब्द तो केवल हमारी भाषा की अभिव्यक्ति होते है, और भाषा को ही महत्व दिया जाता है| भाषा के संदर्भ में किसे महत्व दिया जाता है?- वे तो हमारे मत होते है, सिद्धांत होते है जो हम व्यक्त करते है भाषा द्वारा और जिनका सुझाव देते है अनुकरण करने के लिए| हालाँकि यह हो सकता है की उन सिद्धांतो और मतों का अनुकरण हो लेकिन जरूरी नहीं है की उन्हें शब्दों में व्यक्त किया गया हो, और अब यह होते हुए भी लोग पुस्तकों में लिखी बातो को महत्व देने में लगे हुए है| यद्यपि यह पीढ़ी इसे महत्त्व दे रही है, पर मैं उस प्रकार का व्यक्ति हूँ जो इसमें किसी महत्व वाली बात को नहीं देखता है क्योंकि जिसे और लोग मूल्यवान समझते है वह वास्तव में मूल्यवान नहीं होता है| अपने चारो और देखकर हम पाते है विभिन्न प्रकार की आकृतियों और रंगों को और सुनते है विभिन्न प्रकार के नाम और ध्वनीया| यह कितना निराशाजनक है की आजकल लोग सोचते है की इन आकृतियों, रंगों, नामो और ध्वनीयो के माध्यम से वे एक दुसरे के मर्म को समझते है और निष्कर्ष निकालते है|
आकृति, रंग, नाम,ध्वनी ये तो केवल बाह्य अभिव्यक्ति होते है और ये किसी वस्तु के मर्म को समझने और निष्कर्ष निकलने के लिए अपर्याप्त होते है इस प्रकार:
जो समझता है उसे शब्दों के उपयोग की जरूरत नहीं होती है;
और जिसे शब्दों के उपयोग की जरूरत होती है वह समझना नहीं चाहता है;
लेकिन आजकल वास्तव में कौन इसे समझ सकता है?

सम्राट हुआन अपने महल के ऊपरी हिस्से में बैठ कर एक पुस्तक पढ़ रहा था और उसी वक़्त ‘बियन’ एक पहिया बनाने वाला निचे एक पहिये को आकृति में ढाल रहा था| तब वह अपने हथोड़े और छिनी को बगल में रखकर
सम्राट हुआन के पास गया और पूछा:
"हे महाराज क्या मै यह जान सकता हूँ की आप क्या पढ़ रहे है?"

सम्राट ने जवाब दिया:
"एक महात्मा के शब्दों को|"

"क्या वह साधू महात्मा जीवित है”

सम्राट ने कहा:
"नहीं, कुछ ही समय पहले उनकी मृत्यु हो गयी|"

"अगर ऐसा है तो, महाराज आप केवल प्राचीन काल के बीभत्स अवशेषों को पढ़ रहे है|"

सम्राट ने कहा:"मै, एक सम्राट, इस पुस्तक को पढ़ रहा हूँ, और तब तुम, केवल एक पहिया बनाने वाले, स्वयं को सहज महसूस कर रहे हो मुझको अपने सुझाव देने में की मै क्या पढ़ रहा हूँ? अगर तुम इसका सही स्पष्टीकरण दे पाए तो मै उसे स्वीकार करुगा वरना तुम्हे मृत्युदंड दिया जायेगा|"

पहिये बनाने वाले बियन ने कहा:
"मैं तो केवल एक सेवक हूँ, इस प्रकार होकर मैं सभी वस्तुओ को अपने नजरिये से देखता हूँ| यदि एक पहिये को ढालते समय मै इतने धीरे धीरे से कार्य करू हूँ जैसे की मैं स्वयं को आनंदित कर रहा हूँ पर उस समय वह पहिया सही रूप में नहीं आ पाता है| अगर मैं बहुत तीव्रता से कार्य करू तो मै स्वयं को नुकसान पंहुचा रहा होता हूँ और इस प्रकार वह पहिया भी रथ में सही उपयुक्त नहीं होगा| मुझे न ही अति धीमे से और न ही अति तीव्रता से कार्य करना पड़ता है जितना चाहिए केवल उतना और जो मेरे ह्रदय में होता ही मै उसके साथ सामंजस्य में रहता हूँ| आप इसकी व्याख्या शब्दों द्वारा नहीं कर सकते हो, क्योंकि एक क्रियात्मक कौशल तभी विद्यमान होता है जब उसका उपयोग हो रहा होता है| मैं अपने पुत्र को यह नहीं सिखा सकता की यह कैसे होता है, और मेरा पुत्र इस कौशल को मेरे से ग्रहण नहीं कर सकता| मैंने इन पहियों को बनाते बनाते अपने जीवन के सत्तर वर्ष बिता दिए और अब मैं बुढा भी हो गया हूँ| इसी प्रकार प्राचीन लोगो के पास भी ऐसा कुछ होता था जिसे वे आगे नहीं सिखा सकते थे| और इसीलिए, हे महाराज जो आप पढ़ रहे है वो केवल प्राचीन लोगो के ज्ञान के बीभत्स अवशेष है|"

14.The Movement of the Heavens

"Do the heavens move?
"Does the earth stand still?
"Do the sun and moon compete for their positions?
"What guides it all so they don't crash into one another?
"What joins it all so they follow prescribed routes?
"What rests comfortably without getting involved in trying to push them, but simply lets them go on their own way?
"Does this mean that there's some machine controlling all of it, and the course has already been set?
"Does this mean that things just naturally revolve in this manner, and they don't have the ability to stop themselves?
"Do the clouds cause the rain?
"Does the rain cause the clouds?
"Is there some grand plan that's being carried out in this way?
"What rests comfortably without getting involved in their own extravagance and pleasure, but encourages them?
"The wind arises in the north, then blows from west to east and back again overhead.
"What exhales and inhales in order for this to occur?
"What rests comfortably without getting involved, but fans them?
"I dare to ask what all this is about?"
Ji Xian (One Who Can Influence the Seasons) motioned him over and said:
"Come over here and I'll explain it to you. The heavens have six directions (north, south, east, west, up and down) and five constants (fire, wood, earth, metal and water). If the emperor flows along with them, then everything will be properly governed. If he goes against the flow, then everything will be in a big mess. The nine regions are already governed successfully by the virtue of their own preparedness. Everything is supervised in accordance with what's below the surface of the earth, and the world carries it along. That's what's known as the the highest sovereign of all."

Tang, the Prime Minister of Shang, asked Zhuangzi about benevolence.
(Note: Obviously Tang couldn't have spoken with Zhuangzi, as he predated Zhuangzi by over 1000 years!)
Zhuangzi said:
"Tigers and wolves are benevolent."
"What do you mean by that?"
Zhuangzi said:
"Fathers and their cubs are partial to each other. How could that not be benevolence?"
"Excuse me, but may I ask what perfect benevolence is?"
Zhuangzi said:
"Perfect benevolence is impartial."
The Prime Minister said:
"I've heard about that before. If one is impartial, then there's no love. If there's no love, then there's no filial piety. You're not saying that perfect benevolence doesn't include filial piety, are you?"
Zhuangzi said:
"Not at all. What's considered to be perfect benevolence is highly esteemed. It can't be described within the confines of filial piety. If one doesn't go beyond the idea of filial piety, they'll get stuck in the rut of filial piety. If someone travels south until they reach Ying then turns to the north, he won't be able to see Ming Mountain. Why is that? Because he's traveled so far away from it.
"That's why it's been said: 'It may be easy to show filial piety based on feelings of dutiful respect, but difficult to show filial piety out of feelings of love. It may be easy to show filial piety based on love, but difficult to forget that those people are related to us. It may be easy to forget those people are related to us, but difficult to get them to forget we're related to them. It may be easy to get them to forget they're related to us, but difficult to forget about

trying to connect to the rest of the world. It may be easy to forget about trying to connect with the rest of the world, but difficult to get the rest of the world to forget about their connections to us.'
"The idea of virtue was abandoned by Yao and Shun, and their actions weren't based on it, yet benefits reached everywhere throughout all the generations, and the world wasn't even aware of it. How could anyone take a deep enough breath to go on to honestly expound on benevolence and filial piety! Filial piety, fraternal duty, benevolence, righteousness, faithfulness, trustworthiness, loyalty, steadfastness - all of these just cause added stress to oneself and remove a person even further from their own virtue. They're not worth being elaborated on.
"Therefore it's been said: "To him who has what is most noble, all the dignities of a state are as nothing; to him who has what is the greatest riches, all the wealth of a state is as nothing; to him who has all that he could wish, fame and praise are as nothing." It is thus that the Tao admits of no substitute.'

Cheng of the North Gate asked Huang Di:
"Your majesty, when you played the music of the tune 'Xian Chi' (Salty Pond) out in the open near Dong Ting Lake, the first time I heard it, it made me fearful. The second time I listened to it, it gave me a different reaction and I felt sluggish. The last time it was played, I felt perplexed, as it made me feel completely shaken in one moment, but then in the next moment I was completely serene. After that I felt like I'd lost myself completely."
Di said:
"Your concern is understandable! I had the music performed by people, directed by the heavens, conducted according to appropriate ceremony, and set forth with great clarity. That's what makes music great.
"The first time I had the music played, it conformed to what people were going through in their own lives, following along with the natural flow of the heavens. I also had it accompanied by the Five Virtues (in Confucianism: benevolence, righteousness, propriety, wisdom and truth), and how those should resonate in the natural world. At that point this version of the music could adjust and regulate the four seasons and bring harmony to all living things. The four seasons came to pass in an orderly manner. All living things progressed in their lives. One moment was full and another moment was receding. Times of peacefulness and times of conflict were allowed to sort themselves out. Sometimes it was clear, and at other times muddy. Yin and Yang harmoniously interplayed with each other. The notes drifted into one another smoothly. Then a hibernating insect began to stir, and I startled the audience with a thunderclap which ended as abruptly as it had begun. What had once lulled them suddenly sprung them to life. What once seemed to fall away suddenly jumped up. They thought what they'd gotten used to was going to remain the same, but in the next moment they didn't know what to expect. That's why you became fearful.
"I had them play it again with Yin and Yang in perfect harmony. Allowing for the brightness of both the sun and moon, the notes were sometimes long and sometimes short; sometimes yielding and sometimes forceful. The music changed regularly in its cadence, and there wasn't one specific mood set throughout. In the low parts it was completely low, and in the high parts it was completely high. I didn't leave any pauses where one would feel a need to guard their spirit, since all of it was evenly measured out. The notes scattered and spread everywhere, and the theme held a lofty brilliance. It made one feel as though the demonic spirits were all ensconced off in their mountain lairs, and all the planets were following their assigned orbits. When I finally stopped the music, it still seemed to resound without end. You wanted to figure out why that was happening, but weren't able to understand it. You looked for where that sound was coming from, but weren't able to locate it. You tried to get the sounds out of your head, but weren't able to make that happen. You became unsteady on your own two feet with a sense of emptiness all around, so you leaned up against the parasol tree for support and moaned. The eyes know when they've reached the limit of what they can see. Strength will eventually give out even though there's still something one wants to pursue. I already knew I wouldn't be able to catch up with it! Your form was suddenly filled with so much emptiness that you felt you were wandering aimlessly. You were wandering aimlessly, and that's why you felt sluggish.
"The next time I had them play it, the notes weren't so methodical, but were attuned to the spontaneousness of fate. Therefore, it seemed to be mixed up and followed no known pattern. It was like the music of a forest without a recognizable form. Like a cloth waving in the breeze that wasn't set into motion by someone's hand. Like it was coming from some dark place which couldn't produce any sounds. It moved along without delineations, and paused at the most unexpected times. Some related it to a feeling of death, and others related it to a feeling of birth. Some

related it to reality, and others related it to illusion. It moved all over the place, and there wasn't one constant theme. People today might be uncertain how to interpret it, so they'd ask a sage to examine it for them. As for the sage, he's already reached clarity and achieved a connection with fate. The heavenly orchestra doesn't have one lead instrument, yet our five senses are attuned to all of it. That's what's called the music of heaven - without using words but speaking to the heart. Therefore, those in the Yan tribe (the people ruled by Shen Nong) composed this ode:
'Listen intently for it and its sound isn't heard.
'Look intently for it and its shape isn't seen.
'It fills the heavens and the earth to the brim.
'It entwines itself around the six directions.'
"You wanted to be completely absorbed in the music, but you couldn't get intimate with it. That's why you were confused and filled with doubt. This kind of music started out creating fear, and that fear made you jumpy and apprehensive. The second time I had it played in a methodically soothing way, and you became sluggish and withdrawn. The last time it was played with no set pattern at all, and that made you feel like a fool. Feeling like a fool, you experienced Dao. If you can maintain Dao, then everything will congeal within you."

When Kong Zi (Confucius) was traveling westward on a trip to the state of Wei, Yan Yuan (Yan Hui, Confucius' favorite pupil) asked Shi Jin (Master Metalworker):
"As to the Master's traveling all over the place, what to you think of it?"
Shi Jin said:
"I feel sorry for him! The Master is nearing his end!"
Yan Yuan asked:
"Why do you say that?"
Shi Jin said:
"Before straw dogs are put on display, they're spread out in bamboo boxes and covered with finely embroidered cloth. The official of sacrifices for the dead watches over them and makes sure they're not taken out before the proper time. After they've served their purpose, they're cast away and people trample on their heads and spines, or they might be picked up and thrown into someone's fire, as that's all they're good for at that time. If someone were to gather them up and again spread them out in bamboo boxes covered with finely embroidered cloth, take them into their homes and stash them under their beds, whoever slept there wouldn't have pleasant dreams, but would certainly have many nightmares for quite a while. Now the Master has taken the used straw dogs of former kings and makes his disciples lie down and sleep on top of them. Therefore, everything they had established in the state of Song was cut down, all traces of them were obliterated in the state of Wei, and they were chased out of the states of Shang and Zhou. Isn't this comparable to not having pleasant dreams? They were surrounded between Chen and Cai, having to go for seven days without prepared food, and teetered between life and death. Isn't this comparable to having nightmares?
(Note: The places mentioned above were cities and states visited by Confucius in his efforts to gain political office in order to promote his ideologies.)
"When traveling on water it's best to use a boat, and when traveling on land it's best to use a car. A boat can easily move across water, but if you try to push it across the land you won't go more than a few feet in your whole life. Can't ancient times and modern times be compared to water and land? Can't Zhou and Lu be compared to the boat and the car?
(Note: The Early Zhou Dynasty c. 1100 BCE was the exemplar of idealized peace, and Confucius tried repeatedly to bring those ideals to the state of Lu.)
"Now, trying to bring the ideals of Zhou to Lu would be like pushing a boat on the land - a lot of exertion but little accomplishment, which would definitely bring disaster to your body. He hasn't yet figured out the proper method for passing down those ideals by going along with the natural flow of things instead of pushing himself to the limit. Haven't you ever seen a jiegao (a device for getting water from a well)? When you pull on one end the other end goes down, and when you let it go the other end pops up. That machine is pulled by people, but it doesn't pull people. Therefore, people can't blame it for going down or popping up. It's the same with the rituals, justice, laws

and regulations of the Three Sovereigns (Fu Xi, Sui Ren and Shen Nong) and the Five Emperors (Yellow Emperor (Huang di), Zhuan Xu, Gao Xin, Yao and Shun), who gained their reputation not because they were the same, but because everything was governed properly. Therefore, can't an analogy be made between the rituals, justice, laws and regulations of the Three Sovereigns and Five Emperors to the sour pear, sweet pear, tangerine and grapefruit? Their flavors are very different, but they all can be pleasing to the taste buds. So, rituals, justice, laws and regulations should adapt to the seasons and change with the times.

"Now if you take a monkey and dress him up in the robes of the Duke of Zhou, he'll surely chew and gnaw on the clothes and won't be satisfied until he's ripped them all off. If we look at the difference between the past and the present, it's as great as the difference between the monkey and the Duke of Zhou.

"Xi Shi (an exemplar of beauty) was so sick at heart that she'd frown at everyone in the local village. An ugly woman in the village saw her and thought she was beautiful, so when the woman returned to the village she held her hands over her heart and frowned in the same way to everyone. When the rich people in the village saw the woman, they bolted and locked their doors and refused to go out. When the poor people saw the woman, the grabbed their wives and children and ran in the opposite direction. The woman knew the frown was beautiful, but didn't know the reason why the frown was beautiful. I feel sorry for him! The Master is nearing his end!"

When Kong Zi (Confucius) was fifty-one years old he felt that he still hadn't learned much about Dao, so he went south to Pei to visit Lao Dan (Laozi).

Lao Dan said:

"Ah, you've come! I've heard about you. It's said that you're one of the most prestigious sages in the north. Have you also achieved understanding of Dao?"

Kong Zi replied:

"No, not yet."

Lao Dan asked:

"How have you been looking for it?"

"I searched for it in what's regulated and measured for five years, but still didn't get it."

Lao Dan asked:

"What other ways have you looked for it?"

"I searched for it in Yin and Yang for twelve years but still didn't get it."

Lao Dan said:

"That's the way it is. If Dao could be laid at one's feet as an offering, there's no one who wouldn't offer it to their superior. If Dao could be presented like a pheasant after the hunt, there's no one who wouldn't present it to their family. If Dao could be explained by people, there's no one who wouldn't explain it to their friends. If Dao could be passed on from person to person, there's no one who wouldn't pass it on to their descendants. However, the reason that can't be done is due to the following: 'If there's no host on the inside to welcome it, it won't have anything to connect to. Without an unbiased attitude on the outside, it can't be transmitted.' If what's being put forth from the inside isn't being received by those on the outside, the sage won't bother putting it forth. If it can enter from the outside but can't find a welcome host to accept it, the sage won't hide it away. Fame is a tool that can be used when dealing with the public, but it can only do so much. Benevolence and righteousness are like the shabby huts of the ancient rulers. You can stay there for a night, but if you stay longer than that you'll have lots of repairs to do.

"In the past, people who perfected themselves spent a small amount of time considering benevolence and spent only one night depending on righteousness. That's how they were able to travel free and unfettered by the clutter, conscientiously select their food from the fields, and establish well cared for gardens. They traveled free and unfettered without motivations, made conscientious selections from what was offered at the time, and took care of things naturally. In ancient times this was called flowing with natural selection.

"One who uses his wealth to prop himself up isn't able to consider the idea of giving up his salary. One who uses his prominence to prop himself up isn't able to consider the idea of giving up his fame. One who's partial to being powerful isn't able to consider the idea of sharing his authority with anyone else. Grasping and trying to hold on to those elusive things he trembles with fear. If they collapse like a poorly built structure, he grieves for the loss. And

those who don't take a moment to look at themselves in a mirror but are constantly looking outside for something are people who can never soar to the heavens.
"Venting and kindness, receiving and giving, criticism and teaching, construction and destruction - these eight are tools that can be used for rectification. Only someone who's able to follow along with great adaptability without falling into oblivion is able to find them useful. Therefore it's been said: 'Only one who has been rectified can rectify.' If one believes in their heart this isn't true, then the gates of the heavens will never open for them."

Kong Zi (Confucius) made a visit to Lao Dan (Laozi) and told him about benevolence and righteousness.
Lao Dan said:
"When scattering seeds the loose particles can get into your eyes, then the heavens and the earth as well as the four directions seem to change positions. When mosquitoes or horse flies bite or sting your skin, then you wouldn't be able to sleep through the night. When it happens that benevolence and righteousness sting our hearts and then anger arises within us, that fills us with the worst kind of chaos. My dear sir, if you could cause the whole world to retain its simplicity, then you also could move about as freely as the wind while experiencing your own virtue. Why must you set yourself up as some sort of hero by carrying around a big drum and beating on it as though you were searching for a lost child? A swan doesn't bathe itself all day, and yet it's white. A crow doesn't smear itself with soot all day, and yet it's black. The naturalness of black and white isn't something that needs to be argued about. The observations of simple names and notable titles isn't something that needs to be shouted about far and wide. When a stream dries up the fish gather together in a crater on the land. They moisten each other with their saliva and splatter each other with foam. It'd be better for them to be swimming freely in rivers and lakes than to be concerned with having to do these things to keep each other alive."
After Kong Zi returned home from visiting with Lao Dan he didn't utter a word for three days.
One of his disciples asked:
"Master, when you went to see Lao Dan were you able to set him straight?"
Kong Zi said:
"I just now realized that what I'd actually seen was a dragon. When a dragon solidifies itself, it appears in a solid body. When it dissipates, it seems to be made up of many different particles. It rides on the thin floating clouds and nourishes itself on Yin and Yang. My mouth hung open and I wasn't able to close it. My tongue started to move but I was speechless. In what way could I possibly hope to set Lao Dan straight about anything?"
Zi Gong (a disciple of Confucius) said:
"Is there really a person who can contain themselves as though they were resting like a corpse then be seen like a dragon, make thunderclaps yet remain silent as an abyss, and seem to be able to set the heavens and earth into motion? Will you give me permission to also go take a look at him?"
So, using Confucius as a referral he went off to see Lao Dan. Lao Dan had him take a seat in his main parlor and began the conversation, saying softly:
"I'm getting on in years. What have you come to scold me about?"
Zi Gong said:
"The Three Sovereigns and Five Emperors governed the world in different ways, but the fame they achieved was the same. You're the first one I've come across who doesn't consider them to be sages. Why is that?"
Lao Dan said:
"Come a little closer, young man. What is it about their governing that you find to be dissimilar?"
He replied:
"Yao resigned the throne in favor of Shun, and Shun resigned in favor of Yu. Yu exerted himself (on irrigation projects) but Tang relied on the military (to overthrow the ruler King Jie). King Wen submitted to Zhou and he didn't dare make a protest. King Wu opposed Zhou and wasn't willing to submit. That's why I say their methods were dissimilar."
Lao Dan said:
"Come a little closer, young man. I'll tell you how the Three Sovereigns and Five Emperors governed the world. When Yellow Emperor (Huang di) ruled the world, he caused the hearts of all the people to unite. If a member of

someone's family died and they didn't cry about it, others didn't shun them. When Yao ruled the world, he caused people's hearts to be devoted to their family. If one of their relatives was killed, they retaliated by killing, and others didn't blame them for it. When Shun ruled the world, he caused people's hearts to compete with each other. A woman's pregnancy lasted for ten months (moon cycles) before she gave birth, then after five months the baby could speak, and even before they were a few hours old they could differentiate between other people. That's when people started dying younger. When Yu ruled the world, he caused people's hearts to be distorted. The hearts of the people were made to submit to the force of the soldiers, who insisted that killing a thief wasn't like killing an actual person, and they set themselves apart from the rest of the masses while the world kept their ears open and alert. This made the whole world incredibly fearful, and that's when all the Confucians and Mohists arose. They created a system of ethics, and now everyone is groveling like housewives sweeping up the dirt. What more is there to say! I tell you, when the Three Sovereigns and the Five Emperors governed the world, they achieved fame for the way they governed, but there was never greater chaos. The knowledge of the Three sovereigns conflicted with the brightness of the sun and moon above, was incompatible with the essence of the mountains and rivers below, and disrupted the procession of the four seasons in between. Their knowledge was more harmful than the bite of a pit viper or the sting of a scorpion's tail. Like hungry animals on the lookout for prey, no one around them could acquire a sense of peace or live naturally in their lives. And yet they considered themselves to be sages. Isn't it shameful that they had no shame?"
Zi Gong shuffled his feet back and forth and couldn't find any balance.

Kong Zi (Confucius) told Lao Dan (Laozi):
"I've been studying the Six Classics, the Shi Jing (Book of Odes), the Shu Jing (Book of History), the Li Ji (Book of Rites), the Yue Jing (Book of Music), the Yi Jing (Book of Changes) and the Chun Qui (Spring and Autumn Annals) for what I myself would consider a long time. I wanted to share this knowledge, so I went to see seventy-two treacherous rulers and explained to them methods of Dao used by the former kings and the enlightened traces left by Duke Zhou and Duke Zhao, but not one of the rulers could find anything he could latch on to and make us of. Huh? People are so difficult to speak with! Or is it that Dao is difficult to understand?"
Laozi said:
"It's lucky you didn't meet up with a ruler who was actually doing a good job of governing! The Six Classics are the stale tracings of former kings, but how could they be used to show what made the tracings in the first place? Those tracings are tracks left by shoes, but how can you call the tracings the shoes? When two mature herons stare each other in the eye without looking away, they feel an urge to mate. As for insects, when the male drones from above and the female responds from below, they feel an urge to mate. Within any species, as long as there are male and female, there will be an urge to mate. Gender can't be changed. Destiny can't be transformed. Time can't be stopped. Dao can't be blocked. If someone accepts this Dao, then there's nothing they wouldn't be able to get for themselves. Lose it, and there's nothing one could possibly get for themselves."
Kong Zi didn't go anywhere for three months, then returned (to see Laozi) and said:
"I've got it! Birds hatch eggs. Fish spit water. Those with a thin waist will eventually spread out. When a younger brother is born, the older brother wails. For a long time I haven't agreed to change myself. If I can't even agree to see things differently myself, then how could I hope to change anyone else!"
Laozi said:
"Yes. You've got it!"

१४|स्वर्ग की गती

"क्या स्वर्ग अब भी निरंतर है?
"क्या यह धरती अब भी स्थिर है?
"क्या सूर्य और चंद्रमा अपने स्थानों के लिए स्पर्धा करते है?
"इन सभ को कौन मार्ग दिखलाता है की ये एक दुसरे से नहीं टकराते है?
इन सभ को कौन एक सूत्र में बांधे रखता है की ये अपने निर्धारित मार्गो पर ही रहते है?
"कौन इन सभ को नियमित करने में लिप्त हुए बिना इतनी सहजता के साथ अवलंबित है, और इन्हें केवल अपने मार्गो पर ही जाने दे रहा है?
"क्या इसका तात्पर्य यह है की इन सभ को एक यंत्र नियंत्रित कर रहा है, और इनके मार्ग पहले से ही निर्धारित है?
"क्या इसका तात्पर्य यह है की ये अपने प्राकृतिक स्वभाव से ही ऐसे घूम रहे है और स्वयं को रोकने में सक्षम नहीं है?
"क्या बादल वर्षा की उत्पत्ति का कारण होते है?
"क्या कोई महान योजना है जिसके अंतर्गत यह सभ ऐसे हो रहा है?
"कौन अपनी ही बहुतायत और आनंद में लिप्त हुए बिना इतनी सहजता के साथ अवलंबित है, और फिर भी इसे प्रोत्साहित कर रहा है?
"वायु की उत्पत्ति उत्तर से होती है तब यह पश्चिम से पूर्व की और बहती है और फिर से अपने स्थान पर लौट आती है|
“कौन श्वास भरता और छोड़ता है ऐसा करने के लिए?
"कौन इसमें लिप्त हुए बिना इतनी सहजता से अवलंबित है और फिर भी हवा चल रही है?
"मै यह पूछने का साहस करता हूँ की यह सभ क्या है, कैसे है, क्यों है?"

जी-क्सियन उसके पास गया और कहा:
“मेरे पास आओ मै तुम्हे यह सभ बताता हूँ| स्वर्ग के पास छह दिशाए है और पञ्च तत्व है| अगर कोई शासक उनके साथ चलता है तो सभी वस्तुए पूर्णरूप से नियमित होती है |अगर वह उनके प्रवाह से अलग चलता है तो यह बड़ी विप्पति को बुलावा देना होता है| नौ के नौ क्षेत्रो का नियमन बहुत ही सफल तरीके से उनके सामर्थ्य के प्रभाव से ही हो रहा है| हर वस्तु को मार्ग दिखाया जाता है जो इस धरा की सतह पर है और यह संसार उसी अनुसार बढ़ता है| इसी को उस ‘परम सत्ता’ के नाम से जाना जाता है|"

तंग, जो की शांग राजा का प्रधानमंत्री था उसने ज़्हुंग्ज़ी से दयालुता के बारे में पूछा|
ज़्हुंग्ज़ी ने कहा:
"शेर और भेडिये दयालु होते है|"

"आपका इससे क्या अभिप्राय है?"

ज़्हुंग्ज़ी ने कहा:
"एक पिता और उसके शावक एक दुसरे से अगाध प्रेम रखते है क्या यह दयालुता नहीं है?'

“क्षमा करे पर क्या मै यह पूछ सकता हूँ की सर्वव्यापक दयालुता क्या है?"

ज़्हुंग्ज़ी ने कहा:
"सम्पूर्ण दयालुता निष्पक्षता होती है”

प्रधानमंत्री ने कहा
"मैंने इस बारे में पहले सुना है| यदि कोई निष्पक्ष होता है तब वहा कोई प्रेम नहीं होता है| अगर वहा कोई प्रेम नहीं होता है तो कोई धर्मनिष्ठा नहीं होती है| क्या तुम यह नहीं कह रहे हो की जहाँ सम्पूर्ण दयालुता होती है वहा धर्मनिष्ठा नहीं होती है?"

ज़्हुंग्ज़ी ने कहा:

"नहीं ऐसा नहीं है| जिसे सम्पूर्ण दयालुता समझा जाता है वह बहुत ही माननीय है| इसलिए इसकी व्यख्या धर्मनिष्ठा के संदर्भ में नहीं की जा सकती है| अगर कोई धर्मनिष्ठा के सिद्धांत से परे नहीं सोचता है तो वह उसमे ही उलझ कर रह जाता है| अगर कोई दक्षिण की तरफ यात्रा करता है और यिंग पर्वत पर पहुचकर वापस उत्तर की तरफ आ जाता है तो वह महान मिंग पर्वत को नहीं देख पाता है| ऐसा क्यों होता है? क्योंकि वह उससे बहुत दूर से ही वापस आ गया|

"इसीलिए तो यह कहा गया है 'धर्मनिष्ठा को अपने कर्तव्य के प्रति आदर के संदर्भ में दिखाना तो आसान है लेकिन इसे अपने प्रेम से दिखाना बहुत ही मुश्किल है| यह आसन हो सकता है- धर्मनिष्ठा को प्रेम के संदर्भ में मानना पर यह भूलना की बाकि लोग भी हमारे साथ जुड़े हुए है मुश्किल होता है| यह आसान हो सकता है भूलना की और लोग हमारे साथ जुड़े हुए है पर यह मुश्किल होगा भूलना की हम भी और लोगो के साथ जुड़े हुए है| यह आसान हो सकता है भूलना की हम और लोगो के साथ जुड़े हुए है पर मुश्किल होगा भुलाना की हम इस संसार के साथ जुडे हुए है| यह आसन हो सकता है हमारा इस संसार के साथ संबंध भुलाना पर इस संसार का हमारे साथ संबंध भुलाना मुश्किल होगा|

"सामर्थ्य के मत को याओ और शुन के द्वारा नकार दिया गया था, और उनके कार्य इस पर आधारित नहीं थे, फिर भी सभी वस्तुओ को हर पीढ़ी में लाभ पंहुचा, और यह संसार इससे अवगत भी नहीं था| फिर कैसे कोई दयालुता और धर्मनिष्ठा की व्याख्या करने में इतनी गहरी साँस ले सकता है! धर्मनिष्ठा, आपसी कर्तव्य, दयालुता, धर्म, विश्वास, विश्वसनीयता, वफ़ादारी, दृढ़ता - ये सभ केवल अतिरिक्त दबाव का कारण ही होती है और एक व्यक्ति को उसके सामर्थ्य से बहुत दूर भटका देती है| ये सभ व्याख्या करने योग्य नहीं है|

"इसीलिए तो यह कहा गया है: 'जो सज्जन होता है उसके लिए किसी राज्य के द्वारा प्रतिष्ठा का कोई मूल्य नहीं होता है; जो सभसे धनवान होता है उसके लिए पुरे राज्य के धन का कोई महत्व नहीं होता है; और जिसके पास वह सभ कुछ होता है जिसकी वह इच्छा रखता है उसके लिए सम्मान और प्रशंसा का कोई महत्व नहीं होता|" इसी प्रकार से ताओ का अपना कोई प्रतिस्थानिक नहीं होता है|

उत्तरी द्वार के चेंग ने हुंग-दी से पूछा:

"हे महाराज, जब आपने दोंग-टिंग झील के किनारे 'क्सियन-ची 'की धुन बजाई थी तब मैंने उसे पहली बार सुना तो मै भयभीत हो गया था| जब मैंने इसे दूसरी बार सुना तो मेरी प्रतिक्रिया कुछ और थी तब मैंने निष्क्रिय महसूस किया| जब आपने इसे आखिरी बार बजाया तो मुझे बहुत ही अजीब महसूस हुआ, पहले तो मुझे लगा की मै बिलकुल हिल गया हूँ लेकिन अगले ही क्षण मै बिलकुल शांत हो गया| उसके बाद मुझे लगा की मैंने स्वयं को पूर्णरूप से कही खो दिया है|"

हुंग-दी ने कहा:

"तुम्हारा प्रसंग मै समझ सकता हूँ! मेरे पास वह संगीत भी है जिसे मनुष्यों द्वारा निष्पादित किया जाता है, जिसे स्वर्ग द्वारा संचालित किया जाता है, जिसे उचित अवसर के अनुसार आचरण में लाया जाता है और बड़ी स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया जाता है| ये सभ वे है जो संगीत को महान बनाते है|

"प्रथम जब मैंने संगीत को बजाय था तो वह उसके अनुरूप था जो कुछ लोग अपने जीवन में कर रहे है,साथ ही यह स्वर्ग के प्राकृतिक प्रवाह के साथ अनुगामी हुआ| मैंने इसे पांचो सामर्थ्यो के साथ प्रस्तुत किया की कैसे उन्हें इस संसार में समझा जाता है| इस अर्थ में वह संगीत संस्करण चारो ऋतुओ को क्रमबद्ध करने में और सभी जीवित वस्तुओ को आनंद प्रदान करने में समर्थ था| चारो ऋतुए क्रमबद्ध तरीके से निहित हुई और सभी जीवित वस्तुए अपने जीवन में आगे प्रोत्साहित हुई| प्रथम क्षण सम्पूर्ण होता था और अगला ही क्षण घटता चला जाता था| शांतिपूर्ण समय और टकराव का समय आपस में हल निकाल कर क्रमबद्ध हो रहे थे| कुछ क्षण यह स्पष्ट होता था और कुछ समय यह आच्छादित हो जाता था| यिन और यंग माधुर्य के साथ एक दुसरे के साथ परस्पर किर्यान्वित थे| सुर एक दुसरे के साथ बिलकुल सही ढंग से तालमेल में थे| तब एक सुप्तावस्थित जीव जैसे स्वर का उदय हुआ, और इसने सभ दर्शको को घनघोर गर्जना से डरा दिया, उस स्वर का अंत भी ऐसे ही हुआ जैसे वो शुरू हुआ था| जिसने उन्हें एक बार झकझोर दिया था उसने ही अब उन्हें नए जीवन की और अग्रसर किया| जिसे एक बार समाप्त हुआ समझा जा रहा था वह फिर से आगे की और बढ़ दिया| एक क्षण वे सोचते थे की जो उन्होंने पाया है वह हमेशा के लिए ऐसे ही रहने वाला है पर अगले ही क्षण वे नहीं जानते की उन्हें क्या आशा रखनी चाहिए| यही तो तुम्हे भयभीत करने वाला था| मैंने इसे यिन और यंग के परस्पर माधुर्य एक साथ दोबारा बजाया| सूर्य और चन्द्र के प्रकाश को प्रज्वलित करने वाले वे स्वर कुछ तो दीर्घ थे और कुछ निम्न थे; कुछ समय वे नम्र थे तो कुछ समय वेगशील| वह संगीत अपनी ताल को बार बार क्रमबद्ध तरीके से परिवर्तित कर रहा था, और उसका इस पुरे प्रसंग में कोई विशिष्ट स्वभाव नहीं था| निम्न स्वर में यह पूरी तरह से निम्न था और दीर्घ स्वर में यह पूरी तरह से दीर्घ था |मैंने बीच में ऐसा कोई भी ठहराव नहीं किया जिससे किसी को अपनी आत्मा पृथक महसूस हो, पूरा संगीत एक लय में था| जो स्वर थे वे चारो तरफ एक समान फैले हुए थे और जो विषय था वह

बहुत ही प्रचंड और गहन था| यह किसी को ऐसा एहसास कराता था जैसे बुरी आत्माए पर्वतो में अपने स्थानों पर चली गयी है और सभी गृह अपनी कक्षा में विराजमान हो गए है| जब मैंने आखिर में संगीत को बंद किया, तब यह बिना अंत वाला प्रतीत हुआ| तुम यह पता लगाना चाहते थे की यह सभ क्यों हो रहा था लेकिन इसे समझने में सक्षम नहीं थे| तुम यह देखने की कौशिश कर रहे थे की यह कहाँ से आ रहा है लेकिन इसका पता नहीं लगा पा रहे थे| तुम इस संगीत को अपने दीमाग से निकालने की कौशिश कर रहे थे लेकिन इसमें सफल नहीं हो पा रहे थे| तुम अपने दो पैरो पर खड़े होकर भी अस्थिर हो गए थे और तुम्हे चारो ओर रिक्तता का अनुभव हो रहा था, इसीलिए तुमने स्वयं को एक वृक्ष के सहारे झुकाकर स्वयं को संभाला और करहाने लगे| आंखे जानती है की कब वे उस सीमा तक पहुच गयी है जहाँ तक वे देख सकती है| ताकत साथ छोड़ देती है लेकिन अब भी कोई होता है जो अब भी लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है| मैं पहले से ही जनता हूँ की मै इसे समझ नहीं पाउगा!
तुम्हारा रूप अचानक ही इतनी रिक्तता से भर गया की तुम लक्ष्यहीन होकर इधर उधर घुमने लग गए| तुम लक्ष्यहीन थे इसीलिए तुम निष्क्रिय हो गए थे|
"अगली बार जब मैंने धुन बजाई तो वह विधिपूर्वक नहीं थी लेकिन वह किसी की स्वभाविक नियति के साथ लयबद्ध थी| इसीलिए तो वह इतनी मिश्रित सी प्रतीत हो रही थी और उसका कोई स्वरूप नहीं था| यह तो था जैसे कोई संगीत बिना किसी रूप और स्वरूप के हो| जैसे कोई वस्त्र मंद पवन में लहरा रहा हो बिना किसी के हाथो की सहायता के| जैसे की वो अँधेरे रहस्यमयी स्थानों से जहाँ से कोई संगीत उत्पन्न नहीं हो सकता वहां से आ रहा हो| वह चल रहा था बिनी किसी आकर के और वह अप्रत्याशित समय पर भी ठहर जाता था| कोई उसे मृत्यु जैसे अनुभव के साथ जोड़ रहा था तो कोई उसे जन्म देने वाला कह रहा था| कोई उसे वास्तविकता से जोड़ रहा था तो कोई इसे मिथ्या भ्रान्ति समझ रहा था, और उसमे कोई भी स्थिरता प्रतीत नहीं हो रही थी | लोग आज भी इस बारे में संदेहयुक्त है की उसकी व्याख्या कैसे की जाये इसीलिए उन्होंने एक साधू को बुलाया उसका निरिक्षण करने के लिए| वह साधू पहले ही शुद्धता को प्राप्त हो चूका था और नियति के साथ उसका गहन संबंध था|
नैसर्गिक वाद्य किसी वाद्ययंत्र से नहीं आता फिर भी सभी वस्तुए उसके साथ लय में होती है| इसी कारण तो इसे नैसर्गिक संगीत कहा जाता है - जिसमे कोई शब्द नहीं होते केवल ह्रदय से ही उदित होता है | इसीलिए यां काबिले वालो ने ये पंक्तिया लिखी है :
"इसको ध्यान से सुनो पर इसे सुन नहीं पाओगे|
"यह स्वर्ग और धरती को आखिरी छोर तक परिपूर्ण कर देता है|
"यह सभी दिशाओ को आपस में गुथ देता है|
"तुम इस संगीत में स्वयं को पूरी तरह से मग्न करना चाहोगे पर तुम इसमें अन्तरंग नहीं हो पाओगे| यही कारण है तुम इतने उलझे हुए और संदेह से भरे हुए हो| इस प्रकार का संगीत भयभीत करने वाली लय से शुरू होता है और यही भय तुम्हे झकझोर देता है| फिर दूसरी बार मैंने एक लयबद्ध धुन बजाई जिससे तुम शांत और रिक्त हो गए| आखिरी बार मैंने बिना किसी लय या ताल के धुन बजाई तब तुम्हे एक मुर्ख एक अज्ञानी जैसा अनुभव हुआ| और एक मुर्ख अज्ञानी जैसे होकर तुम्हे ताओ की अनुभूति हुई| और यदि तुम ताओ का ऐसे ही संधारण किये रखते हो तो सभी वस्तुए तुम मे समाहित हो जाएगी|

जब कोंग-ज़ि अपनी वेई राज्य की यात्रा में पश्चिम की और जा रहा था तो यां-युआन जो की उनका प्रिय शिष्य था उसने एक मिस्त्री सही-जिन से पूछा:
"चूँकि आचार्य अब इस स्थान पर आ रहे है तो आप इस बारे में क्या सोचते है?"

सही-जिन ने कहा:
"मैं उनके लिए दयनीय भाव रखता हूँ! उनका अंत नजदीक है!"

यां-यां ने पूछा:
"ये तुम क्या कह रहे हो?"

सही-जिन ने कहा:
"जब आवारा कुतो को नीलामी के लिए प्रस्तुत किया जाता है तो उन्हें बांस के डिब्बो में बांध करके अच्छे महंगे नक्काशी किये हुए वस्त्रो से सजाया जाता है| तब बलि देने वाला अधिकारी यह सुनिश्चित करता है की उन्हें समय से पहले नहीं निकला जाये| जब उनका उद्देश्य पूरा हो जाता है तो उनकी बलि दे दी जाती है और लोग उनके शरीर के ऊपर नाचने लग जाते है और उन्हें (उनके शरीर टुकडो को) इधर उधर अग्नि में फेंकन शुरु कर देते है, जैसे की उनको इसमें आनंद मिल रहा हो| अगर किसी को उनको (टुकडो को) फिर से इकट्ठा करना पड़े और उन्हें वैसे ही बांस के डिब्बो में बांध करके अच्छे वस्त्रो में सजाकर अपने घर

लेकर जाने को कहा जाए और अगर कहे की उनको अपने बिस्तर के निचे रखकर सो जाए तो उसे निश्चित ही बुरे स्वप्न आयेगे, उसे तब आनंदमयी निद्रा नहीं आएगी| और अब जबकि आचार्य ने राजाओ को उन कुत्तो जैसे बना दिया है और अपने शिष्यों को निचे सुलाकर उनके ऊपर बैठे हुए है|
यही कारण है की जो कुछ भी उन्होंने सोंग राज्य में स्थापित किया था उसे हटा दिया गया है, उनके आने का हर कोई चिन्ह वेई राज्य से मिटा दिया गया है, और ऊन्हे शांग और ज्होऊ राज्य से भगा दिया गया| क्या यह आनंदमयी निद्रा के नहीं आने से तुलनीय नहीं है?
अब उन्हें वे चेन और की राज्य के बीच में है और उन्हें आगे सात दिन तक बिना किसी भोजन का प्रबंध किये जाना है और वे इस प्रकार जीवन और मृत्यु के बीच में झूल रहे है क्या यह एक बुरे स्वप्न जैसा नहीं है?
"जल में यात्रा करते वक़्त एक नाव का उपयोग करना सबसे अच्छा होता है, और जमीन पर यात्रा करते वक़्त एक गाडी का होना अच्छा होता है| एक नाव जल में आसानी से चल सकती है लेकिन अगर उसे जमीन पर चलाने की कौशिश की जाए तो तुम्हारे पुरे जीवन में तुम उसे कुछ मिल तक भी नहीं ले जा पाओगे| क्या पौराणिक समय की और आधुनिक समय की जल और ज़मीन के साथ तुलना नहीं की जा सकती? और क्या ज्होऊ और लू राज्य की नाव और गाड़ी के साथ तुलना नहीं की जा सकती है?
(ज्होऊ राज्य जो की बहुत ही प्राचीन था उसे उसके अपने अच्छे शासन व् समृद्धि के लिए जाना जाता था और ज्होंग-नि ने वहा के सिद्धांतो को लू राज्य में स्थापित करने की कौशिश की)
"अब ज्होऊ के नियमो को लू राज्य में स्थापित करने का तात्पर्य एक नाव को ज़मीन पर चलने जैसा है- बहुत ज्यादा मेहनत पर कोई सफलता नहीं, यह निश्चित ही तुम्हारे शरीर के लिए विनाशकारी होगा| क्या तुमने उस सिद्धांत को नहीं जाना है: केवल प्राकृतिक प्रवाह के साथ रहते हुए इस मतों को अगली पीढ़ी के जोड़ना बजाय की उनको उन पर उनको थोपने के| क्या तुमने कभी जिएगाओ (जल निकालने वाला यंत्र) को नहीं देखा है? जब तुम एक छोर से खींचते हो तो दूसरा सिरा ऊपर आ जाता ही और जब तुम दुसरे सिरे की तरफ से खींचते हो तो एक निचे चला जाता है| यही बात रीती-रिवाजो, न्याय, नियमो और कानून जो की तीनो राजाओ और पांचो सम्राटो के साथ है| उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा इसीलिए प्राप्त नहीं हुई की वे एक जैसे थे, एक जैसे नियम और कानून मानते थे, पुराने नियमो को मानते थे बल्कि इसलिए की उनहोंने अपने नियमो और कानूनों पर समय के साथ विचार किया और परिस्थितियों को समझकर शासन सही ढंग से किया और केवल उन नियमो को थोपने नहीं लगे जो पौराणिक थे और जिन्हे अच्छा माना जाता था| इन नियमो और कानूनों का फल कैसा भी हो सकता है कडवा-मीठा, अच्छा बुरा पर यह केवल कुछ समय के लिए ही होगा| इसीलिए तो रीती-रिवाज, नियम, कानूनो को परिस्थितयो के अनुरूप होना चाहिए तथा समय के साथ बदलना चाहिए|
“अब अगर तुम एक बन्दर को पकड़ो और उसे सम्राट ज्होऊ जैसे वेशभूषा में दाल दो तो वह निश्चित ही उन वस्त्रो को चबाने और चिड-फाड़ करने लग जायेगा और तब तक संतुष्ट नहीं होगा जब तक वह उन्हें स्वयं से अलग नहीं कर लेगा| अगर हम भुत और वर्तमान के भेद (अंतर) को देखे तो यह उतना ही विशाल है जितना की उस बन्दर और सम्राट ज्होऊ के बीच है|

क्सी-सही (एक बहुत ही सुन्दर महिला) अपने ह्रदय से इतनी व्याकुल थी की वह सभकी तरफ बहुत ही मधुर भाव से देखती थी| एक बदसूरत महिला ने उसे ऐसा करते हुए देखा और सोचा की यह करना खुबसूरत है इसीलिए जब वह अपने गाँव वापस आई तो वह भी अपने हाथ अपने ह्रदय पर रखकर सभ की तरफ उसी भाव से देखने लग गयी| जो धनवान लोगो ने उसे देखा तो उन्होंने अपने दरवाजे बन्द कर लिए और सभ ने स्वयं को अन्दर बंद कर लिया और बाहर आने से इंकार का दिया| जब थोड़े निर्धन लोगो ने उसे देखा तो उसे देखर वे अपनी पत्नी और बच्चो को लेकर इधर उधर भागने लग गए| वह औरत जानती थी की उसके यह भाव मधुर थे पर यह नहीं जानती थी उसके ये भाव मधुर क्यों थे| मै बहुत ही दयनीय महसूस करता हूँ! तुम्हारे आचार्य का अंत निकट ही है!"

जब कोंग ज़ि इक्यावन वर्ष वृहद हो गया था तो उसे अनुभव हुआ की उसने ताओ के बारे में बहुत कुछ जान लिया है इसलिए वह दक्षिण में पी शहर में लाओ-दान से मिलने के लिए गया|

लाओ-दान ने कहा:
"ओह! तुम आ गए! मैंने तुम्हारे बारे में सुना है| यह कहा जाता है की तुम उत्तर के बहुत ही प्रतिष्ठित संत हो| क्या तुमने ताओ की समझ को भी हासिल कर लिया है?"

कोंग ज़ि ने कहा: "नहीं अब तक नहीं|"

लाओ-दान ने कहा: "तुम इसके लिए कैसे प्रयत्न कर रहे हो?"

"मैंने इसे पाने की कौशिश की और इसके लिए पांच वर्ष तक अध्ययन और अभ्यास किया, लेकिन मै अब तक सफल नहीं हुआ हूँ|"

लाओ-दान ने पूछा:
"इसको पाने के लिए तुमने और क्या क्या तरीके अपनाये?"

"मैंने इसे यिन और यंग के अन्दर निहित देखना चाह पर मैं सफल नहीं हुआ|"

लाओ-दान ने कहा :
"यही तो इसका पथ ही| अगर ताओ ऐसे ही किसी को उपहार स्वरूप उसके मार्ग में रखी हुई मिल जाये तो ऐसा कोई नहीं होगा जो इसे अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों को प्रदान नहीं करेगा| और अगर यह शिकार के पारितोषक के रूप में प्राप्त हो तो ऐसा कोई नहीं होगा जो इसे अपने परिवार के साथ साँझा न करे| अगर ताओ की व्याख्या लोगो द्वारा की जा सके तो ऐसा कोई नहीं होगा जो इसे अपने मित्रो को न बताये| अगर ताओ को एक व्यक्ति से दुसरे को प्रदान किया जाये तो ऐसा कोई नहीं होगा जो इसे अपने अगले वंशज को प्रदान न करे| फिर भी यह है की ऐसा नहीं हो सकता है, यह निम्न कारणों से होता है: 'अगर कोई आभ्यंतर इसका आतिथेय नहीं होता तो इसका योग नहीं हो सकता है| अगर बाह्य तौर पर कोई निष्पक्ष नहीं होता है तो इसे संचालित नहीं किया जा सकता है| यदि जिसे आभ्यंतर से बाह्यप्रस्तुत किया जाये और जो बाह्य है उसके द्वारा इसे ग्रहण न किया जा सके और वह इसको ग्रहण करने में असक्षम हो तो संत इसे बाह्य प्रस्तुत करने की चेष्ठा नहीं करते है| अगर कोई इसे तो ग्रहण कर ले लेकिन आभ्यंतर इसका आतिथेय न कर सके तो संत इसे छिपाने की चेष्ठा नहीं करते है| प्रतिष्ठा और शोहरत वह साधन होते है जिनका उपयोग लोगो के साथ व्यवहार बरतते वक़्त किया जा सकता है और यह बस केवल इतना ही कर सकते है| परोपकार और धर्म तो केवल प्राचीन राजाओ की जर्जर झोपडी जैसे है जिनमे तुम एक रात के लिए तो ठहर सकते हो लेकिन अगर तुम्हे ज्यादा रुकना है तो उनकी मरम्मत करनी जरूरी हो जाती है|
"पुराने समय में जो लोग सिद्ध होते थे वे अपना कुछ ही समय परोपकार को देते थे जबकि धर्म को तो केवल उसके अनुसार एक रात्रि जितना समय प्राप्त होता था| यही कारण था की वे स्वतन्त्र कही भी घुमे थे और किसी भी प्रकार के कोलाहल से मुक्त थे, नियति अनुसार अपने खेतो से भोजन प्राप्त करते थे और अपनी बगीचों की पूर्ण रूप से देखभाल करते थे | वे स्वतन्त्र घुमे, वे मुक्त थे किसी भी प्रकार की अभिप्रेरणा से, नियति अनुसार अपने भोजन का निग्रह करते थे और वस्तुओ की प्राकृतिक रूप से देखभाल करते थे| प्राचीन समय में इसे ही प्राकृतिक प्रवरण के साथ प्रवाहित होना कहा जाता था|

"जो अपने धन को आधार मानकर स्वयं को ऊचा उठाना चाहता है वह अपने वेतन को छोड़ने के विचार को नहीं अपना सकता है| जो अपनी शोहरत को आधार मानता है और अपनी तरक्की करना चाहता है वह अपनी प्रतिष्ठा को दांव पर नहीं लगा सकता है| वो जिसे अपनी शक्ति और अधिकारों से बहुत लगाव है वह उन्हें साँझ करने के विचार को नहीं सोच सकता है| इन भ्रान्ति और मायावी वस्तुओ को हासिल करने और इनको खोने के दर से वे कांप उठते है| अगर वे इनके हाथ से चली जाए जैसे की एक पुराणी ईमारत ढह जाती है तो वे इसके लिए बहुत ही विलाप करते है और शोक मानते है| और वे एक बार भी स्वयं को दर्पण में देखने के लिए एक क्षण भी नहीं देते है, केवल बाह्य वस्तुओ को देखते रहते है| वे कभी भी स्वर्ग को नहीं निहार सकते है|
"दयालुता और स्वच्छता, प्रदान करना और ग्रहण करना, आलोचना और प्रशिक्षण, निर्माण और विध्वंस - ये आठो साधन है परिशोधन के| वह जिसके पास अगाध अनुकुलशीलता होती है बिना इसको विस्मरण किये वही इनके उपयोग को समझ सकता है| इसीलिए तो यह कहा गया है 'जो परिशुद्ध होता है वही शोधन कर सकता है| अगर कोई मिथ्या पर विश्वास करता है जो उनके ह्रदय में होता है तो स्वर्ग के द्वार उनके लिए कभी नहीं खुलते है|"

कोंग-ज़ि एक बार लाओ-दान से मिलने गया और दयालुता और धर्म के बारे में बताया|

लाओ-दान ने कहा:
"अनाज को झारते वक़्त धुल के कण और छोटे छोटे लेश तुम्हारी आंखो में जा सकते है, तब स्वर्ग और धरती तथा चारो दिशाए भी अपना स्थान बदला हुआ नजर आएगी| जब कोई मच्छर या मक्खी आपको काट लेती है तो आप पूरी रात नही सो पाते है| जब दयालुता और धर्म हमारे ह्रदय में घाव देते है तो इससे बहुत ही क्रोध उत्पन्न होता है यह हमे किसी भी प्रकार के अन्य

कोलाहल से भी बुरे तरीके से भर देता है| प्रिय महोदय, अगर तुम इस संसार को इसकी सादगी पर रहने देते हो तो तुम भी मंद हवा जैसे विचरण करते हो और साथ ही अपने सामर्थ्य का भी अनुभव करते हो| फिर तुम क्यों अपने आप को इस संसार का रक्षक स्थापित करने पर अड़े हुए हो, ढोल बजा रहे हो; ऐसे कर रहे हो जैसे की तुम एक गुम हुए बच्चे को खोज रहे हो? एक हंस पूरा दिन नहीं नाहता है फिर भी वह श्वेत होता है| एक कौवा अपने ऊपर कभी कालिख नहीं चढ़ाता है फिर भी वह काला होता है| काला और श्वेत यह प्राकृतिक है और कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसके लिए वाद विवाद किया जाए| साधारण नामो और पदों का व्यख्यान कोई ऐसे वस्तु नहीं है जिसके लिय बार बार हर जगह जोर से चिल्लाना पड़े| जब एक नदी सुख जाती है तो मछलिय एक गड्ढे में इकट्ठा हो जाती है| तब वे एक दुसरे को अपनी लार से जीवित रखना चाहती है| लेकिन उनके लिए अच्छा यही की वे झीलों और नदियों में स्वतंत्रता से विचरण करे बिना चिंता किये की एक दुसरे को जीवित रखने के लिए उन्हें क्या करना है|"

लाओ-दान से मिलने के बाद जब कोंग-ज़ि घर वापस आया तो उसने तीन दिनों तक मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला|
उसके शिष्यों में से एक ने पूछा :
“आचार्य, जब आप लाओ-दान से मिलने गए थे क्या आप उनको समझा पाए?"

कोंग-ज़ि ने कहा:
"मुझे अभी एहसास हुआ की जो मैंने देखा था वो एक ड्रैगन था| जब एक ड्रैगन स्वयं को कठोर करता है तो वह बहुत ही कठोर प्रतीत होता है| जब वह छितराता है तो वह विभिन्न प्रकार के कणों से बना प्रतीत होता है| वह विशाल बहते हुए बादलो की सवारी करता है और स्वयं का पोषण यिन और यंग से करता है| मेरा मुँह खुला रह गया और मैं इसे बंद करने में भी सक्षम नहीं था| मेरी जीभ हिल रही थी पर मै कुछ बोल नहीं पा रहा था| इस प्रकार मैं किस तरीके से लाओ-दान को समझा पाने में सक्षम हूँ?"

ज़ि-गोंग ने कहा:
"क्या वास्तव में ही कोई ऐसा व्यक्ति है जो एक मृत की तरह अवलंबित होता है फिर भी एक ड्रैगन की तरह प्रतीत होता है| जो गरजता है लेकिन एक अगाध खाई की तरह शांत होता है| और स्वर्ग और धरती को गति प्रदान करने वाला प्रतीत होता है? क्या आप मुझे आज्ञा देगे एक बार उनसे मिलने के लिए?"

इस प्रकार जोंग-नि को अपना मध्यस्थ निर्देशक मानकर वह लाओ-दान से मिलने पंहुचा| लाओ-दान ने उसे अपने मुख्य आँगन में बैठने के लिए कहा और उसके साथ बड़ी सहजता से यह कहते हुए वार्ता शुरू की:
"मैं अब वृहद् हो रहा हूँ| आप मुझे किस संदर्भ में डांटने के लिए आये है?"

ज़ि-गोंग ने कहा:
"तीनो राजाओ और पांचो सम्राटो ने इस संसार का शासन अलग अलग प्रकार से किया पर जो प्रतिष्ठा उन्हें प्राप्त हुई वो एक जैसे थी| आप वो पहले है जिनसे मै मिला हूँ जो उनको एक साधू नहीं मानता है| ऐसा क्यों है?"

लाओ-दान ने कहा:
"मेरे पास आओ नौजवान और बताओ की उनके शासन में तुमने किस भेद को समझा है?"

उसने जवाब दिया:
"याओ ने सिंहासन त्याग दिया शुन के लिए, शुन ने इसे यु के लिए त्याग दिया| यु ने स्वयं को पूरी तरह से सिंचाई परियोजनाओ के लिए लगा दिया| लेकिन तंग ने सेना पर भरोसा किया राजा जिए पर विजय हासिल करने के लिए| राजा वें ने राजा ज्होऊ को समर्पण कर दिया और विद्रोह करने की हिम्मत नहीं कर सका| राजा वू ने ज्होऊ का विद्रोह किया और समर्पण के लिए तैयार नहीं हुआ| इसी कारण से मैंने कहा की उन सभ के तरीके अलग-अलग थे|"

लाओ-दान ने कहा:
'मेरे थोडा नजदीक आओ नौजवान मै तुम्हे बताता हूँ की तीनो राजाओ और पांचो सम्राटो ने इस संसार पर शासन कैसे किया था| जब येल्लो सम्राट ने इस संसार पर शासन किया तो उसने लोगो के हृदयों को एकजुट कर दिया| अगर किसी के परिवार के किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती थी और उस पर कोई रोता नहीं था तो वे उसे बुरा भला कहकर कोसते नहीं थे| जब याओ ने

इस संसार पर शासन किया उसने लोगो के हृदयों को उनके परिवारों के प्रति निष्ठावान बनाया| अगर उनके किसी रिश्तेदार की हत्या की जाती थी तो वे इसका प्रतिशोध हत्या से ही लेते थे और दुसरे लोग इसके लिए उन्हें कसूरवार नहीं ठहराते थे| जब शुन ने इस संसार पर शासन किया तो उसने लोगो के हृदय को एक दुसरे के प्रति प्रतिस्पर्धा से भर दिया| उस समयएक महिला का गर्भधारण दस महीनो (चन्द्र) के लिए होता है जब वह एक शिशु को जन्म देती है, तब पांच और महीनो के बाद वह शिशु बोलने में सक्षम होता है और थोडा और बड़े होते ही वे एक दुसरे के साथ भेद जताना शुरू कर देते थे| यही कारण था की लोगो का जल्दी मरना शुरू हो गया| जब यु ने इस संसार पर शासन किया तब उसने लोगो के हृदयों को विकृत कर दिया| लोगो के हृदय अब केवल सेना के प्रति निष्ठा के लिए समर्पित थे, जो मानते थे की एक चोर को मारना एक साधारण मनुष्य को मारने से अलग होता है और उन्होंने स्वयं को बाकि दुनिया से अलग कर लिया जबकि इस संसार ने अपने आँख और कान खुले रखे| इस सभ ने इस संसार को बुरी तरह से भयभीत कर दिया और यही समय था जब मोइस्त और कांफुसियंस का उदय हुआ| उन्होंने मूल्यों और अधिकारों की एक प्रणाली सी बना दी और अब हर कोई ऐसे शासन कर रहा था जैसे कोई गृहणी अपने घर से झाड़ू निकलकर गन्दगी साफ़ कर रही हो| और इससे ज्यादा बताने को क्या रह जाता है!
मैंने तुम्हे बताया, जब तीनो राजाओ और पांचो सम्राटो ने इस संसार पर शासन किया तो उन्होंने प्रतिष्ठा पाई उससे जो शासन उन्होंने किया लेकिन वहा पर कभी ज्यादा कोलाहल नहीं हुआ| तीनो राजाओ का ज्ञान हमेशा सूर्य और चन्द्र के प्रकाश के साथ संघर्षरत रहा, वह पर्वतो और नदियों के तत्व के अनुरूप नहीं था और उसने चारो ऋतुओ की क्रमबधता का ह्रास किया| उनका ज्ञान एक सर्प के दंश से और एक बिच्छू के डंक से ज्यादा हानिकारक था| जैसे भूखे जानवर जब अपने लिए शिकार खोजते है उस समय कोई भी उनके चारो और शांति नहीं अनुभव कर सकता है और अपना स्वभावि प्राकृतिक जीवन नहीं व्यतीत कर सकता है| और फिर भी वे स्वयं को एक साधू घोषित करते है| क्या यह शर्मनाक नहीं है की उनमे भी कोई शर्म नहीं है?"
ज़ि गोंग को अपने पैर कभी आगे तो कभी पीछे जाते प्रतीत हुए और वह अपना संतुलन नहीं बना पाया|

कोंग-ज़ि ने लाओ-दान को बताया:
“मै छह साहित्यों का अध्ययन कर रहा हूँ, वे है सही-जिंग(स्त्रोत की पुस्तक), शु-जिंग(इतिहास की पुस्तक) ली-जी(रिवाजो की पुस्ता), युए-जिंग(संगीत की पुस्तक) और चुन-कुई(वसंत और पतझड़ का वृतांत) यह मै बहुत ही लम्बे समय से कर रहा हूँ| मैं इस ज्ञान को सभ से बाँटना चाहता था इसीलिए मै बहत्तर(७२) धनवान राजाओ के पास गया और पुराने समय के राजाओ द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले ताओ के तरीको की व्याख्या की| और सम्राट ज्होऊ और सम्राट जहो के द्वारा छोड़े गए प्रज्वलित पदचिन्हों की भी व्याख्या की पर उनमे से किसी भी राजा ने इसे उपयोगी नहीं पाया और इस पर कोई भी ध्यान नहीं दिया| ओह! लगता है लोगो को समझाना और उनसे बाते करना बहुत ही मुश्किल होता है! और क्या यह ताओ है जिसे समझना इतना मुश्किल है?"

लाओजी ने कहा:
"यह बहुत ही भाग्यशाली है की तुम उन राजाओ से मिले जो इतनी अच्छी प्रकार से शासन करने में निपुण है| छह साहित्य तो केवल जीर्ण हो चुके चिन्ह है जो पुराने राजाओ द्वारा उपयोग में लाये गए थे पर उनका उपयोग यह बताने में कैसे किया जा सकता है की उनमे से पहला कौन सा था? वे निशानीया तो केवल पैरो द्वारा छोड़े गए पदचिन्ह है लेकिन इनसे तुम पैरो का पता कैसे लगा सकते हो? जब दो व्यस्क हिरन एक दुसरे की तरफ टकटकी लगा कर देखते है तो इसका तात्पर्य उनमे मिलन की उत्तेजना है| और छोटे जीवो में जब नर ऊपर की तरफ से सुस्ताता है मादा निचे की तरफ से तो इसका तात्पर्य उनके मिलन का समय आ गया है| सभी प्रजातियों में जब तक नर और मादा का अस्तित्व है तब तक उनमे मिलन की प्रवृति रहेगी ही| उनके लिंग या जातिभेद को बदला नहीं जा सकता| भाग्य का भी परिवर्तन नहीं किया जा सकता है| समय को ठहराया नहीं जा सकता है| और ताओ का पथ रोका नहीं जा सकता ही| अगर कोई इस ताओ को स्वीकार करता है तो ऐसे कोई भी वस्तु नहीं है जिसे वो स्वयं से प्राप्त नहीं कर सकता है| इसे छोड़ दो और कुछ नहीं बचेगा जिसे तुम पा सको|"

कोंग-ज़ि तीन महीनो तक कही नहीं गया, तब वो फिर से लाओजी से मिलने पंहुचा और कहा :
“मैंने उसे प्राप्त कर लिया है! पक्षी अपने अंडो को सेते है! मछलिय पानी में तैरती है| जिनकी छाती चोडी होती है वे इसका प्रदर्शन करते है| जब एक अनुज पैदा होता है तो बड़ा भाई आंक्रन्दन करता है| बहुत समय से मै स्वयं को परावर्तित करने को सहमत नहीं था| लेकिन अगर स्वयं को ही अलग नजरिये से देखने को सहमत नहीं होता हूँ तो मैं दुसरो को बदलने की आशा कैसे कर सकता हूँ!"

लाओ-दान ने कहा:“हाँ, तुमने इसे प्राप्त कर लिया है!"

15.Unalterable Opinions

Having unalterable opinions with an air of self-confidence, rejecting society with distaste for the people involved in it, and engaging in intellectual discussions while cursing and slandering others are merely signs of self-righteousness. That's what the scholars in the mountains and valleys do - those people who remove themselves from the world and would prefer to either grow old and withered or drown themselves in a deep river.
Discussing benevolence, righteousness, faithfulness and loyalty, and being respectful, frugal, self-deprecating and yielding are merely methods of self-cultivation. That's what the scholars in contemporary society do - those people who teach and instruct others and could just as easily travel or stay at home as long as they were tutoring someone.
Discussing great achievements, establishing a name for themselves, regulating the proper rituals to be performed by rulers and their subjects, and keeping those above and below in their correct places are merely signs of government. That's what the scholars in the courts and administrative offices do - those people who promote their rulers and strengthen their country and would prefer to present awards for meritorious service or use force to make others comply.
To go off to forests and marshes, dwell in the vacant wilderness, and angle for fish leisurely wherever they happen to be are merely signs of non-motivation. That's what the scholars of the rivers and oceans do - those people who live as recluses and would prefer to idle away their time or get involved in some leisure activity.
To control the breath while exhaling and inhaling, expelling the stale energy while rejuvenating the fresh energy, and performing the bear strides and bird stretches are merely signs of desiring to increase longevity. That's what the scholars of Dao-In (a physical Daoist cultivation practice, precursor to Qi Gong) do - those people who cultivate their bodies and would prefer to out-live Peng Zu.
If someone could be self-confident but not have unalterable opinions, could cultivate themselves without being concerned about benevolence and righteousness, could govern without seeking fame for their accomplishments, could be at leisure without running off to the forests and marshes, and could reach longevity without needing to practice Dao-In, releasing what hasn't been forgotten and releasing what hasn't been possessed, then they could experience true tranquility without going to extremes and enjoy all the many beautiful things around them. This is the Dao of the heavens and the earth and the virtue of the sage.

Therefore, it's been said:
"Tranquility, peacefulness, stillness, indifference, nothingness and non-action - these are the results of the balance of the heavens and the earth and the substance of Dao and virtue."
Therefore, it's been said:
"The sage rests with them. Resting with them, she is in balance with change. Being in balance with change, she becomes tranquil and peaceful. In balance with change, being tranquil and peaceful, then worries and anxieties don't have the ability to affect her, shocking behavior doesn't have the ability to surprise her, and thus her virtue remains whole and she doesn't lose touch with her spirit."

Therefore, it's been said:
"During his life the sage proceeds with the heavens. At his death he transforms like all things. In stillness he shares a virtue with Yin. In action he shares a surge with Yang. His actions don't start out to attain blessings, and his actions don't create misfortune. If feelings arise he responds. If approached he reacts. If he has no other choice he'll get involved. He rejects knowledge and precedent, abiding by the patterns of the heavens. Because of that, nothing that comes from the heavens is a calamity, nothing that comes from others saps his energy, nothing people do is contentious, and no ghosts can seek retribution. He seems to float through life and rest in death. He doesn't have anxious thoughts, nor does he try to make schemes about what will happen. His brightness doesn't outshine anything around him, and his confidence isn't based on expectations. When he sleeps he doesn't dream, and he wakes up without concerns. His spirit is pure and unadulterated, and his individuality is uncontainable. Through nothingness, tranquility and peacefulness - only then can there be true merging with the heavens and virtue."

Therefore, it's been said:
"Sadness and happiness distress virtue. Being pleased or being angry distort Dao. Likes and dislikes forfeit kindness. So, when the heart isn't anxious about happiness, virtue is perfected. When it's unified and doesn't deviate, calmness is perfected. When there's nothing to resist, emptiness is perfected. When there's no need to join in with others, dilution is perfected. When there's nothing to oppose, pureness is perfected."

Therefore, it's been said:
"If you work yourself to the bone and don't rest, that's abusing your body. Endlessly using up your essence is overworking. Overwork produces exhaustion. The nature of water is to be clear when it's not churned and to be level when nothing moves it. If it's dammed up and not allowed to flow, it also won't be able to be clear. That resembles the virtue of the heavens."

Therefore, it's been said:
"Maintaining genuine pureness that can't be churned up, centered calmness that can't be altered, dilution that can't promote actions, and moving along with the flow of the heavens - these nurture the spirit's Dao. One who has a Gan sword from Yue keeps it in its sheath and well hidden, not daring to use it lightly, since it's a precious treasure. The essence of the spirit reaches out in all directions and flows everywhere, and there's no place it can't penetrate. It rises to the borders of the heavens above and coils around the earth below, transforming and nurturing all living things. It can't be conceived of as an image, but it can be considered synonymous with the Supreme. The Way of genuine pureness is only to abide by the spirit. Abide by it and refuse to lose it, then you'll unite with your spirit. When this unity has been mastered, then you'll naturally conform with the order of the heavens."

The people in the villages have a saying:
"Most people place importance on profits. A person of principles places importance on his reputation. A person with high ideals values devotion. The sage treasures his essence."
Therefore, pureness can be called that which isn't sullied. Genuineness can be called that which doesn't depart from spirit. One who has the ability to place the most importance in genuine pureness can be called a True Person.

१५|अटल सिद्धांत

आत्म-विश्वास के भाव के साथ अटल व् स्थिर मत का होना, इस समाज का त्याग कर देना और इसमें सम्मिलित लोगो में अरुचि का होना, लोगो को अपवाद कहते हुए और अभिशाप देते हुए ज्ञान और बुद्धिमता के विवादों में उलझे रहना ये शायद ही धार्मिकता और नितिपरायणता के चिन्ह है|

ये वही कार्य है जो पहाड़ो और घाटियों में रहने वाले संत करते है - ये लोग स्वयं को इस संसार से हटा लेते है और जंगलो में रहते हुए बूढ़े हो जाने या गहरी नदियों में डूब जाने को इससे ज्यादा तवज्जो देते है|
दयालुता, धार्मिकता, विश्वास और ईमानदारी और आदरणीय होना, मित्वययी होना,स्वयं के प्रतिकूल इच्छा होना और अनुवर्ती होना ये सभ शायद ही आत्म-साधना के तरीके है|

ऐसे ही कार्य समकालीन समाज में रहने वाले विद्वान करते है - वे औरो को सिखाते है और बताते है| वे घरो(दुसरो के घरो में अतिथि बन कर) में रह सकते है और यात्रा कर सकते है इतनी आसानी से जैसे की वो किसी को पढ़ा रहे हो| वे अपनी महान सफलताओ की बाते करते है, अपने लिए नामो और उपाधि का निर्धारण करते है, रीती रिवाज तथा विभिन्न कार्यो का शासको के लिए नियमन करते है| वे लोगो को किसी को ऊँचे पद पर तो किसी को निचे स्थान पर रखते है| ये शायद ही किसी अच्छे शासक के सूचक है|

यही वे कार्य है जो न्यायालयों और दरबारों में रहने वाले विद्वान करते है - ये अपने राजाओ का प्रदर्शन करते है, अपने राज्य को ताकतवर बनाते है, लोगो को उनके सेवा के लिए पुरुस्कारित करते है और बाकियों को अपनी शक्ति द्वारा झुकने के लिए मजबूर करते है|

वनों और दलदलो में भटकना, निर्जन स्थानों पर रहना, और मछली पकड़ने के लिए लालायित रहना ये सभ तो शयद ही उतेजना रहित होने के लक्षण है| यही वे कार्य है जिन्हें जंगलो और समुद्रो में रहने वाले विद्वान करते है - वे लोग वैरागी होकर जीते है और अपने खाली समय को मनोरंजक कार्यो में बिताते है|

अपने श्वास और प्रश्वास को नियंत्रित करने की कौशिश करना पुरानी उर्जा को फेंकना और ताजा और नई उर्जा को अपने अंदर समेटना, विभिन्न प्रकार के पशु पक्षियों जैसे आसनों को करना ये शायद ही लक्षण है दीर्घकालीन जीवन प्राप्त करने के| ये वो कार्य है जिन्हें ताओ वाले विद्वान् करते है - ये वो होते है जो अपने शरीर को साधते है और पेंग-जू की तरह लम्बा जीवन व्यतीत करना चाहते है|

अगर किसी को आत्म विश्वास हो पर उसका निश्चय अटल व् निश्चल न हो, वह साधना कर सके बिना दयालुता और धार्मिकता के बारे में चिंतित हुए, नियमन कर सके बिना सफलता और प्रतिष्ठा को चाहे, आनंद पा सके बिना जंगलो और समुद्रो में भटके, और दीर्घजीवन पा सके बिना प्राणायाम का अभ्यास किये, मुक्त हो जाये उन अनुभवों से जो वे जानते है और जिन्हें वे भूल गए है, तब वही पूर्ण शुद्धता की स्थिति में होता है| बिना अपनी पूरी उर्जा को इसके लिए लगाये और बिना किन्ही वस्तुओ पर आश्रित हुए| यही तो स्वर्ग और धरती की ताओ है और एक साधू का सामर्थ्य है|

इसीलिए तो यह कहा गया है :
“स्पष्टता, शुद्धता, स्थिरता, शांति, निष्पक्षता, रिक्तता और निष्क्रियता - ये परिणाम होते है स्वर्ग और धरती के संतुलन के और ये हिस्सा होते है महान ताओ का और महान सामर्थ्य का|"

इसीलिए तो यह कहा गया है :
"एक साधू इनसे परिपूर्ण होता है, तथा इनसे परिपूर्ण होकर वह परिवर्तन के साथ संतुलन में होता है| परिवर्तन के साथ संतुलन में होकर वह शांत व् शुद्ध स्वरूप हो जाता है| परिवर्तन के साथ संतुलन में होकर शांत व शुद्ध होकर तब उसको प्रभावित करने की शक्ति चिन्ताओ और तकलीफों के पास नहीं होती है, किसी का उद्वेगित व्यवहार उसे आश्चर्यचकित नहीं करता है और तब इस प्रकार होकर उसका सामर्थ्य परिपूर्ण होता है और वह अपनी आत्मा के साथ सानिध्य में होता है|"

इसीलिए तो यह कहा गया है:

"अपने जीवनकाल में एक साधू स्वर्ग के साथ साथ अग्रसर होता है| मृत्यु के समय बाकि वस्तुओ की तरह उसका परिवर्तन हो जाता है| अपनी स्थिरता में वह यिन के साथ अपना सामर्थ्य साँझा करता है| अपने कार्यो में वह यंग के साथ हिलोरे लेता है| उसके कार्य आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए नहीं आते है तथा उसके कार्यो से कोई विपत्ति भी नहीं उत्पान्न होती है| अगर कोई भाव उत्पन्न होता है तो वह प्रतिक्रिया देता है| अगर वे उसके पास आते है तभी वह कोई कार्य करता है| अगर उसके पास कोई विकल्प नहीं होता है तो तभी वह उस कार्य में निहित होता है| उसके द्वारा ज्ञान को और स्वर्ग द्वारा दिए गए पूर्व उदाहरणो को नकारा हुआ होता है|
यही कारण है की कुछ जो स्वर्ग से आता है वह है शांति, वह कुछ जो औरो से आता है वह उसकी उर्जा को सोंख नहीं सकता है, वह कुछ जो लोग करते है वह विवादस्पद होता है तथा कोई भी भुत-प्रेत प्रतिकार को नहीं तलाशता है| वह जीवन में प्रवाहित सा प्रतीत होता है और मृत्यु में अवलंबित होता है| उसकी सोच चिंतामुक्त होती है और भविष्य में जो होने वाला है उसके लिए वो योजनाये नहीं बनता है| उसका प्रकाश उसके चारो तरफ होने वाली वस्तुओ के तेज को धीमा नहीं करता है तथा उसका विश्वास उम्मीदों पर टिका हुआ नहीं होता है| जब वह सोता है तो वह स्वप्न नहीं देखता है और वह बिना किसी उदेस्शय के जागता है| उसकी आत्मा स्पष्ट व् शुद्ध है और व्यक्तित्व बहुत ही विशिष्ट है| इस शुन्यता, शांति और स्पष्टता के माध्यम से तभी कोई स्वर्ग और सामर्थ्य के साथ एकरूप हो सकता है|"

इसीलिए तो यह कहा गया है:
"सुख और दुःख सामर्थ्य का नाश करते है| खुश होना या दुखी होना ताओ को अस्पष्ट कर देता है, इच्छाए और आनिच्छा दयालुता को समाप्त कर देती है| इसीलिए जब ह्रदय सुख के लिए चिंतित नहीं होता है तब सामर्थ्य पूर्ण होता है| जब हम एकजुट होते है और किसी वस्तु से प्रभावित नहीं होते है तभी पूर्ण स्थिरता प्राप्त होती है| जब कोई भी वस्तु प्रतिरोध करने के लिए नहीं रह जाती है तभी पूर्ण शुन्यता प्राप्त होती है | जब औरो के साथ संबंध रखने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है तभी विलयन हो पाता है| जब किसी भी वस्तु के प्रति विरोध उत्पन्न नहीं होता है तभी पूर्ण शुद्धता की प्राप्ति होती है|"

इसीलिए तो यह कहा गया है:
"अगर आप बिना रुके निरंतर आखिरी सांस तक कार्य करते है तो आप अपने शरीर को हानि पंहुचा रहे होते है अपने सामर्थ्य का बिना रुके ऐसे निरंतर उपयोग करना अतिश्रम कहलाता है| और यह अतिश्रम पतन और समाप्ति का कारण होता है| जल का स्वभाव निर्मलता और शांत होना है तब उसमे किसी भी वस्तु के कारण कोई हिलाव या गति नहीं होती है| लेकिन अगर उसे बांध बनाकर बहने से रोका जाए तो वह निर्मल नहीं रह पाता है| यही स्वर्ग के सामर्थ्य के सदृश भी है|

इसीलिए तो यह कहा गया है:
“जिसे दूषित न किया जा सके उस विशुद्ध स्पष्टता को बनाये रखना, जिसे अस्थिर न किया जा सके उस एकाग्र स्थिरता को बनाये रखना, विलयन होना जो अब कार्यो को प्रोत्साहित न करे और स्वर्ग के प्रवाह के साथ प्रवाहित होना - से सभ ताओ का परिपोषण करने वाले होते है| वह जिसके पास युए की ‘गुन’ तलवार है, वह उसे अच्छी तरह से छिपाकर मयान में रखता है तथा वह उसे साधारण नहीं समझता है क्योंकि वो एक मूल्यवान खजाना है| आत्मा का मर्म सभी दिशाओ में फैला हुआ है और हर जगह उपस्थित है, ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ यह नहीं पहुच सकता है| यह स्वर्ग की सीमा तक जा सकता है और धरती के चारो और विराजमान हो सकता है, सभी जीवित वस्तुओ को उर्जा प्रदान करता हुआ उन्हें पोषित करता हुआ| इसका विचार एक वस्तु के रूप में किय नहीं जा सकता है पर उस परम के पर्याय इसका ध्यान किया जा सकता है| उस सम्पूर्ण स्पष्टता का पथ केवल उस आत्मा का पालन करना होता है| उसका पालन करना और उससे पृथक नहीं होना, तब आप अपनी आत्म के साथ एकरूप हो जाते हो| जब आप इस एकरूपता में पूरी तरह से निहित हो जाते हो तो आप स्वभाविक रूप से ही स्वर्ग के अनुक्रम के अनुसार होते हो|"

गाँव में रहने वाले लोगो की एक कहावत है :
"ज्यादातर लोग लाभ को महत्व देते है| उसूलो और सिद्धांतो वाला व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा को महत्व देता है| एक महान आदर्शो वाला व्यक्ति समर्पण को महत्व देता है| एक साधू अपने परम तत्व की रक्षा करता है|"
इस प्रकार से शुद्धता को वह नहीं कहा जा सकता जो कभी दूषित हुई है| परिपूर्णता उसे कहा जाता है जो आत्मा से पृथक न हो| और वह जो इस परिपूर्ण शुद्धता को ही अपना सारा महत्व देता है उसे ही यथार्थ व्यक्तित्व कह सकते है|

16.Trying to Repair What's Natural

These are the people who are called the deceived and ignorant ones: those who seek to improve their innate nature by means of vulgar learning in order to return to their origin, and those who wish to control their desires by following vulgar ways of thinking in the hope of achieving illumination.

The ancient ones ruled by the Tao:
They developed their understanding in calm;
Knowledge was their life, yet they did nothing with knowledge.
When knowledge and calm nourish each other,
Then harmony and order emerge as from innate nature.
When Virtue enfolds everything, there is benevolence.
When the Tao is set out in order, there is righteousness.
When righteousness is clearly understood and all adhere to it, there is loyalty.
When the centre is pure and returns to its proper form, there is music.
When sincerity is articulate through the body and is expressed in style, there is ritual.

However, following ritual and music in an appropriate way will lead the whole world into confusion. When someone tries to correct others, his own Virtue is clouded over, and his Virtue will no longer reach others. Trying to do so will destroy everyone's innate nature.

Even in chaos, the ancient ones were centred, for they were one with their generation and followed the paths of simplicity and silence. In those times, yin and yang were in harmony, ghosts and spirits did nothing wicked, the four seasons followed each other, all forms of life were without injury and no living thing suffered early death. The people had knowledge but they did not use it; all this was perfect Oneness. In those times no one planned anything, for everyone maintained constant spontaneity.

In an effort to capture virtue and subjugate it, Sui Ren and Fu Xi took control of the world and the people obeyed them, but they didn't feel any sense of unity with each other. In a later effort to capture virtue and subjugate it, Shen Nong and Yellow Emperor (Huang di) took control of the world and made the people feel secure, but there was no one to offer guidance. In a later effort to capture virtue and subjugate it, King Yao of Tang and King Shun of Yu took control of the world, and they started the customs of reforming people through government. They diluted what was pure and dissipated simplicity. Their concept of goodness went against Dao and their behavior defiled virtue. After that they ignored their own nature and instead followed their minds. Minds joined together with other minds to get a sense of how to use their knowledge, but that wasn't enough to repair what was going on in the world. So then they added cultural pursuits and increased promotions. Cultural activities squashed natural dispositions, and promotions drowned sensitivity. After that the people began to feel deluded and misled, and weren't able to return to their natural dispositions nor were they able to revert back to what it had been like before.

Observing what's happened, we can see that this age has withdrawn from Dao, and Dao has withdrawn from this age. Since they have both withdrawn from each other, how could a person of Dao arise in this age, and how could this age progress with Dao? Since Dao won't rise in this age and this age won't raise Dao, even if a sage came out of the mountains and forests into the midst of us, their virtue would remain hidden. It would remain hidden, but not because the sage chose to hide it.
In the past there were those who were called hidden scholars, but not because their bodies were bent over in supplication as if they couldn't look anyone in the eye, nor because they kept their mouths shut and didn't utter a sound, nor because they concealed their knowledge and wouldn't express themselves. At the time, making oneself act that way would have been utterly absurd. If the times were favorable for them to make great strides in the world, they would have done that then returned whole to where they came from without leaving a trace. If the

times were unfavorable, they'd detach themselves from the world, then plant deep roots while investigating the limits and wait. Either way, they'd be preserving their bodies.
Those who preserved their bodies in ancient times didn't use their knowledge to get into arguments nor to make themselves appear intelligent. They didn't use their knowledge to detach from the world nor to detach from virtue. Even if they found themselves in a dangerous situation, they'd stay still and return to their own nature. What other action would they need to take! Petty actions aren't attuned to Dao, and petty perceptions aren't attuned to virtue. Petty actions injure the ability of Dao, and petty perceptions injure the ability of virtue.
Therefore, it's been said:
"Correct oneself and that's all. The happiness of being whole is called achieving one's own will."

In the past, what they meant when they referred to those who had achieved their own will wasn't referring to those who had chariots and wore crowns, but to those who had no use for such benefits, but were happy nonetheless. Nowadays, what's meant when referring to those who have achieved their own will DOES refer to those with carriages and crowns. Carriages and crowns are accouterments for the body, but aren't related to one's inborn nature. Those things might be acquired and be depended on. They're dependable in the sense that they can't be prevented from coming and they can't be stopped from leaving. Therefore, they (those in the past) didn't build up expectations on whether or not they had carriages and crowns, nor were they quick to define themselves as vulgar if they had very little materially. Their happiness with whatever they did have was the same, and therefore they didn't have a reason to worry about it. Nowadays people try to depend on something that will eventually leave them, then they can't be happy. From that point of view, although they might be happy for the moment, it's just because they haven't yet come upon some disaster.
Therefore, it's been said:
"Those who give up themselves to other things and lose their naturalness through self-deprecation are called upside down people."

१६| जो प्राकृतिक है उसे सुधरने का प्रयत्न करना जो प्राकृतिक है

ये वो व्यक्ति है जिन्हें अज्ञानी व् भर्मित हुआ कहा जा सकता है - वे जो विभिन्न प्रकार के अशिष्ट अध्ययनों द्वारा अपने उद्गम को प्राप्त होने के लिए अपनी आत्मिक प्रकृति को सही करना चाहते है, और वे जो अपनी अपनी अभद्र संकुचित सोच के द्वारा इच्छाओं को नियंत्रित करना चाहते है इस आशा में की उन्हें उस परम प्रकाश का बोध होगा|

जो प्राचीन थे उन्होंने ताओ के अनुरूप शासन किया :
उन्होंने अपनी समझ का स्थिरता में विकास किया;
ज्ञान उनका जीवन था, फिर भी उन्होंने ज्ञान का कोई उपयोग नहीं किया|
जब ज्ञान और स्थिरता एक दुसरे को परिपूर्ण करते है
तब आनंद और सुव्यवस्था का उत्थान स्वयं से होता है|
जब सामर्थ्य हर जगह होता है तब वहा पर धर्म भी होता है|
जब ताओ का व्यवस्थन सही होता तब वहा धर्म भी होती है|
जब धर्म को अच्छी तरह से समझा जाता है और इसका पालन होता है तब वहा ईमानदारी भी होती है|
जब केंद्र शुद्ध होता है तथा अपने वास्तविक रूप में होता है तब वहा संगीत होता है|
जब निष्ठा और निष्कपटता इस शरीर के अंदर विराजमान होती है और समय आने पर अग्रसर होती तो वहा रीती रिवाज होते है|

फिर भी रिवाजो और संगीत का इस प्रकार से अनुगमन करना इस संसार को उलझन व् कोलाहल की स्थिति में ले जाता है| जब कोई दुसरो को सही करने का प्रयत्न करता है तो उसका स्वयं का सामर्थ्य ही भर्मित होने लगता है तब उसका सामर्थ्य दुसरो तक पहुच ही नहीं पाता है| ऐसा करने का प्रयत्न करना स्वयं की ही आत्मिक प्रकृति को हानि पहुचता है|
कोलाहल के समय भी प्राचीन लोग एकाग्र होते थे वे अपनी सम्पूर्ण पीढ़ी के साथ एक होते थे तथा सादगी और सहजता के मार्ग का पालन करते थे | उस समय में यिन और यंग परस्पर मेल में होते थे, भुत और प्रेत हानिकारक नहीं होते थे और चारो रितुए एक दुसरे का अनुगमन करती थी, जीवन के सभी रूप बिना क्षति के स्थापित थे और किसी को भी समय से पहले मृत्यु नहीं प्रभावित करती थी| उनके पास ज्ञान था पर वे उसका उपयोग नहीं करते थे; यही सभ तो सम्पूर्ण एकरूपता थी| उस समय में कोई भी कैसी भी योजना नहीं बनता था और हर कोई निरंतर सहजता को बनाये रखता था|

सामर्थ्य को अधिकृत करने और उसे वशीभूत करने के प्रयत्न के लिए सुई-रेन और फु-क्सी ने इस संसार का नियंत्रण लिया, उन्होंने लोगो को उनकी आज्ञा मानने का आदेश दिया लेकिन फिर भी वे उनके साथ एकरूपता का अनुभव नहीं कर पाए| उसके बाद सामर्थ्य को अधिकृत करने और वशीभूत करने एक और प्रयत्न में शेन-नोंग और येल्लो राजा न संसार पर नियंत्रण लिया और लोगो को सुरक्षित महसूस करवाया पर तब वहा पर उनका (लोगो का) मार्गदर्शन करने के लिए कोई नहीं था| उसके बाद के एक और इसी प्रयत्न में राजा यो और राजा शुन ने संसार का नियंत्रण लिया और लोगो को शासन के माध्यम से बदलने की परंपरा आरंभ की पर उन्होंने लोगो की शुद्धता और शांति का विलयन कर दिया और उनकी सादगी को हानि पहुचाई| इस प्रकार से इन का होना ताओ के विपरीत है और यह सामर्थ्य को भ्रष्ट करती है | इसके बाद (इन व्यक्तियों के आने के बाद) उन्होंने (लोगो ने) अपने स्वयं की प्रकृति को मानने की बजाय अपने मन और बुद्धि का अनुगमन करना शुरू कर दिया| इस प्रकार एक बुद्धि और दूसरी बुद्धि के साथ जुडी इस चिज को निर्धारित करने के लिए की ज्ञान का उपयोग कैसे किया जाए, पर इस संसार को जो क्षति पहुची थी उस का सुधार करने के लिए यह भी पर्याप्त नहीं था| तब उन्होंने सामाजिक नियमो को बनाया और पारितोषिको को बढ़ावा दिया| सामजिक गतिविधियो ने प्राकृतिकता का ह्रास किया तथा पारितोषिको ने संवेदनशीलता को समाप्त कर दिया| इसके बाद लोगो ने भर्मित व् मार्गभ्रष्ट हुआ अनुभव करना आरंभ कर दिया लेकिन वे न ही तो अपनी वास्तविक प्रकृति को लौट पाए न ही वे पहले जैसे दोबारा हो पाए|

जो हो रहा है उसका अवलोकन करके हम यह जान सकते है यह युग ताओ से कितना पीछे हट गया है और ताओ इस युग से पीछे हट गयी है| चूँकि वे दोनों एक दुसरे से पीछे हट गए है तो इस युग में एक ऐसे व्यक्ति की उत्पत्ति कैसे हो सकती है जो ताओ को समझ सकता हो और कैसे यह युग ताओ के बिना प्रगति कर सकता है? चूँकि ताओ का उत्थान इस युग में नहीं होगा और यह युग ताओ को उत्पन्न नहीं करेगा, यदि एक साधू भी कही वनों और पर्वतो में से हमारे बीच आ जाये तो उसका सामर्थ्य भी अदृशय ही होगा| यह अदृशय होगा पर इसीलिए नहीं की वह साधू इसे हमसे छिपाना चाहता है|

प्राचीन समय में ऐसे लोग थे जिन्हें गुप्त विद्वान् कहा जाता था, लेकिन यह इसलिए नहीं था की उनका शरीर प्रार्थना से इतना झुका हुआ था की वे किसी की आँखों में भी नहीं देख सकते थे और न ही इसलिए था की वे चुप रहते थे और किसी से एक शब्द भी नहीं कहते थे और न ही इसलिए था की उन्होंने अपने ज्ञान को छिपा दिया था और वे स्वयं का प्रदर्शन नहीं करना चाहते थे लेकिन यह ऐसा इसलिए था की उस समय स्वयं का आचरण इस प्रकार से करना बिलकुल ही विवेकहीन और हास्यापद होता| यदि समय उन्ही किसी एक चीज़ को प्राप्त करने के लिए कहा होता तो वे उस पूर्णता को प्राप्त होना चाहते जिससे उनकी उत्पत्ति हुई है बिना कोई अपना चिन्ह छोड़े| अगर समय इसके लिए हितकारी नहीं होता तो वे स्वयं को इस संसार से विरक्त कर लेते तथा स्वयं को उस परम मूल में स्थापित कर इस सभ का अवलोकन करते हुए केवल प्रतीक्षा करते| किसी भी मार्ग पर वे अपने शरीर को परिरक्षित कर रहे होते|

जो प्राचीन समय में अपने शरीर को परिरक्षित कर रहे होते थे वे अपने ज्ञान का उपयोग किसी भी प्रकार के वाद विवाद में पड़ने के लिए नहीं करते थे और नहीं वे इसका उपयोग अपनी बुद्धिमता के प्रदर्शन के लिए करते थे| वे अपने इस ज्ञान का उपयोग इस संसार से वियुक्त होने के लिए नहीं करते थे और न ही अपने सामर्थ्य से वियुक्त होने के लीये| स्वयं को मुश्किल परिस्थितयो में पाकर भी वे स्थिर रहते थे और अपनी वास्तविक प्रकृति को लोटना चाहते थे| तब और क्या कार्य उन्हे करने की आवश्यकता रह जाती है! तुच्छ कार्य ताओ के साथ लय में नहीं होते है, और तुच्छ संवेदनाए सामर्थ्य के साथ लय में नहीं होती है| तुच्छ कार्यो का करना ताओ को क्षति पहुचता है, और तुच्छ अनुभूतियो का होना सामर्थ्य की योग्यता को क्षति पहुचता है|

इसीलिए यह कहा गया है:

“स्वयं को सुधारो और बाकि सभ कार्य स्वयं हो जायेगे| परिपूर्ण होना एकरूप होने के आनंद के होने होना कहा जाता है स्वयं की इछाओ की प्राप्ति को|

पुराने समय में, उनका व्यख्यान करते वक़्त जिनको इच्छाओ की प्राप्ति हुई तब उनका अर्थ उनसे नहीं होता था जीनके पास सिंहासन होता था, घोड़े होते थे, धन होता था बल्कि उनसे होता था जिनके लिए इन सभ का कोई लाभ नहीं है और वे इनके बिना ही आनंदित होते थे|

आजकल उनका व्यख्यान करते वक़्त लोगो का तात्पर्य उनसे होता है जिनके पास बहुत धन है, राज्य है, सम्पदा है| मुकुट का होना, धन संपदा का होना तो केवल इस शरीर के अतिरिक्त उपस्कर है लेकिन इनको रखने वाले व्यक्ति जन्मजात प्रकृति के साथ नहीं जुड़े होते है| इन वस्तुओ को प्राप्त किया जा सकता है व इन पर निर्भर हुआ जा सकता है| इन पर निर्भर इस अर्थ में हुआ जा सकता है की इन्हें आने से रोका नहीं जा सकता है और नहीं ही इन्हें जाने से रोका जा सकता है| इसीलिए वे जो प्राचीन समय में थे वे उम्मीद और आशाए नहीं रखते थे की क्या उनके पास मुकुट या धन संपदा होनी चाहिए या नहीं, न ही वे स्वयं का वर्णन करने में बहुत ही तीव्र थे और वे उनके पास इतनी कम वस्तुए क्यों है इसके लिए अतृप्त भी नहीं थे| उनका आनंद किसी भी वस्तु के साथ जो उनके पास होती थी एक जैसा था इस प्रकार उनके पास किसी भी चीज़ के लिए चिंतित होने का कोई कारण नहीं था| आजकल लोग उस पर निर्भर होने का प्रयत्न करते है जो एक दिन चली जानी निश्चित है इस प्रकार वे आनंदित नहीं हो सकते है| इस दृष्टि से देखने पर हालाँकि वे कुछ समय के लिए खुश तो हो सकते है पर यह इस कारण होता है की उन्होंने अभी तक उसके विनाश को नहीं देखा है|

इसीलिए तो यह कहा गया है :

"वे जो बाकि वस्तुओ पर निर्भर होकर अपने प्राकृतिक स्वभाव को त्याग देते है, आत्म-प्रतिवाद के साथ होने के कारण उन्हें अस्त-व्यस्त व्यक्ति ही कहा जा सकता है|"

17.The Autumn Floods

At the time of the autumn floods, hundreds of streams poured into the Yellow River. The water surged and flowed so much that it filled up the valleys between the cliffs, and you couldn't distinguish whether it was a horse or ox standing on the opposite bank. The river god was very pleased at this and delighted with himself, believing that he now contained everything beautiful in the world within himself. He flowed on in an easterly direction until he reached the North Sea. He looked out to the east and couldn't see where the expanse of water ended. At that point the river god began rolling his eyes, looking to the ocean for what might be a sea god, and sighed:
"There's a saying among the villagers: 'Someone who's repeatedly heard and read about Dao thinks that no one could compare with them.' That's a description of me. I once heard some people say that Zhong Ni's (Confucius) words were petty, and they also made light of Bo Yi's sense of righteousness. At first I didn't agree with that, but now that I've come to see how huge you are, I realize that if I'd never come to your gate I would have been in danger. Those who are actually practitioners of the great method would have had a long laugh at me."
The god of the North Sea said:
"You can't tell a frog in a well about the sea since it's restricted by its own confines. You can't tell a summer insect about ice since it only survives for one season. You can't tell a biased scholar about Dao since he's so tied up in his own theories. Now you, who came from your riverbanks and cliffs to observe the great ocean, have found out how insignificant you really are. Now you're ready to join in conversations about the Great Principle.
"Of all the water in the world, there's none as large as the ocean. All the many rivers ceaselessly pour into it, but it never gets filled up. It's constantly draining off the extreme edges, but is never emptied.
(Note: The ancient Chinese believed the world was flat, and that the water of the sea flowed out through huge gates at the edges of the earth.)
"It doesn't vary during spring or autumn, and knows nothing about floods or drought. It spreads so much further than the Yangtze and Yellow rivers that it can't possibly be measured. However, I've never once used these facts to think higher of myself, since my shape is comparable to the heavens and the earth and my vital energy is received from Yin and Yang. I rest between the heavens and the earth like a small rock or tiny tree would rest on a huge mountain. Since my existence in the scheme of things is so small, how could I think any higher of myself! Can't we calculate the existence of the four seas lying between the heavens and the earth as being the same as the existence of a few pebbles in a huge marsh? Can't we calculate the existence of the Middle Kingdom (China) within the four seas as being the same as a few grains of rice in a very large warehouse? We have tens of thousands of names for things, and a person is merely one of them. In Jiu Zhou (aka the Nine Regions, a poetic name for China) there are many foods that can be eaten to sustain life and many boats and carts that can be used for transportation. A human being is merely one of those things. When compared to the tens of thousands of things, isn't a person similar to one of the tiny hairs on a horse's back? That the Five Emperors made decisions about how to pass on their thrones, that the Three Kings chose to get involved in wars, that people shrouding themselves in benevolence spend a lot of time worrying, and that appointed officials overwork themselves - all those things end up being nothing more than this (no more significant than a hair on a horse's back). Bo Yi ran off in order to gain reputation for his cause. Zhong Ni (Confucius) lectured in order to promote his cause. Both of them did so because they thought highly of themselves. Isn't that similar to you thinking highly of yourself because of your flooding waters?"
The river god said:
"If that's so, can I take the heavens and the earth to represent what is large, and the tip of a thin hair as being small?"
The North Sea god said:
"No. As for things, their capacity can't be measured, their progression can't be stopped, their differences don't remain constant, and their beginnings and endings can't be calculated. Therefore, to have great knowledge is to be able to observe both far and near, to see the small as not being lacking and the large as not being abundant - knowing their capacity can't be measured. It's being able to look at what happened in the past and what's happening in the present without feeling stifled by what might eventually happen and to not struggle forward to grasp at something - knowing that progression can't be stopped. It's being able to observe fullness and emptiness without

delighting in what's been received nor grieving over what's been lost - knowing that those differences don't remain constant. It's having a clear understanding that the path has already been smoothed out without making schemes in life nor having anxiety about death - knowing that beginnings and endings can't be calculated. If you try to gauge what a person knows, it wouldn't help you figure out what they don't know. If you try to gauge how long a person is alive, it wouldn't help you figure out how long they weren't alive. If you try to determine what's lacking in what's small by comparing it to the immensity of what's large, you'd get completely bewildered and wouldn't be able to see how you fit in the mix. From this point of view, how could we determine that the tip of a hair is adequate to describe what's extremely small, or that the heavens and the earth are adequate to describe what's immensely large?"

The river god said:
"Those who give their opinions about what's going on in the world today all say: 'The smallest molecule is without a shape, and the largest thing can't be enclosed.' Do you agree with that?"

"From the viewpoint of what's small, what's large seems incomplete (as its boundaries can't be found). From the viewpoint of what's large, what's small can't be made out clearly (as it gets lost in the background). As for what's microscopic, it's the smallest of the small. As for what's immense, it's the largest of the large. In some circumstances it's appropriate to distinguish between them. What's infinitely small and what's grossly large both have a shape. However, no one can make out the borders of what has no shape, and no one can find anything lacking in what can't be enclosed. What can be sorted out with words can be likened to what's grossly large, and what remains conveyed through thoughts can be likened to what's infinitely small. However, what can't be sorted out with words nor be thought out in the mind can't be restricted to being either grossly large or infinitely small.

"To behave like a great person means not intentionally doing anything that might be harmful to others, but not going to the extreme of setting up mandates for benevolence and kindness. It means taking action without a sense of personal gain, but not looking down on those who jump at the opportunity to fleece others. It means not fighting over possessions or wealth, but not refusing to accept them in order to feel like you're better than others. It means not depending on others to make things run more smoothly in life, but not giving yourself pats on the back for working hard to earn an income nor try to humiliate those who are greedy. It means taking a different route than most of society, but not feeling arrogant for going against authority. It means acting openly toward others, but not looking down on the flatterers and sycophants. It means neither allowing rank and prestige in society to encourage you, nor allowing punishments and threats to discourage you. It means understanding that right and wrong can't be distinguished from one another, and that thin and thick can't be separated from one another. It's been said: 'A person of Dao is not well known. Achieving virtue isn't an accomplishment. A great person is without a sense of self.' By not looking to create differences, you thus become whole."

The river god said:
"Whether you're looking at things that are outside or inside of yourself, how can you arrive at a conclusion as to whether they're noble or lowly? Or if they're small or large?"

The North Sea god said:
"From the viewpoint of Dao, things are neither high nor lowly. From the viewpoint of things, they think of themselves as high and of others as lowly. From the viewpoint of conventional society, it isn't up to individuals themselves to determine whether they're high or lowly. From the viewpoint of observing differences, if something is considered to be large because it's larger than something else then there's nothing that isn't large, and if something is considered to be small because it's smaller than something else then there's nothing that isn't small. Seeing that the heavens and the earth can be perceived like grains of rice and that the tip of a hair can be perceived like a mountain, that shows more clearly how many different perceptions there can actually be. From the viewpoint of what's effective, if something is considered to be so because it's more so than others then there's nothing that isn't so; and if something is considered not to be so because it's less so than others then there's nothing that is so. Seeing

that the east and west, although they're opposites, can't exist without each other, then it can be determined how to divide up effectiveness. Using the viewpoint of preference, if something is considered to be right because it's more right than something else, then there's nothing that isn't right, and if something is considered to be wrong because it's more wrong than something else, then there's nothing that isn't wrong. Seeing that Yao (the sage) and Jie (the tyrant) each considered themselves to be right and the other to be wrong, then it can be observed how preferences can affect one's behavior.
"In ancient times when Shun was given the throne by Yao he became emperor. However, when Zhi was given the throne by Kuai he was cut down. Tang and Wu fought for their positions and became kings. However, when Bai Gong fought for position he was destroyed.
(Note: When Yao gave the throne to Shun, the state was strong and in order. When Kuai gave the throne to Zhi in an effort to imitate Yao, Yan was weak and on the verge of being attacked by the other states. Tang [founder of the Shang Dynasty] and Wu [founder of the Zhou Dynasty] both contended with family members for their positions and succeeded, but when Bai Gong tried to do the same thing yet failed to seize the throne of the state of Chu, he then committed suicide.)

"From the viewpoint of what was stated above, we can see that the rituals used for contention or abdication, and the paths chosen by Yao and Jie, can sometimes be considered high and sometimes be considered lowly, but they don't always produce the same effects. An elaborate beam of wood can be used to strengthen a city wall, but it can't be used to plug up a hole. Each tool can be said to have it's specific use. Qi Ji and Hua Liu (thoroughbred race horses) in one day can gallop for over three hundred miles, but they can't equal a fox or a weasel in catching a mouse. Each of their skills can be said to have a specific use. An owl can see well enough at night to pick off a flea or see the tip of a hair, but if it comes out in the daytime it just stares blankly and couldn't make out a mountain. Each of its natures can be said to have a specific use. Therefore, when it's said: 'Take to imitating what's right, and wrong will vanish; imitate order, and chaos will vanish!' it shows that there's no clear understanding of the principles of the heavens and the earth nor of the essence of living things. In that case, by imitating the heavens, then the earth would vanish, and by imitating Yin, then Yang would vanish? That can't show any clear understanding at all. Yet there are those who still keep talking like this and won't give it up - if not foolishly then because they're being deceptive. The emperors and kings had their own specific methods for abdicating, and the Three Dynasties had their own specific methods for succession.
(Note: At certain points in history it was considered proper for a king to abdicate his throne to one of his high officials. During other times the throne had to be passed down to the king's eldest son or another family member.)
"Those who ignored what was appropriate to the times or went contrary to the customs were called usurpers. Those who were in accord with the times and conformed to the customs were called followers of righteousness.
"You'd better keep very silent, river god! How could you know how to classify what's high and what's lowly, or to know which school of thought is small and which is large?"
The river god said:
"If that's so, then how can I know what to do and what not to do? If I refuse to accept anything and abandon my own preferences, what would end up being my alternative?"

The North Sea god said:
"From the point of view of Dao:
"To consider anything to be high or lowly can be called going against natural development. Without having restraint and simply following your own aspirations, your connection with Dao will be greatly obstructed.
"To consider anything to be too few or too many can be called declining natural gifts. Without feeling unity and simply going on your own way, your connection with Dao will be erratic.
"Be stern! As though you were the entrusted ruler of a country who wasn't selfish with virtue.
"Be obedient! As though you were the one entrusted with regulating the sacrifices made to the land who wasn't selfish with their blessings.

"Be extensive! As though you were one who didn't lack the ability to go in all four directions and who couldn't find a place to set boundaries.
"If you're able to embrace all living things, which one would you not find a place for under your wings? This would be called being without borders. If all living things are united simultaneously, which of them could be considered to be short or long? Dao is without a beginning or an end, but things are born and die, and outcomes can't be depended upon. In one moment empty and in another moment full, without stability of form. The progression of the years can't be altered, nor can time be stopped. Decay and growth, fullness and emptiness - with an ending there is a new beginning. In that way we can discuss the methods used by the greatest form of righteousness and the theories that create the patterns for all living things. After things are born it seems as if they gallop at a fast pace. Without movement there would be no change, and without the passing of time there would be no transformations. What can you do and what can you not do? Sit back and watch things change of themselves!"

The river god said:
"If that's true, then what's the big deal about Dao?"

The North Sea god said:
"One who understands Dao must reach some sort of principles. One who has reached principles must have a clear understanding of how to deal with things. One who has a clear understanding of how to deal with things doesn't engage with things that can be harmful to them. Once one has connected with virtue, fire can find no way to burn him, floods can find no way to drown him, hot and cold can find no way to injure him, and vicious beasts can find no way to tear him limb from limb. That's not to say he's impervious to those things, but that he makes a careful inspection of what's safe and what's dangerous, doesn't allow himself to be influenced by misfortune or good luck, and is cautious when approaching and retreating, so he doesn't allow an opportunity for anything to be able to harm him. Therefore, it's been said: 'The heavens exist inside. People exist outside. Virtue exists with the heavens.' Understand the movements of the heavens and people while staying rooted in the heavens, and proper reactions to circumstances can be achieved. Being flexible enough to sway in either direction, to bend or stretch, and to let go of longings - that's pretty much the extent of it."
The river god said:
"What do you mean by the heavens, and what do you mean by people?"
The North Sea god said:
"Oxen and horses have four hooves - that's what's meant by the heavens. Putting a bridle on a horse's head or putting a ring in the nose of an ox - that's what's meant by people. Therefore it's been said: 'Don't allow people to mess with the heavens. Don't allow events to mess with fate. Don't allow achievements to cause you to die for a title.' Cautiously guard this and DO NOT lose it! This is referred to as viewing the other side of the truth.

Kui (a legendary monster like a dragon with one foot) envies the centipede. The centipede envies the snake. The snake envies the wind. The wind envies the eye. The eye envies the heart.
Kui remarked to the centipede:
"I hop about on one leg but not very successfully. How do you manage all those legs you have?"
"I don't manage them," replied the centipede. "Have you never seen saliva? When it is ejected, the big drops are the size of pearls, the small ones like mist. At random they fall, in countless numbers. So, too, does my natural mechanism move, without my knowing how I do it."

The centipede said to the snake, "With all my legs I do not move as fast as you with none. How is that?"
"One's natural mechanism," replied the snake, "is not a thing to be changed. What need have I for legs?"

Besides, I can move very quietly on one foot!"
The snake remarked to the wind:

"When I move I rely on my backbone to make me go. At least, that's the way it seems. Now you rise up like great gusts from the North Sea, and those gusts can go as far as to enter the area of the South Sea, even though you don't have the apparatus I do. Why is that?"
The wind said:
"That's just the way it is. My gusts might rise in the North Sea and blow all the way to the South Sea, but it's also true that if someone raises a finger it would divert my path and so would a wind sock. Even so, I could topple a huge tree and smash down a large house. I'm the only one who can do those things, so no matter how many small things came up against me they'd never overcome me(Out of many minor defeats I win the big victory). Only a sage has the ability to match me in that way."

Kong Zi (Confucius) was traveling through Kuang when he and his disciples were surrounded and outnumbered by some Song troops (Song was the ruling empire in which Kuang was located). Undaunted, he merely sat down and started singing while playing his lute.
Zi Lu (one of his disciples) approached him and said:
"Why are you so unconcerned, Master?'
Kong Zi said:
"Come here and I will tell you. For a long time I have not been willing to admit failure, but in vain. Fate is against me. For a long time I have been seeking success, but in vain. The hour has not come. In the days of Yao and Shun, no man throughout the empire was a failure, though this was not due to their cleverness. In the days of Chieh and Chou, no man throughout the empire was a success, though this was not due to their stupidity. The circumstances happened that way.
"One who travels on the water can't avoid flood dragons, as that's the courage of a fisherman. One who travels on the land can't avoid rhinoceroses and tigers, as that's the courage of the hunter. One who has unsheathed swords aiming at him, yet doesn't regard death as different from life, has the courage of a sacrificing soldier. To realize that misfortunes are a result of destiny, to know that advancement is a result of the times, and to be able to overlook great calamities and not be apprehensive about them is to have the courage of a sage. Let's see how things pan out as leave it up to destiny to work it all out."
Within a few moments the commander of the troops approached them with these dismissive words:
"I mistakenly thought you were Dark Tiger (a notorious criminal), so I had my troops surround you. Now that I can see you're not him, please feel free to leave and continue on your way."

Gong Sun Long inquired of Prince Mou of Wei:
"When I was young I learned about the Dao of the former kings. As I grew up I had a clear understanding of the proper conduct of benevolence and righteousness. I integrated sameness and difference, separated the black and the white, made so what was not so, and made allowable what was not allowable. I frustrated the cleverness of all the various philosophical schools and wore out the mouths of many debaters. I considered myself to have already reached perfection. Now that I've heard the words of Zhuangzi, I'm bewildered and surprised by them. I don't know if that's because my views are inferior to his or if they're just different from his. Now I no longer feel comfortable enough to open my mouth. May I ask you to give me your opinion?"
Prince Mou settled back comfortably in his chair, looked up at the sky and laughed, then said:
"Haven't you heard about the frog who lived in a broken down well? It said to the turtle of the East Sea: 'I'm really enjoying myself. I can jump up to the wooden beam on top of the well and hang out there for a while, then I can drop down and rest on the edge of one of the old broken tiles. When I flop into the water it sloshes on my arms and holds up my chin. As I slip and slide through the mud, it covers my feet up to my ankles. Of all the earthworms, crabs and tadpoles, none of them can do what I do. And to top that off, I'm the one in authority over the water in this huge hole and I can do whatever I please in here. This is really perfect! Why don't you come on down and take a look any time you like?' Before the turtle of the East Sea could get his left foot into the opening, his right knee had already gotten stuck on something. So he pulled back to assess his situation and took a few steps back. Then he started speaking about the sea: 'The measurements of a thousand football fields aren't sufficient to describe its size. The

depth of eight thousand feet couldn't reach its deepest parts. During the time of Yu there were heavy rains that flooded the land nine years out of ten, but all that water wasn't able to overfill it. During the time of Tang there was a devastating drought that parched the land seven years out of eight, but all that evaporation didn't decrease it. It can't be made to be transformed by any sudden occurrence nor by things that happen over longer periods of time. Neither abundance nor lack in the world can make it advance or retreat. This is also a great enjoyment - that of the East Sea.' As the frog in the broken down well was listening to this, he became more and more startled, and from his demeanor he seemed to have lost himself in bewilderment.

"You don't even have the sense to know to give up on ideas of right and wrong, and yet you want to contemplate the words of Zhuangzi. That would be like a mosquito expecting to be able to carry a mountain on its back, or an inchworm hoping to move as fast as the Yellow River - there's no way they're capable of doing that. You don't even have the sense to understand mysteriously poignant words that deal with ideas, yet you're smug about gaining the upper hand occasionally with your words. Are you so very different from the frog in the broken down well? That guy (Zhuangzi) can stroll through the Yellow Springs (nadir of the earth) and then climb effortlessly to the highest heights. He's without a sense of south or north, so he can lightly sail in all directions or sink into immeasurable depths. He's without a sense of east or west, so he can begin from dark obscurity, turn it upside down and find great illumination. On the other hand, you only regulate and divide everything while seeking to ridicule. That's like trying to use a tube to peer at the whole sky or trying to use an awl to point at the whole earth. Such small sightedness! You might as well take off! Haven't you heard about the man from Shou Ling who was left in Han Dan to learn about proper behavior? When that country wasn't able to be captured, he lost sight of his whole reason for going there, and had to crawl all the way back home while keeping his ears on the alert.
(Note: Shou Ling was a city in the state of Yan and Han Dan was the capital of Zhao. Yan and Zhao were situated next to each other, separated only by a mountainous border in the west. During the Warring States period, Yan and Zhao wavered between being friendly and going to war with each other. People were sent as emissaries from Yan to Zhao in order to try to promote friendly discussions, but if a war broke out the Yan citizens in Zhao would try to return home before being persecuted.)

"If you don't go away now, you'll forget your reason for coming in the first place, and you might lose what it is you consider to be your greatest talent."
Gong Sun Long's mouth fell open and he couldn't close it. His tongue was stuck to the top of his mouth, and he suddenly sprinted away like a scared rabbit.

Zhuangzi was fishing in the waters of the Pu River. The king of Chu had sent two high ranking officials to find him, and they approached saying:
"It is wished that you'll come and become a Minister within the borders of our country."
Zhuangzi kept holding his pole and without turning around said:
"I've heard there's a sacred tortoise in Chu that's been dead for three thousand years. The king has it stashed away in a basket hidden beneath the imperial courthouse. As for this tortoise, would it rather be dead and turn into a skeleton and be considered valuable? Or would it rather be alive and dragging its tail through the mud?"
The two officials said:
"It'd rather be alive and dragging its tail through the mud."
Zhuangzi said:
"Go away! I'd rather be dragging my tail through the mud."

Zhuangzi and Hui Zi were strolling on a bridge spanning the Hao River when they stopped for a moment.
Zhuangzi said:
"The fish come up and swim so leisurely. That's how fish enjoy themselves."
Hui Zi said:
"You're not a fish. How do you know how fish enjoy themselves?"

Zhuangzi said:
"You're not me. How do you know that I don't know how fish enjoy themselves?"
Hui Zi said:
"I'm not you so I certainly don't know what you do. You're certainly not a fish, so you can't possibly know what a fish enjoys!"
Zhuangzi said:
"Please think back to the beginning of this conversation. You asked me how I knew the fish were enjoying themselves. You're the one who asked the question. You already knew I knew that, but you asked me anyway. I knew that when we stopped here."

१७|वर्षाकालीन बाढे

वर्षाकालीन बाढो के समय सैकड़ो जल धाराए येल्लो नदी में जाकर गिरती है| जल इतने उफान पर होता है और इतना बहता है की पहाडियों के बीच की घाटियों को पूरी तरह से भर देता है और तब आप एक किनारे पर खड़े होकर यह भेद भी नहीं कर सकते की विपरीत किनारे पर एक बैल खड़ा है या फिर एक घोडा| नदी देवता इतने प्रसन्न होते है, स्वयं से आनंद होते है और वे मानते है की उन्होंने संसार की सभी खुबसूरत वस्तुओ को अपने अंदर समाहित कर लिया है| वो पूर्व की और बहते है जब तक की उत्तरी समुद्र तक नही पहुच जाये| वो पूर्व की तरफ देखते है और उन्हें अपने जल के फैलाव की कोई सीमा नजर नहीं आती है| तब उस समय नदी देवता अपनी आँखों को समुद्र को देखने के लिए और उनसे मिलने के लिए इधर उधर भटकाना शुरू करते है और कहते है :

"गाँववालो के बीच एक कहावत है:

'कोई ताओ के बारे में बार बार सुनता है तथा पढता है और सोचता है की इसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती|' यही मेरे रूप का भी वर्णन है|

मैंने एक बार कुछ लोगो को कहते हुए सुना था की ज्होंग-नि के वाक्य बहुत ही खुबसूरत होते है तथा वे बो-यी की धार्मिक समझ के बारे में भी कुछ कहते है| पहली बार मै इससे सहमत नहीं हुआ, पर अब जब मैंने तुम्हारी विशालता को देखा है और अनुभव किया है की अगर मै तुम्हारे द्वार पर नहीं आता तो स्वयं को ही विपत्ति में दाल रहा था| जो इस महान सिद्धांत के वास्तविक अभ्यासी होते है यदि वो इसे जानते तो शायद मेरे ऊपर बहुत ज्यादा हँसते|"

उत्तरी समुद्र देवता ने कहा :

"तुम एक मेंढक को समुद्र के बारे में अच्छी प्रकार से नहीं बता सकते क्योंकि वह अपने ही विचारो से बंधा होता है| तुम एक ग्रीष्मकालीन किट को शरद ऋतू के बारे में नहीं बता सकते क्योंकि उसका जीवन केवल एक ऋतू का होता है| तुम एक इस प्रकार के विद्वान् को ताओ के बारे में नहीं बता सकते क्योंकि वह अपने ही सिद्धांतो को मानता है| अब जबकि तुम आये हो पर्वतो और घाटियों में से इस महान विशाल समुद्र का अवलोकन करने के लिए और तुमने पाया है की तुम वास्तव में कितने तुच्छ हो| इसलिए अब तुम उस महान सिद्धांत के बारे में वार्तालाप करने को तैयार हो|

"इस संसार के सम्पूर्ण जलो में समुद्र जितना विशल कोई भी नहीं है| सभी नदिया अंत में आकर इसी में विलीन हो जाती है पर फिर भी यह कभी नहीं भरता है न ही ये उनसे प्रभावित होता है, यह किनारों से लगातार खाली हो रहा है लेकिन फिर भी यह रिक्त नहीं होता है|

"इसमें वर्षा ऋतू या वसंत में कोई परिवर्तन नहीं आता है और न ही यह बाढ़ और सूखे के बारे में जानता है| यह यांग्तज़े और येल्लो नदी से भी इतना ज्यादा विशाल है की इसे मापा नहीं जा सकता| हालाँकि फिर भी इन तथ्यों का उपयोग मै कभी स्वयं पर अभिमानित होने के लिए नहीं करता, चूँकि मेरा आकर पृथ्वी और स्वर्ग से तुलनीय है, मुझे मेरी जीवनशक्ति यिन और यंग से प्राप्त होती है| मैं धरती और स्वर्ग के बीच में ऐसे स्थापित हूँ जैसे एक विशाल पर्वत पर एक छोटा वृक्ष स्थापित होता है| हालाँकि मेरा अस्तित्व इस सम्पूर्ण योजना में बहुत ही तुच्छ है फिर मैं कैसे स्वयं के संदर्भ में अभिमानित कैसे हो सकता हूँ? क्या हम नहीं कर सकते चारो विशाल समुद्रो के अस्तित्व की तुलना एक सेना में रहने वाले कुछ सिपाहियों से? क्या हम पूरे चीन के मध्य साम्राज्य जो की चारो समुद्रो के बीच है उसकी तुलना नहीं कर सकते है जैसे एक कोठार में चावल के कुछ दाने होते है? हमारे पास हजारो नाम है वस्तुओ के लिए और एक व्यक्ति भी उन्ही में से एक है| जिउ-ज्होऊ में कई तरह के भोजन पदार्थ है जिन्हें एक व्यक्ति जीवित रहने के लिए ग्रहण करता है और वहा कई तरह की नाव और जहाज़ है जिनका उपयोग यात्रा के लिए किया जा सकता है| एक मनुष्य भी उनमे से एक वस्तु मात्र ही है| इन हजारो वस्तुओ से तुलना करते वक़्त क्या वह व्यक्ति नहीं है जैसे की एक घोड़े के पीठ पर रहने वाला एक छोटा सा बाल? पांचो सम्राटो ने निर्णय लिया था की उनके सिंहासन को कैसे आगे बढाया जाये और तीनो साम्राज्यों ने युद्ध में सम्मिलित होने का निर्णय लिया था, तब जो लोग उनके शुभचिंतक थे उन्होंने अपना ज़्यादातर समय उनके बारे में चिंतित होकर बिताया और जो उनके अधिकारी थे उन्होंने उनकी विजय के लिए हद से ज्यादा परिश्रम किया - ये सभी वस्तुए ऐसे ही समाप्त हो जाती है और इससे ज्यादा ये कभी नहीं हो सकती है|

समुद्र देवता ने कहा:

"बो-यी अपने कार्यो के लिए प्रतिष्ठा पाने के लिए चला गया| ज्होंग-नि ने भाषण दिए अपने कार्यो को बढ़ावा देने के लिए| दोनों ने ऐसा किया क्योंकि वे दोनों स्वयं के बारे में बहुत अधिक अभिमानी सोच रखते थे| क्या यह तुम्हारी इस बाढ़ वाले जल के सोच के सामान नहीं है?"

नदी देवता ने कहा :
"अगर ऐसा है तो क्या मै इस संन्दर्भ में स्वर्ग और धरती को विशाल मान सकता हूँ और एक सुई की नौक को एक छोटी वस्तु की तरह?"

उत्तरी समुद्र के देवता ने कहा :
"नहीं, वस्तुए के संदर्भ में उनकी क्षमता को मापा नहीं जा सकता, उनके विकास को रोका नहीं जा सकता है, उनके भेद हमेशा के लिए एक सामान नहीं रहते है और उनकी उत्पत्ति और अंत का पता नहीं लगाया जा सकता है| इसीलिए महान ज्ञान के होने का तात्पर्य नजदीक और दूर के एक सामान अवलोकन से है, और यह देखने में है की छोटी वस्तु में किसी भी प्रकार का आभाव नहीं है और विशाल वस्तु में कोई प्रभुता नहीं है - यह जानना की उनकी क्षमताओ का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है| यह तो यह देखने में सक्षम होना है की भुत में क्या हुआ था और वर्तमान में क्या हो रहा बिना चिंतित हुए की भविष्य में क्या होगा, और किसी वस्तु के लिए संघर्ष नहीं करना यह जानते हुए की उनके परिवर्तन कर्म को रोका नहीं जा सकता है | यह तो है पूरी तरह से अवलोकन करने में सक्षम होना बिना आनंदित हुए जो हमे मिला उसमे और बिना उसके लिए शोक मनाये जो हमसे चला गया है - यह जानना की यह हमेशा के लिए निरंतर नहीं होता है| यह तो एक स्पष्ट विशुद्ध समझ है जो की जीवन को लेकर कोई योजनाए नहीं बनती और मृत्यु को लेकर चिंतित नही होती है - यह जानना की उत्पत्ति और अंत का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है| अगर तुम यह जानने का प्रयत्न करते हो की एक व्यक्ति क्या जानता है तो तुम यह पता नहीं लगा सकते हो की वह क्या नहीं जानता है| अगर तुम यह जानने का प्रयत्न करते हो की एक व्यक्ति कितने समय से जिंदा है तो तुम यह पता नहीं लगा सकते हो की वह कितने समय से वास्तव में जीवित है| अगर तुम यह निर्धारित करने का प्रयत्न करते हो एक छोटी वस्तु में जो आभाव होते है उसकी एक बड़ी वस्तु की प्रचुरता के साथ तुलना करके तो तुम इसे बुरी तरह से उलझा देते हो और तब तुम यह देखने में भी सक्षम नहीं होते हो की तुम इस सभ में कहा निर्धारित हो| इस दृष्टि से देखने पर हम यह कैसे कह सकते है की एक सुई की नौक पर्याप्त है निर्धारित करने के लिए की क्या छोटा है तथा स्वर्ग और धरती पर्याप्त है यह निर्धारित करने के लिए की क्या विशाल है?"

नदी देवता ने कहा :
"वे सभ जो अपने विचार प्रकट करते है की आजकल इस संसार में क्या हो रहा है कहते है:
'सबसे कहते अणु का कोई आकर नहीं होता था और सबसे बड़ी वस्तु को किसी रूप में ढाला नहीं जा सकता है|'
क्या आप इससे सहमत है?"

"इस दृष्टि से देखे की क्या छोटा है तो जो सबसे बड़ा है वह अपरिपूर्ण प्रतीत होता है| और अगर इस दृष्टि से देखे की क्या सबसे बड़ा है तो जो सबसे छोटा होता है वह स्पष्टता से नहीं दिखाई पड़ता है| सबसे सूक्ष्म के संदर्भ में वह तो सबसे छोटा होता है और सबसे विशाल के संदर्भ में वह सबसे बड़ा होता है | कुछ परिस्थितियों में उनके बीच भेद करना सही है| जो अति सूक्ष्म होता है और जो अति विशालकाय होता है उन दोनों का ही कुछ न कुछ आकर होता है| फिर भी कोई भी उसकी सीमा नहीं बता सकता है जिसकी कोई आकृति नहीं है और कोई भी किसी आभाव का पता नहीं लगा सकता है उसमे जिसका कोई आकर नहीं होता है| जिसे हम शब्दों द्वारा कुछ व्यक्त कर सकते है वह तो सबसे विशालकाय होता है और जिसे हम अपने विचारो में कुछ व्यक्त कर सकते है वह अति सूक्ष्म होता है | फिर भी जिसे शब्दों और विचारो द्वारा थोडा सा भी व्यक्त नहीं किया जा सकता वह न ही तो विशाल होता है और न ही वह सूक्षम होता है|

एक महान व्यक्ति की तरह आचरण करना इसका अर्थ यह नहीं है की अभिप्रायपुर्वक ऐसा कुछ नहीं करना जो औरो को क्षति पहुचाये, पर यह होता है धार्मिकता और दयालुता के प्रति अपने मतों और सिद्धांतो को अटल स्थापित नहीं करना| इसका अथ होता है की कार्य करना बिना अपना कोई स्वार्थ सोचे और उनकी तरफ घृणा से नहीं देखना जो औरो का बुरा सोचते है| इसका अर्थ होता है धन सम्पदा के लिए एक दुसरे से नहीं झगड़ना और उसे स्वीकार करने से मना नहीं करना इसलिए की तुम सोचते हो की तुम औरो से बेहतर हो| इसका अर्थ होता है अपना जीवन व्यापन करने के लिए वस्तुओ पर निर्भर नहीं होना और अतिश्रम करके अपने शरीर को नुकसान नहीं पहुचना और न ही जो लालची होते है उन्हें नीचा दिखाना| इसका अर्थ होता है इस समाज से अलग मार्ग को चुनना और अधिकारों के विरुद्ध जाकर भी अभिमानी अनुभव नहीं करना| इसका अर्थ है सभी के प्रति स्वतंत्र व्यवहार करना और जो चापलूस और दम्भी होते है उनके प्रति बुरे विचार नहीं रखना| इसका अर्थ होता है समाज में केवल अपनी प्रतिष्ठा और पद के कारण प्रोत्साहित नहीं होना और न ही दंड या दर के कारण हतोत्साहित ओना| इसका अर्थ है की

समझना की सही और गलत एक दुसरे से भिन्न नहीं है और छोटे या विशाल को एक दुसरे से अलग नहीं किया जा सकता है| यह कहा गया है 'एक ताओ वाले व्यक्ति को पूरी तरह से नहीं जाना जा सकता है| सामर्थ्य की प्राप्ति होने को सफलता नहीं समझा जा सकता है| एक महान व्यक्ति स्वयं से ऊपर होता है|'
भेद नहीं उत्पन्न करने का प्रयत्न न करने के कारण आप परिपूर्ण एकरूप हो जाते है|"

नदी देवता ने कहा:
"आप देख रहे होते हो वस्तुओ को जो तुम्हारे अंदर निहित या फिर नहीं है पर तुम इस नतीजे पर कैसे पहुच सकते हो की वे अच्छी है या बुरी है? या फिर वे विशाल है या छोटी है?"

उत्तरी अमुद्र देवता ने कहा:
"ताओ की दृष्टि में कोई वस्तु छोटी नहीं है और कोई बड़ी नहीं है| वस्तुओ की दृष्टि में वे अपने को महान समझती है और दूसरी वस्तुओ को निम्न| इस समाज की की दृष्टि से देखे तो यह व्यक्तियों पर निर्भर नहीं है की वे समाज में स्वयं का वर्णन कैसे करते है| वस्तुओ में भेदों का निरिक्षण करने के दृष्टि से देखे तो यदि किसी वस्तु को विशाल समझा जाता है क्योंकि यह किसी और वस्तु से बड़ी है तो ऐसे कोई भी वस्तु नहीं रह जाती है जो विशाल नहीं है और यदि किसी वस्तु को छोटा इसलिए समझा जाता है क्योंकि वह किसी दूसरी वस्तू से छोटी है तो ऐसी कोई भी वस्तु नहीं रह जाती है जो छोटी नहीं है| स्वर्ग और धरती को इस दृष्टि से देखना की वे एक चावल के दाने जितने बड़े है और एक बाल की नौक को इस दृष्टि से देखना की यह एक पर्वत जितनी बड़ी है यह स्पष्ट तौर दिखता है की कितने ज्यादा नजरिये वस्तुओ का अवलोकन करने के हो सकते है| इस दृष्टि से देखना की क्या चीज़ प्रभावशाली है, यदि किसी वस्तु को ऐसा समझा जाये क्योंकि यह अन्य वस्तुओ से अधिक ऐसे है तब ऐसे कोई वस्तु नहीं है जो ऐसे नहीं है; और अगर किसी वस्तु को ऐसा नहीं समझा जाये क्योंकि यह अन्य वस्तुए से अधिक ऐसे नहीं है तो कोई भी वस्तु नहीं है जो ऐसे है | पूर्व और पश्चिम को देखना - जबकि वे विपरीत है फिर भी एक दुसरे के बिना नहीं रह सकते हा, तब कैसे निर्धारित किया जा सकता है की किसी की उपयोगिता में भेद कैसे किया जाए| वस्तुए के चुनाव की दृष्टि से - अगर एक वस्तु को तवज्जो दी जाती है इसलिए क्योंकि वो किसी और वस्तु से ज्यादा सही है तो ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो सही नहीं है और अगर एक वस्तु को गलत ठहराया जाता है इसलिए की किसी और वस्तु से वह ज्यादा गलत है तो ऐसी कोई वस्तु नहीं ही जो गलत नहीं है| इस चीज़ को देखना की राजा 'याओ' और डाकू जिए दोनों ही अपनी व्याख्या एक सही व्यक्ति के तौर पर करते थे तब हम देख सकते है की हमारा चुनाव कैसे हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है|
"प्राचीन समय में जब शुन को यो के द्वारा सिंहासन दिया गया था तो वह सम्राट बन गया| जबकि जब जही को सिंहासन दिया गया कुई द्वारा तो उसे मार दिया गया|तंग और वू अपने पद के लिए लडे और दोनों राजा बन गए| जबकि जब बै-गोंग अपने अधिकारों के लिए लडा तो उसका विनाश कर दिया गया|

अगर हम उस नजरिये से देखे जिसे ऊपर कहा गया है तो हम देखते है की पद का उपयोग वाद-विवाद के लिए या फिर त्याग के लिए किया गया है और जो मार्ग चुने गए थे याओ और जिए द्वारा वे अच्छे भी समझे जा सकते है या बुरे भी समझे जा सकते है, पर वे हमेशा एक जैसा परिणाम उत्पन्न नहीं करते है| एक लकड़ी के बड़े टुकड़े को एक दीवार के साथ सहारा देने के लिए खड़ा किया जा सकता है पर उसका उपयोग किसी चीज़ में एक छेद करने के लिए नहीं किया जा सकता है| हर एक वस्तु का अपना एक विशिष्ट कार्य होता है| की-जी और हुआ-लिऊ (बहुत तेज दौड़ने वाले घोड़े)एक दिन में तीन सौ मिल तक भाग सकते थे पर उनकी बराबरी एक लोमड़ी या फिर बिल्ली के चूहे पकड़ने से नहीं की जा सकती है| इन सभ के कौशल का अपनी अपनी जगह विशिष्ट उपयोग है| एक उल्लू रात को अँधेरे में आसानी से शिकार कर सकता है और एक सुई की नौक को भी देख सकता है पर दिन में उसकी दृष्टि धुंधला जाती है और वह एक पर्वत को भी नहीं देख पाता है | उसके हर स्वभाव का अपना एक विशिष्ट उपयोग है| इसीलिए जब यह कहा गया था 'जो सही है उसका अनुकरण करो और गलत वस्तुए अपने आप समाप्त हो जाएगी. कर्म व्यवस्था का अनुकरण करो और कोलाहल स्वयं से समाप्त हो जायेगा!' यह दिखाता है की यहाँ पर स्वर्ग और धरती के सिद्धांतो की कोई समझ उपस्थित नहीं है| इस संदर्भ में तो ऐसे हैकी जब हम स्वर्ग का अनुकरण करेगे तो धरती समाप्त हो जाएगी और अगर हम यिन का अनुकरण करेगे तो यंग समाप्त हो जाएगी? यह कही पर किसी भी वास्तविक समझ का होना भी नहीं दिखता| फिर भी ये वो लोग है जो ऐसे ही बोलते रहते है और कभी इसे नहीं छोड़ते - अगर यह मुर्खतापुर्वक नहीं है तो जरूर ही वे सभ भर्मित है| राजाओ और शासको के त्याग के अपने तरीके होते थे और तीनो साम्राज्यों के अपने विशिष्ट तरीके थे उन्नत होने के|
जो नहीं मानते है उसे जो समय के अनुसार सही होता है वे प्रथा के विपरीत भी होते है तथा उन्हें दम्भी कहा जाता है| जो समय के अनुसार तालमेल में होते है वे प्रथा के साथ चलते है और उन्हें धर्म का अनुगमन करने वाला कहा जाता है|

“नदी देवता तुम्हे बेहतर होगा की शांत हो जाना चाहिए! तुम यह कैसे जान सकते हो की इसका भेद कैसे किया जाए की क्या चीज़ बड़ी है और क्या छोटी है या फिर तुम य कैसे जान सकते हो की कौनसा धर्म का मत सही है और कौन सा गलत है?"

"अगर ऐसा है तो मै तह कैसे जान सकता हूँ की क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए? अगर किसी भी वस्तु को स्वीकार करने को मना कर दू और मेरी अपनी भी कोई वरीयता न हो तो तब मेरा विकल्प होने के लिए क्या बचेगा?"

उत्तरी समुद्र देवता ने कहा :
“ताओ की दृष्टि से:
‘किसी भी वस्तु को छोटा या बड़ा मानना उसके प्राकृतिक विकास के विपरीत जाना कहलाता है| बिना किसी प्रतिरोध के अपनी ही आकांक्षाओं का अनुकरण करना तब तो तुम्हारा ताओ के साथ संबंद अवरोधित हो जाता है|
‘ किसी भी वस्तु को बहुत कम या बहुत अधिक समझना तो प्रकृति द्वारा दिए गए तोहफे की अवमानना करना होता है | बिना एकरूपता का अनुभव किये केवल अपने बनाये मार्ग पर ही चलते रहना यह तो तुम्हारे ताओ के साथ संबंध को अस्थिर कर देता है|
‘ सख्त रहो! जैसे की तुम एक राज्य के राजा हो जो अपने सामर्थ्य के प्रति स्वार्थी नहीं है|
‘आज्ञाकारी रहो! जैसे की तुम हो जिसे सोंपा गया है एक क्षेत्र में होने वाले बलिदानो का नियंत्रण और तुम उनकी शुभकामनाओ के प्रति स्वार्थी नहीं है|
'व्यापक बनो! जैसे की तुम हो जिसे किसी भी दिशा में जाने के लिए कोई अवरोध नही है और उसके लिए सीमाए स्थापित करने जैसे कोई जगह नहीं है|
"अगर तुम सभी वस्तुओ को अन्तर्निहित करने में सक्षम हो तो ऐसी कौन सी वस्तु नहीं होगी जो तुम्हारे सानिध्य को प्राप्त नहीं करना चाहेगी? इसे ही कहते है बिना सीमओं के होना| अगर सभी व्वस्तुओ को एक साथ एकरूप कर दिया जाये तो उनमे से किसे छोटा या बड़ा समझा जायेगा? ताओ की कोई उत्पत्ति या अंत नहीं है, पर वस्तुए उत्पन्न होती है और उनका अंत होता है लेकिन इसके परिणामो पर निर्भर नहीं हुआ जा सकता है| किसी समय पूर्ण और अगले ही क्षण शून्य बिना किसी स्थिर रूप लिए| वर्षो के इस आरोहन को रोका नहीं जा सकता है और न ही समय के प्रवाह को रोका जा सकता है| विकास और विनाश, पूर्णता और शून्यता - एक के अंत के बाद एक नई शुरुआत होती है | इस प्रकार से हम विचार कर सकते है धर्म के उस महान रूप का और सिद्धांतो का जो सभ जीवित वस्तुओ के प्रवाह को निर्धारित करते है| जब वस्तुओ की उत्पत्ति हो जाती है तब ऐसा लगता है की वे बहुत तेज गति में विराजमान है| बिना किसी गति के परवर्तन का होना संभव नहीं है और बिना समय की प्रवाह के कोई भी वस्तु प्रवर्तित नहीं हो सकती है| तुम क्या कर सकते हो और तुम क्या नहीं कर सकते हो? आराम से बैठो और देखो के वस्तुए स्वयं से ही परवर्तित हो जाती है!"

नदी देवता ने कहा:
"अगर यह वास्तविक है तब ताओ के बारे में क्या अधिक महतवपूर्ण है?"

उत्तरी समुद्र देवता ने कहा :
“जो ताओ को समझता है उसे किसी न किसी सिद्धांत तक तो जरूर पहुचना पड़ता है| और जो किसी सिद्धांत पर पहुचता है उसकी समझ स्पष्ट होनी चाहिए की वस्तुए के साथ कैसा तालमेल होना चाहिए| अगर किसी के पास स्पष्ट समझ होती की वस्तुए के साथ तालमेल कैसे स्थापित किया जाए तो वह उनके प्रति क्षति पहुचने वाला नहीं हो सकता है| जिसका संबंध सामर्थ्य के साथ हो जाता है, अग्नि उसे किसी भी प्रकार से जला नहीं सकती, जल उसे डूबा नही सकता, सर्दी और गर्मी उसे प्रभावित नहीं कर सकती और ख़तरनाक जानवर भी उसे कोई भी नुकसान नहीं पंहुचा सकते है ऐसा इस कारण नहीं है की वह अभेद है पर इसलिए है की वह ध्यान से अवलोकन करता है की क्या सुरक्षित है और क्या क्षति पहुचने वाला, वह दुर्भाग्य या अच्छे भाग्य के होने से प्रभावित नहीं होता है और वह सावधान होता है आगे जाते वक़्त या पीछे हटते वक़्त, इस प्रकार वह किसी भी वस्तु के लिए उसको क्षति पहुचने का कोई भी अवसर नहीं देता है| इसीलिए यह गया है 'स्वर्ग अन्तर्निहित होता है और लोग बाह्य केन्द्रित होते है| सामर्थ्य स्वर्ग के साथ अस्तित्व रखता है|'
स्वर्ग की गति को समझो और लोग स्वर्ग के साथ संगठित रहेगे तथा परिस्थितयो के प्रति सही प्रतिक्रिया दे पायेगे | वे किसी भी दिशा में जाने के लिए पर्याप्त नम्य होगे, तथा झुकने या लम्बवित होने के लिए भी - यही तो इसकी विस्तृत व्यापकता है|"

नदी देवता ने कहा :

“आपका तात्पर्य स्वर्ग से क्या है और लोगो से क्या है?"

उत्तरी समुद्र देवता ने कहा :
"बैलो और अश्वो के चार पैर होते है - यही अर्थ होता है जिसे तुम समझते हो स्वर्ग| एक अश्व की पीठ पर लगाम बांधना और एक बैल एक नाक को धातु से भेदना - यह अर्थ होता है जिसे तुम कहते हो व्यक्ति| इसीलिए यह कहा गया है ‘लोगो को स्वर्ग के साथ मत बिगड़ने दो| विषयों को भाग्य के साथ मत खेलने दो| सफलताओ के सन्दर्भ में स्वयं को उनके लिए मरने वाला मत बनाने दो|'
सावधानी से ‘इस’ की रक्षा करो और साथ में ‘उसे’ मत खोओ! इसे ही कहते है सत्य के दुसरे रूप को जानना|

कुई (एक ड्रैगन) द्वेष रखते है एक कान्नट (एक सौ पैरो वाला छोटा जीव) से, एक कान्नट इर्ष्या करता है एक सर्प से| एक सर्प द्वेष रखता है वायु से| वायु द्वेष रखती है नेत्र से और नेत्र द्वेष रखते है ह्रदय से|

कुई ने कान्नट से कहा :
"मैं एक पैर पर चलता हूँ फिर भी इसकी देखभाल नहीं कर पाता हूँ| फिर तुम अपने इतने सारे पैरो को कैसे नियंत्रित कर पाते हो?"

"मै उन्हें नियंत्रित नहीं करता हूँ” कान्नट ने जवाब दिया|” क्या तुमने कभी लार को नहीं देखा है? जब वह आती है तो बड़ी बुँदे मोती जैसे आकर की होती है और छोटी धुंध जैसे होती है| अनियमित हुए वे कही पर भी निचे गिरती और होती है संख्या में बेहिसाब| इसी तरह मेरा प्राकृतिक स्वभाव भी ऐसे ही संचालित होती है मेरे जाने बिना की यह कैसे हो रहा है|"

फिर कान्नट ने सर्प से कहा:
“अपने सभी पैरो के साथ भी तुम्हारे जितना थोडा सा भी तेज नहीं चल सकता हूँ| यह क्यों होता है?"

“यह तो किसी की भी प्राकृतिक संरचना होती है” सांप ने जवाब दिया” यह कोई वस्तु नहीं जिसे बदला जा सके| फिर क्या जरूरत है मुझ पैरो के होने की?
इसके साथ ही मैं अपनी रीढ़ के सहारे ही बहुत तेज चल सकता हूँ|”

सांप ने हवा से पूछा:
"जब मैं चलता हूँ तो मुझे आगे बढ़ने के लिए अपनी रीढ़ पर निर्भर होना होता है| कुछ भी हो मुझे तो यह ऐसा ही प्रतीत होता है| लेकिन तुम तो उत्तरी समुद्र में से प्रचंड वेग लेकर ऊपर उठती हो और इस वेग के साथ तुम जा सकती हो बहुत दूर तक दक्षिणी समुद्र तक भी जबकि तुम्हे तो किसी वस्तु पर भी निर्भर नहीं होना पड़ता जैसे की मुझे होना पड़ता है| ऐसा क्यों है?"

हवा ने कहा:
“यह होता है क्योंकि यह तो बस ऐसे ही है| यह हो सकता है की मेरा वेग उत्तरी समुद्र से उठता हो और दक्षिणी समुद्र तक यात्रा करता है पर यह भी सच है की अगर मार्ग में कोई ऊँगली भी खड़ी कर दे तो यह मेरा मार्ग बदल देती है और यह किसी और वस्तु के साथ भी होता है| इसके होते हुए भी मैं बड़े से बड़े वृक्षों को जड़ से उखड सकती हूँ घरो को तहस नहस कर सकती हूँ| मै ही केवल एक हूँ जो ऐसा सभ कुछ कर सकती हूँ, कोई मतलब नहीं की वस्तु कितनी ही बड़ी क्यों न हो पर वे मुझसे नहीं बच सकती है (कुछ कमियों के होते हुए भी मै ही बड़ी विजय को हासिल करती हूँ)| केवल एक साधू ही इस संदर्भ में मेरे सामान योग्यता और क्षमता रखता है|

कोंग-ज़ि जब कुंग राज्य में से यात्रा कर रहा तथा तो उसे और उसके शिष्यों को वहा के राजा सोंग के सैन्यदल ने घेर लिया| बिना भतभीत हुए वह निचे बैठा और अपना ज़िठेर (एक वाद्य यंत्र) बजाना शुरू कर दिया|
ज़ि-लू जो की उसका एक शिष्य था उसके पास पंहुचा और पूछा :
"आप इतने बेपरवाह कैसे है, आचार्य?"

कोंग-ज़ि ने कहा :

"यहाँ आओ मैं तुम्हे बताता हूँ| बहुत लम्बे समय से, पहले मैं अपनी असफलताओ को स्वीकार नहीं करता था, पर वह सभ व्यर्थ था| भाग्य मेरे विरूद्ध था| बहुत लम्बे समय से मे सफलता प्राप्त करना चाहता था, पर यह भी व्यर्थ था| वे क्षण कभी नहीं आये| यो और शुन के समय में कोई भी व्यक्ति पुरे साम्राज्य में असफल नहीं था, यद्यपि यह उनकी चतुरता और बुद्धिमता के कारण नहीं था| चिएह और चौ के समय में कोई भी व्यक्ति पुरे साम्राज्य में सफल नहीं था यद्यपि यह इस कारण नहीं था की वे सभ मुर्ख थे| या ऐसा था क्योंकि उस समय परिस्थितिया ही ऐसे थी|
"वह जो जल में यात्रा कर सकता है वह उसमे आने वाले भंवर को नहीं रोक सकता है पर यही तो एक नाविक के साहस की उत्पत्ति होती है| जो जंगलो में यात्रा करता है वह आदमखोर जानवरों को सामने आने से नहीं रोक सकता है पर यही से तो एक शिकारी के साहस की उत्पत्ति होती है| वह जिसके ऊपर किसी ने तलवार तान राखी हो और फिर भी मृत्यु को जीवन से भिन्न नहीं मानता है वही से तो एक त्यागशील देशभक्त के साहस की उत्पत्ति होती है| यह एहसास होना की दुर्भाग्य तो केवल प्रारब्ध द्वारा नियत है, यह जानना की सुख दुःख तो केवल समय का खेल है, और बड़ी विपदाओ से भी नहीं प्रभावित होना उनसे हटकर सोचना यही तो एक साधू के समान साहस होना कहा जाता है| चलो जानते है की वस्तुए कैसे व्यवहार करती है जब हम उन्हें भाग्य पर छोड़ देते है|"

कुछ ही समय बाद उस सैन्यदल का सेनापति वहा आ गया और उनसे क्षमा मांगते हुए बोला:
"मैंने भुलपुर्वक समझ बैठा था की आप डार्क टाइगर है (एक खूंखार अपराधी) इसीलिए मैंने अपनी सेना को आपको घेरने के लिए भेजा था| पर अब जब मे देख रहा हूँ की आप वो नहीं है तो आप आराम से कही पर भी घूम सकते है और स्वतंत्र होकर जा सकते है जहाँ आप जाना चाहते है|"

गोंग-सुन-लॉन्ग ने वेई के राजकुमार मौ से कुछ पूछा:
"जब मै युवा था तो मैंने प्राचीन राजाओ की ताओ के बारे में जाना| जब मै बड़ा हुआ तो मेरे पास धर्म और दयालुता के प्रति एक स्पष्ट समझ आ गयी| मैंने समानता और पृथकता को संघटित कर दिया, काले को श्वेत से भिन्न कर दिया, जो है उसे बना दिया जो की वह नहीं है और जो स्वीकार्य है उसे बना दिया जो स्वीकार्य नहीं है| मैंने विभिन्न मतों वाले सभी बुद्धिमान और चतुर विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजीत कर दिया| मै अब स्वयं को एक सिद्धता को प्राप्त हुआ व्यक्ति मानता था| लेकिन अब जब मैंने ज्हुंग्ज़ी के शब्दों को सुना है, मै उनसे भोंचक्का और आश्चर्यचकित हो गया हूँ| मैं नहीं जानता हूँ यह इसलिए है की मेरा दृष्टिकोण उनसे तुच्छ है या फिर इसलिए की वो केवल मुझसे भिन्न है| अब मैं कोई भी विचार रखते समय बिलकुल भी सहज अनुभव नहीं कर रहा हूँ| क्या मै आपसे आपकी राय बताने के लिए विनती कर सकता हूँ?"

राजकुमार मौ आराम से अपने स्थान पर बैठ गया, आकाश की तरफ देखा और हंसने लग गया तब उन्होंने कहा :
"क्या तुमने उस मेंढक के बारे में नहीं सुना है जो एक गहरे कुए में रहता है? उसने पूर्वी समुद्र के एक कछुए से कहा 'मैं वास्तव में ही स्वयं को आनंदित अनुभव कर रहा हूँ| मैं लकड़ी के उस शहतीर पर छलांग लगा सकता हूँ जो की कुए की दीवार पर टंगा हुआ है और उस पर आराम से कुछ समय के लिए लटक भी सकता हूँ, तब मैं वापस निचे आ सकता हूँ और निचे रखे हुए टूटे हुए पत्थरो पर आराम से विश्राम कर सकता हूँ| जब मैं जल में तैरता हूँ तो यह मुझे गीला कर देता और मेरी थोड़ी तक आ जाता है| और जब मैं कीचड़ में उछल कूद करता हूँ तो यह मेरी पैरो और टखनो को बहुत सुकून देता है| सभी केंचुओ, कीड़ो और वहा रहने वाले जीवो में कोई ऐसा नहीं है जो मेरी तरह कर सके| इसके आलावा वहा का नियंत्रक भी मैं ही होता हूँ और कुछ भी कर सकता हूँ जो मैं चाहता हूँ| क्या यह वास्तव में उत्तम और परिपूर्ण नहीं है! क्यों नहीं तुम यहाँ मेरे पास निचे आते हो और देख सकते हो यहाँ आकर किसी भी समय?

इससे पहले की पूर्वी समुद्र का वह कछुआ अपने बांये पैर को आगे निकलता अपने खोल में से मेंढक से बातचीत करने के लिए उसका दाया घुटना पहले ही कही फँस गया| इसलिए वह स्थिति का जायजा लेने के लिए पीछे हटा और कुछ कदम पीछे चलाकर उसने मेंढक से बोलना आरंभ किया :
"हजारो खेल के मैदानों का माप भी इसका आकर बताने में सक्षम नहीं है| आठ हज़ार फीट की गहराई भी इसके सबसे गहरे हिस्से तक नहीं पहुच सकती है| यु के समय में भारी वर्षा हुआ करती थी जो हर दस में से नौ वर्ष बाढ़ उत्पन्न करती थी पर यह सारा जल मिलकर भी उसको भरने में असमर्थ है | तंग के समय में भयंकर सुखा पड़ता था जो हर आठ में सात वर्ष में सभी तालाबो को सुखा देता था लेकिन उससे भी इसके स्तर पर कोई फर्क नहीं पड़ा| कोई भी घटना इसमें अचानक परिवर्तन लाने में असक्षम है और वे वस्तु भी नहीं जो लम्बे समय से चली आ रही है| इस संसार में न तो प्रचुरता और न ही आभाव इसको बढाने या फिर घटाने में सक्षम है| यही तो अगाध आनंद है - यही तो पूर्वी समुद्र का है|”

चूँकि वह मेंढक निचे टूटे हुए कुए में यह सभ सुन रहा था, वह इस सुनकर अचंभित, और अचंभित हो रहा था तथा उसका आचरण देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था की उसने स्वयं को घबराहट में कही खो दिया है|

"तुम अभी तक सही और गलत के विचारो को भी त्यागने में सक्षम नहीं हो और फिर भी तुम ज्हुंग्ज़ी जैसे विचारो जैसे परिकल्पना करना चाहते हो| यह तो ऐसे होगा जैसे एक मच्छर अपनी पीठ पर एक पर्वत उठाने की कौशिश कर रहा हो, या फिर एक केंचुआ येल्लो नदी के वेग से चलने का प्रयत्न कर रहा हो - ऐसा कोई मार्ग नहीं है जिससे वे ऐसा करने में समर्थ हो| तुम्हारे पास अब तक थोड़ी सी भी समझ नहीं है उन रहसयमयी शब्दों के अर्थ को समझने की जो उस महान सिद्धांत के मर्म को जानते है और तुम कहते हो की तुमने शास्त्रार्थ में विजय हासिल कर ली| | इस प्रकार क्या तुम ज्यादा भिन्न हो उस कुए वाले मेंढक से? वह व्यक्ति(ज्हुंग्ज़ी) सैर कर सकता है येल्लो नदी की और बादलो की ऊंचाई तक भी पहुच सकता है| उसे पूर्व या पश्चिम का कोई ज्ञान नहीं है इस प्रकार वह गहन अंधेरो में भी महान प्रकाश को ढूंढ सकता है| उसे उत्तर या दक्षिण की कोई समझ नहीं है इस प्रकार वह किसी भी दिशा में यात्रा कर सकता है और अनंत गहराइओ में भी जा सकता है और दूसरी तरफ तुम हो जो उपहास करने के तात्पर्य से वस्तुओ का भेद करना और उन्हें नियमित करना चाह रहा है| यह तो ऐसे है जैसे एक पत्थर को आकाश की तरफ उछालना आकाश में छेड़ करने के लिए या फिर एक सुई का उपयोग करना इस पृथ्वी में छेद करने के लिए | इतनी तुच्छ समझ! तुम्हे यहाँ से चले जाना चाहिए! क्या तुमने शोऊ-लिंग के उस व्यक्ति के बारे में नहीं सुना है जो हाँ-दान चल गया था सही प्रकार का आचरण और व्यवहार सिखने के लिए? लेकिन जब वह उस राज्य में कई दिनों में भी नहीं पहूच पाया (क्योंकि वहा पर युद्ध हो गया था) तो वह वहा जाने का अपना परियोजन ही बुल गया और उसे फिर से उलटे पाँव वापस आना पड़ा|

"अगर तुम अभी यहाँ से नहीं गए तो तुम भूल जाओगे अपना यहाँ आने का परियोजन और तुम खो दोगे उसे जिसे तुम अपना सबसे महान कौशल समझते हो|"
गोंग्ग-सुंग-लॉन्ग का मुंह खुला रह गया और वह उसे बंद भी नहीं कर पाया| उसकी जीभ उसके मुंह के उपरी हिस्से से चिपक गयी और वह वहा से भागता हुआ चला गया जैसे एक भयभीत हुआ खरगोश भागता है |

ज्हुंग्ज़ी ‘पो’ नदी के जल में मछलिय पकड़ रहा था| छु राज्य के राजा ने उनको खोजने के लिए अपने दो दरबारियों को भेजा, उनके पास पहुचकर वे बोले :
"हम यह चाहते है की आप हमारे राज्य में हमारे मंत्री बन जाए|"

ज्हुंग्ज़ी अपना कार्य करता रहा और बिना मुड़े उनसे कहा:
"मैंने सुना है छु राज्य में एक पवित्र कछुआ था जो तीन सौ साल पहले मर गया था| राजा ने उसे एक टोकरी में बंद करके शाही दरबार के निचे कही छिपा दिया था| वह कछुआ, क्या वह मर हुआ ही है और कंकाल में बदल गया है, और उसे छिपाया गया है क्योंकि वह मूल्यवान है? और क्या वह जीवित है और अब भी वहा से निकलने के लिए अपनी पूंछसे मिट्टी खोद रहा है?"

उन दो अधिकारियो ने कहा:
"उसे जीवित होना चाहिए और अपनी पूंछ के द्वारा मिटटी को खोद रहा होगा|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा:
"यहाँ से चले जाओ! मैं भी ऐसे ही अपनी पूंछ से मिटटी खोद रहा हूँ|"

ज्हुंग्ज़ी और हुई-ज़ि ‘हो’ नदी पर बने एक सेतु पर सैर कर रहे थे जब वे एक क्षण के लिए रुक गए|
ज्हुंग्ज़ी ने कहा:
"मछलिय आती है और इतने मजे में तैरती है| ऐसे ही तो वे अपने आप को आनंदित करती है|"

हुई-ज़ि ने कहा:
"तुम एक मछली नहीं हो| तो तुम कैसे जान सकते हो की वे अपने आप को कैसे आनंदित करती है?"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा:

"तुम मैं नहीं हो| फिर तुम कैसे जान सकते हो की मैं नहीं जानता की मछलिय कैसे आनंदित होती है?"

हुई-ज़ि ने कहा :
"मैं तुम नहीं हूँ और निश्चित ही नहीं जानता हूँ की तुम क्या सोचते हो| तुम भी निश्चित ही एक मछली नहीं हो इस प्रकार तुम भी नहीं जानते हो की मछलिय कैसे आनन्द प्राप्त करती है!"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"कृपया उस क्षण को दोबारा सोचो जब हमारी वार्ता आरंभ हुई थी| तुमने मुझसे पूछा था की मैं यह कैसे जानता हूँ की मछलिय स्वयं को आनंदित कर रही है| तुम वह थे जिसने प्रश्न किया था| तुम पहले से ही जानते थे की मैं यह जानता हूँ पर फिर भी तुमने किसी तरह यह पूछा| मैं यह जानता था जब हम यहाँ रुके|”

18.Perfectly Happy

Is there such a thing as perfect happiness in the world or isn't there? Is there some way to keep yourself alive or isn't there? What to do, what to rely on, what to avoid, what to stick by, what to follow, what to leave alone, what to find happiness in, what to hate?

This is what the world honors: wealth, eminence, long life, a good name. This is what the world finds happiness in: a life of ease, rich food, fine clothes, beautiful sights, sweet sounds. This is what it looks down on: poverty, meanness, early death, a bad name. This is what it finds bitter: a life that knows no rest, a mouth that gets no rich food, no fine clothes for the body, no beautiful sights for the eye, no sweet sounds for the ear.
Those are stupid ways to treat the body!
The wealthy cause suffering to their bodies and make themselves sick because they try to accumulate more and more riches, but they never seem to get enough. That's treating the body as being superficial.
People who want to be moral spend all their time day and night wondering if others see them as being kind or not. That's being negligent towards the body.
If a person spends their whole life worrying about when they're going to die, then their lives would simply revolve around worrying and they'd just be extending their misery. That's taking yourself even farther away from your body.
People of high morals could be lined up so the rest of the world could observe how good they were, but that wouldn't be enough to keep them alive. Can we really determine whether what we think is good is really goodness or really not goodness? Even if we decide that someone is good, that's still not enough to keep them alive. If we decide that someone isn't good, that might be enough to keep other people alive.
Therefore it's been said:
"Faithfully listen to admonishments. Squat down and obey. DO NOT disagree(if your loyal advice isn't heeded, give way and do not wrangle)."
When Zi Xu (an adviser to the kings of the state of Wu who was forced to commit suicide) disagreed he suffered great injury to his body. If he hadn't disagreed, then he wouldn't have ended up becoming so famous. Can anything really be considered to be good or not?

As for when ordinary people express happiness, can we really determine if their happiness is coming naturally from within them or if it's a release from unhappiness? When I observe the common people having fun, they socialize with each other in groups, rushing on and chattering incessantly as though that's the only thing they can do. Even though they all say they're happy, I'm not sure if they're happy, but I'm also not sure if they're unhappy. Maybe they're just appearing to be happy, but they're really not? Personally, I find more happiness in not being involved in all that activity, yet ordinary people would find what I do to be very uncomfortable.
Therefore it's been said:
"In perfect happiness the sense of happiness vanishes. In perfect honorability the sense of honor vanishes."
In this world, no one can know what results might occur from acting in ways that are considered to be either right or wrong. Even so, if no actions are taken, right and wrong become settled of themselves. To be perfectly happy throughout your entire life - only by taking no actions would it keep multiplying and accumulating. Please try to get the gist of these words. Without taking any actions the heavens are clear, and without taking any actions the earth is stable. Since neither of them do anything, they conform to each other and all living things transform naturally. What wasn't there before is suddenly there, and there's no sense where it came from! What is there suddenly vanishes, and it doesn't even leave an image behind! All living things become involved in all sorts of things, and they go along with what happens and keep developing without even being aware they're doing it.
Therefore it's been said:
"Heaven and earth don't do anything, yet nothing is left undone."
Among people, who would be able to achieve this type of nonaction?

When Zhuangzi's wife died, Hui Zi went to mourn with him, but found Zhuangzi sitting on the floor with his legs stretched out in front of him, banging on a drum and singing.
Hui Zi said:
"You lived with this woman, raised your children with her and got old together. That you don't cry about someone dying is one thing, but to be banging on a drum and singing shows complete lack of affection for her!"
Zhuangzi said:
"Not at all. When she first died, how couldn't I react to it! I thought back to the time before she was born. Not only before she was born, but to the time before she had any shape whatsoever. Not only before she had any shape, but to the time before she had any spiritual essence. So many different pieces blended together between the time when she was nothing at all and the time when she came into existence. As they evolved, so did her spiritual essence. As her spiritual essence evolved, her shape arose. As her shape evolved, she was born, and now the evolution has resulted in her death. Just like there are spring and autumn, summer and winter, the four seasons naturally progress from each other. For the time being she is lying down and appears to be sleeping in a huge room, and I started out rushing around trying to follow her while crying my eyes out. Then I realized I was simply trying to obstruct destiny, so I stopped."

Zhi Li Shu and Hua Jie Shu were observing the hills of the Earl of Darkness in the vast empty area of the Kun Lun mountains where the Yellow Emperor (Huang Di) used to come and rest.
Suddenly something that looked like a willow tree started growing out of his (Hua Jie Shu's) left elbow. When he noticed it he became startled and jumped up in fright as though he wasn't at all pleased with the situation.
Zhi Li Shu asked:
"Are you upset about this?"
Hua Jie Shu said:
"Not any more. Why should it upset me? Life is something we can make use of for a certain period of time. What we use temporarily in this life from the time we were born is the dirt and dust of the world. Death and birth progress like day and night. A while ago you and I were observing manifestations of transformations around us, and now I've had my own transformation. Why would that be something to be upset about!"

On his travels through the state of Chu, Zhuangzi noticed a hollow skull. Even though it was old and covered with dirt, he could still make out its shape. Zhuangzi poked it with his riding crop and then asked it:
"My friend, was it because you lost your principles and were corrupt in your life that you ended up this way? Or was it because you had no loyalty to the affairs of your country and your head was chopped off that you ended up this way? Or was it because your behavior was so horrendous you brought shame to your parents and wife that you ended up this way? Or did you end up this way simply because you found yourself cold and hungry out here in the wilderness? Or did you just die a natural death when your time was up?"
When he was finished speaking, he went to sleep using the skull as a pillow. In the middle of the night the skull came to him in a dream and said:
"It's obvious from what you said that you're an eloquent and educated speaker. Everything you said shows the ways people exhaust themselves while they're alive. After you're dead, there's no need for all that. Do you want me to tell you about what it's like to be dead?"
Zhuangzi said:
"Yes."
The skull said:
"In death there's no ruler above you nor a servant below. Also, you're not affected by the four seasons. You can be as spontaneous as the heavens and the earth, and simply flow along naturally. Even the happiness of the highest king couldn't be any better than this."
In disbelief, Zhuangzi said:
"If I could control destiny and bring you back to life again in your previous body with bones, flesh and skin, and you could return to your parents, wife, friends and neighbors, would you like that?"

The skull gave an angry glare and said:
"Why in the world would I want to give up happiness comparable to the highest king and return to the toils of human life?"

When Yan Yuan (Yan Hui, Confucius' favorite pupil) went on a journey east to the state of Qi, Kong Zi (Confucius) got a very worried expression on his face. Zi Gong (one of Confucius' disciples) moved to the foot of his mat and asked:
"Your humble disciple wishes to ask why you look so worried about Hui going east to Qi?"
Kong Zi said:
"You asked a good question! In the past Guan Zi said something I think is really good: 'If a pocket is small it can't be used to store large things. If a well rope is short, it can't be used to draw up deep water.' Someone like that realizes that a person's achievements depend mostly on their fate, and a person's suitability for certain tasks depends on their physical abilities. Those are things that can't be arbitrarily increased or decreased. I'm afraid that Hui will speak to the marquis of Qi about the Way of Yao, Shun and the Yellow Emperor (Huang di), then go on to stress the importance of the words of Sui Ren and Shen Nong. That guy (the marquis) will search within himself for those qualities but won't be able to find them there. When he can't find them, his mind will get muddled. When a person's mind gets muddled, they end up killing someone.
"Haven't you heard this story before? A long time ago a sea crow landed in in the outskirts of the state of Lu. The marquis captured it and brought it back to the palace where he provided a feast for it at his ancestral temple. He had the music of the Nine Shao (the music created by Emperor Shun of the Yin dynasty, considered to be the most exquisite music of the times) played for its entertainment, and provided the meats usually reserved for the Tai Lao festival (a yearly festival held in the spring requiring the sacrifice of a cow, lamb and pig) as an imperial meal. All that fuss only made the bird dizzy and it looked worried and sad. It didn't dare to eat one shred of meat, nor would it drink from a cup. In three days it died. He used what he himself found nourishing to nourish the bird, not considering what a bird would really be nourished by. What a bird finds most nourishing is to stay on its perch deep in the forest, travel between hills and mounds, float in the rivers and lakes eating a variety of fish, and fly in formation with other birds until they stop and wander around looking for a place to make their nest. The one thing that bird couldn't stand was having to listen to the voices of human beings. What was the point of subjecting it to all that noise and clatter? If the music of the 'Xian Chi' (Salty Pond) or the 'Nine Shao' are played outside around Dong Ting Lake, when birds hear it they fly away, when animals hear it they take off, when fish hear it they swim deeper into the pond, but when cultured people hear it they gather closely in a group and pay attention. Fish will live if they reside in water. People will die if they reside in water. They are decidedly different from one another, so their likes and dislikes are different. Therefore, the sages of old didn't expect everyone to have the same abilities, nor for what they each did in life to be similar. If things don't try to become anything other than what they really are, and righteousness goes along with what's already been set up, then you could make an analogy of that to a twig branching out naturally and grasping good fortune."

While taking a walk, Lie Zi stopped to eat something by the side of the road. Noticing a hundred-year old skull lying there, he pulled away some of the weeds around it, pointed at it and said:
"Only you and I know that you're not really dead, nor are you really alive. Due to circumstances, you're taking a rest! Due to circumstances, I'm energetic!"

Where do all the various species come from? What started growing in the water became amoeba. What grew from that on the borders of the land became frog moss. As the frog moss grew to the top of the hills, it became snakegrass. As the snakegrass got densely compacted, it became the crow's foot plants. The roots of the crow's foot plants became grubs who fed on its leaves and turned into bearded butterflies. The central body of the bearded butterflies transformed and became a variety of insects that lived beneath the warm earth. As they evolved, their skin was shed from their bodies and became what is known as flying insects. After a thousand days the flying insects became birds which were said to look like hollow discarded bones. The foam that emerged from the hollow discarded bones turned into a fine mist that filled the air. The fine mist that filled the air turned into a type of acrid

food, and provided nourishment for the birth of other crawling creatures. As the stronger of these crawling creatures spread out, they gave birth to the nine chief species of four legged creatures. As these creatures stomped over the fields, they left behind a type of fertilizer from which sprouted the sheep plant, which can be likened to bamboo without its stalks. After a long time bamboo grew in vast green fields. The vast green fields provided the type of grain that spread over large areas and nourished horses. After there were horses, human beings came into existence. People eventually return to reenter the wellspring of all life. All living creatures began from that wellspring, and they all enter back into it.

१८|पूर्ण प्रसन्नता

क्या इस संसार में परम प्रसन्नता जैसे कोई चीज़ है या नहीं है? क्या यहाँ पर है कोई मार्ग स्वयं को जिंदा रखने का है या नहीं है? क्या किया जाए, किस पर निर्भर हुआ जाये, क्या नहीं किया जाए, किसे माना जाए, किसे छोड़ दिया जाए, किस चीज़ में प्रसन्नता को खोजा जाए, किससे नफरत की जाये?

ये वह है जिसको यह संसार पूजता है: धन, प्रतिष्ठा, लम्बी आयु, महानता| यह संसार खुशी पाता है इनमे: एक आरामदायक जीवन, अच्छा भोजन, अच्छे कपडे, खुबसूरत दृश्य, मधुर संगीत| ये वह है जिसे तुच्छता से देखा जाता है: गरीबी, शीघ्र मृत्यु, ख़राब प्रतिष्ठा होना और घिन्नता| ये वह है जिससे यह संसार कडवा प्रतीत होता है: एक जीवन जिसमे कोई विश्राम न हो, वो मुख जिसमे कोई स्वादिष्ट भोजन न हो, वह शरीर जिस पर अच्छे कपडे न हो, नेत्रों के लिए कोई खुबसूरत जगह न हो, कानो के लिए मधुर संगीत न हो|
ये सभ मूर्खतापूर्ण तरीके होते है अपने शरीर के साथ व्यवहार करने के!
धन उनके शरीरो को पीड़ा प्रदान करता है और उनको व्याधित कर देता है क्योंकि वे अधिक से भी अधिक पाने का प्रयत्न करते रहते है पर उन्हें कभी संतुष्ट होते हुए नहीं देखा है| इस तरह से शरीर का निर्वाह करना तो अतिशयता है|
जो लोग और अधिक पाना चाहते है वे अपना सारा समय दिन और रात केवल यह सोचते हुए निकाल देते है की लोग उनके बारे में अच्छा सोचते है या नहीं इसे तो शरीर के प्रति असंवेदनशील होना कहा जाता है|
अगर एक व्यक्ति अपना सारा जीवन यह सोचते हुए निकल दे की उसकी मृत्यु कब होने वाली है, तब तो उनकी सारी ज़िन्दगी बस इसके इर्द गिर्द ही घुमती है और वे केवल अपने दुखो को बढ़ा रहे होते है| वे स्वयं को अपने शरीर से और दूर कर रहे होते है|
आदर्श विचारो वाले सभी व्यक्तियों को एक जगह इकट्ठा करना चाहिए ताकि यह संसार यह देख सके की वे कितने सही है पर यह भी उनको जीवन के लिए प्रेरणा देने के लिए अपर्याप्त होगा| क्या हम यह जान सकते है की जिसे हम सोचते है की अच्छा है वह वास्तव में अच्छाई है या वह वास्तव में अच्छाई नहीं है? यदि हम सोच भी ले की कोई अच्छा है पर यह भी उसको जिंदा रखने के लिए पर्याप्त नहीं होगा| लेकिन यदि हम सोच ले की वह अच्छा नहीं है तो यह शायद उससे दुसरे लोगो को जीवित रखने के लिए पर्याप्त होगा|
इसीलिए यह कहा गया है :
"परामर्शो को निष्ठापूर्वक सुनो| निचे झुको और आज्ञाकारी बनो| असहमत मत बनो|"

जब ज़ि-क्सु अपने राजा से असहमत हुआ तो उसे आत्महत्या करनी पड़ी| अगर वह असहमत नहीं हुआ होता तो शायद उसका अंत इतना प्रसिद्द होकर नहीं होता| क्या किसी भी चीज़ को अच्छा समझ सकता है या नहीं?

इस संदर्भ की जब साधारण मनुष्य प्रसन्नता जाहिर करते है तो तब क्या हम यह जान सकते है यह प्रसन्नता प्राकृतिक रूप से है या फिर यह अप्रसन्नता पर निर्भर है? जब मैं साधारण मनुष्यों का मनोरंजन करते वक़्त निरिक्षण करता हूँ तो वे एक दुसरे के साथ समूहीकरण करके सामजिक बनते है, लगातार ऐसे बातचीत और वार्तालाप करते है जैसे उनके पास यही कार्य है जिसे वे कर सकते है| यद्यपि वे कहते है की वे प्रसन्न है लेकिन मैं निश्चित नहीं हूँ की वे प्रसन्न है पर मैं यह भी निश्चित नहीं हूँ की वे प्रसन्न नहीं है| हो सकता है की वे केवल प्रसन्न दिखने का प्रयत्न कर रहे हो पर वास्तव में वे नहीं हो? व्यक्तिगत तौर पर मैं ज्यादा प्रसन्नता पाता हूँ बिना इन सभ गतिविधियों में सम्मलित हुए, फिर भी जो मैं करता हूँ साधारण मनुष्य उसे बहुत ही असहज पाते है|
इसीलिए यह कहा गया है :
"पूर्ण प्रसन्नता में प्रसन्नता की समझ ख़त्म हो जाती है| पूर्ण आनंद में आनंद की समझ समाप्त हो जाती है|"
इस संसार में कोई नहीं जान सकता है की उन तरीको को मान कर जिन्हें वे सही या गलत समझते है क्या परिणाम हो सकते है| यद्यपि कोई कार्य भी नहीं किया जाए तो सही और गलत स्वयं से ही स्थिर हो जाते है| पूर्ण प्रसन्न होना सम्पूर्ण जीवन में - यह हो सकता है केवल बिना कोई कार्य करे, यही इसको बनाये रख सकता है और इसे और बढ़ा सकता है| कृपया इन शब्दों के भाव को समझने का प्रयत्न करो| बिना कोई कार्य करे स्वर्ग शुद्ध होता है और सभ जीवित वस्तुए स्वयं से ही प्रवर्तित होती है| जो पहले यहाँ नहीं था वो अचानक से यहाँ आ गया, और इस चीज़ का कोई अंदाजा नहीं था की यह कहा से आया! जो यहाँ प्रथम था वो अचानक से ही समाप्त हो जाता है और अपने पीछे कोई छाया भी नहीं छोड़ कर गया! सभी प्राणी इसी प्रकार की

गतिविधिय में सम्मिलित होते है और वे है जो हो रहा है उसके साथ अग्रसर रहते तथा विकसित हो रहे रहते है बिना जाने की वे ऐसा हो रहे है|
इसीलिए यह कहा गया है :
"पृथ्वी और स्वर्ग कोई कार्य नहीं करते है फिर भी न होने को कुछ नहीं बचता है|"
मनुष्यों के बीच ऐसा कौन है जो इस प्रकार की निष्कामता को प्राप्त कर सकता है?

जब ज्हुंग्ज़ी की पत्नी की मृत्यु हुई तो हुई-ज़ि शोक व्यक्त करने के लिए गया पर उसने ज्हुंग्ज़ी को फर्श पर बैठकर उसके सामने गाते हुए और ढोल बजाते हुए देखा|
हुई-ज़ि ने कहा:
"तुम इस औरत के साथ रहते थे, उसके साथ अपने बच्चो को बड़ा किया, उसके ही साथ रहते हुए बूढ़े हुए| और तुम उसके लिये जिसने इतना कुछ किया रो नहीं रहे हो बल्कि यहाँ बैठकर ढोल बजाकर और गाना गाकर तुम उसके प्रति पूरी विरक्ति दिखा रहे हो!"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"पूरी तरह से नहीं| जब वह पहले मरी मैं कैसे बिना किसी प्रतिक्रिया के हो सकता था! मैंने उस समय के बारे में सोचा जब उसका जन्म नहीं हुआ था| केवल वही समय नहीं जब उसका जन्म हुआ था बल्कि वह भी जब उसका और कोई रूप या आकर था या कुछ भी| सिर्फ वह नहीं जब उसका कोई अलग रूप और आकर था बल्कि वह जब उसका कोई भी आत्मिक अस्तित्व नहीं था| बहुत सारे टुकड़े आपस में संयुक्त हुए उस समय के बीच जब उसका कोई अस्तित्व नहीं था और जब उसका कोई अस्तित्व हुआ| जैसे जैसे उनका विकास हुआ वैसे ही उसके आत्मिक स्वरूप का विकास हुआ| जैसे उसके आत्मिक स्वरूप का विकास हुआ वैसे ही उसके रूप का विकास हुआ| जैसे उसके रूप का विकास हुआ वैसे ही उसका जन्म हुआ और अब इस विकास का परिणाम उसकी मृत्यु है| वैसे ही जैसे वसंत और पतझड़ होते है, ग्रीष्म और शरद होते है चारो ऋतुए एक दुसरे से ही कार्यान्वित होती है| उस समय जब वह कक्ष में लेटी हुई और सोई हुई प्रतीत हुई तब मैं इधर उधर भागा उसका पीछा करने की कौशिश करते हुए जबकि मेरी आँखों में आंसू आ रहे थे पर तब मुझे एहसास हुआ की मैं तो केवल नियति की अवहेलना करने का प्रयत्न कर रहा हूँ इसलिए मैं रुक गया|"

जही-ली-शु और हुआ-जिए-शु कुन-लूँ पर्वत की अँधेरी रहस्य वाली पहाड़ी का अवलोकन कर रहे थे जहा सम्राट येल्लो आया करते थे और विश्राम करते थे |
अचानक ही कुछ विल्लो वृक्ष जैसे लगने वाली कोई चीज़ हुआ-जिए-शु के बाए हाथ में से बढ़नी शुरू हो गयी| जब उसका ध्यान गया वो अचानक ही सहम गया और इधर उधर कूदने लगा जैसे की वो इस परिस्थिति से खुश नहीं है|

जही-ली-शु ने पूछा:
"क्या तुम इसके बारे में नाखुश हो?"

हुआ-जिए-शु ने कहा :
"नहीं अब नहीं| यह मुझको क्यों उदास करेगी? जीवन तो वह है जिसका हम कुछ समय के लिए उपयोग करते है| जिसका हम उपयोग करते है जीवन में उस समय से है जब हम पैदा हुए थे वह इस संसार की धुल मिट्टी ही तो है|जन्म और मृत्यु दिन और रात की तरह व्यवस्थापित होती है| कुछ समय पहले मैं और तुम अविर्भावो के परिवर्तन के अपने चारो ओर अवलोकन कर रहे थे जबकि अब मेरे स्वयं में ही परिवर्तन व्यवस्थित हुआ है तो मुझे क्यों इस संदर्भ में उदासीन होने की ज़रुरत है?"

छु राज्य में अपनी यात्रा के दौरान ज्हुंग्ज़ी ने एक खाली खोपड़ी को देखा| यद्यपि वह बहुत ही पुराणी थी और धुल से ढकी हुई थी फिर भी उसका आकर बचा हुआ था| ज्हुंग्ज़ी ने उसे अपने डंडे की सहायता से आगे की और ढकेला और पूछा :
"मेरे मित्र क्या यह इसलिए है की तुम अपने उसूलो से भटक गए थे और भ्रष्ट हो गए थे जो इस तरह तुम्हारा जीवन समाप्त हुआ? या फिर इसलिए है की तुम्हारी अपने राज्य के प्रति कोई वफ़ादारी नहीं थी और तुम्हारे सर को काट दिया गया और इस तरह तुम्हार अंत हुआ? या फिर इसलिए है की तुम्हारा व्यवहार बहुत ही भयानक था जिसके कारण तुम्हारे माता पीता अपमानित हुए और तुम्हारा अंत इस प्रकार हुआ? और केवल इसलिए तुम्हारा अंत हुआ की तुम इस जंगल में भटक गए थे जिसकी वजह से भूख और प्यास ने तुम्हारे प्राण ले लिए? और या फिर तुम्हारी स्वभाविक मृत्यु हो गयी क्योंकि तुम्हारा समय पूरा हो गया था?"

जब उसने बोलना समाप्त कर दिया, वह उस खोपड़ी को तकिया बनाकर सोने चला गया| रात्री के मध्य में वह खोपड़ी उसके स्वप्न में आई और कहा:
"तुम्हारी बातो से यह स्पष्ट होता है की तुम एक बहुत ही शिक्षित व्यक्ति हो और वाक्पटुता में माहिर हो| जो कुछ भी तुमने कहा वह वे तरीके थे जिनके कारण आमतौर पर लोग अपने जीवन को समाप्त कर लेते है| जब आप मर जाते है तो इन सभ का कोई महत्व नहीं रहता है | क्या तुम मुझसे जानना चाहते हो की मरना कैसा होता है?"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा:
"हाँ"

खोपड़ी ने कहा:
"मृत्यु में न ही तो कोई आपका शासक होता है और न ही कोई आपका सेवक होता है| और तुम चारो ऋतुओ से प्रभावित भी नहीं होते हो| तुम ऐसे निरंतर होते हो जैसे की पृथ्वी और स्वर्ग है और सहजता से प्राकृति के अनुसार होते हो | जबकि इस पृथ्वी के सबसे बड़े सम्राट का आनंद भी इससे ज्यादा नहीं हो सकता है|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा:
"अगर मैं तुम्हारे भाग्य को नियंत्रित करने में सक्षम होऊ और तुम्हे दोबारा जीवित कर सकू फिर से उसी शरीर में तुम्हारे रूप और आकार को वैसे ही और तुम लौट पाओगे अपने माता पिता, पत्नी, बच्चो और रिश्तेदारों के पास, तो क्या तुम ऐसा होने को पसंद करोगे?"

उस खोपड़ी ने उग्र भाव देते हुए कहा:
"क्यों इस संसार के उस आनंद को त्यागकर जो तुम्हारे सम्राटो से भी अधिक है मैं फिर से इस मनुष्य के जीवन में दुःख भोगने के लिए वापस जाऊ?"

जब यां-युआन जो की ज्होंग-नि का प्रिय शिष्य था पूर्व की और अपनी की राज्य की यात्रा पर था तो ज्होंग-नि के मुख पर एक चिंतपूर्ण भाव आया | ज़ि-गोंग उनके आसन के पास गया और पूछा:
"आपका यह शिष्य सविनय यह जानना चाहता है की आप हुई के पूर्व की ओर जाने के विषय में चिंतित क्यों है?"

कोंग-ज़ि ने कहा :
"तुमने एक अच्छा प्रश्न किया है! पुराने समय में गुंग-ज़ि ने कुछ कहा था जो मुझे बहुत अच्छा लगा 'अगर एक जेब छोटी होती है तब उसका उपयोग बड़ी वस्तुए रखने के लिए नहीं कर सकते है| अगर एक रस्सी छोटी होती है तो उसका उपयोग कुए से जल निकलने के लिए नहीं कर सकते है|' उसी प्रकार यह अनुभव किया जा सकता है की एक व्यक्ति की सफलताए अधिकतर उसके प्रारब्ध पर निर्भर होती है और एक व्यक्ति की योग्यता किसी विशिष्ट कार्य के लिए निर्भर होती है उसकी शाररिक क्षमताओ पर| ये वो वस्तुए होती है जो निरंतर बढ़ भी सकती है या घट भी सकती है| मुझे भय है की 'हुई' जरूर 'की' के सम्राट से याओ, शुन और येल्लो राजा के मार्गो के बारे में कहेगा तब वह सुई-रेन और शेन-नोंग के शब्दों के भी महत्व पर जोर देगा| वह व्यक्ति(की का सम्राट) अपने अन्दर उन गुणों को तलाशने की कौशिश करेगा पर अपने अंदर उन्हें खोज नहीं पायेगा| जब वह उन्हें नहीं खोज पायेगा तो उसका मन उग्र हो जायेगा और जब एक व्यक्ति का मन उग्र और विचलित होता है तो वह किसी की हत्या करके ही शांत होता है|

क्या तुमने इस कहानी को पहले कभी नहीं सुना है? बहुत समय पहले एक समुद्री कौआ लू राज्य के बाहरी सीमा में आया| वहा के द्वारपाल ने उसे पकड़ लिया और उसे महल में ले जाया गया जहाँ उसे शाही भोज प्रदान किया गया प्राचीन मंदिर में जाकर| उसे 'नौ सगो'(प्रसिद्ध संगीत) वाला संगीत भी सुनाया गया उसके मनोरंजन के लिए और उसे शाही भोज में वे व्यंजन परोसे गए जिन्हें आमतौर पर तै-लाओ उत्सव पर तैयार किया जाता था| इस सारे कोलाहल ने उस पक्षी को अस्थिर और चिंतित कर दिया और ऊसने कहा 'मै इस भोजन का एक टुकड़ा भी खाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा हूँ न ही कुछ पिने की|' तीन दिनों के बाद वह मर गया| क्योंकि उन्होंने जिसको वे स्वयं को तृप्त करने के योग्य भोजन मानते थे उस पक्षी के भोजन के लिए उपयोग किया बिना यह जाने की एक पक्षी कैसे भोजन से तृप्त होता है| एक पक्षी जिसमे आनंद लेता है वह तो है छोटे छोटे कीटो का शिकार करने में, पर्वतो और पहाडो में बीच उड़ने में, नदी के ऊपर उड़ते हुए उसमे से मछली पकड़ने में, और बाकि पक्षियों के साथ आकृति बनाकर उड़ने में जबतक के वे रुक न जाये और अपने रहने के लिए कोई स्थान न खोज ले| और वह वस्तु जिसे वे

पसंद नहीं करते है वह होती है मनुष्यों की आवाजो को सुनना| फिर इस प्रकार उसे इस सभ कोलाहाल और शोर से परवश करने का क्या तात्पर्य था?
जब क्सियन-ची और नौ-शो के संगीत को दोंग-टिंग झील के किनारे बजाय जाता है तो पक्षी इस सुनकर उड़ दूर जायेगे, जब जानवर इसे सुनेगे तो दूर भाग जायेगे और जब मछलिय इसे सुनेगी तो वे जल में गहरा गोता लगा लेगी पर जब सभी लोग इसे सुनते है तो वे समूह में इकट्ठा होकर इस पर ध्यान देते है| मछलिय जल में ही रहकर जीवित रहती है| मनुष्य जल में जीवित नहीं रह सकते है| वे एक दुसरे से भिन्न है इस प्रकार उनकी पसंद और नापसंद भी भिन्न है| इसलिए पुराने समय के साधू उन जैसे योग्यता होने की उम्मीद नहीं रखते थे और न ही वे जो जीवन में करते थे वो एक जैसा होता था| अगर वस्तुए जो की वे वास्तव में है उससे भिन्न बनने की कौशिश ना करे और धर्म का प्रवाह उसीके साथ हो जो पहले से ही अस्तित्व में है तब आप सदृश्यता अपना सकते है एक टहनी के प्रति जो की एक शाखा से निकल रही प्राकृतिक रूप से और अपने अच्छे भाग्य की और अग्रसर हो|"

एक बार घूमते वक़्त लिए-ज़ि सड़क के किनारे कुछ खाने के लिए रुक गया| वहा पर एक पुरानी खोपड़ी को पड़ा देखकर उसने उसके चारो और से घेरे हुई घास फूस को हटा दिया और उसकी तरफ देखते हुए बोला:
"केवल तुम और मैं जानते है तुम वास्तव में मृत नहीं हो और न ही तुम वास्तव में जीवित हो| परिस्तिथियों के परिणाम स्वरूप तुम यहाँ नीचे आराम कर रहे हो और परिस्तिथियों के परिणाम स्वरूप ही मैं यहाँ खड़ा जीवंत अनुभव कर रहा हूँ!"

कहा से सभी प्रकार की प्रजातीय उत्पन्न हुई है? जल में किसका विकास होना आरंभ हुआ थो की वो एक अमीबा (एक छोटा जंतु) बन गया| इस पृथ्वी पर किसका विकास हुआ की वह कुश (घास) बन गयी| जैसे ही उस कुश का विकास पर्वतो के ऊपर होना शुरू हुआ वह सर्प-घास बन गयी|जैसे जैसे सर्प-घास सघन होती गयी वह छोटे पोधे बन गयी| जैसे ही उन पोधो का विकास हुआ वे तितलिय बन गए| उन तितलियों के भूमध्य शरीर का विकास हुआ और वे इस पृथ्वी पर रहने वाले छोटे छोटे किट बन गए| और जैसे ही उन किटो का विकास हुआ उनके शरीर से उनकी खाल निकलना शुरू हुई और वे उड़ने वाले कीट बन गए| हजारो दिन बाद वे उड़ने वाले कीट पक्षियों में बदल गए और कहा जाता है की उनमे हड्डियों का एक ढांचा था| तब बहुत ही उत्कृष्ट प्रकार का कोहरा जो की हवा में था वह उनके भोजन में बदल गया और उसने बाकि जीवो की उत्पत्ति के लिए आधार प्रदान किया| जितनी तेजी से ये जीव बढ़ते गए वैसे ही उन्होंने नइ प्रजातियों को जन्म दिए और नौ प्रमुख चार पैरो वाली प्रजातियों का जन्म हुआ| जैसे जैसे ये जीव मैदानों में कुच करते गए वहा पर उपजाऊ खाद का निर्माण हुआ और इससे विभिन्न घासों की उत्पत्ति हुई जो की बांस जैसे भी दिखती थी बिना उसके तने के| कुछ समय बाद बांस का विकास विशाल हरे मैदानों के रूप में हो गया| उन हरे मैदानों ने विभिन्न प्रकार की फसलो को आधर प्रदान किया जिसने घोड़ो का पोषण किया| घोड़ो के आने के बाद मनुष्य अस्तित्व में आये| और लोग अतः फिर से अपने जीवन के स्त्रोत की तरफ जाने लगे| सभी जीवो की उत्पत्ति इसी स्त्रोत से हुई थी और वे वापस उसी में लौट गए|

19.The Full Understanding of Life

Someone who's realized the essence of a full life doesn't try to make more of life than it is. Someone who's realized the essence of fate doesn't try to understand what's beyond comprehension(does not labor over what knowledge cannot change).

In order for a person's body to thrive it has to consume things, but sometimes even though there's a surplus of things around, the body doesn't thrive on what it has. In order to stay alive a person has first and foremost not to neglect their body, but sometimes even though they don't neglect their body they still lose their life. When life comes about it can't be resisted, and when life is snuffed out it can't be prevented. It's so sad that most people today think that by simply nourishing their bodies they can live longer, but then they discover that nourishing their body isn't enough to make them live longer. Would there be anything anyone could do that would be enough? Although it's not enough simply to do those things, they still have to be done. What's unavoidable has to be done. If someone wants to avoid doing anything more than that with their bodies, then they might as well abandon everything around them. By abandoning everything around them, they wouldn't try to accumulate extra stuff. By not trying to accumulate extra stuff then they'd reach an even keel. By reaching an even keel then they'd join with everything that could add to their life. Having their life added to they'd become more aware of everything around them.
Would it be enough to simply abandon affairs and to take it easy in life? By abandoning affairs, then the body wouldn't be overtaxed. By taking it easy in life then essence wouldn't be deficient. When the body is whole essence returns and becomes united with the heavens. The heavens and earth are father and mother to all living things. Combine them and there will be substance. Divide them and everything then has to start over. When body and essence aren't deficient, this can be called being able to adapt and transform. When essence is compounded by more essence, it facilitates a connection with the heavens.

Master Lie Zi asked Guan Yin:
"A perfected person can move under water without suffocating, skip across fire without being burned, and soar above all living things without fear. May I ask how he gets to that point?"
Guan Yin said:
"He merely guards the pure vital energy within him, but it has nothing to do with any sort of knowledge, skill, resolution or daring. Sit down and I'll explain it to you. What all things have in common is that they have their own features, contours, sounds and colors. Things aren't really so different from each other in that respect, are they? What would be sufficient enough to rate one over the other? They're all just various spectrums on the color wheel and that's about it. Since things were shapeless before they were created, and they stop when nothing further needs to be changed, they know when they've reached their limit and when they'd be exhausting themselves to go further. Things reach a certain point and then stop! Each of them reaches a point where they don't exceed beyond their own limits and give up on trying to come up with a reason to put themselves in order. Drifting where all things begin and end, unifying one's nature, nourishing one's vital energy, conforming with one's virtue in order to share in an understanding of the creation of things. If someone could be like that, they would be completely guarded by the heavens and their spirit would be without cracks. How would anything enter?
"If a drunk falls from a cart, he might be injured but he wouldn't die. His bones and joints are the same as other people's, but the amount of harm he receives is different than other people since his spirit is undivided. He wasn't aware of riding in the cart, and wasn't aware of falling out. Being startled or fearful of losing his life didn't even enter his mind, so when he tumbled he didn't try to resist by bracing himself. If simply drinking wine can have this effect, how much more so would it be if one was undivided from the heavens?
"A sage only finds refuge in the heavens, and therefore nothing has the ability to harm him. When responding to an enemy, he doesn't break the handle of his sword. Although feeling resentful for a situation, he doesn't blame the falling brick. He finds a way to react to everything in the world uniformly. One who's able to get rid of the chaos of fighting and warfare, and eliminate the punishments resulting from killing and slaughtering, cultivates with Dao.

"Don't open up to what appears to be heavenly in others, but open up to what's heavenly in the heavens. In one who opens up to the heavens, virtue will grow. In one who opens up to others, jealousy will grow. Don't be smug about what's gotten from the heavens nor disregard what comes from others. How many people could really get this concept clearly?"

When Zhong Ni (Confucius) was on his way to the state of Chu he passed through the middle of a forest and saw a hunchback who was bent over collecting cicadas on the tip of a stick as easily as if he'd scooped them up with his two hands.
Zhong Ni said:
"You're so skillful! Is there a special way to do this?"
"I have a special way. I practiced steadily for five or six months. When I could balance two pellets on the stick without dropping them, then I'd only lose a small portion of the cicadas. After I could balance three pellets without dropping them, then I'd only lose one out of ten cicadas. Once I could balance five without dropping them, I could pick up cicadas with a stick as easily as if I was scooping them up with two hands. I position my body like a rooted tree stump, extend my arms like the branches of a withered tree, and although the immensity of the heavens and earth and the multitude of the thousands of living things are all around me, I'm only aware of the wings of the cicadas. I don't shift my position or lean to one side, and wouldn't trade the wings of the cicadas for any of the thousands of other things. By doing this, how could I not succeed?"
Kong Zi turned around to peer at his disciples and said:
"Use willpower to not be distracted, and only then can attention be concentrated on the spirit. This hunchbacked gentleman explained it well!

Yan Yuan (Yan Hui) asked Zhong Ni (Confucius):
"I was once crossing the Shang Shen Pool, and the captain piloted that boat as if it was part of his own spirit. I asked him: 'Can anyone learn to pilot a boat like that?' He said: 'They can. One who's a good swimmer could quickly pick it up. As for divers, even if they'd never seen a boat before they could take right to it.' I got an answer to my question, but I don't understand it. Would you explain it to me?"
Zhong Ni said:
"A good swimmer could quickly pick it up because he forgets he's in water. As for a diver who'd never even seen a boat to be able to take right to it, that's because he sees the cavernous depths of an abyss as though it's a hill and a capsized boat as though it's an overturned cart. There are thousands of ways things can be capsized or overturned right in front of you, but they don't result in shaking you to the core. How could you go anywhere if you were stressed out about what might happen? One who gambles using plastic chips has no trouble being skillful. If he gambles using paper money he gets more apprehensive. If he gambles with large stakes he breaks out in a sweat. The player's skill level is the same in each instance, but as the stakes rise so does his sense of self importance, and then the only thing that's truly important seems to be what's on the outside. If everything outside holds so much importance, then what's on the inside becomes clumsy and awkward."

Tian Kai Zhi (Of the Open Cultivated Fields) went to visit Duke Wei of Zhou.
Duke Wei said:
"I've heard that Zhu Shen (Officer in charge of Kidneys) is a medical student. Since you've traveled about with him, what can you tell me about all that?"
Tian Kai Zhi said:
"All I've done is to pull and push a broom around his front courtyard. What could I have possibly heard from that Master?"
Duke Wei said:
"Don't be so humble, Tian Zi. I'd sincerely like to hear something about it."
Kai Zhi said:

"I've heard the Master say: 'Someone who is good at staying healthy acts like someone tending sheep. If he sees some of them lagging behind, he prods them with his whip.' "
Duke Wei said:
"What does that mean?"
Tian Kai Zhi said:
"In the state of Lu there was a man named Dan Bao (Solitary Leopard) who lived high up on the cliffs and only drank water. He didn't share in what other people thought was beneficial. By the time he was seventy years old he still had the complexion of a newborn infant. One day he had the misfortune of meeting up with a hungry tiger who killed and ate him. There was another man named Zhang Yi (Stubborn Wild Boar) who'd go visiting all the rich families in the neighborhood, constantly going from one place to another. By the time he was forty years old he got a terrible fever from some contagious disease and died. Bao cultivated what was inside of him, and a tiger ate his outer form. Yi cultivated his outer behavior and a disease attacked his insides. What happened to both of them was due to the fact they neglected whipping what was lagging behind."

Zhong Ni (Confucius) said:
"Without withdrawing and hiding away;
"Without going forth and flaunting;
"Stand steadily in the middle of the extremes.
"If one practices these three things with earnestness, they must certainly be described as having reached the ultimate.
"When setting out on a dangerous journey where one man in ten is killed on the road, fathers will prohibit sons and older brothers will prohibit younger brothers from going unless they travel with armed escorts. That seems sensible, doesn't it? On the other hand, people don't have much sense of danger when they're sitting comfortably on their soft mats and feasting on food and wine. However, that no one knows enough to try to prohibit them from that behavior is a grave mistake."

The officer in charge of ancient ritualistic sacrifices was looking over the animals in their pens. He said to the pigs:
"Why would you dislike the idea of being sacrificed? For three months I'll feed you lots of grain and sweet foods to fatten you up. For ten days I'll force you to not move around. For the last three days I'll pamper you with baths and manicures, then place you on a bed of clean white cogongrass (a weed with plumes like feather dusters). After the sacrifice, I'll place your shoulders and rumps on top of an elegantly carved altar. And I'll do all that for you!"
(Note: It was believed that the fatter a pig was at the time of sacrifice, the more blessings would be bestowed by the gods. The pigs were fattened with many meals a day, and prevented from moving too much. Then they had to be cleaned up for the ceremony.)
If he would have consulted with the pigs they would have said they'd rather feed on chaff and rotten tubers and never been put into the middle of a pen. Since his plans for the pigs revolved around his own self interest, he preferred the idea of living a lazy life while being respected for his fancy hat and carriage, and when he died to be raised high on a parapet covered with luxurious furs while a bunch of people gathered around him bowing. That's what he'd prefer. If his plans were for the benefit of the pigs, he'd leave them alone. Since his plans revolved around himself, then he corralled them. Does he consider himself any different than a pig?

Duke Huan was hunting in the lowlands with Guan Zhong (his prime minister) as his attendant when he saw a ghost. The Duke reached unsteadily for Guan Zhong's hand and said:
"My highest adviser Zhong, did you see anything over there?"
He replied:
"Your humble servant didn't notice anything."
When the Duke returned home he couldn't form a sensible sentence and fell quite ill, refusing to go out for several days. Huang Zi Gao Ao (Brilliant Master of Speaking Right Out), a scholar in the state of Qi, said:

"You're the one who's hurting yourself. How would a ghost be able to harm you? If your heart gets as unsettled as a herd of wild animals and your vital energy disperses and doesn't return, then you won't be good for anything. If the energy flies up and doesn't come back down, that would make anyone irritable. If it sinks down but doesn't come back up again, that would make anyone depressed. If it neither goes up nor down, but settles in the middle of the body and is clutched by the heart, then it can create great illness."
Duke Huan said:
"Is it true that there are ghosts?"
"There are. In deep pits there is Lu. In the hearth (stove) there is Ji. In the patch of dust inside the door sill there is Lei Ting. Under the northeastern eaves Bei A and Gui Long leap about. Under the northwestern eaves, that's where Yi Yang hangs out. In the water there's Wang Xiang. In the hills there's Xin. In the mountains there's Kui. On the plains there's Pang Huang. In the lowlands there's Wei Yi."
The Duke said:
"Excuse me, but may I ask what Wei Yi looks like?"
Huang Zi said:
"Wei Yi? It's as wide as the hub of a chariot wheel and as tall as a wheel shaft. It wears purple clothing and a red hat. This creature hates to hear the thundering roar of passing chariots, and if it does it stands up and covers its head with its hands. One who sees it is on the verge of becoming overlord of the empire."
Duke Huan brightened right up and laughed saying:
"So that's what I saw out there!"
At that point he straightened his clothes and hat, sat up alongside him (Huang Zi) and it didn't take one day for his illness to be gone without him realizing it.

Ji Xing Zi (Master Careful Inspection) was raising a fighting cock for the king. After ten days he was asked:
"Is the cock ready yet?"
"Not yet. He's still pretentiously arrogant and relies solely on his physical prowess."
In ten days he was asked again and said:
"Not yet. He still overly reacts to everything happening around him."
In ten days he was asked again and said:
"Not yet. He still gives contemptuous glares and retains animosity."
In ten days he was asked again and said:
"He's about ready. Although another cock may crow at him, he doesn't change his demeanor, but gazes at him as if he were made of wood. His virtue is complete. Other cocks wouldn't be confident enough to respond to him, but would turn and walk away."

Kong Zi (Confucius) was observing the view from the Lu Liang Mountains where there was a waterfall three hundred feet high. The foam and froth created by the water as it hit bottom extended for thirteen miles. Neither turtles, alligators, fish nor any other water creatures were able to swim in those rapids. He saw one man swimming in the current and figured he must be very troubled and was trying to commit suicide so he told his disciples to line up at the banks of the river and rescue him. After the man had gone a few hundred feet he popped up in the water with his hair trailing behind him like a blanket, singing as he floated, and swam up to the edge of the embankment and climbed out.
Kong Zi went up to him and asked:
"I thought you must have been some sort of ghost, but now I can see you're a man. Please excuse me for asking, but do you have a special way to flit through water like that?"
"No, I don't have a special way. I started with what was inborn in me, grew up following my own nature, and accomplished what I have because of my fate. When I enter, I merge with the flow and let it carry me. When I exit, I allow myself to be floated up gently by the current. I follow the way of the water and don't try to force against it. That's how I flit through the water."
Kong Zi said:

"What do you mean by starting with what is inborn, growing up following your own nature, and accomplishing due to fate?"
"I was born from a pile of dirt so I'm comfortable in the hills - that's what's inborn. I grew from the water, so I'm comfortable in water - that's my nature. I don't know why I am the way I am, but I'm comfortable being what I am - that's fate."

Woodworker Qing made elaborately carved wooden bell stands. When others saw the completed bell stands, they were startled and thought they must have been created by supernatural beings. The Marquis of Lu saw one of them and asked:
"What special art do have to be able to do this?"
He replied:
"Your humble servant is merely an artisan. What special artistic ability could I have? However, I do use one system. When I'm about to create a bell stand, I'm careful not to expend too much of my vital energy, so I have to first settle my mind and heart in calmness. For three days I prepare myself by giving up on any ideas of praise or rewards for my work. The next five days I prepare by not being concerned whether my work will be criticized or considered to be not perfect enough. Then for seven days I prepare myself by forgetting about the prescribed shapes of things including the shape of my own body. By that time I've lost all consideration as to what the royal court would demand of me, concentrate completely on my task, and outside influences just disappear. Then I enter the mountain forests and observe the naturalness of the heavens. By seeing that all the shapes around me are complete of themselves, I can envision a completed bell stand. At that point I can actually start working with my hands, but not until then. It's because I use the heavens to fit perfectly with the heavens that some suspect my tools were used by spirits. That's all there is to it!"

Dong Ye Ji (Reckless Driver from the East) was showing Duke Zhuang his abilities at driving a chariot. He steered the chariot forwards and backward using the middle rope to guide the horses. He turned in concentric circles to the left and right by using the middle guide line. Duke Zhuang thought no one could surpass these elaborate moves. As a further test, he told him to make one hundred circuits of the arena and then return.
Yan He, who had been watching what was going on, went in to see the Duke and said:
"Ji's horses are going to jade."
The Duke stiffened up and didn't respond. A short time later the horses did jade and had to return.
The Duke said:
"How did you know that was going to happen?"
He responded:
"The strength of the horses was exhausted, yet he kept demanding more of them. That's how I knew they were going to jade."

Carpenter Chui could draw a more accurate circle with his finger than those who used a compass or ruler and he didn't have to double check his marks. That's because he kept his Ling Tai (a place within where the spirit can be elevated and congealed) unified and unfettered. The feet are forgotten when the shoes are comfortable. The waist is forgotten when the belt is comfortable. The knowledge of right and wrong is forgotten when the heart and mind are comfortable. What's inside doesn't change and what's outside doesn't sense a need to conform when situations are dealt with comfortably. When you start out being comfortable and never become uncomfortable, then you forget about trying to be comfortable.

A man by the name of Sun Xiu (Last Descendant of the Family) walked heavily up to a gate and startled the Master of the house, Bian Qing Zi (Master Expression of Good Tidings), when he spoke:
"I live in the countryside, but I've never had someone call me uncultured because of that. I've lived through turbulent times, but I've never had someone call me a coward for not doing more. But even so, none of the fields I've cultivated from scratch have ever produced a good harvest, and none of the rulers I've served have ever

recognized me. I'm treated as a foreigner in my own village and have been thrown out of the big city offices. What crime have I committed against the heavens that I should meet with such a sorry fate?"
Bian Zi said:
"Haven't you heard about the behavior of a perfected person? He forgets about his liver and gall, and doesn't overvalue his ears and eyes. In a ridiculous manner he goes to and fro in the dust and dirt outside. Free and unfettered he doesn't get involved with the affairs of business. This is called taking actions without being dependent on results and being efficient without needing to control. Now you pretend to be intelligent so as to stupefy the ignorant, keep your body fit so as to amaze the spoiled, and consider your behavior to be so brilliant and stunning that it would eclipse both the sun and the moon. Thus far you've kept your bodily form in tact, your nine apertures are working properly, and you haven't been struck in the middle of your life with blindness, deafness, lameness or a deformity, and compared to most other people you've been very lucky. So why would you spend your leisure time complaining about the heavens? Go away!"
When Sun Zi had gone, Bian Zi went into the house. He sat there staring into space then looked upward and heaved a big sigh.
One of his disciples asked:
"Master, why did you sigh like that?"
Bian Zi said:
"When Xui came for directions, I told him about the virtue of a perfected person. I'm afraid I startled him and left him in utter confusion."
The disciple said:
"Not necessarily. Was what Sun Zi said correct and what you said incorrect? If so, then what's incorrect would never be able to cause uncertainty about what was correct. Was what Sun Zi said incorrect and what you said correct? If so, then he was already completely uncertain when he arrived. Both of you could be to blame."
Bian Zi said:
"Not necessarily. In ancient times, a bird landed in the countryside of the state of Lu. The Prince of Lu was delighted with it, so he arranged for a great sacrificial ceremony in order to provide it with a banquet of delicious food, and had the 'Nine Shao' music played to entertain it. The bird got a very worried and concerned look on it's face and refused to eat or drink anything. This is called using what nourishes yourself to try to nourish a bird. If instead one uses what nourishes a bird to nourish a bird, it would be allowed to perch deep in the forest, float on the rivers and lakes, hunt and peck for food then comfortably settle on a piece of land - and that's all. Now Xui is slow on the uptake and is much less well informed than other people. When I told him about the virtue of a perfected person, that was like transporting a mouse in a horse-drawn carriage, or entertaining a dove with bells and drums. How would he not be startled?"

१९|जीवन की पूर्ण समझ

वह जिसे अनुभव हो गया है है की जीवन का तत्व इसको ऐसे ही रहने देने में है, वह इससे और अधिक कुछ पाने का प्रयत्न नहीं करता है| वह जिसे अनुभव हो गया है भाग्य के मर्म का, वह उस वस्तु का बोध करने का प्रयत्न नहीं करता है जो समझ से परे है| (वह उसके लिए बेवजह परिश्रम नहीं करता जिसको ज्ञान बदल नहीं सकता है)

एक मनुष्य के शरीर को फलने फूलने के लिए वस्तुओ का उपभोग करना पड़ता है, लेकिन कुछ समय जब आस पास बहुतायत भी होती है यह शरीर उस समय जो उसके पास है उसका उपयोग नहीं करता है| एक व्यक्ति को जीवित रहने के लिए उसका सबसे पहला और आखिरी कार्य यही है की वह अपने शरीर की अवहेलना न करे| जब जीवन आता है तब इसका विरोध नहीं किया जा सकता है और जब जीवन समाप्त होता है तब इसे रोका नहीं जा सकता है| यह बहुत ही उदासीन है की आजकल लोग सोचते है की अपने शरीर का और अधिक लालन-पोषण करके वे दीर्घ जीवन व्यतीत कर सकते है पर तब उन्हें ज्ञान होता है की उनके दीर्घ जीवन के लिए उनका शरीर का लालन पोषण करना पर्याप्त नहीं है| क्या ऐसी भी चीज़ हो सकती जो पर्याप्त हो और जिसे कोई भी कर सके? यद्यपि यह इतना आसन भी नहीं है ऐसे चीजों को करना पर फिर भी उनक होना तो जरूरी है| जो अपरिहार्य है उसका होना तो आवश्यक है| अगर कोई भी अपने शरीरो द्वारा इससे ज्यादा कोई भी कार्य करना टालना चाहता है, तब वे इसके साथ
अपने चारो और हर कार्य को टाल रहे होते है| अपने चारो और हर वस्तु की अवहेलना करके तब वे नहीं संचित कर रहे होते है अतिरिक्त सामग्री को और इस प्रकार अतिरिक्त वस्तुओ का लालच छोड़े हुए वे एक सम स्थिति में होते है| और इस सम स्थिति में पहुचकर वे जुड़े हुए होते है हर वस्तु से जो उनके जीवन में हो सकती है| अपने जीवन को ऐसे सभी वस्तुओ के साथ जोड़कर वे उनके प्रति अधिक सजग हो जाते है| क्या यह अपर्याप्त नहीं है सभी प्रसंगों से ध्यान हटाने को और अपना जीवन सहजता से जीने को? प्रसंगों की उपेक्षा करके उनके शरीर का अतिशय नहीं होता है| अपने जीवन में सहजता को पाकर उनके मूल का आभाव नहीं होता है| और जब शरीर परिपूर्ण होता है तो मूल वापस लौट जाता है और स्वर्ग के साथ एकरूप हो जाता है| स्वर्ग और धरती सभी प्राणियों के माता पिता है उनको संयुक्त कर दो और सभी पदार्थो की उत्पत्ति हो जाती है| उनको पृथक कर दो और सभी वस्तुओ को फिर से शुरू होना पड़ता है| जब शरीर और मूल में कोई आभाव नहीं होता है तब इसे कहते है परावर्तित होने के अनुरूप होना| जब मूल को संयुक्त कर दिया जाता है तब यह स्वर्ग मूल के साथ के साथ अपना एक संबंध बना लेता है|

आचार्य लिए-ज़ि ने गुआन यिन से पूछा:
"एक परिपूर्ण मनुष्य जल के अंदर भी बिना दम घुटे विचरण कर सकता है, बिना जले अग्नि में से चल सकता है, और बिना किसी से भयभीत हुए गरज सकता है| क्या मैं तुमसे पुछ सकता हूँ की मैं इस निष्कर्ष पर कैसे पंहुचा?"|

गुआन-यिन ने कहा:
"वह किंचित ही अपनी मूल जीवन शक्ति का संरक्षण करता होगा पर इसका ज्ञान, कौशल, संकल्प या फिर साहस के साथ कोई संबंध नहीं है|

निचे बैठ जाओ और मैं इसे तुम्हे समझाता हूँ:
"सभी वस्तुए के में जो एक सामान है वह है गुण, ध्वनी, रंग और रूप का होना| इस संदर्भ में वास्तव में कोई वस्तु एक दुसरे से ज्यादा भिन्न है, क्या वे है? क्या यह पर्याप्त होगा उनको एक दुसरे से पृथक व्यक्त करने के लिए? वे तो बस बिखरे हुए रंग है एक इन्द्रधनुष के जैसे, और यही वे है| चूँकि वस्तुए जब उन्हें बनाया गया तब आकर रहित थी और वे ठहर गयी जब आगे बदलाव की कोई जरूरत नहीं थी, वे जानती थी की वे अपनी हदों तक कब पहुच गयी है और कब और आगे जाने में स्वयं को समाप्त कर रही है| वे एक निश्चित स्थिति में पहुचकर ठहर जाती थी! उनमे से प्रत्येक एक निश्चित स्थिति में पहुचती थी जहाँ से वे अपनी सीमओं के आगे नहीं जा सकती थी और वे उससे आगे बढ़ने के अपने प्रयत्न को छोड़ देती थी| वहां पर जाना जहाँ से सभी वस्तुओ की उत्पत्ति हुई है और अंत होगा, अपने स्वरूप को एकरूप करना, अपनी मूल जीवन शक्ति का संरक्षण करना, अपने सामर्थ्य के साथ समरूप होना ताकि सभी वस्तुओ के साथ अपनी समझ को साँझा कर सके| अगर कोई ऐसा होता है तो निश्चित ही उसका रक्षण स्वर्ग द्वारा किया जाता है और उसकी आत्मा निर्दोष होती है| फिर क्या वस्तु उसे प्रभावित कर सकती है?

“अगर एक पियक्कड़ व्यक्ति एक घोडा गाड़ी से निचे गिर जाता है, तो वह चोटिल हो सकता है लेकिन उसकी मृत्यु नहीं होगी| उसकी हड्डिय और जोड़ ऐसे ही है जैसे की दुसरे लोगो के होते है पर जो क्षती उन्हें पहुची है वह दुसरो से भिन्न होगी चूँकि उस वक़्त उसकी आत्मा अविभाजित थी| उसे उसकी सवारी करने का कोई बोद्ध नहीं था और न ही उससे निचे गिरने का| उसके मन में आशंकित होने का या फिर अपने जीवन को खो देने का तो कोई भी भाव नहीं था| इसलिए जब वह गीरा तो स्वयं को सँभालने का उसने कोई प्रयत्न नहीं किया| अगर केवल एक मदिरा पिने का यह प्रभाव हो सकता है तो जानो की उसका कितना अधिक प्रभाव होगा जो स्वर्ग के साथ अभिन्न होता है?
"एक साधू केवल स्वर्ग में ही अपना आसरा पाता है, इस प्रकार किसी भी वस्तु में उसको क्षति पहुचने की क्षमता नहीं होती है| एक शत्रु को प्रतिक्रिया देते हुए वह अपनी तलवार के सिरे को नहीं मोड़ता है| हालाँकि वह कुछ क्षण के लिए क्रोधित भी हो सकता है पर इसके लिए वह परिस्थितियों को दोष नहीं देता है| उसने सभी वस्तुए के साथ एक सामान प्रतिक्रिया करने के मार्ग को अपनाया होता है| वह जो लड़ाई और युद्धों की गतिविधियों से दूर रहने में सक्षम होता है वह हत्या और प्रताड़ना देने से मिलने वाले फलो के परिणामो से बच जाता है और ताओ के साथ एक हो जाता है|
“उसको मत सींचो जो दुसरो में नैसर्गिक है उसको सींचो जो स्वर्ग में नैसर्गिक है| यदि कोई उसको सींचता है जो स्वर्ग में नैसर्गिक है तो उसके सामर्थ्य की उन्नति होती है| जो औरो की नैसर्गिकता को देखता है उसके मन में उनके प्रति द्वेष पैदा होता है| उस पर अभिमान मत कर जो तुम्हे स्वर्ग से प्राप्त हुआ है और उसकी अवहेलना मत करो जो दुसरो से तुम्हे प्राप्त होता है| कितने लोग इस विचार को स्पष्टता से समझ सकते है?"

जब ज्होंग-नि छु राज्य के लिए अपनी यात्रा पर था तो मार्ग में वो एक जंगल से गुजर रहा था तब उसने देखा एक कुबड़ा व्यक्ति सिकादास (छोटे-छोटे जीव) को अपने डंडे के सिरे से इकट्ठा कर रहा था इतनी आसानी से जैसे की वो उन्हें अपने हाथो से इकट्ठा कर रहा हो|
ज्होंग-नि ने कहा :
"तुम कितने निपुण हो! क्या ऐसा करने का कोई विशिष्ट मार्ग है?"

“मेरे पास एक विशिष्ट तरीका है| मैंने स्थिरता से पांच से छह महीनो तक अभ्यास किया है| जब मैं उनमे से दो को बिना उन्हें निचे गिराये अपने डंडे पर संतुलित कर लेता हूँ तब उन बाकी सिकदा में से कुछ को ही मैं खोता (निचे गिर जाती है) हूँ| तब मैं उनमे से तीन को अपने डंडे के सिरे पर संतुलित कर लेता हूँ तो मैं दस में से केवल एक सिकाडा को खोता हूँ| लेकिन जब मैं पांच का संतुलन बना पाता हूँ बिना उन्हें निचे गिराये तो तब मैं उन्हें इतनी आसानी से जमा कर रहा होता हूँ जैसे की मैं यह अपने हाथो से कर रहा हूँ| मैं अपनी शरीर को एक वृक्ष के गड़े हुए तने की तरह कर लेता हूँ, अपनी बाजुओ को उसकी शाखा की तरह विस्तृत करता हूँ और उस समय यद्यपि स्वर्ग और पृथ्वी की असीमता और हजारो जीवित वस्तुओ का समवय मेरे चारो तरफ होता है लेकिन मेरा ध्यान केवल सिकाडा के पंखो के ऊपर होता है| मैं अपने स्थान को नहीं बदलता हूँ और न ही एक तरफ झुकता हूँ तथा मैं इन सिकाडा के पंखो का उपयोग दूसरी वस्तुओ की प्राप्ति लिए तथा व्यपार के लिए भी नहीं करता हूँ| फिर ऐसे करके, मैं कैसे सफल नहीं हो सकता हूँ?"

ज्होंग-नि ने मुड़कर अपने सभी शिष्यों की तरफ देखा और कहा :
“अपनी इच्छा शक्ति का उपयोग अपने ध्यान को न भटकने देने के लिए करो केवल तभी तुम्हारा ध्यान तुम्हारी आत्मा पर एकाग्र रह सकता है| इस सज्जन व्यक्ति ने इसे भली भांति समझाया है!

यां युआन ने ज्होंग नि से पूछा:
“मैं एक बार शांग-शेन जलकुंड से गुजर रहा था और तब जहाज़ का कप्तान उस नाव को ऐसे चला रहा था जैसे वो उसी की आत्मा का हिस्सा हो मैंने उससे पूछा ‘क्या कोई भी इस प्रकार नाव चलानी सिख सकता है?’
उसने कहा ‘हाँ सिख सकता है| जो एक अच्छा तैराक होता है वो शीघ्र ही इसे समझ जाता है| और एक गोताखोर, यदि उसने कभी एक नाव को देखा भी नहीं होगा तब भी वह इसे कर सकता है’
मुझे अपने प्रश्न के लिए जवाब तो मिल गया इससे लेकिन मैं कभी इसे समझ सकने योग्य नहीं हुआ| क्या आप इसकी व्याख्या मुझसे करेगे?"

ज्होंग-नि ने कहा :

"एक अच्छा तैराक इसे शीघ्र जान सकता है क्योंकि वह भूल हुआ होता है की वह जल में है| और एक गोताखोर के लिए जिसने कभी एक नाव को नहीं देखा होता है वह भी उसके साथ सही हो जाता है क्योंकि उसने रसातल की अँधेरी गहराइओ को ऐसे देखा हुआ होता है जैसे की वो एक पहाड़ है तथा वह उस उलटी हुई नाव को ऐसे देखता है जैसे वो एक पलटी हुई गाडी है| हजारो मार्ग है जिनके द्वारा वस्तुओ को तुम्हारे सामने उल्टा या पलटा जा सकता है पर इससे वे तुमको प्रभावित नहीं कर सकती है| तुम कही पर कैसे जा सकते हो जब तुम्हे भय हो की वहा तुम्हारे साथ पता नहीं क्या होने वाला है? वह जो इस सभ (प्रकृतिकता से) के साथ दांव लगता है उसे कोई आपति नहीं है निपुण होने में| लेकिन अगर वह कागज के पैसो के साथ दांव लगता है तो वह और ज्यादा संदेहयुक्त हो जाता है| और अगर वह किसी मुल्यवान वस्तु का दांव लगता है तो उसके पसीने छुट आते है| एक खिलाडी की निपुणता हर परिस्थिति में एक समान है पर जैसे जैसे दांव बढ़ता जाता है उसका उसके प्रति लगाव भी बढ़ता जाता है और तब एक वस्तु ही महत्वपूर्ण रह जाती है की परिणाम क्या होगा| जब बाहय तौर पर परिणाम का इतना महत्व हो सकता है तो फिर आंतरिक संदर्भ में कितना शंकित और उद्दंड हो सकता है|"

तियन-कई-जही वेई सम्राट ज्होऊ से मिलने गया|
सम्राट वेई ने कहा:
"मैंने सुना है की जहू-शेन एक चिकित्सक है| चूँकि तुमने उसके साथ यात्रा की है और तुम उसके साथ रहे हो फिर तुम उसके बारे में मुझे क्या बता सकते हो?"

तियन-कई-जही ने कहा:
"मैंने तो सिर्फ उसके आंगन में झाड़ू को इधर उधर घुमाया है| फिर संभवत मैंने क्या सुना हुआ हो सकता है अपने स्वामी से?"

सम्राट वेई ने कहा:
"इतने भोले मत बनो तियन-ज़ि| मैं बड़ी निष्ठा से ही उनके बारे में कुछ सुनना चाहता हूँ|"

कई-जही ने कहा:
"मैंने मालिक को कहते हुए सुना है 'वह कोई जो स्वस्थ रहने में अच्छा होता है वह एक भेड चराने वाले गडरिये की भांति होता है| अगर वह देखता है की कुछ भेड पीछे छुट गयी है तो वह उन्हें अपनी सिटी की आवाज से वापस बुला लेता है|"

सम्राट वेई ने कहा:
"इसका क्या अर्थ है?"

तियन-कई-जही ने कहा :
"लू राज्य में एक व्यक्ति है जिसका नाम दान-बो है जो ऊँची वाली पहाड़ी पर रहता है और केवल पानी पीता है| वह उसको महत्व नहीं देता है जिसे बाकी लोग लाभकारी मानते है| इस समय वह सत्तर वर्ष वृहद् है लेकिन फिर भी एक नवजात की तरह उसका स्वरूप है| एक दिन दुर्भाग्यवश उसकी भेंट एक भूखे चीते से हो गयी जिसने उसे मार दिया और उसे खा गया| एक और व्यक्ति है जिसका नाम जहाँग-यी है जो अपने पड़ोस के सभी परिवारों से मिलने जाता रहता है, निरंतर एक स्थान से दुसरे स्थान पर जाते हुए| इस समय तक वह चालीस वर्ष बुढा था और उसे भयंकर व्याधि और रोग उत्पन्न होकर उसकी मृत्यु हो गयी| दान-बो ने साधना की थी जो उसके अन्दर था और चीते ने उसके बाहय रूप को अपना भोजन बना लिया| जहाँग-यी ने अपनी बाहय रूप की अधना की थी और रोगों ने उसके आंतरिक को प्रभावित किया| यह जो दोनों के साथ हुआ यह इस कारण था की उन दोनों ही ने उपेक्षा की थी उसे सँभालने की जो पीछे छुट गया था|"

ज्होंग-नि ने कहा"
"वापस लिए बिना और बिना छुपाए;
"बिना आगे जाये और अक्कड़ दिखाये;
"स्थिरता से खड़ा रहता है इस अत्यंता के मध्य;
"अगर कोई तीनो का अभ्यास पूर्ण तत्परता के साथ करता है तो निश्चित ही उसकी व्यख्या एक ऐसे व्यक्ति के तौर पर की जा सकती है जो चरम पर पंहुचा हुआ होता है|
"जब खतरों भरी यात्राओ पर जाते हुए दस में से एक व्यक्ति सड़क पर ही मर जाता है तो माता पिता अपने बेटो को वहा जाने से रोक देते है और बड़ा भाई अपने छोटे भाइयो को उस पर जाने से रोक देता है जब तक उनके साथ हथियार युक्त सुरक्षा न

मौजूद हो| यह समझदारी भरा प्रतीत होता है, क्या यह नहीं होता है? दूसरी तरफ लोगो को खतरों का कोई एहसास नहीं होता है जब वे घरो में अपने नरम गद्दों पर बैठे हुए होते है तथा भोजन और मदिरा का मजा लूट रहे होते है| हालाँकि कोई नहीं यह पर्याप्त जानता है की उनको ऐसा व्यवहार करने से रोकना एक बहुत बड़ी भूल होती है|"

एक धार्मिक बलि देने वाले कार्यालय के पदाधिकारी ने वह पर बंद एक सूअर से कहा:
"तुम बलिदान देने के मत को नापसंद क्यों करते हो? तीन महीनो तक मैं तुम्हारा अच्छे भोजन से भरण पोषण करता हूँ और तुम्हे मोटा होने के लिए बहुत सारे अनाज और मिठाई को दिया जाता है| दस दिनों तक तुम्हे हिलने डुलने से भी रोक दिया जाता है| आखिरी तीन दिनों में सुगंधों से नहलाया जाता है और फिर मुलायम गद्दों पर तुम्हे आराम करने के लिए ले जाया जाता है| बलिदान देने के बाद, मैं तुम्हारे कंधो और पिछले भाग को खुबसूरत नक्कासही किये गए वेदी के ऊपर स्थापित कर देता हूँ| और यह सभ मैं तुम्हारे लिए ही तो करता हूँ!"

यदि उसने यह सभ उस सूअर से कहने के बजाय उससे यह पूछा होता तो उस सूअर ने कहा होता की वह इससे अच्छा तो भूसी और गले सादे भोजन को खाना पसंद करता और कभी भी इस पिंजरे में कैद नहीं होना चाहता| क्योंकि उसकी सुअरों के प्रति योजना उसके ही आत्म स्वार्थ का हिस्सा होती है और वह अपनी चमकदार टोपी पहने हुए तथा एक आलिशान गाड़ी लिए हुए एक सुस्त जीवन को तरहीज देता है| जब वह मरता है तो चाहता है उसके कफ़न को आलिशान वस्त्रो से सजाया जाए और लोग वहा झुककर अपनी सहानुभूति प्रदान करे| यही वह सभ है जिसे वह तरहीज़ देता है| अगर उसकी योजना उन सुअरों के हित में होती तो उसने उन्हें मुक्त कर दिया होता| क्योंकि उसकी योजना तो केवल आत्म केन्द्रित ही थी इसीलिए तो उसने उन्हें घेरे में बांध रखा था| क्या वह स्वयं को उन सुअरों से अलग समझ सकता है?

सम्राट हुआन अपने प्रधानमंत्री गुआन-ज्होंग के साथ अपने राज्य के निचले हिस्से में शिकार कर रहे थे जब उन्होंने वहा एक भुत को देखा|
तब वह सम्राट एक दम से अस्थिर हो गया और गुआन-ज्होंग का हाथ पकड़ते हुए कहा:
"मेरे प्रिय शुभ चिन्तक क्या तुमने वहा पर किसी चीज़ को देखा?"

उसने जवाब दिया :
"आपके इस विनीत सेवक ने किसी चीज़ पर ध्यान नहीं दिया|"

जब सम्राट महल वापस आया तो वह कुछ कह नहीं पाया और बहुत बीमार हो गया, और उसने कही बाहर जाने से भी मन कर दिया| हुंग-ज़ि-गो-औ जो की की राज्य में एक विद्वान् था उसने कहा:
“आप वह है जो केवल स्वयं को ही क्षति पंहुचा रहे है| फिर एक भुत प्रेत कैसे आपको क्षति पहुचने में सक्षम है? अगर आपका ह्रदय जंगली जानवरों के एक झुण्ड की तरह अस्थिर हुआ जा रहा है और आप अपनी जीवन शक्ति को संरक्षित नहीं कर पा रहे है तो यह किसी भी वस्तु के लिए अच्छा नहीं होगा| अगर आपकी उर्जा समाप्त हो जाती है और आप वापस नहीं आते है तो यह किसी को भी भयभीत कर सकता है| अगर ऐसा ही चलता रहा तो यह सभ को उदासीन कर देगा| अगर न तो यह ख़त्म हुआ और न ही यह और बढ़ा और ऐसे ही आपके ह्रदय में अटक गया तो यह आपकी बीमारी को और बड़ा बना देगा|"

सम्राट हुआन ने कहा :
“क्या यह सच है की भुत प्रेत होते है?"

“होते है| गहरी खाई में लू रहता है| गर्म भट्टियो में जिए रहता है| और इस कमरे के अन्दर ली-टिंग अब भी कही मौजूद है| उत्तर पूर्वी गुफाओ में बी-अ और गुई-लॉन्ग अब भी उछल कूद करते है| उत्तर पूर्वी गुफाओ में यी-यंग आता जाता रहता है| जल में वांग-क्सिंग रहता है| पर्वतो में क्सिन रहता है| पहडीयो पर कुई रहता है| मैदानों में पंग-हुंग रहता है और वहा निचले हिस्से में वेई-यी रहा है|"

सम्राट ने कहा :
"क्षमा करे पर क्या आप बतायेगे की वेई-यी दीखता कैसे है?"

हुंग-ज़ि ने कहा :

"वेई यी? वह एक रथ के पहिये जितना चौड़ा और उस पुरे रथ जितना बड़ा है| वह बैंगनी रंग के वस्त्र पहनता है और लाल टोपी पहनता है| वह प्राणी वह आने जाने वाले रथो की आवाजो से नफरत करता है और यदि ऐसा होता है तो वह खड़ा होकर अपने सर को अपने हाथो से धक लेता है| जो भी उसे देख लेता है वह पुर साम्राज्य का सम्राट बनने वाला होता है|"

सम्राट हुआन एकदम से चमक उठा और हँसते हुए कहा :
"तो यही था जो मैंने वहा पर देखा था!"
तभी उस समय उसने (सम्राट ने) अपने वस्त्रो को ठीक किया और टोपी को सीधा किया, उठ कर उसके (हुंग-ज़ि) साथ खड़ा हो गया और उनकी बीमारी को एक दिन भी नहीं लगा ठीक होने में बिना उन्हें इसका अनुभव हुए|

जी-क्सिंग-ज़ि अपने राजा के लिए एक लड़ाकू मुर्गे को तैयार कर रहा था| दस दिनों के बाद उससे पूछा गया :
"क्या मुर्गा अभी तैयार है?"

"नहीं अभी तक नहीं| वह अभी तक बहुत उग्र है और अपनी शारीरिक शक्ति पर ही ज्यादा निर्भर है|"

दस दिनों के बाद उससे दोबारा पूछा गया और उसने कहा :
"नहीं अभी तक नहीं| वह अब भी अपने आस पास होने वाली गतिविधियों को हद से ज्यादा प्रतिक्रिया देता है|"

दस दिनों बाद उससे दोबारा पूछा गया और उसने कहा :
"नहीं अभी तक नहीं| वह अब भी घृणापूर्वक देखता है और द्वेष धारण किये हुए है|"

दस दिनों बाद उससे दोबारा पूछा गया और उसने कहा :
"वह अब बस तैयार है| यद्यपि दुसरे मुर्गे उसकी तरफ बांग दे पर यह उसके अपने व्यवहार को नहीं बदलेगा लेकिन वह उनकी तरफ ऐसे देखेगा जैसे की वह लकड़ी का बना हो| उसका सामर्थ्य पूर्ण है| दुसरे मुर्गे उसको प्रतिक्रिया देने में समर्थ नहीं होगे और वे मुड कर वहा से चले जायेगे|"

कों-ज़ि लू-लिंग पर्वत पर से दृश्य का मुआयना कर रहा था जहाँ से तीन सौ फीट गहरा झरना गिरता है| जहाँ वह झरना गिर रहा था तेरह मिल तक झाग और फेन फैले हुए थे| न तो कछुए, न मगरमच्छ और न ही कोई मछली या जल का कोई भी जीव इस बहाव में तैरने में समर्थ नहीं था| तब ऊसने एक व्यक्ति को उस धारा में तैरते हुए देखा और अनुमान लगाया की वह आत्महत्या करने का प्रयत्न कर रहा है इसलिए उसने अपने शिष्यों को बुलाया और उनको उसे नदी किनारे पर जाकर बचाने के लिए कहा| जब वह व्यक्ति कुछ सौ फीट आगे जाकर जल में से ऊपर उठा तो उसके बाल उसको पीछे से कम्बल की तरह ढके हुए थे, वह गाना गा रहा था जैसे ही वो तैर रहा था, वह तटबंध तक तैर के आ गया और खड़ा होकर निकल गया|

कोंग-ज़ि उसके पास गया और पूछा :
"मैंने सोचा के तुम जरूर कोई भुत प्रेत हो पर अब मैं देख रहा हूँ की तुम एक मनुष्य हो| कृपया मुझे क्षमा की जियेगा पर क्या आपके पास कोई विशिष्ट तरीका है जल में ऐसे तैरने का?"

“नहीं, मेरे पास कोई विशिष्ट तारिक नहीं है| मैं उसी के साथ ऐसा करता हूँ जो मेरे अन्दर जन्म से है, मैं अपनी ही प्रकृति का पालन करते हुए बड़ा हुआ हूँ और उसे पाया है जो की मेरे भाग्य में है| जब मैं जल में अन्दर होता हूँ, मैं जल के प्रवाह के साथ एक हो जाता हूँ और जहाँ वह मुझे ले जाता है उसे ले जाने देता हूँ| जब मैं बाहर आता हूँ, मैं स्वयं को प्रवाह द्वारा ऊपर तैरने की अनुमति देता हूँ| मैं जल के प्रवाह का अनुकरण करता हूँ और इसका विरोध नहीं करता हूँ| यही कारण है की मैं इस तरह तैरने में सक्षम हूँ|"

कोंग-जही ने कहा:
"क्या अर्थ है इससे की ‘शुरू करता हूँ जो जन्म से है, अपनी प्रकृति के साथ बड़ा हुआ हूँ, और पाया है जो भाग्य में है’?"

"मैं धुल के एक कण में से पैदा हुआ हूँ इसलिए मैं पर्वतो पर सहज हूँ - यही है जो जन्मजात है| मैं पानी की एक बूंद से पैदा हुआ हूँ इसीलिए तो मैं जल में सहज हूँ - यही मेरी प्रकृति ही| मैं नहीं जानता की मैं ऐसा क्यों हूँ पर मैं सहज हूँ जो की मैं हूँ - इसी को तो नियति कहते है|"

बढई किंग खुबसूरत नक्काशी किये घंटियों के स्टैंड बनाता था | जब दुसरे लोग उन पूर्ण हुए बेल स्टैंड्स को देखते थे वे चकित रह जाते थे और सोचते थे की जरूर ही यह किसी असीम शक्ति रखने वाले प्राणी द्वारा किया गया है| जब लू राज्य के मार्की ने उनमे से एक को देख तो पूछा :
"तुम में क्या विशिष्ट कला है जो तुम यह कर पाते हो?"

उसने जवाब दिया :
"आपका यह विनीत सेवक तो मात्र एक कलाकार है| फिर मुझमे क्या विशिष्ट कला हो सकती है? हालाँकि मैं एक पद्धति को मानता हूँ जब मैं बेल स्टैंड को तैयार करने वाला होता हूँ, मैं बहुत सावधान होता हूँ अपनी आधार शक्ति को ज्यादा विस्तृत करने के सन्दर्भ में इसीलिए पहले मैं अपने मन और हृदय को स्थिरता में स्थापित करता हूँ| तीन दिनों तक मैं स्वयं को अपने काम के प्रति कोई अभिमान या इसके लिए किसी पुरुस्कार की आशा रखने के विचारो को अपने मन से हटाकर इस काम के लिए तैयार करने में लगाता हूँ| अगले पांच दिन तक मैं स्वयं को तैयार करता हूँ की चाहे लोग मेरे कार्य की प्रशंसा करे या फिर इसकी आलोचना करे मैं इस सभ से प्रभावित नहीं होउगा| फिर सात दिनों तक मैं स्वयं को तैयार करता हूँ सभी वस्तुओ और स्वयं को भी भूलने में| इस समय तक मैं वह सारा ध्यान खो चूका होता हूँ जिसकी शाही दरबार और यह बाहय संसार मुझसे चाहता रखता है और पूरी तरह से अपने कार्य पर एकाग्र रहता हूँ तथा किसी भी प्रकार के बाहरी प्रभावों से बचा रहता हूँ| तब मैं पर्वतीय वनों में प्रवेश कर चूका होता हूँ और स्वर्ग की प्राकृतिकता का निरिक्षण करता हूँ| यह देखकर की मेरे चारो और सभी वस्तुए स्वयं से ही परिपूर्ण है मैं एक पुरे बेल स्टैंड की कल्पना करता हूँ| इसी समय पर मैं अपने हाथो से कोई कार्य करना आरम्भ करता हूँ लेकिन इससे पहले तक नहीं मै थोडा सा भी कार्य नहीं करता हूँ| यह इसलिए होता है की मैं स्वर्ग को स्वर्ग के अनुसार होने में उपयोग करता हूँ और सभी साधनों का उपयोग मेरी आत्मा द्वारा होता है| बस यही है जो सभ होता है!"

दोंग-ये-जी सम्राट ज्हुंग के सामने अपनी रथ चलाने के का प्रदर्शन कर रहा था| वह रस्सी का उपयोग करके घोड़ो का मार्गदर्शन कर रहा था जिससे की वो रथ को कभी आगे या पीछे चला रहा था| वह उस लगाम के उपयोग के द्वारा रथ को निरंतर गोल चक्र में घुमा रहा था| सम्राट ज्हुंग ने सोचा कोई भी इसके की बराबरी नहीं कर सकता है| उसको और परखने के लिए उन्होंने उसे उस रंगभूमि के सौ और चक्कर लगाकर वापस आने को कहा|

यां-हे जो इस सभ को होते हुए देख रहा था, वह सम्राट को देखने पंहुचा और कहा:
"जी के घोड़े समाप्त होने वाले है|"

सम्राट एकदम से कठोर हो गया और उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी लेकिन कुछ समय बाद घोड़े बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए और उन्हें वापस आना पड़ा|
सम्राट ने कहा :
"तुम यह कैसे जानते थे की यह होने वाला है?"

उसने जवाब दिया :
"घोड़ो की शक्ति समाप्त हो गयी थी और तब भी वह उन्हें और चलने को विवश कर रहा था| इसी कारण मैं यह जानता था की वे समाप्त होने वाले है|"

बधाई चुई एक बिलकुल सटीक वृत्त बना सकता था केवल अपनी दो उंगलियों से जैसा की कोई एक प्रकार (परिधिकार) से भी न बना पाए और उसे कभी अपने इस कार्य की दोबारा भी जांच करने की जरूरत नहीं होती थी| ऐसा इसलिए था की वह अपने टिंग-तै (शरीर के अभ्यंतर एक स्थान जहाँ कोई अपनी आत्मा को ऊपर उठा सकता है स्थिर कर सकता है) को एकजुट व् मुक्त रखता था|
पैरो पर ध्यान नहीं दिया जाता है जब पहने हुए जुते आरामदायक होते है| कमर पर बंधी गयी कमरपेटी जब सहज होती है तो कमर की तरफ ध्यान नहीं दिया जाता है| इसी प्रकार सही और गलत के ज्ञान को भुला दिया जाता है जब ह्रदय और मन सहज होते है| जब परिस्थितिया सहज हो तब जो अभ्यांतर होता है उसे बदलने की जरूरत नहीं होती है और जो बाहय होता है उसे अनुरूप होने की जरूरत नहीं होती है| जब आप सहजता से शुरुआत करते हो और कभी असहज नहीं होते हो तो आप सहज बनने के लिए प्रयत्न करने को भूल जाते हो|

एक व्यक्ति जिसका नाम सुन-क्सुई था वह बड़ी कठिनता से एक घर के दरवाजे तक पंहुचा और घर के मालिक बिं-किंग-ज़ि को चोंका दिया, जब उसने कहा :
"मैं देहात में रहता हूँ पर कोई मुझे इस वजह से असभ्य नहीं कहता है, मैं अशांत और कठिन समय से भी गुजरा हूँ पर किसी ने मुझे कुछ न करने के कारण कायर नहीं कहा है| पर फिर भी मैंने जिन खेतो पर काम किया है उनमे से किसी में भी अच्छी फसल नहीं हुई लेकिन तब भी किसी भी राजा ने जिसने भी शासन किया है मुझ पर कोई ध्यान नहीं दिया | मुझे अपने ही गाँव में परदेशी की तरह देखा जाता है और मुझे बड़े सरकारी कार्यालयों से निकाल दिया जाता है| मैंने स्वर्ग के विरूद्ध क्या पाप किये है जो मुझे इतना दुर्भाग्य मिला है?"

बिं-ज़ि ने कहा :
"क्या तुमने एक सिद्ध पुरुष के व्यवहार के बारे में नहीं सुना है? वह अपने पेट और स्वयं के बारे में भूल जाता है और कभी अपनी आँखों या कानो को अति महत्व नहीं देता है| एक बहुत ही हास्यपद ढंग से वह इस धुल और मिटटी में आगे या पिछे होता रहता है| स्वतंत्र और मुक्त हुआ वह किसी भी प्रकार के प्रसंगों और विषयों से संबद्ध नहीं होता है| इसे ही कहते है कर्म करना बिना परिणामो पर निर्भर हुए और निपुण होना बिना कोई संचालन किये| जबकि अब तुम बुद्धिमान होने का ढोंग करते हो अज्ञानी लोगो को मुर्ख बनाने के लिए, और अपने व्यवहार और आचरण को ऐसा मानते हो की यह सूर्य और चन्द्र से भी ऊँचा हो| अब तक तुम्हारा शरीर भी यथावत है, तुम्हारे नौ मुख्य अंग सही ढंग से अपना कार्य कर रहे है और तुम्हे अपने जीवन में कभी भी अंधेपन, बहरेपन या किसी भी प्रकर की विकलांगता से ग्रसित नहीं हुए हो, तथा दुसरे लोगो की तुलना में तुम अब तक बहुत ही भाग्यवाले रहे हो? फिर क्यों तुम अपने कीमती समय को स्वर्ग की निंदा और असंतोष व्यक्त करने में व्यर्थ कर रहे हो? चले जाओ यहाँ से!"

जब सुन-ज़ि चला गया, बिं-ज़ि अपने घर के अन्दर वापस आ गया| वह आकाश की तरफ देखता हुआ निचे बैठा और एक बहुत बड़ी आह भरी|
उसके शिष्यों में से एक ने पूछा:
"आचार्य, आप ने इस प्रकार से दीर्घ आह कैसे भरी?"

बिं-ज़ि ने कहा:
"जब क्सुई मुझसे मार्गदर्शन करने के लिए आया था तब मैंने उसे सिद्ध पुरुष के सामर्थ्य के बारे में बताया| मुझ डर है की मैंने उसे आशंकित कर दिया है और बहुत ही भ्रान्ति की स्थिति में छोड़ दिया है|"

शिष्य ने कहा :
"यह जरूरी नहीं है| क्या जो सुन-ज़ि ने कहा वो सही था और जो अपने कहा वो सही नहीं था? यदि ऐसा है तो जो गलत होता है वो कभी भी जो सही होता है उसके लिए संदेह नहीं पैदा कर सकता है| क्या सुन-ज़ि ने जो कहा वो सही नहीं था और जो अपने कहा वो सही था? यदि ऐसा है तो, जब वह आया था तो पहले से ही पूरी तरह से संदेहयुक्त था| आप दोनों को ही दोष दिया जाना चाहिए|"

बिं-ज़ि ने कहा :
"जरूरी नहीं है| पुराने समय में एक पक्षी लू राज्य के एक गाँव में आया| लू राज्य का राजकुमार इससे बहुत ही प्रसन्न था इसलिए उसने एक बलि का प्रबंध किया उस पक्षी को अच्छा भोजन प्रदान करने के लिए और 'नौ शिनो' संगीत का आनंद प्रदान करने के लिये| वह पक्षी बहुत ही चिंतित हो गया जो की उसके मुख से देखा जा सकता था और उसने कुछ खाने या पिने से भी मना कर दिया|
इसे कहते है जो तुम्हारा पोषण करे उन वस्तुओ द्वारा एक पक्षी का पोषण करने का प्रयत्न करना| अगर इसके बजाय उसका उपयोग किया जाता उस पक्षी के सत्कार के लिए जो पक्षी पसंद करते है तो यह होता है घने जंगलो में शिकार करना, नदी के ऊपर से उड़ना तथा शिकार और भोजन के बाद आराम से जमीन पर लौट आना - बसी उसके लिए यही सभ कुछ होता है|
क्योंकि अब क्सुई कुछ समझने में थोडा धीमा है और उसे बाकी लोगो से कम ज्ञान है| जब मैंने उसे सिद्ध पुरुष के सामर्थ्य के बारे बताया यह तो एक अस्तबल में एक चूहे को भेजने जैसा था या फिर एक कबूतर का मनोरंजन ढोल बजाकर और संगीत बजाकर करने जैसा| कैसे वो संदेहयुक्त नहीं हो सकता है?"

20.The Mountain Tree

Zhuangzi was walking in the mountains when he saw a huge tree with branches full of luxuriant foliage. A lumberjack had stopped next to it, but wasn't attempting to cut it down. When Zhuangzi asked the lumberjack the reason, he responded:
"There's nothing useful about that tree."
Zhuangzi said:
"This tree is so worthless it's been able to live out its natural lifespan."
After coming out of the mountains, Zhuangzi stayed overnight in the home of an old friend. His friend was so delighted that he ordered his young servant to slaughter a goose so they could have it for dinner. The young servant politely asked:
"One of them can cackle, and one of them can't cackle. Please tell me which one I should slaughter?"
The host responded:
"Kill the one that can't cackle."
The next day one of his disciples asked Zhuangzi:
"Yesterday when we were in the mountains and came across that tree, it was able to live out its natural lifespan because it was worthless. Now our host has ordered the goose to be killed because it's worthless. Master, which is the better position?"
Zhuangzi laughed and said:
"All around, I'd say the better position would be somewhere between being of worth and being worthless. Being somewhere between being of worth and being worthless might seem like the best place to be, but it's actually not. That's because one hasn't yet gotten rid of being tied to some idea. But that wouldn't be true if you could mount on the chariot of Dao and virtue and float about on it:
"Without praise, without disapproval;
"In one moment a dragon, in one moment a snake.
"Changing in unison with the times;
"And never consenting to act in one specified way.
"In one moment above, in one moment below;
"Using harmony as a measuring stick.
"Floating about with the ancestor of all living things;
"Allowing things to be things, but not making things out of things.
"Then how would one be tied to anything?
"This was the method used by Shen Nong and Yellow Emperor (Huang di). But that's not truly the sentiments of most creatures who pass concepts of human ethics on to humanity:
"Joining together, then separating;
"Constructing, then destroying;
"Appearing to be honest, then back stabbing;
"Glorifying, then criticizing;
"Making promises, then backing down;
"Acting virtuous, then scheming;
"Deeming unworthy, then deceiving.
"Is there anything to be certain of?
"Yes, it's sad. But remember, my disciples, the only place to find a comfortable home is in Dao and virtue."

Yi Liao of Shi Nan went to see the Marquis of Lu. The Marquis of Lu had a sad look on his face.
Master Yi Liao said:
"You look worried. Why is that?"
The Marquis of Lu said:

"I've studied the Dao of the earliest kings and worked through the methods used by the rulers who preceded me. I show respect to the ghosts of those who have died, honor those of great worth, behave properly to my family and don't take a break from that for a minute. Even so, I can't seem to avoid disasters. That's why I look so worried."
The Master from Shi Nan said:
"The techniques you're using to avert disasters are superficial. The richly furred fox and the elaborately patterned leopard make their homes deep in mountain forests in caves and alcoves - to be left alone. They prowl in the night and rest in the daytime - to protect themselves. Although hungry and thirsty they carefully hide themselves away, only venturing forth to peer from above the rivers and lakes searching for food - to keep a keen eye out. Even so, they can't completely avoid snares, nets and traps or prevent disaster from coming to them. How can they possibly be blamed for what happens to them? It's because of their pelts that they meet with such misfortune. Now, isn't the state of Lu like your own pelt? I wish you could strip away your form and discard your pelt, dispense with your mind and discard your desires, and float in the wilderness without concern for other people.
"In southern Yue there's a city named Jian De Zhi Guo (Nation of Established Virtue). The people who live there are stupid and simple, rarely think of themselves and have few desires. They know how to make what they need but don't have any concept of hiding things from each other since they share everything and don't ask for repayment for what they've done. They don't have ideas about what would be considered righteous behavior, nor do they know anything about taking part in rituals. Their behavior appears to be savage, crazy and reckless, but that's the only way their dance can be unhindered. Their birth is considered a time of happiness, and their death is considered a time for burial. I wish you could leave this country, give up on its customs and engage in a true connection with Dao - actually go there."
The monarch (Marquis of Lu) said:
"The Dao you're speaking about is distant and hard to reach, and there are rivers and mountains along the way. I don't have a boat or a vehicle, so how could I ever get there?"
The Master from Shi Nan said:
"If you're without a form that needs to be transported and without a place that needs to be departed from, then you use that as your vehicle."
The monarch said:
"The Dao you're speaking about is so remote, secluded and without any people. Would there be anyone I could take as a traveling companion? I'm without provisions or food. How could I safely arrive there?"
The Master from Shi Nan said:
"Diminish your expenditures, lessen your desires, and even though you're without provisions you'll find you have enough. When you come upon them wade across the rivers and swim across the oceans, gazing at them but not seeing their rough spots, going relentlessly forward yet not having any sense of exhaustion. All those who've traveled with you so far will reach the rough spots and turn back, and you'll find that you've traveled very far.
"You see, those who possess others are inextricably involved, and those who are possessed by others worry all the time. That's why Yao never possessed anyone, nor was he possessed by anyone else. I wish you'd let go of being so involved, get rid of all your worrying, and by only connecting with Dao swim in the land of great nothingness.
"If someone was maneuvering a large clumsy boat across a river and an empty abandoned boat bumped into it, even if the person was already a bit aggravated he wouldn't get angry about it. But if there was a person at the helm, he'd shout at him to get out of the way. If his first shout wasn't heeded, and his second shout wasn't heeded, then his third shout would be more aggressive. After that he'd break into a series of heated curses at the person. In the first instance there was no anger, but in the second instance there was. In the first instance the boat was empty, but in the second instance it was filled. If a person can empty themselves and float through the world around them, what would there be that could harm them?"

Bei Gong She (Curator of the Northern Palace) was commissioned by Duke Ling of Wei to create an elaborate bell stand made from the contributions of the citizens. He built a large stand at the outer gate of the city, and within three months had succeeded in filling all the tiers with bells from around the area. When Prince Qing Ji saw it, he asked:

"What special skills do you have to be able to create such a thing?"
She said:
"When the pieces were all being assembled, I wouldn't dare to interfere in its construction. I've heard this: 'What has already been carved and engraved will eventually return to its natural state.' To the ignorant I appear to have no sensibility. To the reckless I appear not to be slow and lazy. As a crowd gathers around or disperses, I escort them away when they leave and warmly greet them when they arrive. No one is prohibited from coming and no one is stopped from leaving. If they are forcefully adamant I allow them to vent. If they're bent on lecturing about their point of view I yield to them. If they plead poverty I empathize with them. That's how I'm able to keep collecting contributions day and night without ruffling anyone's feathers. How much more so would that apply to someone who had a great journey ahead of them!"

When Kong Zi (Confucius) was detained between the small states of Chen and Cai, he went for seven days without any cooked food.
(Note: Confucius wasn't welcome in either Chen or Cai so he had to wait in the wilderness until someone from the state of Chu eventually got him out of the mess.)
Da Gong Ren (Impartial Observer) went to console him and said:
"You're almost dead!"
"That's true."
"Do you dislike the idea of dying?"
"Yes."
Ren said:
"Let me try to tell you about a way to not die. In the Eastern Sea there's a bird called the Yi Dai (Intentionally Lazy). It soars up then falls back down repeatedly as though it didn't have the ability to do otherwise. If it's jostled off its perch and forced to fly it'll flutter in the air, but if it's snuggling and allowed to stay it'll remain on its perch. When it goes forward it doesn't dare to be in the lead, and when it follows behind it doesn't dare to be last. When there's food around it doesn't take the first bite but goes for the leftovers. Because of its place in the pecking order it doesn't get rejected by those around it, and is at no risk of being harmed by strangers. That's how it's able to avoid worrying about anything.
"A straight tree is the first to be cut down. A well with sweet water is the first to be used up. You pretend to be intelligent so as to stupefy the ignorant, keep your body fit so as to amaze the spoiled, and consider your behavior to be so brilliant and stunning that it would eclipse both the sun and the moon. That's why you can't escape.
"Long ago I heard a greatly accomplished person say: 'One who attacks others doesn't accomplish anything. One who achieves success will eventually fall back down. One who achieves fame will eventually lose it.' Who can give up on ideas of achievement and fame and instead go back to connecting with the masses of ordinary people? He flows with Dao but doesn't sit and wallow in his clarity. His behavior achieves goals, but he doesn't become famous for it. He's so plain and ordinary that he could be compared to a crazy person. He leaves behind no trace of himself, relinquishes any sense of being influential and doesn't act with an eye for fame. Therefore he doesn't make demands on others, nor does he give in to others' demands. A perfected person isn't well known. Why would you take so much delight in it?"
Kong Zi said:
"Excellent!"
He said goodbye to his friends and associates, dismissed his disciples, fled to a great marsh, wore hair cloth and coarse clothing, and ate acorns and chestnuts. He went among the animals without disturbing their herds, and went among birds without them taking notice of him. Since birds and animals weren't bothered by him, even less were people!

Kong Zi (Confucius) asked Zi Sang Yu (Sir Mulberry Rainbow):
"For the second time I've been kicked out of the state of Lu. I've had a drum tree chopped down on me in the state of Song, had all traces of me removed from the state of Wei, was thrown into poverty in the states of Shang and

Zhou, and was detained between the states of Chen and Cai. I've been persecuted by a number of disasters. My relationships and friendships have become increasingly few and far between, and my close friends and associates are keeping their distance from me. Why is all this happening?"

Zi Sang Yu said:
"Haven't you heard about the man who escaped from Jia? Lin Hui (Returned to the Forest) left behind a jade disk of office worth a thousand pieces of gold but snatched up an infant and hurried away carrying him on his back. Someone asked him: 'Did you do that for monetary value? A newborn can't be worth much. Did you do it because it was less exerting? A newborn requires much more exertion. Why did you leave behind a jade disk worth a thousand pieces of gold and rush off with a newborn?'
Lin Hui said:
The jade disc and I were joined by profit, but the child and I were brought together by Heaven. Things joined by profit, when pressed by misfortune and danger, will cast each other aside; but things brought together by Heaven, when pressed by misfortune and danger, will cling to one another. To cling to each other and to cast each other aside are far apart indeed!
Also, the relationships between people who are concerned for each other is as thin and tasteless as water, whereas the relationships between petty people is as thick and sticky as sweet wine. The thinness of those who are concerned about each other leads them to get closer, while the thickness of petty people leads them to become distasteful. Those who've found no reason to join together in the first place wouldn't be able to find any reason to remain together."

Kong Zi said:
"Thank you so much for the advice."
Walking slowly and letting his arms drift playfully as though he was pretending to fly, he returned home. He abandoned his studies and put away his books. His disciples no longer bowed down in front of him, but their love and affection for him increased.
At a later time Sang had something else to tell him:
"When Shun was dying, he gave Yu these instructions: 'You must be warned about this! When it comes to your physical form, nothing is better than heeding its needs. When it comes to your emotions, nothing is better than facing them head on.' By paying attention to your body's necessities, it won't fail you. By dealing with your emotions, they won't cause you more trouble(In the case of the body, it is best to let it go along with things. In the case of the emotions, it is best to let them follow where they will. By going along with things, you avoid becoming separated from them. By letting the emotions follow as they will, you avoid fatigue). When your body doesn't fail you and your emotions don't cause you more trouble, then you won't have to look for ways to embellish what you naturally are. When you don't have to look for ways to embellish what you naturally are, you definitely won't have to be waiting around for other things."

Zhuangzi was wearing old threadbare patched clothing and shoes that were tied to his feet with crudely cut twine when he came upon the King of Wei.
The King of Wei said:
"What has caused you, Sir, to be so needy?"
Zhuangzi said:
"I may be poor, but I'm not needy. If a scholar has Dao and virtue but isn't able to put them into practice - that's being needy. Having worn out clothes and shoes with holes in them is due to poverty, but it doesn't mean the person's needy. He's just a little out of sync with present times. Has Your Majesty never watched a primate jumping through trees? When it takes hold of a cedar, catalpa, oak or camphor tree it swings on long vines from branch to branch and is in complete control of how long it takes to reach from one to the other. Even Yi and Peng Meng (famous archers) wouldn't be able to take aim at them. On the other hand, if they take hold of the branch of a cudrania, jujube, trifoliate orange or Chinese holly tree (trees whose bark or leaves have sharp thorns) it moves

about cautiously always looking around while shaking and quivering with apprehension. That isn't because its muscles and bones have lost strength and quickness nor have become stiff. It's because it's found itself in a situation that doesn't allow it to use it's abilities properly. Now if I find myself situated in the midst of muddled superiors acting chaotically with each other and want to not become needy, how could that be done? Bi Gan found out about that when he had his heart cut out - there's the proof!"

While Kong Zi (Confucius) was isolated without supplies in the wilderness between the small states of Chen and Cai and hadn't eaten any cooked food for seven days, he leaned his left hand on a withered tree and with his right hand beat time using one of the tree's withered branches while singing a song from the Yao clan included in the "Book of Songs". He used the branch as a drumstick but couldn't find the right tempo. His voice rang out but he couldn't find the right notes. The combination of the sound of the wood and a person's voice in the wilderness bore straight into the hearts of those who heard it.
Yan Hui stood with his hands clasped over his chest and kept making furtive glances at him. Zhong Ni was afraid Yan Hui might think too highly of him and because of this love for him cause himself needless grief over their situation, so he said:
"Hui, it's easy not to be affected by the limitations of the heavens, but it's difficult not to be affected by the relationships of mankind. What never began wouldn't have a reason to oppose coming to an end. Humankind and the heavens are connected as one. Now, as for the song, who was singing it?"
Hui said:
"I'd like to ask what you mean by 'It's easy not to be affected by the limitations of the heavens'."
Zhong Ni said:
"Hunger and thirst, hot and cold, poverty and physical restrictions - these are the natural occurrences of the heavens and earth as they transport things through evolution. What I'm saying can also be likened to simply flowing along with everything that happens. One who pledges their devotion to another person wouldn't dare to desert them. If it's possible for someone to hold on to that type of devotion, how much more so could they get from waiting to see what the heavens would bring?"
"What do you mean by 'It's difficult not to be affected by the relationships of mankind'?"
Zhong Ni said:
"If at the beginning of your employment everything runs smoothly and you receive promotions and rank, thus avoiding poverty, it's because things have settled into a phase of profitability, but not because of anything you did. My own fate is something quite outside of myself. A considerate person doesn't take advantage of others, and a virtuous person doesn't steal from others. Why would I be seen as someone who had taken anything from anyone else? Therefore it's said that of birds none is smarter than the pigeon. If it spots a place that's unsuitable for building a nest it doesn't give it a second glance. Even if it's dropped a seed, it'll just leave it there and move on. It may be afraid of people, but it manages to carry on amidst them the way it did before the people arrived. It can continue to exist in the turrets and eaves of the temples and palaces."
"What do you mean by 'What never began wouldn't have a reason to oppose coming to an end'?'
Zhong Ni said:
"All living things evolve, but we don't know what it is that causes them to change the way they do. So, how could we know when anything has reached an end? How can we know when anything new will begin? All we can do is carry on and wait to see what happens - that's all."
"What do you mean by 'Humankind and the heavens are connected as one'?"
Zhong Ni said:
"That there are people is due to the heavens. That there is the heavens is also due to the heavens. That the heavens isn't due to people is because it's not in their natures to do so. The sage calmly drifts with the realization that when the essentials for his life fade away, the ending will come."

Zhuang Zhou (Zhuangzi) was wandering inside the fenced area of Diao Ling when he spotted a lone unusual looking magpie approaching from the south side of the hill. Its wing span was about seven feet and its eyes were about one inch in diameter. It brushed Zhou's forehead then descended into a group of chestnut trees.
Zhuang Zhou said:
"What kind of bird is this! It beats its huge wings but doesn't fly very high. It has enormous eyes but doesn't seem to have good vision."
Obstructed by his long skirt he stumbled over to get as close as he could to it and waited with his crossbow at the ready. He noticed a lone cicada that had just found a nice spot in the shade and had forgotten about its vulnerability. A praying mantis raised its front legs and grabbed it, apparently forgetting about the vulnerability of its own form as well. The unusual looking magpie was so engaged in the scene and trying to figure out how it could best take advantage of the situation that by concentrating so intently on how it could gain benefits it lost sense of its own well being. Zhuang Zhou got a cold chill from watching all this and said:
"Phew! Things certainly can affect each other when two different species come into contact with each other."
As he discarded his crossbow and headed for home, a game warden chased him yelling curses at him. When Zhuang Zhou returned home, he didn't venture further than his own courtyard for three days.
His attendant, Lin Qie (Temporary Houseboy), asked:
"Master, what happened that's made you not want to go further than your own yard?"
Zhuang Zhou said:
"I've been guarding my outer appearance, but forgot about what can happen to me. That's like concentrating on the turbid water above but losing sight of the clear depths below. Furthermore, I've heard the masters say: 'When you enter a place where specific customs prevail, follow their rules.' Then when I was wandering through Diao Ling and I forgot about what could happen to me there, an unusual looking magpie brushed across my forehead. I wandered into the chestnut grove and lost sense of my own well being. The game warden in the chestnut grove thought I was a poacher. That's why I haven't ventured beyond my own courtyard."

When Yang Zi was on his way to the state of Song, he spent a night in a local inn. The inn keeper had two concubines, one beautiful and one ugly. The ugly one was highly valued while the beautiful one was treated like dirt. When Yang Zi asked him why this was so, the young male servant at the inn replied:
"The beautiful one sees herself as beautiful but we don't pay attention to her beauty. The ugly one sees herself as ugly but we don't pay attention to her ugliness."
Yang Zi said:
"Remember this, my disciples: Behave in a virtuous manner, but get rid of any idea that you're behaving virtuously - then where could you go that you wouldn't be loved?"

२०|पर्वतीय वृक्ष

ज्हुंग्ज़ी जब पर्वतो की यात्रा कर रहा था तो उसने एक विशाल वृक्ष को देखा जिसकी शाखाए वनस्पति सम्पदा से प्रचुर थी| एक लकडहारा उसके साथ ही ठहरा हुआ था लेकिन उसको काटने का प्रयत्न नहीं कर रहा था| जब ज्हुंग्ज़ी ने लकडहारे से इसका कारण पूछा तो उसने जवाब दिया:
"इस वृक्ष के बारे में उपयोगी कुछ नहीं है|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा:
"यह वृक्ष इतना मूल्यहीन है तभी तो अपने स्वभाविक जीवनकाल का निर्वाह कर पाया है|"

पर्वतो से आने के बाद, ज्हुंग्ज़ी रात को अपने एक पुराने मित्र के घर पर ठहरा| उसका मित्र इतना प्रसन्न था की उसने अपने सेवक को एक बतख लाने के लिए कहा ताकि वे रात्रिभोज कर सके| उस सेवक ने बड़ी विनम्रता से पूछा:
"उनमे से एक कुन-कुन (हो-हल्ला) करती है और एक कुन-कुन नहीं करती है| कृप्य मुझे बताये की मुझे किस को यहाँ लाना चाहिए?"

मेहमान ने जवाब दिया :
"उसको ले आओ जो कुन-कुन नहीं करती है|"

अगले दिन ज्हुंग्ज़ी के शिष्यों में से एक ने पूछा:
"कल जब हम पहाडियों में थे और एक वृक्ष को देखा, वह अपना स्वभाविक जीवन काल निर्वाह करने में सक्षम था क्योंकि वह मूल्यहीन था| और अब हमारे मेजबान ने उस बतख को लाने का आदेश दिया जो की मूल्यहीन थी| आचार्य, इनमे से कौन से स्थिति बेहतर है?"

ज़ुंग्ज्ही हंसा और कहा :
"सभी स्थितयो में, मैं कहूँगा की बेहतर स्थिति वह होती है जो कही मूल्यवान और मूल्यहीन होने के बिच की हो| मूल्यवान और मूल्यहीन के बीच में होना एक बहुत ही बढ़िया स्थान प्रतीत होता है होने के लिए - पर ऐसा वास्तव में नहीं है| यह इसलिए की किसी ने अभी तक उस संदर्भ में किसी भी एक मत से जुड़े होने के अपने विचार को नहीं छोड़ा होता है| पर यह सच हो सकता है अगर आप ताओ के रथ पर विराजमान होते है और सामर्थ्य उसके साथ बहता है :
"बिना किसी प्रशंसा के और बिना किसी आलोचना के;
"किसी क्षण में एक ड्रैगन और किसी क्षण में एक सर्प|
"समय के साथ एक सुर में एक लय में बदलते हुए;
"और कभी भी हमेशा एक प्रकार के मत से ही सहमत नहीं हुए|
"किसी क्षण में ऊपर तो किसी क्षण में निचे;
"सभी वस्तुए से सामंजस्य स्थपित किये हुए|
"बहते हुए जैसे हमारे पितृ सभी प्राणियों के साथ होते थे;
"वस्तुओ को वस्तु ही रहने देते हुए न की न की उनको किसी और रूप में बदलने का प्रयत्न करते हुए|"
फिर कैसे कोई एक चीज़ के साथ बंधा हुआ हो सकता है?
"यही वह पद्धति है जिसका उपयोग शेन-नोंग और येल्लो राजा द्वारा किया गया था| पर वास्तव में ये उन सभी प्राणियों के भाव नहीं होते है जो अपने विचारो को मानवता पर थोपना चाहते है:
"संयुक्त होना, तब अलग होना;
'सृजन करना तब विनाश करना;
'इमानदार प्रतीत होना तब धोखा देना;
'प्रशंसा करना तब आलोचना करना;
"बहादुरी दिखाना तब पीछे योजनाए बनाना;
वादा करना तब पीछे हट जाना;
बेकार समझना तब धोखा देना|

“क्या कोई भी चीज़ ऐसे है जो निश्चित हो सकती है?
"हाँ, यह उदासीन है| पर याद रखो मेरे शिष्यों, केवल एक ही स्थान जहाँ तुम सहज अनुभव कर सकते हो वह उस ताओ और उस सामर्थ्य में है|"

सही-नान का यी-लिया लू राज्य के मार्की (एक सरकारी अध्यक्ष का पद) को मिलने के लिए गया| लू का मार्की अपने मुख पर एक उदासीन भाव लिए बैठा हुआ था|
आचार्य यी-लियाओ ने कहा:
"तुम चिंतित प्रतीत हो रहे हो| ऐसा क्यों है?"

लू राज्य के मार्की ने कहाँ:
मैंने प्राचीन राजाओ की ताओ के बारे में अध्ययन किया और मेरे से पहले शासन करने वाले शासको की विधियों को भी जाना| मैंने जो गुजर चुके है उनकी आत्माओ के प्रति भी आदरभाव अपनाया और उनको सम्मान दिया जो महान थे, अपने परिवार के प्रति अच्छा आचरण किया और एक क्षण के लिए भी विश्राम नहीं लिया| फिर भी मैं विपत्तियों को नहीं टाल पा रहा हूँ| यही कारण है की मैं इतना चिंतित हूँ|"

सही-नान से आये आचार्य ने कहा :
"तुम्हारे द्वारा उपयोग किये गए तरीके तो केवल सतही है| घने बालो वाली लोमड़ी और सुन्दर आकृतियों वाला तेंदुआ अपने घर पर्वतीय जंगलो में गहन गुफाओ और घिरोचियो में बनाते है - अकेला रहने के लिए| वे रात को शिकार खोजते है और दिन में विश्राम करते है - बचे रहने के लिए| यद्यपि भूखे और प्यासे वे सावधानी से अपने आप को छिपा लेते है, लेकिन वे आगे बढ़कर जोखिम उठाते है बड़ी सावधानी से नदी और झीलों के किनारे भोजन की तलाश करते है - अपनी दृष्टि को केन्द्रित रखने के लिए| यद्यपि वे पूरी तरह से जाल और फंदों से या उन पर आने वाली किसी भी प्रकार की विपत्ति से बच जाते है| फिर वे कैसे किसी चीज़ को दोष दे सकते है उसके लिए जो उनके साथ होता है?
यह उनकी कीमती खाल के कारण होता है की उन्हें ऐसा दुर्भाग्य भुगतना पड़ता है| क्या अब ऐसा नहीं है की लू राज्य तुम्हारी खाल की तरह है? मैं उम्मीद करता हूँ की तुम अपने इस रूप को उतार दोगे और अपनी इस खाल को अलग कर दोगे, अपने मन को विमुक्त कर दोगे तथा अपनी इच्छाओं का त्याग कर दोगे और आराम से प्रवाहित होगे इस संसार में बिना दुसरो के लिए व्याकुल हुए|
"दक्षिणी युए राज्य में एक शहर है जियन-दे-जही-गुओ नाम का| जो लोग वहा रहते है वे भोले और सादे है, मुश्किल से अपने बारे में सोचते है और बहुत कम इच्छाए रखते है| वे जानते है की कैसे उनकी जरूरतों को पूरा किया जाए और उनके पास एक दुसरे से कुछ छिपाने के लिए कोई विचार नहीं होता है क्योंकि वे हर वस्तु को आपस में साँझा करते है और उसको वापस करने के लिए भी नहीं कहते है| उनके पास कोई विचार नहीं है इस बारे में की किसे सही आचरण या व्यवहार कहा जाये और न ही वे रीती रिवाजो और रस्मो में हिस्सा लेते है| उनका व्यवहार बहुत ही लापरवाह, अशिष्ट उर मूर्खतापूर्ण प्रतीत होता है, पर यहि एक मार्ग है जहाँ उनका नृत्य निर्बाध है| उनके जन्म को खुशी का समय समझा जाता है और उनकी मृत्यु को दफनाने का| मैं उम्मीद करता हूँ की तुम इस राज्य को छोड़ दो, यहाँ के नियमो को त्याग दो और ताओ के साथ वास्तविक संबंध में स्थापित हो जाओ - वस्तुतः तुम वहा चले जाओ (उस राज्य में)|"

लू के मार्की ने कहा :
"जिस ताओ के बारे में तुम बता रहे हो वह बहुत ही दूर है और मुश्किल है पहुचने के लिए, मार्ग में बहुत सारी नदिया और पर्वत है| मेरे पास कोई नाव या रथ भी नहीं है, इस प्रकार मैं कैसे वहा पर किसी तरह पहुच सकता हूँ?"

सही-नान से आये आचार्य ने कहा :
"अगर तुम बिना किसी रूप के हो जिसका स्थानान्तरण किया जा सके और बिना किसी स्थान के हो जहाँ से जाया जा सके तब इसे अपने रथ की तरह उपयोग करो|"

उस मार्की ने कहा :
“जिस ताओ की तुम बात कर रहे हो वह बहुत ही दूरस्थ है, एकांत और निर्जन| क्या वहा कोई हो सकता है जिसे मैं अपनी यात्रा के दौरान साथी के तौर पर ले जा सकू? मैं बिना किसी भोजन के प्रबंध के हूँ| कैसे मैं वहा तक सुरक्षित पहुच सकता हूँ?"

सही-नान से आये आचार्य ने कहा :
"अपने व्ययों को छोटा कर दो, अपनी इच्छाओ को कम कर दो, यद्यपि तुम बिना किसी प्रबंध के हो पर तुम अपने लिए पर्याप्त पा ही लोगे| जब तुम्हारा सामना नदियों से होगा तुम उन्हें तैर कर पार कर लोगे, उनको देखते हुए लेकिन उनमे दोष न ढूंढते हुए, निष्ठुरता से तुम आगे बढ़ते रहोगे फिर भी तुम्हे किसी भी प्रकार की थकान का अनुभव नहीं आएगा| वे सभी जो यदि तुम्हारे साथ यात्रा करते तुम्हारा साथी बनकर अब तक यहाँ तक पहुचकर उनकी हिम्मत टूट चुकी होते और वे वापस आ चुके होते|और तब तुम यह पाते की तुम बहुत दूर आ चुके हो|
"तुम देखते हो की जो औरो को युक्त रखते है वे जटिल रूप से संबद्ध होते है और जो औरो द्वारा युक्त होते है वे हर वक़्त आशंकित ही रहते है| यही कारण था की याओ ने किसी को अपने साथ युक्त नहीं किया और न ही वह किसी और के द्वारा युक्त हुआ| मैं उम्मीद करता हूँ की तुम इस तरह किसी भी प्रकार से युक्त होने से मुक्त हो जाओगे और अपनी हर चिंता से भी मुक्ति पा लोगे और सिर्फ ताओ के साथ स्थापित ओकर शून्यता के क्षेत्र में स्थिर हो जाओगे|
"अगर कोई एक बड़े जहाज को ले जा रहा हो और एक खाली (बिना किसी व्यक्ति के) छोटी नाव आकर उसमे टकरा जाए तो उस समय यदि वह व्यक्ति थोडा भड़का हुआ भी हो पर वह फिर भी इसके बारे में चिंतित नहीं होगा| लेकिन अगर उस छोटी नाव में कोई दूसरा व्यक्ति बैठा हो तो वह उस पर चिल्लाया होता की रास्ते से हट जाओ| अगर पहली बार चिल्लाने को न माना जाये और उसकी दूसरी बार चिल्लाने को भी न सुना जाए तो उसका तीसरी बार चिल्लाना और उग्र होगा| उसके बाद वह और उग्र होकर उसे भला बुरा कहने लगेगा| प्रथम दृष्टान्त में कोई क्रोध नहीं था दुसरे दृष्टान्त में क्रोध था| पहले दृष्टान्त में नाव खाली थी दुसरे दृष्टान्त में नाव में कोई था| अगर इसी प्रकार अगर कोई व्यक्ति स्वयं को रिक्त कर ले और संसार में विचरण करे, तब ऐसा क्या है जो उसे क्षति पंहुचा सकता है?"

बी-गौंग सही को वेई के सम्राट लिंग द्वारा नक्काशी दार बेल स्टैंड बनाने के लिए नियुक्त किया गया जो की प्रजा के चंदे की सहायता से बनाया जा रहा था|उसने शहर के बाहरी द्वार पर एक बहुत बड़ा स्टैंड तैयार कर दिया और तीन महीनो के अन्दर उसने उसकी सभी मंजिलो को आस पास के क्षेत्र से घंटियों से बांध दिया| जब राजकुमार किंग जी ने इसे देखा तो उसने पूछा:
"तुम्हारे अन्दर क्या विशिष्ट कौशल है जो तुम ऐसे चीजे बना पाते हो?"

उसने कहा:
"जब सभी हीस्सो को जोड़ा जाता है तो मैं उनकी बनावट में कोई हस्तक्षेप नहीं करता हूँ| मैंने यह सुना है 'जो पहले से ही नक्काशीदार और उत्कीर्ण होता है स्वयं से ही अपनी स्वभाविक स्थिति में आ जाता है'| एक अज्ञानी के लिए मै बिना किसी समझ का प्रतीत होता हूँ| एक उतावले व्यक्ति को मैं न तो ज्यादा धीमा प्रतीत होता हूँ और न ही सुस्त| जैसे जैसे भीड़ इक्कठा होती है वैसे ही छंट जाती है, जब वे जाते है मैं उनका अनुरक्षण करता हूँ और जब वे आते है विनम्रता से स्वागत करता हूँ| किसी को भी आने से मना नहीं किया जाता और किसी को भी जाने से रोका नहीं जाता| अगर वे बहुत हटी है तो उन्हें जाने दिया जाता है| अगर वे अपने दृष्टिकोण की व्यख्या करते है मैं उन्ही के अनुसार उसे सुनता हूँ| अगर वे गरीब होते है तो मैं उनके साथ सहानुभूति रखता हूँ| यही वो तरीका है जिससे मैं लोगो से चंदा इकट्ठा कर पाता हूँ बिना उनमे से किसी को प्रभावित किये| और इससे ज्यादा आप क्या कर सकते हो जब आपको आगे और ज्यादा रास्ता तय करना हो!"

जब कोंग-ज़ि को चेन राज्य और की राज्य के बीच में रोक दिया गया था, तो वह सात दिनों तक रहा बिना पका हुआ भोजन खाए|(कोंग-ज़ि को आज्ञा नहीं थी न तो चेन राज्य में आने की और न ही की राज्य में आने की इसलिए उसे तब तक बीच में जंगल में इंतजार करना पड़ता था जब तक वहां से कोई आकर उसे अपने साथ न ले जाये|)
डा-रोंग-रेन उन्हें सांत्वना देने पंहुचा और कहा:
"आप तो लगभग मर ही चुके थे!"
"यह सच है|"
"क्या आप मरने के विचार को नापसंद करते है?"
"हाँ|"

रेन ने कहा :
"चलो मैं आपको बताता हूँ नहीं मरने के एक मार्ग को| पूर्वी समुद्र में एक पक्षी है जिसको यी-दी कहा जाता है| वह ऊपर उठता है और फिर ऐसे ही निचे गीर जाता है लगता ही उसमे ऐसा करने की क्षमता न हो| अगर उसे अपने स्थान से धकेला जाए और जबरन हवा में उड़ने को छोड़ा जाये तो वह फडफडाने लगता है और जब उसे ठहरने के लिए छोड़ा जाये तो वह अपने स्थान पर

ही रहता है| जब वह आगे जाता है तो वह सबसे आगे होने का साहस नहीं करता ही और जब वह पीछे होता ही तो वह सबसे आखिरी नहीं होता है| जब भोजन उनके पास होता है तो पहले जाकर नहीं खाता है बल्कि बचे हुए टुकडो को खाता है| अपने अनुक्रम में इस प्रकार उसे दुसरो द्वारा अस्वीकार नहीं किया जाता है और न ही दुसरो द्वरा उसे क्षति पहुचाई जाती है| यही कारण है की वह हर प्रकार की चिन्ताओ से बचा हुआ है|

"एक सीधा पेड़ कटने में सबसे पहले आता है| एक मीठे पानी के कुए का उपयोग सभसे पहले किया जाता है| तुम बुद्धिमान होने का ढोंग करते हो अज्ञानियों को मुर्ख बनाने के लिए और समझते हो की तुम्हारा व्यवहार और आचरण सूर्य और चन्द्र से भी महान है| यही कारण है की तुम बच नहीं सकते हो|”

बहुत समय पहले मैंने एक सिद्ध पुरुष को कहते हुए सुना था”वह जो दुसरो पर आक्रमण करता है उसे कुछ हासिल नहीं होता है| वह जिसे सफलता प्राप्त होती है वह अंत में जरूर गलत साबित होता है| और जिसे प्रतिष्ठा मिलती है अंत में वह उसे जरूर खो देता है|"

वह कौन है जो सफलता और प्रतिष्ठा के विचारो को त्याग सकता है और तब भी साधारण मनुष्यों के साथ संबद्ध हो सकता है? वह ताओ के साथ होता है पर उसकी शुद्धता में स्थिर नहीं रह पाता है | उसका आचरण अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करता है पर इसके लिए वह विख्यात नहीं होता है| वह इतना साधारण और सादा होता है की उसकी तुलना एक कमज़ोर व्यक्ति से भी की जा सकती है| वह अपने पीछे अपने कोई चिन्ह नहीं छोड़ता है, प्रभावशाली होने के अपने किसी भी विचार को त्याग देता है और प्रतिष्ठा पाने की दृष्टि से कार्य नहीं करता है| इस प्रकार वह औरो से किसी प्रकार का अनुरोध नहीं करता है और न ही दुसरे अनुरोधो के साथ संबद्ध होता है| एक सिद्ध पुरुष को पूर्ण रूप से जाना नहीं जा सकता| फिर तुम इसमें इतना हर्षित क्यों हो रहे हो?"

कोंग-ज़ि ने कहा”

"अति उत्तम!"

उसने अपने मित्रो और संबंधियों को अलविदा कहा, अपने शिष्यों को स्वयं से मुक्त कर दिया, अपने केशो को बांध लिया और अपरिष्कृत वस्त्र धारण कर लिए| वह बिना विक्षुब्ध किये जानवरों के झुंडो में से चला गया और पक्षियों में से पर्यवेक्षण हुए निकल गया| चूँकि पक्षी और जानवर भी उससे बाधित नहीं हुए, फिर मनुष्यों तो होने ही नहीं थे!

कोंग-ज़ि ने ज़ि-संग-यु से पूछा :

"मुझे दूसरी बार लू राज्य से निकला गया है| सोंग राज्य में मुझ पर एक लकड़ी के ढोल को फेंका गया, वेई राज्य से मेरे सारे चिन्ह मिटा दिए गए, शांग और ज्होऊ राज्य में मुझे गरीब रहने को मजबूर कर दिया गया, और चेन और ‘की’ राज्य के बिच मुझे बंदी बना लिया गया| मुझे कई बार कई तरह के अत्याचारों से सताया गया है| मेरे सगे सम्बन्धी और मित्र अब बहुत कम होते जा रहे है और वे सभ मुझ से दुरी बनाये हुए है| यह सभ मेरे साथ क्यों हो रहा है?"

ज़ि-संग-यु ने कहा :

"क्या तुमने उस व्यक्ति के बारे में नहीं सुना जो जिया से बच निकल आया था? लीं-हुई ने अपने पीछे जेड डिस्क को छोड़ दिया जो की हजारो सोने के टुकडो जीतनी मूल्यवान थी जबकि वह एक शिशु को अपनी पीट पर बांधकर निकल गया| किसी ने उससे पूछा ‘क्या तुमने यह अपने उसूलो के लिए किया? एक शिशु इतना मुल्यवन नहीं हो सकता जितनी वह जेड डिस्क थी| क्या तुमने यह इसलिए किया की उसमे ज्यादा हिम्मत लगती? लेकिन इससे ज्यादा हिम्मत तो एक नवजात के लिए चाहिए होती है| तुमने हजारो सोने के टुकडो जितनी मूल्यवान जेड डिस्क को पीछे छोड़कर एक नवजात शिशु को लेकर क्यों भाग आये?’

लीं-हुई ने कहा:

‘वह जेड डिस्क और मैं एक दुसरे से लाभ के कारण जुड़े हुए थे, लेकिन वह नवजात शिशु और मैं स्वर्ग द्वारा एक दुसरे से जुड़े हुए थे| जो वस्तुए लाभ के कारण एक दुसरे से जुडी हुई होती है खतरों और बुरे समय में एक दुसरे से अलग हो ही जाती है; लेकिन जिन्हें स्वर्ग के द्वारा जोड़ा जाता है जब मुसीबते और बुरा समय आता है तो उनका संबंध एक दुसरे के साथ और अटूट हो जाता है| एक दुसरे से अलग होना और एक दुसरे से जुड़े रहना ये दोनों निसंदेह आपस में बहुत ही दूर है!

और जो संबंध उन लोगो के बीच होता है जो एक दुसरे के साथ लाभ से सम्बंधित होते है वह बिलकुल विरल और पानी की तरह बेस्वाद होता है जबकि जो संबंध क्षीण लोगो के बीच होता है वह मजबूत होता है| उनके संबंध की विरलता जो एक दुसरे के साथ लाभ से संबंधित होते है उन्हें और नजदीक आने के लिए प्रेरित करती है जबकि जो क्षीण लोगो के बीच संबंध होता है उसकी घनिष्टता उन्हें आखिर में दूर होने को प्रेरित करती है| वे जो एक प्रथम में एक दुसरे के साथ जुड़ने का कोई कारण नहीं पाते है उनके पास एक दुसरे के साथ इकट्ठा रहने की भी कोई वजह नहीं होती है

कोंग-ज़ि ने कहा :
"आपके मार्गदर्शन के लिए बहुत ही धन्यवाद|"

बड़े आराम से चलते हुए अपने हाथो को हिलाते हुए जैसे की वह अभी उड़ने वाले है इस प्रकार वह अपने घर वापस लौट आया| उसने अपने सभी अध्ययनों को बंद कर दिया और अपनी पुस्तकों को दूर रख दिया| उसके शिष्य अब उसके सामने नहीं झुकते थे पर उनके लिए उनका स्नेह और प्रेम और बढ़ गया|
कुछ समय बाद संग के पास और भी कुछ था उन्हें बताने के लिए:
“जब शुन की मृत्यु होने वाली थी तब उसने यु को ये उपदेश दिया था ‘तुम्हे इसके बारे में सावधान रहना चाहिए! -जब यह तुम्हारे भौतिक शरीर से सम्बंधित है तो तब इसकी देखभाल करने से अच्छा कुछ नहीं है| जब यह तुम्हारी भावनाओ से सम्बंधित है तो उनको आगे आने देने से बेहतर कुछ नहीं है|’ अपने शरीर की जरूरतो का ध्यान रखो तब यह तुम्हे विफल नहीं होने देगा| और अपनी भावनाओ को मुक्त करो तब वे तुम्हे और नहीं सता पायेगी| जब तुम्हारा शरीर तुम्हे विफल नहीं होने देगा और तुम्हारी भावनाए तुम्हे नहीं सताएगी तब तुम्हे इस चीज़ को संजोने की जरूरत नहीं होती की तुम्हारी प्रकृति क्या है| और जब तुम्हे यह संजोने की जरूरत नहीं होती की तुम्हारी प्रकृति क्या है तो निश्चित ही तुम्हे किसी और वस्तु पर निर्भर होने की जरूरत भी नहीं होती है|"

ज्हुंग्ज़ी जब वेई के राजा से मिलने आया वह बहुत ही जर्जर वस्त्र पहने हुआ था और अपने जूतों को कटे हुए डोरों से बांधे हुआ था|
वेई के राजा ने कहा :
"किस चीज़ के कारण आप इतने अभावग्रस्त हो गए है?"

ज्हुन्ग्ज्ही ने कहा:
"मैं गरीब हो सकता हूँ, पर मैं अभावग्रस्त नहीं हूँ| अगर एक विद्वान् के पास ताओ है और सामर्थ्य है तब भी वह उनकी साधना न कर पाए - यह होता है अभावग्रस्त होना| कटे फटे वस्त्र और जुते धारण करना यह तो गरीबी के कारण होता है पर इसका यह अर्थ नहीं है की उस व्यक्ति को किसी वस्तु का आभाव है| वह तो बस वर्तमान समय से थोडा पीछे होता है| क्या मेरे महाराज ने एक बन्दर को जंगल में वृक्षों पर छलांग लगाते नहीं देखा है? जब वह एक वृक्ष किसी भी शाखा को जकड लेता है तो इससे लटककर वह लम्बी लटों पर झूलने लग जाता है एक शाखा से दूसरी शाखा पर छलांग लगता हुआ उसका पूर्ण नियंत्रण होता है की उसे कहाँ पर जाना है किस वृक्ष पर जाना है| अगर यी और पेंग-मेंग (प्रतिष्ठित धनुर्धारी) को भी उस पर निशाना लगाने के लिए कहा जाए तो वे भी इसमें सफल नहीं होगे| दूसरी तरफ वे उस प्रकार के वृक्षों अगर होता है जिन पर कांटे होते है या जिनकी शाखाए कमजोर और पैनी होती है तो वह बड़ी सावधानी से हिलता है, थोडा हिचकिचाता हुआ और शंकित हुआ ही वह उन पर चलता है| यह इसलिए नहीं होता है की उसकी मांसपेशियों ने अपनी ताकत और सफुर्ती खो दी है और न ही इसलिए की वह निष्ठुर हो गया है| यह इसलिए होता है की वह अपने आप को उन परिस्थितियों में पाता है जहाँ वह अपनी क्षमता का उपयोग पूर्ण रूप से नहीं कर सकता है| अब मैं भी स्वयं को अव्यवस्थित उन वरिष्ट लोगो के मध्य पा रहा हूँ जो बड़ी अराजकता पूर्ण एक दुसरे से व्यवहार करते है और कभी भी अभावग्रस्त नहीं होने की चाहत रखते ही, यह कैसे हो सकता है? बी-गन ने इसका पता लगा लिया जब उसने अपने ह्रदय को काट कर निकल लिया था - यही इसका प्रमाण है!”

जब कोंग्ज़ी को चेन और की राज्यों के बीच में रोक दिया गया था और किसी भी प्रकार की रषद से वंचित कर दिया गया था तो वह सात दिनों तक बिना किसी पके हुए भोजन के वहा रहा| उसने अपने बाये हाथ से एक सूखे हुए पेड़ का सहारा लिया और दांए हाथ का उपयोग उसकी एक सुखी हुई शाखा को बजाने के लिए किया, यह समय उसने तब यो-कैन से एक गाना गाते हुए निकला जो की ‘संगीत की पुस्तक’ में से था| उसने उस शाखा का उपयोग ढोल की छड़ी की तरह किया पर सही ताल नहीं मिला पाया| उसने अपने मुख से ध्वनीया निकाली पर सही सुर नहीं मिला पाया| एक लकड़ी द्वारा बजाये गए संगीत और एक व्यक्ति की आवाज के मिश्रण को वहां जंगल में किसी ने भी सुना तो उनके ह्रदय को यह बिलकुल नीरस सा प्रतीत हुआ|
यां-हुई अपने हाथो को अपनी छाती पर रखकर उठ खड़ा हुआ और एक गुपचुप सी झलक दी| झोंग-नि को डर था की वह उसका बहुत आदर करता और उनके प्रति अपने लगाव के कारण स्वयं को बेवजह इस स्थिति के कारण दुःख में दाल रहा है इसलिए उसने कहा:

"हुई, यह आसान है स्वर्ग की सीमओं द्वारा प्रभावित नहीं होना पर यह बहुत ही मुश्किल है मानवता के रिश्तो से प्रभावित न होआ| जिसकी कभी शुरुआत ही नहीं हुई उसे अपने अंत से कोई भय नहीं होता है| मनुष्यता और स्वर्ग एक दुसरे से जुड़े हुए एक है| अब इस संगीत के संदर्भ मे कौन इसे गा रहा है?"

हुई ने कहा :
"मैं यह जानना चाहुगा की इसक क्या अर्थ है की 'यह आसान है स्वर्ग की सीमओं द्वारा प्रभावित होना'|"

जोंग नि ने कहा :
"भूख और प्यास, सर्दी और गर्मी, गरीबी और शाररिक बंधन - ये स्वर्ग और पृथ्वी द्वारा प्राकृतिक रूप से घटित होती है और यही वस्तुओ को उनके विकास में सहायता करती है| जो मैं कह रहा हूँ उसका सीधा अर्थ यह भी हो सकता है की जो कुछ भी हो रहा है केवल उसके साथ प्रवाहित होना| वे जो किसी और व्यक्ति के प्रति पूर्ण समर्पण और निष्ठा का संकल्प लेता है तब अगर यह संभव है किसी के लिए इस प्रकार की निष्ठा रखना, तो फिर कितना अधिक वे प्राप्त कर सकते है यह इंतजार करके की स्वर्ग उन्हें क्या प्रदान करता है?"

हुई ने कहा:
"आपका इससे क्या अर्थ है की 'यह मुश्किल होता है मानवीय के रिश्तो से प्रभावित नहीं होना '?"

ज्होंग नि ने कहा :
"तुम्हारी पद्नियुक्ति के समय हर चीज़ कितनी सुचारू रूप से कार्य करती है, तुम्हे पद दिया जाता है तुम्हे पदोन्नति मिलती है, इस प्रकार तुम गरीबी को हटा देते हो, यह इसलिए होता है की तुम एक लाभ की स्थिति में स्थापित होते हो, न की इसलिए की तुमने जो कुछ भी किया है| मेरा अपना भाग्य वह कुछ है जो मेरी सीमओं से बाहर है| एक समझदार व्यक्ति दुसरो का फायदा नहीं उठाता है और एक सामर्थ्यवान व्यक्ति दुसरो का किया हुआ नहीं चुराता है| क्यों मुझे देखा जाए एक ऐसे व्यक्ति की तरह जिसने किसी और से कुछ लिया है? इसीलिए ही यह कहा गया है की पक्षियों में कोई भी कबूतर से समझदार नहीं है| अगर वह किसी भी स्थान को उसका घोंसला बनाने के लिए अनुपयुक्त पाता है तो वह उसे दूसरी दृष्टि ही नहीं देता है| अगर वह किसी तिनके को भी कही गिरा देता है तो उसे छोड़कर आगे बढ़ जाता है| वह लोगो से डरा हुआ हो सकता है, पर इससे पहले की लोग पहुचते है वह इससे पूर्व अपना कार्य करने में सफल हो जाता है| वह शुरू से ही मंदिरों और महलों की बुर्जो में और ओलीयो में रहने में सफल रहा है|"

"इससे आपका क्या अर्थ है की 'जिसकी कभी शुरुआत नहीं हुई है उसके पास कोई कारण नहीं होता है अपने अंत का विरोध करने के लिए'?"

ज्होंग नि ने कहा:
"सजीवित वस्तुओ का विकास होता है लेकिन हम यह नहीं जानते है ऐसा क्या है जो उनको इस प्रकार परवर्तित होने के लिये प्रतिबद्ध करता है| फिर हम कैसे जान सकते की कब कोई भी वस्तु अपने अंत पर पहुच चुकी है? हम कैसे जान सकते है की कब एक नई शुरुआत होने वली है? जो कुछ भी हम कर सकते है वह है बस समय के साथ रहे और इंतज़ार करे की क्या होने वाला है - बस यही सभ कुछ है|"

"आपका इससे क्या तात्पर्य है की 'स्वर्ग और मानवता एक दुसरे से जुड़े हुए है और एक है?"

ज्होंग-नि ने कहा :
"यह है की जो मनुष्य है वह स्वर्ग के कारण है| यह है की जो स्वर्ग है वह भी स्वर्ग के कारण है| यह है की जो स्वर्ग है वह मनुष्य के कारण नहीं है, यह इसलिए है की यह उनकी प्रकृति में ऐसा करना निहित नहीं है| एक साधू शांतिपूर्वक इसका अनुभव करता है की उसके जीवन का सार समाप्त हो चूका है और अब अंत निकट है|"

ज्हुंग-ज्होऊ (ज्हुंग्ज़ी) जब दिओं-लिंग के घेराबंदी हुए क्षेत्र में चहल कदमी कर रहा था तब उसने देखा एक असाधारण से दिखने वाले नीलकंठ पक्षी को जो की पहाड़ी के दक्षिणी हिस्से की और से आ रहा था| उसके पंखो का फैलाव सात फूट जितना था और

उसकी आँखे दो उंगलियों जितनी बड़ी थी| वह ज्होऊ के माथे पर आकर टकरा गया और तब एक प्रकार के फल के वृक्ष के रूप में निचे गिरकर अवतीर्ण हो गया|
ज्हुंग-ज्होऊ ने कहा :
“यह किस प्रकार का पक्षी है! वह अपने विशाल पंखो को हिलाता है पर ज्यादा ऊँचा नहीं उड़ पाता है| उसकी बड़ी बड़ी आँखे है पर लगता नहीं की उसकी दृष्टि भी उतनी ही अच्छी है|"

अपने बड़े परिधान से बाधित हुआ ठोकर खाता हुआ वह उसके और करीब जाने के लिए उत्सुक हुआ और अपने धनुष बाण को तैयार रखा| उसने ध्यान दिया की एक अकेली सिकाडा ने अभी वहाँ छाया में अपने लिए एक अच्छे स्थान को खोजा है और वह अपने प्रति खतरों को भी भूल गयी है| एक प्रेयिंग मैंटिस (एक जीव) ने अपने पैरो को ऊपर उठाकर पकड़ लिया है और वह अपने लिए वहां होने वाले इतने स्पष्ट खतरों को भी भूल गया है जो उसके रूप को हानि पंहुचा सकते है| वो असाधारण सा दिखने वाला नीलकंठ इस पुरे दृश्य में इतना स्लंगित था और प्रयत्न कर रहा था यह पता लगाने का की इन परिस्थितयो का अच्छी प्रकार से फायदा किस प्रकार उठाया जाए, वह इस सभ पर बड़ी गहनता से ध्यान दे रहा था की कैसे उसको इससे लाभ पहुच सकता है और वह अपने सही होने के बोध के बारे में ही भूल गया था| ज्हुंग-ज्होऊ इस देखकर अचंभित हो गया और कहा :
"फीव! वस्तुए स्पष्ट ही एक दुसरे को प्रभावित कर सकती है जब दो विविध प्रजातीय एक दुसरे के साथ संपर्क में आती है|"

उसने अपने धनुष बाण को अलग रख दिया और अपने घर जाने के लिए चल दिया, ऐसे जाने पर वहा के प्रबंधक ने उसको भला-बुरा कहते हुए उसका पीछा किया|जब ज्हुंद-ज्होऊ अपने घर वापस आ गया, वह तीन दिनों के लिए घर के आँगन के आलावा कही नहीं निकला|
उसके सेवक लीं-की ने उससे पूछा:
"मालिक, क्या हुआ है जिसने आपको अपने ही आँगन से न निकलने को बाध्य कर दिया है?"

ज्हुंग-ज्होऊ ने कहा :
"मैं अपने बाह्य रूप का रक्षण कर रहा था, पर यह भूल गया था की मेरे साथ क्या हो सकता है यह तो ऐसे है जैसे जल की उपरी सतह पर ध्यान देना और उसकी गहराई को भूल जाना| इसके आलावा मैंने आचार्य को कहते हुए सुना था 'जब तुम एक ऐसे स्थान पर जाते हो जहाँ वहां के विशिष्ट रिवाजो और रस्मो को माना जाता है तो उनका अनुकरण करो'| तब जब मैं दिओं-लिंग्मे चहल कदमी कर रहा था और मैं यह भूल गया था की वहा मेरे साथ क्या हो सकता है, एक असाधारण सा दिखने वाला नीलकंठ आकर मेरे माथे में टकराया| मैं अपने सही या गलत होने के बोध को खो बैठा और वहां चेस्टनट वृक्ष के बगीचे में पहुच गया, तब वहा के प्रबंधक ने सोचा की मैं एक बिना आज्ञा प्रवेश करने वाला व्यक्ति हूँ| यही कारण है की मैं अपने ही आँगन से बाहर नहीं गया हूँ|

जब यंग-ज़ि सोंग राज्य जाने के लिए अपने मार्ग पर था उसने एक स्थानीय धर्मशाला में अपनी रात्रि बितायी उस धर्मशाला के रक्षक की दो उपपत्नी थी, एक खुबसूरत और एक कुरूप| उस कुरूप को अधिक महत्व दिया जाता था जबकि उस खुबसूरत से गन्दगी की तरह व्यवहार किया जाता था|
जब यंग-ज़ि ने पूछा की ऐसा क्यों है, तब वहा के मुख्य सेवक ने जवाब दिया:
"वह जो खुबसूरत है वह स्वयं को खुबसुरत की तरह देखती है पर हम उसकी सुन्दरता पर ध्यान नहीं देते है| वह जो कुरूप है वह स्वयं को कुरुप की तरह देखती है पर हम उसकी कुरूपता पर ध्यान नहीं देते है|"

यंग-ज़ि ने कहा :
"इसे याद रखो मेरे शिष्यों सामर्थ्यवान शैली में आचरण करो, पर कभी इस विचार को अपने अंदर मत आने दो की तुम सामर्थय्वन ढंग से आचरण कर रहे हो - तब तुम जहाँ कही भी जाओगे क्या तुमसे स्नेह नहीं किया जायेगा?"

21.Tian Zi Fang

While Tian Zi Fang (Master at plowing straight fields) was sitting in attendance to Marquis Wen of Wei, he mentioned a person named Xi Gong (Irrigation Worker) several times.
Marquis Wen said:
"Is Xi Gong your teacher?"
Zi Fang said:
"No. He's one of my friends from the village. When he speaks about Dao I find that I usually agree with him, so I don't have a problem mentioning what he says."
Marquis Wen said:
"I see. So, are you without a teacher?"
Zi Fang said:
"I have one."
"Who is your teacher?"
Zi Fang said:
"Dong Guo Shun Zi (Mr. Guard of the Eastern Wall)."
Marquis Wen said:
"If he's your Master, why haven't you spoken about him?"
Zi Fang said:
"He may be a person, but even though he has the appearance of a person he's as empty as the heavens. By following along with situations he nurtures what's genuine. With an unbiased attitude he tolerates all things. If something is without their own Dao, he rectifies their ability to be tolerant so as to awaken them. He leaves people to do their own thinking and takes off. A common person like me wouldn't be able to communicate much about him."
After Zi Fang left Marquis Wen became so dumbfounded he couldn't say a word for the rest of the day.
When he summoned his ministers to come stand in front of him, he said to them:
"It's so far away - the perfected virtue of a truly considerate person. At first I thought I understood the words of the sages and thought I'd reached true benevolence and righteousness in my behavior. Once I heard about Zi Fang's teacher, my whole appearance seemed to fall apart and I didn't want to move. My mouth seemed to be clamped shut and I didn't want to speak. What I was studying before turns out to be like I was actually just stuffing clods of soil in my ears. And my involvement in the state of Wei keeps adding more junk into my ears."

When Wen Bo Zue Zi (Master at Warming Up a Frigid Authority Figure) was on his way to the state of Qi, he stayed over for a while in the state of Lu.
A citizen of Lu requested an audience with him, but Wen Bo Zue Zi said:
"I can't do that. I've heard that the gentlemen of the Middle Kingdom are clear about rituals and righteousness but are very narrow minded when it comes to matters of the heart. I don't want to meet with someone like that."
After he had been to Qi, he stopped off in Lu on the way back and the same person requested an audience with him again.
Wen Bo Zue Zi said:
"The last time I was here he begged to see me, and now he's begging to see me again. There must be something startling he wants to tell me."
After he went out and saw the guest, he came back in and sighed. He saw the guest the next day as well, and again sighed when he came back in.
His servant said:
"Every time you see this guy you come back in and sigh. Why is that?"
"As I told you before, the people in the Middle Kingdom are clear about rituals and righteousness but are very narrow minded when it comes to matters of the heart. The first time he came to see me he advanced and retreated as though he was following a specific set of rules - almost like he was measuring each step and movement. He

seemed calm and unhurried like a dragon, or maybe his movements were more like a tiger. He ended up criticizing me like a son would, then trying to guide me like a father. That's why I sighed."
Zhong Ni (Confucius) came to pay a visit on him as well, but didn't say a word to him.
Zi Lu (a disciple of Confucius) said:
"I know you've been wanting to see Wen Bo Zue Zi for a long time. When you saw him you didn't say a word. Why is that?"
Zhong Ni said:
"Whatever I had thought about this person, when I saw him with my own eyes and realized he exists with Dao, I couldn't allow myself to utter a sound."

Yan Yuan asked Zhong Ni (Confucius):
"When you take a step, I also take a step. When you speed up a bit, I also speed up a bit. When you start trotting, I also trot. But when you run like a rabbit kicking up the dust behind you, I just seem to be stuck behind staring after you."
His Master said:
"Hui, what do you mean by that?"
"By 'When you take a step, I also take a step' I mean what you speak about I also speak about. By 'When you speed up a bit, I also speed up a bit' I mean what you debate about I also debate about. By 'When you start trotting, I also trot' I mean what you say about Dao I also say about Dao. And by 'When you run like a rabbit kicking up the dust behind you, I just seem to be stuck behind staring after you' I mean you don't need to say a word but you're trusted; you don't try to be like others but they gather around you; without even lifting a finger people come up and gush all over you. All I'm saying is that I don't have a clue why this is so."
Zhong Ni said:
"Why don't we take a closer look at this together? The saddest thing is the death of the heart, and the sadness over the death of a person can only take second place to that. When the sun rises in the east and starts moving to the west, there's not a living thing that doesn't respond to it. Anything that has eyes and feet waits for that to happen and then proceeds with their workday. When the sun comes out that's the time for reaping and gathering. When the sun goes away things vanish with it. All living things are the same way - there is waiting for death and there is waiting for birth. I received this particular form and it won't change much until it finally gets used up. I move about rendering service to all sorts of things day and night without pause, but I don't know where I'll end up. What's smoldering in me as my shape keeps evolving, not even one who could predict the future would be able to spy that out in advance. All I can do is move with what happens on this day.
"For our whole lives you and I have linked our arms together, yet something has been lost along the way. Can't we share in this sorrow together? You've made the mistake of adopting for yourself that which I found worked for me. Each of us tried our best, but you keep asking for more than what you already have, which is like looking to find a horse in an empty stall. I can be of the most help to you by forgetting about my affection for you, and you can be of the most help to me by forgetting about your affection for me. Although this is true, you might wonder how that wouldn't cause more anxiety. Although we might take part in this type of forgetfulness, the thing we'll never forget is to live our own lives."

Kong Zi (Confucius) went to visit Lao Dan (Laozi). Lao Dan had just finished washing his hair and had spread it out across his shoulders to dry. He was so removed from what was happening around him that he appeared to be non-human.
Kong Zi waited for an appropriate time to approach, and after a short time he made his presence known and said:
"Am I in a daze? Or is this truly so? As I approached just now, your physical form appeared to be like a hollowed out old withered tree trunk. You seemed to have left everything behind, separated yourself from the rest of humanity and had established yourself in solitude."
Lao Dan said:
"I was letting my heart wander where all things began."

Kong Zi said:
"What do you mean by that?"
"My heart is so bound up with it that I can't put my thoughts together. My mouth is so restricted that I can't find the words. But since you asked, I'll try to explain the experience to you. The ultimate Yin is deeply solemn. The ultimate Yang is expansively brilliant. What's deeply solemn rises up to the heavens, and what's expansively brilliant shines down on the earth. They both join together in supreme harmony and all things are born. Perhaps there's something that regulates all this, but no one has ever seen such a thing. Reducing and multiplying, filling and emptying, at once dark and at once bright, the sun transforming throughout the day and the moon changing during a month - each day progresses into the next, but no one sees that as a result of anything specific. In birth there is sprouting, and in death there is returning. From beginning to end everything is in the process of reversing itself but there seems to be no reason for it, and no one knows where it will all end. What else but this could be the ancestor from which we all come into being!"
Kong Zi said:
"May I ask what your wandering in this is like?"
Lao Dan said:
"To be able to grasp this is ultimate beauty and ultimate joy. Grasping ultimate beauty and wandering in ultimate joy, one could be called an ultimate person."
Kong Zi said:
"I'd like to hear your method for doing this."
"Beasts who eat grass don't suffer if you change where they graze. Insects who live in water don't suffer if you change their water. That's because a small alteration is made, but they haven't lost their greater aspects. So happiness, anger, sorrow and joy at what's happened to them don't arise or cause them anguish. As for what's in this world, all living things have some way in which they're united. Grasp what it is that unites them and see that they're all the same, then your four limbs and the hundred parts of your body will become like dust and dirt. Death and birth, beginnings and endings will become like days and nights, and nothing will be able to distract you from your path. Even less so would the idea of gain or loss and misfortune or blessings! Someone who can abandon the idea that they're enslaved as though they were knocking off a piece of caked mud from their shoe knows that their body is much more valuable than merely being a slave. Our true value lies in who we are and not in what was lost due to some changes we went through. We could go through ten thousand transformations and not even begin to reach the end, so what could possibly be sufficient to cause grief to our hearts? One who's already connected to Dao is relieved of all that."
Kong Zi said:
"Master, your virtue is on a par with the heavens and the earth, but you still borrow concepts so as to cultivate your mind. Of all the well rounded people in the past, I doubt if any of them could avoid doing that."
Lao Dan said:
"That's not so. The gurgling of water isn't because it's actually doing anything, but simply because that's what naturally arises from it. The virtue of a perfected person isn't due to cultivation, but things aren't able to resist it. It's like the heavens being high of itself; the earth being low of itself; the sun and moon being bright of themselves. What would they cultivate!"
When Kong Zi left, he went and told Yan Hui:
"My relationship with Dao is like a chicken still marinating in vinegar. The Master subtly fermented me and turned me out of my pot, as I hadn't been aware of the great perfection of the heavens and earth."

Zhuangzi was visiting Duke Ai of Lu.
Duke Ai said:
"There are a lot of Ru scholars in Lu, but few of them can become helpful to me."
Zhuangzi said:
"There are few Ru in Lu."
Duke Ai said:

"All over the state of Lu there are those wearing the garb of Ru, so how can you say there are few of them?"
Zhuangzi said:
"Talk has been going around that those who are Ru wear round hats to show they know the seasons of the heavens, wear square shoes to show they know the configuration of the earth, and hang round jade discs from their sashes to show they can make decisive decisions about affairs. A cultured person who's found the Way doesn't necessarily wear a specific garb, and someone who wears a specific garb hasn't necessarily found the Way. Since you don't seem to think this is so, why don't you make this proclamation throughout the state: 'Those who haven't found the Way, but wear the garb insinuating they have, will be found guilty and put to death.' "
Thereupon Duke Ai made the proclamation, and within five days a person couldn't be found in Lu wearing the garb of a Ru. There was only one elderly man who continued to wear a Ru's garb and came to stand at the Duke's gate. The Duke promptly invited him in and asked him about the affairs of state, and though they dealt with a thousand issues and tens of thousands of possibilities, he didn't falter.
Zhuangzi said:
"In the whole state of Lu there's only one person who's actually a Ru. Can that be called a lot?"

High rank and a hefty salary didn't enter into the mind of Bai Li Xi. When he fed grain to the cattle, the cattle got fat, so Duke Mu of Qin paid no attention to his lowly status and assigned him to a governmental position. The clansman of Yu (Shun) didn't let the ideas of death or life enter his mind, and that in itself was enough to influence others.

Lord Yuan of Song (Duke Yuan) ordered that a scroll be painted. A large crowd of scribes arrived, received the instructions, and immediately started wetting their brushes with saliva and preparing their ink blocks. Half of them were excluded pretty quickly. One scribe arrived late and sauntered up in a very relaxed manner without hurrying at all. He received his instructions and immediately turned around and returned to his quarters. The Duke sent someone to go see what he was up to, and by the time they found him he'd taken off his clothing and was sitting there naked drawing on his tablet.
Lord Yuan said:
"He'll do. This one is truly an artist."

While King Wen was in the state of Zang he spotted an elderly man fishing. Even though he appeared to be fishing, he didn't seem to be intent on catching anything. One who doesn't hold on to the idea of catching anything but keeps on fishing will constantly be fishing. King Wen wanted to raise his status and award him the government, but he was afraid his ministers and family members would raise a ruckus about that. He figured it would be best to give up on the idea and leave the man alone, but he couldn't bear the thought that the common people would be deprived of this glimpse of the heavens.
So the next morning he summoned his highest advisers and said to them:
"Last night I dreamed about a kindly person with a dark complexion and the stubble of a beard. He was riding a piebald horse with red symbols on its hooves. He yelled at me: 'Retire to your home and turn over the government to the old man from Zang so that the people will be cured of their ills!' "
All the advisers replied at once:
"That was your deceased father."
King Wen said:
"Maybe so. Why don't we consult the oracle on the matter."
The advisers all said:
"Since you received an order from your deceased father, you can't possibly ignore it. What would be the point in consulting the oracle?"
Satisfied, they welcomed the elderly man from Zang and turned over the government to him. The old laws were upheld, but no new ones were added. Three years later King Wen made an inspection tour of the state. He found that the established ranks of soldiers were in disarray and the hierarchal groups had disbanded, the commanding officers didn't pursue power, and that the surrounding states didn't dare bring their own weights and measures into

the state. Since the established ranks of soldiers were in disarray and the hierarchal groups had disbanded, they were all given the same status. Since the commanding officers didn't pursue power, they showed the same devotion to every task. Since the surrounding states didn't dare bring their own weights and measures into the state, the various officials weren't confused about to whom they had to show preference.
King Wen at that point considered the man to be the greatest of teachers, and facing north (the position of subservience) asked him:
"Can this type of government be extended to the whole world?"
The elderly man from Zang got a confused look on his face and didn't respond. He simply gave a blank stare and left. In the morning he paid his respects to the court, and at nightfall he went out for a walk. He was never heard from again for the rest of his life.
Yan Yuan asked Zhong Ni (Confucius):
"What was wrong with King Wen? And why did he come up with that dream?"
Zhong Ni said:
"Shush! Watch your words! King Wen did his best, and who are you to criticize him? It was right for him to follow that course and do what he had to do."

Lie Yu Kou (Lie Zi) was showing Bo Hun Wu Ren (Professor Confused Nonentity) his skill at archery. He drew the bow to its full extent, had a cup of water placed on his elbow, and released the string. As soon as the arrow had reached its mark, he was releasing a second arrow and then a third, and all of them lodged in the same place. The whole time he stood as still as a statue.
Bo Hun Wu Ren said:
"What you've displayed is the shooting skill of archery, but not the shooting skill of non-archery. Do you think you could climb to the top of a high mountain, hiking over rocky cliffs to a place eight hundred feet above a deep valley, and be able to shoot as well from there?"
Wu Ren then led him up to the top of a high mountain, hiking over rocky cliffs to a place eight hundred feet above a deep valley. Wu Ren turned his back to the edge of the cliff, slowly moving his feet until he was standing with his heels extending over the edge, and motioned for Yu Kou to join him. Yu Kou dropped to the ground, sweat streaming, and dug in his heels.
Bo Hun Wu Ren said:
"As for the perfected person, he can rise straight up to the clear blue sky, descend and submerge himself in the deepest core of the earth, freely roam to the ends of the world, and his expression wouldn't change a bit. Now you're experiencing so much fear that your eyes are a dead give away, and it appears that the very core of yourself is in great danger!"

Jian Wu asked of Sun Shu Ao:
"Three times you were appointed chief minister but you didn't act like that was any big deal. Three times you were removed from office but you didn't show any signs of regret. At first I thought you were just pretending, but now that I'm looking at you face to face I can see you're filled with a true zest for life. How can you be so acceptingly adaptable to what comes your way?"
Sun Shu Ao said:
"Am I really more exceptional than others? I simply accept what comes since I can't refuse it. And if it goes I can't stop it. I consider any gains or losses that come my way aren't due to anything I've done, so there's nothing to worry about, and that's about it. Is my being this way something that makes me more exceptional than others? I don't know if I'm this way due to outside influences or if it's due to just being myself. If it's due to outside influences, then I've lost myself. If it's due to being myself, then I've lost outside influences. I'm about to go loitering while watching everything happening around me. What leisure time do I have to wonder about whether people hold me in high regard or think of me as a loser!"
Zhong Ni (Confucius) heard about this conversation and said:

"The perfected ones of the past didn't allow those with knowledge to criticize them, didn't allow those who were beautiful to lead them astray, didn't allow robbers to bring them misfortune, nor would they allow Fu Xi or Huang Di to entice them with friendship. Departure from life is an extreme, but since even that wasn't able to change who they really were, neither would positions of honor and rank! For one who's like that, their spirit could pass through a huge mountain without coming upon an obstacle, could enter into a deep pit of water without getting wet, and could face all sorts of material hardships without seeing it as a difficulty. Being so filled up with the heavens and the earth, what they'd already given to others brought them more than what they previously had."

The King of Chu was sitting with the Marquis of Fan.
(Note: Fan was a small state eventually taken over by the larger state of Chu.)
In a short while, one by one, three of the King's ministers came and announced:
"The state of Fan has been destroyed."
The Marquis of Fan said:
"The state of Fan has been destroyed, but that's not sufficient enough to have made me cease to exist. If Fan's destruction isn't enough to have made me cease to exist, then the existence of Chu isn't enough to ensure anyone's survival. From this point of view, then Fan hasn't necessarily been destroyed, and Chu hasn't necessarily survived."
(Note: At that time it was customary for the ruler of a conquering state to put to death the officials of the state which had been taken over, since there was a fear of retribution by the ousted officials.)

२१|तियन जी फंग

जब तियन-ज़ि-फंग वेई राज्य के मार्की वेन की उपस्तिथि में बैठा हुआ था तब उसने एक क्सी-गूंग नाम के व्यक्ति का कई बार जिक्र किया|

मार्की वेन ने कहा:
"क्या क्सी-गोग तुम्हारे गुरु है?"

ज़ि-फंग ने कहा:
"नहीं| वह गाँव के मेरे मित्रो में से एक है| जब वह ताओ के बारे में कहता है तब मैं हमेशा स्वयं को उसके साथ सहमत पाता हूँ, इसलिए मुझे कोई समस्या नहीं है व्याख्या करने में की वह क्या कहता है|"

मार्की वेन ने कहा:
"चलो ठीक है फिर क्या तुम बिना गुरु के हो?"

ज़ि-फंग ने कहा :
"मेरे पास एक गुरु है|"

"तुम्हारा गुरु कौन है?"

ज़ि-फंग ने कहा :
"दोंग-गुओ-शुन-ज़ि|"

मार्की वेन ने कहा :
"अगर वो तुम्हारे गुरु है, तो तुम उनके बारे में कुछ क्यों नहीं कहते हो?"

ज़ि-फंग ने कहा:
"वह चाहे एक मनुष्य है, लेकिन यद्यपि उनका रूप मनुष्यों जैसा है पर वे स्वर्ग की तरह रिक्त है| परिस्थितियों के अनुरूप होकर वे हमेशा यथार्थ को कहते है| और अपने निष्पक्ष व्यवहार के कारण हर वस्तु को सहन कर लेते है| अगर कोई बिना अपनी ताओ के होता है तो वे उनकी क्षमताओ को परिशुद्ध कर देते है और उन्हें सहनशील बना देते है| वे लोगो को उनकी ही सोच पर छोड़ देते है और पीछे हट जाते है| एक मेरे जैसा साधारण मनुष्य उनके बारे में और व्याख्या करने में सक्षम नहीं हो सकता है|"

जब ज़ि-फंग मार्की वेन के पास से चला गया तो वह ऐसा स्तंभित हो गया की पुरे दिन तक कुछ बोल न सका|
जब उसने अपने मंत्रियो को अपने सामने आने का आदेश सुना तो उसने कहा:
“यह बहुत ही गहन है - वह सिद्ध सामर्थ्य जो की एक सच्चे विचारशील व्यक्ति का होता है| पहले मैं सोचता था की मैं साधुओ के शब्दों को समझता हूँ और सोचता था की मैंने वास्तविक धर्म और दयालुता को अपने व्यवहार में पा लिया है| पर जब मैंने एक बार ज़ि-फंग के गुरु के बारे में सुना है, मेरा सम्पूर्ण रूप मुझसे पृथक होना चाह रहा है और मैं हिलना भी नहीं चाह रहा हूँ| मेरा मुख मुझे बंद हुआ प्रतीत हो रहा है और मैं कुछ बोलना भी नहीं चाहता हूँ| जो मैं अब तक अध्ययन कर रहा था वह ऐसे हूँ गया है जैसे मिटटी के कणों को अपने कानो में दाल लेना| और मेरा वेई राज्य में अब और संयुक्त होना मेरे कानो मे और कचरे के डालने जैसा होगा|"

जब वें-बो-जुए-ज़ि अपनी की राज्य की यात्रा के लिए मार्ग में था तो वह कुछ समय के लिए लू राज्य में ठहरा|
एक लू राज्य के नागरिक ने उनके दर्शन करने का अनुरोध किया पर वें-बो-जुए-ज़ि ने कहा :
"मैं ऐसा नहीं कर सकता हूँ| मैंने सुना है की मध्य देश में रहने वाले सज्जन रिवाजो और धर्म के बारे में बिलकुल स्पष्ट है लेकिन बहुत संकीर्ण सोच वाले है जब यह हृदय से सम्बंधित होता है| मैं ऐसे लोगो में से एक से भी नहीं मिलना चाहुगा|"

जब वह की राज्य में जाकर वापस आ रहा था तो वह लू राज्य में रुके और फिर उसी व्यक्ति ने उनके सक्षात्कार का अनुरोध किया|
वें-बो-जुए-ज़ि ने कहा :
"जब मैं पिछली बार यहाँ था तो उसने मुझे देखने का निवेदन किया और अब वह दोबारा मेरे से मिलने की विनती कर रहा है| जरूर कुछ आशाचर्यजनक है जो वह मुझे बताना चाहता है|"

जब वह बाहर गया और मेहमान को देखा वह वापस आया और आह भरी| उसने उस मेहमान को अगले दिन भी देखा और फिर से आह भरी जब वह वापस आया|

उनके सेवक ने कहा:
"हर बार जब आपने उस व्यक्ति को देखा है तो आप अंदर वापस आ गए है और आह भरी है| ऐसा क्यों है?"

"जैसा की मैंने तुम्हे पहले बताया था की मध्य देश में रहने वाले सज्जन रिवाजो और धर्म के बारे में बिलकुल स्पष्ट है पर बहुत संकीर्ण सोच वाले है जब यह ह्रदय से सम्बंधित होता है| जब पहली बार वह मुझे मिलने आया तो वह आगे बढ़ा और ऐसा व्यवहार किया जैसे की वह किन्ही विशिष्ट नियमो का पालन कर रहा है - बिलकुल ऐसे की वो अपने हर कदम और गतिविधि को ध्यान से माप रहा हो| वह एक ड्रैगन जैसा स्थिर और सहज प्रतीत हो रहा था या फिर उसकी गतिविधिया एक चीते जैसे थी| तब उसने बातचीत समाप्त की मेरी आलोचन करते हुए जैसे की एक पुत्र करता है और तब मार्गदर्शन किया मेरा जैसे की एक पिता करता है| यह कारण है की मैंने आकर आह भरी|"

ज्होंग-नि भी एक बार उनसे मिलने आया था, पर उसने एक शब्द भी नहीं कहा|
ज़ि-लू (ज्होंग-नि का एक शिष्य) ने कहा :
"मैं जानता था की आप वें-बो-जुए-ज़ि से लम्बे समय से मिलना चाहते थे| जब आप उनसे मिले तो आपने उनसे एक शब्द भी नहीं कहा| ऐसा क्यों?"

ज्होंग -नि ने कहा :
"जो कुछ भी मैंने उस व्यक्ति के बारे में सोचा था, जब मैंने उसे अपनी आँखों से देखा तो अनुभव किया की वह ताओ में स्थापित है, मैं अपने आप को एक शब्द भी निकलने के अनुमति नहीं दे पाया|"

यां-युआन ने ज्होंग नि से पूछा :
"जब आप एक कदम रखते हो मैं भी एक कदम रखता हूँ| जब आप थोड़ी अपनी गति बढ़ाते हो, मैं भी अपनी गति बाधा लेता हूँ| जब आप तेज चल चलते हो तो मैं भी तेज चल चलता हूँ लेकिन जब आप खरगोश की तरह दौड़ते हो अपने पीछे धूल उठाते हुए तो मैं पीछे केवल अटका रह जाता हूँ और केवल आप को देखता हुआ ही प्रतीत होता हूँ|"

उसके आचार्य ने कहा :
“हुई तुम्हारा इससे क्या अर्थ है?"

"जब आप एक कदम रखते है मैं भी एक कदम रखता हूँ, मेरे कहने का यह अर्थ भी है जिसके बारे में आप कहते है मैं भी उसी बारे में कहता हूँ| जब आप थोड़ी अपनी गति बढ़ाते हो, मैं भी अपनी गति बढ़ा लेता हूँ इससे तात्पर्य है की जब आप किसी विषय पर विवाद करते है तो मैं भी उसी के बारे में विवाद करता हूँ जब आप तेज चल चलते है तब मैं भी तेज चल चलता हूँ इससे तात्पर्य है की जब आप ताओ के बारे में कहते है मैं भी ताओ के बारे में कहता हूँ| लेकिन जब आप खरगोश की तरह दौड़ते हो अपने पीछे धूल उठाते हुए तो मैं पीछे केवल अटका रह जाता हूँ और केवल आप को देखता हुआ ही प्रतीत होता हूँ इससे अर्थ है की आपको एक शब्द भी कहने की जरूरत नहीं होती है तब भी आप पर विश्वास किया जाता है आप दुसरो जैसा नहीं होना चाहते है तब भी लोग आपके पास इकट्ठा होते है; बिना कोई ऊँगली हिलाए भी लोग आपके पास होते है तो भावुक हो जाते है| जो कुछ भी मैं कह रहा हूँ वह यह की मेरे पास कोई अनदाज़ा नहीं है की ऐसा क्यों है|"

जोंग नि ने कहाँ:

"क्यों न हम इस पर और दृष्टि दाले? सबसे उदासीन वस्तु ह्रदय का मर जाना है और एक व्यक्ति की मृत्यु पर होने वाली उदासीनता का स्थान इसके बाद दुसरे स्थान पर आता है| जब सूर्य पूर्व से उगता है और पश्चिम की तरफ बढ़ना शुरू होता है तब कोई ऐसे वस्तु नहीं होती है जो इसके प्रति किर्यशील नहीं होती है| हर आंख और पैरो वाली वस्तु इसके आने का इन्तजार करती है और तब अपने दैनिक कार्यो के लिए अग्रसर होती है| जब सूर्य उदय होता है यही समय काटने (फसल को) और इकट्ठा करने का होता है| जब सूर्य अस्त हो जाता है यह सभ भी उसी के साथ समाप्त हो जाता है| सभी वस्तुए एक ही मार्ग पर है - यहाँ मृत्यु के लिए प्रतीक्षा है और यहाँ जन्म के लिए भी प्रतीक्षा है| मैंने इस विशेष रूप को पाया है और तब तक इसी में रहूगा जब तक की यह समाप्त न हो जाए| मैं पुरे दिन और रात सभी वस्तुए के प्रति बिना रुके अपना कर्तव्य करता रहता हूँ और मुझे नहीं पता की इसका अंत कहाँ होगा क्या होता है मेरे अन्दर जो मेरा विकास निरंतर होता रहता है इसे वह भी नहीं बता सकता जिसे भविष्य का भी पहले से ही ज्ञान हो| जो कुछ भी मैं कर सकता हूँ वह है जो कुछ भी आज होने वाला है उसके साथ चलते रहना|
"अपनी जिंदगियो के लिए मैंने और तुमने अपनी बाजुओ को आपस में जोड़ लिया है फिर भी कुछ न कुछ मार्ग में खो गया है| क्या हम इस दुःख को भी एक साथ बाँट सकते है? तुमने गलती की है अपने लिए उसे अपनाने की जिस मैंने अपने पर कार्य करते हुए पाया है| हम में से प्रत्येक ने अपना सर्वोत्तम प्रयत्न किया है पर फिर भी तुम जो तुम्हारे पास है उससे ज्यादा मांगते रहते हो; यह तो एक घोड़े को एक खाली अस्तबल मे खोजने जैसा है| मैं तुम्हारे लिए सबसे मददगार हो सकता हूँ तुम्हारे प्रति अपने स्नेह को भुलाकर और तुम मेरे प्रति सबसे मददगार हो सकते हो मेरे प्रति अपने स्नेह को भुलाकर| यद्यपि यह सच है लेकिन फिर भी तुम सोचते हो की कैसे यह ज्यादा संदेह उत्पन्न नहीं करेगा| यद्यपि हम दोनों इस प्रकार की विस्मृति में हिस्सा ले सकते है पर जो चीज़ हम कभी नहीं भुलेगे वह है अपनी ज़िन्दगी को जीना|"

कोंग-ज़ि लाओ-दान से मिलने गया| लाओ-दान ने अभी अपने बाल धोना समाप्त किया था और उन्हें खोलकर अपने कंधो पर सूखने के लिए फैला दिया था, वह वहां जो कुछ भी उनके आसपास हो रहा था उससे बिलकुल विरक्त हुए लग रहे थे, ऐसे की वो एक मनुष्य प्रतीत ही नहीं हो रहे थे| कोंग-ज़ि ने उनके पास जाने को एक उचित समय का इंतज़ार किया और कुछ समय बाद उन्होंने अपनी उपस्तिथि दर्ज करते हुए कहा :
"क्या मैं विस्मित हो गया था? या फिर यह सच था? जैसे ही मैं आपके पास आया आपका भौतिक रूप ऐसे प्रतीत हुआ जैसे की एक सूखे हुए वृक्ष का खोखला तना| आप ऐसे प्रतीत हो रहे थे जैसे आपने सभी चीजों को पीछे छोड़ दिया है, बाकि मानवता से स्वयं को भिन्न कर लिया है और अपने आप को एकांत में स्थापित कर लिया है|"

लाओ-दान ने कहा:
"मैंने अपने ह्रीदय को वहा जाने दिया जहाँ से सभी की शुरुआत हुई थी|"

कोंग-ज़ि ने कहा:
"आपका इससे क्या तात्पर्य है?"

“मेरा ह्रदय इतना समर्पित था की यह मेरे विचारो को इकट्ठा कर ही नहीं सकता| मेरा मुख इतना सीमित है की इसे कोई शब्द ही नहीं मिल रहे थे| पर चूँकि तुमने पूछा है तो मैं इस अनुभव की व्याख्या तुम्हारे सामने करने का प्रयत्न करुगा| जो परम यिन है वह अत्यंत पवित्र है| जो परम यंग है वह व्यापक अद्भुत है| जो अत्यंत पवित्र होता है वह स्वर्ग तक उठता है और जो व्यापक रूप से अद्भुत होता है वह धरती पर प्रकाशमय होता है| वे दोनों संयुक्त हो जाते है मधुर सामंजस्य में और सभी जीवित वस्तुओ का जन्म होता है| शायद यहाँ है कुछ जो इस सभ को नियंत्रित करता है पर किसी ने उसे नहीं देखा है| कम होते हुए या फिर बढ़ते हुए, खाली हुए या फिर भरते हुए, एक समय अँधेरा एक समय प्रकाश, सूर्य पुरे दिन परिवर्तनशील रहता है और चन्द्र पुरे महीने बदलता रहता है - हर दिन अगले में प्रगति करता है; पर कोई भी इसे किसी के होने का विशिष्ट परिणाम नहीं समझता है| जन्म में अंकुरण होता है और मृत्यु में फिर से वापसी होती है| शुरू से अंत तक हर वस्तु स्वयं के वापस होने अधोमुख होने की प्रक्रिया में होती है और इसके लिए कोई प्रयोजन प्रतीत नहीं होता है और कोई नहीं जानता की यह कहाँ समाप्त होगा| और कुछ क्या यहाँ हो सकता है; हमारा पूर्वज जिससे हम सभ की शुरुआत हुई है!"

कोंग-ज़ि ने कहा:
"क्या मैं यह पूछ सकता हूँ की आपका वहा होना कैसा होता है?"

लाओ-दान ने कहा:

"इसका बोद्ध होना परम आनंद है और परम सुन्दरता है| इस परम आनंद का बोद्ध होना और परम माधुर्य में स्थापित होना, उसे हम परम पुरुष कह सकते है|"

कोंग-ज़ि ने कहा :
"मैं आपसे इसके बोद्ध होने के तरीके को सुनना चाहुगा|"

“जानवर जो घास खाते है उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा अगर तुम उस स्थान को बदल दो जहाँ वे चरते है| जो जीव जल में रहते है उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा अगर तुम उनके जल को बदल दो| यह इसलिए होता है की बहुत छोटे परिवर्तन किये गए है जहाँ उन्होंने बड़े पहलु को नहीं खोया है| इसी प्रकार सुख और दुःख, आनंद और क्रोध उनके साथ जो घटित होता है वे या तो उत्पन्न नहीं होते है या फिर वे संताप पहुचाते है| और वह जो कुछ भी इस संसार में है सभी जीवित वस्तुए किसी न किसी तरीके से एक एक दुसरे से जुडी हुई है| उसको समझो जो उनको जोड़ता है और देखो की वे सभ एक है, तब हमारे चारो हाथ पैर और सैकड़ो शरीर के हिस्से धुल और मिटटी के कणों की तरह हो जाते है| जन्म और मृत्यु, उत्पत्ति और अंत यह सभ दिन और रात की तरह हो जाते है और इनमे से कोई भी तुम्हे तुम्हारे मार्ग से नहीं भटका पायेगा| और तुम्हे लाभ हानि और दुर्भाग्य और सौभाग्य के विचार भी नहीं प्रभावित करेगे! कोई जब इस विचार को त्याग देता है की उन्हें दास बनाया गया है जैसे की मिटटी को जुते पर से हटाया जाता है वह जानता है की उनका शरीर केवल एक दास बनने से ज्यादा मूल्यवान है| हमारी सही पहचान इससे होती है की हम क्या है न की इससे की हमने कुछ परिवर्तनों से गुजरते वक़्त क्या खोया है| हम दस हजार बदलावों से भी गुजर सकते है और वह भी बिना किसी अंत पर पहुचे; फिर क्या हमारे ह्रदय को पीड़ा पहुचने में योग्य है? वह जों पहले से ही ताओ के साथ जुड़ा होता है वह इस सभ से बचा होता है|"

कोंग-ज़ि ने कहा:
"गुरु जी, आपका सामर्थ्य स्वर्ग और पृथ्वी के सदृश है, पर आप अब भी अपने मन की साधना के लिए विभिन्न धारणाओं को अपनाते है| उन सभी भूतकाल के परम ज्ञानी मनुष्यों के सन्दर्भ में, मुझे संदेह है की यदि उनमे से कोई भी इसको टाल सकता था|"

लाओ-दान ने कहा :
"ऐसा नहीं है| जल का गडगडाना इसलिए नहीं होता की वह वास्तव में कुछ कर रहा है पर मात्र इसलिए होता है की यही तो उसके अंदर प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होता है| एक सिद्ध पुरुष का सामर्थ्य उसकी साधना से नहीं होता है पर इसलिए होता है की वस्तुए उसका विरोध नहीं कर पाती| यह तो ऐसे होता है जैसे स्वर्ग स्वयं में ही इतना ऊँचा है; जैसे धरती स्वयं से ही निचे ही; जैसे सूर्य और चन्द्र स्वयं से प्रकाशमान है|
उन्हें क्या साधना की ज़रुरत है!"

जब कोंग-ज़ि वहां से चला गया, वह गया और यां-हुई से कहा :
“मेरा ताओ के साथ संबंध अब भी ऐसा है जैसे एक निम्बू को अब भी अचार डालने के लिए सुखाया जा रहा हो| गुरूजी ने बड़ी सूक्ष्मता से मेरे विचारो को शुद्ध कर दिया और मुझे मेरी कल्पनाओ से बाहर निकाला है क्योंकि अब तक मैं स्वर्ग और धरती के महान तत्व से परिचित नहीं था|"

ज्हुंग्ज़ी लू के सम्राट ‘अई’ से मिलने गया|
सम्राट अई ने कहा :
"लू में बहुत सारे ‘रु’ के अध्येता है पर उनमे से केवल कुछ ही मेरे लिया सहायक है|"
(रु पंथ को मानने वाले जो की समकालीन समय में था)

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"यहाँ केवल कुछ ‘रु’ है लू राज्य में|"

सम्राट अई ने कहा :
"पुरे लू राज्य में वे सभ ‘रु’ के वेशभूषा धारण किये हुए है फिर आप कैसे कह सकते है की वे केवल कुछ है?"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
ये चर्चाये चारो तरफ हो रही है की वे जो 'रु' होते है अपने सर पर गोल टोपिय पहनते है यह दिखने के लिए के वे स्वर्ग की ऋतुओ को जानते है, चोकोर जुते पहनते है यह दिखाने की लिए की वे धरती की स्थिति को जानते है और अपनी कमर पर जेड डिस्क को बांधकर घूमते फिरते है ये दिखाने के लिए की वे मुद्दों के बारे में निर्णायक परिणाम देने में सक्षम है| एक व्यक्ति जिसे उस रास्ते का ज्ञान होता है अनावश्यक तौर पर कुछ विशिष्ट परिधानों को धारण नहीं करता है और वह जो इन विशिष्ट परिधानों को धारण करता है आवश्यक नहीं है की उसे उस मार्ग का ज्ञान हो| क्योंकि तुम यह सोचते प्रतीत नहीं होते हो की ऐसा भी हो सकता है, फिर तुम क्यों पुर राज्य में यह घोषणा नहीं कर देते की 'जिन्हें उस रास्ते का ज्ञान नहीं हुआ है, पर फिर भी उन परिधानों को धारण करते है जो उनकी तरह परोक्ष रूप से संकेत करते है उन्हें दोषी मन जायेगा और मौत की सजा दी जायेगी|"

इसके उपरांत सम्राट अई ने वह घोषणा कर दी और पांच दीनो के अन्दर लू राज्य में ऐसे किसी भी व्यक्ति को नहीं खोजा जा सकता था जिसने रु की वेशभूषा धारण की हो| वहां केवल एक ही वृहद् व्यक्ति था जिसने रु के परिधानो को पहनना जारी रखा और वह सम्राट के द्वार पर आया| सम्राट ने उसे अपने आदेश से अन्दर बुलाया और राज्य में हो रही गतिविधियों के बारे में पूछा तथा यह सोचा की वे स्वयं ही हजारो मुद्दों और संभावनाओं पर कार्य करते है, और इस बारे में वह लडखडाया नहीं|

ज्हुंग्ज्ही ने कहा :
"पुरे लू राज्य में केवल एक ही ऐसा व्यक्ति है जो एक सच्चा रु है| क्या यह काफी नहीं है?"

ऊँचा पद और भारी वेतन के विचार भी बाई-ली-क्सी के मन में नहीं आते थे| जब वह पशुओ को चारा और दाना खिलाता था वे पशु मोटे और हष्ट पुष्ट हो गये इसलिए किन के सम्राट 'मु' ने उसकी कम हैसियत पर ध्यान नहीं दिया और उसे एक सरकारी पद में नियुक्त कर दिया| यु के कुलसदस्य अपने मन में जीवन और मृत्यु के विचारो को नहीं रखते थे और इसी कारण वे स्वयं से ही लोगो पर प्रभाव डालने में सक्षम थे|

सोंग के महाराज युआन ने एक निर्देशलेख को छापने का आदेश दिया| लेखको की एक बहुत भारी भीड़ वहा पहुच गयी, वहां दिए गए निर्देशों को ग्रहण किया और उसी समय अपनी ब्रुशो को अपनी लार से गिला कर उसके लिए स्याही तैयार करने लगे| उनमे से आधो ने तो बहुत शीघ्र ही शुरू कर दिया| एक लेखक थोडा देर से पंहुचा और बिना कोई शीघ्रता किये निश्चिंत होकर इधर उधर घुमने लगा| उसने निर्देशों को ग्रहण किया और उसी समय वापस अपने घर चला गया| सम्राट ने उसके पीछे किसी को भेजा यह जानने के लिए की वह क्या कर रहा है और उस समय वहा जाकर उन्होंने पाया की उसने अपने वस्त्र निकाल रखे है और नग्न होकर बैठकर अपने पत्रे पर उसे छाप रहा था|

सम्राट युंन ने कहा:
"वही कर सकता है| वही तो केवल एक वास्तविक कलाकार है|"

जब राजा वेन जंग राज्य में थे तो उन्होंने एक बुजूर्ग व्यक्ति को मछली पकड़ते हुए देखा| यद्यपि वह मछली पकड़ता हुआ प्रतीत हो रहा था फिर भी कुछ भी पकड़ने का उसका आशय नहीं दिख रहा था| वह जो कुछ भी पकड़ने का कोई विचार नहीं रखता है पर फिर भी मछली पकड़ने के कार्य में लगा रहता है वही निरंतर मछली पकड़ने में लगा रहता है| राजा वेन ने उनकी प्रतिष्ठा को ऊपर उठाने की इच्छा रखी और राज्य सौपने की चाहत की पर उन्हें भय था की उसके मंत्री और पारिवारिक सदस्य इस फैसले पर आपति जतायेगे| तो उन्होंने इसका विचार किया और उस विचार को त्यागना ही उत्तम समझा तथा उस व्यक्ति को वैसे ही छोड़कर आगे बढ़ गए| लेकिन वे इस विचार का भार नहीं सहन कर पाए की एक साधारण मनुष्य को इस प्रकार स्वर्ग के आभास से वंचित किया जाता है|
इसलिए अगली सुबह उन्होंने अपने मुख्या सलाहकार को बुलाया और कहा:
"पिछली रात मैंने एक दयालु मनुष्य का स्वप्न देखा जिसका गहरा रंग था और छोटी दाढ़ी थी| वह एक विचित्र घोड़े की सवारी कर रहा था जिसके पैरो पर लाल रंग का एक निशान था| वह मुझ पर चिल्लाया 'अपनी सेवा से निवृत होकर अपने घर चले जाओ और इस राज्य को जंग के उस बुजुर्ग व्यक्ति को सौंप दो ताकि इस राज्य के लोग अपने दुखो से बच सके!'

सभी सलाहकरो ने एक स्वर में कहा:
"वो आपके चले गए हुए पिता थे|"

राजा वेन ने कहा:
"हो सकता है| क्यों न हम इस बारे में ओरेकल (पवित्र भविष्यवाणी) से सलाह ले|"

सभी सलाहकारों ने कहा:
"चूँकि आपको अपने पिता से आदेश प्राप्त हुआ है तो संभवतः आप इसे टाल नहीं सकते है| फिर ओरेकल से सलाह लेने का क्या तात्पर्य रह जाता है?"

संतुष्ट हुए, उन्होंने जंग से उस बुजुर्ग व्यकी का स्वागत किया और राज्य सौंप दिया| पुराने कानूनो को ऐसे ही रखा गया और कोई नया नियम नहीं बनाया गया| तीन साल बाद जब राजा वेन राज्य के निरिक्षण के लिये आया| उसने देखा की जो सिपाहियों के लिए स्थापित पद थे वे सभ अव्यवस्थित हो गए थे और पदानुक्रमिक सिपाही समूहों को हटा दिया गया था जो सेनाध्यक्ष नियुक्त था उसके पास कोई ताकत नहीं थी और पडोसी राज्य में से किसी में भी हिम्मत नहीं थी की वे घुसपैठ कर सके|
क्योंकि सभी स्थपित पदों का कर्म भंग कर दिया गया था और सभी पदानुक्रमिक सिपाही समूहों को हटा दिया था इसलिए सभी को एक ही स्तर के पद प्राप्त थे कोई छोटा या बड़ा नहीं था| क्योंकी सेनाध्यक्ष के पास कोई ताक़त नहीं थी इसलिए हर कार्य के प्रति वे अपनी पूरी निष्ठा लगाते थे| क्योंकि पडोसी राज्य अपनी शक्ति और बल का प्रदर्शन उनके सामने रखने की हिम्मत नहीं करते थे इसलिए कोई भी अधिकारी इस बात को लेकर दुविधा में नहीं था की किसे ज्यादा तरहीज दी जाए|
इस बात को देखकर राजा वेन उसे महान गुरु मान रहे थे उन्होंने उत्तर की तरफ मुख करके उनसे पूछा
"क्या इस प्रकार की सरकार का विस्तार सम्पूर्ण संसार में किया जा सकता है?"

जंग से आये उस बुजुर्ग व्यक्ति ने इस बात पर बहुत ही दुवुधा युक्त मुख बनाया और कोई प्रतिक्रिया नहीं दी| उसने केवल एक रिक्त दृष्टि डाली और चला गया| सुबह उसने राजदरबार के सामने अपना सम्मान प्रकट किया और शाम को वो घुमने के लिए बाहर निकला| उसे उसके बाद किसी ने अपनी पूरी ज़िन्दगी में दोबारा नहीं देखा|
यां-युआन ने ज्होंग-नि से पूछा :
"किंग वेन के साथ क्या गलत हुआ था? और क्यों उन्होंने ऐसा स्वप्न को गढा?"

ज्होंग-नि ने कहा :
"शुष! अपने शब्दों पर ध्यान दो! किंग-वेन ने अपना सर्वोत्तम प्रदान किया, और तुम कौन हो उनकी आलोचना करने वाले? उनके लिए उस मार्ग का पालन करना सही था और वह करना जो उन्हें करना चाहिए था|"

लिए-यु-कोऊ अपनी धनुर्विद्या के कौशल को बो-हूँ-वू-रेन को दिखा आहा था| उसने प्रत्यंचा को आखिरी छोर तक खिंचा फिर अपनी कोहनी पर एक जल के भरे हुए पात्र को रखा और तीर को छोड़ दिया| जब तक वह तीर अपने निशाने तक पहुचता वह दूसरा तीर छोड़ चूका था और ऐसे ही तीसरे को, वे सभी जाकर एक ही स्थान पर जड़ गए| पुरे समय में वह एक पुतले की भांति स्थिर खड़ा रहा|
बो-हु-वू-रेन ने कहा :
"जो तुमने मुझे दिखाया वह धनुर्विद्या का प्रदर्शन था लेकिन उसका नहीं जो धनुर्विद्या नहीं है| क्या तुम सोचते हो की तुम एक पर्वत के ऊपर चढ़ सकते हो, बड़ी चट्टानों को पार करते हुए आठ हजार फीट की ऊँचाई पर से भी क्या तुम निशाना भेदने में सक्षम हो सकते हो?"

वू-रेन तब उसे एक ऊँचे पर्वत के ऊपर ले गया और तब बड़ी चट्टानों को पार करते हुए आठ हज़ार फीट की ऊँचाई पर गया| वू-रेन ने स्वयं को शिखर के किनारे ले गया अपने पैर को धीरे धीरे आगे बढ़ाते हुए जब तक की वो केवल उस खड़े किनारे पर अपने पंजो पर खड़ा नहीं हो गया और उसने यु-कोऊ को उसके साथ आने के लिए कहा| यु-कोऊ ज़मीन पर गिर गया, उसके पसीनो की धार बहने लगी और उसकी एडिया ज़मीन में धस गई|
बो-हूँ-वू-रेन ने कहाँ :
“एक सिद्ध पुरुष नीले आकाश की ऊचाई तक भी ऊपर उठ सकता है, स्वयं को अँधेरी और गहन धरती की गहराई में भी ले जा सकता है और इस संसार के अंत तक मुक्त रूप से विचरण कर सकता है और उसके भाव बिलकुल परिवर्तित नहीं होगे| अब तुम इतना भय अनुभव कर रहे हो की तुम्हारी आंखे अन्दर घुस गयी है और ऐसा प्रतीत हो रहा है की तुम्हारा अन्तर्भाग बहुत ही खतरे में है!"

जियन ने सुन-शु-औ से पूछा :
"तीन बार तुम्हे मुख्या मंत्री नियुक्त किया गया और तुमने ऐसे व्यवहार किया की यह कोई बड़ी बात नहीं है| तीन बार तुम्हे इस पद से बर्खास्त किया गया पर तुमने पछतावे के कोई लक्षण नहीं दिखाई दिए| पहले मैंने सोचा की तुम केवल ढोंग कर रहे हो पर अब तुम्हे मुख से देखकर मुझे अनुभव हो रहा है की तुम जीवन के वास्तविक रस से भरे हुए हो| तुम इतने स्वीकार्य रूप से कैसे स्वीकार्य हो सकते हो उन वस्तुओ के प्रति जो तुम्हारे मार्ग में आती है?"

सुन-शु-औ ने कहा:
"क्या मैं वास्तव में औरो से ज्यादा विशेष हूँ? मैं निष्कपटता से उसे स्वीकार कर लेता हूँ जो भी मेरे मार्ग में आता है क्योंकि उसे टाला नहीं जा सकता है| और अगर यह जाता है तो इसे रोका नहीं जा सकता है| मैं किसी भी लाभ और हानि को जो मेरे मार्ग में आते है उनको अपने कर्मो का कारण नहीं मानता हूँ इसलिए मुझे कोई भी चिंता करने की बात नहीं होती है, और यही है जो वास्तव होता है| क्या मेरा होना इस तरह का है की मैं दुसरो से विशेष प्रतीत होता है? मैं तो यह भी नहीं जानता की मैं इस प्रकार का हूँ यह बाह्य प्रभाव के कारण है या केवल इसलिए है की मैं ऐसा ही हूँ| अगर यह बाह्य प्रभाव के कारण होता तब मैं स्वयं को खो चूका होता| अगर यह मेरे ऐसे ही होने के कारण होता तब मैं बाह्य प्रभावों को खो चूका होता| अब मैं ताल मटोल करना चाहता हूँ जबकि देखते हुए सभ कुछ जो मेरे चारो तरफ घटित हो रहा है| मेरे पास क्या कीमती समय है जो मैं यह सोचने में लगू की लोग मेरे बारे में अच्छा सोचते है या मुझे असफल सोचते है!"

कोग्ज़ी-ने इस वार्तालाप के बारे में सुना और कहा:
"जो भूतकाल में सिद्ध पुरुष थे वे उनको अपनी आलोचना नहीं करने देते थे जो बुद्धिमान होते थे और न ही जो सुन्दर होते थे उनके द्वारा अपने को पथ को भ्रष्ट होने देते थे, और न ही लुटेरो को उनके लिए दुर्भाग्य लाने देते थे और न ही वे फु-क्सी या हुंग-दी (सुन्दर स्त्रियाँ) को उनसे मित्रता करने की अनुमति देते थे| जीवन से वे पूर्ण रूप से विरक्त हो चुके होते थे लेकिन यह भी इसे बदल सकने में योग्य नहीं था की वास्तव में वे कौन है और न ही उनका पद और सम्मान! वह कोई जो ऐसा होता है उनकी आत्मा एक विशाल पर्वत से भी बिना किसी बाधा के निकल सकती है, एक गहरे जलाशय में जा सकती ही बिना गीला हुए और विभिन्न प्रकार की भौतिक वस्स्तुओ से सम्मुख हो सकती है बिना किसी मुश्किल के| इस तरह से स्वर्ग और धरती से परिपूर्ण होकर, जो उन्होंने पहले ही दुसरो को प्रदान किया था वह उनके लिए और लाया हुआ होता है उससे भी ज्यादा जो की उनके पास था|"

छु का राजा फेन के मार्की के साथ बैठा हुआ था|(फेन एक छोटा सा राज्य था जिसे बड़े राज्य छु द्वारा हड़प लिया गया था)
कुछ ही समय में, एक के बाद एक राजा के तीन मंत्री आये और कहा :
"फेन राज्य का विनाश कर दिया गया है|"

फेन के मार्की ने कहा :
"फेन राज्य का विनाश कर दिया गया है पर यह पर्याप्त नहीं है मेरे अस्तित्व को समाप्त करने के लिए| अगर फेन का विनाश पर्याप्त नहीं ही मेरे अस्तित्व को समाप्त करने के लिए तो छु का अस्तित्व भी पर्याप्त नहीं है किसी के जीवन को आश्वस्त करने के लिए| इस दृष्टि से देखने पर जरूरी नहीं है की फेन का विनाश कर दिया गया है और जरूरी नहीं है की छु सुरक्षित बच गया है|"

22.Knowledge Wanders North

Knowledge wandered north along the banks of Dark Water, then climbed a hill at Yin Fen and happened to come upon Without Words To Express.
Knowledge said these words to Without Words To Express:
"I'd like to ask you some questions. What should I think about and what should I contemplate in order to understand Dao? Where should I live and what lifestyle should I pursue in order to be secure with Dao? Who should I join up with and which path should I follow in order to connect with Dao?"
He asked these three questions, but Without Words To Express didn't respond to any of them. It wasn't that he chose not to answer, but he didn't know the answers.
Since Knowledge didn't get any answers, he reversed directions and went south to White Water and climbed up the banks to Sly Conclusions where he found Warped Lunatic. Knowledge spoke up and asked Warped Lunatic the same questions.
Warped Lunatic said:
"Ooh! I know the answers and I'll explain it all to you."
But in the middle of his sentence, he forgot what he wanted to say. Since Knowledge didn't get any answers, he reversed directions again and went to the Emperor's palace, got an audience with Huang Di and asked him the same questions.
Huang Di said:
"Without thinking and without contemplating you can begin to understand Dao. Without a place to live and without a specific lifestyle you can begin to be secure with Dao. Without joining up with anyone and without selecting a particular path you can begin to connect with Dao."
Knowledge asked Huang Di:
"You and I can understand these things, but the other two don't have this understanding. Which is right?"
Huang Di said:
"It's Without Words To Express who's actually right. Warped Lunatic seems to have a handle on it, but you and I aren't even close yet. Since one who knows doesn't speak and one who speaks doesn't know, a sage teaches without using words. Dao can't be acquired by seeking after it, and virtue can't be achieved through force. Benevolence can cause certain actions, righteousness can be practiced unfairly, and rituals can have the appearance of puppetry.
"Therefore it's been said: 'Lose Dao and fall back on virtue; lose virtue and fall back on benevolence; lose benevolence and fall back on righteousness; lose righteousness and fall back on rituals.' Someone who gets to the point of performing rituals glorifying Dao brings about chaos.
"Therefore it's been said: 'The actions of someone who becomes like Dao decrease every day. They keep decreasing and decreasing again to the point that there's no reason to take actions. Not purposefully taking action, yet never without acting.'
"Now, for what's already come into being to want to go back to its roots has to be a difficult thing to do! That can only be easy for someone who's a great person! Birth follows death, and death creates birth. Who could really understand when the order of things is put that way? When a person is born it's due to the gathering together of a vital energy. When it's gathered together in that way a person is born, and when it's eventually dispersed again the person dies. Since death and birth both follow each other, what do we have to be concerned about? In this all living things are united. What makes one situation beautiful is because of its spirit and wonder. What makes another situation hateful is because of its stink and putrefaction. What's stinking and rotten will keep transforming into what has spirit and wonder. What has spirit and wonder will keep transforming into what's stinking and rotten.
"Therefore it's been said: 'Complete integration is merely the unification of the vital energy in the world.'
"Therefore, a sage values the unification."
Knowledge responded to Huang Di, saying:
"When I asked these things to Without Words To Express, he didn't answer me. Not only didn't he give me an answer, but he didn't even know the answer to my questions. When I asked Warped Lunatic, he got to the middle of

a sentence and stopped short. Not only didn't he tell me what he wanted to, but he'd forgotten what he was going to say. Then when I asked you about it, you knew the answers. Why did you say you weren't even close?"
Huang Di said:
"Without Words To Express was genuinely correct because he truly didn't know. Warped Lunatic seemed to get it because he'd forgotten about it. You and I ended up not even being close because we think we have some understanding."
Warped Lunatic heard about this conversation, and determined that Huang Di certainly had a way with words.

The heavens and earth have great beauty, but no words. The four seasons have clearly defined patterns, but no debates. All living things have basic principles, but no explanations. A wise person begins with the beauty of the heavens and earth and arrives at the principles of all living things. That a perfected person doesn't interfere and a great sage doesn't initiate is called observing from the viewpoint of the heavens and earth. Now they, through spiritual clarity, have reached perfection and gone through hundreds of changes. Things continuously go in a circle of death and birth so nothing knows where their roots are. This has been prescribed for all living things since they first came into existence at the beginning of time. The six directions can be aligned with a measuring stick, but no one has yet been able to leave their own point of reference. The tiniest hair on a newly sprouted stalk of wheat waits for something to bring it to fruition. In the whole world there's nothing that doesn't sink at times and float at other times, throughout their entire lives with no apparent reason for it. Through darkness and lightness the four seasons keep moving along, each getting their own turn. The heart can become so dark at times it seems to vanish, but it still exists. Things may be so smeared and blurred that they lose their outer shapes, but the spirit is still there. All living things keep receiving sustenance although they might not realize it. This is called the basis of the root - to be able to observe from the viewpoint of the heavens!

Nie Que (Cracked and Missing Teeth) asked Bei Yi about Dao.
Bei Yi said:
"If you align your body and unify your vision, the harmony of the heavens will arrive. If you assimilate your knowledge and unify your limitations, spirit will come into your being. Virtue will become beautiful to you, and Dao will become your resting place. You'll see things in a childlike way like a newborn calf, and won't need to ask why anything is the way it is."
Before he had finished speaking, Nie Que had fallen fast asleep.
Bei Yi gave a great sigh of joy and went away singing:
"With a form like a dried up skeleton,
"A heart like dying embers,
"Straightforward in his genuine knowledge,
"Not having a reason to show self-restraint,
"Caught in the twilight without a mind,
"And can't even carry on a discussion.
"What kind of person is this?"

Shun asked his assistant:
"Can Dao be obtained and possessed?"
"You don't even possess your own body, so how could you obtain and possess Dao!"
Shun said:
"If I don't even possess my own body, who does possess it?"
"Your form fell to you from the heavens and earth. You don't possess your life either, as it fell to you from the harmonious union of the heavens and earth. You don't possess your character and destiny either, as they fell to you by the arrangements of the heavens and earth. You don't possess your children or grandchildren either, as they fell to you like extensions from your body from the heavens and the earth. Therefore, we go about without knowing where we're headed, stay in one place without knowing what keeps us there, and eat without knowing what makes

it flavorful. The power of the heavens and earth is the brightest vital energy there is, so what is there that could be obtained and possessed?"

Kong Zi (Confucius) asked of Lao Dan (Laozi):
"While we're sitting here sharing this leisurely afternoon, I'd like to ask you about how to connect to Dao."
Lao Dan said:
"Even out your perspective, scatter what's soaked your mind, bathe in pure white snow until you've purified your spirit, and smash to pieces your knowledge. Dao is obscure and difficult to describe in words! But since you asked, I'll give you some of the essential points:
"The brightly shining is born from dusky darkness;
"The species that exist were born from what was formless;
"Pure spirit was born from Dao;
"The source of all forms was born from essence;
"And all living things use their forms to give birth to others.
"As a result, those with nine apertures are born from the womb, and those with eight apertures are hatched from an egg. They arrive without any indications of what they should do, and go forth without sensing any boundaries; without having doors to pass through or rooms to enclose them, simply heading off tentatively in all directions. Seeing everything as an open invitation, their four limbs are strong, their senses are acute and attentive, and their eyes and ears are fresh and bright. They use their minds for the intended purpose without worrying about it. They respond to other things without partiality.
"The heavens cannot but be high. The earth cannot but to be expansive. The sun and moon cannot but to follow their courses. All living things cannot but prosper. In this way they're all connected to Dao. Moreover, gathering all this information doesn't make anyone knowledgeable and arguing against it doesn't make anyone wise, so the sage just lets it all go! That which has received benefits doesn't try to gain more benefits, and that which has been decreased doesn't try to decrease itself further - that's what the sage holds close to his heart.
"Like the waves in the ocean it churns downward to the deepest depths and rises high to the top of a crest where it seems to end but then falls back down and starts all over. It can transport the weight of all things and leaves nothing behind.
"Then there's the Dao of the cultured person, which is exclusionary and expects all the other living things to support him and not be deficient. That's their Dao!
"Most people are in some middle territory, opposing darkness and opposing lightness, in a place somewhere between the heavens and the earth, straightening up for the time being to become humans waiting to return to their ancestors. From the viewpoint of a root, what it's produced is things that chatter until they become hoarse and simply blabber. Whether they have a long life or a short one, how much time separates them? In the scheme of things, it's no more than an instant, so how could anyone determine whether Yao or Jie was right or wrong?
"Fruit and the plants they grow from have set patterns to follow. People in human relationships, although difficult at times, find a way to adjust to each other. When a sage encounters something, she doesn't try to avoid it, and when something passes her by she doesn't try to grasp on to it. To adapt and respond, that's virtue. To spontaneously respond, that's Dao. This is what the emperors joyfully held up, and where the kings started out.
"A person's life on this earth is like viewing a white colt through a crack in the wall - it appears suddenly then vanishes. Bursting forth vigorously, there's nothing that doesn't come into being that way. Sluggish and vacant, there's nothing that doesn't go back down into the earth in that way. What went through a transformation to be born also goes through a transformation when it dies. All living things mourn their loss, and human beings likewise feel sadness in their hearts. They're released from the sheath of the heavens, and dropped out of the bag of the heavens. By allowing the threads to unravel and be yielding, the hun and po emerge and the body is left behind. Only then can one pass on to infinity.
(Note: It was believed that within a person's body were two spiritual souls: the po and the hun. The po is the animalistic nature, while the hun is the spiritual nature. At death, the po was supposed to return to the earth and the hun was supposed to return to the heavens.)

"What started out formless takes on a form, and what has a form eventually becomes formless. This is something everyone can understand, and they don't have to put much effort into figuring it out. And yet, this is something everyone keeps on discussing. If someone has gotten the gist of it, then they don't need to discuss it further. If they keep discussing it, then they haven't gotten the gist of it.
"Having sharp vision won't make it any clearer, and debating about it doesn't get to its secrets. Dao can't be heard about, so you might as well block up your ears to what's being said. This is said to be a great achievement."

Dong Guo Zi asked of Zhuangzi:
"Where is this thing we call Dao?"
Zhuangzi said:
"There's no place it isn't."
Dong Guo Zi said:
"I hope you can tell me more than that."
Zhuangzi said:
"It exists in crickets and ants."
"How could it be in anything as low as that?"
"It exists in common weeds."
"Could it exist any lower than that?"
"It exists in tiles and bricks."
"It couldn't exist any lower than that?"
"It exists in shit and piss."
When Dong Guo Zi didn't respond, Zhuangzi said:
"Your questions didn't really touch on the substance of the matter. When Inspector Huo asked the superintendent of the market why he stepped on the fattened pigs, he told him that the further down his foot went the more he found out about the pig. If you keep pondering about where it can't possibly be, you'll never be rid of looking for more things where it can't be. Perfect Dao seems to be right, and so do expansive words. 'Entirely', 'everywhere' and 'all' are three different words for the same reality. They point out the unity of all things.
"Let's go swimming in the womb of nothingness, where our conversations can fit together like dove-tailed joints without coming to a stressful end. Let's go do nothing! Scattering our words like placidly sprinkling water! Indifferent as pure essence! Tuned in and leisurely! Our aspirations will have already become vacant, and as we move on we won't know where we'll end up. We'll pace back and forth like galloping horses in an immense open space, and as great understanding enters us we won't feel any sense of exhaustion. Things in relation to one another are joined without boundaries, but things do have certain boundaries, so it's said that things are restricted by those boundaries. There are no boundaries that can restrict and boundaries are non-restrictive. There are terms like 'fullness and emptiness' and 'submission and aggression.' What becomes full or empty is neither full nor empty. What becomes submissive or aggressive is neither submissive nor aggressive. What becomes introverted or extroverted is neither introverted nor extroverted. What becomes accumulated or scattered is neither accumulated nor scattered."

A He Gan (Family Man Sweet Lotus) and Shen Nong were both studying under Lao Long Ji (Old Lucky Dragon). After closing his door, Shen Nong had rested his head in his arms on the table and was taking a nap.
At noon A Hen Gan opened the door and entered saying:
"Lao Long has died!"
Shen Nong, leaning on the table, grabbed hold of his cane and stood up , then he threw his cane to the ground and laughed, saying:
"Heaven (a fond reference to his Master as "his heaven") knew how low, ignorant, disrespectful and arrogant I am, so he abandoned me and died. Now it's all over! My Master hasn't left a trace for me of his wild words now that he's dead!"
Overhearing this, Yan Gang Diao said:

"Someone who has the essentials of Dao has gentlemen from all over the world trying to attach themselves to him. Even those who know as little as what could fit on the head of a pin about Dao still know to take their wild words with them when they die. How much more so would someone who had the essentials of Dao!
"Look for it, but it's without a shape;
"Listen for it, but it makes no sound.
"These are the things people say about it, calling it dark and obscure. That's how they discuss what's Dao and what's not Dao."
At that point, Tai Qing (Extremely Pure) asked of Wu Qiong (Infinity):
"Do you understand about Dao?"
Wu Qiong replied:
"No, I don't."
He asked the same question of Wu Wei (Non Action), and Wu Wei said:
"I understand Dao."
"Since you understand Dao, can you elaborate on it?"
"Yes, I can."
"Then, what can you tell me about it?"
Wu Wei said:
"What I understand about Dao is that it can as easily be held in high regard as looked down upon. It can as easily be restrained as dispersed. That's about all the explanation I can give about Dao."
Tai Qing repeated these words to Wu Shi (Without Beginning), and asked:
"Being as Wu Qiong says there's nothing to understand, and Wu Wei says there is, which of them is right and which is wrong?"
Wu Shi said:
"To not know is profound. To know is superficial. To know there is nothing to understand reaches to the heart of the matter. To think there is something to understand remains on the surface."
At that point Tai Qing turned his face toward the sky and heaved a great sigh then said:
"To know there is nothing to understand is knowing, but to think there is something to understand is not knowing! Who can realize that they don't understand what they think they know?"
Wu Shi said:
"Dao can't be heard about, as what's heard about is contradictory. Dao can't be observed, as what's observed is contradictory. Dao can't be spoken about, as what's spoken about is contradictory. If you recognize its shape, that shape isn't its shape. Dao can't be regarded as something that can be named."
Wu Shi said:
"One who responds to questions about Dao doesn't understand Dao. Although one might have questions about Dao, they won't find out about it that way. Dao can't be questioned, and there aren't any answers to the questions. Question what can't be questioned and there'll be no end to the questioning. Answer what there are no answers for and the answers will never get to the heart of it. If one doesn't get to the heart of it and keeps on asking questions, they've missed the most splendid things to observe in the universe around them and know nothing of the great beginnings within them. On top of that, they wouldn't be able to wander through the Kunlun Mountains or swim in the Great Void (universe)."

Guang Yao (Bright as Sunshine) asked of Wu You (Nonexistent):
"Master, do you exist? Or don't you exist?"
Guang Yao didn't receive an answer, and he wondered who was looking out from beneath the form in front of him with those sunken eyes and blank stare. All day long he watched him but saw nothing, listened for some sound but heard nothing, and poked at him but didn't get a reaction.
Guang Yao said:

"Excellent! To come across someone who's able to reach this perfection! I can conceive of the idea of non-existence from my place in existence, but I can't conceive of the idea of nonexistence from within the realm of nonexistence. And when it comes to the nonexistent existing, who could engage in that kind of perfection!"

The blacksmith who forged harness buckles for the Grand Marshall of the Hunt was eighty years old but didn't make the slightest mistake in his work.
The Grand Marshall asked:
"What great skill you have! How do you do it?"
"I just keep doing what I do best. When I was twenty years old I really enjoyed forging buckles, and didn't pay attention to much of anything else. Whatever wasn't a buckle didn't interest me."
By using this method of ignoring things that weren't useful to him, he was able to make use of what he did for a long time. How much further could a person go if there was nothing that wasn't useful to them! Would there be anything that wouldn't prop them up?

Ran Qui (Slowly Seeking) asked of Zhong Ni (Confucius):
"Can we know anything about what it was like before there was a heaven and earth?"
Zhong Ni said:
"Indeed. Things are the same now as they were back then."
Ran Qui was at a loss as to what to ask next, so he left.
Returning the next day he asked:
"Yesterday I asked you if we can know anything about what it was like before there was a heaven and earth. You said: 'Indeed. Things are the same now as they were back then.' Yesterday it made sense to me, but now I'm confused. Can I ask you what you meant by what you said?"
Zhong Ni said:
"Yesterday it made sense to you because your spirit at that time was open to receiving it. Now you're confused because you're trying to use your non-spiritual side to analyze it. There is no past. There is no present. There is no beginning. There is no end. Could there be future generations if there hadn't already been previous generations?"
Before Ran Qui could come up with an answer, Zhong Ni said:
"Never mind! No need to respond to the minor details. Don't use life to bring life to what's dead, and don't use death to kill off what's alive. Are we just waiting around for death and birth to occur? It's all intrinsically connected. Are the heavens and earth what brought life to things? Things produced things, not non-things. When the first things came into being, something had to precede them, but whatever it was, things are here. And there will be things endlessly. That a sage's love for others goes on just as endlessly is taken from this concept."

Yan Yuan asked of Zhong Ni (Confucius):
"I'd like to ask you to explain something I heard you say: 'There's nothing to be offered, and there's nothing to be received.' Can you tell me how to float in that way?"
Zhong Ni said:
"People in ancient times adapted themselves on the outside, but didn't change on the inside. Nowadays people change on the inside, but don't adapt themselves on the outside. Someone who adapts to things retains an inner unity that doesn't change. How to be adaptable but not change? How to connect with others and float on the wind with them? By agreeing to seek nothing more than that."

The clansman Shi of Wei (King Hui) had his large garden, while Huang Di had his small garden. The clansman You of Yu (King Shun) had his palace, while Tang (King Cheng Tang) and Wu (King Wu Ding) had their small rooms.
Those who were deemed to be special people, like the teachers of the Confucians and Mohists, caused a differentiation in ideologies between what was right and what was wrong so people started getting into heated arguments about it. These arguments between people are even worse today! A sage dwells with other things and

doesn't harm them. Since he doesn't harm things, then things aren't able to harm him. Only someone who is without an intention to do any harm becomes able to connect with others and offer and receive from them.
A mountain and a forest join together. A river bank and the soil beside it join together. That's what makes us happy and delighted! But as soon as the happiness starts to wane, sorrow comes along. When sorrow and happiness come, we can't ward them off. When they go we can't stop them. It's so sad that people nowadays only want to stick to things as they are and not allow for variations. They know how to react when they're treated in a certain way, but don't know how to react when they're not treated in that way - doing what they can do but not being able to do what they can't do. Since they're without understanding and without ability, they get trapped into believing what others tell them is unavoidable. Being weighed down with the task of doing what others tell them is unavoidable, how could that not also heap sadness on them! Words arrive and words depart. Actions arrive and actions depart. If preconceived knowledge becomes the standard for understanding, then superficiality prevails!

२२|ज्ञान की यात्रा

ज्ञान एक बार अँधेरे जल के किनारो के साथ साथ उत्तर की तरफ घुमने गया, तब वह यिन-फेन की पहाड़ी पर चढ़ गया और उसका तब 'बिना शब्दों' को यह व्यक्त करना घटित हुआ|
ज्ञान ने इन शब्दों को कहा 'बिना शब्दों' को वह व्यक्त करने के लिए जो वह पूछना चाहता था :
"मैं आप से कुछ प्रश्न पूछना चाहुगा| मुझे क्या सोचना चाहिए और मुझे क्या विचार करना चाहिए ताओ को समझने के लिए? कहाँ मुझे रहना चाहिए और क्या जीवन शैली मुझे अपनानी चाहिए ताओ के साथ संगठित होने के लिए? किस के साथ मुझे जुड़ना चाहिए और किस पथ पर मुझे चलना चाहिए ताओ के साथ जुड़ने के लिए?"

उसने इन तीन प्रश्नों को पूछा पर 'बिना शब्दों' ने इनमे से किसी का भी प्रतिउत्तर नहीं दिया| यह इसलिए नहीं था की उसने जवाब नहीं देने को चुना था पर इसलिए था की वह इनमे से किसी का भी जवाब नहीं जानता था|
चूँकि ज्ञान को कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ, उसने अपनी दिशा बदल ली तथा दक्षिण की तरफ श्वेत जल की तरफ चला गया और स्ली निष्कर्षो के किनारे पर चला गया जहाँ उसने 'व्रपेद लुनाटिक'(विकृत पागल) को पाया| ज्ञान ने उससे बात की और उससे वही तीन प्रश्न किये|

'व्रपेद लूनाटिक' ने कहा :
"आह! मैं इनके जवाब जानता हूँ और इनकी तुम्हारे प्रति व्याख्या करूगा|"
पर अपने वाक्य के मध्य में ही वह भूल गया की वह क्या कहना चाहता था| चूँकि ज्ञान को यहाँ भी कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ उसने फिर से अपनी दिशा बदल ली और वह महाराजाओ के महल की तरफ चला गया, वहा उसकी मुलाकात हुंग-दी से हुई और उससे भी ज्ञान ने वही तीनो प्रश्न क्किये|

हुंग-दी ने कहा :
"बिना सोचे और बिना विचार किये तुम ताओ को समझना शुरू कर सकते हो| बिना रहने के किसी स्थान और बिना किसी विशिष्ट जीवन शैली के भी तुम ताओ में स्थापित हो सकते हो| बिना किसी के साथ जुड़े और बिना किसी विशिष्ट पथ का अनुगमन करे भी तुम ताओ के साथ जुड़ सकते हो|"

ज्ञान ने हुंग-दी से पूछा :
"तुम और मैं इन चीजों को समझ सकते है लेकिन जो दुसरे दो थे उन्हें यह समझ नहीं है| कौन सा सही है?"

हुंग-दी ने कहा :
"वास्तव में वह 'बिना शब्दों' है वाही सही है| विकृत पागल का भी इस पर कुछ नियंत्रण प्रतीत हो रहा है पर तुम और मैं तो इसके थोडा नजदीक भी नहीं ही| चूँकि जो जनता है वह बोलता नहीं है और जो बोलता है वह जानता नहीं है, एक साधू सिखाता है बिना शब्दों का प्रयोग किये| ताओ को उसके पीछे जाके नहीं पाया जा सकता है और सामर्थ्य को ताकत से हासिल नहीं किया जा सकता है| दयालुता विभिन्न कार्य का कारण बन सकती है, धार्मिकता का अभ्यास अन्यायपूर्वक भी हो सकता है और विभिन्न रीती रिवाज और अनुष्ठान पाखंड भी हो सकते है|

ईसीलिए यह कहा गया है:
"ताओ को खोओ तो सामर्थ्य को पकड़ लो; सामर्थ्य को खोओ तो दयालुता पर आधारित रहो; दयालुता को खोओ तो धार्मिकता पर आधारित रहो; धार्मिकता को खोओ तो रिवाजो और अनुष्ठानो पर जमे रहो|"कोई यदि ताओ को समझने के लिए अनुष्ठानो को बढ़ावा देता है तो वह केवल कोलाहल ही उत्पन्न करता है|"

इसीलिए यह कहा गया है:'उसके कर्म जो ताओ जैसा होता है दिन पर दिन कम होते जाते है| वे कम होते जाते है और कम होते जाते है वहा तक जहाँ कोई और कर्म करने का कोई तात्पर्य नहीं रह जाता है| बिना किसी उद्देश्य के कर्म करके, फिर भी बिना कर्म के ही होते है|"
"अब जो अब पहले ही अपने वजूद में आ चूका है और फिर से अपने मूल में जाना चाहता है तब तो यह करने के लिए बहुत ही मुश्किल चीज़ है! यह केवल उसके लिए आसन है जो एक महान व्यक्तित्व है! जन्म मृत्यु का अनुगमन करती है और मृत्यु

जन्म को उत्पन्न करती है| कौन वास्तव में इसे समझ सकता है जब वस्तुओ को इस कर्म में व्यवस्थित किया जाए? जब एक व्यक्ति का जन्म होता है यह एक जीवन शक्ति के आपस में इकट्ठा होने से होता है| जब वह एकसाथ इकट्ठा हो जाती है तब इस प्रकार एक मनुष्य का जन्म होता है, और जब वह फलतः फिर से बिखर जाती है तो फिर से एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है| क्योंकि जन्म और मृत्यु एक दुसरे क अनुगमन करते है तो फिर हमें किस की चिंता करने की ज़रुरत है? इसमें सभी जीवित वस्तुए एकजुट हो जाती है| जो एक परिस्थिति को मधुर बनाता है वह उसकी आत्मा और आचार्य होता है| जो एक स्थिति को फिर से मधुर बनाता है वह उसकी दुर्गन्ध और सडन होती है| जो दुर्गन्ध वाला और सदा हुआ है वह परिवर्तित होता रहता है उसमे जो की आत्मा है और अद्भूत है| जो आत्मिक है और अद्भुत है वह लगातार परिवर्तित होता रहता है जो दुर्गन्ध वाला है और जो सदा हुआ है|
"इसीलिए यह कहा गया है:'पूर्ण संघटन तो मात्र जीवन शक्ति का इस संसार के साथ एकीकरण होता है|'
"इसलिए एक साधू एकीकरण को महत्व देता है|'

ज्ञान ने हुंग दी को प्रतिक्रिया दी यह कहते हुए :
"जब मैंने ये बात बिना शब्दों को कहने के लिए कहा था तो उसने कोई जवाब नहीं दिया| ऐसा नहीं की उसने केवल मेरे प्रश्नों का जवाब नहीं दिया पर वह उनके जवाब जानता भी नहीं था| जब मैंने यह विकृत पागल से पूछा तो वह एक वाक्य के मध्य तक गया और चुप हो गया| यह नहीं है की उसने मुझे नहीं बताया जो वह बताना चाहता था पर वह उसे बीच में भूल गया जो वह जानता था| तब मैंने इसके बारे में तुमसे पूछा, आप उत्तर जानते थे| आपने ऐसा क्यों कहा की आप इसके थोडा नजदीक भी नहीं है?"

हुंग-दी ने कहा :
"कोई शब्द नहीं व्यक्त करने के लिए अपनी जगह बिलकुल सही था क्योंकि वह वास्तव में नहीं जानता था| विकृत पागल इसे जानता हुआ प्रतीत हो रहा था पर इसके बारे में भूल गया| तुम और मै इसके थोडा नजदीक भी नहीं है इसलिए की हम सोचते है की हमे इसकी समझ है|"

विकृत पागल ने इस वार्तालाप के बारे में सुना और अनुमान लगाया की हुंग-दी के पास निश्चित ही शब्दों के लिए एक मार्ग है|

स्वर्ग और पृथ्वी के पास बहुत ही सुन्दरता है, पर कोई शब्द नहीं है| चारो ऋतुओ का बहुत ही स्पष्ट कर्म है पर कोई तर्क नहीं है| सभ जीवित वस्तुओ का एक मूल सिद्धांत है पर इसकी कोई व्यख्या नहीं है| एक बुद्धिमान व्यक्ति स्वर्ग और धरती की सुन्दरता के साथ शुरुआत करता है और सभी जीवित वस्तुओ के सिद्धांत पर पहुचता है| एक सिद्ध पुरुष कोई हस्तक्षेप नहीं करता है और एक साधू आरंभ नहीं करता है इसे ही कहते स्वर्ग और धरती की दृष्टि से पर्यवेक्षण करना| अब वे अपनी आत्मिक शुद्धता से सिद्धता को प्राप्त हुए होते है और सैकड़ो बदलावों से गुजर चुके होते है| वस्तुए लगातार जन्म और मृत्यु के चक्र में घुमती रहती है और कोई नहीं जानता की उनका मूल कहाँ है| यह सभी वस्तुओ के लिए निर्धारित है जो समय के आरम्भ में अस्तित्व में आई थी| छह दिशाओ को एक मापने वाली छड़ी से श्रेणीबद्ध किया जा सकता है पर फिर भी कोई अपने दृष्टिकोण को त्यागने योग्य नहीं होगा| एक गेहूं के पौधे के तने पर नया उत्पन्न हुआ रेशा भी प्रतीक्षा करता है किसी की जो उसको पकाएगा| इस सम्पूर्ण संसार मैं ऐसा कुछ भी नहीं है जो अपने पुरे जीवनकाल में बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के समय के साथ प्रवर्तित नहीं होता है| प्रकाश और अँधेरे में चारो ऋतुए लगातार चलती रहती है प्रत्येक की अपनी बारी आती है| ह्रदय में कुछ समय इतना गहन अँधेरा छा जाता है की यह समाप्त हुआ सा प्रतीत होता है पर पर तब भी इसका अस्तित्व तो होता है| वस्तुए मलिन और धुंधला गयी हुई हो सकती है पर उनकी आत्मा तो अब भी उनके अंदर होती है| सभी जीवित वस्तुए लगातार अपना जीवनाधार ग्रहण करती है यद्यपि फिर भी उन्हें इसका आभास नहीं होता है| इसे ही तो मूल का आधार कहा जाता है - स्वर्ग के दृष्टिकोण से पर्यवेक्षण करने में समर्थ होना!

नी-कुए ने बी-यी से ताओ के बारे में पूछा|
बी-यी ने कहा :
"अगर तुम अपने शरीर को साधो और अपनी दृष्टि को एकरूप करो, तब स्वर्ग का माधुर्य तुम्हारे साथ होगा| यदि तुम अपने ज्ञान को आत्मसात् करो और अपनी सीमओं को एक करो तो आत्मा तुम्हारे अस्तित्व में आएगी| सामर्थ्य तुम्हारे प्रति सोंदर्यपूर्ण हो जाएगा, और ताओ तुम्हारे निवास का स्थान बनेगी| तुम एक बच्चे की तरह वस्तुओ को देखोगे जैसे की एक नवजात बछड़ा होता है, और तुम्हे यह पूछने की जरूरत नहीं होगी की क्यों कोई वस्तु ऐसे है जैसे की वो है|"

इससे पहले की वो बोलना समाप्त करता, नी-कुए बहुत शीघ्रता से सो गया|
बी-यी ने प्रसन्नता की एक बड़ी आह भरी और यह गाते हुए चला गया :
"बिना किसी रूप के जैसे की एक सुखा हुआ कंकाल होता है,
"एक ह्रदय जो बुझ गए अंगारों जैसा है,
"अपने विशुद्ध ज्ञान में बिल्कुल स्पष्ट,
"न कोई कारण आत्म संयम प्रदर्शित करने के लिए,
"संध्या को टहलता हुआ बिना किसी मन के,
"और न ही किसी वार्तालाप में लिप्त होता|
"यह किस प्रकार का मनुष्य है?"

शुन ने अपने सहायक से पूछा :
"क्या ताओ को प्राप्त किया जा सकता है और अधिकार रखा जा सकता है?"

"आपका अधिकार अपने शरीर पर ही नहीं होता है, फिर कैसे ताओ पर अधिकार जमाया जा सकता है!"

शुन ने कहा :
"यदि मेरा अधिकार मेरे शरीर पर ही नहीं है तो फिर इस पर किसका अधिक्कर है?"

"आपका रूप आपको स्वर्ग और धरती द्वारा प्राप्त हुआ है| आपका आपके जीवन पर भी कोई आधिपत्य नहीं है क्योंकि यह भी आपको स्वर्ग और धरती के मधुर संयोजन से प्राप्त हुआ है| आप अपने व्यक्तित्व और भाग्य को भी अभिभूत नहीं करते हो क्योंकि ये भी आपको स्वर्ग और धरती की व्यवस्था के कारण प्राप्त हुए है| आपका अधिकार आपकी संतानों और आपके पुत्र की संतानों पर भी नहीं है क्योंकि वे आपके शरीर के विस्तार स्वरूप आपको स्वर्ग और धरती द्वारा प्राप्त हुए है| इसलिए हम बिना ज्ञान के आगे बढ़ते है बिना यह जाने की हम कहा जा रहे है, एक स्थान पर रहते है बिना यह जाने की हमे कौन वहा पर रखे हुए है इसलिए ऐसा क्या है जिसे प्राप्त किया जा सकता है और जिस पर आधिपत्य स्थापित किया जा सकता है?"

कोंग-ज़ि ने लाओ-दान से पूछा :
"जबकि हम यहाँ बैठे हुए है और इस सुहावनी दोपहर का लुत्फ़ उठा रहे है मैं आपसे ताओ से जुड़ने के संदर्भ में पूछना चाहुगा|"

लाओ-दान ने कहा :
"अपने दृष्टिकोण को सम रखो, जिसने तुम्हारे मन को जकड़ा हुआ है उसे तोड़ दो, शुद्ध श्वेत हिम में दुबकी लगाकर स्वयं को शुद्ध कर लो, अपने ज्ञान को स्वयं पर हावी मत होने दो| ताओ की व्याख्या शब्दों में करना बहुत ही मुश्किल है और योग्य नहीं है! पर क्योंकि तुमने पूछा है, मैं तुम्हे इसके कुछ मूल तत्व को समझाना चाहुगा :
"जो तेज प्रकाशमय था उसकी उत्पत्ति गहन अँधेरे में से हुई;
"जो प्रजातिया आज अस्तित्व में है उनका जन्म हुआ उसमे से जिसका कोई रूप नहीं था;
"शुद्ध स्वरूप आत्मा की उत्पत्ति ताओ में से हुई;
"सभी रूपों के स्त्रोत की उत्पत्ति मूल तत्व से हुई:
"और सभी जीवित वस्तुओ ने अपने कायरूप का उपयोग औरो को जन्म देने के लिए किया|
"परिणाम स्वरूप, वे जो नौ अंगो वाले थे उनका जन्म गर्भ से हुआ, और जो आठ अंगो वाले थे उनकी उत्पत्ति अंडो से हुई| वे बिना किसी निर्देश के उत्पन्न हुए की उन्हें क्या करना है, और आगे अग्रसर हुए बिना किन्ही सीमओं को जाने; बिना दरवाजो के जिनमे से उनको गुजरना पड़े, बिना कमरों के जिनमे उन्हें बांध रहना पड़े, वे तो केवल सभी दिशाओ में अग्रसर हो रहे थे| सभी वस्तुओ को एक मुक्त दृष्टिकोण से देख रहे थे, उनके चारो हाथ पैर बहुत ही मजबूत थे, उनकी इन्द्रिय सटीक और सचेत थी और उनकी आंखे और कान नवीन और प्रकाशमय थी| वे अपने मन का उपयोग उद्धिष्ट उद्देश्यों के लिए करते थे बिना उसके बारे में चिंतित हुए| वे सभी वस्तुओ को निष्कपटता से प्रतिक्रिया देते थे|
"स्वर्ग ऊँचाई को छोड़कर नहीं हो सकता है| पृथ्वी व्यापकता को छोड़कर नहीं हो सकती है| सूर्य और चन्द्र अपने पथ को त्यागकर नहीं हो सकते है| सभी जीवित वस्तुए समृद्धि को त्यागकर नहीं हो सकती है| इस प्रकार सभी वस्तुए ताओ के साथ जुडी हुई है| और यह भी है की इस जानकारी का होना किसी को ज्ञानी नहीं बना देता है और इसके विरोध में तर्क करने से कोई बुद्धिमान नहीं हो जाता है इसलिए एक साधू बस इसको ऐसे ही छोड़ देता है! वह जो लाभान्वित है - वह और लाभ प्राप्त नहीं

कारण चाहता है और वह जो हानिप्रद है - वह और हानि नहीं प्राप्त करना चाहता है - यही है जिसे एक साधू अपने ह्रदय से लगाकर रखता है|
"जैसे की एक समुद्र में लहरे निचे बहुत गहरे तक मंथन करती है और जब उठती है तो एक शिखर के ऊपर तक उठ जाती है जहाँ उनका अंत प्रतीत होता है और फलतः निचे गिर जाती है और तब वे फिर से शुरू हो जाती है| वे सभी जीवित वस्तुओ के भार को उठा सकती है और पीछे कुछ नहीं छोडती है|
“वहां होती है एक सज्जन मनुष्य की ताओ जो व्यापक होती है और स्वीकार्य होती है सभी जीवित वस्तुओ को उसको आधार प्रदान करने के लिए और उसे अपूर्ण नहीं होने देने के लिए| यही उनकी ताओ होती है!

ज्यादातर लोग एक मध्य स्थान में होते है, प्रतिरोध करते हुए अँधेरे का और और प्रतिरोध करते हुए प्रकाश का, वे होते है कही बीच में स्वर्ग और धरती के, एक मनुष्य होने के लिए सही होते हुए और अपने पूर्वजो के पास जाने के लिए इंतज़ार करते हुए| अगर हम मूल दृष्टि से देखे तो जो उत्पन्न हुआ वे वस्तुए है, वे कार्यान्वित होती है जब तक के वे रुक्ष न हो जाये और अंत में समाप्त न हो जाये| चाहे उनका जीवन लम्बा हो या छोटा हो लेकिन कितना समय उन्हें अलग करता है? वस्तुओ का प्रबंध, यह एक क्षण से अधिक नहीं होता है, फिर हम यह कैसे निर्धारित कर सकते है की ‘यो’ ओर ‘जिए’ में से कौन सही या गलत था?
"फल और पौधे उत्पन्न होते है और एक निर्धारित व्यवस्था का पालन करते है| मनुष्यों अपने संबंधो में एक मुश्किल समय को भी पाते है पर एक दूसरे के साथ सही होने का कोई न कोई मार्ग निकाल लेते है| जब एक साधू का सामना किसी चीज़ से होता है वह उसे टालने की कौशिश नहीं करता है, और जब कोइ चिज़ उसके पास से गुजरती है (जिसका सामान उससे नहीं होता है) तो वह उसे पकड़ने की कौशिश नहीं करता है| अनुकूल होना और प्रतिक्रिया देना यही तो सामर्थ्य है| और निरंतर प्रतिक्रिया देते रहना यहीं तो ताओ है| यही तो है जिसे सम्राटो ने प्रसन्नतापूर्वक अपनाया था और जिस पर राजाओ ने अमल करना शुरू किया था|

"एक व्यक्ति का जीवन तो होता है ऐसे जैसे की एक दीवार के छेद में दूसरी तरफ एक घोड़े के बच्चे को देखना - वह दीखता है और अचानक ही वहा से चला गया होता है| बड़े जोर के साथ आगे बढ़ते हुए ऐसे कोई चीज़ नहीं है जो इस तरह नहीं होती हो| धीमा और रिक्त ऐसे कोई चीज़ नहीं है जो इस तरह वापस धरती पर न जाती हो| जो जन्मके समय विभिन्न परिवर्तनों में से गुजरती है वह मृत्यु के समय भी विभीन्न परिवर्तनों में से गुजरती है| सभी वस्तुए कुछ क्षति होने पर शोक करती है और मनुष्य ऐसा होने पर अपने हृदयों में उदासीनता का अनुभव करते है| उन्हें स्वर्ग के कोश में से मुक्त कर दिया गया है और वहा से उन्हें निचे छोड़ दिया गया है| इस सूत्र को खोलकर और अनुवर्ती बनकर, ‘हूँ’ और ‘पो’ का उत्थान होता है और यह शरीर पीछे छुट जाता है| तभी कोई अनंतता को प्राप्त हो सकता है|(यह माना जाता है की शरीर में दो प्रकार की आत्मा होती है: पो और हूँ| जो पो होती है वह पशु प्रवृति की होती ही और जो हूँ होती है वह अध्यात्मिक प्रवृति की होती है| मृत्यु के समय माना जाता है पो धरती पर वापस चली जाती है और हूँ स्वर्ग में चली जाती है|)

"जिसकी शुरुआत बिना किसी आकर के हुई थी उसने आकर धारण कर लिया और जो आकरवान था फलतः वह फिर निराकार बन गया| यह तो कुछ है जिसे हर कोई समझ सकता है और इसके लिए ज्यादा कुछ मेहनत करने की भी जरूरत नहीं है| और फिर भी यह है जिसके बारे में लोग हमेशा चर्चा करते रहते है तब उनको इसका मर्म समझ नहीं आया होता है|
"सूक्ष्म दृष्टि का होना किसी को स्पष्ट नहीं बना देता है और इसके बारे में विवाद करने से कोई इसके मर्म तक नहीं पहुच सकता है| ताओ के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता है तो यह अच्छा ही होगा की आप अपने कानो को बंद कर ले जब कुछ कहा जा रहा हो| इसे एक बड़ी उपलब्धि कहा जाएगा|

दोंग-गुओ-ज़ि ने ज्हुंज्ही से पूछा:
"वह चीज़ कहा है जिसे हम ताओ कहते है?"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा:
"ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ वह नहीं है|"

दोंग-गुओ-ज़ि ने कहा:
"मैं उम्मीद करता हूँ की आप मुझे इससे ज्यादा बता सकते है|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा:

"यह कीड़ी और किटो में भी होती है|"

"यह इतनी छोटी चीजों में भी कैसे हो सकती है?"

"यह साधारण जंगली घास में भी होती है?"
"क्या यह इससे भी निचे हो सकती है|"

यह पत्थरो और चट्टानों में भी होती है|"
क्या यह इससे भी निचे मौजूद हो सकती है?"

यह मूत्र और मल में भी होती है|"

जब दोंग-गुओ-ज़ि ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी तब ज्हुंग्ज़ी ने कहा:
"तुम्हारे प्रश्न का संबंध वास्तव में इस मामले के मूल से नहीं था| जब थानेदार 'हो' ने बाज़ार के संचालक से पूछा की वह मोटे हुए सुअरों को पैर से क्यों दबाता है तो उसने उसको बताया की जितना अधिक वह उनको दबाता है उतना ही वह उस सूअर के बारे में जानकारी पाता है| अगर तुम ऐसे ही भटकते रहोगे की वह कहा पर हो सकती है तो तुम कभी उन चीजों से नहीं हट पाओगे जहाँ वह नहीं होगी| संपूर्ण ताओ हमेशा सही प्रतीत होती है और ऐसे ही व्यापक शब्द भी| 'पूरी तरह से', 'हर जगह' और 'सभ कुछ' ये तीन अलग अलग शब्द है जो एक ही वास्तविकता को बताते है| वे सभ वस्तुओ की एकरूपता का व्याखान करते है|
"चलो प्रवाहित होते है शुन्यता के गर्भ में, जहाँ हमारा संवाद आपस में स्थापित हो सके जैसे की बिना किसी शक्ति के दो कबूतर अपनी पूंछो को जोड़ते है| चलो कुछ नहीं करते है! अपने शब्दों को छलकते हुए निर्मल जल की तरह बिखेरे! अभिन्न हो शुद्ध तत्व के जैसे! लय में रहे आराम से! हमारी आकंशाए पहले ही रिक्त हो जाये और जैसे ही हम चले और हमे नहीं पता हो की इसका अंत कहाँ होगा| हम कभी आगे चले और कभी पीछे जैसे की खुले मैदान में घोड़े दौड़ते है और जैसे ही उस महान बोध का प्रवेश हमारे भितर हो हमें किसी भी प्रकार के क्षय न हो| वस्तुए एक दुसरे से संबंध में बिना किन्ही सीमओं के जुडी हुई है लेकिन वस्तुओ की अपनी कुछ निश्चित सीमाए होती है; इसलिए यह कहा जाता है की वस्तुए उन सीमओं से सीमित है| ऐसी कोई सीमा नहीं है जो प्रतिबंधित नहीं करती है और सीमाए प्रतिबंधित नहीं होती है| यह शब्द होते है 'रिक्तता और पूर्णता' जैसे, तथा 'समर्पण और अतिकर्मन' जैसे| जो रिक्त और पूर्ण बना होता है वह न ही तो रिक्त होता है और न ही पूर्ण होता है| जो समर्पण होता है और अतिकर्मन होता है वह न ही तो समर्पण होता है और न ही अतिकर्मन होता है| जो अन्तर्मुखी और बाहय मुखी होता है वह न तो अन्तर्मुखी होता है और न ही बहिर्मुखी होता है| जो संघटित या बिखरा हुआ होता है वह न तो संघटित होता है और न ही बिखरा हुआ होता है|"

अ-हे-गन और शेन-गोंग दोनों लाओ-लॉन्ग-जी के पास अध्ययन करते थे| वहां का दरवजा बंद करके, शेण-गोंग मेज पर अपने हाथ रखकर तथा उस पर अपना सर रखकर उस मेज को थपकियो से बजा रहा था|
दोपहर को अ-हें-गन ने दरवाजा खोला और अन्दर आकर कहा:
"लाओ-लॉन्ग की मृत्यु हो गयी है!"
शेन-नोंग जो की उस मेज पर झुका हुआ था, उसने अपनी छड़ी पकड़ी और अचानक से कही खो हो गया फिर उसने अपनी छड़ी को निचे ज़मीन पर फ़ेंक दिया और हँसते हुए कहने लगा:
"स्वर्ग जानता था कितना नीच, अज्ञानी, अशिष्ट और अभिमानी हूँ मैं, इसलिए उन्होंने मुझे छोड़ दिया और चल बसे| अब सभ ख़त्म हो गया है! मेरे आचार्य ने मेरे लिए अपने रहस्यमयी शब्दों को समझने के लिए कोई मार्ग भी नहीं छोड़ा और अब वे मर चुके है|

इसको सुनकर यां-गंग-दिओं ने कहा :
"वह जो ताओ के मर्म को जानता है इस सम्पूर्ण संसार से सज्जन लोग उससे स्वयं को जोड़ना चाहते है| वे भी जो बहुत कम जानते है जो ताओ के संन्दर्भ में बहुत कम होता है, वे भी उसके शब्दों को उनसे सुनना चाहते है जब वे मरते है| कितना अधिक और कोई ऐसा करेगा जो ताओ के मर्म को समझता होगा!
"इसको देखो, पर इसका कोई रूप नहीं है;
इसको सुनो, पर इसकी कोई ध्वनी नहीं है|

"यह वो है जो लोग उसके बारे में कहते है, इसे गूढ़ और रहस्यमयी बताते है| ये वो शब्द है जिनके द्वारा वे बताते है की क्या ताओ है और क्या ताओ नहीं है|"

इस बात पर तै-कींग ने वू-किओंग से पूछा:
"क्या तुम ताओ के बारे में समझते हो?"

वू-किओंग ने कहा:
“नहीं, मैं नहीं समझता|"

उसने वही प्रश्न वू-वेई से पूछा और वू-वेई ने कहा:
"मैं ताओ को समझता हूँ|"

क्योंकि तुम ताओ को समझते हो तो क्या तुम इस पर प्रकाश डाल साकते हो?"
"हाँ, मैं कर सकता हूँ|"

"तब तुम इसके बारे में मुझे क्या बता सकते हो?"

वू-वेई नव कहा :
"जो मैं ताओ के संदर्भ में समझता हूँ वह है की इसे उतना ही ऊँचाई पर देखा जा सकता है जितना की इसे निचे देखा जा सकता है| इसे वैसे ही पाया जा सकता है जैसे की यह होती है| यही मैं तुम्हे विस्तार पूर्वक तुम्हे ताओ के बारे में बता सकता हूँ|"

तै-किंग ने वही शब्द दोबारा वू-सही के सामने किये और पूछा :
"जैसा की वू-कोंग ने कहा था की समझने को कुछ नहीं है और वू-वेई ने कहा की कुछ है, उनमे से कौन सा सही है और कौन सा गलत है?

वू-सही ने कहा:
"इसे न जानना बहुत ही गहन होता है| इसे जानना बहुत ही पृष्ठीय होता है अगंभीर होता है| यह जानना की समझने के लिए कुछ नहीं है वही इसके तत्व तक पंहुचा हुआ होता है| और यह सोचना की इसमें समझने के लिए कुछ है वह सतह पर ही रह जाता है|"

इस बात पर तै-किंग ने अपना मुख आकाश की तरफ किया और एक बड़ी आह भरी, तब उसने कहा:
"यह जानना की यहाँ समझने के लिए कुछ नहीं है यह जानना है लेकिन यह जानना की यहाँ समझने के लिए कुछ है यह जानना नहीं है! किसे इसका अनुभव हो सकता है की वे नहीं समझते है जिसे वे सोचते है की वे जानते है?"

वू-सही ने कहा :
"ताओ के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता क्योंकि जिसके बारे में कुछ कहा जा सकता है वह परस्पर विरोधात्मक होता है| ताओ का पर्यवेक्षण नहीं किया जा सकता क्योंकि जिसका पर्यवेक्षण होता है उसका परस्पर विरोधात्मक भी होता है| अगर तुम इसके आकर को पहचान लेते हो तो वह आकर इसका आकर नहीं है| ताओ को उस किसी चीज़ की तरह नहीं विचारा जा सकता है जिसे नाम दिया जा सके|"

वू-सही ने कहा:
"वह जो ताओ के संदर्भ में किये गए प्रश्नों पर प्रतिक्रिया देता है वह ताओ को नही समझता है| यद्यपि किसी के पास ताओ के संदर्भ में प्रश्न हो सकते है पर उनका हल इस तरह से नहीं निकला जाता है| ताओ पर सवाल नहीं उठाया जा सकता है और ऐसे सवालों का कोई उत्तर भी नहीं होता है| सवाल जिन पर सवाल उठाया जा सकता है और इस तरह सवाल पूछने का कोई अंत ही नहीं होगा| उत्तर दो जिसका कोई उत्तर न हो और वह उत्तर कभी भी उसके मर्म तक नहीं पहुच पायेगा| अगर कोई उसके मर्म को नही समझता है और फिर भी सवाल करन जारी रखता है तो वे अपने चारो और इस ब्रह्माण्ड की सबसे भव्य वस्तुओ को छोड़

हुए होते है और उस महान उत्पत्ति के विषय में कुछ नहीं जानते है| इसके आलावा वे कुन-लून पर्वतो में घुमने के तथा महान शून्य में प्रवाहित होने के योग्य भी नहीं होगे|”

गुंग-यो ने वू-यू से पूछा :
"आचार्य क्या आप है? या फिर आप नहीं है?"
गुंग-यो कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ, और उसे आश्चर्य हुआ की कौन उसे देख रहा है इस आकृति और रूप के तले से जो की उसके सामने है उन धसी हुई आँखों और एक रीक्त भाव के साथ| पुरे दिन उसने उनको ध्यान से देखा पर उसे कुछ नहीं देखा, उसने किसी ध्वनी के लिए सुना पर उसे कुछ नहीं सुना और उसने उन्हें धकेला पर कोई प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं हुई|

गुंग-यो ने कहा :
"उत्तम! उसके साथ होना जो इस तरह की सिद्धता को प्राप्त हो चूका है! मैं मेरे इस अस्तित्व से अपने इस समय अस्तित्व में नहीं होने के मत को मान सकता हूँ, पर मै नहीं अनुभव कर सकता अस्तित्वहीन को अस्तित्वहीन के क्षेत्र से| और जब यह आता है अस्तित्वहीन अस्तित्व होना तब कौन ऐसी सिद्धता में परिपूर्ण हो सकता है!"

वह लौहार जो अपने सेनाध्यक्ष के लिए तलवार तैयार करता था वह अस्सी वर्ष बुज़ुर्ग था पर फिर भी अपने काम में कोई गलती नहीं करता था|
उस सेनाध्यक्ष ने उससे पूछा:
"तुम्हारे पास कितना महान कौशल है! तुम यह कैसे करते हो?"

"मैं तो बस उसे ही करता हूँ जिसे मैं अच्छा समझता हूँ| जब मैं बीस साल का था तो तभी मैं इस तरह तलवार बनाने में आनंदित होता था और किसी चीज़ पर मैं ध्यान नहीं देता था उन तलवारों के आलावा मेरा ध्यान किसी वस्तु पर नहीं रहता था|"
इस तरह उन वस्तुए से ध्यान हटाने से जो की हमारे लिए उपयोगी नहीं होती है मै उसे करने में सफल होता था - इतना उत्कृष्ट कार्य जो की मै लम्बे समय से कर रहा हूँ| फिर कितना अधिक वे लोग कर सकते है जिनके लिए कुछ भी उपयोगी नहीं होता है, क्या कोई ऐसे वस्तु भी होगी जो उनके क्षेत्र से परे हो सकती है?

रन-कुई ने ज्होंग-नि से पूछा :
"क्या हम जानते है किसी भी चीज़ के बारे में जो की पहले थी स्वर्ग और धरती के होने के भी?"

ज्होंग-नि ने कहा :
"निसंदेह| वे अब भी वैसे ही है जैसे की वो पहले थे|"

रन-कुई असमर्थ हो गया था की इससे आगे वो क्या पूछे इसलिए वह चला गया|
अगले दिन आकर उसने पूछा :
"कल मैंने आपसे पुछा था की क्या कोई ऐसे चीज़ भी है जो पृथ्वी और स्वर्ग से पहले भी थी| आपने कहा था:’निसंदेह| वे अब भी वैसे ही है जैसे की वो पहले थे|’ कल इसका अर्थ मुझे थोडा समझ आया था पर अब मैं दुविधा में पहुच गया हूँ| क्या मैं पूछ सकता हूँ उसका अर्थ जो कल आपने मुझसे कहा था?"

ज्होंग ने कहा :
"कल तुम्हे ये थोडा समझ आया था क्योंकि तुम्हारी आत्मा उस समय इसे स्वीकार कर रही थी| और अब तुम दुविधा में हो क्योंकि अब तुम अपनी बुद्धि के द्वारा इसे समझ में करने की कौशिश कर रहे हो| कोई भूतकाल नहीं है| कोई वर्तमानं नहीं है| कोई उत्पत्ति नहीं है| कोई अंत नहीं है| क्या कोई भविष्य पीढ़ी हो सकती है यदि कोई पुराणी पीढ़ी ही नहीं है?"

इससे पहले के रन-कुई किसी निष्कर्ष पर पहुचता ज्होंग नि ने कहा :
"कोई बात नहीं! कोई उत्तर देने की जरूरत नहीं है इन छोटे मोटे सवालों के| जीवन का उपयोग मत करो उसमे जीवन भरने के लिए जो की मर गया है और मृत्यु का उपयोग मत करो उसे मारने में जो की जीवित है| क्या हम केवल प्रतीक्षा कर रहे है मृत्यु और जन्म के होने की? यह सभ बहुत ही प्राकृतिक रूप से जुड़ा हुआ है| क्या स्वर्ग और पृथ्वी है जो वस्तुओ को जीवन प्रदान

करते है? वस्तुए वस्तुओ को उत्पन्न करती है न की उन्हें जो वस्तुए नहीं होती है| जब पहली वस्तु अस्तित्व में आई थी तो किसी और वस्तु को उसका पूर्ववर्ती भी होन ही चाहिए पर यह कुछ भी हो लेकिन वस्तुए फिर भी यहाँ है| जो भी वस्तुए है वे हमेशा वस्तुए ही है| इसी प्रकार एक साधू का स्नेह औरो के लिए निरंतर इसी मत से होता है|"

यां-युआन ने ज्होंग नि से पुछा:
"मैं आपसे विस्तार से पूछना चाहुगा जो आप कहते है:'प्रदान करने के लिए कुछ नहीं है और प्राप्त करने के लिए कुछ नहीं है|' क्या आप मुझे बता सकते है की इस प्रकार से आप क्या कहना चाहते है?"

ज्होंग नि ने कहा :
"पुराने समय में लोग स्वयं को बाह्य रूप से अनुकूल कर लेते थे लेकिन आंतरिक तौर पर स्वयं को नहीं बदलते थे| पर आजकल लोग स्वयं को आंतरिक रूप से तो बदलाव कर रहे है पर बाह्यरूप से स्वयं को अनुकूल नहीं बना रहे है| वह जो वस्तुओ के प्रति अनुकूल होता है वह एक आंतरिक एकरूपता को बनाये रखता है जो बदलती नहीं है| कैसे अनुकूलनीय हुआ जाए बिना कोई बदलाव किये? औरो के साथ कैसे जुड़ा जाये और कैसे सभ के साथ प्रवाहित हुआ जाए? इससे सहमत होकर की जो है उसी में संतुष्ट हुआ जाए|”

वेई के राजा ‘सही’ के पास बहुत बड़ा बगीचा था जबकि हुंग-दी के पास एक छोटा बगीचा था| राजा यु के पास अपना महल था जबकी राजा चेंग-तंग और राजा वू-डिंग के पास केवल छोटे कमरे थे| जो लोग उपरी तौर पर महत्वपूर्ण और विशिष्ट दिखना चाहते थे जैसे की कांफुसियन और मोहिस्त के प्रचारक थे उन्होंने इन सिद्धांतो में भेद उत्पन्न कर दिया की क्या सही है और क्या गलत है इसलिए लोगो ने इनके ऊपर बड़े वाद विवाद करने शुरू कर दिए| ये विवाद आजकल और बुरी स्थिति में पहुच गए है! एक साधू और वस्तुओ के साथ स्थापित होता और उन्हें क्षति नहीं पहुचता है| क्योंकि वह और वस्तुओ को क्षति नहीं पहुचता है इसलिए और वस्तुए भी उसे क्षति पहुचने में सक्षम नहीं होती है| वही जिसका दुसरो को क्षति पहुचने का कोई भाव नहीं होता है वही उनके साथ जुड़ पाता है और उनसे कुछ प्राप्त कर सकता है|
एक पर्वत और एक वन आपस में जुड़े होते है| एक तट और वहां पर होनेवाली मिटटी आपस में जुड़े होते है| यही तो है जो हमे खुश और आनंदित करता है! पर जैसे ही खुशी समाप्त होनी शुरू होती है दुःख का आना आरंभ होता है| जब सुख और दुःख आते है तो हम उन्हें चुन नहीं सकते है| और जब वे जाते है तो उन्हें रोक नहीं सकते है| यह बहुत ही उदासीन है की लोग आजकल एक ही वस्तु के साथ सही होना चाहते है वे इसमें कोई बदलाव नहीं चाहते है| वे जानते है की कैसे प्रतिक्रिया दी जाए जा उन्हें किसी विशिष्ट तरीके से बर्ताव किया जाए लेकिन नहीं जानते की क्या प्रतिक्रिया दी जाए जब उस विशिष्ट तरके से उनसे व्यवहार नहीं किया जाए - करना जो वे कर सकते है और वह करने में योग्य नहीं होना जो वे नहीं कर सकते है| क्योंकि वे बिना किसी समझ व् बिना किसी योग्यता के होते है वे उस पर विश्वास करने में फँस जाते है जो दुसरे लोग उन्हें बताते है उसके भार से दब जाते जो दुसरे उन्हें बताते है - इससे वे बचते नहीं है, फिर कैसे यह उनको उदासीन भी नहीं करता होगा! शब्द आते है और शब्द जाते है| कर्म आते है और जाते है| यदि पहले से ही मान लिए गए ज्ञान को अपनी समझ का आधार बना लिया जाए तो निश्चित ही अज्ञान ही अभिभावी होता है!

23.Geng Sang Chu

There was a man who worked for Lao Dan (Laozi) named Geng Sang Chu (Pruner of the Mulberry Grove) who was interested in achieving Lao Dan's Dao. He went off to the north to live in a mountainous area called Wei Lei. He dismissed those manservants who were able to express their knowledge, and sent away those maids who were supportively benevolent. He embraced and brought into his home those who were sluggish, and employed those who were restrictive and haughty. After three years there was an extremely fruitful harvest in Wei Lei.
The people in Wei Lei said to each other:
"When Geng Sang Zi first arrived, we thought he acted very strange. Now we can see that when we sized him up by his daily behavior he seemed totally inadequate for anything, but evaluating him by what's happened over the years, he's provided us with more than enough. Maybe he's truly a sage! Why don't we all make him the invoker of blessings from the dead and honor him as our god of the harvests?"
(Note: The ancient Chinese believed by making sacrifices to their dead ancestors they would be able to ensure bountiful crops.)
When Geng Sang Zi got wind of this, he turned to the south and looked very uncomfortable. His disciples thought this was an odd way to be acting.
Geng Sang Zi said:
"Why do you think it's so odd for me to feel this way? In spring the air gushes forth and the herbs begin to sprout, then by autumn a multitude of treasures can be found. As spring progresses into autumn, how could all of this not happen? Dao already set up this progression. I've heard that a perfected person resides comfortably like a corpse within the environment of his own room, whereas the common people rush about in a flurry without having a clue where they're going. Now, the citizens of Wei Lei are secretly plotting because they want to hold me up as some sacrificial cup to their gods, as though I was truly worthy of being their go-between. Am I to be such a guiding light for them? Then I'd be going against Lao Dan's words."
His disciples said:
"That's not so. In an ordinary irrigation ditch a few feet across a huge fish wouldn't be able to turn its body around, but a salamander could maneuver itself that way. In the terrain of a hill only a few feet high a large animal couldn't hide its bulk, but a sly fox finds it quite suitable. Furthermore, to respect the virtuous and reward the capable is to promote what's good and beneficial. This has been done since the times of Yao and Shun, and it's even more appropriate for the people of Wei Lei to do so! You also must go along with it!"
Geng Sang Zi said:
"Listen closely, my little ones. If an animal so large that it could hold a chariot in its mouth left the borders of the mountains, it couldn't avoid the disaster of being caught up in hunting nets. If a fish so large that it could swallow a boat washed up on the shore, it would suffer the stings of ants. Therefore, birds and animals have no objection to being up in the heights, and fish and turtles don't object to being down in the depths. Those who wish to keep their bodies in tact during their lives hide themselves away, and have no objection to being unrecognized and insignificant. Furthermore, as for the two men you mentioned, what was so great about them that you praise and commend them? The basis of their debates was comparable to chiseling out holes in a wall then filling them in with a thick hedge, sorting through which hairs needed to be combed, and counting out how many grains of rice to cook. How could they have been so superficial as to believe that would be enough to benefit society! If those who are virtuous are promoted, then people will stomp each other down in an effort to get there. If those who are intelligent are given appointments, then people will steal knowledge from each other. One who makes these types of assessments would never be able to sort through humanity. People get so involved in trying to gain personal benefits that a son would kill his father and a servant would kill his master. They would think it's perfectly fine to steal in broad daylight and tunnel through the walls of a house in the afternoon. I'm telling you that this great state of chaos had to have started with Yao and Shun, and the branches growing from it will extend for thousands of generations. After a thousand generations there will still be people who view each other as food."

Nan Rong Chu (Honorably Escaped from the South) sat up abruptly where he was sitting and said:

"For someone like me who's gotten on in years, what undertaking can I depend on to get to the state you're talking about?"
Geng Sang Zi said:
"Keep your body whole and embrace your life, without worrying about what you'll eventually achieve. If you do this for three years, then you'll be able to approach the state I'm talking about."
Nan Rong Chu said:
"The eyes are part of the body - I have never thought them anything else - yet the blind man cannot see with his. The ears are part of the body - I have never thought them anything else - yet the deaf man cannot hear with his. The mind is part of the body - I have never thought it anything else - yet the madman cannot comprehend with his. The body too must be part of the body - surely they are intimately connected.3 Yet - is it because something intervenes? - I try to seek my body, but I cannot find it. Now you tell me, `Keep the body whole, cling fast to life! Do not fall prey to the fidget and fuss of thoughts and scheming.' As hard as I try to understand your explanation of the Way, I'm afraid your words penetrate no farther than my ears."

Geng Sang Zi said:
"I've done my best to explain these ideas to you. It's been said that honeybees can't bring to maturity the larva of silkworms. Small chickens from the state of Viet can't roost and hatch swan eggs, but larger chickens from the state of Lu can. Chickens are chickens, but their natural virtues are not the same. Each of them has certain abilities but don't have other abilities, and their talents rest simply on whether they're large or small. Now my talents are small, too small to be able to help you with the change you're seeking. Why don't you travel south and go see Laozi?"
Nan Rong Chu packed up his bags with provisions and in seven days and seven nights arrived at Laozi's home.
Laozi said:
"Have you come from Geng Sang Chu's place?"
Nan Rong Chu said:
"Yes!"
Laozi said:
"Why did you bring so many people with you?"
Nan Rong Chu got a shocked expression on his face and turned around to look behind him.
Laozi said:
"You don't know what I mean, do you?"
Nan Rong Chu bowed respectfully, then turned his face ashamedly upward and sighed, saying:
"At this point since I don't know how to answer your question, I've also lost my ability to ask you anything."
Laozi said:
"What are you talking about?"
Nan Rong Chu said:
"If I don't know anything then people would say I'm as dumb as wood. If I do know something, on the contrary, I'd turn myself into a nervous wreck. If I'm not benevolent then I'd cause harm to other people, but if I am benevolent, on the contrary, I'd stress out my own body. If I'm not righteous then I'd distress others, but If I am righteous, on the contrary, I'd wreak havoc on my own individuality. How can I escape from all this? It's those three concepts that are bothering me. That's why Chu suggested I come ask you about them."
Laozi said:
'A little time ago, when I saw you and looked right into your eyes, I understood you, and now your words confirm the judgment which I formed. You look frightened and amazed. You have lost your parents, and are trying with a pole to find them at the (bottom of) the sea. You have gone astray; you are at your wit's end. You wish to recover your proper nature, and you know not what step to take first to find it. You are to be pitied!'

Nan Rong Chu asked to please be shown to his room, where he tried to invoke what was good and dispel what was bad within him. After ten days he was still agitated, so he went again to speak with Laozi.
Laozi said:

"You've been spending time cleansing yourself, haven't you? You seem much fresher, but beneath all that moisturizer you still harbor some hatred. One who's got so many distractions coming at them from the outside that they can't deal with them will turn off to what's inside. One who's so bound up inside by their own personal distractions that they can't deal with them will turn off to what's outside. If someone has both internal and external distractions coming at them at the same time, they can't possibly grasp Dao and De, and even less would they be able to allow Dao to blossom on its own and go with it!"
Nan Rong Chu said:
"If a person in the village feels sick and he consults with the village doctor, giving a description of what's ailing him, chances are the sick person won't get any sicker. It seems like the more I learn about great Dao from those in a position to know, even though I drink down the medicine, I just keep getting sicker. All I really want to learn about is a method for keeping myself alive for as long as possible."
Laozi said:
"The best method for keeping yourself alive is to be able to embrace unity! And not to ever lose it! To be able to recognize good or bad luck without having to consult a tortoise shell or yarrow stalks (methods of foretelling the future). To be able to know when to stop. To be able to know when the end has been reached. To be able to give up on looking to others but seek what you're looking for within yourself. To be able to be free and unrestrained in your behavior. To be able to act like a fool. To be like a newborn child. A newborn can scream all day long but his throat won't get hoarse, as he's perfectly attuned. He can hold tightly on to something all day long without losing his grip, as he's joined so closely with his virtue. He can stare at something all day long without averting his eyes, as he's not partial to one particular external thing. He moves about without knowing where he's headed, or can stay in one place without knowing why. He meanders and wanders along with all sorts of things as though they were sailing on the same wave. These are the methods for keeping yourself alive."
Nan Rong Chu said:
"So, that's all there is to being a perfected person?
"No. This is only a description of how one can melt the iceberg and be released from it. The abilities of a perfected person include being able to share with others the food from the earth and the pleasures from the heavens. He doesn't experience profit or disadvantage from his interactions with people or things, finds no one to blame for what happens, doesn't plot or scheme with others, nor does he get embroiled in the affairs of others. He goes toward things with wide-eyed openness and arrives as though he were a fool. These are descriptions of methods for keeping yourself alive."
"So, this is the ultimate?"
"Not quite. I told you earlier: 'Be like a newborn child.' A newborn child moves about without knowing why, and goes places without knowing where he's headed. His body seems like a branch on a withered tree and his mind seems like dead ashes. Being like that, there's no sense of misfortune overcoming him or waiting for good fortune to arrive. Without experiencing either misfortune or good fortune, what calamities could happen to him!"

Someone who's peacefully settled in the cosmos emits a heavenly glow. One who emits a heavenly glow still appears to be a human to others. One who allows others to have their own perceptions of her can only flow along with them. One who's constantly flowing in that way is freely accepted by others and is assisted by the heavens. Being freely accepted by others is called being the heavens' adult. Being assisted by the heavens is called being the heavens' child.
A scholar studies what isn't able to be learned. A practicer practices what isn't able to be performed. A debater argues what isn't able to be disputed. Knowledge which stops at the point of what can't be known is the ultimate knowledge! Anyone who hasn't reached this point will surely be defeated by the heavens' potters wheel.
If you've got a body that works properly, a mind and life that isn't filled with hidden anxieties, and reached a place where you have respect for what's inside of you, but lots of bad things still keep happening to you, it's a matter of destiny and not due to other people. At that point if you can't find a way to slide on successfully, then you'll never reach the heights of your inner possibilities. The heights of inner possibilities can be maintained, but if you don't know what you're maintaining, you won't be able to maintain it. If you can't look at yourself honestly and allow that

to come forth, then everything that comes out of you will seem inappropriate. If you enter into that realm but choose not to spend much time there, then you have even more to lose. When something bad is manifested from deep within them people try to grab hold of it and punish themselves for it. When something bad is kept within and not faced, then demons will come and do the punishment. The clearer the person, the easier it is to clear out the demons, and only then can anything actually be done.
Someone who's intent on what's inside of herself engages in other things with anonymity. Someone who's more concerned with her exterior aspires to eventually have more than she could possibly need. One who engages in things with anonymity, although viewed as ordinary, has a bright glow. One who aspires to eventually have more than she could possibly need, is only viewed as a person who deals in material things - people can see she's struggling to move forward even though she acts like she's already on top of the ladder. One who combines with things to the utmost will find that things will come to her. One who combines with things only temporarily will find that she won't be able to endure her own body let alone other people. One who can't endure others is without intimacy. One who is without intimacy simply tries to use others. Of weapons which can cause harm none is more savage than willful aspirations - even Mo Ye (a famous ancient Chinese double edged sword) is inferior to it. Of invaders there's nothing more intense than Yin and Yang, and there's no place in this world to escape them. Neither Yin nor Yang are thieves, but it's the mind that makes it appear to be so.

Dao circulates freely through this division, both in construction and destruction. What's hated about division is that it's something which requires preparation. What's hated about the idea of being prepared is that one is always trying to prepare themselves for something. Therefore, when something leaves and isn't replaced by something else, its ghostly image is still seen. When something that's gone is still held on to, that's called holding on to what's died. If something that's been completely extinguished is still thought to be real, that's the realm of ghosts - making a determination that one could use what has a shape to create an image for what has become formless!

It emerges without having a source. It enters without having to create a hole to slip through. It grows to maturity without being provided a place to dwell. It keeps growing without any apparent roots or sprouting buds, enters without having to create a hole to slip through, yet becomes a solid mass. What's become a solid mass without having been provided a place to dwell is the universe. What grows continuously without any apparent roots or sprouting buds is infinity.
There's life and there's death, just like there's emerging and there's retreating. What keeps retreating and emerging without having a shape that can be visualized is called the heaven’s gate. The heaven’s gate doesn't have an existence as we recognize existence. All things emerge from non-existence. What exists isn't able to use their existence to give rise to existence, but must emerge from non-existence, and non-existence can only be non-existence. The sage holds this in a private place within her.

The people in ancient times reached some sort of understanding. What understanding did they reach? They had a belief that there wasn't really a beginning to anything. That's as far as they got, the limit to their knowledge, and they couldn't add much more to it than that. Next there came a belief that things came from somewhere, they were born then lost their lives, and what died went back to where it came from. Next it was said that in the beginning there was no existence whatsoever, then things were created and eventually just died off. So, non-existence became the head, life became the essential organs, and death became the buttocks. Whoever realizes that there isn't one thing that stands guard over life and death can make a friendship within themselves with all of them. These three perspectives, although having some dissimilarities, were accepted by the world at large. People in the states of Zhao and Jin were noted for their family affiliations (royalty). The Jia clan (house of Chu) was noted for the land it controlled. There isn't just one thing (that can stand guard).
Life is filled with unclarity that can be oppressive. To try to sort it all out and get to the bottom of it is called "shifting perspectives." We might try to use words to explain what "shifting perspectives" is, but there really aren't any words that can express it, since it isn't something that can actually be understood. When a pig is gutted at the Winter Sacrifice, the intestines can be removed from the edible flesh, but you'd keep an eye out for the parts that might

have been missed. When looking around a house you might want to move into, you'd take a tour through the living quarters and temple, but you'd also look for the hidden things the seller might not want you to see. This is choosing to use "shifting perspectives."

Maybe I can explain a little more about "shifting perspectives." To take life as your foundation and knowledge as your teacher is to keep riding around in circles making determinations of right and wrong. That results in naming and categorizing everything based on those types of thoughts, which can really affect your own nature and cause you to expect others to play their parts in your drama. You might even go so far as to feel that dying for your cause would be some sort of reward. Behaving like that promotes the idea that knowledge is useful but foolishness is useless - seeing persistence as noteworthy and withdrawal as disgraceful. "Shifting perspectives" - now that would allow people to see how right the musings of both the cicada and the dove were at the same time. There's no differentiation between them.
(Note: This might be a reference to Zhuangzi Chapter 1, when the cicada and dove were laughing at the great Peng bird who had to fly at such a high altitude.)
If you stepped on a stranger's foot in the marketplace, then you'd humbly apologize. If it was a close friend, then you'd give them a comforting hug. If it was a close relative, then there'd simply be a silent understanding.
Therefore it's been said: "Perfect courtesy makes no specific requirements on people. Perfect righteousness has nothing to do with things. Perfect understanding has no need for scheming. Perfect benevolence is impartial. Perfect trust shuns rewards."
Uproot the stubbornness of the will. Dismiss the absurdity of the mind. Leave behind straining your virtue. Pass through the barriers to Dao.
Being esteemed, gathering up wealth, showing off, subjugating others, seeking notoriety and looking for personal profits - these six reflect the stubbornness of the will.
Keeping up appearances, making expansive gestures, using dominating facial expressions, trying to control through preaching, showing aggressive attitudes and trying to get attention - these six reflect the absurdity of the mind.
Aversion, cravings, obsession, retribution, self-pity and excessive stimulation - these six reflect strains on virtue.
Rejection, conformity, forceful capture, sacrifice, smug knowledge and overpowering skills - these six are reflections of barriers to Dao.

When these four sets of six don't loiter in the middle of your chest, then you wouldn't be so mixed up. Not being so mixed up, then calmness would overcome you. With calmness comes clarity. With clarity comes emptiness. With emptiness comes a feeling that there's nothing that needs to be done, yet there's nothing that doesn't get done.
Someone with Dao respectfully obeys their virtue. Someone with a full life brightens their virtue. Someone who's natural lives a life of substance. Motivation that's caused by being natural is what's meant by getting things done. Acting like a puppet in a false way is missing the whole thing. Knowledge of this can be taken hold of and used to provoke plans and schemes, but knowledge of this can't really be understood in that way because you'd always be glancing around for signposts about what to do next. If motivation arises because there's no alternative to doing something, that's a sign of virtue. If motivation arises with no consideration for anything other than one's own self, that's being controlling. These descriptions seem like opposites, but actually they're both involved with flowing along with a particular current.

Yi was adept at hitting directly in the middle of a tiny target, but was inefficient at getting others to stop praising him. A sage is adept at blending with what comes from the heavens, but inefficient at blending with what comes from people. To be adept at blending with what comes from the heavens and be comfortable with dealing with what comes from people - only a perfected person would be able to do that.
An insect is only capable of being an insect, as an insect is only capable of following the heavens. A perfected person hates the heavens, hates people's perceptions of the heavens, and even more so the intellectual ramblings about the heavens that comes from people like us!

If a lone sparrow flew near Yi, Yi would try to get hold of it, and he might be able to. If the world were to become a cage, then a sparrow wouldn't have a chance for escape. There is, therefore, the story about how Tang ensnared Yi Yin due to his being a good cook. Duke Mu of Qin ensnared Bai Li Xi when he was presented with five sheep skins. Therefore, we can see that it isn't unusual for someone to come to like being caged, and they can be grabbed hold of without much effort.

Someone who's shrouded into obeying the many mandates placed upon him seeks blame or praise outside of himself. An insignificant person who flutters in the breeze can scale the highest heights without fear since he's lost the concepts of death and life. When answering by rote without considering if it will be beneficial to others, then one becomes a forgetful person. Being a forgetful person is considered to be acting like a heavenly person! Therefore, when they're respected, they don't warmly embrace that. When they're insulted, they don't get angry. They're only in tune with the harmony of the heavens, so they act spontaneously. If expressions of anger don't cause anger then anger is expressed without fury! If actions are expressed without consideration of them being actions, then the actions which are expressed are non-actions! If you wish to be calm, then equalize your energy. If you wish to be spiritual, then follow your heart. If through your actions there's a desire to be of service, then go along with what you have no choice but to do. The kind of person who goes along with what they have no choice but to do is close to the Dao of the sage.

२३|गेंग संग छू

एक व्यक्ति था जो लाओ-दान के लिए कार्य करता था उसका नाम गेनंग-संग-छु था वह लाओ दान जैसी ताओ प्राप्त करने में रूचि रखता था| वह उत्तर के पर्वतीय क्षेत्र में रहने के लिए चला गया जिसका नाम वेई-ली था| उसने अपने उन पुरुष सेवको को बर्खास्त कर दिया जो अपने ज्ञान का प्रदर्शन करने में योग्य थे और उन महिला दासियों को हटा दिया जो सहायक रूप से परोपकारी थी| उसने बढ़ावा दिया तथा वह अपने घर में लाया उनको जो आलसी थे और उनको नियुक्त किया जो प्रतिबंधित और अभिमानी थे| तीन साल बाद वेई-ली में बहुत ही फलदाई फसल पैदा हुई|

वेई-ली के लोगो ने एक दुसरे से कहा:
"जब गेंग-संग-ज़ि पहले आया था हम सोचते थे वो बहुत ही अजीब तरीके से व्यवहार कर रहा है| जब हमने उसको रोज के व्यवहार से परखा है तो वह हर कार्य के लिए अयोग्य सा प्रतीत हो रहा था लेकिन अब उसका मूल्यांकन करने से जो पिछले तीन सालो में हुआ है उसने हमे पर्याप्त से भी ज्यादा प्रदान किया है| हो सकता ही की वो एक सच्चा साधू है! क्यों न हम उसे पूर्वजो का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आवाहन करने वाला बनाये और उसका सम्मान उसे फसलो का देवता बनाकर करे?"

जब गेंग-संग-ज़ि को इसकी भनक लगी वह दक्षिण के लिए चल पड़ा और बहुत ही असहज दिख रहा था| उसके शिष्यों ने इसे बहुत ही अजीब व्यवहार समझा|
गेंग-संग-ज़ि ने कहा:
"तुम क्यों सोचते हो की यह बहूत ही अजीब है मेरे द्वारा इस प्रकार व्यवहार करना? वसंत में शुद्ध हवा बहती है और वनस्पतियों का जन्म होता है, तब पतझड़ में बहुतायत में हम उस खजाने को प्राप्त करते है| जैसे वसंत पतझड़ में बदल जाती है फिर कैसे इसे घटित होने से रोका जा सकता है? ताओ पहले से ही प्रगति पर है| मैंने सुना ही एक सिद्ध पुरुष वातावरण में ऐसे होता जैसे की एक मारा हुआ शव जबकि साधारण मनुष्य हड़बड़ी में होते हो-हल्ला मचाते रहते है बिना यह जाने की वे कहा जा रहे है| अब, वेई-ली के नागरिक गुप-चुप तरीके से योजना बना रहे है क्योंकि वे मुझे किसी अनुष्ठान सम्बन्धी देवता का आवाहन करने वाला मान रहे है और समझ रहे है की मैं वास्तव में ही उनके बीच मध्यस्थ का कार्य करूगा| क्या मैं उनके लिए ऐसा हो सकता हूँ? तब तो मैं लाओ-दान के शब्दों के विपरीत जा रहा होउगा|"

उसके शिष्यों ने कहा:
"ऐसा नहीं है| एक सिचाई के लिए बनाये गए कुछ फीट चोडे खाल में एक बड़ी मछली अपने शरीर को इधर उधर नहीं हिला सकती है पर एक छोटा सा पानी का जीव उसमे आसानी से घूम सकता है|एक पहाड़ी क्षेत्र में एक बड़ा जानवर स्वयं को छिपा नहीं सकता है जबकि एक लोमड़ी यह आसानी से कर सकती है| इसके आलावा, सामर्थ्यवान का आदर सम्मान करना और योग्य को पुरष्कृत करना तो जो अच्छा और लाभदायक है उसे बढ़ावा देने जैसा होता है| यह तो यो और शुन के समय से हो रहा है और इस प्रकार यह और भी उचित है वेई-ली के लोगो के लिए ऐसा करना! तुम्हे भी उनके साथ सहमत होना चाहिए!"

गेंग-संग-ज़ि ने कहा :
"सुनो मेरे प्रिय शिष्यों| यदि एक जानवर इतना विशाल हो की वह एक रथ को अकेला सीमओं के पार ले जा सके तो वह शिकारी के जाल में पकडे जाने के खतरे को टाल नहीं सकता है| यदि एक मछली इतनी बड़ी हो की वह एक नाव को ही निगल जाए तो वह तटपर लहरों के द्वारा छोड़े जाने के खतरे को ताल नहीं सकती है| इसलिए पक्षी और पशुओ को कोई आपति नहीं होती है ऊँचाई पर रहने में और ऐसे ही मछलियों और कछुओ को कोई आपत्ति नहीं होती है गहरे में रहने की| वे जो अपने शरीर को अपने जीवन में अक्षत व् अखंड बनाये रखना चाहते है वे स्वयं को दूर कहीं छुपा लेते है और उनके लिए इसमें कोई आपत्ति नहीं होती है पहचाने नहीं जाने में और महत्वहीन होने में? इसके आलावा जिन दो व्यक्तियों का तुमने जिक्र किया है उनके बारे में क्या महान है जो तुम उनकी इतनी प्रशंसा कर रहे हो और बढ़ावा दे रहे हो? उनके कार्यो का आधार ऐसे था जैसे एक दीवार में पहले छेद कर देना और फिर उसे मोटी लिपाई से भर देना, इसकी छटाई करना की कितने बालो पर कंघा किया जाए और जैसे गिनना की कितने चावल के दाने पकाए जाए| वे इतने सतही कैसे हो सकते है जो वे मानते है की वे इस समाज को लाभ पहुचने के लिए पर्याप्त है! यदि जो सामर्थ्यवान है उभे बढ़ावा दिया जाए तो लोग स्वयं को आगे बढ़ने के लिए एक दुसरे को निचे धकेलेगे| अगर जो बुद्धिमान है उन्हें महत्व दिया जाए तो लोग एक दुसरे से जानकारिय चुराने लगेगे स्वयं को बुद्धिमान दिखाने के लिए| वह जो इस प्रकार के मूल्याकन करता है वह कभी भी मानवता को लाभ नहीं पंहुचा सकता है| लोग आजकल स्वयं को लाभ पहुचने में इतने निहित होते है की एक पुत्र अपने पिता की हत्या कर सकता है और एक सेवक अपने स्वामी को

मार सकता है| वे दिन दहाड़े लूटना और दोपहर में लोगो की दीवारों में से छेद करने को बहुत ही अच्छा मानते है| मैं तुम्हे बता रहा हूँ की यह इस प्रकार का कोलाहल यो और शुन के साथ ही शुरू हुआ है और इससे बढ़ने वाली शाखाए हजारो पीढियों तक जाने वाली है| और हजार पीढियों के बाद वहा पर ऐसे लोग भी होगे जो एक दुसरे को ही अपने भोजन की तरह देखेगे|"

नान-रोंग-छु अकस्मात ही खड़ा हो गया जहाँ पर वह बैठा हुआ था और उसने कहा :
"मेरे जैसे के लिए जिसकी की उम्र हो चुकी हो, वह किस उपकर्म पर निर्भर हो सकता है उस स्थिति को पाने के लिए जिसकी तुम बात कर रहे हो?"

गेंग-संग-ज़ि ने कहा :
"अपने शरीर को सम्पूर्ण रखो और अपने जीवन को अंतर्निहित करो बिना कोई चिंता किये की इसके फलस्वरूप तुम्हे क्या प्राप्त होगा| अगर तुम यह तीन सालो के लिए करते हो तब तुम उस स्थिति तक पहुचने में सफल हो जाओगे जिसकी मैं बात कर रहा हूँ|"

नान-रोंग-छु ने कहा :
"आंखे शरीर का हिस्सा होती है - मैंने इसके अलावा उन्हें कुछ नहीं सोचा है - तब भी एक अँधा व्यक्ति अपनी आँखों द्वारा नहीं देख सकता है| कान शरीर का हिस्सा होते है - इसके आलावा मैंने उन्हें कुछ नहीं सोचा है - तब भी एक बहरा व्यक्ति अपने कानो द्वारा सुन नहीं सकता है| मन शरीर का एक हिस्सा है - मैंने इसके आलावा उसे कुछ नहीं सोचा है - तब भी एक मंदबुधि व्यक्ति इसके साथ समझ नहीं सकता है| यह शरीर भी इस शरीर का ही हिस्सा है - निशित ही ये बहुत ही घनिष्टता से जुड़े हुए है - क्या तब भी यह किसी हस्तक्षेप के कारण होता है? मैं अपने शरीर को खोजने का प्रयत्न कर रहा हूँ पर मैं उसे खोज नहीं पा रहा हूँ| अब आप मुझे बताते है की 'अपने शरीर को सम्पूर्ण रखो और अपने जीवन को सम्मलित करो! विचारो और योजनाओ की चंचलता के शिकार मत होओ'| जितनी अधिक इच्छा से मैं इन्हें समझने का प्रयत्न कर रहा हूँ, मुझे भय है की वैसे ही तुम्हार शब्द मेरे कानो से आगे पहुच ही नहीं रहे है|"

गेंग-संग-ज़ि ने कहा :
"मैंने अपना सर्वोतम प्रदान किया है तुम्हे ये शब्द समझाने के लिए| यह कहा जाता है की मधुमक्खिया एक रेशम के कीड़े के डिंभक को परिपक्वता प्रदान नहीं कर सकती है| विए राज्य की छोटी मुर्गिय एक हंस के अन्डो को नहीं सेंक सकती है| उनमे से प्रत्येक की एक अपनी निश्चित योग्यता है पर उनके पास दुसरो की योग्यता नहीं है और उनका कौशल साधारणतः उनके छोटे या बड़े होने पर निर्भर करता है| अब मेरी योग्यता कम है, बहुत ही छोटी है उन बदलावों के लिए सहायता करने के लिए जो तुम चाह रहे हो| क्यों न तुम दक्षिण की तरफ जाओ और जाकर लाओजी से मिलो?"

नान-रोंग-छु ने अपना सामान तैयार किया और भोजन भी साथ ले लिया, सात दिन और सात रातो में वह लाओजी के घर पर पहुच गया|
लाओजी ने कहा :
"क्या तुम गेंग-संग-छु के पास से आये हो?"

नान-रोंग-छु ने कहा:
"हाँ|"

लाओजी ने कहा :
"तुम अपने साथ इतने लोग क्यों लाये हो?"

नान-रोंग-छु के मुख पर अचंभे वाला भाव आ गया और उसने पीछे मुड कर देखा|

लाओजी ने कहा :
"तुम नहीं समझते जो मैं कह रहा हूँ, क्या तुम समझ रहे हो?"

नान-रोंग-छु ने आदार पूर्वक उनके सामने सर झुकाया और फिर शर्मिंदगीसे अपने मुंह को ऊपर उठाया और आह भरते हुए कहा :

"इस संदर्भ में मैं नहीं जानता की आपके इस प्रश्न का जवाब कैसे दिया जाए, मैंने आपसे कोई भी प्रश्न पूछने की अपनी योग्यता को भी खो दिया है|"

लाओजी ने कहा :
"तुम क्या बाते कर रहे हो?"

नान-रोंग-छु ने कहा:
"यदि मैं कुछ नहीं जानता हूँ तो लोग कहेगे की मैं एक लकड़ी के लट्ठे की तरह गूंगा हूँ यदि इसके विपरीत मैं कुछ जानता हूँ तो मैं स्वयं को ही व्यग्र कर रहा हूँ| यदि मैं परोपकारी नहीं हूँ तो मैं लोगो को हानि पंहुचा रहा हूँ पर इसके विपरीत यदि मैं परोपकारी हूँ तो मैं स्वयं के शरीर का ही क्षय कर रहा हूँ| अगर मैं धार्मिक नहीं हूँ तो मैं औरो का क्षय कर रहा हूँ और इसके विपरीत यदि मैं धार्मिक हूँ तो मैं स्वयं के प्रति ही विध्वंस कर रहा हूँ| इस सभ से मैं कैसे बच सकता हूँ? क्या यही तीन परिकल्पनाए है जो मुझको सता रही है| इसी कारण तो छु ने मुझे आपके पास आने का सुझाव दिय था|"

लाओजी ने कहा:
"थोड़े समय पहले जब मैंने तुन्हें देखा था सीधा तुम्हारी आँखों में तब मैं तुम्हे समझ गया था और अब तुम्हारे शब्दों ने उस अनुमान को सही साबित कर दिया| तूम अचंभित और भयभीत लग रहे हो| तुम अपने माता पिता को खो चुके हो और अब तुम उन्हें एक खंभे के सहारे समुद्र की गहराई में खीजने का प्रयत्न कर रहे हो| तुम पथभ्रष्ट हो चुके हो; तुम्हारी बुद्धि का अंत हो चूका है| तुम अपनी मूल प्रकृति में दोबारा आना कहते हो और तुम नहीं जानते हो की कौन सा कदम पहले उठाया जाए| तुम पर बहुत दया आ रही है!"

नान-रोंग-छु को उनके कमरे को आकर रहने को कहा गया, जहाँ उसने जो उसके अंदर अच्छा है उसे जगाने का प्रयत्न किया और जो बुरा है उसे निकालने का| दस दिनों के बाद वह अब भी उत्तेजित था इसलिए वह दोबारा लाओजी से बात करने के लिए गया|
लाओजी ने कहा :
"तुम बहुत सारा समय स्वयं को सुधरने में लगा रहे हो, क्या तुम इसे नहीं कर रहे हो? तुम पहले से ज्यादा तरोताजा प्रतीत हो रहे हो लेकिन इसके आलावा इस तरोताजगी के निचे तुम्हारे अंदर नफरत का स्थान अब भी है| वह जो बहुत सारे विकर्षण और व्याकुलता को बाहर से ग्रहण करता है और सोचता है की वह उसके साथ व्यवहार कर पायेगा उन सभ से सही हो पायेगा तो वह उसे भूल जाता है जो उसके अंदर निहित है| और जो कोई अपने अंदर निहित व्याकुलताओ और इछाओ से घिरा होता है और सोचता है की वह उन पर काबू पा लेगा तो वह उसको भूल रहा होता है जो बाहर निहित है| यदि कोई बाहर और भीतर दोनों जगह इछाओ और व्याकुलता से घिरा होता है तो संभवतः वह ताओ और ते को प्राप्त नहीं कर सकता है और इससे भी कम वह ताओ को स्वयं से ही फल फूलने की अनुमति देता है और उसके साथ जाता है|"

नान-रोंग-छु ने कहा :
"यदि गाँव में एक व्यक्ति बीमार हो जाता है तो वह गाँव के वैध से सलाह लेता है तब उसे बताया जाता है की उसके रोग का क्या कारण है और उसे उसके लिए औषधीय दी जाती है, तब सम्भावना यह होती है की वह बीमार व्यक्ति और ज्यादा बीमार नहीं होगा| पर अब मुझे यह प्रतीत हो रहा है की जितना मैं इस महान ताओ के बारे में सिख रहा हूँ उनसे जो इसे जानते है यद्यपि मैंने औषधि ग्रहण कर ली है पर फिर भी मैं और बीमार होता जा रहा हूँ| सभ कुछ जो मैं जानना चाहता हूँ वह है जीवित रहना जितना ज्यादा हो सके उतना|"

लाओजी ने कहा :
"स्वयं को जीवित रखने का सबसे अच्छा तरीका उस एकरूपता के साथ आलान्गित होना है! और कभी उसे खोना नहीं है! अच्छे भाग्य और दुर्भाग्य को पहचानने में सक्षम होना बिना किसी भविष्य बताने वाले कछुए के खोल या फिर योरो के डंडे की सहायता से| यह जानने में योग्य होना की तुम्हे कब रुकना है| और यह जानने में योग्य होना की कब तुम अंत तक पहुच गए हो| दुसरो की तरफ देखने की प्रवृति को छोड़ देने में सक्षम होना और स्वयं के भीतर झांक कर देखना| अपने व्यवहार में मुक्त और अप्रतिबंधित होने के योग्य होना| एक मुर्ख की तरह व्यवहार करने में सक्षम होना| एक नवजात शिशु की तरह होना| एक नवजात शिशु पुरे दिन रो सकता है लेकिन फिर भी उसका गला नहीं बैठत है और वो थकता नहीं है तथा पूरी तरह से लयबद्ध होता है| वह किसी वस्तु को मजबूती से पुरा दिन पकड़ सकता है बिना अपनी पकड़ छोड़े, क्योंकि वह सामर्थ्य के साथ बहुत ही घनिष्टता से जुड़ा होता है | वह पुरा दिन किसी चीज़ पर टकटकी लगाकर देख सकता है बिना अपनी आँखों को हटाये क्योंकि वह

किसी भी विशेष बाह्य वस्तु के साथ पृथक नहीं होता है| वह चलता है बिना यह जाने की वह कहाँ जा रहा है या फिर एक जगह पर रह सकता है बिना यह जाने की वो वहां क्यों है| वह सभी वस्तुओ के साथ घूमता है और चक्कर लगता है जैसे की उनके साथ एक ही लहर की सवारी कर रहे है| यही तरीके है स्वयं को सजीव रखने के|"

नान-रोंग -छु ने कहा :
"तो क्या यही होता है एक सिद्ध सम्पूर्ण मनुष्य होना?"

"नहीं| ये तो बस विवरण है की कैसे एक हिमखंड को पिघलाया जा सकता है और उससे मुक्त हुआ जा सकता है |एक सिद्ध पुरुष की योग्यता में सम्मलित होना है इस धरती से मिलने वाले भोजन को आपस में बाँटना और उस स्वर्ग से मिलने वाले आनंद को सबके साथ साँझा करना| वह लोगो और वस्तुओ के साथ अपने संबंध में किसी लाभ या हानि का अनुभव नहीं करता है और न ही किसी को दोषी ठहरता है जो हो रहा है उसके लिए, वह दुसरो के साथ मिलकर योजनाए नहीं बनता है और न ही वह दुसरो के मुद्दों व् प्रसंगों में स्वयं को बीच में लाता है| वह वस्तुओ के प्रति चोडी खुली आँखों से सचेत होता है और उनके प्रति होता है जैसे की वो एक मुर्ख है| यह वर्णन है उन तरीको का जो तुम्हे सजीव बनाये रखते है|"

"तो क्या यही सही है और अंतिम है?"

"नहीं अब तक नहीं| मैंने तुम्हे पहले बताया था :'ऐसे रहो जैसे की एक नवजात शिशु|' एक नवजात शिशु चलता है बिना यह जाने की वो ऐसा क्यों कर रहा है और जाता है कहीं पर भी बिना जाने की वो कहाँ जा रहा ही| उसका शरीर प्रतीत होता है जैसे एक सूखे पेड़ पर शाखा और उसका मन प्रतीत होता है जली हुई राख की तरह| ऐसा होकर उसके लिए दुर्भाग्य के आने की या फिर अच्छे भाग्य के आने का कोई बोध नहीं होता है| इस प्रकार बिना अनुभव किये दुर्भाग्य या अच्छे भाग्य का तो फिर ऐसा क्या है जो उसको हानि पंहुचा सकता है!"

वह जो शांतिपूर्वक इस ब्रह्माण्ड के साथ स्थापित होता है, वह बहुत ही नैसर्गिक तेज धारण करता है| वह जो एक नैसर्गिक तेज को धारण करता है वह अब भी दुसरो एक मनुष्य की तरह प्रतीत होता है| वह जो दुसरो को उसके प्रति उनकी अपनी अनुभूती रखने की स्वीकार्यता देता है वही उनके साथ प्रवाहित हो सकता है| वह जो निरंतर इस तरह दुसरो के साथ प्रवाहित होता है वह सभ के द्वारा स्वीकार्य होता है और स्वर्ग द्वारा उसकी सहयता की जाती है| और इस तरह दुसरो द्वारा मुक्त हुआ वह स्वर्ग का मनुष्य होगा| और स्वर्ग द्वारा सहायता प्राप्त करते हुए वह स्वर्ग का पुत्र कहलायेगा|

एक अभ्यर्थी अध्ययन करता है जिसको सिखा नहीं जा सकता है| एक अभ्यासी अभ्यास करता है जिसका प्रदर्शन नहीं किया जा सकता है| एक तार्किक तर्क देता है जिस पर बहस नहीं की जा सकती है| ज्ञान जो रुक जाए उस बिन्दु पर जिसे जाना नहीं जा सकता उस परम ज्ञान कहते है! कोई भी जो इस स्थान तक नहीं पंहुचा है निश्चित स्वर्ग के चक्र में उलझा रहता है| अगर तुमने एक शरीर पाया है जो पूर्ण रूप से कार्य कर रहा है और एक मन और जीवन जो गहरी छिपी हुई चिनताओ से भरा हुआ नहीं है तथा तुम एक स्थान पर पहुच गए हो जहाँ तुम्हे आदर है जो तुम्हारे अंदर निहित है लेकिन फिर भी तुम्हारे साथ बुरी घटनाये घटित हो रही है फिर तो यह भाग्य के कारण है न की दुसरे लोगो के कारण| यदि इस समय तुम एक नए मार्ग को नहीं पा लेते हो इन सभ से बचने के तब तुम कभी नहीं पहुच पाते हो उन संभावनाओ के शिखर पर जो तुम्हारे अंदर निहित है| इन निहित संभावनाओ के शिखर को बनाये रखा जा सकता है लेकिन अगर तुम नहीं जानते की तुम किसका अनुरक्षण कर रहे हो तब तुम इसे कायम रखने में योग्य नहीं हो पाओगे| यदि तुम स्वयं को ईमानदारी से नहीं देख पा रहे हो और आगे नहीं आने दे रहे हो तब हर वस्तु जिससे तुम्हारा सामना होगा तुम्हे अपर्याप्त लगेगी| अगर तुम उस क्षेत्र में प्रवेश कर जाते हो और उसे कुछ समय प्रदान नहीं करते हो तो तुम्हारे पास खोने को बहुत कुछ होगा| अगर कुछ बुरा व्यक्त होता है तो लोग इसे पकड़ना चाहते है और इसके लिए स्वयं को सजा देते है| अगर कुछ बुरे को अन्दर ही रखा जाए और उसका सामना न किया जाए तब फिर उससे एक दानव की उत्पत्ति होती है जो आता है और सजा देता है| जितना स्पष्ट एक व्यक्ति होगा उतना ही उसे इस दानव को दूर करने में आसानी होगी और तभी किसी चीज़ को वास्तव में किया जा सकता है|
वह कोई जो अभिप्राय रखता है जो उसके अंदर है तब वह दूसरी वस्तुओ से अज्ञात होकर जुड़ा हुआ होता है| वह जो चिंताशील होता है अपनी बाहय आकांक्षाओ के संबंध में उसके पास अंत में बहुत अधिक होता है उससे जितना की उसे चाहिए| जो वस्तुओ के साथ अज्ञातता से जुडा हुआ होता है यद्यपि उसे साधारण ही समझा जाता है पर उसके पास एक प्रकाशमय तेज होता है| और वह जो अपनी आकांक्षाओ के फलस्वरूप जरूरत से ज्यादा रखता है उसे बस एक ऐसे व्यक्ति के तौर पर देखा जाता है जो केवल भौतिक वस्तुओ के साथ संगलित होता है - लोग देख सकते है की वह आगे बढ़ने के लिए संघर्ष कर रहा है फिर भी वह ऐसे

व्यवहार करता है जैसे की वो शिखर पर पहुच गया है| वह जो वस्तुओ के साथ जुडा होता है वह आखिर तक पाता है की वस्तुए उसके पास आती है| जो वस्तुओ के साथ जुडा हुआ होता है अस्थायी रूप से पाता है की वह अपने ही शरीर को सही रखने में योग्य नहीं है और बाकि लोगो को ऐसे ही छोड़ देता है| जो दुसरो को सहन नहीं कर सकता वह बिना आत्मीयता के होता है| वह जो बिना आत्मीयता के होता है वह केवल दुसरो का उपयोग करना चाहता है| उन शस्त्रों में से जो क्षति पहुचाते है किसी की इच्छा और आकांक्षाओ से बर्बर कुछ नहीं है - जबकि मो-ये (एक चीन की विख्यात तलवार) भी इससे न्यून है| घुसपैठ करने वालो में यिन और यंग से अत्यंत कुछ नहीं है और इस संसार में ऐसे कोई जगह नहीं है जहाँ इनसे बचा जा सके| इनमे से न तो यिन और न ही यंग चोर है लेकिन हमारा मन इन्हें बनाता है ऐसा प्रतीत होना|
ताओ का संचालन इस विभाजन से मुक्त रूप से होता है, निर्माण और विनाश दोनों में| विभाजन के बारे में जो सबसे घृणित है वह यह है की इसके लिए तैयारी की जरूरत होती है| और तैयार रहने के बारे में जो सबसे घृणित है वह है की कोई हमेशा किसी न किसी चीज़ के लिए तैयार रहने का प्रयत्न करता रहता है| इसलिए जब कोई वस्तु चली जाती है (समाप्त हो जाती है) और उसका स्थानापन्न किसी दुसरी वस्तु (नई वस्तु) द्वार नहीं होता है तो उसकी भूतीया छवि तब भी देखी जा सकती है| जब जो चला गया है उस पर अधिकार कर रखा जाए तब इसे कहते है जो मर गया है उसे पकडे रहना| अगर किसी चीज़ को जो पूरी तरह से समाप्त हो चुकी है उसे अब भी वजूद में समझा जाए तब यह तो भूतो का क्षेत्र होता है - यह संकल्प करना की वे उपयोग कर सकते है जिसका कोई आकर है उसकी आकृति बनाने के लिए जो निराकार है!

इसकी उत्पत्ति बिना किसी स्त्रोत के है| यह प्रवेश कर सकती है बिना इसके लिए कोई द्वार बनाये| इसे परिपक्व होने के लिए कही रहने की जरूरत नहीं होती है| यह लगातार समृद्ध होती रहती है बिना किन्ही प्रत्यक्ष जड़ो के या अंकुरण के, प्रवेश कर सकती है बिना किसी प्रवेश द्वार के तब भी यह एक ठोस पदार्थ की तरह है जो बनता है ठोस बिना कसी स्थान पर परिपक्व हुए इस ब्रह्माण्ड में और जो निरंतर समृद्ध होता रहता है बिना प्रत्यक्ष जड़ो के या अंकुरण के - वह अनंत है|
यहाँ पर जन्म और मृत्यु है जैसे की उत्सर्जन और विसर्जन है| जो उत्सर्जन और विसर्जन को आकर में रखता है, बिना किसी रूप को धारण किये जिसे देखा जा सके वह है स्वर्ग का द्वार | स्वर्ग के द्वार का कोई वजूद नहीं है जैसे की हम वजूदो को पहचानते है| सभी वस्तुओ का अस्तित्व बिना किसी अस्तित्व के होने से उत्पन्न हुआ है| जो अस्तित्व में है वह अपने अस्तित्व का उपयोग अस्तित्व की उत्पत्ति के लिए नहीं कर सकता है पर उसे जरूर ही अस्तित्व के न होने में से उत्पन्न होना होता है और अस्तित्व का न होना तो केवल अस्तित्व का न होना हो सकता है| एक साधू अपने निजी निवास को इसी में रखता है|

पुराने समय में लोग एक विशेष प्रकार की समझ तक पहुचे हुए थे| किस समझ पर वे पहुचे हुए थे? उन्हें एक विश्वास था की वास्तव में किसी भी चीज़ की कोई शुरुआत नहीं है| इतनी दूर तक ही वे पहुचे हुए थे की यही उनके ज्ञान की सीमा थी और इसमें वे कुछ और ज्यादा भी नहीं जोड़ सकते थे| फिर उसके बाद एक धारणा आई की वस्तुओ की उत्पत्ति कहीं से हुई है, उनका जन्म होता है और फिर वे अपने जीवन को खो देते है, और जो मर गया होता है वह चला जाता है जहा से उसकी उत्पत्ति हुई है| उसके बाद यह धारणा आई की शुरुआत में कोई अस्तित्व नहीं था, तब वस्तुओ की रचना हुई और फलतः उनकी मृत्यु हो गयी| इसलिए अस्तित्व न होना अब भी मुख्य विषय व्यक्ति बना हुआ है, जीवन इसका मुख्या अंग है, और मृत्यु इसके कुल्हे| किसने कभी भी यह अनुभव किया है की ऐसे कोई चीज़ नहीं है जो उन सभी के पास आकर मित्रता कर ले और वह उन सभ की जन्म और मृत्यु से रक्षा कर सके| ये तीनो दृष्टिकोण यद्यपि रखते है एक समान असमानताए लेकिन स्वीकार किये गए है पुरे संसार में| ज्होऊ राज्य के लोग जाने जाते है अपने परिवारों के प्रति स्नेह और निष्ठा के कारण| जिया कुल को जाना जाता था उसके लिए जितनी ज्यादा भूमि पर की उनका नियंत्रण था| इस प्रकार ऐसे कोई भी वस्तु नहीं है जो रक्षा कर सकती है |
जीवन ऐसे अशुद्धियो से भरा हुआ है जो दमनकारी हो सकती है| इन सभ को सही करते हुए इनकी गहराई की तह तक पहुच जाना इसे ही तो कहते है"बदलते हुए संदर्श (दृष्टिकोण)|हम शब्दों का उपयोग इसकी व्याख्या करने के लिए कर सकते है जिसे हम कहते है"बदलते हुए संदर्श (दृष्टिकोण)"पर वास्तव में ऐसे कोई शब्द नहीं है जो इसकी व्यख्या कर सके क्योंकि यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे वास्तव समझा जा सके, पर आप हमेशा अपनी दृष्टि बनाए रखते है की कोई हिस्सा छूट न गया हो| जब आप एक घर को देखने जाते हो तो आप उसके अंदर जाना चाहते हो और उसके कमरों और मंदिर में घूमते हो, जायजा लेते हो लेकिन तब आप यह भी देखते हो की कहीं विक्रेता आपसे कोई चीज़ छुपा तो नहीं रहा है जिसे वह आपको दिखाना नहीं चाहता है| इसे कहते है चुनाव करना उपयोग करने के लिए"बदलते हुए संदर्श (दृष्टिकोण)"का|

हो सकता है की मैं कुछ और भी समझा सकू"बदलते हुए संदर्श (दृष्टिकोण)"के संदर्भ में| जीवन को अपना आधार मानन और ज्ञान को अपने गुरु की तरह जानना यह है जैसे एक चक्र में घूमते रहना सही और गलत को निर्धारित करते हुए | इसका परिणाम नामकरण और वर्गीकरण करना होता है, सभी वस्तुओ का ऐसे विचारो को आधार मानकर, जो वास्तव में ही आपकी

प्रकृति को प्रभावित करता है और दुसरो को आपके प्रसंग में शामिल होने का मौका प्रदान करता है| आप इतने दूर भी जा सकते है की किसी कारण के लिए मरना एक प्रकार का सम्मान होता है| इस तरह व्यवहार करना इस सिद्धांत को बढ़ावा देता है की ज्ञान तो उपयोगी है और मुर्खता अनुपयोगी - अटलता को मूल्यहीन देखना और त्याग को शर्मनाक|"बदलते हुए संदर्श (दृष्टिकोण)"- अब यह लोगो को देखने की समझ देता है की कैसे उन दो छोटे पक्षियों के अनुमान सही थे एक ही समय पर उस कुन नामक पक्षी के लिए (प्रथम अध्याय में)| उनके बीच कोई असमानता नहीं थी|
अगर आप एक बाज़ार में किसी अजनबी के पैर पर अपना पैर रख देते है तो आप विनम्रता से माफ़ी मांगते है| अगर वह आपका कोई मित्र होता है तो आप उसे एक बार गले लगा लेते है| और जब वह आपका घनिष्ट सम्बन्धी होता है तो वह पर एक शांत समझ ही काफी होती है इसके लिए|

इसलिए यह कहा गया है:
"सम्पूर्ण शिष्टाचार लोगो पर जरूरते नहीं थोपता है| परम धार्मिकता को वस्तुओ के साथ कुछ लेना देना नहीं होत्ता है| परम ज्ञान को योजनाओ की जरूरत नहीं होती है| परम परोपकार अपृथक होता है| परम विश्वास फल से दूर रहता है|"
मन की अजन्मी इछाओ को जड़ से निकाल फेंको और उसे शुद्ध करो, अपने सामर्थ्य का क्षय करना बंद करो| और बाधाओ में से निकलते हुए ताओ के पास जाओ|
अपना मान सम्मान चाहना, धन इकट्ठा करना, अपना प्रदर्शन करना, दुसरो को अपने अधीन करना, बदनामी नहीं चाहना और अपने व्यक्तिगत लाभों को देखना - ये छह हमारी अजन्मी इच्छाओं को दर्शाते है|
उपस्तिथि को दर्ज करवाना, विस्तृत हाव भाव दिखाना, मुख पर श्रेष्टता के भाव का होना, उपदेश देकर नियंत्रित करने की कौशिश करना, आक्रमण व्यवहार दिखाना और अपने तरफ ध्यान आकर्षित होना चाहना - ये छह मन की अशुद्धियो को दिखाते है| घृणा, लालसा, ग्रसित होना, प्रतिकार, स्वयं के प्रति ही सहानुभूति, हद से ज्यादा उतेजना - ये छह सामर्थ्य का क्षय करने वाले होते है| अस्वीकार्यता, अनुरूपता, बलपूर्वक पकडे रखना, हानि होना, दंभी ज्ञान, और अभिमानी करे वाली कौशलता - ये सभ ताओ के मार्ग में आने वाली बाधाए है|

जब इन छह चीजों के ये चार समूह आपके ह्रदय में ताल मटोल नहीं करते है तो आप किसी चीज़ पर उलझ कर खड़े नहीं होते है| इस तरह से उलझा हुआ नहीं होकर स्थिरता आपमें निवास करती है| स्थिरता के साथ स्पष्टता भी आती है| और स्पष्टता के साथ रिक्तता आती है| और रिक्तता के साथ यह अनुभव भी आता है की अब हमे कुछ और होने की जरूरत नहीं है और फिर भी ऐसा कुछ नहीं है जिसे नहीं किया गया है| वह जो ताओ के साथ होता है आदर पूर्वक सामर्थ्य की भी आज्ञा का पालन करता है, वह जो एक सम्पूर्ण जीवन के साथ होता है वह सामर्थ्य को भी प्रकाशमय करता है| वह जो कोई प्राकृतिक रूप से होता है वह एक तत्व का जीवन जीता है| वह प्रोत्साहन जो प्राकृतिक होने से प्राप्त होता है वह होता है जो वस्तुए के पूरा होने से होता है| एक काठ पुतली की तरह गलत ढंग से व्यवहार करना तब आप सारी चीजों को खो रहे होते है| इस ज्ञान को धारण रखे जा सकता है और इसका उपयोग योजनाओ और कल्पनाओ को पूरा करने के लिए किया जा सकता है पर इस ज्ञान को इस मार्ग द्वारा नहीं समझा जा सकता है क्योंकि आप हमेशा अपनी निगाहों को निर्देशों के लिए घुमाते रहते ही की आगे क्या करना है| अगर प्रोत्साहन उत्पन्न होता है क्योंकि अब कुछ करने का कोई विकल्प नहीं होता है यह सामर्थ्य के लक्षण है| अगर अभिप्रेरणा की उत्पति होती है किसी भी वस्तु के लिए केवल स्वयं के प्रति बिना किसी विचार के इसे ही नियंत्रण कहते है| ये वर्णन विपरीत प्रतीत होते है लेकिन वास्तव में दोनों एक ही प्रवाह में प्रवाहित होने में सम्मिलित होते है|

'यी' किसी भी लक्ष्य के मध्य को भेदने के निपुण था पर अकुशल था औरो को उसकी प्रशंसा करने से रोकने के लिए| एक साधू निपुण होता है समिश्रित होने में जो स्वर्ग से उसके पास आता है लेकिन वह नाकाफी होता है उसके साथ समिश्रित होने में जो लोगो से उसके पास आता है| निपुण होना मिश्रित होने में जो स्वर्ग के पास से आता है और सहज होना उसके साथ जो लोगो के पास से आता है - एक सिद्ध पुरुष ही ऐसा कर सकने में समर्थ होता है|
एक कीड़ा केवल एक कीड़ा होने में ही समर्थ होता है और केवल एक कीड़ा होकर ही वह स्वर्ग का अनुशरण करने में सफल हो पाता है| एक सिद्ध पुरुष स्वर्ग से नफरत करता है, वह नफरत करता है स्वर्ग के लिए लोगो की समझ से और इससे भी ज्यादा स्वर्ग के प्रति भ्रमणशील बुद्धि से जो हम जैसे लोगो से उत्पन्न होती है!

अगर एक अकेली चिड़िया 'यी' के नजदीक से उडती है तो यी उसे पकड़ने का प्रयत्न करेगा और हो सकता है की वह ऐसा करने में सफल हो| यदि यह संसार एक पिंजरे की तरह हो तब एक चिड़िया का इसमें से बच कर निकल जाने की कोई सम्भावना नहीं है| यही कारण है की ये सभ कहानिया है की कैसे तंग ने यी-यिन को फुसला लिया क्योंकि वह एक अच्छा रसोइया था| किन के

सम्राट मु ने बाई-ली-क्सी को फुसला लिया जब उसे पांच भेड़ो की खाल तोहफे में दी गयी| इसलिए हम देखते है की यह कोई बडी बात नहीं है किसी के लिए ऐसे कैद हो जाने की, और उन्हें ऐसे बिना किसी ज्यादा परिश्रम के भी किया जा सकता है|

वह कोई जो स्वयं को मिलने वाले आदेश का पालन करता है वह इनके लिए बाहरी तौर पर निंदा या प्रशंसा का हक़दार होता है| एक महत्वहीन व्यक्ति जो मंद पवन में संपादन करता है वह नाप सकता है सबसे ऊँचे शिखरों को बिना किसी वस्तु के क्योंकि वह जन्म और मृत्यु के विचार को अपने अंदर से निकाल चुका होता है| दोहराए हुए जवाब देते हुए बिना इसकी चिंता करे की व दुसरे के लिए लाभकारी होगे या नहीं वह एक लापरवाह मनुष्य होता है|और एक लापरवाह मनुष्य होना एक स्वर्ग के मनुष्य की तरह होना और उसे उसकी (स्वर्ग की) तरह ही व्यवहार करना समझा जाता है!
इसलिए जब उनका आदर सम्मान किया जाता है तो वे इसमें आलान्गित नहीं होते है| जब उनका अपमान किया जाता है तो वे क्रोधित नहीं होते है| वे ही होते है जो स्वर्ग के माधुर्य के साथ पूर्ण लय में होते है और स्वेच्छा से व्यवहार करते है| अगर क्रोध के भाव से कोई क्रोध उत्पन्न न हो तो क्रोध को बिना किसी आवेश में आये व्यक्त किया जा सकता है! यदि कर्म को उनके कर्म न होने के संदर्भ में देखा जाए तो कर्मो को निष्काम कर्म के रूप में व्यक्त किया जा सकता है! अगर आप शांत होने की इच्छा करते है तब आपको अपनी उर्जा को सम करना चाहिय |अगर आप अध्यात्मिक होना चाहते है तो आपको अपने ह्रदय का अनुशरण करना चाहिए| अगर तुम्हारे कर्मो से कर्तव्य की इच्छा हो तब तुम्हे वह करना चाहिए जब किसी कार्य को करने के आलावा कोई विकल्प न हो| वह उदार व्यक्ति जो उस कार्य को करता है जब उस कार्य को करने के आलावा उसके पास कोई विकल्प नहीं होता है तो वह एक साधू की ताओ के निकट होता है|

24.Xu Wu Gui (One Without Secrets)

Nu Shang (Appointment Maker) arranged for Xu Wu Gui (One Without Secrets) to have an audience with Marquis Wu of Wei.
Marquis Wu said to him sympathetically:
"Your life has already been filled with so many hardships! You don't get much sympathy while suffering in the mountain forests, so you've come seeking it from me."
Xu Wu Gui said:
"I came to sympathize with you. Why would you be sympathetic towards me? You're constantly trying to fulfill your habitual obsessions, and for such a long time have been overtaken by your own likes and dislikes that your own natural sensibilities are diseased! You've then been trying to blot out those habitual obsessions, hammer down your likes and dislikes, and in the process your perceptions have been diseased. That's why I came to sympathize with you, not to ask for your sympathy!"
Marquis Wu became aloof and detached and didn't answer.
After a short pause, Xu Wu Gui said:
I look at dogs and judge of them by their appearance. One of the lowest quality seizes his food, satiates himself, and stops;-- he has the attributes of a fox. One of a medium quality seems to be looking at the sun. One of the highest quality seems to have forgotten the one thing,-- himself. But I judge still better of horses than I do of dogs.
When sizing up a horse, if it can walk in a perfectly straight line, turn comfortably in figure eights, easily be guided in 90 degree turns and continue making circles on command, then that's a horse which can be used by the state. However, it wouldn't be a horse of the natural world. A horse of the natural world has developed its natural abilities. It seems deficient and defective, as though it's given up on trying to be other than what it is. By being like that, it can speed off like the fastest racing chariot while kicking up dust in its wake, without trying to figure out what it's supposed to be doing as a horse."

Marquis Wu was extremely delighted at this and laughed.
When Xu Wu Gui left from the meeting Nu Shang said to him:
"Sir, what did you discuss in there when you were alone with my lord? When I have discussions with him, I toss out quotes from the Shi Jing (Book of Odes), the Shu Jing (Book of History), the Li Ji (Book of Rites), the Yue Jing (Book of Music). Then I follow that up with quotes from the Jin Ban (Golden Tablets) and the Liu Tao (Six Strategies). If he obeyed the mandates for dealing with affairs stated in those texts, then there'd be no way for him to be criticized, but I've never seen him crack a smile before. Now what did you say to him that made him so delighted like this?"
Xu Wu Gui said:
"I simply told him how I size up dogs and horses."
Nu Shang said:
"That was all?"
"Haven't you heard about the man who was exiled to the state of Yue? After he'd been away from his own state for several days, he was happy to come across anyone he knew. After he'd been away for several months, he was happy to come across anyone from his own state. After he'd been away for about a year, he was happy to see anyone who vaguely resembled someone from his own state. He missed what was familiar to him If someone was to take off into the vast wilderness where brambles and thorny bushes grow so thick that only rodents and weasels could traverse them, and as he staggered trying to get a foot hold he happened to hear the footsteps of another human being, he'd become happy. And how much more so if he heard the soft laughter and murmuring of his loved ones by his side! It's been such a long time since my lord heard the soft laughter and murmuring of his loved ones by his side!"

Xu Wu Gui had an audience with Marquis Wu.
Marquis Wu said:

"You live in a mountain forest eating berries and nuts and have to be satisfied with onions and garlic, only visiting me infrequently. Now you've gotten old, huh? Do you now want to come share some hearty food and wine with me? To share in the feast and sacrifices to the god of the harvest?"
Xu Wu Gui said:
"I was born into humble poverty. I wouldn't dare drink your wine or eat your rich food. I've come to sympathize with you."
The Marquis said:
"Why? What would you want to sympathize with me about?"
"I sympathize with both your spirit and outer form."
Marquis Wu said:
"What do you mean by that?"
Xu Wu Gui said:
"The heavens and the earth nourish all things equally. Just because someone has risen to the top of the heap doesn't mean they should get preferential treatment. Just because someone was left behind at the bottom doesn't mean they should be treated as any lower. You alone may be the commander of ten thousand chariots, but you embitter all the people within your state by only being interested in feeding your ears, eyes, nose and mouth with no regard for your spirit. The spirit thrives on harmony and decays on debauchery. Since your debauchery has caused you to be diseased, I sympathize with you. Do you think there's anything you can do to cure your disease?"
Marquis Wu said:
"I've been wanting to see you for a long time. I want to show compassion to the people and act righteously by putting an end to the warfare. Would that work?"
Xu Wu Gui said:
"No, it wouldn't. Having compassion for people starts a cycle of harming people. Using the concept of righteousness to end warfare is the root of creating more warfare. If you decide to act that way, then you'd not only put yourself in great danger but you'd never succeed. And if you were to view any success you had as a beautiful thing, that would be a tool for further destruction. If you set forth the ideas of benevolence and righteousness, how many more pretenses would that create! When appearances are used to set up what are acceptable behaviors, success depends on cutting off certain things, and these enforced changes cause outward expressions of strife.
"In addition to what you suggested before, you must not line up your troops in their military uniforms between the towers outside the city, nor should you have your foot soldiers and horsemen on guard at the palace altar. Don't harbor resentment for other's achievements, don't use cleverness to try to outwit others, don't come up with schemes to try to gain victory over others, and don't engage in battles with others in order to get the upper hand. If you kill the people along with the soldiers and grab up all their land, thinking this will nourish your personal and spiritual goals, then how can you know what the war is good for? How could you determine what a victory would depend on? You seem to have already prevented yourself from looking honestly within, believing you're responding sincerely to the heavens and earth but refusing to go deeper. Once people had already died or left your domain, what use would there be then to get rid of your soldiers!"

Huang Di was looking for Da Kui in the Ju Ci mountains. Fang Ming (Sharp at Steering) was his carriage driver. Chang Can (Adept Navigator) rode with him in the chariot. Zhang Ruo (Businessman) and Xi Peng (Eloquent Friend) walked in front of the horses. Kun Hun (Keeper of the Inner Gate) and Hua Ji (Clever Inspector) walked behind the carriage. When they reached the open country outside the city limits of Xiangcheng all seven of the wise men had lost their way, and there wasn't a place to ask for directions.
They came upon a young boy herding a group of horses and decided to ask him if he knew the way:
"Do you know of the Ju Ci mountains?"
"Yes."
"Do you know where Da Kui is located?"
"Yes."
Huang Di said:

"How Strange! This little boy not only knows of Ju Ci mountains, but also knows where Da Kui is located. May I ask what you know about dealing with the world?"
The little boy said:
"How to deal with the world seems as simple as what I'm doing right now, and nothing more than that. So, what's the problem? When I was much younger I traveled within the six directions, and my wanderings just made me dizzy and nauseous. One of my older teachers told me: 'Try riding on the chariot of the sun while wandering in the open country outside the city limits of Xiangcheng.' Now I've recovered a bit from my nausea by instead wandering outside of the six directions. Dealing with the world is as simple as what I'm doing right now, and nothing more than that. Here I am, so what's the problem?"
Huang Di said:
"Dealing with the world is indeed not something a small child would consider to be a problem, but even so, I'd still like to ask you how to deal with the world."
When the small boy didn't provide an answer, Huang Di asked him the question again.
The small boy said:
"Is dealing with the world any different than herding horses? Just stay away from anything that might harm the horses, and that's all!"
Huang Di repeatedly bowed several times, giving the boy the respect due a Master, and left.

Students who seek knowledge but don't consider themselves to have changed anything by that will be unhappy. Students who enjoy debating but don't feel their words have created a sense of order will be unhappy. Students who look for solutions to everything but haven't been able to make reformative changes will be unhappy. All of them are limited by something. Students who attract attention from the rest of the world rise in government positions. Students who comfortably mingle with others are honored by their employers. Students who excel in physical strength are useful for overcoming disasters. Students who are brave and daring are roused by conflicts. Students who like using weapons and wearing armor are happy to go to war. Students who tire out easily will seek comfortable positions. Students who are interested in legal matters will elaborate on the laws. Students who embrace manners and piety will respectfully endure whatever comes their way. Students who practice the ideas of benevolence and righteousness will place a high value on boundaries.
A farmer without weeds to pull and fields to plow would feel insignificant. A merchant without a sales route or a marketplace in which to deal his goods would feel insignificant. If the common people are kept busy with doing chores from dawn to dusk, then that calms them down. If the blue collar workers have ingenious machines to work with, then they feel strong in their jobs. If those who strive to be wealthy don't feel like they've accumulated enough, then their greed causes them grief. If those who seek power and influence don't feel outstanding, then their sense of self-worth causes them sadness. Because they're influenced by other things, their vain attempts at happiness are thwarted. They try to find a use for any situation they come upon, and they can't resist the urge to act on it. They all follow along with the idea that they must be significant as they grow older and never find any way to take it easy. They rapidly spread their own personal ambitions to the detriment of all other living things, and for their whole lives they don't see things any differently. How sad!

Zhuangzi said:
"If an archer doesn't take aim first but still hits the center of the target, and we still call him a good shot, then we could say that everyone in the world could be as esteemed as Yi, couldn't we?"
Hui Zi said:
"We could."
Zhuangzi said:
"If the world doesn't have a common consensus as to what's right, and we say that each person's perception of what's right can be right, then we could say that everyone in the world could be as esteemed as Yao, couldn't we?"
Hui Zi said:
"We could."

Zhuangzi said:
"Okay then, if we take the four schools of Confucians, Mohists, Yangists and Bingists, then add your own school of thought to that making five, how can we come up with which one is actually right? Maybe it's someone like Lu Ju (Hasty and Blunt)? One of his disciples said: 'I've achieved my Master's Dao. In the winter I can set a fire under a cauldron, and in summer I can create ice.' Lu Ju told him: 'That's correctly using Yang to summon Yang and using Yin to summon Yin, but that's not what I mean by Dao. I'll show you my Dao.' Thereupon he tuned his psalteries (ancient stringed instruments resembling zithers), and placed one in the hall and the other in his bedroom. When he plucked a string tuned to gong (a C note), that string on the other psaltery resonated. When he plucked a string tuned to jiao (an E note), that string on the other psaltery resonated. That was because each instrument had been tuned exactly the same. If a string on one of the instruments had been retuned so it didn't match any of the standard five notes (there were only five musical notes recognized: C, D, E, F, A) and if that particular string was plucked, all twenty-five strings on the other instrument would resonate. That wouldn't be because it was creating an unusual sound, but because that particular note was dominant over the others. Isn't that what someone who thinks they're right does?"
Hui Zi said:
"The Confucians, Mohists, Yangists and Bingists are currently trying to cut me down with their debates, arguing with me by citing ancient texts and trying to suppress me with their loud voices, but they haven't been able to prove I'm wrong. So, what about that?"
Zhuangzi said:
"A man from the state of Qi amputated his son's feet and sent him off to the state of Song to receive the honorable position of being a gatekeeper since he wasn't physically whole.
(Note: A gatekeeper who could not run away was more valuable, so they were deliberately mutilated.)
"A man of Ch'i sold his own son into service in Sung, having dubbed him Gatekeeper and maimed him;10 but when he acquired any bells or chimes, he wrapped them up carefully to prevent breakage. Another man went looking for a lost son, but was unwilling to go any farther than the border in his search - there are men as mixed up as this, you know. Or like the man of Ch'u who had been maimed and sold into service as a gatekeeper and who, in the middle of the night, when no one else was around, picked a fight with the boatman. Though he didn't actually arouse any criticism, what he did was enough to create the grounds for a nasty grudge."

Zhuangzi was taking part in a funeral procession when he passed the grave of Hui Zi. He turned around to face those behind him and said:
"There was a man from Ying who had a speck of plaster on the tip of his nose sitting there like the wing of a fly, so he requested that Carpenter Shi chop it off. Carpenter Shi swung his ax making a sound like hissing wind and chopped off the piece of plaster without causing any harm at all to his nose while the man from Ying just stood there without losing his composure. When Duke Yuan of Song heard about this feat, he summoned Carpenter Shi and said: 'I'd like you to try doing that on me.' Carpenter Shi said: 'As your servant I'm able to carve things. However, what I used as the substance for doing that particular feat died long ago.' My own dearest friend has died. I no longer have any substance to act upon! I no longer have anyone I can share in discussions with!"

When Guan Zhong was ill, Duke Huan asked him:
"Your illness seems to be getting worse, and even though I don't want to bring it up, you might eventually get seriously ill. If that were to happen, I'm wondering who I'd find to replace you. Do you have any suggestions?"
Guan Zhong said:
"Who would you want to appoint?"
The duke said:
"Bao Shu Ya (an old friend of Guan Zhong and long time supporter of Duke Huan)."
"He won't do. His behavior is that of a pure, honest and kind scholar, but he doesn't consider himself to be like other people and if he hears of the faults of another person he won't forget them for the rest of his life. If you put him in charge of running the country, at the highest level he'd latch onto you for support and at the lowest level he'd be contradictory to the welfare of the people. It wouldn't take long for him to get under your skin and offend you!"

The duke said:
"Okay then, who would you suggest?"
He replied:
"Since you insist I give a recommendation, I'd suggest Xi Peng (not the same Xi Peng mentioned above, but one of Duke Huan's advisers). His behavior is such that those who are superior aren't concerned about him usurping their positions, and those who are inferior don't feel he's any better than they are. He's ashamed he can't be more like Huang Di, and is apologetic for not being more like others. Those who share their virtue with others are called sagely. Those who share their assets with others are called worthy. Those who use their sense of self-worth as a basis for evaluating others will never find adequate assistants. Those who use their sense of self-worth as a means of feeling below others couldn't help but find adequate assistants. He doesn't promote those who have reputations throughout the state, nor does he ask for audiences for his own family. Since you insisted I give a recommendation, I suggested Xi Peng."

The King of Wu was floating down the Yangtze River and stopped to climb up a mountain to hunt for monkeys. When a group of monkeys saw him, they became agitated and suddenly rushed away escaping into the deep forest. There was one monkey who was hanging listlessly from a vine scratching at a flea and leering arrogantly at the king. When the king shot at it, it quickly and deftly grabbed the speeding arrow right out of the air. The king immediately ordered his assistants to shoot a bevy of arrows at it, and the monkey was killed and captured.
The king turned to his friend Yan Bu Yi (Unquestionable Dignity) and said:
"That monkey showed off its cleverness, relying on what it thought was advantageous skills, and was haughty toward me. So it ended up getting killed. Let this be a warning! Beware! Don't allow yourself to show the appearance of arrogance to others!"
When Yan Bu Yi returned home, he began studying under Dong Wu (Expressionless Tree) to learn to eliminate facial expressions. He got rid of smug expressions that showed his sense of power. After three years the people he came into contact with in the state commended him.

Nan Bo Zi Qi (Exalted Count of Southern Darkness) had been sitting alone at his table for some time when he looked up to the sky and let out a deep sigh.
When Yan Cheng Zi (Mr. Image of a Successful Traveler) came in and saw him sitting there he said:
"You're really one in a million. You can make your shape look like a withered skeleton, and your mind like dying embers!"
"I've had the experience of living in the mouth of a mountain cave. While I was there Tian He (Chief Minister of the state of Qi) once came to pay a visit, and everyone from the surrounding three states congratulated him. I must have made an impression on him, and therefore he wanted to know me. I must have given the impression I had something to sell, and therefore he came to barter with me. Since I didn't really have anything, what was there to get to know about me? Since I really didn't have anything to sell, what was there to barter for? Sheesh! I feel a sadness in my heart for those who give up the essence of their natural selves. I also have a sadness in my heart for those who have a sadness in their hearts. I also have a sadness in my heart for those who have a sadness in their hearts for those who have a sadness in their hearts. But that was a while ago and today I went far away."

When Zhong Ni (Confucius) was in the state of Chu, the king of Chu proposed a toast to him. Sun Shu Ao stood up holding up an ornamental wine goblet. Yi Liao of Shi Nan held up a glass of wine and offered these words:
"Person in touch with the words of antiquity! Share with us some words."
(Note: This is obviously a fictional story, as the characters mentioned lived in different centuries.)
"I've heard about speaking without using my own words, but I've never been able to do that myself. However, I'll try to speak that way now.

Yi-liao from south of the Market juggled a set of balls and the trouble between the two houses was resolved. Sun-shu Ao rested comfortably, waving his feather fan, and the men of Ying put away their arms. I wish I had a beak three feet long!"

They (Liao and Ao) were said to have followed Dao without speaking. He (Kong) was said to have argued his point without using many words. Therefore, true virtue inevitably comes from a unity with Dao, and when words are cut short and the knowledge expressed is based on not really knowing - that's getting somewhere. Those who form a unity with Dao realize that by their own virtue they can't possibly be the same as anyone else, and those who express knowledge while realizing they don't really know aren't able to hold up their end in arguments. By trying to create a name for themselves the Confucians and Mohists have fallen into a very deep pit.
The ocean doesn't reject the flow coming from the rivers eastward into it, and therefore is a symbol of great perfection. A sage joins together with everything contained in the bag between the heavens and the earth, whether it be wading through remote marshes or taking part in the world, and he doesn't recognize anyone in terms of which clan they belong to. So, he lives his life without a high rank and dies without great ceremonies to his honor. He doesn't need to have others gather around him to prove his reality, nor does he need to be regarded as famous to establish himself. These things can be used to describe a great person.
Just because a dog can bark well doesn't mean it's a good dog. Just because a person can speak well doesn't mean they're worth anything, let alone great! Simply being regarded as great doesn't mean someone is actually great, let alone that they're a person of virtue! Of the things endowed with greatness, nothing can match the heavens and earth. Who could seek to be like that and be so naturally endowed with greatness? One who understands her own natural greatness doesn't look for it, doesn't lose it, doesn't cast it away and doesn't allow other things to easily change who she is. She returns repeatedly to a sense of who she really is and doesn't feel that she's lacking in any way. She abides by what's been given to her nature by antiquity but doesn't become manipulative. This is the sincerity of a great person.

(Nan Bo) Zi Qi (Exalted Count of Southern Darkness) had eight sons. He lined them all up in front of him and called for Jiu Fang Yin (Nine Methods for Descriptions) and said:
"Taking a look at my sons, can you tell me which one is the most auspicious?"
Jiu Fang Yin said:
"Kun (Doormat) is the most auspicious."
Zi Qi was pleasantly surprised and said:
"What will happen to him?"
"Kun will dine at the same table as a monarch for the rest of his life."
Zi Qi became depressed at this news and asked with tears in his eyes:
"Why would my son have to suffer such an extreme thing?"
Jiu Fang Yin said:
"To have a son who'd end up dining with royalty would be something seen as advantageous by most of his distant relatives, and even more so by his parents! But now that you've heard this news you're crying as though you want to resist this blessing. Your son is auspicious, but his father doesn't see this as auspicious."
Zi Qi said:
"Yin, how are you able to recognize exactly how Kun will be auspicious? You might be able to see that he'll drink lots of wine and eat lots of food by the characteristics of his nose and mouth, but how can you tell for sure how he'll get those things? I've never been a shepherd, but a lamb was born at the southwest corner of my house. I've never been fond of trapping animals, but a quail was born at the northwest corner of my house. These things don't seem strange, do they?
(Note: These are signs of being lucky. The natural position for sheep in Chinese astrology is the northwest. The natural position for the rat in Chinese astrology is the north - the rat was supposed by the ancient Chinese to turn into a quail in the spring.)

"My son and I have been wandering, just sort of traveling where the world might take us. Together we accept the joys from the heavens and the food from the earth, but we don't engage in other's affairs, don't do much of anything, and don't consider this to be strange. We ride along together with whatever comes naturally from this great earth and don't get stirred up by our contact with other things. We're united in our winding and twisting through life and don't get involved in how others think we should tend to our affairs. Now I'm finding out there's some compensation being demanded. That seems like an odd thing for this world to lay at our doorstep, but I suppose we must go with this unusual situation. This dangerous situation can't be due to anything my son or I did wrong, yet why would the heavens lay this on us! That's why I've been crying."
Soon after, he sent Kun on an errand to the state of Yan. He was captured by some bandits on the road. They knew it would be difficult to sell him with all his limbs in tact, but they'd get a good price for him if he was missing his feet. So they cut off his feet and sold him in the state of Qi, where Duke Kang set him up as a watchman on a border of his land. He ate meat and drank wine for the rest of his life.
(Note: A slave who could not run away was more valuable.)

Nie Que (Cracked and Missing Teeth) came upon Xu You (a legendary hermit, student of Nie Que) and said:
"Where are you going?"
"I'm running away from Yao (legendary emperor, student of Xu You)."
"What do you mean?"
"Yao is so intent on encouraging benevolence that I'm afraid he'll end up being a laughing stock throughout the whole world, and that in the future people will end up seeing others as food (for their ambitions). All sorts of people wouldn't have any trouble attaching themselves to him, claiming they love him in order to be brought into his inner circle, showing him what they can do for him to gain promotions, praising him to become his advisers, but at that point if he does something they don't like they'll trash him. Love is one of the benefits that can be gotten from being benevolent and righteous, so those who are willing to give up on the ideas of benevolence and righteousness are few while those who seek to profit from them are many. To engage in benevolence and righteousness by putting on pretenses without being sincere is using them as tools of greed to capture people like birds. If it's left up to one person to decide the best method to benefit the world, the strength of his power being so absolute would be completely one sided. Yao knows that a worthy person could benefit the whole world, but he doesn't realize that there are some who would want to steal the whole world. It's only someone who doesn't make a determination of who's worthy that can understand that."

There are those who are faithfully naive. There are those who are immersed in neediness. There are those who are determinedly ambitious.
Those who are known as the faithfully naive will study the words of one Master, then because they're so faithful to him and so naive they'll feel self-satisfied and consider themselves to be quite sufficient in their learning, even though they really haven't understood anything and haven't progressed at all. Those are said to be the faithfully naive.
Those who are immersed in neediness are like a tick on a pig. They choose a place to implant themselves between the bristles on the pig's back, thinking they're in a huge palace with a big garden. Or they attach themselves in the folds of the groin, the creases of the hoof, between the teats in the belly or in the crook at the back of the knee or ankle and consider themselves to be safely planted in a beneficial place. They don't realize that when the butcher comes along one day making preparations for the sacrifice, he'll take them along with the pig to the roasting pit. Their progress is dependent on what they've attached themselves to, and their decline is dependent on what they've attached themselves to. Those are said to be immersed in neediness.
Those who are determinedly ambitious are like Shun. Mutton isn't attracted to ants, but ants are attracted to mutton, since mutton has a pungent smell. Shun's behavior must have had a pungent smell since most of the people in the state wanted to be around him. Therefore, after he moved his capital city three times, finally settling in the ruins of Deng, ten thousand families followed him. Yao heard of Shun's abilities and praised him as a child of the earth's soil, saying that he hoped he'd receive blessings from everything he did. By the time Shun was praised as a

child of the earth's soil, he was already showing wear from his age and his clarity had diminished, so he never got the opportunity to take a rest and retire. Those are said to be determinedly ambitious.
So a spiritual person doesn't like to be surrounded by a bevy of admirers. If they crowd around him like that, he doesn't make comparisons between them, and by not making comparisons he's of no benefit to anyone. In that way no one feels like they're closer to him than anyone else, but no one feels shunned either. He embraces virtue and encourages harmony by being subservient to the world. This is what's known as a true person.
Like ants, abandoning knowledge. Like fish, achieving proper arrangements. Like sheep, abandoning expectations. Use the eyes to watch with the eyes. Use the ears to listen with the ears. Use the mind to respond with the mind. One who does those things would be as balanced as a string holding a weight and as adjustable as a buckle on a belt. The true people in ancient times waited on the heavens to guide them, and didn't try to use other people to help them connect to the heavens. Such were the true people in ancient times.
Achieve life and lose death. Achieve death and lose life. There are lots of medicines which can be used: Jin, Jie Geng, Ji Yong, Shi Ling (various medicinal plants used as cures for maladies). Each one of them can be important to use for a specific illness, but who could cure anything by just reciting their names?
Gou Jian took refuge on Kuai Ji mountain with three thousand armed troops. Only Zhong was allowed to know where they were hiding, but what Zhong didn't know was that he should have been in fear for his life.
Therefore it's been said:
"The hawk's eyes are especially suited for their purpose and the crane's legs are properly proportioned. To eliminate those things from either creature would cause them grief."
Therefore it's been said:
"When the wind blows excessively over a river the water evaporates. When the sun beats down excessively over a river the water evaporates." But even if the river and the sun both were in close contact with the river at the same time, the river wouldn't consider this to be the beginning of its disruption because it just depends on its source to keep flowing along. Taking a close look, it's obvious that water stays close to the land, a shadow stays close to a person, and things stay close to other things.
Therefore it can be dangerous for one's eyes to peer intently at one thing. It can be dangerous for one's ears to listen intently to one thing. It can be dangerous for one's mind to be single-sightedly in pursuit of one thing. It can be even more dangerous to keep doing those things all the time, especially if there's a sense of trying to achieve something by doing those things without feeling a need to change. Misfortunes will seem to keep piling up and each moment will be filled with dense rubble. It takes a lot of skill to be able to dispense with the rubble and it might take a long time to see any results. So people prefer to think those things make them treasured individuals. Isn't that sad! They go on destroying each other's states and slaughtering the people endlessly, not knowing to question why this is happening.
A foot placed on the earth is taking a step, but although it's just taking one step if we depend on the places we haven't stepped on yet then we can be assured of making progress. People's knowledge is small, but although it's small if we depend on what we don't know then we can understand what's meant by the heavens:
Knowing of a great unity
Knowing of a great mystery
Knowing of a great vision
Knowing of a great equalness
Knowing of a great method
Knowing of a great trust
Knowing of a great order
.... It's perfect!
The great unity connects everything.
The great mystery explains everything.
The great vision looks at everything.
The great equalness contributes to everything.
The great method forms everything.

The great trust evaluates everything.
The great order supports everything.
Give the utmost priority to the heavens. Follow the glow. Be unified with the pivot. These are the starting points. Then what you thought you understood will appear as misunderstanding, and what you thought you knew will appear as ignorance. Through ignorance comes knowledge. Questions about this can't be constricted, yet they can't be without constrictions. Though abstract and evasive, it has substance. It isn't marked by time throughout the centuries, and can't be depleted. So how could it not be able to be talked about and spread through discussions! If we stopped asking questions about it, how much doubt and confusion there would be. If we use that which there is no doubt about to remove doubts and recover that which there is no doubt about, then that can be esteemed as the greatest place to be without uncertainty.

२४|क्सु वू गुई (बिना रहस्यों के)

नु-शांग ने क्सु-वू-गुई के लिए वेई के मार्की वू से मिलने का प्रबंध किया|
मार्की ने उसे सहानुभूति से कहा:
“तुम्हारा जीवन बहुत ही कठिनाइयों से भरा हुआ है! तुम्हे इन पर्वतीय वन में होने वाली कठिनाइयों के लिए सहानुभूति भी प्राप्त नहीं होती है इसलिए तुम इसे प्राप्त करने के लिए मेरे पास आये हो|”

क्सु-वू-गुई ने कहा:
"मैं तुम्हारे लीये सहानुभूति प्रकट करने आया हूँ| फिर तुम कैसे मेरे प्रति सहनुभुटिक हो सकते हो? तुम लगातार ही तुम्हारे अंदर निहित वासनाओ की पूर्ति करने में लगे हुए हो और बहुत ही लम्बे समय से तुम अपनी ही पसंद और नापसंद से इतने मनोग्रस्त हो गए हो की तुम्हारी प्राकृतिक संवेदनशीलता ही व्याधित हो गयी है! तुम अब प्रयत्न कर रहे हो अपनी वासनाओ को बाहर निकलने का और अपनी पसंद-नापसंद को सम करने का लेकिन इस प्रक्रिया में तुम्हारी अपनी बोधशक्ति की ग्रसित हो गयी है! यही कारण है की मैं तुम्हारे लिए सहानुभूति प्रकट करने आया हूँ न की तुम्हारी मेरे लिए सहानुभूति के लिए!"

मार्की वू एकदम से पृथक सा हो गया और उसने कोई जवाब नहीं दिया|
कुछ समय रुकने के बाद क्सु-वू-क्सी ने कहा :
“मैं एक कुते की तरफ देखकर ही उसका उसके रूप के द्वारा निर्णय कर पाता हूँ की वह एक कुत्ता है| वह जो निम्न गुणों का होता है - अपने चारे ओर के वातावरण ग्रहण करता है, स्वयं को संतुष्ट करता है और रुक जाता है - ये सभ एक बैल के गुण है| वह जो माध्यम गुणों का होता है सूर्य की तरफ देखता हुआ प्रतीत होता है| और जो सबसे उच्च गुणों का होता है वह स्वयं को भुला हुआ होता है| लेकिन मैं एक घोड़े का निर्णय एक कुते से बेहतर कर सकता हूँ| एक घोड़े का पता लगाते समय यदि वह पूर्ण रूप से एक सीधी रेखा में चलता है, आठ अंक जैसे आकृति में सहजता से घूम सकता है, जिसे आसानी से आडा या तिरछा मोड़ा जा सकता है और जो आदेश देने पर एक चक्र में भी घूम सकता है तब वह घोडा एक राज्य के लिए उपयोग किये जा सकने वाला घोडा होता है|
हालांकि वह एक प्राकृतिक स्वभाविक घोडा नहीं होता है| एक प्राक्रतिक व्यवहार का घोडा अपनी स्वभाविक क्षमताओ का विकास कर चूका होता है| वह अपूर्ण और दोषयुक्त प्रतीत होता है जैसे की वह जो वह है उससे अलग कुछ होना ही नही चाहता है| इस प्रकार होकर, वह अपने पीछे धुल छोड़ते हुए एक तेज रथ से भी तेज भाग सकता है बिना इसे समझे की वह एक घोड़े की तरह व्यवहार करना क्या होता है|"

मार्की वू इस पर बहुत ही खुश हुआ और हंसने लग गया|
जब क्सु-वू-गुई वहा से आ गया तब नु-शांग ने उनसे पूछा:
"श्रीमान, आपने वहा क्या बातचीत की जब आप वहा मेरे स्वामी के साथ अकेले थे? जब मैं उनके साथ विचार विमर्श करता हूँ तो मैं सही-जिंग, शु-जिंग-ली-जी-युए-जिंग-से उद्धरण करता हूँ| इसके बाद मैं जिन-बन (सुनहरी पुस्तक) से और लिऊ-ताओ से उद्धरण करता हूँ| यदि वे उन आदेशो का पालन करते है जो मुदो का हल करने के लिए इन पुस्तकों में बताये गए है तब उनके लिए आलोचना पाने का कोई मार्ग नहीं रह जाता है| लेकिन फिर भी मैंने इससे पहले उन्हें हँसते हुए कभी नहीं देखा है| अब आपने उनसे क्या कहा जिसने उन्हें इस तरह हंसाया और आनंदित कर दिया?"

क्सु-वू-गुई ने कहा :
"मैंने उन्हें बस यह बताया की मैं एक घोड़े और कुते की पहचान कैसे करता हूँ|"

नु-शांग ने कहा :
"क्या यही बताया है?"

“क्या तुमने नहीं सुना है उस व्यक्ति के बारे में जिसे युए राज्य से बाहर निकाल दिया गया था| जब वह कुछ दिनों के लिए अपने ही राज्य से दूर था तब वह खुश होता था हर किसी से मिलकर जिसे वह जानता था| जब वह कुछ महीनो से अपने राज्य से अलग था तो वह खुश होता था हर किसी से मिलकर जो उसके राज्य का था| जब वह अपने राज्य से एक साल से अलग था वह खुश होता था उससे मिलकर जो अनिश्चित रूप से भी उसके राज्य के व्यक्ति जैसा होता था| वह याद करता था जिनको वह

जानता था| यदि किसी को विशाल जंगल में छोड़ दिया जाए जहाँ कटीली झाडिया और कांटेदार वृक्ष इतने घने हो की केवल एक क्रीनता और नकुल ही उन्हें पार कर पाए तो वह उनमे सावधानी से अपने पैर को रखते हुए लड़खड़ा रहा होगा और तभी उसे किसी और व्यक्ति के पैरो की आवाज सुने तो वह बहुत खुश होगा| तब वह कितना अधिक खुश होगा यदि उसे अपने प्रियजनों की हंसी और फुसफुसाहट सुनने को मिले! यह बहुत ही लम्बा समय हो गया है जबसे मेरे स्वामी ने अपनी प्रिय जनों की हंसी और फुसफुसाहट अपने पास सुनी है!"

क्सु-वू-गुई का मार्की वू से मिलना हुआ|
मार्की वू ने कहा :
"आप पहाड़ी जंगलो में बेरी और अखरोट खाते हुए रहते है और आपको प्याज और लहसुन खाकर संतुष्ट होना पड़ता है, आप मेरे पास भी बहुत कम आते हो| अब आप बूढ़े भी हो गए हो, क्या नहीं? क्या आप अब मेरे पास आना चाहेगे बढ़िया भोजन और मदिरा का लुत्फ़ उठाने के लिए? फसलो के देवता के लिए दी जाने वाली बलि और भोज में सम्मिलत होने के लिए?"

क्सु-वू-गुई ने कहा :
"मेरा जन्म बहुत ही दरिद्रता में हुआ है| मैंने कभी मदिरा और तुम्हारे जैसा शाही भोजन करने की जोखिम नहीं लिया| मैं तुम्हारे लिए सहानुभूति प्रकट करने आया हूँ|"

मार्की ने कहा :
"क्यों? तुम मेरे लिए किस संदर्भ में सहानुभूति प्रकट करना चाहते हो?"

“मैं तुम दोने से तुम्हारी आत्मा और तुम्हारे बाह्य रूप से सहानुभूति रखता हूँ|"

मार्की वू ने कहा :
"आपका इससे क्या अर्थ है?"

क्सु-वू-गुई ने कहा :
"स्वर्ग और धरती सभी प्राणियों का एक सामान लालन पोषण करते है| केवल इसलिए की कोई शिखर पर पंहुचा हुआ है इसका अर्थ यह नहीं है की उससे कोई विशिष्ट व्यवहार किया जाएगा| केवल इसलिए की कोई पीछे छूटा हुआ है इसका अर्थ यह नहीं है की उसके साथ निम्न व्यवहार किया जाएगा| तुम अकेले दस हज़ार रथो के सेनाध्यक्ष हो सकते हो पर तुम केवल अपने आँख, कानो, नाक और मुह से सुख भोगने में इच्छुक होकर अपनी आत्मा का ध्यान किये बिना केवल लोगो को बिगाड़ रहे हो| आत्मा माधुर्य के साथ फलती फूलती है और व्यभिचार से इसका ह्रास हो जाता है| क्योंकि तुम्हारे व्यभिचार ने तुम्हे रोगी कर दिया है मैं तुहारे साथ सहानभूति रखता हूँ| क्या तुम सोचते हो की तुम्हारे पास कोई भी ऐसे चीज़ है जो तुम्हारे इस रोग का उपचार कर सकती है?"

मार्की वू ने कहा :
"मैं बहुत दिनों से आपसे मिलना चाह रहा था| मैं लोगो के साथ दयाभाव रखना चाहता हूँ और धर्म के साथ व्यवहार करके युद्ध पर विराम रखना चाहता हूँ| क्या यह काम करेगा?"

क्सु-वू-गुई ने कहा:
“नहीं यह नहीं करेगा| लोगो के लिए दयाभाव का होना उनको क्षति पहुचने वाले एक चक्र की शुरुआत कर देता हैं| युद्ध को रोकने के लिए धर्म के सिद्धांत का उपयोग करना, यही तो मूल है कारण है भविष्य में युद्ध पैदा करने का| अगर तुम इस तरह से व्यवहार करना चुन रहे हो तो तुम केवल स्वयं को और खतरे में दाल रहे हो और कभी सफल नहीं होगे| और अगर तुम किसी भी प्रकार की सफलता को एक खुबसूरत वस्तु की तरह देखते हो तो यह तुम्हारे आगे होने वाले विनाश का ही साधन है| अगर तुम धार्मिकता और दया के मतों को स्थापित करते हो तो ये ढोंग उत्पन्न कर देते है! जब दिखावे को ही स्वीकार करने योग्य आचरण मन जाए और सफलता विभिन्न वस्तुओ के ह्रास पर निर्भर हो तब ये लागु किये गए बदलाव केवल संघर्ष और कलह को ही पैदा करते है|
"इसके साथ ही जो मैंने तुम्हे पहले सुझाया है की तुम्हे शहर की सीमा पर सैनिको को वर्दी पहनकर तैनात नहीं करना चाहिए और न ही तुम्हे रक्षको को और घुड़सवारो को महल के चारो और लगाना चाहिए| दुसरो की सफलताओ के प्रति द्वेष मत रखो,

दुसरो को निचा दिखने के लिए चतुरता का उपयोग मत करो, और दुसरो पर विजय पाने के लिए षड्यंत्रमत रचो और अपने आप को ऊँचा साबित करने के लिए दुसरो के साथ युद्ध में सम्मिलित मत होओ| यदि तुम अपने सैनिको के साथ मिलकर लोगो की हत्याए करते हो और उनकी भूमि को हड़प लेते हो यह सोचते हुए की यह तुम्हे व्यक्तिगत और अध्यात्मिक रूप से समृद्ध करेगा और तुम्हारे लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होगा तब तुम कैसे जान सकते हो की युद्ध किस चीज़ के लिए अच्छा होता है? तुम कैसे अनुमान लगा सकते हो की विजय किस पर निर्भर करती है? तुम पहले ही स्वयं को अपने प्रति इमानदार होने से बचा रहे हुए प्रतीत हो रहे हो, यह विश्वास करते हो की तुम स्वर्ग और धरती के साथ निष्ठा से व्यवहार कर रहे हो लेकिन तुम और गहन जाने से मना कर रहे हो| एक बार जब लोग मर जाते है और तुम्हारे लिए सभ छोड़ जाते है तब क्या उपययोग रह जाता है तम्हारे सैनिको को वहा से हटाने का!"

हुंग-दी 'जू-की' पहाड़ो में डा-कुई को खोज रहा था| फंग-मिंग उसके रथ का सारथि था| चंग-कैन उसके रथ के साथ साथ चल रहा था| जहाँग-रो और क्सी-पेंग उससे आगे अपने घोड़ो पर चल रहे थे| कुन-हूँ और हुआ-जी उसके पीछे पीछे चल रहे थे| जब वे क्सिंग्चेंग की राजकीय सीमओं से अनजाने स्थान पर पहुच गए तब वे सातो ज्ञानी व्यक्ति अपनी दिशा भूल गए और मार्ग से भटक गए और वह पर कोई स्थान ऐसा भी नहीं था जहाँ से वो अपनी दिशा का पता लगा सके|
उन्हें एक लड़का दिखा जो की अपने घोड़ो को चरा रहा था तब उन्होंने उससे पूछने का निर्णय किया यदि वह कुछ जानता हो तो:
"क्या तुम जू-की पर्वतके बारे में कुछ जानते हो?"
"हाँ|"
"क्या तुम जानते हो की डा-कुई कहा रहता है?"
"हाँ|"

हुंग-दी ने कहा :
"कितना अजीब है की यह छोटा लड़का न केवल जू-की पर्वतो के बारे में जानता है बल्कि यह भी जानता है की डा-कुई कहाँ है| क्या मैं यह जान सकता हूँ की तुम संसार के साथ व्यवहारित होने के बारे में क्या जानते हो?"

उस छोटे लड़के ने कहा :
"इस संसार के साथ व्यवहार कैसे किया जाए यह तो इतना आसन कार्य है जैसा की अब मैं कर रहा हूँ और इससे ज्यादा कुछ भी नहीं है| फिर इसमें दिक्कत क्या है? जब मैं छोटा था मैंने छह दिशाओ की यात्रा की लेकिन मेरे इस भटकने ने मुझे केवल अस्थिर और घृणास्पद बना दिया| मेरे सबसे बुजुर्ग आचार्यो में से एक ने बताया था| सूर्य के रथ की सवारी करने का प्रयत्न करो जब तुम क्सिंग्चेंग शहर की सीमओं से बाहर घूम रहे हो| और अब जाकर मैं छह दिशाओ में भटकना छोड़कर अपनी इस अस्थिरता और घृणास्पदता से थोडा उभरा हूँ| इस संसार के साथ व्यवहारित होना तो इतना आसन कार्य है जैसा की अब मैं कर रहा हूँ और इससे ज्यादा कुछ भी नहीं है| फिर इसमें दिक्कत क्या है?"

हुंग-दी ने कहा:
"इस संसार के साथ व्यवहारित होना मात्र कोई ऐसे चीज़ नहीं है जिसे एक छोटा लड़का किसी प्रकार की दिक्कत समझ सके पर फिर भी मैं अब भी तुमसे इस बारे में जानना पसंद करोगा|"

जब छोटे लड़के ने कोई जवाब नहीं दिया हुंग-दी ने फिर से वही प्रश्न किया|
छोटे लड़के ने कहा :
"क्या इस संसार के साथ व्यवहारित होना इन घोड़ो के झुण्ड को चराने से भिन्न है? केवल उन्हें दूर रखो उन वस्तुओ से जो घोड़ो को नुकसान पहुचा सकती है, बस यह तो करना होता है!"

हुंग-दी ने लगातार बार बार अपना सिर उस लड़के के सामने झुकाया जैसे की वो अपने गुरु को सम्मान दे रहा हो और वहां से निकल गया|

विद्यार्थी जो ज्ञान को प्राप्त करना चाहते है पर स्वयं को उसके द्वारा बदलना नहीं चाहते है वे कभी खुश नहीं होते है| विद्यार्थी जो तर्क वितर्क में आनंदित होते है पर नहीं सोचते है की क्या उनके शब्दों का कोई अर्थ है या नही वे दुखी ही होते है| विद्यार्थी जो हर वस्तु का हल खोजने की कौशिश करते है पर कोई बदलाव नहीं ला पाने में सक्षम होते है वे दुखी ही होते है| ये सभ

किसी न किसी चीज़ से सीमित है| विद्यार्थी जो पुरे संसार से ध्यान आकर्षित करते है उन्हें ऊँचे पदों पर नियुक्त किया जाता है| विद्यार्थी जो आपस में मेल झोल बढ़ाते है उन्हें उनके सहकर्मियों द्वारा सम्मान दिया जाता है| विद्यार्थी जिनकी शारीरिक क्षमता अधिक होती है वे विप्पतियो से लड़ते वक़्त उपयोगी होते है| विद्यार्थी जो साहसी और बहादुर होते है वे संघर्षो से उतेज्जित होते है| विद्यार्थी जो अस्त्र शास्त्र चलने में निपुण होते है वे युद्ध में जाना पसंद करते है| जो विद्यार्थी जल्दी ही थक जाते है उन्हें विश्राम वाले सहज पदों पर नियुक्त किया जाता है| जो विद्यार्थी कानूनी व्यवस्था में रूचि रखते है उन्हें नियमो पर प्रकाश डालने के लिए नियुक्त किया जाता है| विद्यार्थी जो सही आचरण और दया भाव में आलान्गित होते है वे जो भी उनके मार्ग में आता है उसको सहन कर लेते है| विद्यार्थी जो धार्मिकता और उदारता के मतों का अभ्यास करते हा उन्हें दूर सीमओं पर अधिक महत्व पूर्ण पद दिए जाते है|

एक किसान जिसके पास बोने के लिए बीज न हो और जोतने के लिए खेत न हो तो वह बहुत अपर्याप्त अनुभव करेगा| एक व्यापारी बिना यात्रा के लिए मार्गो के और बिना अपना सामन बेचने के लिए बाजारों के बहुत ही अपर्याप्त अनुभव करेगा| यदि साधारण मनुष्यों को दिन भर व्यस्त रखा जाए बिना उनसे घर का काम करवाए तो यह उन्हें शांत करता है| अगर बड़े कर्मचारियों के पास उनका कार्य करने के लिए बड़ी मशीन हो तो यह उन्हें अपने कार्य के प्रति मजबूत बनता है| यदि वे जो हमेशा धनवान होने के भूखे रहते है उन्हें अनुभव न हो की वे पर्याप्त पा चुके है तब उनका लालच उनक दुःख का कारण बनता है| यदि वे जो ताकतवर होना चाहते है उन्हें ताकत का अनुभव न हो तब उनका स्वयं के प्रति प्रेम उन्हें उदास कर देता है| क्योंकि ये सभ बाह्य वस्तुओ से प्रभावित होते है इसलिए सुख पाने के उनके व्यर्थ के प्रयत्न नाकाम ही रहते है| तब वे किसी भी परिस्थिति का अपने लिए उपयोग खोजने की कौशिश करते है और परिस्थितयो में हस्तक्षेप करने की अपनी पवृति को रोक नहीं सकते है| तब वे सभी इस मत को मानते है की जैसे जैसे वे बड़े हो रहे है उन्हें और महत्वपूर्ण होना चाहिए तथा वे इस प्रकार कभी भी इसे सहजता से देखने का मार्ग नहीं खोज पाते है| वे बड़ी शीघ्रता से अपनी व्यक्तिगत अभिलाषाओ का फैलाव करते है और सभी वस्तुओ को इनसे क्षति पहुचाते है और पुरे जीवन में वे वस्तुओ को इससे भिन्न नहीं देख पाते है| कितना उदासीन है यह!

ज्हुंग्ज़ी ने कहा:
"यदि एक धनुर्धर प्रथम निशाना नहीं लेता है और तब भी लक्ष्य को मध्य में भेदता है और फिर भी हम इसे एक अच्छा निशाना कहते है तो तब हम कह सकते है की हर कोई इस संसार में 'यी' जितना सम्मानित है, क्या हम नहीं कह सकते है?"

हुई-ज़ि ने कहा:
"हम कह सकते है|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"यदि इस संसार के पास जो सही उसके लिए एक आम राय न हो और हम कहे एक व्यक्ति की समझ के बारे में की क्या सही है, वह सही हो सकती है तब हम कह सकते है की इस संसार में हर कोई 'यो' की तरह सम्मानित है क्या हम नहीं कह सकते है?"

हुई-ज़ि ने कहा:
"हम कह सकते है|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"ठीक है तब, यदि हम चारो पंथो कांफुसियंस, मोहिस्ट्स, यांगिस्ट्स और बिन्गिस्ट्स को देखे और तब तुम इनके साथ एक अपना भी जोड़ लोगे तो वो पांच हो जायेगे, फिर तुम कैसे इस निष्कर्ष पर आ सकते हो की इनमे से कौन सा वास्तव में सही है? हो सकता है की कोई लू-जू जैसा हो? उसके शिष्यों में से एक ने उससे (लू-जू से) कहा कहा:'मैंने अपने आचार्य की ताओ को प्राप्त कर लिया है| सर्दियों में मैं अग्नि उत्पन्न कर सकता हूँ और गर्मियों में मैं बर्फ जमा सकता हूँ|'लू-जू ने उससे कहा:'यह बिलकुल ठीक है यंग का उपयोग यंग का आवाहन करने के लिए करना और यिन का उपयोग यिन के आवाहन के लिए करना लेकिन मेरा ताओ से यह अर्थ नहीं है| मैं तुम्हे अपनी ताओ दिखाता हूँ|'
इसके बाद उसने अपने वाद्ययंत्रो को लय में किया और उनमे से एक को तो अपने कक्ष मे रख दिया और एक को सभा भवन में रख दिया| जब उसने एक वाद्ययंत्र के एक तार को खिंचा जिससे 'गोंग' धुन बजती थी तब उस दुसरे रखे वाद्यंत्रसे भी वही ध्वनी उत्पन्न हुई| जब उसने एक तार को खिंचा जिससे 'जिअब' धुन बजती थी तब उस दुसरे रखे वाद्यंत्रसे भी वही ध्वनी

उत्पन्न हुई| यह इसलिए था की वे दोनों वाद्यायंत्र एक दुसरे के साथ पूर्ण एक जैसी लय में थे| यदि एक वाद्ययंत्र पर एक तार को खिंचा जाए जो सातो स्वरों में से कोई ध्वनी उत्पन्न न करे तो दुसरे वाद्ययंत्र के भी सभी पच्चीस तार वही प्रति ध्वनी उत्पन्न करेगे| यह इसलिए नहीं था की यह कोई असाधारण सी धुन थी पर इसलिए था की वही विशिष्ट धुन सभी दूसरी धुनों के ऊपर प्रभावी थी| यह कुछ ऐसा नहीं था जिसे कोई भी सोचे है की यह सही है?"

हुई-ज़ि ने कहा:
"कांफुसियंस, मोहिस्ट्स, यांगिस्ट्स और बिन्गिस्ट्स ये सभी अपने तर्कों द्वारा मुझे निचा दिखने का प्रयत्न कर रहे है ये प्राचीन आलेखों का हवाला देते हुए तर्क-वितर्क करते है और मुझे अपनी तेज आवाजो द्वारा निचे दबाने की कौशिश कर रहे है लेकिन अब तक यह सिद्ध करने में सफल नहीं हुए है की मैं गलत हूँ| तो अब इसके बारे में क्या किया जाए?"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"'की' राज्य के एक व्यक्ति ने अपने पुत्र के पैर को कटवा दिया और उसे सोंग राज्य में भेज दिया वहा के द्वारपाल के सम्मानित पद को पाने के लिये क्योंकि अब वो शरीर से सम्पूर्ण नहीं था| (एक द्वारपाल जो भाग नहीं सकता था उसे ज्यादा मूल्यवान समझा जाता था इस पद के लिए)
"एक 'ची' शहर के व्यक्ति ने अपने ही पुत्र को सुंग में नौकरी के लिए बेच दिया, उसे एक द्वारपाल की तरह सवांरा और ऊसका पैर काट दिया; लेकिन जब भी उसे कोई भी घंटी या इनाम प्राप्त होता तब वह उन्हें संभाल के पकड़ लेता ताकि वे टूट न जाए| एक और व्यक्ति जो अपने खोये हुए पुत्र की तलाश कर रहा था फिर भी इसके लिये वह अपने राज्य की सीमा से ज्यादा बाहर जाने को इच्छुक नहीं था - यहाँ पर इतने उलझे हुए व्यक्ति भी हो सकते है तुम जानते हो|
या फिर उस छु के व्यक्ति जैसे भी हो सकते है जिसने स्वयं के अंग को काट लिया और द्वारपाल की नौकरी के लिए बेच दिया तथा जब रात्रि के मध्य में जब कोई भी आस पास नहीं था एक नाविक के साथ झगडा शुरू कर लिया| यद्यपि उसने वास्तव में उसकी कोई आलोचना नहीं की थी पर उसने जो किया वह वैर भाव को बढाने के लिए पर्याप्त था|"

ज्हुंग्ज्ही एक अंत्येष्टि क्रिया के लिए पंहुचा हुआ था जब वह हुई-इ की कब्र के पास से गुजरा| उसने अपने मुंह को जो उसके पीछे खड़े हुए थे उनके पास घुमाया और कहा :
"यंग-में एक व्यक्ति था जिसकी नाक पर एक धब्बा था उभरा हुआ एक मक्खी के पंखो की तरह इसलिए उसने इसे काटने के लिए उसने बढई 'सही' से विनती की| बढई 'सही' ने अपनी आरी को घुमाया और हिस्स की ध्वनी के साथ ही उस काले धब्बे को उससे अलग कर दिया बिना उसे कोई क्षति पहुचाये जबकि वह यिंग का व्यक्ति वैसे ही खड़ा रहा बिना अपना संयम खोये| जब सम्राट युआन ने इस प्रसंग के बारे में सुना उसने बढई 'सही' को बुलावा भेजा यह कहकर की इसका प्रयत्न मेरे ऊपर करने को मैं पसंद करूगा|
बढई 'सही' ने कहा आपके सेवक जैसे होकर मैं वस्तुओ को काटने छांटने में सक्षम होता हूँ| पर जिसका उपयोग मैं इसे करने के लिये साधन के तरह करता था उसकी मृत्यु बहुत समय पहले हो चुकी है मेरा प्रिय मित्र अब मर चूका है| अब मेरे लिए इसका उपयोग करने का कोई साधन नहीं है! मेरे पास अब कोई नहीं है जिसके साथ मैं इसके बारे में संवाद कर सकू|"

जब गुआन-ज्होंग बीमार था सम्राट हुआन ने उससे पूछा :
"तुम्हारा रोग और ही भयंकर होता जा रहा है, और यद्यपि मैं इसे ऐसा होता हुआ ही नहीं देखना चाहता पर फिर भी तुम्हारी हालत और बुरी होती जा रही है| यदि ऐसा हुआ तो मैं सोच रहा हूँ की तुम्हारी जगह कौन लेगा, क्या तुम्हारे पास कोई सुझाव है?"

गुआन-ज्होंग ने कहा:
"आप किसे नियुक्त करना चाहते है?"

सम्राट ने कहा:
"बो-शु-या (गुआन-ज्होंग का पुराना मित्र और लम्बे समयसे सम्राट हुआन का समर्थक)|"

"वह नहीं करेगा| उसका व्यवहार बिलकुल एक विद्वान् जैसा शुद्ध, इमानदार व् दयालु है लेकिन वह अपने आप को दुसरे लोगो जैसा नहीं समझता है और यदि वह किसी के दोष के बारे में सुनता है तो वह उसे ज़िन्दगी भर के लिए नहीं भूल पाता है|यदि आप उसे राज्य को चलाने का भार सोंपते है तो उपरी तौर पर तो वह आपके समर्थन को करता रहेगा लेकिन ज़मीनी तौर पर

वह लोगो के भले के विपरीत होगा| उसे ज्यादा समय नहीं लगेगा आपकी आज्ञा का उलंघन करने में और आपको अपमान करने में!"

सम्राट ने कहा :
"ठीक है, तब तुम किसका सुझाव देते हो?"

उसने जवाब दिया :
"चूँकि आप जोर देते है तो मैं आपको अपनी सलाह देता हूँ, मैं क्सी-पिंग का सुझाव देता हूँ (सम्राट हुआन का सलाहकार)| उसका व्यवहार ऐसा है की उसके उच्चतम अधिकारी उसके बारे में चिंतित नहीं है और जो उसके निम्न अधिकारी है वे उससे दबा हुआ अनुभव नहीं करते और जो वे है उससे अधिक अनुभव नहीं करते है| वह शर्मिंदा है की वह अब हुंग-दी जैसा नहीं है (राजा हुंग-दी जैसा दयालु) और वह क्षमाशील है की वह औरो जैसा नहीं है| जो दुसरो के साथ अपना सामर्थ्य को सांझा करते है उन्हें साधू कहा जाता है| जो अपनी सम्पति को दुसरो के साथ सांझा करते है उन्हें दयालु कहा जाता है| जो स्वयं को मूल्यवान समझते है और अपनी इस समझ को दुसरो का मूल्यांकन करने का आधार बनाते है उन्हें कभी भी पर्याप्त सहायता नहीं प्राप्त होती है| जो स्वयं के उपयोगी होने की समझ का उपयोग दुसरो की सहायता के लिए करते है उन्हें हमेशा पर्याप्त सहायक प्राप्त होता है| वह सिर्फ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को प्रोत्साहित नहीं करता है न ही वह अपने परिवार के लिए सहायता की उम्मीद रखता है| चूँकि आपने जोर दिया था तो मैंने यह सुझाव दिया है मैं क्सी पिंग को नियुक्त करने की सलाह देता हूँ|”

वू का राजा यांगत्जी नदी में यात्रा कर रहा था जब वह रुक गया और बंदरो के शिकार के लिए एक पेड पर चढ़ गया| जब एक बंदरो के समूह ने उसे देखा वे उतेज्जित हो गए और बचकर दूर गहरे जंगलो में भाग गए| वहा एक बन्दर था जो बहुत ही निरुत्साही ढंग से एक शाखा पर अटका हुआ था और राजा की तरफ बहुत ही हेकड़ी पूर्वक देख रहा था| जब राजा ने उस पर निशाना लगाया तो वह बहुत ही तेजी से उस तीर के दाए तरफ मुड गया और उस तीर को पकड़ लिया| राजा ने तुरंत अपने सहायको को उस पर तीरों की बौछार करने को कहा, तब वह बन्दर मारा गया और उसे पकड़ लिया गया|

राजा अपने मित्र यां-बू-यी की तरफ मुडा और कहा:
"उस बन्दर ने अपनी चतुरता दिखाई और वह निर्भर था जिसे वह अपना सबसे उपयोगी व् लाभदायक कौशल समझता था तथा उसने मुझे अभीमानी दृष्टि से देखा| इसलिए उसका अंत उसकी मृत्यु से हुआ| इसे एक चेतावनी समझा जाना चाहिए! सावधान! स्वयं को दुसरे के प्रति घमंडी दिखावे की अनुमति मत दो!"

जब यन्न-बू-यी अपने घर वापस आया उसने दोंग-वू के तहत अध्ययन शुरू कर दिया ताकि वह सिख सके की मुख पर आने वाले भावो को कैसे नियंत्रित किया जा सके| उसने उन अभिमानी भावो पर विजय पाली जो उसको घमंड का बोध करते थे| तीन वर्षो बाद जिन लोगो के साथ वह संबंध में आया उन्होंने उसको प्रशस्त किया (प्रशंसा की)|

नान-बो-ज़ि-की अपने स्थान पर एकांत में बैठा हुआ था जब उसने आकाश की तरफ देखा और एक दीर्घ आह भरी|
जब यां-चेंग-ज़ि वहा आया और उसे ऐसे बैठे हुए देखा तो उसने कहा:
“आप वास्तव में लाखो में एक हो| आप एक सूखे हुए कंकाल के जैसे प्रतीत हो सकते हो और अपने रूप को जलते हुए अंगारों जैसा बना सकते हो|"

“मुझे एक पहाड़ी गुफा में रहने का अनुभव है| जब मैं वहा था तियन-हे (‘की’ राज्य का मुख्या मंत्री) मुझसे एक बार मिलने आया और उसके आस पास के तिनो राज्यों में से सभी ने उसे इस बात की बधाई दी| मैंने जरूर ही उस पर अपना प्रभाव छोड़ा है इसीलिए तो वह मुझे जानना चाहता था| मैंने जरूर ही उन्हें ऐसा भाव प्रकट किया की होगा की मैं कुछ बेचना चाहता हूँ (उन्हें अपने सामर्थ्य से कुछ प्रदर्शित करना चाहता हूँ) इसीलिए तो वह मेरे पास विनिमय (उसके सामर्थ्य के बदले उसे सुख सुविधाए देने) करने आया था| चूँकि मेरे पास वास्तव में कुछ नहीं था जिससे मेरे बारे में कुछ जाना जा सके? तथा मेरे पास वास्तव में बेचने के लिए भी कुछ नहीं था, फिर वहां विनमय करने के लिए क्या था? शीश! मैंने अपने ह्रदय में उनके लिए उदासीनता का अनुभव किया जिन्होंने अपने प्राकृतिक तत्व को खो दिया है| मेरे ह्रदय में उनके प्रति भी उदासीनता है जिनके ह्रदयों में उदासी है| मेरे ह्रदय में उनके प्रति भी उदासीनता है जिनके ह्रदयों में उदासीनता है दुसरो के ह्रदयों में उदासी होने के कारण| पर यह कुछ समय पहले तक था और आज मैं बहुत दूर निकल आया हूँ|"

जब ज्होंग-नि छु राज्य में थे तब छु के राजा ने उनके लिए एक भोज प्रस्तावित किया| सुन-शु-औ उनके लिए एक आभूषित मदिरा का पात्र लेकर खड़ा हुआ| सही-नान के यी-लियाओ ने मदिरा के पात्र को पकड़ते हुए ये शब्द कहे:
"हे प्राचीन ज्ञान के शब्दों के स्पर्श में रहने वाले व्यक्ति! हमारे साथ अपने ज्ञान को साँझा कीजिये|

उसने कहा:
"मैंने बिना अपने शब्दों का उपयोग किये बोलने के बारे में सुना है पर स्वयं से मैं ऐसा कभी नहीं कर पाया हूँ| हालांकि मैं अब इस तरह बोलने का प्रयत्न करूगा|”
“यी-लियाओ जो की बाज़ार के दक्षिणी हिस्से से था उसने दो गोलों के समूह को संतुलित किया और दो परिवारों के बिच के तनाव का हल हो गया| सुन-शु-औ अपने पंखो के बिजने से हवा करता हुआ सहजता से विश्राम कर रहा था और यिंग के एक व्यक्ति ने उसकी बाजुओ को अलग रख दिया| मैं भी चाहता हूँ की मेरी एक चोंच हो तीन फीट लम्बी!"

वे (लियाओ और औ) को कहा जाता है की उन्होंने बिना बोले ताओ का अनुशरण किया| उसे (कोंग) कहा जाता है की उसने इस बात का बिना शब्दों का प्रयोग किये तर्क दिया| इसलिए वास्तविक सामर्थ्य अनिवार्य रूप से ताओ के साथ एक रूप होने से ही आता है तथा जब शब्दों को कम किया जाता है और व्यक्त किया ज्ञान जब वास्तव में ज्ञान के न होने में आधारित होता है - यही तो कहीं पर स्थित होना है| वे जिन्होंने ताओ के साथ एकरूपता बनाई है अपने सामर्थ्य से इस का अनुभव करते है की वे संभवत किसी और जैसे नहीं हो सकते है तथा वे जिन्होंने ज्ञान को व्यक्त किया है बिना यह जाने की यह वास्तविक ज्ञान है या नहीं वे अंत तक अपनी बात को रखने में योग्य होते है| अपने लिए प्रतिष्ठा और नाम कमाने के चक्कर में कांफुसियंस और मोहिस्ट्स ने स्वयं को बहुत ही गहरी खाई में धकेल लिया है|
एक समुद्र अपने अंदर आने वाली नदियों के प्रवाह को नहीं रोकता है और इसी कारण ही वह सम्पूर्ण सिद्धता का चिन्ह है| एक साधू स्वर्ग और धरती की प्रत्येक वस्तु के साथ जुडा हुआ होता है फिर चाहे वह पानी के दलदल से गुजर रहा हो या फिर इस संसार में हिस्सा ले रहा हो| वह नहीं पहचानता है किसी को भी चाहे वे किसी भी परिवार या कुल से संबंध रखते हो| इस प्रकार वह वह एक जीवन जीता है बिना ऊँचे पदों वाला और मरता है बिना उसके सम्मान में किन्ही अनुष्ठान या संस्कार की चाहत रखे| उसे नहीं जरूरत होती है उसके पास आकर ईकट्ठा होने की वास्तविकता को सिद्ध करने की और न ही उसे जरूरत होती प्रतिष्ठित होने की अच्छी तरह से स्थापित होने के लिए| ये वस्तुए एक महान व्यक्ति का व्याख्यान करने के लिए उपयोग में लायी जा सकती है|
केवल इसलिए ही एक कुते को एक अच्छा कुता नहीं समझा जा सकता है क्योंकि वह अच्छी तरह से भोंकता नहीं है| केवल इसलिए की एक व्यक्ति अच्छा बोलता है इसका अर्थ यह नहीं होता की वह किसी चीज़ के लिए भी मूल्यवान है, केवल किसी को महान समझना इसका अर्थ यह नही होता है की वह वास्तव में महान है, इस बात को छोड़ दो की वे सामर्थ्य वाले व्यक्ति है! उन वस्तुओ में जो महानता से संपन्न होती है कोई भी स्वर्ग और धरती का मुकाबला नहीं कर सकती है| कौन ऐसा होना चाहता है और प्राकृतिक रूप से महानता से संपन्न होना चाहता है? जो अपनी प्राकृतिक महानता को समझता है वह इसके लिए भटकता नहीं है, न ही इसे खोता है, न ही इसे दूर करता है और न ही दूसरी वस्तुओ को इसे बदलने की अनुमति देता है की वह कौन है| वह लगातार इस समझ पर टिका होता है की वास्तव में वह कौन है और किसी भी तरह से अनुभव नहीं करता है की वह आभाव ग्रस्त है| वह उसका पालन करता है जो भी उसे पूर्व काल से प्राप्त हुआ है और वह इसके प्रति जोड़ तोड़ नहीं करता है| यही एक महान व्यक्ति की शुद्धता और सत्य होता है|

ज़ि-की के आठ बेटे थे| उसने उन सभ को अपने सामने खड़ा किया और जिउ-फंग-यिन को बुलाया और कहा:
"मेरे पुत्रो को देखकर क्या तुम बता सकते हो की इनमे से सबसे सौभाग्यशाली कौन है?"

जिउ-फंग-यिन ने कहा :
"'कुन' सबसे सौभाग्यशाली है|"

ज़ि-की आनंद से आश्चर्यचकित हुआ और कहा :
"उसके साथ क्या घटित होगा?"

"कुन सारा जीवन उसी मेज पर भोजन करेगा जिस पर राजा महाराजा करते है|"

ज़ि-की इसे सुनकर मनोग्रस्त हो गया और अपनी आँखों में आंसू लेकर पूछा:

"क्यों मेरे पुत्र को इतनी भयानक चीज़ को भुगतना पड़ेगा?"

जिउ-फंग-यिन ने कहा:
"एक पुत्र का होना जो राजा महाराजो के साथ शाही भोजन को भोगे उसे बहुत ही लाभकारी माना जाता तथा उसे दूर की रिश्तेदारियो तक मूल्यवान समझा जाता है और इससे भी ज्यादा मूल्यवान तो उसके माता पिता द्वारा! पर जब तुमने इस बात को सुना है तो तुम ऐसे रो रहे हो जैसे की तुम इस कृपा को रोकना चाहते हो| तुम्हारा पुत्र बहुत सौभाग्यशाली है पर उसका पिता इसे सौभाग्यशाली नहीं देखता है|"

ज़ि-की ने कहा :
"यिन तुम कैसे इतनी स्पष्टता से पहचान सकते ही की कुन मेरे लिए सौभाग्यशाली होगा? तुम जरूर ही यह देखने में सक्षम होगे उसके नाक और मुंह के गुणों को देखकर की वह बहुत सारी मदिरा और शाही भोजन का भोग करेगा, लेकिन तुम यह निश्चित नहीं बता सकते की वो यह कैसे करेगा? मैं कभी भी एक चरवाहा नहीं था पर एक मेमने का जन्म मेरे घर के दक्षिण-पश्चिमी हिस्से में हुआ| मैं कभी भी जानवरों को पकड़ने की इच्छा नहीं रखता था पर एक बटेर (एक पक्षी) ने मेरे घर के उत्तर पश्चिमी हिस्से में अपने बच्चो को जन्म दिया| ये चीज़े क्या अजीब प्रतीत नहीं होती है क्या वे?(इन सभी वस्तुओ को अच्छे भाग्य के होने का चिन्ह माना जाता था)
"मैं और मेरा पुत्र घूम रहे थे बस एक यात्रा कर रहे थे की कहाँ यह संसार हमे ले जाएगा| एक साथ होकर हम स्वर्ग से मिलने वाले आनंद और इस धरती से मिलने वाले भोज को बांटते है लेकिन हम कभी दुसरो के प्रसंगों में हस्तक्षेप नहीं करते ही, किसी भी कार्य को अधिक नहीं करते है और इसे कभी अजीब नहीं समझते है| हम उसका पालन करते है जो कुछ भी हमे इस महान धरा से प्राकृतिक रूप से प्राप्त होता है और कभी दूसरी वस्तुओ द्वारा विचलित नहीं होते है| जीवन के सुख दुःख में हम एक जुट रहे और कभी इसमें लिप्त नहीं हुए की दुसरे हमारे बारे में क्या सोचते| अब मैं देखता हूँ की यहाँ पर कुछ प्रतिकार का अनुरोध किया गया है| यह प्रतीत हो रहा है एक विचित्र चीज़ इस संसार के लिए जो हमारे द्वार पर आ गयी है, लेकिन मैं मानता हूँ की हमे इन विषम परिस्थितियों का सामना जरूर करना होगा| यह विषम परिस्थिति इसलिए नहीं है की मेरे पुत्र या मैंने कुछ गलत किया है बल्कि इसलिए है की स्वर्ग ने इसे हमारे लिए निर्धारित किया है! इसी कारण तो मैं रो रहा था|"

इसके बाद उसने कुन को को दूत के साथ यां राज्य के लिए रवाना कर दिया| उसे बीच मार्ग में ही कुछ डाकुओ द्वारा बंदी बना लिया गया| वे जानते थे की चूँकि उसका शरीर सम्पूर्ण है इस कारण से उन्हें इसके लिए अच्छा मूल्य नहीं प्राप्त होगा लेकिन अगर वे उसके अंग काट दे तो उन्हें उसका अच्छा मूल्य प्राप्त होगा|
इसलिए उन्होंने उसका पैर काट दिया और उसे 'की' राज्य में बेच दिया जहाँ सम्राट कंग ने उसे अपने राज्य की सीमा पर द्वारपाल नियुक्त कर दिया| इस प्रकार उसने अपने पुरे जीवन में मदिरा और अच्छे भोजन का भोग किया|

नि-यु क्सु-यु के पास आया और कहा :
"तुम कहाँ जा रहे हो?"
"मैं याओ से दूर भाग रहा हूँ|"
"तुम्हारा क्या मतलब है?"
"याओ परोपकार को बढ़ावा देने के लिए बहुत ही उन्मुख है और मुझे यही मुझे डर है की उसका अंत इस प्रकार सारे संसार को उस पर हँसते हुए होगा और लोग जो भविष्य में होगे वे एक दुसरे को ही अपना भोजन समझेगे| उसके परोपकार कारण किसी भी तरह के लोगो को उससे जुड़ने में कोई आपत्ति नहीं होगी वे उसको चाहने का दावा करेगे ताकि उसके सानिध्य में रह सके, वे उसे दिखायेगे की वे क्या कर सकते है उसके लिए ताकि इससे वो उच्च पद पा सके, उसकी प्रसंशा करेगे उसका सलाहाकार बनने के लिए लेकिन इस समय अगर उसने कुछ ऐसा किया की जो उन्हें पसंद नहीं आया तो वे उसे कुचल देगे| प्रेम तो उन लाभों में से एक है जो परोपकारी और धार्मिक बनने से प्राप्त होता है इसलिए परोपकार और धर्म के सिद्धांत को नहीं मानने वाले बहुत कम है और इससे अपना लाभ कमाने वाले बहुत ज्यादा| परोपकार और धर्म का दिखावा करना बिना उनके प्रति निष्ठा के यह तो अपने लालच में लोगो को फसाने का तरीका है जैसे पक्षियों को पकड़ा जाता है| यदि यह एक व्यक्ति पर छोड़ा जाए की उसे चुनना है सबसे उत्तम मार्ग इस संसार को लाभ पहुचने का तो उसकी शक्ति का सामर्थ्य इतना असीमित होगा की वह पूर्ण रूप से एक होगा| याओ जानता है की एक मूल्यवान व्यक्ति इस संसार को लाभ पंहुचा सकता है पर उसे इसका एहसास नहीं है की यहाँ वह भी है जो इस सम्पूर्ण संसार को चुरा लेना चाहता है| वह तो केवल है एक व्यक्ति जो नहीं निर्धारण कर सकता है की कौन उपयोगी है जो इसे समझ सकता है|"

यहाँ (इस संसार में) वे है जो सादे और निष्कपट है| यहाँ वे है जो दरिद्रता में दुबे हुए है| यहाँ वे है जो पूरी तरह से अपनी महत्वकांक्षाओ को समर्पित है|

वे जो सादे और निष्कपट है वे अपने एक गुरु के शब्दों का अध्ययन करते है तब वे इतने निष्कपट और सरल बन जाते है की वे आत्म संतुष्ट अनुभव करते है और अपने आप को अपने अध्ययन में पर्याप्त ग्रहण करने वाला समझते है यद्यपि वे वास्तव में कुछ नहीं जानते है और उन्होंने थोड़ी सी भी प्रगति नहीं की होती है| उन्हें सादा और निष्कपट कहा जाता है|

जो दरिद्रता में दुबे हुए होते है वे ऐसे होते है जैसे एक सूअर की पीठ पर टिचक (कपडा)| वे स्वयं को स्थापत करने के लिए एक स्थान को चूनते है जो की सूअर की पीठ के बालो के बिच में जैसा होता है और सोचते है की वे एक विशाल बगीचे में है या महल में है| या फिर वे जोड़े हुए होते है स्वयं को सिकुड़े हुए खुरो से या अपने घुटनों के वर्क से और समझते है की वे एक लाभकारी स्थान पर बड़े आराम से स्थापित है| वे नहीं जानते है की एक दिन जब कसाई बलि देने के लिए अपनी तैयारी करके आएगा तो वह उस सूअर के साथ साथ उनको भी ले जाएगा और पका देगा| उनकी प्रगति निर्भर करती है जिसके साथ वे जुड़े हुए होते है और उनकी दुर्गति भी उसी पर निर्भर होती है जिसके साथ वे जुड़े हुए होते है| उन्हें दरिद्रता में डूबा हुआ कहा जाता है|

जो पूरी तरह से अपनी महत्वकांक्षाओ को समर्पित होते है वे शुन जैसे होते है| मीठी वस्तु चीटियों के प्रति आकर्षित नहीं होती है बाकि चीटियाँ उसके प्रति आकर्षित होती है क्योंकि उसकी महक ही ऐसी होती है| शुन का व्यवहार भी ऐसे ही गंध छोड़ता है जो बहुत सारे लोग उसके आस पास रहना चाहते है| इसलिए जब वह अपने राज्य को तीन बार छोड़ कर जा चूका था और आखिरकार देंग के खंडहरों में रहने चला गया तब दस हज़ार लोगो ने भी उसका अनुगमन किया| याओ ने जब शुन की योग्यता के बारे में सुना तो उसको मिटटी का पुत्र कहकर उसकी प्रशंसा की यह कहते हुए की उसको हर चीज़ के लिए आशीर्वाद प्राप्त हुआ है जो उसने किया है| उस समय तक जब शुन को मिटटी के पुत्र के रूप में प्रशस्त किया गया तब तक शुन की उम्र हो चुकी थी और उसकी शुद्धता समाप्त हो चुकी थी इसलिए कभी भी वह अपने जीवन में विश्राम नहीं कर पाया या उससे निवृत नहीं हो पाया| इसलिए उन्हें कहा जाता है जो अपनी महत्वकांक्षाओ को समर्पित होते है|

इसलिए एक अध्यात्मिक व्यक्ति कभी भी अपने प्रसंशको की भीड़ से घिरा हुआ नहीं होना चाहता है यदि भीड़ उसके तरफ होती भी है तो व उनके बीच तुलना नहीं करता है, किसी एक की तारीफ नहीं करता है किसी की भी तुलना न करने के कारण उसका किसी के लिए भी लाभ नहीं होता है| इस प्रकार कोई भी स्वयं को किसी और से उसके ज्यादा निकट होना नहीं समझता है और कोई भी पृथक भी अनुभव नहीं करता है| वह सामर्थ्य में आलान्गित होता है तथा सामंजस्य को बढ़ावा देता है इस संसार को स्वीकार करके| यही तो है जिससे एक सच्चे मनुष्य के तौर पर जाना जाता है|

चींटियो की तरह ज्ञान का त्याग कर दो| मछलियों की तरह पूरी तरह व्यवस्थित रहो| भेड़ो की तरख किसी भी प्रकार की आशाओ का त्याग कर दो| आँखों का उपयोग आँखों से देखने के लिए करो| कानो का उपयोग कानो से सुनने के लिए करो| मन का उपयोग मन से प्रतिक्रिया देने के लिए करो| वह जो इन चीजों को करता है वह एक सूत्र पर भी बहुत सारे वजन का संतुलन बनाने में सक्षम होता है और समायोग्य होता है एक कमरबंद की तरह| पुराने समय के सच्चे मनुष्य प्रतीक्षा करते थे स्वर्ग की उनका मार्गदर्शन करने के लिए और वे स्वर्ग से जुड़ने के लिए दुसरे लोगो की सहायता नहीं लेते थे| ऐसे ही थे प्राचीन समय के सच्चे मनुष्य|

जीवन को प्राप्त करो और मृत्यु को त्याग दो| मृत्यु को प्राप्त करो और जीवन को त्याग दो| बहुत सारी औषद्धिया है जीनका उपयोग किया जा सकता है: जिन, जिए-गेंग, जी-योंग, सही-लिंग आदि| इनमे से प्रत्येक का उपयोग एक विशिष्ट रोग के लिए किया जा सकता है पर कौन इनसे इलाज कर सकता है केवल इनके नामो को दोहराकर?

गोउ-जियन ने अपने तीन हज़ार सिपाहियों के साथ कुई-जी पर्वत पर शरण ली| केवल ज्होंग को यह जानने की अनुमति थी की वे कहा छुपे हुए है पर ज्होंग जिसे नहीं जानता था वह था उसका उसके जीवन के प्रति भय|

इसीलिए तो यह कहा गया है:

"एक बाज़ की आँखे विशेषकर उसके प्रयोजन के लिए उपयुक्त होती है और एक सारस के पैर अच्छी तरह से अनुपातयुक्त होते है| इन जीवो में से किसी के भी अंग को हटाना केवल उनको पीड़ा ही पहुचायेगा|"

इसीलिए यह कहा गया है:

"जब नदी के जल की सतह पर अत्यंत हवा चलती ही तो उसका उद्वाष्पन होता है| जब सूर्य बहुत तेज होता है नदी के जल के ऊपर तो उसका उद्वाष्पन होता है| पर यदि सूर्य और हवा एक ही समय में नदी के साथ संपर्क में हो तो इसका अर्थ यह नहीं है की वे इसे सुखा देगे यह इसलिए की नदी अपने निरंतर बहाव के लिए केवल अपने स्त्रोत पर निर्भर है न की सूर्य और हवा पर|

और निकट से देखने पर यह स्पष्ट है की जल भूमि के निकट रहता है, छाया व्यक्ति के निकट रहती है और वस्तुए दूसरी वस्तुओ के निकट होती है|

इसलिए यह खतरनाक हो सकता है किसी के लिए भी किसी एक वस्तु को बिना रुके टकटकी लगाकर देखना| यह खतरनाक हो सकता है किसी के कानो के लिये एक ही चीज़ को एकाग्रचित होकर सुनना| यह खतरनाक हो सकता है किसी के मन के लिए केवल एक ही पहलु को देखना केवल एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए| और यह और भी ख़तरनाक हो सकता है इसी को बार बार करते रहना बिना यह एहसास हुए की बदलाव की ज़रूरत है विशेषकर यदि वहा पर किसी चीज़ को पाने का प्रयत्न किया जा रहा हो, |दुर्भाग्य हमेशा आता हुआ प्रतीत होता है और हर क्षण वह और घनिष्ट कंकरों से भरता रहता है| इन कंकरों को विमुक्त करने के लिए बहुत सारे कौशल की ज़रुरत होती है और अपने परिणामो के लिए तो यह और भी लम्बा समय ले सकता है| इसलिए लोग यह सोचना पसंद करते है की ये चीज़े उन्हें व्यक्तिगत रूप से धनवान बना देती है| क्या यह उदासीन नहीं है! वे एक दुसरे के राज्यों क विनाश करते रहते है और लोगो पर अत्यंत अत्याचार करते है, वे यह प्रश्न करना नहीं जानते की यह सब क्यों घटित हो रहा है|

एक पैर को भूमि पर रखना एक कदम को बढ़ाना होता है, पर यद्यपि यह केवल एक कदम होता है लेकिन फिर भी यदि हम उस स्थान पर निर्भर रहे जहाँ हमने अभी तक कोई कदम नहीं रखा है और तब भी अपनी प्रगति के संदर्भ में निश्चित हो| लोगो का ज्ञान कम होता है लेकिन यद्यपी वह कम होता है लेकिन फिर भी यदि हम निर्भर रहे उस पर जिसे हम नहीं जानते है तब हम समझ सकते है की हमारा स्वर्ग से आशय क्या होता है :

महान एकता को जानना;

महान रहस्य को जानना;

महान दृष्टि को जानना;

महान समानता को जानना;

महान पद्धति को जानना;

महान विश्वास को जानना;

महान व्यवस्था को जानना;

..........यह परिपूर्ण है!

महान एकजुटता सभी वस्तुओ को जोडती है|

महान रहस्य सभी वस्तुओ की व्याख्या करता है|

महान दृष्टि सभी वस्तुओ को देखती है|

महान समानता सभी वस्तुओ को प्रदान करती ही|

महान पद्धति सभी वस्तुओ को निर्धारित करती है|

महान विश्वास सभी वस्तुओ का मूल्यांकन करता है|

महान व्यवस्था सभी वस्तुओ को आधार प्रदान करती है|

सबसे ज्यादा प्राथमिकता स्वर्ग को प्रदान करो| प्रकाश के साथ उज्जवल रहो| उस केंद्र धुरी के साथ एक रहो| ये ही तो शुरूआती चिन्ह है| तब जो तुम सोचते हो की तुम समझते हो वो सबसे बड़ी असमझ प्रतीत होगा, और जो तुम सोचते हो की तुम जानते हो वो एक भूल की तरह प्रतीत होगा| अज्ञान से ही ज्ञान की उत्पत्ति होती है| इसके संदर्भ में प्रश्नों को पकड़ा नहीं जा सकता है तब भी वे बिना पकडे नहीं रह सकते है| चाहे भावात्मक हो या कुटिल उसमे कोई न कोई सार जरूर होता है| इसे सदियों से समय द्वारा प्रभावित नहीं किया गया है और न ही इसे समाप्त किया जा सकता है| फिर कैसे यह कहने या सुनने के योग्य नहीं हो सकती है या फिर चर्चा करके इसका फैलाव करने के! यदि हम इसके बारे में प्रश्न करना छोड़ दे तो कितना संशय और दुविधा होगी तब इसके लिए| यदि हम उसका उपयोग करे जिसे कोई संशय नहीं है संशयो को हटाने में और उसे बचाने में जिसे कोई संशय नहीं है तब इसे सबसे महान स्थान के रूप में सम्मानित किया जा सकता है जो बिना अनिश्चितताओ के है|

25.Peng Yang (Persistent Optimist)

When Yang (Peng Yang - Persistent Optimist) traveled to the state of Chu, Yi Jie agreed to speak with the king about him, but before he had a chance to set up an audience between Peng and the king, Yi Jie resigned.
Peng Yang then went to see Wang Guo (Honorable Outcome) and said:
"Sir, could you introduce me to the king?"
Wang Guo said:
"I don't think so. You might want to go ask Gong Yue Xiu (Happily Resting in Results) to do that for you."
Peng Yang said:
"What could Gong Yue Xiu do?"
"In the winter he fishes for soft shelled turtles in the Yangtze River. In the summer he rests at the edges of the forest on a mountain. When those who are passing by ask him what he's doing, he answers: 'This is my home.' If Yi Jie already tried to help you but couldn't do it, I couldn't do any better! I'm no match for Yi Jie. What's apparent from Yi Jie's behavior is that he's without any virtue, but is knowledegable. He has no respect for those who've developed their spiritual side, but condescends to those of wealth and power in this world. Since he knows he'd be of no help to a person of virtue, when he comes upon them he disappears. One who's freezing in the winter likes to imagine he's being covered by the spring's warmth. One who's experiencing sunstroke likes to think about the chilly breezes of winter. The king of Chu behaves like that kind of person. He gives off an imposing air and demands respect. If he feels someone is guilty, he's without forgiveness but attacks like a tiger. If someone doesn't kowtow to his sense of his own virtue, how could they ever get him to bend to their requests!
"Therefore, when a sage is in dire straits, he makes his close friends and family forget about his impoverishment. When he's in a prominent position, he makes the dukes and princes forget about his rank and instead reverses their positions. When dealing with things, he joins in their amusement. When dealing with people, he takes pleasure in the things they experience but holds true to himself. He sometimes might keep his mouth shut just to slake people's thirst for harmony, and might stand right along side people to assist them in making their own transformations. Like a father and son who are comfortable with their living arrangements (the son following the mandates of the father), they're thus able to enjoy their leisure time together. His (Gong's) heart is with the hearts of others so he can get a lot done. That's why I suggest you wait for Gong Yue Xiu."

The sage becomes entwined in silk fabric which encompasses everything into an integral whole, but he doesn't know how this happened and he just chalks it off to what's natural. He flows along allowing fate to make the decisions and the heavens to be his teacher. People thereby are left to follow their own destiny. If he worried about knowledge and where he was going constantly without letting up for a moment, how would he ever find a time to stop?

When someone is born physically attractive, even if someone gave them a mirror, unless they were told they were beautiful they wouldn't know it. Whether they knew it or didn't know it, whether they heard it or didn't hear it, they could still be happy endlessly. Other people might continuously be attracted to them, but that's just their nature. When a sage loves people, even if someone explained to them what love was, unless they were told they were loving they wouldn't know it. Whether they knew it or didn't know it, whether they heard it or didn't hear it, they would still continuously love people. Other people might feel safe and secure with them, but that's just their nature.

When coming upon old familiar territory, just observing it causes a sense of comfortable recognition. Even if the terrain has been overgrown with new vegetation that obliterates nine out of ten familiar sites, there would still be a sense of comfort. How much more so would it be if someone actually saw what they were looking at and heard what they were listening to. Each thing would stand out like a ten foot tower in a vast expanse of other distractions

Ran of the Xiang clan (Youthful Appearance) retained the health and appearance of someone middle-aged by going along with what worked. He joined along with things without considering endings or beginnings, and without considering if they were short-term or long-term. In one day all the things he'd joined with could change, but his

sense of unity with them didn't change. When one experience ended, he simply let it go. If someone looks to the heavens to be their teacher, they wouldn't be able to grasp what the heavens was teaching, but would simply be looking at other things with their own mind. Why would anyone engage in such a thing? A sage doesn't even begin to try to possess the heavens, to try to possess other people, to try to possess a beginning, nor to try to possess things. He joins together with others as they move along and doesn't refuse. He helps them prepare for where they're going but doesn't try to influence them. Isn't that being adaptable to things?

When Tang came into power, he took advice from one of his officials, Deng Heng (Constantly Climbing). He listened carefully to his advice, but didn't allow himself to be limited by it. Since his achievements enabled him to adapt comfortably to his success, he was allowed to keep the title he'd take on. Those titles gained him a place in future philosophical schools, which meant he'd gotten a dual perspective. Zhong Ni (Confucius) exhausted himself pondering that and trying to glean some learning from it.
Rong Cheng (Embodiment of Success) had simply told his clansmen:
"Eliminate the concept of individual days, and there's no way to measure a year, no way to know what's inside or outside."

Ying of Wei (King Hui of the state of Wei) made a treaty with Marquis Tian Mou (chief commander of Qi), but Marquis Tian Mou reneged on the deal. Ying of Wei was so mad that he wanted to send someone to assassinate him. When his minister of war (Gongsun Yan) heard what he'd said, he felt humiliated by it and said to Ying:
"You have numerous chariots at your disposal, but you want to send some commoner to deal with your enemy! My suggestion is that you give me two hundred thousand armed men so we can make an outright attack on them. We'll take all the people as prisoners, rope in their oxen and cattle, and make their ruler burn from the inside out after we've set fire to the countryside. Mou will run away trying to escape, but we'll track him down like a dog for going against his word and snap his spine in two."
When Ji Zi (a moralist) heard about this he became humiliated and said:
"We've been in the process of building an eighty foot high wall around the city, and now that this wall is almost completed, if it's left to go into disrepair that would really embitter even the minor officials at all the wasted effort. It's been seven years now since we've used soldiers in battle, and this has been the foundation of the kings of Wei. Yan is a very troubled person and shouldn't be listened to."
When Hua Zi (an elder statesman) heard about all this he thought it was disgraceful and said:
"Someone who promotes the idea of attacking Qi is a troubled person. Someone who promotes the idea that you absolutely shouldn't attack is also a troubled person. Someone who calls the war mongers and the peace lovers troubled people is also a troubled person."
The king said:
"Then what's to be done about this?"
"You should simply seek the answer from Dao!"
When Hui Zi heard about this he introduced Dai Jen Ren (One with Different Perspectives) to the king.
Dai Jen Ren said:
"You must have heard about a snail and know something about it?"
"Sure."
"There's a kingdom on its left antenna with a clan called Aggressors. There's a kingdom on its right antenna with a clan called Retaliators. Every once in a while they get into an argument over territory and go to war. The corpses strewn about number in the thousands, and the defeated army is chased back for fifteen days before the victor returns home."
The king said:
"Bah! Why all this nonsensical talk?"
"Please let me show you how this can be used in a practical manner. Do you believe that there are borders limiting how far north, south, east, west, up and down extend?"
The king said:

"They're without limits."
"Understanding that your heart can wander where there are no limits, but return to experience existence from your perspective in the kingdom, doesn't it seem that whatever might seem real in one moment could vanish in the next?"
The king said:
"Definitely."
"Your perspective right now comes from being in the middle of the state of Wei, in the middle of the capital city of Liang, and from the viewpoint of being a king. Between your viewpoint and the viewpoint of the Retaliators, is there much difference?"
The king said:
"No difference."
After the visitor had left, the king got a faraway and disturbed look on his face as though his mind had gone off somewhere. At that point Hui Zi came to see him.
The king said:
"That visitor was truly a great person. A sage wouldn't be capable of matching him."
Hui Zi said:
"Blow into a bamboo flute and it'll produce a loud sound. If someone tries to blow into the end of a sword's hilt, all that'll be produced is a soft whooshing whisper. Yao and Shun were set up on a pedestal by the people, but to say Yao and Shun were in any way ahead of Dai Jen Ren would be analogous to puffing out one soft whooshing whisper."

When Kong Zi (Confucius) was in the state of Chu he stopped over at an inn on Yi Qui (Ant Hill). A neighboring family, including the husband, wife, servants and maids, had gathered on the roof of their house.
Zi Lu (a disciple of Confucius) asked:
"Why are all those people standing so precariously up there?"
Zhong Ni said:
"They're the servants of a sage who's trying to disguise himself as a commoner and hide among the tilled fields. He's pretty much gotten rid of his notoriety, but his determination hasn't yet been exhausted. His words are only coming from his mouth, but he hasn't yet spoken from his heart. His opinions don't go along with the rest of society, but his heart is conflicted with the acceptance of that. He's someone who's trying to submerge himself on dry land. Could he be Yi Liao of Shi Nan?"
Zi Lu asked permission to go fetch him.
Kong Zi said:
"Don't bother! He knows I'm seeking to further my personal agenda and traveling through Chu in an effort to make the king of Chu grant me an audience, so he figures I must be a sycophant. Feeling the way he does, he'd be ashamed of listening to anything a sycophant had to say, let alone coming into physical contact with one! Besides, what makes you think he's still there?"
Zi Lu went to look for him, but found that all the rooms were empty.

Chang Wu (Full Grown Shade Tree), who had been given charge over the fiefs in his area, said to Zi Lao (Keeper of Sacrificial Animals):
"A ruler mustn't be crude and sloppy in governing, and mustn't be careless and negligent when keeping the people in line. I used to be crude and sloppy when I plowed my fields and planted seeds, so the crop I received was crude and sloppy as well. I used to be careless and negligent when I tended to pulling weeds, so the crop I received was careless and negligent as well. The next year I changed my tactics, plowing deep furrows and carefully selecting the seeds I planted. I received back a large and flavorful crop that kept me satisfied for the whole year."
When Zhuangzi heard about this he said:
"Nowadays when people try to regulate their bodies and control their minds, most of them are like what Chang described. They run away from the heavens, defy their natural inclinations, extinguish their emotions and pay no attention to their spirits, becoming like an autonomous herd. So, those who are crude and sloppy when dealing with

their natural inclinations, condemning their own likes and dislikes as being evil, will eventually find their natures choked and stunted by weeds, reeds and brambles. At first the sprouts (of those plants) seem to assist with our growth, but gradually they permeate and puncture our true natures, leaking profusely into every part and we can't choose where they might erupt. They drift and float like cancerous tumors eating away at our insides until what we release as excrement is thick and putrefied."

While Bai Ju (Intent on Rectification) was studying with Lao Dan (Laozi) he said:
"Please allow me to go out and travel in the world."
Lao Dan said:
"Don't bother! Everywhere in the world is just like it is here."
When he became insistent about it, Lao Dan said:
"Where will you go first?"
"I'll begin in the state of Qi."
When he reached Qi he saw the corpse of a executed criminal. He moved the body around into a more respectful position and draped his robe over it.
He howled to the heavens and wept over it saying:
"You poor thing! You poor thing! The world is experiencing a great upheaval and you might be the first to have departed because of it. We've been told not to steal and not to kill others. After glory and dishonor have been established, that opens the door for determining more defects. After treasures and wealth have been accumulated, that opens the door for more contentions. Now that more defects have been determined and more contentions have been accumulated, that wreaks havoc on how people view themselves and leaves no time for them to take a breather. We may not want things to be that way, but it still happens!
"Those who ruled people in ancient times gave credit to others for their achievements and took responsibility themselves for losses; gave credit to others when things went right and took responsibility themselves when things went wrong. Therefore, if even one other person experienced a loss they would step back and check themselves out. It isn't like that nowadays. They hide behind others who are too stupid to realize they're being duped. When great difficulties arise from their actions, they put the blame on cowards. They create impossibly difficult tasks for others, then punish them when they can't fulfill their mandates. They send others out on missions knowing they'll be killed when they get there. When the people know their strength is insufficient, they use pretenses to give the illusion of accomplishing what was mandated. Every day they have to pretend more and more until eventually none of the soldiers and people can find any peace at all without pretending about something. When they're not strong enough, they pretend to be. When they're not smart enough, they cheat and deceive others. When they don't have enough material possessions, they steal from others. There's so much stealing and thievery going on, who really is to blame for it?"

By the time Qu Bo Yu turned sixty years old he had gone through sixty transformations. There wasn't once that he didn't start out thinking he was right about something and then end up taking back his words and admitting he was wrong. He doesn't know even today if what he calls right and wrong might be like all the other fifty-nine times he was wrong. All living things are born but none of them can catch sight of where they came from. All living things proceed through life but none of them can catch sight of the doors they go through. People all respect what their knowledge enables them to know but none of them know how to depend on what their knowledge enables them not to know so they can later find understanding. Can't this be called the greatest part of doubt? Give up! Give up! There's no way to escape it. That which is said to be, is it really so?

Zhong Ni (Confucius) asked the Great Historians Da Tao, Bo Chang Jian and Shi Wei:
"Duke Ling of Wei gets drunk and submerges himself in personal gratification but doesn't pay attention to governing his state. He hunts wherever he wants without obeying the borders set by the game wardens. How did he end up being called Duke Ling (tr. Ling - magical)?"
Da Tao said:

"Those kinds of things just happen."
Bo Chang Jian said:
"Duke Ling had three wives with whom he bathed in the same tub. But when Shi Qiu came to visit him in the imperial palace bearing gifts, he rushed to assist him and lead him by the arm. He can be quite careless when dealing with those who fulfill his sexual desires, but can be totally serious when confronted with those who are considered to be worthies. That's how he end up being called Duke Ling."
Shi Wei said:
"When Duke Ling died, a divination was made and it was said that it would be inauspicious for him to buried in the family grave. Another divination showed that if he were buried at Sha Qiu it would be very auspicious. After digging down for several feet, a stone coffin was found. When it was rinsed off and examined, this was found engraved on it: 'Not relying on his descendants (to provide him with a grave site), Duke Ling decided to be buried here.' You see, Duke Ling had become Ling (magical) a long time ago. Those two other guys (Da and Bo) - how could they be competent enough to know about this?"

Shao Zhi (Lacking Knowledge) asked Tai Gong Diao (Supremely Fair Equalizer):
"What's meant by saying that a small village spreads out in all directions?"
Tai Gong Diao said:
"That a village spreads out in all directions means that it brings together hundreds of different personal names into the the confines of ten clan names and regulates them all equally. It brings together what was different so they can all be considered the same, and it disperses the similarities so they can all be different.
(Note: In ancient China the people of a certain region were all given the same surname, usually one chosen by the king. These were their clan names although the people within one clan might not be related to one another. However, each person had a given name which a child's parents could choose themselves. If someone was accepted into the government as an official, their surname and given name were usually changed by the king. That's why so many different names were used when referring to one person.)

"Now if you point out the hundred individual body parts of a horse, you wouldn't be pointing specifically at a horse. However, when a horse is standing right in front of you, even though it's made up of a hundred different parts, it'd be called a horse. So it is that hills and mountains gradually accumulate soil and become tall. The Yangtze and Yellow Rivers join their waters and become powerful. Capable people merge together as equals to become impartial. So if something from outside of them tries to influence their nature, presenting itself as authoritative, they don't hold on to it. If something emerges from deep within them, presenting itself as correct, they don't cast it away.
"Each of the four seasons has a special energy, and the heavens doesn't favor one over another, so the course of a year completes itself. Each of the five senses has a special job to do, and the person in charge of all of them doesn't become personally attached to one over another, so the whole system is managed properly. As for courtesy and aggression, a magnanimous person doesn't favor one over another, so virtue provides the only preparation necessary. Each of the living things has a special nature, and Dao doesn't become personally attached to one over another, so nothing is categorized. Not categorizing anything allows for no action to be taken, and when no action is taken then there is nothing that doesn't act naturally.
"Time has endings and beginnings. Each generation goes through changes and transformations. Fortune and misfortune occur haphazardly - sometimes their arrival is unwelcome and other times welcomed. By setting oneself on a specific course and adamantly sticking to it, that's when what occurs is perceived as going with the grain or going against it. If we compare the things in a vast wilderness, there are hundreds of different things that all work together to create the environment. Or observe a huge mountain and notice that the trees and rocks can cohabit the same area. This is what's meant by saying that a small village spreads out in all directions."
Shao Zhi said:
"Okay, then wouldn't it be enough to call that Dao?"
Tai Gong Diao said:

"Not at all. We might try to count up all the things using numbers, and even though it can't be limited to ten thousand, we still use the term 'the ten thousand things', but using numbers to categorize them simply makes it easier for us to refer to them. So, we use terms like 'the heavens' and 'the earth' to denote the largest things. We use 'Yin' and 'Yang' to denote the essence of things. We use 'Dao' to denote the way things work together. Because we use so many numbers and categories to make it easier for us to refer to them, even though they'd exist without that, we then end up making all sorts of comparisons between things! Then we end up creating debates - like the ongoing arguments between what's a dog and what's a horse. It'd be so much better to leave all that stuff behind." (Note: "...arguments between what's a dog and what's a horse" refers to the ongoing clever debates between the philosophers, which was occasionally funny, but was meant to show that one school of thought was superior to another.)

Shao Zhi said:
"Within the four directions (north, south, east, west - the surface of the earth, as it was considered at the time to be a flat square) and contained within the six fields (north, south, east, west, up, down - the atmosphere of the earth), how did the birth of the ten thousand things come about?"
Tai Gong Diao said:
"Yin and Yang attracted each other, enfolded each other and fulfilled each other. The four seasons alternated with each other, giving birth to each other and putting an end to each other. Likes and dislikes repel and attract, thereby a bridge arose between male and female with comings and goings that created a grand pivot (natural cycles of copulation and procreation). Safety and danger easily change into one another. Fortune and misfortune give rise to each other. Relaxation and tension are worn down by each other. Accumulation and dispersal follow after each other. These are the parts of reality that can be set down on record and are the pure essence that can be obviously noted. This natural sequence is followed by each thing and this evolution must impact each thing. Reversal after reaching an extreme and beginning after completion - these are inherent to all things. Those words that can best be used for what knowledge can achieve are merely showing the extremes things can reach. A person who's intent on connecting with Dao doesn't pursue things to the point of their decaying and doesn't backtrack to investigate the beginning. In that way discussions about these things stop."

Shao Zhi said:
"According to Ji Zhen (Reality of the natural seasons) nothing did it, but according to Jie Zi (Catching hold of the nature of birth) there was something that made it all happen (created the ten thousand things). These two schools go on and on with their discussions about it. Which one is correctly getting to the core of things, and which one is spreading their own theories?"
Tai Gong Diao said:
"Chickens cackle and dogs bark. Anyone knows that. But even though they have this extensive knowledge, they can't explain in words how these things became that way nor can they determine what will happen to them later. They can split them up and analyze them and come up with a perfect resolution without any actual basis for their theories. This may seem to be a great resolution but it can't encompass everything. Saying that 'Something made it all happen' or that 'Nothing did it', they haven't yet removed themselves from things and end up missing the mark. 'Something made it all happen' allows for belief in a specific truth. 'Nothing did it' allows for a belief in emptiness. Making classifications and holding them as truths determines that things reside in a specific place for a reason. Giving up classifications and holding nothing as truth determines that things exist in emptiness with no reasoning. What can be spoken about can be given meaning, and speaking about it helps to cure insecurities. What hasn't yet come into existence can't cause anxiety, and what has already been dismissed can't cause obstructions. Death and birth aren't so far away that their patterns can't be observed, but saying 'Something made it all happen' or 'Nothing did it' would cause suspicion as to whether those were false statements. When trying to examine the basis of existence, there's no limit to how far back we'd have to go. When we seek to find out how everything will evolve, there's no place we'd be able to stop. What's without limits and without stopping can't be described in words, so

what we end up doing is noting similar patterns in living things. 'Something made it all happen' and 'Nothing did it' are attempts at describing the origins of existence and how things began and will end up.
"Dao can't be possessed, and what can be possessed can't be let go of. When Dao is used as a term to denote something, that's starting from a faulty premise and going forward from there. Saying 'Something made it all happen' or 'Nothing did it' depends on one contorted viewpoint of things, so how could either of them be considered a greater method? If those words are considered to be substantial, then everything said would place limitations on Dao. If those words are considered to be superficial then everything said would place limitations on things. To reach an ultimate conclusion about Dao and things, neither speaking nor silence could convey that. By not speaking and not being silent, discussions reach their ultimate conclusion."

२५|पेंग यंग

जब पेंग-यंग ने छु राज्य की यात्रा की, यी-जिए उसके बारे में राजा से बात करने पर सहमत हो गया लेकिन इससे पहले की वह पेंग और राजा के बिच मुलाकात का प्रबंध करता, यी-जिए ने इस्तीफा दे दिया|
पेंग-यंग तब वांग-गुओ को मिलने गया और कहा :
"श्रीमान क्या आप मिझे राजा से मिलवा सकते है?"

वांग-गुओ ने कहा :
"मैं ऐसा नहीं सोचता| तुम्हे जरूर ही गोंग-युए-क्सुई के पास जाना चाहिए और उससे तुम्हारे लिए ऐसा करने के लिए पूछना चाहिए|"

पेंग्यंग ने कहा:
"गों-युए-क्सिऊ क्या करते है?"

"सर्दियों में वह मुलायम खोल वाले कछुओ को यांग्तज़े नदी में पकड़ता है| गर्मियों में वह एक पर्वत के किनारे जंगलो में विश्राम करता है| जब वे लोग जो उसके पास से गुजरते है पूछते है की वह क्या कर रहा है तो वह कहता है:'यह मेरे घर है'| यदि यी-जिए पहले ही तुम्हारी सहायता का प्रयत्न कर चूका है और कर नहीं पाया है तो मैं इससे बेहतर नहीं कर सकता हूँ! मेरा यी-जिए से क्या मुकाबला! यी-जिए के व्यवहार से जो प्रत्यक्ष है वह है की वह बिना सामर्थ्य के है पर उसके पास ज्ञान है| उसके पास उनका कोई आदर नहीं है जिन्होंने अपने आध्यात्मिकता का विकास किया है पर वह उनके प्रति उत्सुक है जिनके पास इस संसार में धन और शक्ति है| क्योंकि वह जानता है की उसका उन व्यक्तियों से कोई मेल नहीं है जिनके पास सामर्थ्य है इसलिए जब वह उनसे मिलता है तो वह गायब हो जाता है| वह जो सर्दियों में अकड जाता है वह पसंद करता है कल्पना करना की वह वसंत की गर्माहट से घिरा हुआ है| वह जिसे गर्मियों में लू लगी हुई होती है वह पसंद करता है कल्पना करना शर्दियो की ठंडी हवाओ की| छु के राजा इसी प्रकार का व्यवहार वाला व्यक्ति है| वह अपना प्रभाव हमेशा चाहता है और हमेशा अपने आदर की चाहत रखता है| यदि किसी को वह दोषी मानता है तो बिना क्षमा किये वह एक चीते की तरह हमला कर देता है| यदि कोई उसकी अपने सामर्थ्य की समझ के प्रति ही नमस्तक नहीं होता है तो कैसे वह उसको अपनी इच्छा के प्रति झुका सकता है!
"इसलिए जब एक साधू भयानक तंगी और मुसीबत में होता है तो वह अपने नजदीकी मित्रो और परिवार को उसकी दरिद्रता के बारे में भुला देता है| और जब वह ऊँचे पदों पर आसीन होता है तो वह सम्राटो और राजाओ को उसके पद के बारे में भुला देता है बजाय इसके की वह अपनी स्थिति बदले| वस्तुओ से व्यवहार करते समय वह उसमे आनंद अनुभव करता है| और लोगो से व्यवहार करते समय वह आनंद प्राप्त करता है जिन वस्तुओ का वे अनुभव करते है लेकिन इसके साथ ही वह हमेशा अपने प्रति इमानदार रहता है| कभी कभार वह अपने ही मुंह को बंद रखता है लोगो की समरसता की प्यास को शांत रखने के लिए और वह कभी कभार लोगो के साथ ही खड़ा होता है उनके परिवर्तनों में उनकी सहायता करने के लिए| जैसे की एक पिता और पुत्र होते है जो अपने जीवन निर्वह में संतुष्ट होते है इस प्रकार वे अपने खाली समय का उपयोग इकट्ठा होकर करते है| उसका (गोंग का) ह्रदय दुसरे लोगो के ह्रदय के साथ है इसलिए वह हर कार्य को कर लेता है| इसी कारण मैंने तुमको उसके लिए प्रतीक्षा करने का सुझाव दिया है|"

एक साधू उस सूत्र के साथ जुडा हुआ होता है जो सभी वस्तुओ का एकीकरण करके सम्पूर्णता धारण करे हुए होता है लेकिन वह नहीं जानता की यह कैसे हुआ है वह केवल उसे रेखांकित हुआ होता है जो प्राकृतिक होता है| वह प्रवाहित होता है नियति के साथ उसको आज्ञा देने के लिए और स्वर्ग को अपना गुरु मानकर| इसके बाद लोगो को उनके भाग्य का अनुगमन करने के लिए छोड़ दिया जाता है| यदि उसे ज्ञान की चिंता हो और इसकी की वह लगतार कहाँ जा रहा है बिना इसको एक क्षण के लिए भी त्यागे, फिर कैसे उसे कभी भी रुकने का समय मिल सकता है?

जब किसी का जन्म शारीरिक रूप से आकर्षक होता है यदि कोई उसे एक दर्पण भी दे तो वे अपने सुन्दरता को तब तक नहीं जान पायेगे जब तक कोई उन्हें इसके बारे में बताये या उन्हें सुन्दर न कहे| चाहे वे इसे जाने या नहीं जाने, चाहे वे इसे सुने या नहीं सुने वे तब भी अत्यंत रूप से खुश होगे| दुसरे लोग उनके प्रति आकर्षित हो सकते ही लेकिन यह तो केवल उनका (दुसरे लोगो का) स्वभाव होता है|

जब एक साधू लोगो से प्रेम करता है और यदि कोई उन्हें न समझाए की प्रेम क्या होता है और जब तक उन्हें न बताया जाए की उन्हें प्रेम किया जा रहा है वे इसे नहीं जानेगे| चाहे वे इसे जाने या न जाने, चाहे वे इसे सुने या न सुने वे तब भी लोगो से ऐसे ही प्रेम करते रहेगे| दुसरे लोग उनके साथ सुरक्षित और भयमुक्त अनुभव कर सकते है लेकिन यह तो केवल उनका स्वभाव है|

जब आप अपने एक पुराने पारिवारिक क्षेत्र मे जाते हो तब केवल उसका निरिक्षण करके ही आपको सुख का अनुभव सा होता है| यद्यपि उस क्षेत्र में नौ वनस्पतियों ने दस में से नो परिचत वनास्पितियो का अभिलोपन कर दिया हो वहां तब भी एक प्रकार के सुख का बोद्ध होगा| फिर यह कितना ज्यादा होगा यदि कोई वास्तव में देखे जिसे वे देखते हो और सुने जिसे वे सुनना चाहते हो| प्रत्येक वस्तु एक दस मंजिल ऊँची ईमारत की तरह खड़ी होगी, घिरी हुई बहुत ज्यादा विकर्षण से|

क्सिंग कुल के 'रन' ने अपने स्वास्थ्य और रूप को बनाये रखा जैसे की एक मध्य आयु के व्यक्ति का होता है| उसके साथ जाकर जो काम करता था वह वस्तुओ के साथ जुड़े बिना उनकी उत्पत्ति या अंत की समझ के और बिना यह जाने की वे दीर्घ आयु है यह अल्प आयु है होता था| एक दिन में ही चाहे उसके साथ जुडी सारी वस्तुए बदल जाए पर उनकी उनके साथ जुड़ने की समझ नहीं बदलेगी| जब एक अनुभूति समाप्त हो जाती है तब वह केवल उसको जाने देता है| यदि कोई स्वर्ग को अपने गुरु की तरह देखे तो वे नही पकड़ पायेगे उस ज्ञान को जो स्वर्ग उन्हें सिखा रहा है बल्कि केवल दूसरी वस्तुओ को अपनी समझ के द्वारा देखते रहेगे| क्यों कोई ऐसी चीज़ में इससे ज्यादा लिप्त होगा? एक साधू तो मात्र शुरुआत भी नहीं करता स्वर्ग को अधिकार में करने की, दुसरे लोगो को अपने अधिकार में करने की, एक शुरुआत को अपने अधिकार में करने की न ही वस्तुओ को अपने अधिकार में करने की| वह एक साथ जुड़ता है दुसरो एक साथ जैसे वे आगे बढ़ते है और इसका विरोध नही करता| वह उनकी सहायता करता है जहाँ वे जा रहे होते है पर उनको प्रभावित नहीं करता है| क्या यह वस्तुओ के प्रति स्वीकार्य होना नहीं है?

जब 'तंग' ने राज्य का भार संभाला वह अपने एक अधिकारी देंग-हेंग से सलाह लेता था| वह उसकी सलाह को ध्यान से सुनता था पर कभी भी स्वयं को इससे सीमित नहीं करता था| क्योंकि उसकी उपलब्धियों ने उसको उसकी सफलता के प्रति सहज कर दिया वह अपने पद को कायम रखने में सफल रहा| अपनी इस उपाधि की वजह से ही भविष्य में उसने कई दार्शनिक मतों के विद्यालयों में स्थान पाया इसका अर्थ की उसे दो दृष्टिकोण प्राप्त हुए| ज्होंग-नि ने स्वयं को समाप्त कर लिया इनका चिंतन करते हुए और उसमे से कुछ सिख बटोरने के प्रयत्न में|
रोंग-चेंग ने बड़ी सादगी से अपने कुल सदस्य को यह बताया:
"प्रत्येक दिनों को देखने के मत को हटा दो और तब वर्षो को मापने का कोई स्थान नहीं होगा, तब कोई तरीका नहीं होगा यह जानने का की क्या अंदर है और क्या बाहर है|"

वेई राज्य के राजा ने 'की' राज्य के सेना अध्यक्ष तियन-मौ के पास संधि का एक प्रस्ताव भेजा पर मार्की तियन-मौ ने इस संधि से इनकार कर दिया| वेई का राजा इतना मुर्ख था की वह उसका क़त्ल करने के लिए किसी को भेजना चाहता था| जब उसके युद्ध सलाहकार ने यह सुना तो उसने इसे बहुत ही गलत समझा और यिंग से कहा:
"आपके नियंत्रण में इतने सारे रथ है, योद्धा है लेकिन आप एक साधारण व्यक्ति को अपने शत्रु से सरोकार करने भेज रहे हो! मेरा सुझाव यह है की अप मुझे दो हजार शस्त्र सहित सैनिक दीजिये ताकि हम उन पर अभी हमला कर सके| हम सभी लोगो को बंदी बना लेगे उनके बैल और मवेशियों को बांध लेगे और तथा वहां पुरे क्षेत्र को आग लगाकर उनके शासक को जलने के लिये मजबूर कर देगे| मौ तब स्वयं से ही बचता हुआ भागेगा लेकिन हम उसका एक कुत्ते की तरह पीछा कर लेगे और उसके अपनी बातसे मुकुर जाने के कारण टुकड़े टुकड़े कर देगे|"

जब जी-ज़ि ने इसके बारे में सुना उसे यह बहुत गलत लगा और उसने कहा :
"हम राज्य के चारो और एक एक अस्सी फूट उची दीवार बनाने के कार्य में लगे हुए है और अब वह दीवार लगभग पूरी ही होने वाली है यदि हम ने उसे ऐसे ही बिगड़ा हुआ छोड़ दिया तो यह सभी लोगो को क्रोद्धित कर देगा और सारी मेहनत बर्बाद हो जाएगी| अब सात वर्ष हो चुके है जबसे हम किसी युद्ध में गए है और यही तो वेई के राजाओ का आधार है| यां बहुत ही उलझा हुआ व्यक्ति है और इस बारे में नहीं सुनेगा|"

जब हुआ-ज़ि ने इस सभ के बारे में सुना उसने सोचा यह बहुत ही अपमानजनक है और कहा :

“वह जो क्यू पर हमला करने का सुझाव देता है जरूर ही एक उलझा हुआ व्यक्ति है| वह जो बिलकुल ही आक्रमण न करने का सुझाव देता है वह भी एक उलझा हुआ व्यक्ति है| वह कोई जो इन युद्ध चाहने वाले और शांति प्रिय उलझे हुए व्यक्तियों को बुलाता है वह भी एक उलझा हुआ व्यक्ति है|"

राजा ने कहा :
"फिर इस बारे में क्या किया जाए?"

"तुम्हे केवल ताओ से हल खोजना चाहिए!!"

जब हुई-ज़ि ने इस बारे में सुना उसने दी-रेन-ज़ि को राजा से मिलवाया|
दी-जेन-रेन ने कहा:
"तुमने जरूर ही एक घोंघे के बारे में सुना होगा और उसके बारे में कुछ जानते होगे|"

"बिलकुल|"
"उसके दाए स्पर्श-सूत्र (ऐन्टेना) पर एक साम्राज्य होता है एक वंश का, जिन्हें हम आक्रमणकारी कहते है| एक साम्राज्य उसके बाए स्पर्श-सूत्र (ऐन्टेना) पर होता है एक वंश, का जिन्हे प्रतिहिंसक कहा जाता है| हर बार वे एक दुसरे के साथ तर्क वितर्क करते है और युद्ध में जाते है| चारो ओर असंख्य लाशें बिखर जाती है और हारी हुई सेना का पन्द्रह दिनों तक पीछा किया जाता है उससे पहले की विजयी सेना अपने घर आये|"

राजा ने कहा:
"बस! ये सब बकवास की बाते क्यों कर रहे हो?"

"कृपया मुझे बताने दीजिये की इसे एक विशिष्ट तौर पर कैसे देखा जा सकता है| क्या आप मानते है की यहाँ सीमाए है जो यह निर्धारित कर सके की कितनी दूर तक पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण फैले हुए है?"

राजा ने कहा:
"वे बिना किसी सीमा के है|"

"इसे समझो की आपका ह्रदय कहीं पर भी जा सकता है जहाँ कोई सीमाए नहीं है, पर वापस आता है आपके इस साम्राज्य के अस्तित्व को अनुभव करने के लिए, क्या यह प्रतीत नहीं होता है की जो एक क्षण में वास्तविक होता है वह अगले ही क्षण समाप्त हो जाता है?"

राजा ने कहा:
"निश्चित रूप से|"
"आपका दृष्टिकोण अब आपके वेई राज्य के मध्य में बैठे हुए कारण से है, राज्य की राजधानी लिंग के मध्य में स्थित होकर और एक राजा के नजरिये से| क्या आपके नजरिये और शांति प्रियो के नजरिये में कोई भेद है?"

राजा ने कहा :
"कोई भेद नहीं है|"

जब वह आगंतुक चला गया तब राजा के चेहरे पर बहुत ही विरक्त से और परशानी भरे भाव उत्पन्न हुए दिखे जैसे की उनका मन कही खो गया है| इस समय हुई-ज़ि उनको देखने आया|"
राजा ने कहा:
"वह आगंतुक वास्तव में ही एक महान व्यक्ति था| एक साधू भी उनके समान नहीं हो सकता है|"

हुई-ज़ि ने कहा:
"एक बांस की बांसुरी में फूंक भरो और वह तेज संगीत उत्पन्न करेगी| यदि कोई एक तलवार के नौक के अंत पर फूंक मारना चाहे तो परिणाम केवल छोटी सी फुसफुसाहट होगी| याओ और शुन एक ऐसे सिंहासन पर स्थित थे जो लोगो द्वारा बना हुआ था

लेकिन यह कहना की याओ और शुन किसी भी तरह से दी-जेन-रेन से आगे थे तो यह तो एक तलवार की नौक पर फूंक मारकर उसे बजाने का प्रयत्न करने के सदृश होगा|"

जब कोंग-ज़ि छु राज्य में था तब वह एक धर्मशाला जो की यी-कुई पहाड़ी पर थी में रुक गया| पडोस में ही एक परिवार पति, पत्नी सेवक और सेविकाओ के साथ मिलकर अपनी घर की छत पर इकट्ठा हुआ था|
ज़ि-लू (ज्होंग नि का एक शिष्य) ने पूछा :
"ये लोग इतनी दुविधा में वहां पर क्यों खड़े है?"

ज्होंग नि ने कहा :
"ये सभ एक साधू के सेवक है जो की एक साधारण मनुष्य होने का स्वांग रचे हुए है और स्वयं को वहा फसल के खेतो में छिपाए हुए है| उसने अपनी बदनामी को लगभग पूरी तरह से छिपा लिया है लेकिन उसकी इच्छाओ की समाप्ति अब तक नहीं हुई है| उसके शब्द केवल उसके मुख में से आते है लेकिन अब तक वे उसके ह्रदय में से नहीं आये है| उसकी राय संमूर्ण समाज के लिए नहीं होती है लेकिन उसका ह्रदय अब भी संघर्ष कर रहा है इसे ग्रहण करने के लिए| वह तो ऐसे है जैसे कोई स्वयं को सुखी भूमि पर डूबने का प्रयत्न कर रहा हो| क्या वह सही-नान का यी-लियाओ हो सकता है?"

ज़ि-लू ने उनसे आज्ञा ली जाकर उसे देखने की|
कोंग-ज़ि ने कहा :
"परेशान मत होओ! वह जानता है की मैं अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए छु राज्य में यात्रा कर रहा हूँ और छु के राजा से मिलने का प्रयत्न कर रहा हूँ इसलिए उसने यह अनुमान लगाया की मैं एक चापलूस हूँ| इस तरह से वह शर्मिंदगी अनुभव करता है उसे सुनने में जो की एक चापलूस कहना चाहता है| उसके साथ स्वयं ही प्रत्यक्ष संपर्क होने दो! इसके आलावा तुम यह कैसे सोचते हो की वह अब भी यही है?"
ज़ि-लू उसे देखने के लिए वहा गया पर उसने सभी कक्षों को ख़ाली पाया|

चंग-वू जिसे की नियंत्रण दिया गया था उसके क्षेत्र में आने वाली जागीरो का उसने ज़ि-लाओ से कहा:
"एक शासक को लोगो के से सरोकार करते वक़्त शासन में क्रूर या ढीला नहीं होना चाहिए और उसे लापरवाह या फिर उपेक्षकारी भी नहीं होना चाहिए| मैं क्रूर और ढीला हुआ करता था जब मैं अपने खेतो को बोता था इस कारण जो फासले मैंने पायी वे भी क्रूर और ढीली ही थी| मैं लापरवाह और उपेक्षकारी हुआ करता था जब मैं फसल के पेड़ो को उखाड़ता था इस कारण ही जो फसल मुझे प्राप्त हुई वह भी लापरवाह और उपेक्षकारी थी| अगले वर्ष मैंने अपने विचारो को बदल लिया अब मैंने गहरे से हल चलाया और सावधानी से बीज को बोया| मैंने फिर एक बहुत ही घनी और फैली फूली फसल को प्राप्त किया जिससे मैं सम्पूर्ण वर्ष संतुष्ट रहा|"

जब ज्हुंग्ज़ी ने इस बारे में सुना तो कहा:
"आजकल जब लोग अपने शरीर का विनमय करते है और अपने मन का नियंत्रण करते है तो उनमे से ज्यादातर वैसे होते है जैसे चंग ने व्यख्यान किया| वे स्वर्ग से दूर भागते है अपनी प्राकृतिक प्रवृति की अवहेलना करते है अपनी भावनाओ को दबा देते है और अपनी आत्मा की तरफ कोई ध्यान नहीं देते है वे एक स्वचालित भेड़ो के झुण्ड की तरह बने होते है| इसलिए जो क्रूर और ढीले होते है जब अपनी प्राकृतिक प्रवृति से सरोकार होते है तब वे अपनी ही पसंद और नापसंद की निंदा करते है जैसे की वे बुरी है, और फलतः पाते है अपनी प्रकृति को अवरुद्ध हुआ उन घास फूस और कटीली झाड़ियो से| प्रथम ये जब उत्पन्न होते है तो हमारे विकास में सहायक प्रतीत होते है पर धीरे धीरे ये हमारी वास्तविक प्रकृति का छेदन कर देते है, बड़ी विपुलता से वे हर हिस्से में बहती है और हम यह भी चुनाव नहीं कर सकते है की उनका विस्फोटन कहा होगा| वे ऐसे होते है और कार्य करते है है जैसे की कर्क रोग अंदर ही अंदर हमे क्षीण कर देता है जब तक की जिस उत्सर्ग का हम निवारण न करे वह भद्दा और सडा हुआ न हो जाये|

जब बाई-जू लाओ-दान के साथ अध्ययन कर रहा था, उसने कहा :
"कृपया मुझे यहाँ से जाने और संसार की यात्रा करने की अनुमती दीजिये|"

लाओ-दान ने कहा:
"परेशान मत होओ! इस संसार में हर जगह ऐसे ही है जैसे की यह यहाँ पर है|"

जब वह इस आग्रह पर अड़ गया लाओ-दान ने कहा :
"तुम पहले कहा जाओगे?"

"मैं 'की' राज्य से शुरुआत करूगा|"

जब वह 'की' राज्य में पंहुचा तो उसने एक फांसी दिए गए अपराधी का शव देखा| उसने उसके शरीर को एक पहले से बेहतर स्थान पर पहुचाया और अपना लबादा उसके ऊपर धक् दिया|
वह स्वर्ग की तरफ चीखा और उस शरीर पर रोते हुए कहने लगा :
"तुम अभागी वस्तु! तुम अभागी वस्तु! यह संसार बहुत ही घोर उथल पुथल का सामना कर रहा है और इस कारण से इसे छोड़ कर जाने वाले तुम पहले व्यक्ति हो| हमे सिखाया जाता है दुसरो से चोरी नहीं करना और दुसरो की हत्या नहीं करना| जबसे सम्मान और अपमान की उत्पत्ति हुई है इन्होने और बहुत सारे दोष और विकारो के लिए द्वार खोल दिया है| जब से खजाने और धन को संचित करना शुरू हुआ है इसने और कलह को जन्म दिया है| अब जबकि और दोष और विकार उत्पन्न हो गए है तथा और कलह का जन्म हुआ है इससे और तबाही उत्पन हुई है की कैसे लोग स्वयं को देखते है तथा इसने लोगो के लिए सांस लेने का समय भी नहीं छोड़ा है| हम वस्तुओ को इस तरह घटित होना नहीं देखना चाहते है लेकिन फिर भी यह घटित हो रहा है!
"वे जो प्राचीन समय में शासन करते थे वे दुसरो को उनकी उपलब्धियों के लिए श्रेय देते थे जबकी असफलता की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेते थे; श्रेय देते थे दुसरो को जब परिस्थितिया सही होती थी और जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते थे जब परिस्थितिया प्रतिकूल होती थी| इस प्रकार यदि एक व्यक्ति भी असफलता का अनुभव करता था तो वह पीछे मुड़कर देखता था की क्या कमी रह गयी है| वह आजकल के जैसे नहीं था| वे छिप जाते है दुसरो के पीछे जो मुर्ख होते थे यह अनुभव करने के लिये की वे भी ऐसे ही है| जब उनके कार्यो से मुसीबते आती है तो वह इसका दोष कायरो पर थोप देते है| वे दुसरे के लिए बहुत ही मुश्किल कार्य को उत्पन्न करते है और उन्हें सजा देते है जब उनकी इछाये पूरी नहीं होती है| वे दुसरो को विशेष कार्य के लिए दूर भेजते है यह जानते हुए की जब वे वहा जायेगे उनकी हत्या कर दी जाएगी| जब लोग जानते है की उनकी शक्ति पर्याप्त नहीं है तब वे दिखावे का उपयोग करते है यह भ्रम उत्पन्न करने के लिए की उन्होंने प्राप्त कर लिया है जो आदेश दिया गया था| हर नए दिन उन्हें और ज्यादा दिखावा और ज्यादा ढोंग करना पड़ता है| जब वे पर्याप्त समझदार नहीं होते है तब वे चोरी करते है और लोगो को धोखा देते है| जब उनके अधिकार में किसी भी भौतिक वस्तु का स्वामित्व नहीं होता है तब वे उसे दुसरो से चुराते है| यहाँ बहुत सारी चोरी और डकैतिया चल रही है, वास्तव में किसे इनके लिए दोष दिया जाए?"
उस समय तक जब कु-बो-यु साठ साल का हो चूका था वह साठ परिवर्तनों में से गुजर चूका था| ऐसा एक बार भी नहीं होता था की वह किसी वस्तु के बारे में यह सोचना शुरू करे की वह सही है और आखिर में किसी निष्कर्ष पर पहुचकर अपने शब्दों को वापास ले यह स्वीकारते हुए की वह गलत है| वह यह आज भी नहीं जानता है यदि जिसे वह सही और गलत कहत है हो सकता है पिछली उन्सठ बार की तरह की वह उस बारे में गलत है| सभी जीवित वस्तुओ का जन्म हुआ है पर कोई नहीं जानता है की वे कहा से आये है| सभी जीवित वस्तुए अपने जीवन में अग्रसर रहती है पर कोई नहीं जानता की वे कहा जा रहे है| सभ लोग उसका सम्मान करते है जिसे उनका ज्ञान जानने की अनुमति देता है पर कोई नहीं जनता की उस पर निर्भर कैसे हुआ जाए जिसे उनका ज्ञान उन्हें जानने की अनुमति नहीं देता है ताकि बाद में वे उसे समझ सके| क्या इसे संदेह का सबसे मुख्य अंश समझा जाए? छोड़ दो! छोड़ दो! बचने का कोई मार्ग नहीं है| यही है जो कहा जाता है, क्या वास्तव में ऐसा ही है?

होन्ग-नि ने महान इतिहासकारो डा-तो, बो-चंग-जियन और सही-वेंग से पूछा :
"वेई के सम्राट बहुत अधिक मदिरा का सेवन करते है और स्वयं को ही संतुष्टि करने में मग्न रहते है राज्य के शासन के प्रति कोई ध्यान नहीं देते है| वे शिकार करते है जहाँ वे चाहते है, बिना सीमओं की प्रवाह किये की वे कहाँ पर है| उन्हें कैसे एक सम्राट के नाम से बुलाया जा सकता है?"

डा-तो ने कहा :
"ऐसे घटनाये होती ही रहती है|"

बो-चंग-जियन ने कहा :
"सम्राट लिंग की तीन बीविया है जिनके साथ वह एक ही टब में स्नान करता है| पर जब सही-कुई उनसे मिलने शाही दरबार में आया उनके लिए भेंट लिए हुए तब वह उनसे मिलने दौड़ पड़ा और अपने गले से लगा लिया| वह लापरवाह होता है उनके साथ

जो उसकी कामुक इच्छाओ की पूर्ति करते है लेकिन वह पूरी तरह से गंभीर होता है जब वह उनसे व्यवहार करता है जिन्हें मूल्यवान समझा जाता है| इसलिए तो वह अब तक सम्राट के पद पर आसीन है|"

सही-वेई ने कहा :
“जब सम्राट लिंग की मृत्यु हुई, एक भविष्य वाणी हुई यह कहते हुए की उनको उनके वंश के कब्र ग्रह में दफनाना बहुत ही अशुभ होगा| एक और भविष्यवाणी हुई यह कहते हुए की अगर उन्हें श-कुई में दफनाया जाए तो यह बहुत ही शुभ होगा| कई फूट गहरा खोदने के बाद उन्हें वहा एक पत्थर का ताबूत मिला| उन्होंने उसे निकाला और निरिक्षण किया तब उन्हें उस पर यह लिखा हुआ पाया की:'अपने पूर्वजो पर आश्रित नहीं (उसकी कब्र के लिए) सम्राट लिंग ने यहाँ पर दफ़न होने को चुना है'| तुमने देखा सम्राट लिंग बहुत समय पहले ही लिंग (जादुई) बन गया था| वे दो दुसरे व्यक्ति (डा और बो) - वे कैसे पर्याप्त सक्षम हो सकते है इसे जानने के?"

शो-जही ने तै-गोंग-दिओं से पूछा:
"यह कहने से क्या अर्थ है के एक छोटा गाँव सभी दिशाओ में फैला हुआ होता है?"

तै-गोंग-दिओं ने कहा :
"यहाँ एक गाँव सभी दिशाओ में विस्तृत होंता है इसका अर्थ है की वह हजारो व्यक्तिगत नामो को एकत्र कर दस वंश के नामो में स्थापित कर देता है और उन सभ का संचालन एक समानता से करता है| वह एक साथ लेता है सभी को जो भिन्न होते है इसलिए की उन्हें एक समान समझा जा सके और वह विच्छिन्न कर देता है उनकी समानताओ को ताकि वे भिन्न भिन्न हो सके| (प्राचीन चीन में एक क्षेत्र के लोगो को एकसमान उपनाम प्रदान किया जाता था जो की सामान्य तौर पर राजा द्वारा दिया जाता था| ताकि एक कुल के सदस्य को दुसरे कुल के सदस्ययो से अलग जाना जा सके| हालाँकि हर संतान को माता पिता का नाम भी दिया जाता था| और यदि किसी को सरकार में अधिकारी नियुक्त किया जाता था उसका नाम राजा द्वारा बदल दिया जाता था| इसी कारण तो इतने सारे नाम एक ही व्यक्ति का जिक्र करते समय इतने सारे नामो को उपयोग किये जा रहा है|)

"अब यदि तुम एक घोड़े के एक सौ अंगो को चिन्हित करो तो निश्चित तुम उस घोड़े को चिन्हित नहीं कर रहे होते हो| हालाँकि जब एक घोडा तुम्हारे सामने खड़ा होता है यद्यपि वह सैकड़ो अंगो से मिलकर बना होता है लेकिन तब भी उसको एक घोडा ही कहा जाता है| इसलिए यह है की पर्वत और पहाड़िया लगातार मिटटी का संचय करती है जिससे की वे और ऊँची होती जा रही है| यांग्तज़े और येल्लो नदी आपस में मिलती है और और तेज प्रवाह के साथ चलती है| सक्षम लोग एक दुसरे के साथ संयुक होते है ताकि तथस्थ हो सके| इसीलिए यदि कोई उनसे उनके स्वभाव को प्रभावित करने का प्रयत्न करता है स्वयं को अधिकार युक्त पेश करके तब वे उससे प्रभावित नहीं होते है| यदि कसी चीज़ की उत्पत्ति गहन उनके अंदर से होती ही तो वे उसे दूर नहीं भेजते है|
"चारो ऋतुओ में से प्रत्येक के पास एक विशिष्ट उर्जा है और स्वर्ग उनमे से किसी भी एक को दुसरे के स्थान पर पक्ष नहीं लेता है इसी कारण तो एक वर्ष का क्रम पूरा होता है| पांचो में से प्रत्येक इन्द्रिय के लिए एक विशिष्ट कार्य है और जो व्यक्ति उनका नियंत्रक होता है वह किसी एक का अनुग्रह नहीं करता है इसीलिए तो पूरा शरीर सही ढंग से कार्य करता है| विनम्रता या आक्रमकता इनमे से किसी एक का समर्थन एक महानुभाव व्यक्ति नहीं करता है इसीलिए तो सामर्थ्य उसको सभी जरूरी उपकर्मो से प्रदान करता है| प्रत्येक जीवित वस्तुओ की एक विशिष्ट प्रकृति है और ताओ किसी एक के साथ निजी तौर पर संलग्नित नहीं होती है इसलिए किसी भी वस्तु का वर्गीकरण नहीं होता है| किसी भी वस्तु का वर्गीकरण नही करना निष्काम कर्म की उत्पत्ति करता है और जब निष्काम कर्म को किया जाता है तो ऐसे कोई चीज़ नहीं है जो अपने प्राकृतिक रूप से व्यवहार नहीं करेगी|
"समय की शुरुआत और अंत होता है| हर पीढ़ी बदलाव और परिवर्तनों से गुजरती है| सौभाग्य और दुर्भाग्य दोनों संयोग से ही प्राप्त होते है - कई बार उनके आने का स्वागत किया जाता है और कई बार उनका स्वागत नहीं किया जाता है| स्वयं को एक विशिष्ट पथ पर स्थापित करके और उस पर अटलता से स्थित होकर तब ही जो घटित होता है उसका अनुभव वैसे ही किया जा सकता है| अगर हम इस विशाल जंगली वातावरण में वस्तुओ की तुलना करे तो यहाँ सैकड़ो वस्तुए होगी जो एक साथ काम करती है इस वातावरण का निर्माण करने के लिए| या फिर एक विशाल पर्वत का निरिक्षण करे और आप देखेगे की एक वृक्ष और चट्टान एक ही साथ स्थापित होते है| यही अर्थ है यह कहने का की एक छोटा गाँव सभी दिशाओ में फैला हुआ होता है|"

शो-जही ने कहा :
"ठीक है, तब क्या इसे ताओ कहना सही नहीं होगा?"

तै-गोंग-दिओं ने कहा:
"पूरी तरह से नहीं| हो सकता है की हम सभी वस्तुओ को अंको द्वारा गिनने का प्रयत्न कर सकते है और तब भी वे दस हज़ार अंको द्वारा भी सीमित नहीं है लेकिन हम फिर भी इस शब्द का उपयोग करते है 'दस हज़ार वस्तुए' लेकिन अंको का उपयोग करना उन्हें वर्गीकृत करने के लिए केवल उनके विवरण करने को आसन बना देता है| इसलिए हम उपयोग करते है शब्दों का जैसे की 'स्वर्ग' और 'पृथ्वी' का सबसे बड़ी वस्तुओ को अंकित करने के लिए| हम उपयोग करते है ताओ शब्द का यह व्यक्त करने के लिए की कैसे सभी वस्तुए एक दुसरे के साथ क्रियान्वित होती है| क्योंकि हम उपयोग करते है बहुत सारे अंको का और वर्गों का ताकि हमारे लिए उन्हें सूचित करना आसन हो यद्यपि वे इसके बिना अस्तित्व में होती है पर हम इसे ले जाकर छोड़ देते है उनके बिच में सही प्रकार की तुलनाए करके! तब हम बहस शुरू कर देते है - जैसे की अब फिलहाल चल रहा तर्क की क्या एक घोडा होता है और क्या एक कुता होता है (अपने को सर्वोपरि सिद्ध करने के लिए एक दुसरे के उलटे तर्क करना)| यह बहुत ही बेहतर होगा इस सभ को यही ख़त्म कर देना और आगे बढ़ना|"

शो-ज़ि ने कहा :
"चारो दिशाओ के अंतर्गत और छह क्षेत्रो (चार दिशा तथा ऊपर और निचे) में अंतर्विष्ट हुए, दस हजार वस्तुओ की उत्पत्ति कैसे होती है?"

तै-गोंग-दिओं ने कहा:
"यिन और यंग एक दुसरे को आकर्षित करते है, एक दुसरे से मिलन करते है और एक दुसरे को परिपूर्ण करते है| चारो ऋतुए एक दुसरे के साथ बदलती रहती है एक दुसरे को जन्म देती है और फिर एक दुसरे का अंत भी करती है| पसंद और नापसंद आकर्षण करते है और विकर्षण करते है जिससे एक सेतु बन जाता है स्त्री और पुरुष के बीच में उनके आगमन और प्रस्थान के साथ जो की निर्माण करता है एक भव्य धुरी का| सुरक्षा और खतरा आसानी से एक दुसरे में बदल जाते है| संचय और वितरण एक दुसरे का अनुगमन करते है| विश्राम और तनाव एक दुसरे द्वारा धारण किये जाते है| दुर्भाग्य और सौभाग्य एक दुसरे की उत्पत्ति का कारण होते है| ये सभ वास्तविकता का अंश है जिन्हें की अभिलेखों पर निर्धारित किय जा सकता है और शुद्ध तत्व को ध्यान से देखा जा सकता है| इस प्राकृतिक क्रम का अनुगमन सभी वस्तुओ द्वारा किया जाता है और इस कर्म-विकास का प्रभाव सभी वस्तुओ पर होता है| चरम पर पहुचकर इसका विपर्य होता है और पूर्णता को प्राप्त कर फिर से शुरुआत होती है - यह सभी वस्तुओ में निहित है| ज्ञान क्या प्राप्त कर सकता है? - यह व्यक्त करने के लिए जो शब्द उत्तम होते है, वे शायद ही उसे व्यक्त करने के लिए पर्याप्त होते है जिस परम को वस्तुए प्राप्त होती है| एक व्यक्ति जो अपने ताओ के साथ संलान्गित होने के प्रयोजन में वस्तुओ के अंत तक उनका पीछा नहीं करता है और न ही उनकी शुरुआत का विवेचन करता है| इस प्रकार से वस्तुओ के संदर्भ में विचार विमर्श समाप्त हो जाते है|"

शो-ज़ि ने कहा :
"जी-जहें के अनुसार किसी ने इसे नहीं बनाया है लेकिन जिए-ज़ि के अनुसार कोई है जिसने यह सभ बनाया है| ये दो मत अपने तर्क वितर्क के साथ लगातार ही चलते आ रहे है और ऐसे ही चलते जायेगे| कौन सा है जो मूल तक पहुचने में सही है और कौन सा है जो केवल अपने सिद्धांतो को बढ़ावा दे रहा है?"

तै-गोंग-दिओं ने कहा :
"मुर्गे कुकड़ू-कु करते है और कुते भौंकते है| हर कोई यह जानता है| यद्यपि उनके पास अपना विस्तृत ज्ञान होता है पर उनमे से इसे शब्दों में कोई भी नहीं बता सकता की की कैसे वे सभ ऐसे ही है और न ही यह बता सकता है की उनके साथ बाद में क्या होने वाला है| वे उनको पृथक कर सकते है और उनका विश्लेषण कर सकते है और एक पूर्ण समाधान पर पहुच सकते है जबकि उनके इन सिद्धांतो का कोई मूल वास्तविक आधार नहीं होता है| यह जरूर ही एक महान समाधान प्रतीत हो सकता है लेकिन यह सभ वस्तुओ को धारण नहीं करता है| यह कहना की 'किसी के कारण यह सभ हो रहा है' और यह कहना की 'यह किसी ने नहीं किया है' उन्होंने अब तक स्वयं को विषयों से विरक्त नहीं किया है और समाप्त हो जाते है बिना यह समझे की 'किसी ने यह सभ बनाया है' यह कहना नियत करता है विश्वास करने को एक विशिष्ट सत्य में| 'किसी ने यह नहीं बनाया है' यह नियत करता ही शुन्यता में विश्वास को| वर्गीकरण करना और उन्हें सत्य मानना यह निर्धारित करता है की वस्तुए एक स्थान पर किसी विशिष्ट कारण से होती है| वर्गीकरण करना और किसी को भी सत्य नहीं मानना यह निर्धारित करता है की वस्तुए शुन्यता मे बिना किसी कारण के स्थापित होती है| जिसको कहा जा सके उसका अर्थ भी निकला जा सकता है और उसके बारे में कहना अनिश्चितताओ का समाधान करने में सहायक होता है| जो अभी तक अस्तित्व में नहीं आया है वह चिंता उत्पन्न नहीं कर

सकता है और जो पहले ही समाप्त हो चूका है वह व्यधान उत्पन्न नहीं कर सकता है| जन्म और मृत्यु इतने दूर नहीं है की उनके चिन्हों को देखा न जा सके लेकिन यह कहना की 'किसी ने इसकी रचना की है' या कहना की 'किसी ने इसकी रचना नहीं की है' यह संदेह उत्पन्न करता है जैसे की ये दोनों गलत विवरण है| जब प्रयत्न किया जाता है अस्तित्व के मूल को जानने का तब इसकी कोई सीमा नहीं है की कितना पीछे या आगे हमे जाना पड़ेगा| जब हम यह खोजने की कौशिश करते है की कैसे सभी वस्तुओ का विकास हुआ तब हमारे रुकने की कोई सीमा नहीं है| जो बिना सीमओं के है और बिना रुके जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किय जा सकता है फिर हम क्या करते है वस्तुओ में समानता खोजते हुए समाप्त हो जाने में| 'किसी ने इसकी रचना की है' या 'किसी ने इसकी रचना नहीं की है' ये सभ तो प्रयास है हमारे अस्तित्व के मूल की व्याख्या करने के और इसकी व्याख्या करने के की कैसे वस्तुओ की शुरुआत हुई और कसी उनका अंत होगा|
"ताओ पर अधिकार नहीं किया जा सकता, और जिस पर अधिकार किया जा सके उसे जाने नहीं दिया जा सकता| जब ताओ का एक शब्द की तरह उपयोग किया जाता है किसी चीज़ को व्यक्त करने के लिए यह तो ऐसे है जैसे एक त्रुटिपूर्ण आधार पर आश्रित होकर शुरुआत करना और यही से आगे बढ़ना| यह कहना की 'किसी ने इसकी रचना की है' या 'किसी ने इसकी रचना नहीं की है' निर्भर करता है वस्तुओ के बिगड़े हुए दृष्टिकोण पर, फिर कैसे उनमे से एक को एक परम सिद्धांत मान लिया जाए? यदि उन शब्दों को संतोषजनक समझ लिया जाए तो हर वस्तु जो कही गयी है ताओ को सीमित कर देगी| यदि उन शब्दों को सतही (पृष्ठीय) समझ लिया जाए तो हर वस्तु जो कही गयी है वह वस्तुओ को सीमित कर देगी| ताओ और वस्तुओ के संदर्भ में एक परम निष्कर्ष पर पहुचना, न तो शब्द और न ही मौन इसकी व्यख्या कर सकते है| बिना बोले और बिना मौन हुए विचार अपने परम निष्कर्ष पर पहुच जाते है|

26.External Things

You can't be certain how external things are going to pan out. For example, Long Feng was beheaded, Bi Gan had his heart cut out, Ji Zi pretended to be insane, E Lai was murdered, and Jie and Zhou were vanquished.
All people in positions of authority want their subservients to be loyal, but even if they're loyal that doesn't necessarily mean they'd be trusted. For example, Wu Yuan was thrown into the Yangtze River and Chang Hong was killed in Shu where his blood was hidden away for three years until it turned green.
All parents want their children to show them respect, but even if they're respectful that doesn't necessarily mean they'll be loved. For example, Xiao Ji was depressed and Zeng Shen was disheartened (both were rejected by their parents).
When two pieces of wood are rubbed together they'll burn. When metal is kept close to a fire it'll melt. When Yin and Yang are out of sync the heavens and earth are disrupted causing thunder and lightning which can boil water and set fire to the huge parasol trees. When stuck in depression and anxiety there's a sense that one's falling from one pit into another with no chance of escape. Confused and oblivious, there seems to be no possibility for achieving anything. The heart seems to be hanging upside down, suspended between the heavens and the earth. Ironing out the wrinkles of the heart is hindered by being submerged under what's been accumulated. Benefit and damage chafe against each other, creating a fire that grows until everyone is burning together. Even something as steadfast as the moon couldn't bear that kind of heat. If one becomes complaisant to the burning fire, then any realization of Dao ends.

When Zhuang Zhou's (Zhuangzi's) family was suffering from poverty, he went to borrow some grain from the Marquis of Jian He.
The Marquis of Jian He said:
"Sure. As soon as I get some money from the government, I'll lend you three hundred dollars. Will that do?"
Zhuang Zhou got perturbed and replied in a heated way:
"When I was on my way here yesterday I heard a yell from the middle of the road. As I turned around to see where the sound was coming from, I saw a carp lying in a rut made by a wagon wheel. I asked it: 'What's a carp doing here?' It replied: 'I'm a slave to the waves of the Eastern Ocean. Kind sir, could you give me a bucket of water and save my life?' I said: 'Sure. When I get to the south and gain an audience with the kings of Wu and Yue I'll have them divert the water westward from the Yangtze river to welcome you. Will that do?' The carp got perturbed and replied in a heated way: 'I'm no longer in my element and am without a means to survive. If I could get just a bucket of water I'd be able to go on living. If all you have to offer is words, then after this morning you might as well go looking for me in a dried fish store.' "

The young prince of Ren prepared a large hook on the end of a huge black rope and strung the hook with fifty bulls as bait. He then squatted down on Kuai Ji mountain, casting his line into the Eastern Ocean. Morning after morning he fished for a whole year but didn't catch anything. Then one day a gigantic fish swallowed the bait and dragged the large hook downward into the depths, then it suddenly came crashing upward and broke the surface trailing water behind it like rivulets from its fins. It created a frothy wave as big as a mountain, sending surges extending in all directions of the ocean. It made a sound like the howling of banshees that would strike terror in anyone who heard it for hundreds of miles. The young prince of Ren managed to land the fish and cure it in brine. From the Zhi River to the east and from Cang Wu to the north there was no one who wasn't totally fed with the flesh from that fish.
For a long time afterwards, that story has been told and retold with a sense of mockery as though it could never have really happened, and many people tell the story to their students to astonish them with it. For those who find it's a real effort to lift their fishing poles, walk quickly to an irrigation ditch and wait for a carp or minnow to bite their lines, catching such a gigantic fish on their line would be a great catastrophe. Those who dress themselves up with insignificant words thinking that will impress those in authority and gain them great achievements are actually moving even farther from it. Those who've never really listened to the information contained in the parable of the man from Ren and find a way to use it in their own times move even farther away.

A few students of the Shi Jing (Book of Odes) and the Li Ji (Book of Rites) were in the process of digging up some old graves.
The elder scholar addressed his subordinates saying:
"The sun is about to rise in the east. How's it coming along?"
One of the lessor scholars said:
"We haven't yet removed his clothing, but we can see there's a pearl in his mouth."
"Contained within the Shi Jing is this saying: 'So green is the grass growing atop the mound of a grave. All their life making no contributions, yet in death why should they continue to hold a pearl in their mouth?' One of you grab hold of his hair and his beard then another of you can tap his chin with a mallet. Open his jaw very gently so as not to damage the pearl in his mouth."

A disciple of Lao Lai Zi (Old Weeds) was out gathering firewood when he came upon Zhong Ni (Confucius).
When he returned he told his master:
"There's a man out there who's full-chested and has short legs. His shoulders are stooped and his ears are set way back on his head. He's peering about as though he's seeking the four corners of the earth. I don't recognize him nor can I figure out his nationality."
Lao Lai Zi said:
"It must be Qiu (Confucius). Invite him to come over here."
When Zhong Ni had arrived, Lao Lai Zi said:
"Qiu! Get rid of your pretentious airs along with your all-knowing attitude and you might just become a respectable person."
Zhong Ni bowed from the waist and took a step backward. He got a pensive look on his face and asked:
"How can I best occupy my time in order to promote my ideals?"
Lao Lai Zi said:
"You can't bear the suffering of your own lifetime, but you rush about concerned over the troubles of future generations. You steadfastly struggle to abolish evil influences while overlooking the fact that your own plots and schemes prevent you from taking stock of your own evil influences. Rushing about getting pleasure from acting kind is a disgraceful way to live your life. You're only attracting uncommitted people to follow along with you, drawing each other on with the lure of fame and stifling each other with your own personal plots and schemes. Rather than praising Yao and putting down Jie it would be better to forget both of them and shut off the whole idea of praise. Looking into the past there's no way to avoid being distressed. Trying to affect the future there's no way to avoid influencing others in an evil way. A wise person patiently takes small steps when becoming involved in affairs and thus is able to succeed every time. Why is it that you think you're carrying such a heavy load? Because you act like you already know everything."

At around midnight Lord Yuan of Song (Duke Yuan) dreamed there was a man with flowing hair looking in at him through a side door.
The man said:
"I'm from the deep abyss in Zai Lu. I was serving to purify the Yangtze river on the orders of the river god, but I was caught by the fisherman Yu Qie (Just Me)."
When Duke Yuan woke up he asked his chief fortune-teller about the dream.
The fortune-teller said:
"You were visited by a spiritual tortoise."
The Duke said:
"Is there a fisherman named Yu Qie?"
The fortune teller said:
"Yes, there is."
The Duke said:

"Bring Yu Qie to my assembly hall."
The next morning Yu Qie was in the hall and the Duke said to him:
"Have you caught something recently?"
Yu Qie nodded and said:
"I caught a white tortoise in my net that measures five feet around."
The Duke said:
"Bring that tortoise to me."
When the tortoise arrived the Duke was indecisive about whether to kill it or keep it alive. Since he couldn't make up his mind, he questioned the oracle about it. The oracle said: "Killing the tortoise and using it for divination purposes will be auspicious", so he had the shell removed from the tortoise. The shell was drilled into seventy two times, and not once did the results prove to be faulty.
(Note: One of the methods of divination used by the ancient kings was to ask a question then have a fortune-teller drill holes in the shell of a tortoise and "read" the cracks that resulted.)
Zhong Ni (Confucius) said:
"That spiritual tortoise was able to appear to Duke Yuan in a dream, but it wasn't able to avoid Yu Qie's fishing net. It had enough knowledge to provide seventy-two proper divinations, but it wasn't able to avoid the disaster of having its innards scooped out. This shows us that knowledge has its limits and that spirituality is ineffective. Although one may have perfected his knowledge, thousands of people would still scheme against him. A fish isn't afraid of a net but fears a pelican's beak. Get rid of myopic knowledge and a greater understanding will shine forth. Get rid of acting kind and natural kindness will take over. When an infant is born they can learn to speak even if they don't have a speech coach. That's because they're surrounded by others who are speaking."

Hui Zi said to Zhuangzi:
"What you say is useless."
Zhuangzi said:
"By knowing what's useless you can begin to talk about what's useful. People might disregard the idea that the earth is broad and vast simply because the part of it they find useful is where they place their own two feet. If one was to dig away the rest of the soil around their feet down to the deepest depths, would the place they were standing still be useful?"
Hui Zi said:
"No, it would be useless."
Zhuangzi said:
"In that case what's considered to be useless can become useful when seen from a different perspective."

Zhuangzi said:
"People who have the ability to flit about untethered hold on to the idea they're not getting anywhere, whereas people who don't have the ability to flit about untethered hold onto the idea they're actually getting some place. If their personal ambitions determine what they'll flow with and what they'll reject, they engage in behavior that severely limits them. Forget it! They'll never gain any knowledge nor will they attain virtue no matter how hard they try. If they fail in something they attempt, they don't check it out to see what went wrong, but scurry on like they're running away from a blazing fire that they refuse to look back at. Although they determine who among them is more powerful and who is subservient, things can easily change in an instant and there's no way to determine which of them is more despicable. That's why it's said that a perfected person doesn't hold on to or reject anything.
"To be respectful of what happened in antiquity while condemning what's going on today is the way the philosophical scholars set their minds. Even observing what's going on today from the mindset of the clansman Shi of Wei (King Hui), how could he not be surprised at the turn of events? Yes, only a perfected person could flit about untethered in today's world and not be repulsed by it, and could engage with other people without losing his own sense of self. He doesn't adopt as his own what others are selling, and he doesn't hand over to others the essence of his own heart."

Eyes that are perceptive see clearly. Ears that are perceptive hear sharply. A nose that's perceptive picks up various smells. A mouth that's perceptive tastes flavors. A mind that's perceptive gathers knowledge. Understanding that's perceptive gains virtue. None of those channels choose to be obstructed. If they get obstructed then they choke. If the choking isn't stopped then it causes suffocation. Suffocation causes many injuries in life. Living things have an inborn knowledge to depend on unrestricted breathing. If the breath isn't free flowing, the heavens can't be blamed for it. The heavens permeate them with it day and night without decreasing. People then look for ways to block up their holes.
The womb has a propensity for becoming larger in order to contain a child. The mind has a propensity to flit about untethered in the heavens. If a house doesn't have enough room to move about then one's wife and mother will lash out uncontrollably at each other. If one's mind doesn't flit about untethered in the heavens then the six senses will try to subjugate each other's roles. The great forests in the hills and mountains are appreciated by people because their spirits aren't in contention.
When virtue is used as a means to increase fame, fame is used as a means to increase cruelty, plots and schemes are used as a means to examine the slightest sounds, knowledge is used as a means to promote disagreements, kindling is put on the fire as a means to create conformity, and official positions are used as a means to make everyone act appropriately. When a spring rain lasts all day, vegetation sprouts vigorously. At that point people start collecting and preparing their spades and hoes, but by the time they go to deal with the plants they've already doubled in size and no one understands how that happened.

Resting quietly can help cure an illness. Rubbing one's temples can alleviate the stress of old age. Becoming tranquil can stop agitation. Although these things work for those who get worn out by all the tasks they have to perform, someone who doesn't run around like a mad hare wouldn't be concerned about that. A sage comes up with things to bring the world into line, but a spiritual person wouldn't be concerned about that. A person of worth comes up with things to bring their generation into line, but a sage wouldn't be concerned about that. Government officials come up with things to bring their state into line, but a person of worth wouldn't be concerned about that. A regular person comes up with ways to endure the times, but a government official wouldn't be concerned about that.

When the parents of the gatekeeper of the Yan Gate died, he was so good at performing the ritualistic sacrifices that he was given a promotion to Official Teacher.
(Note: Rituals that were supposed to be followed at the death of a parent included extreme fasting, self-mutilation and outward expressions of one's suffering.)
Other people in his neighborhood decided to practice those rituals as extremely as he did and half of them died.
When Yao offered to turn over control of the world to Xu You, Xu You ran away. Likewise, when Tang offered to turn over the world to Wu Guang, Wu Guang got angry at him. When Ji Tuo heard about what happened, he snuck off with his officers and disciples to the Kuan River. The dukes and officials in the government who were his supporters mourned losing him, and after three years Shen Tu Di (one of his supporters) tied a huge rock to his back and drowned himself in the Yellow River.

A fish trap is used in order to catch fish. Once the fish are caught the trap is forgotten. A rabbit trap is used in order to catch rabbits. Once the rabbit is caught the trap is forgotten. Words are used in order to capture thoughts. Once the thoughts are captured the words are forgotten. I'd be so at ease if I could find someone who had forgotten words so I could have a conversation with him!

२६|बाह्य वस्तुए

आप कभी निश्चित नहीं हो सकते है की कैसे बाह्य वस्तुए घटित होने वाली है| उदहारण के लिए लॉन्ग-फैंग का सिर काट दिया गया, बी-गिं का ह्रदय को निकाल दिया गया, जी-ज़ि को झूठा पागल सिद्ध कर दिया गया, इ-ली की हत्या कर दी गयी और जिए तथा ज्होऊ परास्त कर दिया गया|
सभी उच्च अधिकारिक पदों पर रहने वाले व्यक्ति अपने लिए काम करने वालो को वफादार होना चाहते है लेकिन यदि वे वफादार भी हो तो जरूरी नहीं की इसका मतलब उन पर विश्वास किया जा सके| उदहारण के लिए वू-युआन को यांग्तज़े नदी में फ़ेंक दिया गया और चंग होन्ग की 'शु' में हत्या कर दी गयी जहाँ उसके खून को छिपा दिया गया तीन वर्ष तक जब तक की उसका रंग हरा न हो गया|
हर माँ-बाप चाहते है अपने बच्चो से उनके लिए आदर, लेकिन यद्यपि वे आदर भी करे तो यह जरूरी नहीं की इसलिए उन्हें प्यार भी किया जाए| उदहारण के लिए क्सिओं-जी तनाव में चल गया और ज़ंग-शेन का ह्रदय टूट गया (दोनों को उनके माँ-बाप द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था)|
जब दो लकड़ी के टुकडो को आपस में रगडा जाता है वे जल उठते है| जब धातु को अग्नि के निकट रखा जाता है वह पिघल जाता है| जब यिन और यंग को एक साथ होने से अलग किया जाता है तो स्वर्ग और पृथ्वी बाधित हो जाते है जिसके कारण तूफान और बिजली की उत्पत्ति होती है जो पानी को उबल सकती है और बड़े बडे वनों में आग लगा सकती है| जब आप तनाव और चंता में होते है तो एक बोध होता है की आप एक मुसीबत से दूसरी मुसीबत मे गीर रहे है और आपके बचने का कोई विकल्प नहीं होता है| उलझे हुए और बिखरे हुए तब किसी भी उपलब्धि को पाने की कोई सम्भावना प्रतीत नहीं होती है| ह्रदय उल्टा लटका हुआ प्रतीत होता है जैसे की वह स्वर्ग और धरती के बिच में छोड़ दिया गया हो| जब आप पहले ही संचित की गयी वस्तुओ में लिप्त होती है तब ह्रदय की चिन्ताओ को दूर करने के प्रयास को रोक दीया जाता है | लाभ और हानि एक दुसरे से प्रतिस्पर्धा करते है, जब तक वे एक ऐसी अग्नि उत्पन्न न कर ले जो सभी वस्तु को भस्म न कर दे| यद्यपि चन्द्र जैसा स्थिर भी उस अग्नि को सहन न कर पाए| यदि कोई इस अग्नि के प्रति अनुययी हो जाता है तो ताओ से किसी भी प्रकार की अनुभूति समाप्त हो जाती है|

जब ज्हुंग्ज़ी का परिवार निर्धनता से ग्रस्त था तब वह जियन-हे के मार्की से कुछ अनाज उधर मांगने गया|
जियन-हे के मार्की ने कहा :
"बिलकुल| जैसे ही मैं सरकार से पैसा प्राप्त करूगा मैं तुम्हे तीन सौ उधर दे दुगा| क्या यह काम करेगा?"

ज्हुंग्ज़ी क्षुब्द हो गया और थोडा गर्म होते हुए कहा :
"जब मैं कल अपने मार्ग में था यहाँ आने के लिए मैंने एक चिल्लाहट सुनी सड़क के बीच में से| जैसे ही मैं मुडा यह देखने के लिए की कहाँ से यह आवाज आ रही थी तो मैंने एक 'कारप' मछली को एक वैगन के पहिये से बने हुए गड्ढे में पड़े हुए देखा| मैंने उससे पूछा:'एक 'कारप' मछली यहाँ क्या कर रही है?'
उसने जवाब दिया:
'मैं पूर्वी समुद्र की लहरों की दासी थी| हे दयालु मनुष्य क्या तुम मुझे एक पानी की बाल्टी में दाल सकते हो और मेरी जान बचा सकते हो?'
मैंने कहा:
'बिलकुल| जब मैं दक्षिण में गया और वू और युए के राजाओ से मिलुगा मैं उन्हें पश्चिमी यांगत्जी नदी के जल को तुम्हारी तरफ मोड़ने के लिए कहुगा| क्या इससे काम हो जायेगा?
वह कारप मछली क्षुब्द हो गयी और गर्म होकर कहा:
'मैं अपने तत्वों में अब नहीं हूँ और बिना किसी बचने के साधन के हूँ| यदि मुझे केवल जल की एक बाल्टी भी मिल जाए तो यह भी मेरे जीवन के लिए पर्याप्त होगा| यदि तुम्हारे पास केवल शब्द ही प्रस्तुत करने को है तो तुम मुझे इस सुबह के बाद किसी मछली वाले की दुकान में भूनकर सजा हुआ देखोगे'|"

रेन के नौजवान राजकुमार ने एक बड़ा मछली फंसाने का कांटा तैयार किया जिसको की एक बड़ी रस्सी के साथ बाँधा गया और उसमे चारे के तौर पर पचास बैल लटका दिए गए| तब वह कुई-जी पर्वत पर चला गया वहां से अपने कांटे को पूर्वी समुद्र में फेंका| हर नई सुबह हर नए दिन वह प्रयत्न करता रहा और उसने पूरा एक साल बिता दिया पर वहां कुछ पकड़ नहीं पाया| तब

एक दिन एक विशालकाय मछली ने चारे को निगल लिया और उस बड़े कांटे को निचे गहराई में खिंच लिया तब वह अचानक अपने मत्स्य पंखो द्वारा जल को खदेडती हुई ऊपर आई और अपने पीछे जल की एक धारा सी बना दी| उसने उनकी पर्वत जितनी उची झागदार लहर उत्पन्न कर दी और समुद्र की सभी दिशाओ को अपने आवेश में ले लिया| उससे प्रेत आत्माओ के रोदन जैसे आवाजे उत्पन्न हुई जिसे कोई सौ मील की दुरी पर भी सुने तो वह भी भय से कांपने लग जाए| नौजवान राजकुमार उस मछली को ज़मीन पर लाने में सफल रहा और उसमें से समुद्री लवण को हटा दिया गया | तब 'जही' नदी से पूर्व तक और कांग-वू से उत्तर तक ऐसा कोई नहीं था जिसे इस मछली का गोस्त नहीं खीलाया गया| इसके बाद भी लम्बे समय तक इस कहानी को बार बार सुनाया गया दोबारा सुनाया गया और इसे एक मजाक की तरह पेश किया गया जैसे की यह कभी हुआ ही नहीं था और बहुत सारे लोगो ने इस कहानी को अपने शिष्यों को आश्चर्य चकित करने के लिए सुनाया| वे जिन्होंने इसे वास्तविक समझा उन्होंने अपने काँटों को उठाया और शीघ्र ही वे नालो के लिए निकल गए जहाँ अपने काँटों में मिन्नो और कार्प (एक प्रकार की छोटी मछलियां) के फंसने का इंतज़ार करने लगे क्योंकि एक उस जैसी विशाल मछली को पकड़ना तो उनके लिए विध्वंस कारी होता| वे जिन्होंने स्वयं को निरर्थक शब्दों से सज्जित किया यह सोचते हुए की इससे वे अपने अधिकारियो को प्रभावित कर देगे और महान उपलब्धि हासिल करेगे वे इससे और दूर चले गए| वे जिन्हने सच में कभी रेन के इस व्यक्ति की कथा के बारे में नहीं सुना और उसे अपने ढंग से अपने समय में पेश किया वे भी इससे बहुत ज्यादा दूर हो गए|

कुछ शिष्य सही-जिंग पुस्तक के और 'लि-जी' पुस्तक के कुछ पुराणी कब्रों को खोदने के अपने कार्य पर थे|
एक उच्च शिष्य ने अपने अधीनस्थ शिष्य को यह कहते हुए संबोधित किया :
"सूर्य पूर्व दिशा में अब उगने ही वाला है| हम कहा तक पहुचे है?"

अधीनस्थ शिष्यों में से एक ने कहा :
"हमने अब तक उसके कपड़ो को नहीं हटाया है हम देख सकते है की उसके मुख में एक मोती है|"

"सही-जिंग में कही हुई एक कहावत है :'बहुत सारी है एक कब्र के टीले पर उगी हुई घांस| सभी ने उनके जीवनों ने नहीं किया कोई योगदान फिर भी मरने के बाद क्यों लिए हुए है वे मोती को मुख में?' तुम में से एक उसके बालो को पकड़ो और एक उसकी थोड़ी को मोगरी से दबाओ| उसके जबड़े को बड़ी सावधानी से खोलो ताकि उस मोती को कोई नुकसान न पहुचे|"

ली-ज़ि का एक शिष्य लकडिया इकट्ठा करने गया हुआ था जब उसकी भेंट ज्होंग नि से हुई|
जब वह वापस आया उसने अपने गुरु से कहा:
"वहा पर एक व्यक्ति था चोडी छाती और छोते पैरो वाला| उसके कंधे झुके हुए थे और कान सिर के बिलकुल पिछले हिस्से पर थे| वह ऐसे देख रहा था जैसे पृथ्वी के चारो कोनो को खोज रहा हो| मैं उसको पहचान नहीं पाया और न ही उसकी राष्ट्रियता का पता लगा पाया|"

लाओ-ली-ज़ि ने कहा :
"वह जरूर ही कुई (कोंग-ज़ि) है| उनको यहाँ आने का निमंत्रण दो|"
जब ज्होंग नि आ गया तो लाओ-ली ज़ि ने कहा :
"कुई! अपने अभिमानी मनोभावों और सभ चीजों को जानने जैसे रवैये से मुक्ति पाओ तब ही तुम एक सम्मानीय व्यक्ति बन सकते हो|"

ज्होंग नि ने कमर से झुककर प्रणाम किया और एक कदम पीछे हट गया| उसके मुख पर एक चिंताग्रस्त भाव आया और उसने पूछा :
"मैं अपने समय का अपने सिद्धांतो को प्रोत्साहित करने के लिए अच्छी तरह से उपयोग कैसे कर सकता हूँ?"

लाओ-ज़ि ने कहा:
"तुम अपने जीवन के ही दुखो का वहन नहीं कर सकते हो लेकिन तुम फिर भी आने वाली पीढियों के दुखो के बारे में चिंतित हो|तुम दृढ हो बुरी प्रवृतियों को समाप्त करने में जबकि साथ ही तुम इस तथ्य को नहीं देख रहे हो की तुम्हारी अपनी योजनाये और उपाय तुम्हे तुम्हारी स्वयं की ही बुरी प्रवृति को देखने से रोक रही है|

इस तरह दयालु बनकर दौड़ना प्रतिष्ठा पाने के लिए एक शर्मनाक तरीका है जीवन को जीने का| तुम केवल गलत लोगो को अपने साथ आने के लिए जोड़ रहे होते हो, एक दुसरे को प्रतिष्ठा पाने के लिए प्रलोभित करते हो और अपनी स्वयं की योजनाओ और षड्यंत्रों से एक दुसरे का दम घोंटते हो| इसके आलावा याओ की प्रशंसा करना और जिए को निचा दिखाना इससे तो बेहतर यह होगा की आप उन दोनों को भूल जाओ और प्रसंशा और आलोचना के तर्कों को समाप्त कर दो| अगर भूतकाल में देखा जाए तो व्यथित होने से बचने का कोई मार्ग नहीं था| एक बुद्धिमान व्यक्ति का सरोकार जब प्रसंगों से होता है तो वह छोटे छोटे कदम रखकर आगे बढ़ता है इसी कारण तो वह हर बार सफल हो जाता है| ऐसा क्यों है की तुम इतना भार अपने ऊपर लादे हुए हो? क्योकि तुम ऐसे आचरण करते हो जैसे की तुम सभ कुछ जानते हो|"

मध्यरात्रि के लगभग सोंग राज्य के राजा युआन ने सपना देखा की एक लम्बे बालो वाला व्यक्ति बगल के दरवाजे से उसकी और देख रहा है|
उस व्यक्ति ने कहा :
"मैं जे-लू के अगाध गर्त (पाताल) से हूँ| मैं नदी देवता के आदेश से यांगत्जी नदी के शुद्धिकरण का कार्य कर रहा हूँ लेकिन मुझे एक मछुआरे यु-कुई ने पकड़ लिया है|"

जब राजा युआन जागा तो उसने अपने मुख्य ज्योतिष को इस स्वप्न के बारे में बताया|
उस ज्योतिष ने कहा:
"आपके पास वह एक पुण्य अध्यात्मिक कछुआ आया था|"

राजा ने कहा :
"क्या कोई मछुआरा है जिसका नाम यु-कुई है?"

उस ज्योत्षी ने कहा :
“हाँ, यहाँ है|"

सम्राट ने कहा :
"उसे राज दरबार में पेश किया जाए|"

अगली ही सुबह यु-कुई दरबार में था और सम्राट ने उससे पूछा:
"क्या तुमने हाल ही में किसी चीज़ को पकड़ा है?"

यु-कुई ने सिर हिलाया और कहा :
"मैंने एक श्वेत कछुए को अपने जाल में पकड़ा है जो लम्बाई में पांच फूट का है|"

सम्राट ने कहा :
"उसे मेरे पास लाया जाए|"

जब वह कछुआ आ गया तो सम्राट दुविध्युक्त था की क्या इस कछुए को मार दिया जाए या फिर जिन्दा रखा जाए| चूँकि वह कोई निर्णय नहीं ले पा रहा था तो उसने ओरेकल से इस संदर्भ में पूछा| ओरेकल ने कहा:’इस कछुए को मारना और इसका उपयोग दिव्य कार्यों में करना बहुत ही शुभ होगा’, इस प्रकार उसने कछुए के खोल को उतरवा दिया| उस खोल में बहत्तर छेड़ किये गए और फिर उनका अध्ययन भविष्य जानने के लिए किया गया|(प्राचीन चीन में उपयोग की जाने वाली एक पद्धति)

ज्होंग नि ने कहा :
"वह दिव्य कछुआ सम्राट युआन के स्वप्न में आने में तो समर्थ रहा पर यु-कुई के जाल में बचने में नाकाम रहा| वह बहतर दैववाणी करने में तो सक्षम था पर अपने खोल को अपने से अलग होने को नहीं बचा पाया| यह हमे दिखता है की ज्ञान की भी सीमाए होती है और आध्यात्मिकता भी अप्रभावशाली हो सकती है| यद्यपि एक व्यक्ति अपने ज्ञान में निपुण हो सकता है पर हजारो लोग अब भी उसके प्रति योजनाये बना रहे होते है| एक मछली उसे पकड़ने के जाल से भयभीत नहीं होती लेकिन वह एक चील की चोंच से भयभीत होती है| अपने कमबीन ज्ञान से छुटकारा पाने से ‘पो’ और महान बोध का उदय होगा| दयालु बनने के

ढोंग से छुटकारा मिने पर 'पो' और स्वाभाविक दयालुता का उदय होगा| जब एक शिशु का जन्म होता है तो वह बोलना सिख जाता है जबकि उनके पास कोई बोलना सिखाने वाला प्रशिक्षक भी नहीं होता है| यह इसलिए होता है क्योंकि वे घिरे हुए होते है उनसे जो बोलते है|"

हुई-ज़ि ने ज्हुंग्ज़ी से कहा :
"जो तुम कहते हो वह निरर्थक है|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"उसे जानकार जो निरर्थक है आप उसकी शुरुआत कर सकते हो जिसका कोई अर्थ है| लोग इस मत को नकार सकते है की पृथ्वी बहुत विशाल है क्योंकि इस संदर्भ में उनके लिए जो अर्थ रखता है वह तो केवल वह स्थान है जहाँ वे अपने दो पैरो को रखते है| यदि किसी को सबसे गहरी गहराई तक अपने पैरो के चारो तरफ मिटटी खोदनी पड़े तो क्या तब भी वे अपने लिए उस स्थान को उपयोगी पायेगे (जहाँ वे खड़े है)?"

हुई ज़ि ने कहा :
"नहीं वह तो निरर्थक होगा|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"इस संदर्भ में जिसे निरर्थक समझा जाता था वह सार्थक बन गया जब उसे किसी दुसरे दृष्टिकोण से देखा गया|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"जिन लोगो के पास क्षमता होती है मुक्त होकर स्थान बदलने की वे इस विचार से बंधे हुए होते है की वे कही नहीं जा रहे है| जबकि वे लोग जिनके पास क्षमता नहीं होती है मुक्त होकर कही भी जाने के वे सोचते है की वे वास्तव में कहीं जा रहे है| यदि उनकी व्यक्तिगत अभिलाषाए यह निर्धारित करे की उन्हें किस के साथ होना है और किसे उन्हें नकारना है तो वे एक ऐसे आचरण में सलान्गित हो जाते है जिसकी बहुत सारी सीमाए है| उन्हें भूल जाओ! वे कभी भी ज्ञान का बोध नहीं कर पायेगे न ही वे सामर्थ्य को हासिल कर पायेगा चाहे कितनी भी कठिनता से वे प्रयत्न करे| अगर वे असफल हो जाते है अपने प्रयत्नों में तो वे कभी इस बात को जानने का प्रयत्न नहीं करते की गलती कहा हुई है लेकिन जल्दी जल्दी वहा से दौड़ने लग जाते है जैसे की वो प्रचंड अग्नि से भाग रहे हो और पीछे मुड़कर देखने को मना कर रहे हो| यद्यपि वे निर्धारित करते है की उनमे से कौन सबसे शक्तिशाकी है और कौन कमज़ोर पर वस्तुए एक ही क्षण में इतनी आसानी से बदल जाती है की यह निर्धारित करने का कोई तरीका नहीं होता है की कौन सी सही थी और कौन सी गलत| इसीलिए तो यह कहा जाता है एक सिद्ध पुरुष कभी भी किसी वस्तु के प्रति आसक्त नहीं होता है और न ही किसी को नकार ता है|
"उसके प्रति सम्मान जाताना जो की प्राचीन समय में हुआ था और उसकी निंदा करना जो की अब हो रहा है, इस प्रकार से आजकल दार्शनिक विद्वानो ने अपनी बुद्धि को स्थापित किया हुआ है| अगर हम वेई के राजा 'सही' की मानसिकता से भी विचारे उसे जो की आजकल हो रहा है तो कैसे हम आशार्य चकित नहीं हो सकते है प्रसंगों के घुमाव में? हाँ एक सिद्ध पुरुष ही मुक्त हुआ इस संसार में विचरण कर सकता है और इससे व्याधित नहीं होगा और दुसरे लोगो के साथ सलान्गित हो सकता बिना स्वयं के बोध को खोये| वह स्वयं से ही उसे ग्रहण नहीं करता है जो दुसरे लोग कर रहे है और कभी भी अपने ह्रदय के सार को दुसरे लोगो के हाथ में नहीं समाता है|" नेत्र जो प्रत्यक्ष ज्ञानशील होते है वे स्पष्ट रूप से देख सकते है| कान जो प्रत्यक्ष ज्ञानशील होते है वे बहुत ही ध्यान से सुन सकते है| एक नाक जो ग्रहणशील होता है वह बहुत सारी गन्धो को सूंघ सकता है| एक जीभ जो ग्राहानशेल होता है वह विभिन्न स्वादों को ग्रहण कर सकता है| एक मन जो ग्रहणशील होता है ज्ञान का संचय करता है| समझ जो ग्रहणशील होती है वह सामर्थ्य को धारण करती है| इनमे से कोई भी अवरोधित नहीं होता है और यदि ऐसा होता है तो वह कार्य करना बंद कर देता है| यदि इस अवरोध को न रोका जाए तो यह बहुत दम घोटू होता है और जो दम घोटने वाला होता है वह जीवन को बहुत हानि पहुचता है| जीवित वस्तुओ के पास एक जन्मसिद्ध ज्ञान है - अव्यधित श्वास पर निर्भर होने का| अगर श्वास मुक्त रूप से न चले तो स्वर्ग को इसका दोष नहीं दिया जा सकता है| स्वर्ग हमेशा उनके आर पार निकल आता है, दिन और रात बिना क्षीण हुए| लोग तब अपने रंध्रो को अवरोधित करने के तरीके खोजने लगते है|
एक गर्भ की प्रवृति होती है बड़ा हो जाने की ताकि वह एक शिशु को अपने अन्दर धारण कर सके| मन की प्रवृति होती है मुक्त होकर स्वर्ग में विचरण करने की| यदि एक घर में हिलने की भी जगह न हो तो वही उसकी पत्नी और माता एक दुसरे को अनियंत्रित होकर जोर से धकेलने लग जाती है| यदि मन ऐसे मुक्त होकर स्वर्ग में विचरण नहीं करता है तो छह इन्द्रिय एक

दुसरे के कार्यो को वशीभूत करने की सोचते है| पर्वतो और पहाड़ो पर होने वाले विशाल वनों की लोग प्रशंसा करते है क्योंकि उनकी आत्माए तकरार में नहीं होती है|
जब सामर्थ्य का उपयोग अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ने के लिए एक साधन की तरह किया जाता है, प्रतिष्ठा का उपयोग निष्ठुरता को बढ़ने के लिए किया जाता है, योजनाये और षड्यंत्र का उपयोग छोटे छोटे विवादों के लिए किया जाता है, ज्ञान का उपयोग असहमति को प्रोत्साहन देने के लिए किया जाता है, आग्नि को जवलित जाता है अनुरूपता को बनाने के लिए, और अधिकारिक पदों का उपयोग किया जाता है इसलिए की अब सही ढंग से कार्य कर सके| जब वर्षा पूरा दिन होती है तो वनस्पतीय प्रचुरता से उत्पन्न होती है| तब इस समय लोग अपने फावड़े और कुदालो को तैयार करते है लेकिन उस समय तक जब वे उन पोधो से सरोकार करते है वे आकर में दुगने हो चुके होते है और कोई नहीं समझ पता की यह कैसे हुआ|

शांति से विश्राम करना रोग का इलाज करने में मदद कर सकता है अपने पैरो की एड़ीयो को रगड़ने से बुढ़ापे के लक्षणों को कम कर सकता है| शांत होना उत्तेजना को रोक सकता है| यद्यपि ये कार्य काम करते है उनके लिए जिनको बहुत सारे कार्यो को करन पड़ते है जबकि किसी के लिए जो एक पागल खरगोश की तरह दौड़ता है इधर उधर इनके लिए इन कार्यो का कोई अर्थ नहीं होता है| एक साधू बहुत सारी चीजों के साथ आता है इस संसार को सही करने के उदेश्य से पर एक अध्यात्मिक व्यक्ति इसके बारे में चिंतित नहीं होता है| एक मूल्यवान व्यक्ति बहुत सारी चीजों के साथ होता है अपनी पीढ़ी को सही दिशा में ले जाने के लिए पर एक साधू इसके लिए बिलकुल चिंतित नहीं होता है| सरकारी अधिकारी वस्तुओ के साथ आते है अपने राज्यों को सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए पर एक व्यक्ति इस सभ से चिंतित नहीं होता है| एक साधारण व्यक्ति समय को सहन करने का मार्ग खोजता है पर एक सरकारी अधिकारी इस संदर्भ में चिन्ताशील नहीं होता है|

जब यां द्वार के द्वारपाल के माता पिता की मृत्यु हुई तो वह मरणोपरांत होने वाली रस्मो और बलिदानों को करने में इतना अच्छा था की उसे अधिकारिक प्रशिक्षक के पद पर नियुक्त कर दिया गया|(उन रस्मो में सम्मिलित होता था कठोर उपवास, अंग विच्छेद और विभिन्न प्रकार के दुखो को सहन करना)

उसके पडोस के और लोगो ने भी उन रस्मो को अत्यंतता से करने का प्रयत्न किया और उनमे से आधे मर गए|
जब याओ ने इस संसार का नियंत्रण क्सु-यू को देने का प्रस्ताव रखा, क्सु-यु ने मना कर दिया| इसी तरह जब तंग ने इस संसार को वू-गुंग को सौपने का निर्णय किया तो वू-गुंग उस पर क्रोधित हो गया| जब जी-तुओ ने सुना की क्या घटित हुआ है उसने अपने अधिकारियो और शिष्यों के साथ कुआँ नदी में डूब गया| सम्राट और सरकार में रहने वाले कुछ अधिकारी जो उसके समर्थक थे उन्होंने उसकी मृत्यु पर शोक मनाया और तीन वर्ष के बाद शेन-तू-दी(उसका एक समर्थक) उसने स्वयं से एक बड़ा पत्थर बाँधा और येल्लो नदी में कूद गया|

एक मछली जाल का उपयोग किया जाता है मछली को पकड़ने के लिए| जब मछली पकड़ ली जाती है तो जाल को भुला दिया जाता है|एक खरगोश जाल का उपयोग किया जाता है खरगोश को पकड़ने के लिए| जब खरगोश पकड़ ली जाती है तो जाल को भुला दिया जाता है| शब्दों का उपयोग किया जाता है विचारो को पकड़ने के लिए (व्यक्त करने के लिए)| जब उन्हें व्यक्त कर दिया जाता है तो शब्दों को भुला दिया जाता है| मैं इतनी सुगमता पर हूँ की यदि मैं किसी को खोज सकू जो शब्दों को भूले हुए है ताकि मैं उसके साथ वार्तालाप कर सकू!

27.Suggestions

Abiding by the suggestions of others occurs nine out of ten times. Abiding by quotations from others occurs seven out of ten times. And yet free flowing words are spoken every day which join in singing to the limits of the heavens. Abiding by the suggestions of others occurs nine out of ten times because it's an opportunity to take advantage of other people's theories. A father doesn't become a matchmaker for his son, since a father would give him the highest praise, and it would be better to have someone else to do that. Instead of having to bear the blame ourselves, we can put the blame on someone else. We comfortably agree with those who feel the same way we do, but reject those who feel differently. Those who agree with us are considered to be right, but those who disagree with us are considered to be wrong.

Abiding by quotations from others occurs seven out of ten times because they are phrases that have already been voiced and accepted throughout history. To get stuck on what was put forth by others in the past without checking out how it applies in real time is merely wishing to be clones of those in the past, but actually opposes the lessons offered from history. If a person doesn't create their own history then they won't have a personal Dao. If a person doesn't have a personal Dao then they can be called as stale as old bread.

Free flowing words are spoken every day which join in singing to the limits of the heavens because they erupt naturally, and spread out in all directions for the extent of one's life. You can't use words to even things out. You can't even things out by making your words even, and you can't even things out by using words to express how things could be even(As long as I do not say anything about them, they are a unity. But the unity and what I say about it have ceased to be a unity; what I say and the unity have ceased to be a unity.) Therefore it's said: "Let go of what you say." Say it then let go of what was said, then if you speak for your whole life you haven't really said anything, just as if you hadn't spoken for your whole life you wouldn't have said anything either.

There's a part of yourself you consider acceptable and a part of yourself you consider unacceptable. There's a part of yourself you consider natural and a part of yourself you consider unnatural. What is it that's natural? What you consider to be natural is natural. What is it that's unnatural? What you consider to be unnatural is unnatural. What is it that's acceptable? What you consider to be acceptable is acceptable. What is it that's unacceptable? What you consider to be unacceptable is unacceptable. All things have something we consider to be natural just as all things have something we consider to be acceptable. If you try to go against the free flowing words that you could say every day which join in singing to the limits of the heavens, who could ever accomplish that for very long? What all living things have in common is that they sprout from a seed, and even though their shapes and forms differ as they each mature, their beginnings and endings seem to be linked to one another. Nothing can gain precedence over something else. This is what's meant by the equality of the heavens. One who is equal to the heavens joins in singing to the limits of the heavens.

Zhuangzi said to Hui Zi:
"By the time Kong Zi (Confucius) turned sixty years old he had gone through sixty transformations. What he started out considering to be right in the beginning, he ended up considering to be wrong. He doesn't know even today if what he calls right and wrong might be like all the other fifty-nine times he was wrong."
Hui Zi said:
"Kong Zi devoted himself diligently to the pursuit of knowledge."
Zhuangzi said:
"Kong Zi eventually rejected that notion. Hasn't he explained that with these words of his: 'People receive natural abilities from their roots (genetic pool) and recover them to be effective in their lives.' When making grunts and noises you obey your vocal chords, but when phrasing words you obey protocol. When the benefits of righteousness were put on display, the only things that came out of people's mouths were terms describing their likes and dislikes, and what they deemed to be right and wrong in order to convince others. As though by truly convincing others and

making them not dare to take an unconventional stand you could put the whole world in order. Like that would be order. Stop it! Stop it! There's no way we could achieve that kind of ideal!"

Zeng Zi (Zeng Shen) was promoted twice in his governmental position, and his attitude changed after his second promotion.
He said:
"I was with my parents when I got my first appointment, and even though I only received eighteen bushels of grain for my pay, my heart was happy. Now that I've been promoted I receive eighteen thousand bushels of grain in pay but I have no one to share it with, so my heart is sad."
Zhong Ni's (Confucius) disciples asked Zhong Ni:
"Doesn't it seem that Shen (Zeng Shen) can be called someone who's without a reason to hang his head in shame?"
"He's still hanging his head. Could someone who had no reason to hang their head still have so much sorrow? He could have looked at eighteen bushels and eighteen thousand bushels as though he was observing so many sparrows, mosquitoes and horse flies passing in front of him."

Yan Cheng Zi You (Mr. Image of a Successful Traveler) told Dong Guo Zi Qi (Mr. Guard of the Eastern Wall):
"This is what's happened to me since I heard what you had to say: The first year I was wild and uncultivated. The second year I followed you. The third year I mastered it. The fourth year I became just another thing. The fifth year I had arrived. The sixth year strange spirits entered me. The seventh year I connected with the heavens. The eighth year I had no comprehension of death or life. The ninth year I realized the great mystery.
"What possesses life will eventually die. People are urged to contemplate their death because they fix their attention on themselves, but life is the brightest when there's no sense of self. Isn't that the way it is? Where is there to go to? Where is there not to go to? The heavens provide a method for counting out the days, and on the earth people rely on that. What more do I need to ask about? We don't know how anything will end up, so how can we claim there's no such thing as destiny? We don't know how anything began, so how can we claim there is such a thing as destiny? While we have responses to what's around us, how can we claim that we're not influenced by spirits? If we no longer respond to what's around us, how can we claim that we're influenced by spirits?"

The surrounding penumbra asked the shadow:
"It seems like you were bending down, and now you're rising up; your hair was tied up, and now it's hanging down loosely; you were sitting and now you're standing; you were moving, and now you're still. Why all the commotion?"
The shadow said:
"Why are you searching for an answer to these trivial questions? I am what I am but I don't know why I'm this way. I'm like a cicada who sheds its dead discarded shell, and like a snake who sloughs off its skin. I'm similar to those things in some respects but not in others. When the blazing sun is shining in the sky I grow larger. When the darkness of night settles I'm replaced by other things. Don't I have to wait for each of these things to occur before becoming something? It would then seem like there are so many things I'd always be waiting on! When things arise then I arise along with them. When things pass then I pass along with them. When things burst forth in brightness then I burst forth in brightness with them. Things just burst forth in brightness, so why would I need to ask why that happens?"
(Note: Penumbra - A space of partial illumination [as in an eclipse] between the perfect shadow on all sides and the full light.)

When Yang Zi Ju was on his way east to the city of Pei, Lao Dan (Laozi) was traveling west on his way to Qin, so he invited Laozi to meet with him in the outskirts of the city of Liang.
In the middle of their journey Laozi looked up to the sky and sighed, saying to him:
"At first I thought you could be taught, but now I don't think you can."

Yang Zi Ju didn't respond. When they reached an inn, he went and fetched a bowl of water, a towel and a comb in order for Laozi to freshen up. He removed his sandals outside the door and crawled forward on his knees to where Laozi was sitting and said:
"When we met I wanted to ask you something, but you were moving so quickly with other things on your mind that I didn't think it was appropriate. Now that you're sitting comfortably, I'd like to request you tell me where I've gone wrong."
Laozi said:
"You're such a boastful know-it-all, who could ever get close to you? The greatest clarity reveals humiliation. The greatest virtue reveals insufficiency."
Yang Zi Ju immediately changed his manner and said:
"I will respectfully obey your advice."
When he first arrived at the inn everyone came out to greet him like a dignitary. The innkeeper saw to it that he had a comfortable place on the mat, and the innkeeper's wife brought him a towel and comb to freshen up. Everyone moved away so he'd have lots of space on his mat and gave him a warm place near the fire. When he returned later, everyone at the inn jostled with him for a place on the mat.

२७|सुझाव

किसी और द्वारा दिए गए सुझावों का पालन करना यह दस में से नौ बार होता है| किसी और द्वारा पेश गए उद्धरणों को मान लेना यह दस में से सात बार होता है| लेकिन अब भी मुक्त रूप से बहने वाले शब्द हर दिन कहे जाते है और स्वर्ग की सीमओं तक संगीत के साथ संयोगित होते है| किसी और द्वारा दिए गए सुझावों का पालन करना यह दस में से नौ बार होता है क्योंकि यह दुसरो द्वारा बनाये गए सिद्धांतो से लाभ प्राप्त करने का अवसर होता है| एक पिता अपने पुत्र का विवाह स्थिर करने वाला नहीं बन सकता क्योंकि वह उसकी हमेशा सबसे ज्यादा प्रशंसा ही करेगा और इसलिए यह बेहतर होता है की कोई और यह कार्य करे| अपने ऊपर दोष लेने की बजाय हम इस दुसरो के ऊपर मढना पसंद करते है| हम उनके साथ बड़ी सहजता से सहमत हो जाते है उनके साथ जो हमारे जैसे अनुभव करते है लेकिन उनको नकार देते है जो हमारे जैसे नहीं होते है| जो हमारे साथ सहमत होते है उन्हें सही समझा जाता है लेकिन जो हमारे साथ सहमत नहीं होते है उन्हें गलत समझा जाता है|

किसी और द्वारा पेश गए उद्धरणों को मान लेना यह दस में से सात बार होता है क्योंकि ये वो वाक्य होते है जिन्हें पहले ही कहा जा चूका है और सम्पूर्ण इतिहास में जिन्हें स्वीकारा जा चूका है| इस पर अड़े रहना जो की भूतकाल में आगे रखा गया था बिना यह जाने की उसे वर्तमान में किस उपयोग में लाया जा सकता है यह तो मात्र उन जैसा बनने के चाहत रखना है और वास्तव में हम भुत से मिलने वाले अध्यायों का विरोध कर रहे होते है| यदि एक व्यक्ति अपना स्वयं का इतिहास नहीं बनाता है तब उसके पास अपनी स्वयं की ताओ नहीं होती है| यदि एक व्यक्ति के पास स्वयं की ताओ नहीं होती है तो उसे तब एक बासी हुई पुराणी ब्रेड भी कहा जा सकता है|
मुक्त रूप से बहने वाले शब्दों को हर दिन कहा जाता है वे संगीत के साथ स्वर्ग की सीमओं तक संयोजित होते है क्योंकि वे प्रस्फुटित होते है तथा प्राकृतिक रूप से और फैल जाते है चारो दिशाओ में जीवन का विस्तार करने के लिए| आप शब्दों का उपयोग नहीं कर सकते है वस्तुओ को सम करने के लिए| आप वस्तुओ को सम नहीं कर सकते है अपने शब्दों को सम करके और आप वस्तुओ को सम नहीं कर सकते शब्दों को उपयोग करके यह व्यक्त करने के लिए की वस्तुओ को कैसे सम किया जा सकता है| इसलिए यह कहा गया है:'उसे जाने दो जो तुम कहते हो|' कहो फिर उसे जाने दो जो तुमने कहा था, तब यदि तुम अपने पूरा जीवन भी बोलते हो तो तुम कुछ नहीं कहते हो जैसे की तुम पूरा जीवन बोले ही नहीं तो तुमने कुछ कहा भी नहीं|

आपका अपना एक हिस्सा होता है जिसे आप स्वीकार्य समझते हो और एक हिस्सा होता है जिसे आप स्वीकार्य नहीं मानते हो| आपका एक भाग होता है जिसे आप प्राकृतिक मानते हो और एक होता है जिसे आप प्राकृतिक नहीं मानते हो| वह क्या है जो प्राकृतिक है? जिसे आप प्राकृतिक मानते हो वह प्राकृतिक है| वह क्या है जो अप्राकृतिक है? जिसे आप अप्राकृतिक मानते हो वह अप्राकृतिक है| वह क्या है जो स्वीकर्य है? जिसे आप स्वीकार्य समझते हो वह स्वीकार्य है| वह क्या है जो अस्वीकार्य है? जिसे आप अस्वीकार्य अमझते हो वह अस्वीकार्य है|सभी वस्तुओ के पास होता है कुछ जिसे हम प्राकृतिक समझते है, ऐसे ही होता है वह जिसे हम स्वीकार्य मानते है| अगर आप विपरीत जाते है मुक्त रूप से बहने वाले शब्दों के जिन्हें आप हर दिन कहते है और जो संयोजित होते है संगीत के साथ स्वर्ग की सीमा तक फिर कौन उन्हें लम्बे समय तक प्राप्त कर सकता है? जो सभी जीवित वस्तुओ में एक समान है वह है की वे एक ही बीज से उत्पन्न हुई है और यद्यपि उनका आकर और रूप एक दुसरे से भिन्न है पर उनकी शुरुआत और अंत एक दुसरे से जुड़े हुए है| कोई भी एक दुसरे से आगे नहीं निकल सकता है| यही है जिसे आप समझते है स्वर्ग की समरूपता| वह जो स्वर्ग के साथ समरूप होता है संयोजित होता है संगीत के साथ स्वर्ग की सीमओं तक|

ज्हुंग्ज़ी ने हुई ज़ि से कहा:"उस समय तक जब ज्होंग नि साठ वर्ष का हुआ वह पहले ही साठ परिवर्तनों में से गुजर चूका था| जो उसने शुरुआत में शुरू किया था सही समझते हुए में वह आखिर में उसे गलत समझते हुए रुका| वह आज भी यह नहीं जानता है की जिसे वह सही समझता है और गलत समझता है वह उसकी पिछले उन्सठ बार की तरह गलत तो नहीं है|"

हुई-ज़ि ने कहा :
"ज्होंग ने स्वयं को पूरी तरह तत्पर कर दिया है ज्ञान को पाने के लिए|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"कोंग ज़ि ने अंत में इस धारणा को नकार दिया है| क्या उसने इसे अपने इन शब्दों से व्यक्त नहीं किया है:'लोग प्राप्त करते है प्राकृतिक योग्यताओ को अपने मूल से और उन्हें बचाते है अपने जीवन में प्रभावशाली होने के लिए|' गुड-गुडाहत करते समय और

शोर मचाते हुए आप अपने वक् तंतुओ का उपयोग करते है पर वाक्यों को कहते समय आप निश्चित नियमो का पालन करते है| जब परोपकार के लाभों को प्रदर्शित किया जाता है तो केवल एक चीज़ जो लोगो के मुख से निकलती है वह है उनकी पसंद और नापसंद, और इसे (जिस चीज़ को) ही वह सही और गलत समझते है औरो को विश्वास दिलाने के लिए| वे सोचते है की औरो को विश्वास दिलाकर आप उन्हें अपरम्परागत रूप से आपके प्रति खड़ा नहीं होने पर विवश कर देते है जिससे की यह सारा संसार व्यवस्थित हो जाता है| जैसे की वह व्यवस्थित होता है| रोक दो! इसे रोक दो! ऐसा कोई मार्ग नहीं है जिससे की हम आदर्श को प्राप्त कर सके!"

ज़ंग नि को दो बार सरकारी पदोन्नति दी गयी उसके सरकारी पद के लिए और उसका व्यवहार बदल गया उसके दुसरे पदोन्नति के बाद|
उसने कहा :
"जब मुझे पहली बार नियुक्त किया गया तो मैं अपने माता पिता के साथ था और यद्यपि उस समय मुझे वेतन के रूप में केवल अट्ठारह बोरे अनाज मिलता था पर फिर भी मेरा ह्रदय बहुत खुश था| अब जबकि मेरा पदोन्नति हो चुकी है और मुझे अट्ठारह हज़ार बोर अनाज वेतन के रूप में मिलता है पर फिर भी इसे साझा करने के लिए मेरे साथ कोई नहीं है इसी कारण मेरा ह्रदय बहुत उदास है|"

ज्होंग नि के शिष्यों ने ज्होंग नि से पूछा :
क्या यह प्रतीत नहीं होता है की ज़ंग-शेन वह है जिसे बिना किसी कारण के ही ऐसे शर्मिंदगी में अपना सिर फंसाया हुआ है?"
"वह अब भी अपने सिर को फंसाये हुए है| क्या किसी के पास कोई कारण नहीं होता अपने सिर को ऐसे फंसाने का वह भी इतना दुःख सहन करता है? वह प्राप्त करता है अट्ठारह हज़ार बोर अनाज के जैसे की वह देख रहा है अपने सामने इतनी ही चिड़ियों, मक्खियों और मछरो को अपने सामने मंडराते हुए (अनाज के साथ ये सभ भी उसके पास आते है)|"

यां-चेंग-ज़ि-यू नेदोंग-गुओ-ज़ि-की से कहा :
"यह है जो मेरे साथ घटित हो रहा है जबसे मैंने आपको कहते हुए सुना है:'प्रथम वर्ष मैं अशिष्ट और असभ्य था दुसरे वर्ष मैंने तुम्हारा अनुशरण किया| तीसरे वर्ष मैं इसमें निपुण हो गया| और चतुर्थ वर्ष मैं बन गया कोई भी अन्य वस्तु| पाचवे वर्ष मैं खो गया| छटे वर्ष अजनबी आत्माओ ने मेरे अंदर प्रवेश किया| सातवे वर्ष मैं स्वर्ग के साथ जुड़ गया| आठवे वर्ष मेरे पास जन्म और मृत्यु का कोई बोध नहीं रहा| नौवे वर्ष मैंने महान रहस्य का अनुभव किया|
"वह जो जीवन को अधिकार में करते है फलतः उनकी मृत्यु हो जाती है| लोगो की प्रवृति मृत्यु की निंदा करने की होती है क्योंकि उनका ध्यान केवल स्वयं पर होता है, पर जीवन सबसे प्रकाशमय होता है जब स्वयं का कोई बोध नहीं होता है| क्या यह नहीं है की वो महान पथ ऐसा ही है? वह कहाँ है जहाँ हमे जाना है? वह कहाँ है जहाँ जाना नहीं है? स्वर्ग ने दिनों के गणन करने की पद्धति प्रदान की है और पृथ्वी पर लोग इस पर निर्भर रहते है| इससे ज्यादा क्या है जो मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ? हम नहीं जानते है की किसी भी वस्तु का अंत कैसे होगा फिर हम यह कैसे दावा कर सकते है की भाग्य जैसे भी कोई चीज़ है? हम नहीं जानते की किसी भी वस्तु की शुरुआत कैसे हुई फिर हम यह कैसे दावा कर सकते है की भाग्य जैसे कोई चीज़ नहीं है? जब हम प्रतिक्रिया देते है अपने चारो और की वस्तुओ को तब हम यह कैसे दावा कर सकते है की हम आत्माओ द्वारा प्रभावित नहीं होते है? यदि हम प्रतिक्रिया न दे अपने चारो और की वस्तुओ को तो तब हम यह कैसे दावा कर सकते है की हम आत्माओ द्वारा प्रभावित होते ही?"

प्रतिवेश की हुई पेनुम्ब्रा ने परछाई से पूछा :
"यह प्रतीत हो रहा थी की तुम झुक रही और अब तुम ऊपर उठ रही हो; तुम्हारे बाल बंधे हुए थे और अब वे बिखरे हुए है निचे की तरफ; तुम बैठे हुई थी और अब तुम खड़ी हो; तुम चल रही थी और अब तुम स्थिर हो; यह इतना संक्षोभ (हलचल) क्यों?

परछाई ने कहा :
"तुम इन क्षुद्र प्रश्नों के उत्तर क्यों खोज रहे हो? मैं हु जो मैं हूँ पर मैं नहीं जानती की मैं ऐसे क्यों हूँ| मैं तो एक 'सिकादा' की तरह हूँ जो शरण लेती है त्यागी हुई बेजान खोलो में और एक सर्प की तरह जो अपनी खाल को त्याग देता है| कुछ विषयों में तो मैं इनके समान हूँ और कुछ में नहीं| जब प्रकाशमय सूर्य आकाश में चमकता है तो मैं और बड़ी हो जाती हूँ| जब रात्री का अंधकार स्थापित होता है तो मैं किसी भी अन्य वस्तु द्वारा प्रतिस्थापित हो जाती हूँ| क्या ऐसा नहीं है की मुझे प्रतीक्षा करनी पड़ती है वस्तुए के घटित होने की इससे पहले की मैं कुछ बन सकू? यह तो ऐसे प्रतीत होता है जैसे बहुत सारी चीज़े है जिनका

मैं हमेशा इंतज़ार करती रहती हूँ! जब वे आती है तो मेरा उदय भी उनके साथ होता है| जब वे चली जाती है तो मैं भी उनके साथ चली जाती हूँ| जब वस्तुए प्रकाश में आगे आती है तो मैं भी उनके साथ आती हूँ| वस्तुए केवल प्रकाश में विराजमान हो जाती है फिर क्यों मुझे यह पूछने की जरूरत है की यह क्यों होता है?"

जब यंग-ज़ि-लू पूर्व में 'पी' शहर के लिए अपनी यात्रा पर था, लाओ-दान पश्चिम की तरफ यात्रा कर रहे थे किन राज्य के लिए इसलिए उसने लाओ-ज़ि को निमंत्रण दिया आकर उनसे मिलने का लिंग शहर के बाहरी हिस्से में|
अपनी यात्रा के मध्य में लाओ-ज़ि ने आकाश की तरफ देखा और आह भरी उससे कहते हुए :
"पहले मैं सोचता था की तुम्हे सिखाया जा सकता है पर अब मैं सोचता हूँ की ऐसा नहीं है|"

यंग-ज़ि ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी| जब वे एक धर्मशाला में पहुच गए, वह गया और एक जल का पात्र लाया, एक अंग वस्त्र और एक कंघा ताकि लाओ-ज़ि तरो ताज़ा हो सके| उसने अपने जुते दरवाजे के बाहर उतारे और जहाँ पर लाओ-ज़ि बैठे हुए थे वहां अपने घुटनों पर आकर बैठ गया और कहाँ :
"जब मैं आपसे मिला तो मैं आपसे कुछ पुछना चाहता था लेकिन आप और वस्तुओ को इतनी शीघ्रता से अपने मन में धारण करे हुए थे की मैंने सोचा यह उचित समय नहीं है| अब जबकि आप सहजता से बैठे हुए है तो मैं आपसे विनती करूगा मुझे यह बताने की, की मेरे से गलती कहाँ हुई है|"

लाओजी ने कहा :
"तुम इतने अभिमानी प्रतीत होते हो सभ चीजों को जानने वाले हो, कौन तुम्हारे करीब भी पहुच सकता है? सबसे महान स्पष्टता तिरस्कार को प्रकाशित कर देती है| सबसे महान सामर्थ्य अपर्याप्तता को प्रकाशित करता है|"

यंग-ज़ि-जू ने तभी अपनी शैली बदली और कहा :
"मैं आदर सहित आपके परामर्श का पालन करूगा|"
जब वह (यंग-जि-जू) पहली बार धर्मशाला में आया था तो हर किसी ने उसका एक उच्च अधिकारी की तरह स्वागत किया था| धर्मशाला के रखवाले ने यह ध्यान दिया की उन्हें बैठने के लिए आरामदायक स्थान मिले और उसकी पत्नी उसके लिए तारो ताज़ा होने के लिए जल और वस्त्र लायी| हर कोई पीछे हट गया ताकि उन्हें चटाई पर पर्याप्त स्थान मिले और उन्हें अग्नि के नजदीक गर्म स्थान दिया गया| लेकिन जब वह बाद (लाओजी से मिलने के) में वापस आया तो हर कोई उसके साथ उस चटाई पर स्थान पाने के लिए उसे धकेल रहा था|

28.Handing Over Rulership

Yao tried to turn over rulership of the world to Xu You (a hermit), but Xu You wouldn't accept it. After that he tried to turn it over to Zi Zhou Zhi Fu (Senior Official of a Township).
Zi Zhou Zhi Fu said:
"It'd be appropriate for you make me the emperor. However, I'm suffering from a serious physical ailment, and at the moment I'm so involved in trying to cure myself that I wouldn't have the time to devote to governing the whole world."
One's position in the world could make one important, but not if it would cause harm to one's own life. How much more so would that apply to dealing with other things in life? Only one who isn't concerned about their position in the world can be entrusted with the world.

Shun tried to turn over rulership of the world to Zi Zhou Zhi Bo (Secondary Official of a Township).
Zi Zhou Zhi Bo said:
"I'm suffering from a serious physical ailment, and at the moment I'm so involved in trying to cure myself that I wouldn't have the time to devote to governing the whole world."
So, the world could be used as a personal tool, but not in exchange for one's own life. In this way one who's connected with Dao is quite different from the rest of humanity.

Shun turned over rulership of the world to Shan Juan (Good Resume).
Shan Juan said:
"I'm established in the middle of universal time and space, clothing my body with furs and animal skins on winter days and with cotton and hemp during the summer. In the spring my muscles are strong enough to plow the fields and cultivate them. In the autumn my body is able to harvest the crops and relax while eating them. At sunrise I get up, and at sunset I rest. I wander freely and unfettered throughout the land and my heart expresses self-contentment. Why would I be concerned with my position in the world? It makes me sad that you don't know me at all."
After he refused the offer, he took off to some remote mountains where no one would know how to find him.

Shun tried to turn over rulership of the world to a friendly farmer from Shi Hu.
The farmer from Jiangsu said:
"You have such a good record for tending to the behavior of the people. Your power supersedes that of any scholar or soldier!"
Sensing that Shun's virtue wasn't yet perfected, the farmer and his wife packed up their possessions and took off carrying them on their backs towards the seashore and didn't return to their home for the rest of their lives.

When the Great King Dan Fu lived in Bin, the Di tribes attacked them. He tried placating them with gifts of animal skins and fine silks, but they refused them. He tried placating them with gifts of dogs and horses, but they refused them. He tried placating them with gifts of precious pearls and jade, but they didn't accept them. The people of the Di tribe were only interested in gaining more land.
The Great King Dan Fu said:
"To live with older brothers and fathers while sending the younger brothers and sons off to be killed is something I couldn't bear. Aren't all of us simply making an effort to live together as best we can? There'd really be no difference whether you become subservient to the Di tribes or to me. I've also heard it said that one shouldn't end up doing harm to those you're trying to nourish."
With that he took up his walking stick and left town. The rest of the people joined up with each other and followed him. He then set up a new country for them at the foot of Mount Qi.
It can be said that Great King Dan Fu had great respect for life. One who has great respect for life may accumulate treasures and riches, but not in an effort to nourish a wounded body; may experience poverty and humility, but not

in an effort to avoid work. Nowadays those people who hold high official positions and show respect for the nobility have all suffered important losses and see benefits in taking the loss of their lives lightly. How could this not be a delusion?

For three successive generations the people of Yue assassinated their ruler. Prince Sou became worried about this so he fled to a cinnabar cave. Since the country was then without a ruler, the people went in search of Prince Sou and followed his tracks to the cinnabar cave. Prince Sou refused to come out of the cave, so the people flushed him out with the noxious smoke from burning mugwort and forced him into the elaborate royal chariot they'd brought along. After Prince Sou reluctantly got into the chariot he looked up at the sky and wailed:
"To be a ruler! To be a ruler! Am I the only one who can't avoid this?"
Prince Sou didn't hate the idea of being a ruler, but he hated the dread attached to being a ruler. As for someone like Prince Sou, it can be said that he didn't have any intention of allowing the state to harm his body, and it was for this reason that the people wanted to grab him and make him their ruler.

The states of Han and Wei were in a dispute over some territory. Master Huazi (possibly an adviser in Han) went to see Marquis Zhao Xi (an official in Han) who had a seriously worried expression on his face.
Master Huazi said:
"Supposing there was an old document about how to become ruler of the world, and the document contained this engraving: 'Seize it with your left hand and you'll lose the use of your right hand. Seize it with your right hand and you'll lose the use of your left hand. Whoever follows this will definitely obtain the whole world.' Would you agree to seize it?"
Marquis Zhao Xi said:
"No, I wouldn't."
Master Huazi said:
"Excellent! It's apparent to you that your two arms are more important than the world, and your body is more important than your two arms. Han is merely a small part of the world, and the territory you're disputing over is merely a small part of Han. Yet you're willing to stress your body and risk your life worrying and fretting over something you might not be able to get."
Marquis Xi said:
"Very well said! I've got a crowd of people as advisers, but I've never had it explained to me in this way before."
Master Huazi can be said to recognize what's unimportant and what's important.

The ruler of Lu heard that Yan He (a scholar from the state of Lu) was a person who had achieved Dao, so he sent a messenger to bring him precious gifts as a means of introduction. Yan He had a rickety gate outside his house, wore clothing made of coarse hemp cloth and fed his oxen himself. When the ruler of Lu's messenger arrived, Yan He answered the door himself.
The messenger said:
"Is this the home of Yan He?"
Yan He politely said:
"Yes, this is Yan He's home."
As the messenger started handing over the precious gifts, Yan He politely said:
"I'm afraid you might have gotten your instructions wrong and then you'll be blamed for making a mistake, so you should re-check them."
The messenger went back to recheck his instructions, and when he returned looking for Yan He again, he couldn't find him. By that, it would seem that Yan He really loathed the idea of wealth and rank.
Therefore it's been said:
"Genuine Dao is used to set things right in the body. What's left over as surplus is used for behavior in the state and family. What's discarded as trash is used to set things right in the rest of the world."

From this we can see that the achievements of emperors and kings is discarded as trash in the affairs of a sage. Those things are contrary to maintaining a whole body and a healthy life. Nowadays those who are in positions of authority subject themselves to numerous physical dangers and life threatening situations by sacrificing themselves for things. Isn't that sad? When a sage is forced to take action in the world, he has to inspect his place in the situation before determining which action to take.
Supposing there was a person around today who was using the Marquis of Sui's pearl as a pellet to shoot down a sparrow 10,000 feet in the sky. Everyone would have a good laugh at him. Why is that? Because he's using something important to try to capture something he wants that's unimportant. As for life - wouldn't that be more special and important even to Marquis of Sui (than a pearl)?

Master Liezi was living in poverty and his face showed signs of starvation.
A guest of Master Yang (the chief minister) of Zheng (the state where Liezi spent his life) mentioned the situation to Master Yang, saying:
"Lie Yu Kou (Liezi) is an accomplished scholar of Dao, yet he's living in poverty in your state. Are you allowing this to happen because you don't like scholars?"
Master Yang of Zheng ordered one of his officials to go take Liezi some grain. When Master Liezi saw the messenger, he was very friendly to him but refused to accept the grain. After the messenger had left, Master Liezi went back into his house.
His wife looked at him, beat her breast, and said:
"I'd heard that women who were married to a man who had attained Dao would all have plenty of time for leisure and enjoyments. But look at us now - we're starving. The minister has decided to recognize you as a master and send you food, but you've refused to accept it. How could you refuse what destiny sent?"
Master Liezi laughed and said to her:
"The minister doesn't know me at all. He just listened to what someone else said about me and decided to send me the grain. He could just as easily listen to someone tell him I'm guilty of a crime and react in a different way to their words about me. That's why I refused to accept the grain."
After a while, the people actually did rise up in a rebellion and killed Master Yang.

When King Zhao was ousted from the throne in Chu, Yue the butcher went along with him and followed King Zhao out of the state. When King Zhao returned to the throne of Chu (approx. one year later), he wanted to reward Yue the butcher for his loyalty.
Yue the butcher said to tell him:
"When the Great King lost his state, I also lost my position as butcher. When he regained his state, I then regained my position as butcher. I've already regained my position and salary, so what more of a reward could be given!"
The King said:
"Make him accept the reward!"
Yue the butcher said to tell him:
"When the Great King lost his state it wasn't due to any fault of mine so there was no reason for me to accept punishment for anything. When the Great King regained his state it wasn't due to any effort of mine so there's no reason to accept any rewards."

The King said:
"Bring him here to meet with me!"
Yue the butcher said to tell him:
"The laws of the state of Chu require that a person must have received a handsome reward for some great achievement in order to have an audience with the King. Not only didn't I have the intelligence to know how to preserve the state, but I also wasn't brave enough to take a chance of dying defending it against the invaders. When the Wu armies attacked Ying (capital city of Chu) I hovered in fear and tried to avoid the invaders. That's why I

decided to follow after the Great King. Now the Great King wants to violate the laws and rescind previous mandates by seeing me. That would go totally against the way the rest of the world perceives me."
The king called for his Minister of War, Zi Qi, and said:
"Yue the butcher lives a modest and humble life, yet he expressed a very high sense of righteousness. Go and invite him to accept a position as an adviser holding the Three Banners (the highest positions available under the king)."
Yue the butcher said:
"I know that a position with Three Banners is much more valuable than being a butcher in a shop, and that a salary of ten thousand measures of grain would make me wealthier than what I earn as a butcher, yet how could I be so greedy for position and wealth that I'd be a party to my ruler carrying out such a rash decision? I wouldn't dare to agree to such a thing. I'd much prefer returning to my butcher shop."
He persisted in refusing to accept any rewards.

Yuan Xian lived in the state of Lu. The walls of his house were made of thatch and clumps of sod from which weeds were growing. The rickety door didn't close properly and a branch from a mulberry tree was used to hold it shut. A couple of clay jars with the bottoms broken out served as windows with some old rags stuffed in them to keep out the cold. The roof leaked so badly that the floor was always wet, but he sat there on a basket strumming his zither. Zi Gong rode up in a carriage pulled by a team of large horses with a purple interior and a white exterior. The carriage was so large that it couldn't fit down the narrow lane, so he set off on foot to visit Yuan Xian. Yuan Xian, wearing a threadbare cap and stretched out sandals, leaned on a gnarled cane as he shoved open the door.
Zi Gong said:
"Oh my! Why are you so defective?"
Yuan Xian replied:
"I've heard it said that one who isn't wealthy is said to be poor, and that one who isn't able to put into practice what they've learned is said to be defective. Now I may be poor, but I'm not defective."
Zi Gong took a step back and looked embarrassed.
Yuan Xian laughed and said:
"To hope to behave in conformity with others, to befriend only those I feel are my social equals, to learn what I believe is expected of me by other people, to teach in order to elevate my standing, to deceptively preach about benevolence and righteousness, and to adorn myself with the trappings of a magnificent carriage pulled by a team of horses - those are things I could never bring myself to do."

Zeng Zi lived in the state of Wei. His coarse hempen robe was worn and tattered, his complexion was puffy and splotched, and his hands and feet were covered in callouses. He hadn't had a fire on which to cook his food for three days, and hadn't had a new piece of clothing in ten years. When he straightened his cap the chin band tore off, when he put his hands on his hips his elbows stuck out of the holes in his robe, and when he laced up his sandals his heels poked out the back. He'd shuffle along in his loose sandals singing "Shang Song" ("Odes of Sacrifice of Shang", ancient ritual hymns). The sound of his voice filled the heavens and earth as though it was erupting from bells and stone chimes. He didn't allow the emperor to make him his servant nor the princes and dukes to become his friends. Thus, those who nourish their ambitions forget about their bodies. Those who nourish their bodies forget about material gains. Those who embody Dao forget about their minds.

Kong Zi (Confucius) said to Yan Hui:
"Hui, come over here. Your family is poor and you all live in humble surroundings. Why don't you go and seek a position as an official?"
Yan Hui replied:
"I don't want to be an official. I have about ten acres of land outside the city which is enough to provide us with trees and grains (for food). I have just over an acre of land inside the city which is enough to provide me with silk and hemp (for clothing). I have drums and musical instruments which are enough to provide me with entertainment. I

have a master who teaches me about Dao which is enough to bring me happiness. I really have no desire to become an official."
The concern on Kong Zi's face changed into an expression of tenderness and he said:
"Your intentions are wonderful! I've heard it said: 'One who's content with what they have doesn't go out expending their energy on gaining material possessions. One who's self-satisfied isn't afraid of losing anything. One who's reached an appreciation of what's inside of them doesn't feel ashamed if they don't have a lofty position in life.' I've recited that from memory for a long time, but now you've shown me what it really means, and I think I've finally gotten it."

Prince Mou of Zhong Shan said to Zhan Zi:
"My body is resting here above the river and ocean, but my mind is dwelling under the eaves of the buildings in Wei. What can I do about this?"
Zhan Zi said:
"See the importance of being alive. If you see the importance of living then the idea of gaining material stuff will be insignificant."
Prince Mou of Zhong Shan said:
"Yeah, yeah, I know about all that. But I still can't conquer my feelings."
Zhan Zi said:
"If you can't conquer your feelings then pay heed to them. Is a spirit without a dark side? One who can't conquer their feelings but doesn't have the strength to check them out suffers a very heavy injury. A person who suffers that kind of injury isn't the type who could live very long."
Mou of Wei commanded ten thousand chariots, and when he went to hide in the caves of the mountains he was annoyed that he no longer wore the robes of a scholar. Although he hadn't really connected to Dao, he could be said to have at least gotten the gist of it.

When Kong Zi (Confucius) was detained between the states of Chen and Cai, he went for seven days without any cooked food. He drank a broth made from weeds that contained no grains, his complexion became extremely pale and worn, and yet he sang along with his zither in his room.
While Yan Hui was sorting through edible plants for a meal, Zi Lu and Zi Gong (other disciples of Confucius) were talking amongst themselves:
"Our master has again been chased out of Lu, all traces of his presence have been erased from Wei, he was attacked under a drum tree in Song, he was thrown into poverty in Shang and Zhou, and now he's been surrounded and detained between Chen and Cai. If someone were to kill him they wouldn't be found guilty of a crime, and if someone were to assault him they wouldn't be arrested. Yet he's in there singing and playing his instruments without sensing a reason to be quiet. How could a gentleman be so lacking in shame to do such a thing?"
Yan Hui didn't respond but went in to tell Kong Zi what they'd said.
Kong Zi pushed away his musical instruments, sighed deeply, and said:
"It's because they've been so spoiled that they're such petty people. Tell them to come in here to see me and I'll speak to them about it."
Zi Lu and Zi Gong entered the room, and Zi Lu said:
"How can you allow yourself to go through all this hardship?"
Kong Zi said:
"What kind of talk is this? As long as a gentleman is moving forward with his connection to Dao, then it can be said he's getting somewhere. If he's impoverished with Dao, then it can be said he's really losing out. Now for someone like me who embraces the benevolence and righteousness of Dao to come upon such disasters and hard times does make me a little sad, but how could anyone say I'm really losing out? So, I might have to tighten my belt little, but I'm not losing out on Dao. I might have come upon a series of disasters, but that wouldn't make me lose my virtue. Nature's chill has already passed, and the frost and snow have already fallen, so I can appreciate the lushness of the pines and cypress. To be stuck here in the mountain pass between Chen and Cai is actually my good fortune!"

Kong Zi then picked up his discarded musical instruments and started singing. Zi Lu grabbed a stick and danced.
Zi Gong said:
"I didn't realize how high the heavens extend while the earth is here below."
Those in ancient times who obtained Dao were happy whether they were lacking or connected. Their happiness wasn't due to being lacking or connected, but realizing that Dao and virtue come from both circumstances. Then being lacking or connected can be seen as following the same order as hot to cold and wind to rain. Therefore, Xu You (a hermit) was able to amuse himself on the sunny banks of the Ying River, and Gong Bo (Earl of Kung) was satisfied on Mount Gong Shou.

Shun tried to pass down rulership of the world to his friend from the north, Wu Ze (Non-Judgmental).
Wu Ze said:
"How odd that a person should develop this kind of behavior! He was living in the middle of the crop fields then traveled to the gates of Yao (accepting Yao's offer of the throne). As if that wasn't enough, he now wants to humiliate me by prevailing on me to do the same thing. I'd be ashamed to meet with him at all."
With that he threw himself into the depths of the Qing Ling River.

When Tang was planning an attack on Jie, he tried to bring Bian Sui (Impetuous Follower) into the scheme.
Bian Sui said:
"That's none of my business."
Tang said:
"Who can I get to help?"
"I don't have a clue."
Tang then tried to bring Mao Guang (Dim Bulb) into the scheme.
Mao Guang said:
"That's none of my business."
Tang said:
"Who can I get to help?"
"I don't have a clue."
Tang said:
"How about Yi Yin?"
"He's supposed to have the strength of a sword and the endurance of a bull, but other than that I don't know anything about him."
Tang went ahead and joined with Yi Yin in his attack on Jie. After he overthrew Jie he tried to resign his throne to Bian Sui.
Bian Sui refused, saying:
"When you planned to attack Jie you wanted me in on the scheme with you, so you must have thought me to be a traitor. Now that you've defeated Jie and want to turn over the throne to me you must think I'm greedy. We live in troubled times and a person without Dao has again come to try to prevail upon me to act in a humiliating way. I can't bear to listen to this any more."
He then threw himself into the Zhou River and drowned.
Tang then tried to turn over the throne to Mao Guang, saying:
"The wise plan it, the military accomplishes it, and the benevolent preside over it - that's the way it's been done throughout history. I wonder if you'll step up now and take over?"
Mao Guang refused, saying:
"To overthrow the ruler goes against righteousness. To kill people goes against benevolence. After other people have lashed out against oppression, for me to enjoy benefits from that would be dishonest. I've heard it said: 'If someone is without righteousness, don't accept their promotions and accolades. If the whole generation is without Dao, don't set foot on their land.' There's less and less I can find any respect for! I can't bear to watch any more of this."

With that he placed a huge stone on his back and sunk to the bottom of the Lu River.

In olden times during the rise of the Zhou Dynasty there were two noblemen living in the state of Gu Zhu named Bo Yi and Shu Qi.
During a conversation one of the men said to the other:
"I've heard there's a man in the west who appears to have gotten Dao. Let's go and try to meet with him."
By the time they reached the south side of Mount Qi, King Wen had heard about their visit, and told his younger brother, Dan, to go see them. He made a solemn contract with them, saying:
"Your salary will be increased to the grade of second class officials, and you will immediately be sent to the front ranks."
He sealed the deal by dripping the blood of an ox on the document and burying it.
The two men (Bo Yi and Shu Qi) looked at each other and laughed, saying:
"Ha, ha! How strange! This is quite contrary to what we refer to as Dao. In the old days when Shen Nong had charge of the world, sacrifices were performed as a means to show respect, not as a way to request favors. He was faithful and trustworthy in his governing of the people and he never asked for anything in return. When he put things in order they stayed orderly, and when he cured problems through governing they stayed cured. He didn't play tricks on people to become successful himself, nor did he make others feel lowly to appear higher himself, nor did he meet disasters with thoughts of bringing benefits to himself.
"Nowadays when the Zhou see disorder in the Yin (aka Shang Dynasty) they rush to take over. They plan conspiracies with those in high positions and offer bribes to those in lower positions. They infiltrate the troops and offer them amnesty. They drip sacrificial blood to make oaths of faithfulness. They announce their accomplishments to attract the allegiance of the masses. They slaughter with their weapons so as to gain more and more. What they're doing is forcefully exchanging disorder for tyranny.
"We've heard that if the noblemen in ancient times encountered spells of peace and prosperity they didn't shirk their official responsibilities. And if troubled times came along they weren't careless about tending to their own survival. Now that the world is in such darkness and virtue has declined to such a low level in Zhou, rather than allow ourselves to be soiled by the situation in Zhou it would be better to avoid the whole mess and keep ourselves purified."
The two noblemen went north to the mountains of Shou Yang where they eventually died of starvation. It would seem that although Bo Yi and Shu Qi reached a level of rank and position and were careless about what they had the ability to attain, they then realized they mustn't depend on those things. Their high sense of integrity allowed them to stop what they were doing. They realized that they were happy to follow their ambitions, but not in the climate of the present situation. That was the height of integrity those two noblemen possessed.

२८|साम्राज्य का आगे बढ़ाना

याओ ने शासन को क्सु-यू को देना का प्रयत्न किया, लेकिन क्सु-यू ने इसे स्वीकार नहीं किया| उसके बाद उसने इसे ज़ि-ज्होऊ-जही-फु को सौपने का प्रयत्न किया|
ज़ि-ज्होऊ-जही-फु ने कहा :
"यह आपके लिए सही होगा मझे शासक बनाना| लेकिन मैं एक बहुत ही गंभीर शारीरिक व्याधि से ग्रस्त हूँ और इस समय मैं इसका उपचार करने में बहुत व्यस्त हूँ की मेरे पास इस संसार के नियंत्रिण को देने के लिए कोई समय नहीं है|"

इस संसार में किसी का पद उसे महत्वपूर्ण बना सकता है लेकिन तब नहीं जब वह उसे ही क्षति पहुचाये| यह कितना और सही हो सकता है जब हम अपने जीवन में बाकि वस्तुओ के साथ सम्मिलित होते है? केवल वही जो अपने पद को लेकर इस संसार में चिंतित नहीं होता है उसे ही इस संसार को सौपा जा सकता है|

शुन ने प्रयत्न किया इस संसार के शासन को ज़ि-ज्होऊ-जही-बू को सौपने का|
ज़ि-ज्होऊ-जही-बो ने कहा :
"मैं एक बहुत ही गंभीर शारीरिक व्याधि से ग्रस्त हूँ और इस समय मैं इसका उपचार करने में बहुत व्यस्त हूँ की मेरे पास इस संसार के नियंत्रिण को देने के लिए कोई समय नहीं है|"

इस प्रकार इस संसार का उपयोग एक व्यक्तिगत साधन की तरह किया जा सकता है लेकिन किसी के अपने जीवन के बदले नहीं| इस प्रकार जो ताओ के साथ जुडा हुआ होता है वह बाकि मानवता से सर्वथा भिन्न ही होता है|

शुन ने इस संसार के शासन को शान-जूँ को सौंप दिया|
शान-जूँ ने कहा :
“मैं इस ब्रह्माण्डीय आकाश और समय के मध्य में स्थापित हूँ, अपने शरीर को सर्दी के दिनों में पंखो और जानवरों की खाल से तथा गर्मी के दिनों में सूत तथा जुट से ढके हुए हूँ | वसंत में मेरी मांसपेशिय पर्याप्त मजबूत होती है की मैं खेतो को जोंत सकू और उन पर हल चला सकू| पतझड़ में मेरा शरीर फसलो को काटने में पूरी तरह समर्थ होता है और मैं विश्राम करता हूँ उन्हें देखते हुए| सूर्योदय पर मैं जाग जाता हूँ और सूर्यास्त पर मैं विश्राम करता हूँ| मैं स्वतंत्र होकर मुक्त रूप से भूमि पर विचरण करता हूँ और मेरा ह्रदय आत्म संतोष में स्थापित है| मैं क्यों इस संसार में अपने पद के बारे में चिंतित होउ? यह मुझे उदास कर देता है की तुम मुझे पूरी तरह से नहीं जानते हो|"

जब उसने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया तो वह दूर पहाडियों में चला गया ताकि किसी को पता न हो की उसे कैसे खोजा जाए|
शुन ने प्रयत्न किया इस संसार के शासन को सौपने का एक मित्र किसान सही-हु को|
जिंग्सू के उस किसान ने कहा :
"तुम्हारा इतना अच्छा कीर्तिमान है लोगो की सेवा करने का और तुम्हारी ताकत किसी भी सिपाही या विद्वान् से भी ज्यादा है!"

यह देखकर की शुन का सामर्थ्य अभी भी सम्पूर्ण नहीं है वह किसान और उसकी पत्नी ने अपना सामन बाँधा और उन्हें अपनी पीठ पर लादकर समुद्र तट के लिय निकल गए और कभी भी सम्पूर्ण जीवन में वहां अपने घर वापस नहीं आये|
जब महान राजा दान-फु बिन में रहता था तो ‘दी’ कबिले ने उन पर हमला किया| उसने (राजा ने) उनको जानवरों की खाल और मुलायामदार रेशम को देकर शांत करने का प्रयत्न किया पर उन्होंने मना कर दिया| उसने उनको घोड़े और कुत्ते भेंट करने का प्रयत्न किया पर उन्होंने इससे भी मना कर दिया| उसने उनको कीमती मोती और हीरे जहवारत देकर शांत करने का प्रयत्न किया पर उन्होंने इसे भी नहीं स्वीकार किया| क्योंकि ‘दी’ काबिले के लोग केवल और ज्यादा भूमि को प्राप्त करने रूचि रखते थे|
महान राजा दान-फु ने कहा :
"बड़े भाई और पिता के साथ जीना जबकि छोटे भाई और पुत्रो को मरने के लिए भेजना यह तो कुछ ऐसा है जिसे मैं सहन नहीं कर सकता| क्या हम एक प्रयत्न कर सकते है एक साथ रहने का और बेहतर जीवन जीने का? इसमें वास्तव में कोई भेद नहीं की तुम ‘दी’ काबिले के सेवक बनो या फिर मेरे| मैंने यह भी कहते हुए सुना है की किसी को जिनका वह पालन पोषण करता हो उन्हें हानि नहीं पहचानी चाहिए|"

इसके साथ ही उसने अपनी छड़ी उठाई और शहर को छोड़ दिया| बाकि लोग भी एक दुसरे के साथ इकट्ठा हुए और उसका पीछा किया| तब उसने की पर्वत पर एक नए राज्य की स्थापना की| यह कहा जा सकता है की महान राजा दान-फु को जीवन के प्रति बहुत आदर था| जिनको जीवन के लिए आदर होता है वह हासिल कर सकता है धन दौलत और खजाने लेकिन इसलिए नहीं की वह एक घायल शारीर का पोषण करना चाहता है; वह दरिद्रता और दीनता का अनुभव कर सकता है लेकिन अपने कार्यो को छोड़कर नही| आजकल जो लोग ऊँचे पदों पर आसीन है और आदर देते है केवल श्रेष्ट आचरण को और तब वे जरूर महत्वपूर्ण वस्तुओ के खोने के कष्टों को भोगते है और लाभ देखते है अपने जीवन की क्षति को हल्के में लेने में| यह कैसे एक भ्रम नहीं हो सकता है?

लगातार तीन पीढियों तक युए के लोगो ने अपने शासको की हत्या कर दी| राजकुमार 'सौ' इस बारे में इतना चिंतित हुआ की वह 'सिन्नाबार' गुफाओ में भाग गया| चूँकि राज्य अब बिना किसी शासक के था इसलिए युए के लोग राजकुमार सौ की खोज में गए और उसके पद चिन्हों का पीछा करते हुए सिन्नाबार गुफा में चले गए| राजकुमार सौ ने गुफा से बाहर आने से मना कर दिया इसलिए लोगो ने उन्हें बाहर निकलने के लिए गुफा में हानिकारक धुआ भर दिया और उन्हें उनके साथ उसे नक्काशीदार रथ पर चलने को मजबूर कर दिया| इसके बाद राजकुमार सौ ने झिझकते हुए रथ में चढ़ा और आकाश की तरफ देखते हुए किकियाया : "एक शासक होना! एक शासक होना! क्या मैं ही अकेला हूँ जो इसे टाल नहीं सकता हूँ?"

राजकुमार सौ कभी भी राजा बनाने के मत से घृणा नहीं करता था लेकिन वह नफरत करता था इसके साथ जुड़े हुए भय से| किसी राजकुमार सौ जैसे के लिए यह कहा जा सकता है की उसकी कोई इच्छा नहीं थी की राज्य उसके शरीर को हानि पहुचाये और यही कारण था की युए के लोग उसे पकड़ना चाहते थे और शासक बनाना चाहते थे|
हाँ राज्य और वेई राज्य में कुछ क्षेत्र को लेकर आपसी कलह था| आचार्य हाजी (हाँ का सलाहकार) मार्की जहो-क्सी को मिलने गया उसके मुख पर बहुत ही चिंता के भाव थे|

आचार्य हाजी ने कहा :
"मानो की यहाँ एक प्रचीन पुस्तक हो जिसमे बताया गया हो की इस संसार का शासक कैसे बने और उस पुस्तक में ये उत्कीर्णन हो :'इसे अपने बाए हाथ से पकड़ो और तुम अपने दाए हाथ से इसे खो दोगे| तुम इसे अपने दाए हाथ से पकड़ो और तुम अपने बाए हाथ के उपयोग को खो दोगे| जो भी इसका अनुगमन करेगा वह निश्चित ही इस संसार को प्राप्त कर लेगा|"क्या तुम इसे ऐसे पकड़ने से सहमत हो?"

मार्की जहो-क्सी ने कहा :
"नहीं, मैं नहीं हूँ|"

आचार्य हाजी ने कहा:
"बहुत बढ़िया! यह तुम्हारे लिए स्पष्ट है की तुम्हारे दो बाजुए तुम्हारे लिए इस संसार से ज्यादा महत्वपूर्ण है और तुम्हारा शरीर तुम्हारी दो बाजुओं से ज्यादा महत्वपूर्ण है| 'हाँ' तो मात्र एक छोटा सा भूखंड है इस संसार का और जिस क्षेत्र के लिए तुम लड़ रहे हो वह तो मात्र एक छोटा सा हिस्सा है हाँ का| फिर भी तुम तुम अपने शारीर को दुःख देने की इच्छा रखते हो अपने जीवन को खतरे में दाल रहे हो चिंता करते हुए और लड़ते हुए किसी चीज़ के लिए जिसे तुम हासिल नहीं भी कर सकते हो|"

मार्की क्सी ने कहा :
"बहुत अच्छा कहा! मेरे पास सलाहकारो की बहुत भीड़ रहती है पर मैंने इसका व्यख्यान इस तरह कभी किसी नहीं सुना|"

आचार्य हाजी को कहा जा सकता है की उन्हें पहचान थी की क्या महत्वपूण है और क्या नहीं है|

लू के शासक ने सुना की यां-हे (लू का एक विद्वान्) एक ऐसा व्यक्ति है जिसने ताओ को प्राप्त कर लिया है, इसलिए उन्होंने अपना परिचय करने के लिए एक संदेशवाहक को कीमती भेंट के साथ भेजा| यां-हे घर के बाहर एक बहुत ही पुराना द्वार था और वह फटे हुए मुर्दो जैसे वस्त्र धारण करता था और बैलो को भोजन बनता था| जब लू के शासक का संदेशवाहक आया यां-हे स्वयं दरवाजा खोलने आया|
संदेशवाहक ने कहा :

"क्या यह यां-हे का घर है?"

यां हे ने विनम्रता से कहा :
"हाँ यह यां-हे का घर है|"

जैसे हि संदेशवाहक ने कीमती उपहार देने के लिए निकले यां-हे ने विनम्रता से कहा :
“मुझे भय है की तुमने अपने निर्देशों को गलत ढंग से समझा है और तुम्हे गलती करने के लिए दोषी मना जायेगा इसलिए तुम्हे निर्देशों को एक बार दोबारा देखना चाहिए|"

संदेशवाहक वापस आया अपने निर्देशों को फिर से देखने के लिए और जब वह दोबारा यां-हे के पास लोटा तो वह वहा नहीं था| इससे यह प्रतीत होता है की यां-हे ने धन और पद के मतों को पूरी तरह से नकार दिया था|
इसलिए यह कहा गया है :
"ताओ का उपयोग इस शरीर में वस्तुओ को सही करने में किया जाता है| जो बहुतायत में बच जाता है उसका उपयोग राज्य और परिवार के साथ किया जाता है| जिसे ख़राब समझकर नकार दिया जाता है उसका उपयोग बाकि संसार में वस्तुओ को सही स्थापित करने में किया जाता है|"
इस हम देख सकते है कि एक साधू के विषय में राजाओ और शासको की उपलब्धिया कूड़े की तरह नकार दी जाती है| ये वस्तुए विपरीत होती है एक स्वस्थ जीवन और शरीर को बनाये रखने के, आजकल जो अधिकारिक पदों पर आसीन है वे स्वयं को बहुत सारे शारीरिक खतरों और जीवन के प्रति वाली परिस्तिथ्यो से सरोकार होते है केवल वस्तुओ के लिए स्वयं को बलिदान करके| क्या यह उदासीन नहीं है? जब एक साधू को कोई कार्य करने को दिया जाता है तो वह पहले पूरी स्थिति का निरिक्षण करता है यह जानने के लिए की क्या कार्य किया जाना सही है|

मानो की आज हमारे पास एक व्यक्ति है जो मार्की सुई के कीमती मोती का उपयोग कर रहा है एक गोले की तरह ऊपर आसमान में उड़ रही चिड़िया को मारने के लिए| हर कोई उस पर जरूर हंसेगा| ऐसा क्यों है? क्योंकि वह उपयोग कर रहा है एक वस्तु का जो महत्वपूर्ण है उसे पकड़ने के लिए जो महत्वपूर्ण नहीं हैं| जीवन के विषय में - क्या यह जीवन ज्यादा विशिष्ट और महत्वपूर्ण नहीं है उस मार्की सुई के मोती से?

आचार्य लिजी बहुत ही दरिद्रता में जी रहे थे और उनके मुख से भूख की झलक साफ़ दिख रही थी आचार्य यंग (प्रधान मंत्री) के एक मेहमान जो की ज्हेंग से था जहाँ लिएज़ी ने अपना जीवन बिताया था उसने उनकी स्थिति के बारे में आचार्य यंग से कहा यह कहते हुए :
"ली-यु-कोऊ ताओ को पंहुचा हुआ एक विद्वान् है तब बहुत ही दरिद्रता में जीवन व्यापन कर रहे है, क्या तुम ऐसा होने दे रहे हो क्योंकि तुम विद्वानों को पसंद नहीं करते हो?"

आचार्य यंग ने अपने एक अधिकारी को आदेश दिया लिएज़ी के पास कुछ अनाज ले जाने के लिए| जब आचार्य लिजी ने सन्देश वाहक को देखा वह उनके साथ बहुत ही विनम्रता से पेश आये लेकिन अनाज को स्वीकार करने से मना कर दिया| जब सन्देश वाहक चला गया आचार्य लिजी अपने घर में वापस चले गए|
उसकी पत्नी ने उसकी तरफ देखकर छाती पिटते हुए कहा :
"मैंने सुना था एक औरत जिसका विवाह एक ताओ को प्राप्त हुए व्यक्ति के साथ होता है उसके पास बहुत सारी वस्तुए और समय होता है आराम के लिए और मनोरंजन के लिए| पर हमारी तरफ देखो - हम भूखे मर रहे है| उस अधिकारी ने तुम्हे गुरु की तरह पहचाना और तुम्हे भोजन भेजा लेकिन तुमने उसे स्वीकार करने से मना कर दिया| तुम कैसे इस प्रकार अपने भाग्य को नकार सकते हो?"

आचार्य लिजी हंसा और उससे कहा :
"वह अधिकारी तो मुझे पूरी तरह जानता भी नहीं था| उसने तो सुना जो किसी और ने उससे मेरे बारे में कहा और मेरे पास भोजन और अनाज भेजने का निर्णय किया| वह इस प्रकार किसी और के द्वारा यह भी सुन सकता था की मैं किसी अपराध का दोषी हूँ और फिर इस प्रकार वह मेरे साथ किसी और प्रकार का व्यवहार करता और दुसरे शब्दों को कहता| यही कारण था की मैंने उसे स्वीकार करने से मना कर दिया|"
कुछ दिनों बाद लोग वास्तव में विद्रोह में उठ गए और आचार्य यंग की हत्या कर दी|

जब राजा जहो को 'छु' के सिंहासन से बेदखल कर दिया गया, कसाई युए उसके साथ गया और उनका राज्य के सीमा के बाहर तक पीछा किया| जब राजा ज्होऊ एक वर्ष बाद 'छु' के सिंहासन पर वापस लौटा वह युए को उसकी वफ़ादारी के लिए पुरुस्कृत करना चाहता था|
कसाई युए ने उनको बताने के लिए कहा :
"जब राजा ने अपने सिंहासन को खोया मैंने भी अपने कसाई के पद को खो दिया था| जब उन्होंने अपने सिंहासन को वापस पाया है मैंने भी अपने कसी के पद को वापस लिया है| मुझे पहले ही अपना पद और वेतन प्राप्त हो चूका है इससे ज्यादा और पुरुस्कार क्या दिया जा सकता है!"

राजा ने कहा :
"उसे पुरुस्कृत करने के लिए मनाओ!"

युए कसाई ने उनको कहने के लिए कहा :
"जब महान राजा ने अपना सिंहासन और राज्य खोया था तो मेरी इसमें कोई दोष नहीं था इसलिए मुझे दंड देने का भी कोई कारण नहीं था| जब महान राजा को उनका राज्य वापस प्राप्त हुआ तो इसमें मेरा कोई प्रयास या मेहनत नहीं थी इस प्रकार मुझे पुरुस्कार देने का भी कोई अर्थ नहीं है|"

राजा ने कहा :
"उसे मेरे पास मुझसे मिलने के लिए लाओ!"

युए कसाई ने उनसे कहने के लिए कहा :
"छु राज्य के नियम कहते है की एक व्यक्ति को राजा से मिलने के लिए जरूर ही कुछ बड़ा पुरुस्कार प्राप्त करने का कार्य किया होना चाहिए| मेरे में तो इतनी समझ भी नहीं है कैसे एक राज्य को बचाया जाता है और न ही इतनी ताक़त है की घुसपैथियो से मैं इसकी रक्षा कर सकू| जब 'वू' की सेना ने राज्य पर हमला किया मैं तो भय से कांप उठा और उनसे सामना न होने का प्रयत्न करता रहा| यही कारण था की मैंने महान राजा का अनुगमन करने का निर्णय किया! और अब महान राजा नियमो को तोडना चाहते है और मुझे देखने के लिए पिछले कानूनों को रद्द करना चाहते है| यह तो बिलकुल ही विपरीत होगा जिस तरह से यह बाकि संसार मुझे देखता है|"

राजा ने अपने युद्ध मंत्री ज़ि-की को बुलाया और कहा :
"युए कसाई एक बहुत ही सादा और कष्ट पूर्ण जीवन कर रहा है फिर भी उसमे धर्म की इतनी गहरी समझ है| जाओ और उए निमंत्रण दो राजा के सलाहकार के पद पर नियुक्त होने का और तीन पताकाओ को धारण करने का|

युए कसाई ने कहा :
"मुझे पता है की तीन पताकाओ को धारण करते हुए पद पर आसीन होना बहुत ही मूल्यवान है एक दूकान में एक कसाई होने से और यह भी है की दस हज़ार अनाज के बोर वेतन का मिलना मुझे धनवान बना देगा लेकिन फिर भी मैं कैसे इतना लालची हो सकता हूँ पद और धन के लिए की मैं अपने राजा के इस अव्यवहारिक निर्णय को स्वीकार करू? मैं इससे सहमत होने की हिम्मत नहीं कर सकता हूँ| मैं इससे ज्यादा अपनी कसाई की दुकान को ज्यादा तरहीज प्रदान करूगा|"
वह अब भी अटल रहा किसी भी पुरुस्कार को स्वीकार करने से मन करने में|

युआन-क्सियन लू राज्य में रहता था| उसके घर की दीवारे घास फूस और मिटटी की बनी हुई थी और इतनी जीर्ण हो गयी थी की उन पर जंगली घास उग आई थी| उसका जीर्ण हुआ दरवाजा ठीक प्रकार से बंद भी नहीं होता था और ऐसा करने के लिए बेर के एक पेड़ की टहनी का सहारा लेना पड़ता था| एक जोड़ा मिटटी के बर्तन रखे हुए थे जिनकी तली टूट चुकी थी और जिनका उपयोग खिडकियों की तरह किया जाता था कुछ पुराने वस्त्रो से जोड़कर ताकि ठण्ड से बचा जा सके| छत इतनी बुरी तरह से टपकती थी की फर्श हमेशा गीला रहता था लेकिन फिर भी वह बैठकर अपने ज़िठेर (वाद्य यंत्र) को बजाकर झंकार उत्पन्न कर रहा था|
राजा ज़ि-गोंग अपने रथ की सवारी करते हुए जिसे बहुत सारे घोड़ो का एक समूह खीच रहा था, जिसका आंतरिक हिस्सा बैंगनी और बाहय हिस्सा श्वेत रंग का था वहां पंहुचा| वह रथ इतना बड़ा था की वह वहा के पतले मार्ग पर चल भी नहीं सकता था

इसलिए राजा निचे उतारकर पैदल युआन-क्सियन से मिलने के लिए चल पड़े| युआन-क्सियन एक जीर्ण हुई टोपी पहने हुए था और बाहर निकले हुए जुते जब राजा ने वहा आकर दरवाजे को धकेला|
ज़ि गोंग ने कहा :
"ओह! तुम इतने कमज़ोर (अविकसित) क्यों हो?"

युआन-क्सियन ने जवाब दिया :
"मैंने सुना है इसे कहते हुए की जिसके पास धन नही होता है वह दरिद्र होता है और जो अभ्यास नहीं कर पाता है जो उसने सिखा है वह कमजोर (अविकसित) होता है| और अब मैं दरिद्र हो सकता हूँ लेकिन मैं कमज़ोर नहीं हूँ|"

ज़ि गोंग ने एक कदम पीछे हटाया और व्यकुल सा प्रतीत हुआ|
युआन-क्सियन हंसा और कहा :
"दुसरो से अनुरूपता के व्यवहार की उम्मीद रखना, मित्र बनाना उन्हें जिन्हें आप बराबर का अनुभव करते हो, उसे सिखाना जिसे मैं मानता हूँ - इसकी अपेक्षा औरो द्वारा मेरे से की जाती है, पढ़ना ताकि मैं अपनी परिस्तिथियों की तरक्की कर सकू, भर्मित करने वाला धर्म और परोपकार का उपदेश देना और स्वयं को शोभित करना एक बहुत सारे घोड़ो द्वारा खींचे जाने वाले रथ से - ये सभ वो चीज़े है जिन्हें मैं स्वयं को कभी नहीं करने दूगा|"

ज़ंग-ज़ि वेई राज्य में रहता था| उसके कपडे बहुत ही जीर्ण और असभ्य थे, उसका स्वभाव स्थूल और रुक्ष था और हाथ और पैर बहुत ही कठोरे थे| उसके पास तीन दिनों से अग्नि भी नहीं थी जिस पर वह अपना भोजन पका सके और पिछले दस साल से कोई नया कपडा नहीं ख़रीदा था| जब वह अपनी टोपी को सही करता था तो थोड़ी पर से उसकी पति फट जाती थी और जब वह अपने हाथो को अपनी जेब में दालता था तो उसके फटे हुए कपड़ो के छेद में से उसकी कोहनिय बाहर आ जाती थी, जब वह अपने जूतों के फीते बांधता था तो उसके कुल्हे पीछे की और निकल आते थे| वह अपने फटे हुए जूतों को घसीटता हुआ गाता था "शांग गाने" को| उसकी आवाज की धुन स्वर्ग और पृथ्वी को ऐसे भर देती थी जैसे की यह किसी घंटियों या पत्थरो की झंकार से प्रस्फुटित हुई हो| वह राजा को उसे सेवक बनाने की अनुमति नहीं देता था और न ही राजकुमार और सम्राटो को उसका मित्र बनाने की| इस प्रकार जो अपनी महत्वकांक्षाओं को पूरा करते है वे अपने शरीर के बारे में भूल जाते है| जो अपने अपने शरीर का पोषण करते है वे भौतिक सुखो को भूल जाते है| जो ताओ में अवतीर्ण होते है वे अपने मन को भूल जाते है|

कोंग-ज़ि ने यां-हुई से कहा :
"हुई, यहाँ पर आओ| तुम्हारा परिवार निर्धन है और तुम बहुत ही कठोर परिस्तिथियों में रहते हो| क्यों नहीं तुम जाते हो और एक अधिकारिक पद पर आसीन होते हो?

यां-हुई ने जवाब दिया:
"मैं एक अधिकारी नहीं बनाना चाहता हूँ| मेरे पास करीब दस एकड़ ज़मीन है शहर के बाहर जो पर्याप्त है मुझे अनाज और सब्जिया प्रदान करने में| मेरे पास केवल एक एकड़ भूमि है शहर के अन्दर जो पर्याप्त है मुझे रेशम और पटसन प्रदान करने के लिए वस्त्रो के लिए| मेरे पास ढोल और वाद्य यंत्र है जो पर्याप्त है मेरा मनोरंजन करने के लिए| मेरे पास एक गुरु हो जो मुझे ताओ के बारे में सिखाता है जो मुझे खुशी प्रदान करने के लिए पर्याप्त है| मेरी वास्तव में एक अधिकारी बनने की कोई इच्छा नहीं है|"

कोंग-ज़ि के मुख के भाव करुना में बदल गए और उसने कहा :
"तुम्हारे विचार बहुत ही अद्भुत है! मैंने यह कहते हुए सुना है:'वह जो संतुष्ट है जो उसके पास है वे भौतिक वस्तुओ को प्राप्त करने के लिए अपनी उर्जा बर्बाद नहीं करते| वह जो आत्म संतुष्ट है वे किसी चीज़ को खोने का भय नहीं रखते| वह जो अपने अन्दर अभिमुल्यन को प्राप्त कर चुके होते है वे शर्मिंदा नहीं होते यदि उन्हें जीवन में छोटा स्थान या पद भी प्राप्त हो|' मैं इसे बहुत ही दिनों से अपने मन में दोहरा रहा था लेकिन अब तुमने वास्तव में दिखाया की इसका क्या अर्थ है और मैं सोचता हूँ की आखिरकार मैंने इसे समझ ही लिया|"

ज्होंग-शान के राजकुमार मौ ने जहाँ-ज़ि से कहा :
"मेरा शरीर यहाँ विश्राम कर रहा है नदी और समुद्र के ऊपर, लेकिन मेरा मन निवास कर रहा है वेई के घरो के छज्जो पर| मैं इस बारे में क्या कर सकता हूँ?"

जहाँ-जही ने कहा :
"जिन्दा होने की सार्थकता को देखो| यदि तुम जिन्दा होने के महत्व को देखते हो तो तब भौतिक वस्तुओ को प्राप्त करने का विचार निरर्थक हो जाता है|"

ज्होंग-शान के राजकुमार मौ ने कहा :
"हाँ, हाँ मैं इसके बारे में जानता हूँ| पर फिर भी मैं अपने भावनाओ पर विजयी नहीं हो पा रहा हूँ|"

जहाँ-ज़ि ने कहा :
"यदि तुम अपनी भावनाओ पर विजयी नहीं हो पा रहे हो तो उन पर ध्यान दो| क्या कोई आत्मा अँधेरे पहलू के बिना होती है? वह जो अपनी भावनाओ पर विजयी नहीं होता है और उसमे हिम्मत नहीं होती उनका निरिक्षण करने की तो वह बहुत ही हानि और क्षति प्राप्त करता है| एक व्यक्ति जो इस प्रकार की क्षति अनुभव करता है वह बहुत ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रह सकता है|"
वेई का मौ दस हज़ार रथो का सेना अध्यक्ष था और जब वह पर्वत की गुफाओ में छिपने के लिए चला गया तब वह परेशान था की अब वह एक विद्वान् का परिधान कभी धारण नहीं कर पायेगा| यद्यपि वह वास्तव में ताओ के साथ नहीं जुडा हुआ था लेकिन उसे कहा जा सकता है की उसने कम से कम उसके भाव को तो प्राप्त किया ही था|

जब कोंग-ज़ि को चेन राज्य और की राज्य के बिच में बंदी बना लिया गया था रोक दिया गया था तो वह सात दिनों तक बिना किसी पके हुए भोजन के रहा| उसने रस पिया जो की घास से बना हुआ था और जिसमें अन्न का एक दाना भी नहीं था, उसका स्वभाव और मुख बिलकुल पीला पद गया और क्षीण हो गया लेकिन फिर भी वह गाना गाता रहा अपने ज़िठेर को बजाते हुए|
जब यां-हुई वनस्पतीय पोधो को खोजने के लिए गया था ताकि भोजन बना सके तब ज़ि-लू और ज़ि-गोंग आपस में बाते कर रहे थे की :
"हमारे आचार्य को फिर से लू राज्य से बाहर निकाल दिया गया, उनके आने के हर चिन्ह को वेई राज्य से मिटा दिया गया, उन पर सोंग राज्य में एक वृक्ष के निचे हमला किया गया, शांग और ज्होऊ राज्य में उन्हें दरिद्रता में धकेल दिया गया और अब उन्हें चेन राज्य और की राज्य के बिच में घेर लिया गया है| अगर कोई उनकी हत्या करता है तो उसे इसका दोषी नहीं माना जायेगा और यदि कोई उन पर धावा करता है तो उसे गिरफ्तार नहीं किया जायेगा| लेकिन अब भी वो बैठे हुए है और अपने वाद्य यंत्र को बजा रहे बिना यह बोध किये की अब यह उनके शांत रहने का समय है| कैसे एक सज्जन पुरुष में ऐसे शर्मिंदगी का आभाव हो सकता है ऐसे चीजों को करने के लिए?"

यां-हुई ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी लेकिन वह कोंग-ज़ि के पास गया बताने के लिए जो उन्होंने आपस में कहा|
कोंग-ज़ि ने अपने वाद्य यंत्र को दूर रखा गहरी आह भरी और कहा :
"यह इसलिए की वे लोग इतने विकृत हो गए है की वे बिलकुल ही क्षुद्र हो गए है| उन्हें मेरे पास आकर मुझ से मिलने के लिए कहो मैं उनसे इस बारे में बात करता हूँ|"

ज़ि-लू और ज़ि-गोंग ने कक्ष में प्रवेश किया और ज़ि-लू ने कहा :
"आप कैसे स्वयं को इतनी कठोरता और कठिनाई सहने की अनुमति दे सकते हो?"

कोंग ज़ि ने कहा :
"यह किस प्रकार की बात हैं? जब तक एक सज्जन पुरुष ताओ के साथ अपने संबंध में आगे बढ़ता है तब कहा जा सकता है की वह कही तो जरूर आगे बढ़ रहा है| जब वह ताओ के शक्तिहीन होता है तब यह कहा जा सकता है की वह वास्तव में कुछ खो रहा है| अब किसी मेरे जैसे के लिए जो ताओ की उदारता और धार्मिकता को अपनाये हुए है उसके लिए इन विपत्तियों और कठोर समय का आना उसे थोडा उदास बना सकता है लेकिन कैसे कोई कह सकता है की वे वास्तव में उसे खो रहे है? इसलिए हो सकता है की मुझे थोड़ी और हिम्मत से काम लेना पड़े लेकिन मैं इससे दूर नहीं हो रहा हूँ| हो सकता है की मुझ पर और विपत्तिय आये लेकिन ये मेरे सामर्थ्य को हानि नहीं पंहुचा सकती है| प्राकृतिक ठण्ड पहले ही जा चुकी है और हिम पहले ही गिर चुकी है इसलिए मैं अब देवदार और सरू की प्रचुरता की प्रशंसा कर सकता हूँ| इस पहाड़ी मार्ग में फँस जाना चेन राज्य और की राज्य के बिच तो वास्तव में मेरा सौभाग्य है!"

कोंग-ज़ि ने तब अपने निचे रखे हुए वाद्य यंत्र को उठाया और गाने लग गया| ज़ि-लू ने अपनी छड़ी उठाई और नाचने लग गया|
ज़ि-गोंग ने कहा :
"मैं यह अनुभव नहीं कर पा रहा हूँ की स्वर्ग का कितना विस्तार हुआ जब धरती यहाँ निचे थी|"

प्राचीन समय में जो ताओ को प्राप्त करते थे वे खुश होते थे चाहे वे आभाव में हो या फिर जुड़े हुए हो| उनकी खुशी उनके आभाव में होने या जुड़े होने पर निर्भर नहीं थी लेकिन वो अनुभव करते थे की ताओ और सामर्थ्य तो दोनों ही परिस्थितियों में आगे आते है| तब आभाव में होना और इससे जुड़े होने को ऐसे देखा जाता था जैसे गर्म को ठन्डे के साथ और हवा को वर्षा के साथ देखा जाता है| इसके बाद क्सु-यू स्वयं यिंग नदी के गर्म सूर्य के प्रकाश से उज्जवलित तट पर आनंदित होने में योग्य रहा और गोंग-बो संतुष्ट हुआ गोंग-शोऊ पर्वत पर जाकर|

शुन ने प्रयत्न किया साम्राज्य को सौंपने का उत्तर दिशा से अपने मित्र वू-ज़े को|
वू-ज़े ने कहा :
"यह कितना विषम है की एक व्यक्ति में ऐसा व्यवहार भी उत्पन्न हो सकता है! वह (शुन) फसल के खेतो के मध्य में रहता था और तब याओ के द्वार तक गया (याओ का सिंहासन के लिए प्रस्ताव स्वीकारने के लिये)| जब इतना भी पर्याप्त नहीं था तो अब वह मुझे भी वैसा ही करने के बाध्य करके निचा दिखाना चाहता है| मैं ऐसे व्यक्ति से मिलकर बहुत ही शर्मिंदा अनुभव कर रहा हूँ|"
यह कहते हुए ही उसने स्वयं को किंग-लिंग नदी की गहराईयों में डुबो दिया (कूद गया)|

जब 'तंग' जिए राज्य पर हमले की योजना बना रहा था, उसने बिं-सुई को अपनी योजना में शामिल करने का प्रयत्न किया|
बिं-सुई ने कहा :
"यह मेरे काम की चीज़ नहीं है|"

तंग ने कहा :"क्या मैं किस और से सहायता प्राप्त कर सकता हूँ|"

"मुझे नहीं पता|"

तब तंग ने मो-गुंग को अपनी योजना में शामिल करने का प्रयत्न किया|
मो-गुंग ने कहा :
"यह मेरे कम् की चीज़ नहीं है?"

तंग ने कहा :
"मैं कहा से सहायता प्राप्त कर सकता हूँ?"

"मुझे नहीं पता|"

तंग ने कहा :
"यी -यिन के बारे में क्या विचार है?"

"उसके बारे में अनुमान लगाया जाता है की उसमे एक तलवार जितनी शक्ति है और एक बैल जितनी सहनशीलता, लेकिन इसके आलावा मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता हूँ|"

तंग ने इस बात को आगे बढाया और जिए राज्य पर हमला करने के लिए यी-यिन के साथ मिल गया| जब उसने जिए का तख्ता पलट कर दिया तो उसने बिं-सुई को वह सिंहासन देने का प्रयत्न किया|
बिं-सुई ने यह कहते हुए इससे मना कर दिया :
"जब आपने जिए पर हमला करने की योजना बनाइ थी तो आप इसमें मुझे शामिल करना चाहते थे, जरूर ही आप उस वक़्त सोच रहे थे की मैं एक विद्रोही हूँ| अब जब आपने जिए को हरा दिया है और मुझे सिंहासन सौंपना चाहते है तो आप जरूर ही सोच रहे होगे की मैं एक लालची व्यक्ति हूँ| हम मुसीबत भरे समय में जी रहे है और एक व्यक्ति जिसके पास ताओ नहीं है वह मुझे निचा दिखाने को बाध्य करने के लिए दोबारा यहाँ आया है| मैं अब इसे और सहन नहीं कर सकता हूँ|"

तब वह यह कहकर ज्होऊ नदी में कूद गया और डूब गया|

तंग ने तब सिंहासन को मो-गुंग को सौंपने का प्रयत्न किया यह कहते हुए :
"बुद्धिमान इसके लिए योजना बनाते है, सेना इसे जीतकर हासिल करती है और धार्मिक लोग इसे स्थापित करते है - यही तरीका है जिसके अनुसार यह इतिहास में से भी होता आ रहा है| मैं सोचता हूँ की यदि अब आप आगे आये और इसे स्वीकार करे?"

मो-गुंग ने यह कहते हुए मना कर दिया :
"एक शासक का तख्ता पलट करना धर्म के खिलाफ है| लोगो की हत्या करना परोपकार के विरूद्ध है| जब और लोगो को दबाया जाता है, अत्याचार के लिए छोड़ दिया जाता है तो मेरे लिए इसमें सुख भोगना कदापि योग्य नहीं है| मैंने यह सुना है:'यदि कोई बिना धर्म के है तो उसके द्वारा दिए गए उपहारों और पदोन्नति को स्वीकार मत करो| यदि पूरी ही पीढ़ी बिना ताओ के है तो कभी भी उस भूमि पर पैर मत रखो|' यह बहुत ही कम है! बहुत ही कम है! जिसके लिए मैं थोडा सा भी सम्मान अनुभव कर पाऊ| अब मैं इसे और देख व् सहन नहीं कर सकता हूँ|"
इसके साथ ही उसने अपनी कमर पर एक भारी पत्थर बाँधा और लू नदी में डूब गया|

पुराने समय में जब ज्होऊ साम्राज्य का उदय हुआ था तब वहा दो पुण्यात्मा रहते थे गु-जहू राज्य में, उनका नाम था बो-यी और शु-की|
एक वार्तालाप में उन दोनों में से एक ने अपने से दुसरे से कहा :|
"मैंने सुना है की एक व्यक्ति है पश्चिम में जिसने ताओ को प्राप्त कर लिया है| चलो चलते है और उससे भेंट करते है|"

जब वे की पर्वत के दक्षिणी हिस्से में पहुच गए थे, राजा वें ने उनके आने के बारे में सुना और अपने छोटे भाई दान को जाकर उनसे मिलने के लिए कहा| उसने उनसे विधिपूर्वक भेंट की और कहा :
"आपका वेतन एक द्वितीय श्रेणी के अधिकारी जितना होगा और आपको आते ही उच्च पद प्रदान किया जाएगा|"

उन दोनों व्यक्तियों ने एक दूसरी की तरफ देखा और हँसने लग गए और हँसते हुए उन्होंने कहा :
"हा! हा! कितना अजीब है! यह तो बिलकुल ही विपरीत है उससे जब हम ताओ के बारे में कहते है| पुराने दिनों में जब शेन-नोंग इस संसार का शासक था बलिदानों और अनुष्ठानो को किया जाता था आदर प्रकट करने के लिए न की अपना पक्ष प्राप्त करने की इच्छा से| वह बिलकुल ही विश्वसनीय और निष्ठावान था अपने लोगो पर शासन करते समय और कभी भी उसने इसके बदले किसी चीज़ का अनुग्रह नहीं किया| जब वह वस्तुओ को क्रम में कर देता था तो वे उसी व्यवस्था में रहती थी| जब वह अपने शासन से समस्याओं का समाधान कर देता था तो वे ऐसे ही ठीक रहते थे| वह लोगो को अपनी सफलताओ का दिखावा करने के लिए किसी भ्रम में नहीं धकेलता था और न ही वह उनको निचा दिखता था ताकि स्वयं को ऊचा दिखा सके| और न ही वह कभी विप्पतिया उत्पन्न करता था अपना लाभ चाहने की इच्छा से|
"आज जब ज्होऊ ने यिन में अव्यवस्था देखि तो वह उसे जीतने के लिए निकल पड़ा| उन्होंने वहा के उच्च अधिकारियो के साथ साजिश रची और निम्न अधिकारियो को रिश्वत दी| उन्होंने सैन्य दलों में अपनी पैठ जमाई और उन्हें क्षमा दान दिया| उन्होंने अपने खून की बूंदों को टपकाया वफ़ादारी और बलिदान की प्रतिज्ञा लेने के लिए| उन्होंने अपनी उपलब्धियों को बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत किया ताकि लोगो की निष्ठा हासिल कर सके| उन्होंने अपने शस्त्रों और तलवारों से हत्याए की ताकि वे और ज्यादा पा सके| जो वे कर रहे थे वो केवल निरंकुशता से लोगो पर अत्याचार और उत्पीडन था|
"हमने सुना है की पुराने समय के पुण्य व्यक्ति जब समृद्धि और शांति के इन सम्मोहनो से सरोकार होते थे तो इनसे बचकर नहीं भागते थे| और यदि मुसीबत भरा समय आता था तो वे इसके प्रति बेपरवाह अपने जीवन को व्यतीत करते थे| अब जब यह संसार है इतने अंधकार में है और ज्होऊ साम्राज्य का सामर्थ्य का बिलकुल ही निम्न स्तर पर क्षय कर दिया गया है तो हमारे लिए उस मिटटी पर पैर रखकर अशुद्ध होने से अच्छा तो उससे अलग शुद्ध रहने में ही है|"

वे दो पुण्य आत्मा व्यक्ति तब शोऊ-यंग पहाडियों के उत्तर में चले गए और फलतः भूख से उनकी मृत्यु हो गयी| यह प्रतीत होता है की यद्यपि बो-यी और शु-की एक मुकाम तक पहुचे हुए थे और बेपरवाह थे अपनी योग्यताओ के प्रति लेकिन तब उन्हें अहसास हुआ की उन्हें इन वस्तुओ पर निर्भर नहीं होना चाहिए| उनकी समग्रता की उत्कृष्ट समझ ने उन्हें योग्य किया रुकने के जो की वे कर रहे थे उससे| उन्होंने अनुभव किया की वे अपनी आकांक्षाओ से खुश है लेकिन अपनी वर्तमान परिस्तिथियों की छाया में नहीं| यही तो उस समग्रता की परम ऊँचाई है जो की उन पुण्यआत्मा व्यक्तियों के पास थी|

29.Robber Zhi

Kong Zi (Confucius) had a friend named Liu Xia Ji. Liu Xia Ji's younger brother went by the name Robber Zhi. Robber Zhi and his gang of 9000 men ran rampant throughout the empire savagely attacking the feudal lords and dukes, blasted through walls and chopped down the doors of people's houses, made off with their horses and cattle, and abducted their wives and daughters. Their greed was so intense they paid no heed to their own relatives, ignoring their parents and siblings, and didn't make ritualistic sacrifices to their ancestors. When they passed through an area, those in large neighborhoods would send extra guards to their city walls and those in smaller neighborhoods would go into hiding. Countless people suffered at their hands.
Kong Zi said to Liu Xia Ji:
"Fathers must be able to instruct their sons, and elder brothers must be able to teach their younger brothers. If a father isn't able to instruct his sons and an older brother isn't able to teach his younger brothers, then there's no value to the relationships between father and son and brothers. At this time you're a talented official while your younger brother is known as Robber Zhi who's causing harm to the whole world, and you're not able to teach him a thing. I can tell you in confidence that I'm embarrassed for you. Please allow me to go speak with him."
Liu Xia Ji said:
"As you said earlier, a father must be able to instruct his sons and an elder brother must be able to teach his younger brothers. If a son refuses to listen to his father's instructions, and a younger brother refuses to accept the teachings of his older brother, and yet you think you can go knock some sense into him, what makes you think you'd get anywhere? Besides, Zhi is the type of person whose heart is like a turbulent spring and whose attention span changes direction as suddenly as the wind. He has enough strength to contradict anything that opposes him and an ability in debating to make the other person feel like they're all wrong. If you do what he wants then he's happy, but if you go against him he goes into a rage. He has no problem with insulting whoever speaks with him. You really shouldn't go see him."
Kong Zi didn't pay attention to his advice. With Yan Hui as his chariot driver and Zi Gong on his right, he set off to go see Robber Zhi. Robber Zhi was resting with his gang in the sun near Mount Tai, eating a late lunch of minced human livers.
Kong Zi got out of his chariot and approached the senior gang member who was in charge, saying:
"I'm Confucius from Lu, and I've heard about your leader's high sense of righteousness."
He respectfully bowed twice to the man. After the man had communicated that message, Robber Zhi went into a fit of anger. His eyes became as big as saucers and his hair stood up on end.
He said:
"Isn't this the clever hypocrite Kong Qui (Confucius) from the state of Lu? Tell him this is what I have to say to him: 'You use words to create your own particular language and coin absurd militaristic phrases. You wear a hat like a branch sticking out of a tree and your belt is made from the dead skin of a cow. You go around spouting all those absurd theories, but you don't even cultivate the land that grows the food you eat nor do you sew your own clothing. You flap your lips pouring out sweet words, acting like you're some sort of authority on right and wrong in this life, like you're a master who's come to save this lost world. You promote the idea that people must learn from scholars instead of returning to their own roots. You put forth the absurd notions of filial piety and fraternal duty while deceptively seeking to get honor and rank from the officials. Your crimes are the most egregious, and you'd better quickly go back where you came from or else I'll add your liver to my midday meal."
Kong Zi again requested to see him, saying:
"I've come here on behalf of your brother Ji, and I'd like to be allowed to enter your tent."
The man again relayed this message back to Robber Zhi who replied:
"Bring him here."
Kong Zi hurriedly entered the tent, refused the offer of a mat to sit on, took a few steps backward and bowed respectfully twice to Robber Zhi. Robber Zhi became extremely angry, spread his two feet widely apart, grabbed up his sword from the table, glared at him, and roared like a mother tiger, saying:

"Come closer. I'll listen to your words, and if they agree with my own ideas I'll let you live. However, if they go against what's in my heart I'll kill you."
Kong Zi said:
"I've heard that there are three virtues of character one may possess in the world. To grow up tall, large and handsome without peer, so that all the people would be pleased to just bask in your presence - this is the highest virtue of character. To know how to weave together the heavens and the earth and have the ability to discuss this with all living things - this is the middle virtue of character. To be brave, fearless, courageous and determined so as to draw together a band of soldiers to join with you - this is the lowest virtue of character. If a person has even one of these virtues, it would be sufficient enough for him to take a position facing southward and be held as one above others.
(Note: The emperor's throne is always situated facing south, designating his authority and power.)
"Now you, general, are someone who has a combination of all three of those. Your body has grown to a height of eight feet two inches. Your eyes are bright and clear. Your lips are flushed red as cinnabar. Your teeth are as straight and even as a row of cowry shells. Your voice resonates like the mid-tone of temple bells. And yet you choose to go by the name Robber Zhi. I'd be ashamed if I didn't try to get you out of this situation.
"Please take a minute to listen to what I'm suggesting. I'd like to be allowed to go south as your envoy to the states of Wu and Yue, to go north to the states of Qi and Lu, to go east to the states of Song and Wei, and to go west to the states of Jin and Chu in order to encourage one of them to set you up in a big walled city measuring hundreds of acres. This city would contain hundreds of thousands of households, and you'd be respected as a duke or prince. You could begin afresh in this world, lay down your weapons and give your soldiers a rest, provide support and comfort for your brothers and share with them in making ritualistic sacrifices to your ancestors. This is what the sages and noblemen engage in and what the whole world wishes for."
Robber Zhi got even angrier and said:
"Come closer to me. Those who allow themselves to be regulated by promises of profit and to be admonished for what they do by someone else's words can all only be referred to as people in a constant state of stupidity and vulgarity. Now, the fact that I've grown up to be tall and handsome and that others find pleasure looking at me is a virtue that was bestowed on me by the genes of my parents. This isn't something I could give myself any credit for, so why would I pay any attention to that whatsoever? Moreover, I've heard that someone who accepts praise for their good looks ends up being burdened by their good looks and eventually gets destroyed by them. Now you're telling me you want to set me up in a big city with crowds of people who would all want to put regulations on me as though I could profit from that, and where the people would be constantly treated like herds of animals. How long could that last? No matter how large a city is, there's always something larger in the world. Yao and Shun possessed the whole world, but their descendants didn't end up with enough land to stick an awl in. Tang and Wu were established as emperors, but later generations of their descendants were ousted. That's not getting great results from using what's temporarily beneficial, is it?
"I've also heard that in ancient times there were lots of birds and animals but few people, and the people all gathered together in protective nests in order to avoid them. In the daytime they gathered acorns and chestnuts, and at night they perched up in the trees. That's why they were called the clan of the nest building people. The people in ancient times didn't know they were supposed to cover their bodies with clothing. In the summer they gathered firewood, and in the winter they warmed themselves in front of the fires. That's why they were called the people who understood how to live. By the time Shen Nong came along, they would lie down wherever they happened to be and would get up when they felt like it. The people knew who their mothers were, but didn't know their fathers. They coexisted in the places where deer made their homes. They'd plow the land and eat the food they produced. They'd weave and stitch their own garments. They had no reason to cause harm to each other's hearts, and in that way their virtues flourished unhampered. Even so, Huang Di wasn't able to sustain this virtue, and he ended up at war with Chi You in the wilderness of Zhuo Lu, and the blood flowed for hundreds of miles. When Yao and Shun came along they established a hierarchy of government officials. Tang showed that a ruler could be deposed by an underling, and King Wu went so far as to assassinate Zhou (his ruler). After that people began to use

strength to subjugate the weak and the power of numbers to castigate the few. From the time of Tang and Wu all hell's broken loose.
"Now you're promoting the paths of King Wen and King Wu, putting yourself in charge of all the disagreements in the world, and setting out to teach future generations. Wearing your finely stitched robes and low slung belt, using suggestive words and deceptive actions, casting confusion and doubt to the rulers in the world, and hoping to reach a position of honor and wealth, you're actually the biggest thief of all. How could anyone in the world not refer to you as Robber Zhong, but instead call me Robber Zhi?
"You sweet talked Zi Lu into following you, making him get rid of his crested hat and discard his long sword in order to receive your teachings. Everyone in the world is going around saying that Kong has the ability to stop violence and rectify injustice. What ended up happening was that when Zi Lu tried to kill the prince of Wei he didn't succeed. Instead his body was left to putrify hanging from the eastern gate of Wei, so you weren't even able to teach him a thing.
"You call yourself a talented scholar and sage? Well, you were twice chased out of Lu, had every trace of your presence erased from Wei, were impoverished in Qi, and were surrounded and detained between Chen and Cai. There isn't a place in the world that can tolerate you. Your teachings are what brought Zi Lu the disaster of being left to putrify. When you use your utmost efforts you can't assist your own body, and when you use your least efforts you can't assist anyone else. Of what value is this Dao of yours?
"There's no one who's been put up on a higher pedestal throughout the generations than Huang Di. Yet Huang Di wasn't able to sustain perfect virtue and went to war in the wilderness of Zhuo Lu causing blood to be spilled for hundreds of miles. Yao wasn't compassionate (he killed his son), Shun wasn't filial (he exiled his mother's youngest brother), Yu was paralyzed on one side (he damaged his body trying for twelve years to harness the Great Flood), Tang exiled his ruler, King Wu attacked Zhou (Wu's ruler), and King Wen was imprisoned in You Li. These six men have been highly esteemed for generations, but if we discuss their methods in detail we can see how they all were really deluded by their lust for profits and only later returned to their natural essence by force from others. It was only then that they could look back and be ashamed of their previous behavior.
"Those who are referred to as the pinnacles of worthy scholars are Bo Yi and Shu Qi. Bo Yi and Shu Qi fled from the ruler of Gu Zhu and starved to death in the mountains of Shou Yang where their dead bodies remained unburied (it was considered disgraceful to have no one to bury you after death). Bao Jiao pumped himself up as a paragon while criticizing the rest of the people around him, then he wrapped his arms around a tree and stayed there until he died (after being admonished for his behavior). When Shen Tu Di's criticisms weren't listened to, he tied a huge rock to his back and drowned himself in the Yellow River where he became fish food. Jie Zi Tui was so loyal that he cut a piece of flesh from his thigh so Duke Wen would have food to eat. When Duke Wen later turned his back on him, Zi Tui went off in a huff, tied himself to a tree and killed himself by setting himself on fire. Wei Sheng made a date to meet a woman under a bridge. The woman didn't show up, but even though the tides caused the water to rise, he wouldn't leave. He just held on to one of the pillars of the bridge and drowned. These six men are no different than a dismembered dog, an abandoned suckling pig or a screeching beggar with an empty bowl. They all left behind any idea of becoming renowned and took death lightly, but didn't give any thought to the roots that nourished their lives.
"Of those throughout the generations who would be considered to be loyal ministers none could outshine Prince Bi Gan and Wu Zi Xu. Zi Xu wound up in the Shen River (he was forced to commit suicide after angering the King of Wu by warning him of the danger of Yue, then the King threw his dead body in the river). Bi Gan had his heart cut out (after he repeatedly admonished the tyrant Zhou). Both of those men would be referred to as loyal ministers throughout the ages, but even so, they ended up being laughing stocks throughout the world.
"Looking at all the men I mentioned, from the first down to Bi Gan and Zi Xu, not one of them deserves to be looked up to.
"You're the one who wanted to come to tell me something. If you want to tell me about the affairs of ghosts, then I couldn't possible understand what you'd have to say. If you want to tell me about the affairs of people, then I'm not interested in that. I've already heard about all those stories and understand them thoroughly.

"Now I'm going to tell you about people's emotions. Their eyes want to see colors. Their ears want to hear sounds. Their mouths want to taste flavors. They want their aspirations to be fulfilled. People think it's best to live for a hundred years, see it as mediocre to live for eighty years, and find it least attractive to live for merely sixty years. Excluding the times when one is seriously ill and leaving out the times when one is in mourning, the times when one can open one's mouth and laugh out loud wouldn't be more than four or five days in a month.
"The heavens and the earth are without end, but one who dies is limited by time. To try to hold on to what is ultimately limited by time and retain a sense of that which passes without end - don't even try to do that. It would be no different than trying to see a speeding stallion passing by a crack in a wall. Anyone who isn't able to rejoice in what's within their hearts and the expressions that come from their hearts, nor nourish themselves throughout their natural lifespan has made no connection whatsoever with Dao.
"Everything you've said to me is something I've already rejected. Get out of here in a hurry and go back where you came from without speaking another word. The path you've chosen is utter lunacy, filled with falsehoods, pretentiously clever, and hypocritically self-serving. There's not a shred of truth in it. Why even bother discussing it?"
Kong Zi bowed twice then hurried off. He went out the door and got into his carriage. He dropped the reins three times. His eyes were so blurred that he couldn't see where he was going and his complexion was as pale as cold embers. He grabbed hold of the crossbar with his head bowed down and couldn't compose himself. When he reached the east gate of Lu he happened to come across Liu Xia Ji.
Liu Xia Ji said:
"So here you are at the gate tower. I haven't seen you for days. Your chariot and horses look like you've been traveling. Did you go off to meet with Zhi?"
Kong Zi looked up at the sky and sighed, saying:
"Yes, indeed I did."
Liu Xia Ji said:
"Did Zhi tear down all your suggestions as I predicted?"
Kong Zi said:
"He sure did. You might say I was like someone who went to cauterize a wound he didn't even have. I rushed off thinking I could anticipate what was in the tiger's head and ruffle his whiskers, but I barely escaped his hungry mouth!"

Zi Zhang (Sir Expansion) asked Man Gou De (Satisfied With What He Has):
"Why don't you behave properly? If you don't behave properly, you won't be trusted. If you're not trusted you won't be promoted. If you're not promoted, you won't get a raise in pay. Therefore, you should be thinking about making a name for yourself in order to increase your income and get what's righteously yours. If you abandon the idea of getting fame and fortune and just go along with what's in your heart, then the ones in power will act in a way that will prevent you from being able to do for a single day what you're not told to do by others!"
Man Gou De said:
"One who's wealthy is without shame. One who's illustrious is trusted by many. Of those who have fame and fortune, how many of them are without shame and are trustworthy? Therefore, observing their fame and counting up their fortunes is the only thing they really trust in. If you abandon the idea of getting fame and fortune and just go along with what's in your heart, then the ones in power will act any way they want, and you can simply embrace the heavens."
Zi Zhang said:
"In ancient times Jie and Zhou were esteemed emperors. They were so rich they possessed the whole world. But nowadays if you were to say to a group of servants: 'Your behavior is comparable to that of Jie and Zhou' they'd blush with embarrassment and not appreciate those words since even people in low positions find those men despicable. Zhong Ni (Confucius) and Mo Di (Mozi) were as poor as common people. But nowadays if you were to say to a prime minister: 'Your behavior is comparable to Zhong Ni and Mo Di' they'd take on a gentle and unassuming attitude saying they could never be a match for those men since scholars sincerely admire them.

Therefore a powerful emperor may not necessarily be looked up to, and people who suffer through poverty may not necessarily be looked down upon. Those who are deemed highly and lowly are differentiated by whether their actions are good or evil."

Man Gou De said:

"Petty thieves are arrested, but great robbers become dukes and lords. It's within the gates of the dukes and lords that those who claim to be righteous exist. In former times Duke Huan, Ziao Bai, murdered his elder brother in order to have an intimate relationship with his sister-in-law, but Guan Zhong nevertheless became his prime minister. Lord Tian Cheng murdered his ruler in order to take over the country, but Kong Zi nevertheless accepted gifts from him. In their private discussions they put down people who'd do those kinds of things, but in their behavior they kowtow to them. So the emotions behind their words and behavior are at conflict within their chests, and they can't possibly bring them into harmony! Therefore it was written: 'Who is evil and who is good? If one is successful, they become a leader. If one fails, they get dragged in the dust.' "

Zi Zhang said:

"If you don't behave properly you'd be without a sense of ethics about which members of your family should receive the most respect, you'd be without a sense of righteousness as to the worthy and the unworthy, and you'd be without a sense of hierarchy between the aged and the young. And as for the Five Relationships and Six Positions, how could you differentiate between them?"

(Note: The Five Relationships [sovereign/minister, father/son, husband/wife, elder/younger brothers, friend/friend] and Six Positions [sovereign, minister, father, son, husband, spouse] were mandates set up to show the order of respect which should be shown between people of different status.)

Man Gou De said:

"Yao killed his eldest son and Shun exiled his half brother. Did they have a sense of ethics about which relative should receive the most respect? Tang banished Jie (his ruler) and King Wu killed Zhou (his ruler). Did they have a sense of righteousness as to the worthy and unworthy? King Ji was promoted to the throne (in preference over his older brother who was next in line) and Duke Zhou killed his older brother (in order to become the next heir). Did they have a sense of hierarchy between the aged and the young? The Confucians are hypocritical in their statements and the Mohists preach unconditional love for all. Are they differentiating between the Five Relationships and the Six Positions?

"Actually, you're attempting to rectify things by becoming famous while I'm attempting to rectify things by becoming beneficial. Becoming famous and becoming beneficial don't follow the same principles, nor do they allow for introspection about Dao. This is what Wu Yue (Without Restrictions) had to say about our disagreement: 'People who are in lowly positions would sacrifice themselves for wealth, and noblemen would sacrifice themselves for fame. The reasons each of them have for wanting to change their circumstances in life, which ultimately affects their true natures, are different, but the fact that they're willing to abandon who they are and make sacrifices to become what they're not is the same.'

"Therefore, it's been said:

'Give up on the idea of being in a lowly position, and only sacrifice to what is from the heavens. Give up on the idea of being a nobleman, and only follow the principles of the heavens.

'Whether moving in a crooked or straight way, allow either of them to lead to the pivot of the heavens. Face toward any of the four directions and allow any of them to increase or decrease in due time.

'Whether right or wrong, either aspect rolls into one another like a ball on the palm of a hand. Only accomplish what is heard from the heart and that will be a manifestation of Dao.

'Don't adapt to what is perceived to be proper behavior and don't feel accomplished at being righteous or you'll lose sense of your own actions. Don't be lured by wealth and don't sacrifice for success or you'll be abandoning the heavens.'

"Bi Gan had his heart cut out and Zi Xu had his eyeballs gouged - those misfortunes happened to them due to their loyalty. Zhi Gong testified against his own father (for stealing sheep) and Wei Sheng drowned to death (waiting for a girl under a bridge) - those disasters happened due to their faithfulness. Bao Zi stood still until he dehydrated and Shen Zi couldn't control himself - they were harmed by their own uprightness. Kong Zi didn't go see his mother and

Kuang Zi didn't go see his father (after his father sent him away for criticizing him) - those losses occurred because of their sense of righteousness.
"Stories about those people have been passed down through the ages and even today their words are still being quoted. They are believed by the scholars to have spoken of the truth and that their behavior must be followed. Therefore, when they're beset by calamities they try to give up on worrying about them.

Wu Zu (Never Has Enough) asked Zhi He (Perceptively Harmonious):
"Of all people, there's no one who don't pursue fame and go after possessions. People want to be around those who are rich. When they're around those who are rich they kowtow to them. They kowtow to them and place them in high regard. Someone who's regarded so highly will surely live a long life, feel tranquil and enjoy all their experiences along the way. Now you're the only one who doesn't want to have these experiences. Is that because you're ignorant? Or is it because you really do desire those things but don't think you have the strength to pull it off? Or are you just so intent on rejecting what's due you that you can't get that out of your mind?"
Zhi He said:
"Those type of people consider themselves to be individuals who, although they're sharing their time in life with those around them and are living in a community with others, see themselves as having severed themselves from the world around them. They think they've passed way beyond the scholars of this generation. They think they're so special that no one could show them any other way of thinking. As a result they weigh the past and present in their own myopic viewpoint of differing between right and wrong and change along with the trends of the times. They allow the present times to dictate their comings and goings, what they'll abandon and what they'll retain as respectful, and consider themselves to be behaving properly. These are the ideas they use as a basis for living a long life - feeling tranquil with their ideas and enjoying their experiences along the way. But aren't they actually far from that? When tragedy strikes they get overcome by their sorrow, and when things are tranquil they feel safely secure as though they're not imprisoned by their own bodies. When they feel afraid they try to guard against their own insecurities, and when they're enjoying themselves they're on the lookout for more delights as though they're not imprisoned by their own minds. When they're taking actions they know they're acting, but they don't know what the results of their actions might be. They think their actions are as honorable as those of an emperor, but since their wealth is dependent on the world around them they can't possibly avoid disasters."
Wu Zu said:
"When a person is wealthy there's nothing he wouldn't benefit from. He'd have the most beautiful things and exert the utmost power. The position taken by a perfected person prevents them from capturing those things. The position taken by a worthy person makes them unable to acquire those things. The bravery and strength of fearless people can be used to make them appear threatening and powerful. The knowledge and strategies of clever people can be used to make them appear bright and insightful. The virtue of reliable people can be used to make them appear worthy and kind hearted. Not having to cater to the demands of a state, one can be as stern and imposing as a strict father. Furthermore, a person doesn't have to spend time educating their minds as to what's pleasurable, nor investigate their bodies to find what brings them the most serenity in order to appreciate fine music, beautiful women, delicious flavors and influential power. To not wait around for someone to teach them about what they desire or loathe nor what they want to avoid or accept is the nature of those people. Although you might want to find fault with me for what's going on in the world, what's there for me to apologize for?"
Zhi He said:
"When a wise person acts it's because they're moved by the common people, not in an effort to violate them but with consideration for them. When they already have enough they don't need to contend with anyone else, don't need to take actions nor go looking for anything. When they find themselves without enough, then they go out and look for it, competing for what they need but not because they are acting from greed. When they have enough for themselves and extra, they refuse to accept any more and abandon pursuits in the world, but not because they're acting unselfish. In reality greed and unselfishness aren't constructs placed upon someone by others, but they are prisons created by measurements placed on oneself. One can have the power of an emperor but not use it to feel

arrogantly superior over others. One can have the wealth of the whole world but not use it to mock others. He calculates the risks involved and considers both sides before taking any actions that might harm his nature. In that way he might turn away from or refuse to accept something, but not because of a desire for fame or reputation. Yao and Shun brought about harmony in the world when they were emperors, but not because they felt that they were benevolent to the people of the world. They wouldn't allow their own sense of goodness to bring harm to their natures. Shan Juan and Xu You were each given the throne but they refused to accept it. That wasn't because they wanted to make a pretentious show of acting like they were humbly unworthy, but because they didn't want to allow the affairs of the world to harm who they were. Each of those men moved toward what was most beneficial for them while rejecting what would cause them harm, and the world praises them for their insightfulness. They're due that praise even though they didn't do what they did for fame or reputation."

WuZu said:

"Those who strive for that kind of reputation think they have to bring undue hardships on their bodies, reject flavorful food and restrict proper nourishment in order to keep themselves alive. By doing that they end up suffering physical illness and a series of calamities just in an effort not to die."

Zhi He said:

"Those who maintain a balance have good fortune while those who go to excesses do harm to themselves. That's true for all things, and even more so for those who accumulate wealth. A rich person's ears are always listening for the sounds of bells, drums, pipes and flutes, and his mouth is always drooling for the flavor of grain-fed animals and fine wine. He's so completely wrapped up in those sensations that he forgets all about what he's supposed to be doing. This is called being in utter chaos. He holds on so tightly to his addictions that his passions end up being like a heavy load he can't bear the weight of. This is called suffering from a hardship. He's greedy for money to achieve a comfortable life. He's relentlessly seeking power to achieve supremacy. Then he sits around in his home indulging himself while his fattened body lusts for more. This is called being really physically sick. His desire for wealth and the accumulation of possessions have overcome him to the extent that he can't listen to anything else and he doesn't know how to escape. Moreover, he's so filled with lust that he can't give it up. This is called being disgraceful. He's accumulated more wealth than he can use, yet he keeps accepting more and more without being able to part with any of it. His mind is filled with distress about what he's going to have to do to seek more advantages and not fail. This is called being anxiety-ridden. In his home he's afraid robbers will come and take what he owns, and when he's away from home he's worried that thieves will accost him and steal his money. Inside he protects himself with sturdy walls and wouldn't dare to walk outside alone. This is called being fearful. These six conditions are the most harmful things in the world, yet he tries to forget about them and doesn't have the sense to look at them with consternation. When a great disaster finally overcomes him, he'll strive to find something within him to deal with it and even use up all of his wealth in the effort, but but he won't be able to achieve a release from his burden for a single day. Then he'll look for fame but won't find it. He'll search for his possessions but won't be able to grasp them. Having completely wrapped himself up in his ambitions to the detriment of his physical health for the things he thinks he wants - isn't this the epitome of delusion?"

२९|डाकू जही

कोंग-ज़ि का एक मित्र था जिसका नाम लिऊ-क्सिया-जी था| लिऊ-क्सिया-जी का छोटा भाई जाना गया था डाकू जही के नाम से| डाकू झी और उसका नौ हज़ार आदमियों का गिरोह अनियंत्रित हुआ घुमता था पुरे साम्राज्य में बड़ी बर्बरता से सामंतो और सम्राटो पर हमला करता हुआ| वे दीवारों और लोगो के घरो के दरवाजो को तोड़ देते थे, उनके पशुओ को मार देते थे और उनकी बीवियों और बेटियों का अपहरण करते थे| उनका लालच इतना तीव्र था की वे अपने सगे संबंधियों को भी नहीं बख्सते थे, अपने माता-पिता और भाई बहनों पर कोई ध्यान नहीं देते थे और अपने पूर्वजो के प्रति रस्मो और अनुष्ठानो का पालन नहीं करते थे| जब वे किसी क्षेत्र के पास से गुजरते थे तो जो बड़े क्षेत्र होते थे वे अपनी सुरक्षा के लिए अतिरिक्त रक्षक नियुक्त करते थे और जो छोटे क्षेत्र होते थे वे कही जाकर छुप जाते थे| असंख्य लोग उनके अत्याचारों से पीडित थे|

कोंग-ज़ि ने लिऊ-क्सिया-जी से कहा :
"एक पिता जरूर अपने पुत्र को सिखाने में योग्य होना चाहिए, एक बड़ा भाई जरूर ही अपने अनुज को सिखाने में योग्य होना चाहिए| यदि एक पिता अपने पुत्र को और एक अग्रज अपने अनुज को सिखाने में योग्य नहीं है तो पिता और पुत्र, अग्रज और अनुज इनके संबंधो का कोई अर्थ नहीं है| इस समय तुम तो एक कुशल उच्च अधिकारी हो और तुम्हारा भाई डाकू जही के नाम से जाना जा रहा है जो की सम्पूर्ण संसार को क्षति पंहुचा रहा है और तुम उसको कुछ भी सिखाने में असमर्थ हो| मैं तुम्हे यह पुरे ही विश्वास से बताता हूँ की मैं तुम्हारे लिए बहुत ही व्याकुल हूँ| मुझे उससे बात करने का मौका दीजिए यह मेरी विनती है|"

लिऊ-क्सिया-जी:
"जैसा की तूमने पहले कहा, एक पिता जरूर ही अपने पुत्र को सिखाने में योग्य होना चाहिए और एक बड़ा भाई जरूर ही अपने अनुज को सिखाने में योग्य होना चाहिए| यदि एक पुत्र अपने पिता की बातो को सुनने से मना कर दे और एक अनुज अपने अग्रज की बातो को सुनने से मना कर दे तो, और अब भी तुम सोचते हो की तुम जाकर उसमे कुछ समझ उत्पन्न कर सकते हो, तुम्हे ऐसा क्या सोचने को बाध्य करता है की तुम थोडा सा भी यह कर पाओगे? इसके आलावा जही एक ऐसे प्रकार का व्यक्ति है जिसका ह्रदय अशांत वसंत की तरह है और जिसके ध्यान की दिशा बदलती हुई हवा जैसे बदलती है| उसके पास पर्याप्त क्षमता है किसी भी चीज़ का खंडन करने की जो उसका विरूद्ध करती है और योग्यता है ऐसे विवाद करने की जिससे की सामने वाला व्यक्ति ही सोचे की वह ही गलत है| यदि तुम करते हो जो वह चाहता है तो वह खुश है लेकिन अगर तुम उसके विपरीत जाते हो तो वह क्रोध से भर जाता है| उसे कोई परेशानी नहीं होती किसी का अपमान करने में जो उससे बाते करता है| तुम्हे वास्तव में ही उससे मिलने नहीं जाना चाहिए|"

कोंग-ज़ि ने उसके सुझाव पर कोई ध्यान नहीं दिया| यां-हुई को अपने रथ का सारथि बनाकर और ज़ि-गोंग को अपने साथ लेकर वह डाकू जही से मिलने के लिए चल पड़ा| डाकू जही अपने गिरोह के साथ 'तै' पर्वत पर धुप में विश्राम कर रहा था और मनुष्य के कीमा बनाये हुए उदर से अपना दोपहर का भोजन कर रहा था|

कोंग-ज़ि अपने रथ से उतरा और गिरोह के एक मुख्य सदस्य के पास पंहुचा जो की वहां का नियंत्रक था, उसने कहा:
"मैं लू राज्य से कोंग-ज़ि हूँ और मैंने सुना है की तुम्हारे मुखिया के पास धर्म की बहुत ही उच्च समझ है|"

उसने झुककर दो बार प्रणाम किया और फिर उस सन्देश को अपने मुख्या तक पंहुचा दिया| डाकू जही इसे सुनकर बहुत ही क्रोधित हो गया| उसकी आंखे क्रोध से लाल हो गयी और उसके बाल खड़े हो गए|
उसने कहा :
"क्या यह वही पाखंडी कोंग-कुई है लू राज्य से? उसे बताओ जो मुझे उसे कहना है :'तुम शब्दों का प्रयोग करते हो जो केवल तुम्हारे विचारो को बढ़ावा देते है और तुम पुराणी कही गयी बातो को बेतुका बताते हो| तुम ऐसे टोपी पहनते हो जैसे की एक पेड़ में से टहनी बाहर निकली हुई हो और कमर पेटी बांधते हो जो की कोओ की खाल से बनी हुई होती है| तुम घूमते हो अपने बेतुके सिद्धांतो को चिल्लाते हुए लेकिन तुम न ही तो उस भूमि पर मेहनत करते हो जो तुम्हारे लिए भोजन उत्पन्न करती है और न ही तुम अपने वस्त्रो को स्वयं से सींते हो| तुम अपने होंठो को चलाते हो मीठे शब्दों को बोलते हुए और ऐसे व्यवहार करते हो जैसे की तुम्हारे पास ही इस जीवन में सही और गलत का निर्धारण करने की क्षमता है और जैसे की तुम एक सिद्ध पुरुष हो जो की इस संसार को बचने के लिए आया है| तुम इस मत को बढ़ावा देते हो की लोगो को विद्वानों से सीखना चाहिए न की स्वयं के मूल से| तुम धर्म कर्तव्य और भाईचारे के मतों को आगे बढ़ाते हो जबकि खुद इसके लिए राजाओ द्वारा ऊँचे पदों

और सम्मान की चाहत रखते हो| तुम्हारे अपराध तो सबसे कठोर और भीषण है, बेहतर यही होगा की तुम शीघ्रता से वहा चले जाओ जहाँ से आये थे इससे पहले की मैं तुम्हारे पेट को अपने भोजन के रूप में पकाऊ|"

कोंग-ज़ि ने दोबारा उससे मिलने की विनती की; उसने कहा :
"मैं यहाँ पर तुम्हारे भाई 'जी' के कारण आया हूँ और तुम्हारे तम्बू में प्रवेश की अनुमति चाहता हूँ|"

उस व्यक्ति ने दोबारा कोंग-ज़ि का सन्देश डाकू जही तक पहुचाया|
जोंग नि ने कहा :
"उसे यहाँ ले आओ|"

कोंग-ज़ि ने शीघ्रता से तम्बू में प्रवेश किया और बैठने के प्रस्ताव से भी मन कर दिया, उसने कुछ कदम आगे बढ़ाये और आदर सहित डाकू जही के सामने झुककर प्रणाम किया| डाकू जही बहुत ही क्रोधित हो गया, अपने दोनों पैरो को फैलाते हुए मेज पर से अपनी तलवार उठाई, उसकी तरफ देखा और शेर की तरह गरजते हुए कहा :
"निकट आओ| मैं तुम्हारे शब्दों को सुनता हूँ और यदि वे मेरे मतों के अनुरूप होगे तो मैं तुम्हे जीने दुगा| लेकिन यदि वे मेरे सिद्धांतो के विपरीत होगे उसके तो मैं तुम्हे मार दुगा|”

कोंग-ज़ि ने कहा :
"मैंने सुना है की चरित्र के तीन मुख्य गुण होते है जो इस संसार में किसी के भी पास हो सकते है| बड़ा होना, लम्बा होना और बिना किसी विकृति के रूपवान होना ताकि लोग तुम्हारी उपस्तिथि मे आनंद प्राप्त कर सके - यही चरित्र का सबसे बड़ा गुण होता है| यह जानना की कैसे स्वर्ग और धरती को एक सूत्र में बाँधा जाए और सभी जीवित वस्तुओ के साथ कैसे सरोकार हो - यह चरित्र का मध्य गुण है| बहादुर होना, निडर होना, साहसी और ऐसे दृढ होना की तुम सिपाहियों के एक समूह का ध्यान अपनी तरफ खिंच सको - यह चरित्र का सबसे निम्न गुण होता है| अगर एक व्यक्ति के पास इनमे से कोई एक गुण भी है तो यह पर्याप्त होता है उसके लिए दक्षिण की तरफ मुख करके राज करने (राजा बनना) और सबसे ऊँचे पद पर आसीन होने के लिए|
"अब आप प्रधान हो और हो जिसके पास ये तीनो है| तुम्हारा शरीर आठ फूट दो इंच की ऊँचाई जितना लम्बा है| तुम्हारी आँखे चमकदार और स्पष्ट है| तुम्हारे होंठ 'सिन्नाबेर' की तरफ बिलकुल लाल है| तुम्हारे दांत बिलकुल सीधे है और एक पंक्ति में है| तुम्हारी आवाज गर्जना करती है जैसे की मंदिर में बजने वाली घंटिया| और फिर भी तुमने डाकू जही के नाम से जाना जाना चुना है| मैं बहुत ही शर्मिंदगी अनुभव करूगा यदि मैंने तुमको इस स्तिथि से बाहर निकालने का प्रयत्न नहीं किया|
"कृपया मुझे एक मिनट के लिए सुनो जो मैं तुम्हे सुझाव दे रहा हूँ| मैं तुम्हारे प्रतिनिधि के तौर पर 'वू' और 'युए' राज्यों में जाने की अनुमति चाहुगा, उत्तर में 'की' और 'लू' राज्यों में जाना चाहुगा, पूर्व में 'सोंग' और 'वेई' राज्यों में और पश्चिम में 'जिन' और 'छु' राज्यों में जाना चाहुगा ताकि मैं उन्हें प्रोत्साहित कर सकू तुम्हारे लिए एक बड़ा शहर बनाने की जो की सैकड़ो एकड़ जमिन पर फैला हुआ हो और तुम शासन कर सको| उस शहर में हजारो घर होगे और तुम्हारा सम्मान एक राजकुमार या सम्राट की तरह किया जाएगा| तुम इस संसार में एक नयी शुरुआत कर सकते हो, अपने हथियारों को त्याग दो और अपने साथियों को थोडा विश्राम दो| अपने भाइयो को सहारा दो और उनके साथ अपने पूर्वजो के प्रति रस्मो और अनुष्ठानो को साँझा करो| यही है जिसमे एक साधू और पुण्य आत्मा लोग तत्पर होते है और जिसकी यह संसार इच्छा करता है|"

डाकू जही और क्रोधित हो गया और कहा :
"मेरे और निकट आओ| वे लोग जो स्वयं को अनुमति देते है लाभ के भरोसे से नियमित होने की (राजा बनने की) और दुसरे द्वारा कहे गए शब्दों से किये गए कार्यो के लिए धिक्कारे जाने की (जैसे एक राजा अपने सलाहकारों की सलाह से कार्य करता है) तब उन लोगो को तो केवल निरंतर मुर्खता और बेहुदेपन में स्थापित हुआ कहा जाता| अब यह तथ्य की मैं लम्बा व् चौड़ा हो गया हूँ और रूपवान हो गया हूँ लेकिन यह गुण तो मुझे मेरे माता पिता द्वारा मिला है| यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसके लिए मैं स्वयं को श्रेय दू फिर मैं क्यों इन चीजों पर ध्यान दू? इसके आलावा मैंने सुना है की जो अपने रूप के लिए प्रसंशा स्वीकार करते है वे इसे आखिर में बोझ समझने लगते है और उनके रूप का फलतः उनके द्वारा ही विनाश कर लिया जाता है| अब जब तुम चाहते हो मुझे देखना एक बड़े शहर में लोगो की भीड़ के साथ जो सभी मुझ पर नियम थोपना चाहते हो जैसे की इससे मुझे लाभ मिले और जहाँ लोगो को निरंतर जानवरों के एक झुण्ड की तरह देखा जाए| यह कितने दिनों तक चल सकता है? कोई मतलब नहीं की शहर कितना भी बड़ा हो इस संसार में कुछ न कुछ और बड़ा जरूर होगा| याओ और शुन ने इसे अधिकार में किया था लेकिन उनके वंशजो को एक सुई की नौक जितनी भूमि भी नही मिल पाई| तंग और वू एक सम्राट की तरह स्थापित

थे लेकिन उनकी अगली पीढियों को बेदखल कर दिया गया| यह तो उससे भी अच्छे परिणाम प्रदान नहीं करता है जो अस्थाई तौर पर लाभकारी होता है, क्या यह करता है?

"मैंने यह भी सुना है की पुराने समय में बहुत सारे पक्षी और जानवर होते थे लेकिन लोग बहुत कम और वे लोग आपस में इकट्ठा हो जाते थे झुंडो में उन जानवरों से बचने के लिए| दिन में अखरोट और कंद मूल इकट्ठा करते थे और रात में वे पेड़ो पर चढ़ कर सोते थे| यही कारण है की उन्हें झुण्ड बनाने वाले लोगो का सदस्य कहा जाता था| पुराने समय में वे लोग नहीं जानते थे की उनके शरीर को वस्त्रो द्वारा ढका भी जाता है| गर्मियो में वे सूखी लकडिया इकट्ठा करते थे और शर्दियो में वे उनको जलाकर अपने को गर्माहट प्रदान करते थे| यही कारण था की उन लोगो को जीवन को समझने वाला कहा जाता था| उस समय तक जब शेन-नोंग आये वे कही भी आराम करते थे जहाँ वे चाहते थे और जब मन करता वहां से उठ कर चले जाते थे| वे लोग जानते थे की उनकी माँ कौन है लेकिन नहीं जानते थे की उनका पिता कौन है| वे उसी स्थान पर रहे जहाँ हीरण भी अपना घर बनाते थे| उन्होंने भूमि को जोंता और खाया जो उस पर उगा| उन्होंने अपने वस्त्रो को खुद बनाया और सींया| उनके पास कोई कारण नहीं था एक दुसरे के ह्रदयों को क्षति पहुचाने का और उनका सामर्थ्य समृद्ध था बिना किसी अवरोध के| ऐसे ही हुंग-दी अपने सामर्थ्य को बनाये नहीं रख पाया और ज्होऊ-लू के के जंगलो में ची-यू के साथ युद्ध किया, परिणाम स्वरूप रक्त चारो तरफ बिखर गया| जब याओ और शुन आये तो उन्होंने सरकारी अधिकारियो का एक अनुक्रम सा स्थापित कर दिया| तंग ने यह दिखाया की एक शासक अपने से अधीनस्थ द्वारा भी पद से हटाया जा सकता है और वू तो अपने राजा ज्होऊ की हत्या तक चला गया| इसके बाद ही लोगो ने अपनी शक्ति का उपयोग अपने से कमजोरो और संख्या में छोटो को अधीन करना और दण्डित करना शुरू कर दिया| तंग और वू के समय से ही इस सभ हेवानियत की शुरुआत हुई|

"और अब तुम राजा वें और राजा वू के मार्गो का प्रोत्साहन कर रहे हो, स्वयं को इस संसार के सभी मतभेदों का वहन करने वाला समझते हो और आने वाली पीढियों को सिखाने के लिए तैयार हो रहे हो| अपने इन अच्छी तरह से सींये गए वस्त्रो, नीचे तक लटकी हुई बेल्ट, सुझाव वाले शब्दों का उपयोग करके और भ्रमित करने वाले कार्यो से, इस संसार के शासको में संदेह और शंका उत्पन्न कर रहे हो और सोचते हो की तुम अच्छे सम्मान और धन का पद प्राप्त होगा, वास्तव में तुम ही सबसे बड़े चोर हो| क्यों कोई इस संसार में ज्होंग को डाकू ज्होंग नाम से नहीं कहता है जबकि मुझे डाकू जही के नाम से कहता है?

"तुमने ज़ि-लू को अपनी मीठी बातो में बहकाया ताकि वह तुम्हारा अनुयायी बन सके, उसे अपनी कलगी वाली टोपी और लम्बी तलवार का त्याग करने पर बाध्य किया ताकि वह तुम्हारी शिक्षा को ग्रहण कर सके| हर कोई इस संसार में यह कहता फिरता है की कोंग में हिंसा को रोकने की क्षमता है और न्याय को स्थापित करने की| क्या हुआ उसे जब ज़ि-लू ने वेई के राजकुमार को मारने का प्रयत्न किया और असफल रहा| बजाय इसके उसके शरीर को वेई के पूर्वी द्वार पर फाँसी देकर लटका दिया गया, इस प्रकार तुम तो उसे केवल एक चीज़ भी नहीं सिखा पाए|

"तुम स्वयं को एक प्रतिभा संपन्न विद्वान् और साधू कहते हो? सही है, तुम्हे दो बार लू राज्य से बाहर निकाल दिया गया, वेई में तुम्हारे आने के प्रत्येक चिन्ह को मिटा दिया गया, 'की' में तुम्हे साधन हीन कर दिया गया और चेन और की राज्य के बीच में तुम्हे बंदी बना लिया गया| इस संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं है जो तुम्हे सहन कर सके| तुम्हारी शिक्षाए तो वे है जिन्होंने ज़ि-लू के लिए विपत्ति पैदा की और उसे फांसी मिलने के लिए छोड़ दिया| जब तुम अपनी सारी शक्ति भी लगा लेते हो तब भी तुम अपने शरीर की सहायता नहीं कर पाते हो और जब तुम अपनी कम शक्ति लागते हो तब तुम किसी और की सहायता नहीं कर पाते हो| तुम्हारी ताओ का क्या महत्व है?

"सभी पीढियों में से ऐसा कोई नहीं है जो हुंग दी से ऊँचे पद पर आसीन हुआ हो| तब भी हुंग दी अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य को बनाये नहीं रख पाया और ज्होऊ-लू के जंगलो में युद्ध के लिए चला किआ जिससे की सौ मिल तक रक्त चारो तरफ फैल गया| याओ दयापूर्ण नहीं था क्योंकि उसने अपने ही बेटे को फांसी दे दी, शुनं पुत्र कहने के योग्य नहीं था क्योंकि उसने अपनी ही माँ के छोटे भाई को मार दिया| यु के एक हिस्से को लकवा लग गया (उसने भयंकर बाढ़ से अपने राज्य की रक्षा करते हुए ऐसे अपने शरीर को क्षति पहुचाई), तंग ने अपने ही शासक की हत्या कर दी, राजा वू ने अपने शासक ज्होऊ पर हमला किया और राजा वें को यू-ली में कैद कर लिया गया| इन छह व्यक्तियों को पीढियों से सम्मानित किया जाता रहा है लेकिन अगर हम इनके कार्यो पर गहराई से विचार करे तब हम देख सकते है की कैसे वे सभ प्रतिष्ठा और ख्याति से मोहित थे और लाभ के प्रति आसक्त थे और बाद में ही बलपूर्वक औरो द्वारा अपने प्राकृतिक तत्व को लौटा दिए गए | यह केवल तब ही हुआ जब उन्होंने पीछे मुड़कर देखा और अपने पहले किये गए हुए कार्यो के लिए शर्मिंदगी अनुभव हुई|

"वे जिन्हें विद्वानों में सभसे शिखर पर पंहुचा हुआ माना जाता है वे है बो-यी और शु-की| बो-कुई गु-जहू के राजा के पास से चल गया और भूख के कारण शोऊ-यंग के पहाड़ो में मर गया जहाँ उनके मृत शरीर को दफनाया भी नहीं गया (मृत्यु के बाद शरीर का दफन न होना बहुत ही शर्मनाक माना जाता है)| बो-जिओ ने स्वयं को एक प्रतिद्वंदी की तरह पेश किया अपने चारो तरफ आये लोगो की आलोचना करते हुए और तब अपने आप को एक वृक्ष से बांध लिया जब तक की उसकी मृत्यु नही हो गयी

(अपने किये पर धिक्कारे जाने के लिए शर्मिंदगी अनुभव करने के लिए)| जब शेन-तू-दी द्वारा आलोचनाओ को सुना नहीं गया तो उसने एक बड़ा पत्थर बांधकर येल्लो नदी में छलांग लगा दी जहाँ वह मछलियों के लिए भोजन बना| जिए-ज़ि--तुई इतना वफादार था की उसने अपनी झांघ से मांस का टुकड़ा काट लिया ताकि सम्राट 'वें' उससे भोजन कर सके| जब सम्राट 'वें' ने फिर से उसकी तरफ देखा तो वह आवेश में आ गया स्वयं को एक पेड़ से बाँधा और आग लगा ली| वेई-शेंग ने एक औरत से बड़े पुल के निचे मुलाकात निर्धारित की| वह औरत नहीं आई लेकिन नदी की बड़ी लहरे जरूर आ गयी जिनसे वह बच नहीं पाया| वह पुल के एक खम्भे से चिपक गया और वही डूब गया| ये छह व्यक्ति बिलकुल भिन्न नही है एक काट दिए गए कुते से या फिर त्यागे हुए सूअर के छोटे बच्चे से या फिर एक खाली कटोरा लिए रोते हुए बिखारी से| उन्होंने प्रतिष्ठा के किसी भी विचार को पीछे छोड़ दिया था और मौत को हल्के में लिया लेकिन वे उस मूल के विचार को कभी नहीं छोड़ पाए जो उनके जीवन को पोषण प्रदान करता था|

"उनमे से जिन्हें सभी पीढियों में सबसे वफादार मंत्री समझा जाता था उनमे राजकुमार बी-गन और वू-ज़ि-क्सु से बढ़कर कोई नहीं है| ज़ि-क्सु को शेन नदी में फ़ेंक दिया गया (उसे आत्म हत्या करने पर मजबूर कर दिया गया जब उसने राजा वू को क्रोधित कर दिया यह युए राज्य से खतरों से सावधान करते हुए, तब बाद में राजा ने उसके मृत शरीर को नदी में फेंकवा दिया)| बी-गन के हृदय को काट कर बाहर निकाल दिया गया (जब उसने बार बार राजा ज्होऊ को धिक्कारा)| इन दोनों लोगो को माना जाता है सबसे वफादार मंत्री सदियों से पर फिर भी इस संसार में उनका अंत एक हास्य पात्र के रूप में हुआ|

"उन सभी लोगो को देखो जिनका जिक्र मैंने किया है, सबसे पहले से लेकर बी-गिं और ज़ि-क्सु तक, उनमे से कोई भी इस लायक नहीं है की उन पर एक बार भी ध्यान दिया जाए|

"तुम वह हो जो आये हो मुझे कुछ बताने के लिए| यदि तुम मुझे भूतो (गुजरे हुए व्यक्तियों के सन्दर्भ में) के प्रसंगों के बारे में बताना चाहते हो तो संभवतः मैं नहीं समझुगा जो तुम कहना चाहते हो| और यदि तुम मुझे लोगो के प्रसंगों के बारे में बताना चाहते हो तो मैं इसमें रूचि नहीं रखता हूँ| मैंने पहले भी इन कहानियो को सुना है और इन्हें ध्यान से परखा है|

"अब मैं तुम्हे लोगो के भावो के बारे में बताने जा रहा हूँ| उनकी आँखे रंगों को देखना चाहती है| उनके कान आवाज को सुनना चाहते है| उनका मुख स्वादों को चखना चाहता है| वे अपनी इछाओ की पूर्ति करना चाहते है| लोग सोचते है यह बहुत ही अच्छा है सौ वर्षो तक जीना और इस प्रकार वे अस्सी वर्षो तक जीने को बिलकुल साधारण ही मानते है तथा साठ वर्षो तक जीने को तो बहुत ही निम्न मानते है| उस समय को निकाल दे जब कोई गंभीर रूप से बीमार होता है और उसे भी निकल दे जब कोई किसी चीज़ के लिए शोक मनाता है तो वह समय जब कोई अपने मुंह को खोलकर जोर से हँसता है चार या पांच दिनों से ज्यादा नहीं होगा एक महीने में|

"स्वर्ग और धरती बिना किसी अंत के है लेकिन जो मरता है वह समय द्वारा सीमित है| उसे पकडे रहने का प्रयत्न करना जो समय द्वारा अपरिमित है और उसका बोध को बनाये रखना जो बिना किसी अंत के होना चाहता है - ऐसा करने का प्रयत्न भी नहीं करना| यह बिलकुल भिन्न नहीं है एक तेज भागते घोड़े को दिवार के छोटे से छेड़ में से देखने के| हर कोई जो अपने हृदय में जो है उसके साथ आनंदित नहीं होता है और न ही उनसे जो दुसरे के हृदयों से आता है वह न तो अपने सम्पूर्ण जीवन में अपना ठीक से पोषण कर पाता है और न ही जो भी है ताओ के साथ जुड़ पाता है|

"हर चीज़ जो तुमने मुझ से कही है वह कुछ है जिसे मैंने पहले से ही अस्वीकार कर रखा है| यहाँ से बिना कोई शब्द कहे शीघ्रता से चले जाओ और चले जाओ जहाँ से तुम आये हो| जो मार्ग तुमने चुना है वह बहुत ही विक्षिप्त है, धोखो से और भ्रम से भरा हुआ है, बहुत ही दिखावी और चालक है, कपट रूप से स्वयं का ही लाभ कमाने वाला है| इसमें सत्य का कोई अंश भी नहीं है| फिर क्यों इसकी चर्चा करने में भी समय बर्बाद करे?"

कोंग-ज़ि दो बार झुका और शीघ्रता से चला गया| वह दरवाजे से बाहर निकला और अपने रथ में बैठ गया| तीन बार लगाम उसके हाथ से छूटी| उसकी दृष्टि इतनी धुंधला गयी थी की उसे इसका भी ज्ञान नहीं था की वह कहाँ जा रहा हैं और उसका स्वभाव और व्यवहार सुखी हुई लकड़ी की तरह बिलकुल पीला पड गया था| वह अपने सिर को झुकाए हुए था और अपने आप को शांत भी नहीं कर पा रहा था| जब वह 'लू' के पूर्वी द्वार पर पहुच गया तो उसका मिलना लिऊ-क्सिया-जी के साथ हुआ| लिऊ-क्सिया-जी ने कहा :

"तो तुम अब पहुच गए हो द्वार पर| मैंने तुमको कई दिनों से नहीं देखा है| तुम्हारे रथ और घोड़ो को देखकर लग रहा है की तुम यात्रा कर रहे थे| क्या तुम जही से मिलने गए थे?"

कोंग-ज़ि ने आकाश की तरफ देखा और आह भरते हुए कहा :

"हाँ, निसंदेह मैं गया था|"

लिऊ-क्सिया-जी ने कहा :
"क्या जही ने तुम्हारे सभी सुझावों को गलत सिद्ध नहीं कर दिया जैसा की मैंने अनुमान लगाया था?"

कोंग-ज़ि ने कहा :
"निश्चित ही उसने ऐसा किया| तुम यह कह सकते हो मैं एक ऐसे व्यक्ति की तरह था जो वे घाव भरने गया था जो थे ही नहीं| मैं यह पहले ही सोच कर गया था की मैं जानता हूँ की शेर के दीमाग में क्या चलता है और मैं आसानी से उसकी मुछो को मरोड़ सकता हूँ, लेकिन मैं स्वयं ही बड़ी मुश्किल से उसके भूखे मुंह से बच के आया हूँ!"

ज़ि-गंग ने मन-गोउ-दे से पूछा :
"तुम अच्छी प्रकार से आचरण क्यों नहीं करते हो? यदि तुम अच्छी प्रकार से आचरण नहीं करते हो तो लोग तुम्हारा विश्वास नहीं करेगे| और यदि लोग तुम्हारा विश्वास नहीं करेगे तो तुम उन्नति नहीं कर पाओगे| अगर तुम्हारी पदोन्नति नहीं होगी तो तुम्हारा वेतन नहीं बढेगा| इसलिए तुम्हे अपने नाम कमाने के बारे में सोचना चाहिए ताकि तुम अपनी आय बढा सको और कुछ अच्छा कर सको| यदि तुम प्रतिष्ठा और अच्छे भाग्य के विचार का खंडन करते हो तो केवल उसका अनुकरण करो जो तुम्हारे ह्रदय में है तब जो उच्च शक्तिशाली लोग है वे इस तरह व्यवहार करगे जो तुम्हे वह करने से हटा देगा जिसे तुम्हे दुसरो द्वारा करने के लिए नहीं कहा गया है!"

मन-गोउ-दे ने कहा :
"जो धनवान होते है वे बिना शर्म के होते है|जो प्रसिद्ध होते है उन पर बहुतो द्वारा विश्वास किया जाता है| वे जिनके पास प्रतिष्ठा और अच्छा भाग्य है उनमे से कितने बिना शर्म के है और विश्वास पात्र है? इस प्रकार केवल अपनी ख्याति का मूल्यांकन करना और और अच्छे भाग्य को जानना ही केवल वो चीज़े है जिन पर वे विश्वास करते है| यदि तुम प्रतिष्ठा और अच्छे भाग्य के विचार को त्याग देते हो और केवल उसी का अनुशरण करते हो जो तुम्हारे ह्रदय में है तब जो शक्तिशाली है वे किसी भी प्रकार का कार्य कर सकते है और अब तुम बड़ी सहजता से स्वर्ग के साथ अंतर्निहित हो सकते हो|"

ज़ि-जहाँग ने कहा :
"पुराने समय में जिए और ज्होऊ को प्रतिष्ठित शासक के तौर पर जाना जाता था| वे इतने संपन्न थे की सम्पूर्ण संसार पर अधिकार रखते थे| लेकिन आज तुम यदि एक सेवको के समूह से भी यह कहते हो :'तुम्हारा व्यवहार तुलनीय है जिए और ज्होऊ से' तो वे इसे सुनकर झेंप जायेगे और शर्मिंदगी अनुभव करेगे क्योंकि जो निचे पद पर भी होते है वे भी उनके व्यवहार को अधम मानते है| ज्होंग-नि और मो-दी उतने ही निर्धन थे जितना की एक साधारण व्यक्ति होता है| लेकिन यदि तुम आज एक प्रधानमंत्री से भी यह कहो की:'तुम्हारा व्यवहार ज्होंग-नि और मो-दी से तुलनीय है' तो वे इसे बहुत सहज और मधुर अनुभव करेगे यह कहते हुए की उनका उनसे तुलना हो ही नहीं सकती क्योंकि वे तो बहुत महान विद्वान है| इसलिए यह आवश्यक नहीं की एक शक्तिशाली शासक को ऊँचा देखा जाए और एक व्यक्ति जो निर्धनता से ग्रस्त है उसे निम्न समझा जाए| जो उच्च और नीच का निर्णय करते है वे अच्छे और बुरे कार्यो का भी भेदभाव करते है|

मन-गोउ-दी ने कहा :
"छोटे चोरो को पकड़ लिया जाता है लेकिन बड़े लुटेरे सम्राट और राजा बन जाते है| यह बड़े सम्राटो और राजाओ के द्वार के अंदर ही होता है की जो धर्म को अच्छा मानते है वे अस्तित्व में होते है| सम्राट हुआन के समय में ज़ाओ-बाई ने अपने बड़े भाई को मार दिया ताकि वह अपने भाई की पत्नी के साथ अपना सम्बन्ध बना सके लेकिन फिर भी गुआन-ज्होंग उसका प्रधानमंत्री नहीं बन पाया| तियन-चेंग ने अपने शासक का क़त्ल कर दिया ताकि वह उसके राज्य को हड़प सके लेकिन कोंग-ज़ि ने फिर भी उसके उपहारों को नहीं स्वीकार किया| अपने वार्तालापो में तो ये लोग ऐसे काम करने वाले लोगो की निंदा करते है लेकिन अपने व्यवहार में ये उनको प्रणाम करते है| इस प्रकार जो भाव उनके शब्दों के होते है और जो उनका व्यवहार होता है वो उनके ह्रदय में एक दुसरे के साथ प्रतिद्वन्द करता रहता है और वास्तव में ही वे इनके बीच सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम नहीं होते है! इसलिए तो यह लिखा गया है:'कौन बुरा है और कौन अच्छा है? अगर कोई सफल हो जाता है तो वह नेता बन जाता है और यदि कोई असफल हो जाता है तो वह मिटटी में मिल जाता है|'"

जहाँग ने कहा:
"यदि तुम्हारा व्यवहार कुशल नहीं होता है तो तुम्हे यह आचारण करने की समझ नहीं होती है की तुम्हारे परिवार के किस व्यक्ति को सबसे ज्यादा सम्मान मिलना चाहिए, तुम्हे मूल्यवान और मूल्यहीन को समझने में सक्षम नहीं होते हो, और न ही

तुम में समझ होती है जवान से लेकर वृद्ध तक के अनुक्रम की| फिर पांचो संबंधो और छह पदों में तुम कैसे भेद कर सकते हो?"

मन-गोउ-दे ने कहा :

"याओ ने अपने बड़े बेटे को मार दिया और शुन ने अपने सौतेले भाई की हत्या कर दी| क्या उन्हें मूल्यों की समझ थी की किसे सम्मान मिलना चाहिए| तंग ने अपने शासक जिए की और वू ने अपने शासक ज्होऊ की हत्या की| क्या उनमे समझ थी की क्या मूल्यवान है और क्या मूल्यहीन? राजा जिए को अपने बड़े भाई की जगह सिंहासन दिया गया जबकि उसका बड़ा भाई इसके लिए प्रतीक्षा में था और सम्राट ज्होऊ ने राजा बनाने के लिए अपने बड़े भाई की हत्या कर दी| क्या उनमे जवान और वृहद् के बिच के अनुक्रम की समझ है? ये कांफुसियंस अपने कथनों से पाखंडी होते है और मोहिस्ट्स सभ के लिए अप्रतिबंधित प्रेम का उपदेश देते है| क्या वे पांचो संबंधो और छह पदों में भेद उत्पन्न कर रहे है?

"वास्तव में तुम चीजों को सुधारने की कौशिश कर रहे हो अपने लिए सम्मान पाकर जबकि मैं चीजों को सुधारने का प्रयत्न कर रहा हूँ लोगो के लिए लाभकारी बनकर| सम्मानित होना और लाभकारी होना एक ही सिद्धांत को नहीं मानते है और न ही वे दोनों ताओ के अंतर्दर्शन की अनुमति देते है| यही वह है जो वू-युए ने हमारी असहमति के बारे में कहा था:'लोग जो निम्न पदों पर होते है वे धन के लिए स्वयं को न्योछावर कर देते है और जो सज्जन लोग होते है वे स्वयं को सम्मान के लिए न्योछावर कर देते है| इसके पीछे कारण यह है की इनमे से हर कोई जीवन में अपनी परिस्तिथियों को बदलना चाहता है जो की पूर्ण रूप से उनकी वास्तविक प्रकृति को प्रभावित करता है| वे भिन्न होते है पर यह तथ्य उनमे एकसमान है की वे उसे त्याग कर जो की वे है, बनाना चाहते है जो वे नहीं है|'

"इसीलिए तो यह कहा गया है:'निम्न स्तिथि में होने के अपने विचारो को त्याग दो और जो स्वर्ग से मिला है उसमे संतुष्ट रहो| पुण्य व्यक्ति बनाने के अपने मतों को त्याग दो और केवल स्वर्ग के सिद्धांत का पालन करो|' चाहे तुम एक सीधे या फिर टेढ़े रास्ते पर चल रहे हो पर उनमे से प्रत्येक पर स्वर्ग को आधार मानकर चलो| किसी भी दिशा की तरफ मुंह करो और उनमे से प्रत्येक को निश्चित समय में विस्तार की और न्यून होने की अनुमति दो|

'चाहे गलत हो या सही हर पहलु ऐसे घूमता है जैसे की एक हथेली पर रही हुई गेंद| केवल उसे ही प्राप्त करने के चेष्ठा करो जो तुम्हारे ह्रदय से उत्पन्न है और जो ताओ की अभिव्यक्ति है|

'उसके अनुकूल मत होओ जिसे तुम अच्छा व्यवहार समझते हो और धर्म को मानने के कारण स्वयं को सिद्ध हुआ मत समझो नहीं तो अपने ही कार्यो का बोध खो दोगे| धन से लालायित मत होओ और सफलता के लिए स्वयं को न्योछावर मत करो क्योंकि तब तुम स्वर्ग का त्याग कर रहे होते हो|'

"बी-गन का ह्रदय काट दिया गया और ज़ि-क्सु की आंखे निकल ली गयी - इस दुर्भाग्य का सामना उनको अपनी वफ़ादारी के कारण करना पड़ा| जही-गोंग को अपने ही पिता के सामने साक्ष्य देने पड़े (जब उसने भेड़ चुरा ली थी) और वेई को डूब कर मृत्यु मिली (जब वह पुल के निचे एक लड़की का इंतज़ार कर रहा था) - ये दुर्भाग्य उनको उनके विश्वास के कारण मिला| बो-ज़ि सीधा खड़ा रहा जब तक की निर्जलित नहीं हो गया और शेन-ज़ि खुद का नियंत्रण भी नहीं रख पाया - इनको अपनी नेकी के कारण इतनी क्षति पहुची| कोंग-ज़ि अपनी माँ को देखने के लिए नहीं गया और कुंग-ज़ि अपने पिता से नहीं मिला (जब उसके पिता ने अपनी आलोचना करने के कारण उसे घर से निकल दिया था) - ये क्षति हुई क्योंकि उन्होंने अपने धर्म के बोध को खो दिया था|

“इन लोगो की कहानिया सदियों से चली आ रही है और अब भी उनके शब्दों को कहा जा रहा है| विद्वानों द्वारा उन्हें सत्य बोलने वाला माना जाता है और उनके आचरण को अनुकरणीय समझा जाता है| इस प्रकार जब उन्हें विपत्तियों द्वारा घेर लिया जाता है तब वे उनके बारे में चिंता करनी छोड़ देते है|

वू-ज़ि ने जही-हे से पूछा :

"सभी लोगो में, ऐसा कोई नहीं है जो प्रतिष्ठा के लिए नहीं भागता और वस्तुओ पर अपना अधिकार नही करना चाहता हूँ| लोग उनके आसपास रहना चाहते है जो धनवान होते है| जब वे उन लोगो के आसपास होते है जो धनवान होते है तो वे उनके सामने झुकते है| वे उनके सामने प्रणाम करते है और उन्हें ऊँचे स्थानों पर रखते है| और जिसे ऊँचा समझा जाता है वह निश्चित ही लम्बा जीवन जीता है, स्पष्ट अनुभव करते है और अपने जीवन में सभी अनुभवों का आनंद करते है| क्या यह इस कारण है की तुम अज्ञानी है? और यह इसलिए है की तुम वास्तव में उन चीजों की इच्छा रखते हो लेकिन उनको अपनी तरफ खींचने की हिम्मत नहीं है? या फिर इसलिए है की तुम केवल उन्हें अस्वीकार करने का आशय रखते हो इसलिए क्योंकि तुम उन्हें अपने मन से बाहर नहीं निकाल पा रहे हो?"

जही-हे ने कहा :
"ये इस प्रकार के लोग स्वयं को समझते है वह जो अपने आस पास रहने वाले लोगो से अपना समय साँझा करते है और उनके साथ समुदाय बनाकर रहते है, और स्वयं की सेवा के लिए अपने आस पास के संसार को लगा हुआ देखते है| वे सोचते है की वे अपनी पीढ़ी के विद्वानों से बहुत आगे निकल गए है| वे सोचते है की वे इतने विशिष्ट है की कोई भी उनकी सोच का मुकाबला नहीं कर सकता है| परिणाम स्वरूप वे भुत और भविष्य को अपने संकुचित दृष्टिकोण में समेटे हुए होते है जिससे की वे सही और गलत में भेद करते है और समय के झुकाव के साथ बदलते रहते है| वे वर्तमान को उनकी उपलब्धियों और क्षति की व्यख्या करने की अनुमति देते है, जिसका वे त्याग करते है और जिसे वे सम्मान जनक समझकर संजोय रहते है और वे अपने आप को व्यवहार में पूर्ण समझते है| ये वो विचार है जिन्हें वे लम्बा जीवन जीने के लिए आधार मानकर चलते हैं - अपने सिद्धांतो से स्पष्ट होना और जीवन में अपने अनुभवों का आनंद उठाना| लेकिन वे इससे वास्तव में ज्यादा दूर नहीं होते है? जब विप्पति आती है तो वे दुःख से भर जाते है, और जब वस्तुए स्पष्ट होती है तो वे सुरक्षित अनुभव करते है जैसे की वो अपने ही शरीर से मुक्त हो| जब वे भय अनुभव करते है तो वे अपनी ही अस्थिरता से स्वयं की रक्षा करने का प्रयत्न करते है और जब वे स्वयं को आनंदित कर रहे होते ही तो वे और सुख की तलाश करते है जैसे की अपने मन से मुक्त है| जब वे कोई कार्य कर रहे होते है तो उन्हें पता होता है की वे कार्य कर रहे है लेकिन यह नहीं पता होता की उनके कार्यो का क्या परिणाम हो सकता है| वे सोचते है उनके कार्य उतने ही सम्मानीय है जितने की एक राजा के होते है लेकिन चूँकि उनका धन निर्भर करते है उनके आस पास के संसार पर इसलिए सभवतः वे इससे आने वाली आपदा को नहीं टाल सकते है|"

वू-जू ने कहा :
"जब एक व्यक्ति धनवान होता है तो ऐसे कोई चीज़ नहीं है जिससे उसे लाभ न पहुचे| उसके पास सबसे खुबसूरत चीज़े होते है और वह सबसे शक्तिशाली होता है| एक सिद्ध पुरुष द्वारा लिया गया स्थान उसे ऐसे वस्तुओ को अधिकार में लेने से बचाता है| एक मूल्यवान व्यक्ति द्वारा लिया गया स्थान उसे ऐसे वस्तुओ पर कब्ज़ा करने में असमर्थ करता है| एक निडर व्यक्ति का ताकत और साहस उसे भयानक और शक्तिशाली प्रतीत होना बना सकता है| चतुर लोगो का ज्ञान और योजनायें उन्हें प्रतीत कर सकती है चमकदार और सूक्ष्म दृष्टा| विश्वसनीय लोगो का सामर्थ्य उन्हें प्रतीत होना बना सकता है मूल्यवान और दयालु ह्रदय वाला| एक राज्य की मांगो को पूरा करते हुए कोई भी हो सकता है कठोर और रोबदार एक कठोर पिता की तरह| इसके आलावा एक व्यक्ति को अपना समय ख़राब नहीं करना चाहिए यह पता लगाने में की क्या आनंददायक है और न ही अपने शरीर का निरिक्षण करते हुए यह पता लगाने के लिए की क्या चीज़ उन्हें सबसे ज्यादा शांति प्रदान करती है तथा सराहना करने के लिए अच्छे संगत की, सुन्दर महिलाओ की, बढ़िया स्वादों की और प्रभावशाली शक्ति की| यह इंतज़ार करना की कोई उन्हें सिखाने आएगा की क्या वांछित है और क्या घृणित और क्या स्वीकार्य है और क्या त्यागने योग्य यह इन लोगो का स्वभाव होता है| यद्यपि तुम मेरे अंदर दोष ढूँढोगे उसके लिए जो की इस संसार में हो रहा है फिर मेरे लिया क्या है यहाँ पर क्षमा याचना करने के लिए?"

जही-हे ने कहा :
"जब एक बुद्धिमान व्यक्ति व्यवहार करता है क्योंकि वह लोगो द्वारा ऐसे करने के लिए बाध्य होता है, वह उनका अतिक्रमण नहीं करन चाहता पर वह उनको ध्यान में रखकर ऐसा करता है| जब उनके पास पर्याप्त होता है तो उन्हें किसी के साथ स्पर्धा करने की ज़रुरत नही होती और न ही तो उन्हें कोई कार्य करने की ज़रूरत होती है और न ही किसी चीज़ को पाने के लिए दौड़ने की| जब वे अपने आप को अपर्याप्त पाते है तो वे इसके लिए आते है और इसे खोजने का प्रयत्न करते है इसके लिए स्पर्धा करते है लेकिन इसलिए की नहीं की वे लालच से ऐसा कर रहे है| जब उनके पास उनके लिए पर्याप्त होता है और अतिरिक्त होता है तब वे उन्हें और स्वीकार करने से मना कर देते है और इस संसार में इनका पीछा करना छोड़ देते है लेकिन इसलिए नहीं की वे स्वार्थरहित ऐसा कर रहे है| वास्तव में स्वार्थ और निस्वार्थ नहीं है कुछ जो की औरो द्वारा निर्मित होते है बल्कि है जिसे हम स्वयं अपने द्वारा बनाते है| किस के पास एक शासक जितनी शक्ति हो सकती है लेकिन इसका उपयोग अपने आप को दुसरो से श्रेष्ट अनुभव करने में नहीं करता है| किसी के पास पुरे संसार का धन हो सकता है लेकिन इसका उपयोग वह दुसरो का मुख बंद करने के लिए नहीं करता है| वह निहित संकट का आकलन करता है और दोनों पहलुओं पर ध्यान देता है किसी भी कार्य को करने से पहले जो उसकी प्रकृति को क्षति पंहुचा सकते है| इस प्रकार से वो मुड सकता है या किसी चीज़ को स्वीकार करने से मना कर सकता है लेकिन इसलिए नहीं की उसे ख्याति और सम्मान की इच्छा है| याओ और शुन ने इस संसार में सामंजस्य स्थापित किया जब वे शासक थे लेकिन इसलिए नहीं की वे सोचते थे की वे इस संसार के लोगो के प्रति दयालु है| वे अपनी अच्छाई की समझ को स्वयं को क्षति पहुचाने की अनुमति नहीं देते है| शान-जूँ और क्सु-यू प्रत्येक को सिंहासन का प्रस्ताव दिया गया लेकिन उन्होंने इसे नकार दिया| यह इसलिए नहीं वे केवल ढोंग कर रहे थे यह दिखाने का की वे कितने नम्र

और मूल्यहीन है लेकिन इसलिए की वे इस संसार के विषयों और प्रसंगों को उसे क्षति पहुचाने की स्वीकृति नहीं देते थे जो की वे है| इनमे से प्रत्येक व्यक्ति उस तरफ गया जो उनके लिए लाभप्रद था जबकि उसे अस्वीकार करते हुए जो उनकी प्रकृति को क्षति पंहुचा सकता था, और इस संसार ने उनकी सूक्ष्मता (सूक्ष्म दृष्टि) के लिए उनकी स्तुति गायी| वे इसके हकदार थे यद्यपि फिर भी उन्होंने ऐसा ख्याति या सम्मान के लिए नहीं किया|"

वू-जू ने कहा :
"वे जो इस प्रकार की ख्याति के लिए ही तत्पर रहते है वे सोचते है की उन्हें इसके लिए बहुत ही कठोरता अपने शरीर के लिए लानी पड़ेगी, स्वादिष्ट भोजन का त्याग करना पड़ेगा और पूर्ण पोषण प्राप्त करना पड़ेगा जीवित रहने के लिए| इसे करते हुए वे शारीरिक व्याधियो और आपदाओ का सामना करते है इस कौशिश में की उनकी मृत्यु न हो|"

जही-हे न कहा :
"वे जो संतुलन बनाये रखते है उन्हें अच्छा भाग्य प्राप्त होता है जबकि वे जो बहुतायता करते है वे स्वयं को ही क्षति पहुचाते है| यह सभी वस्तुओ के लिए सत्य है और इसके आलावा उनके लिए और भी ज्याद जो धन का संचय करना चाहते है| एक धनवान व्यक्ति के कान केवल सुन रहे होते है ढोल के और बांसुरी के और घंटियों के संगीत को तथा उनका मुख हमेशा लार लटकाए रखता है स्वादिष्ट मांस की और मदिरा की| वे पूरी तरह से इनमे लिप्त होते है की वे भूल जाते है जो उनसे किये जाने का अनुमान लगाया जाता है| इसे कहते है अत्यधिक कोलाहल में होना| वह अपनी आसक्तियो में इतना लिप्त होता है की अंत में वह उनके ही भार को सहन नहीं कर पाता है| इसे कहते है कठिनाइयों से पीड़ित होना| वह धन के लिए लालायित रहता है आरामदायक जीवन प्राप्त करने के लिए| वह निरंकुशता से शक्ति प्राप्त करना चाहता है अपने स्वामित्व के लिए| वह तब अपने घर में आराम से बैठता इस सभ को भोगता हुआ जबकि उसका मोटा शरीर और ज्यादा पाने की लालसा करता है| इसे ही कहते है बुरी तरह से व्याधित होना| उसकी धन के लिए लालसा और अधिकार संग्रह करना उसे इस तरह से अँधा बना देता है की वह किसी को भी नहीं सुनता है और इससे बचना भी नहीं जानता है| इससे ज्यादा वह लालसा से इतना ग्रस्त होता है की वह इसे छोड़ ही नहीं पाता है| इसे ही कहा जाता है वास्तव में शर्मनाक होना|
वह और ज्यादा धन का संचय करता है उससे ज्यादा जिसका वह उपयोग कर सके, फिर भी वह और ज्यादा स्वीकार करता रहता है उनमे से बिना किसी को त्यागे| उसका मन चिंतित होता है इसके लिए की वह क्या करने जा रहा है और इसे करते हुए असफल न हो| इसे कहते है तनाव ग्रस्त होना| अपने घर में उसे भय होता है की कही लुटेरे आकर उसकी वस्तुओ को लुट न ले और जब वह घर से बाहर होता है तो उसे भय रहता है की कहीं चोर उसके घर में घुसकर उसके धन को न चुरा ले| वह मोटी दीवारों के अन्दर रहकर स्वयं की रक्षा करना चाहता है और बाहर निकलने का साहस नहीं करता है| इसे कहता है भयभीत होना| ये छह परिस्तिथिया सबसे खतरनाक है इस संसार में फिर भी वह इसे भूल जाता है और उसके पास उनसे होने वाले आतंक को देखने का बोद्ध नहीं होता है| जब आखिरकार उसके सामने एक बड़ी विपत्ति आती है वह अपने अंदर कुछ खोजता है जो इससे सरोकार कर सके और इसे करते हुए वह अपने सारे धन को समाप्त कर देता है लेकिन वह इस बोझ से एक दिन के लिए भी मुक्त नहीं हो पाता है| तब वह ख्याति के लिए देखता है पर इसे खोज नहीं पाता है| वह अपने अधिकार वाली वस्तुओ को देखता है पर उन्हें पकड़ नहीं पाता है| अपनी वासनाओ और आकांक्षाओ में पूरी तरह से लिप्त हुआ अपने शारीरिक स्वास्थ्य को क्षति पंहुचा रहा होता है केवल उन चीजों के लिए जिनकी वह इच्छा रखता है - क्या यह भ्रम और मोह का प्रतीक नहीं है|

30.A Discussion of Swords

King Wen of Zhao was fond of swords. Over three thousand swordsmen would come and gather at his gate. They'd engage in sword fights with each other day and night in his presence, and even though the dead and wounded in one year would number in the hundreds, he liked watching them so much that he didn't care. After three years the state started declining in power and the dukes and princes of other states started plotting to invade Zhao.
The crown prince, Kui, became worried about this so he summoned his best advisers and said to them:
"Whoever can talk the king out of continuing with these sword fights will be given a gift of a thousand pieces of gold."
His advisers said:
"Zhuangzi would be able to do that."
The crown prince sent a messenger to offer the thousand pieces of gold to Zhuangzi. Zhuangzi refused to accept the money, but went back with the messenger to see the crown prince and said to him:
"What is it you want me to do that you'd be willing to give me a thousand pieces of gold to accomplish?"
The crown prince said:
"I've heard that you're an enlightened sage so I sincerely offered the thousand pieces of gold to help with the expenses of your followers. Since you won't accept this respectful gift from me, how could I dare to ask you to do anything?"
Zhuangzi said:
"I'd heard that what you wanted to pay me for was to get rid of the king's desire for watching swordplay. If I went and talked to the king but he didn't like what I had to say and you were displeased with the results, then I'd probably be tortured and put to death. In that event what need would I have for the gold? If I went to talk to the king and he was pleased with what I had to say, thus pleasing you as well, there wouldn't be anything in the whole state of Zhao I might want that you wouldn't give to me."
The crown prince said:
"Good point. The only problem with my idea is that the only people the king will grant an audience to is swordsmen."
Zhuangzi said:
"Yes, that's true, but I'm actually pretty good with a sword."
The crown prince said:
"That's good. However, the only swordsmen the king will see all have unkempt hair that sticks out at their temples beneath their floppy hats, long tassels hanging from their chin straps and jackets that are cut short in front. They stare angrily and use vulgar language, which is what the king likes. Now if you go see the king with the attire and behavior of a scholar, I'm sure he'll reject you."
Zhuangzi said:
"I'll go ask someone to find me a swordsman's outfit."
After three days he came back to see the crown prince, dressed as a proper swordsman. The crown prince took him to see the king. The king was there waiting for them with his sword unsheathed. Zhuangzi slowly walked through the door and entered the hall. When he looked at the king he didn't bow or salute respectfully.
The king said:
"The crown prince told me earlier that you wanted to come and teach me something. What is it?"
"I've heard that you like swords, so I've brought a sword to show you."
The king said:
"This sword of yours, how can it stand up against many others?"
"My sword can take down a man in ten steps and can keep doing so for three hundred miles without fail."
The king smiled broadly and said:
"Then there'd be no one in the world who could be a match for you!"
Zhuangzi said:

"One who uses this kind of sword shows his opponent an opening where he can thrust, allows him to feel confident with approaching that opening, and it isn't until after he's made his lunge that he realizes he's already been stabbed. I'd like to give you an exhibition of how that's done."
The king said:
"Go and rest in the rooms I've provided for you and wait there for my orders. I'll set up the presentation then request your presence."
The king then set up matches between his swordsmen for seven days, and during that time over sixty of them were killed or wounded. He selected five or six of the remaining men and ordered them to stand with their swords at the ready in the lower hall.
He then summoned Zhuangzi and said:
"Today I'll allow you to exhibit your skills in competitions with these swordsmen."
Zhuangzi said:
"I've been looking forward to this."
The king said:
"What type of sword suits you best - a long or short one?"
"I can use either of them. However, I have three swords that you might find useful. Would you like to hear about them before we start the exhibition?"
The king said:
"Yes, I'd like to hear about these three swords."
"There's the emperor's sword, the nobleman's sword and the commoner's sword."
The king said:
"What's the emperor's sword?"
"The emperor's sword uses the Yanxi Lake and Shicheng Mountain as its blade, Mount Dai in Qi as its cutting edge, the states of Jin and Wei as its spine, the capital of Zhou in Song as its handguard and the states of Han and Wei as its hilt.
(Note: The places mentioned above were within the area known today as China. Yanxi Lake is in Hebei Province in the northwest and Shicheng Mountain is on the border of Fijian and Jiangxi Provinces in the southwest - forming a long blade from north to south. Mount Dai is in the center of Shandong Province directly between Yanxi Lake and Shicheng Mountain - a high ridge forming the cutting edge. The states of Jin and Wei , directly to the south of Zhao were two of the other most powerful states at the time - the blunt edge of the sword that could be used for strong back-up. Zhou was the capital of the state of Song, further south - the area around the city could be used as a handguard for protection. The states of Han and Wei to the southwest blocked the invasions into Zhao from the state of Qin, which was further west - forming a handle which could wield power.)
"It's encircled by the four barbarian tribes (to the north, south, east and west). It's contained by the four seasons. It's crowned by the Bei Hai Sea (a gulf in northern China between Liaodong and Shandong peninsulas) and is belted in the middle by Mount Heng (a tall mountain range in Henan Province, central China). It's governed by the Five Elements (metal, wood, water, fire, earth), guided by punishments and kindness, operates through Yin and Yang, is maintained by spring and summer and is motivated to action by autumn and winter. Hold it out straight and there's nothing in front of it. Raise it upwards and there's nothing above it. Point downwards and there's nothing beneath it. Slash it around and there's nothing on any side of it. At its heights it cuts through the floating clouds, and at its depths it severs the layers of the earth's core. Use this sword once and the feudal lords will rectify their misdeeds and the whole world will become obedient. That's the emperor's sword."
King Wen became dazed and lost himself for a moment, then he said:
"What's the nobleman's sword?"
"The nobleman's sword uses clever and brave knights for its blade, honest and upright knights for its cutting edge, worthy and capable knights for its spine, faithful and eminent knights for its handguard, and valiant and heroic knights for its hilt. This sword has similar qualities to the other one. Hold it out straight there's nothing in front of it. Raise it upwards and there's nothing above it. Point it downwards and there's nothing beneath it. Slash it around and there's nothing on any side of it. At its heights it follows the natural curvature of the three bright lights (sun, moon

and north star), at its depths it follows the natural squareness of the four seasons and in between it brings peace to all quarters of the world by harmonizing the wills of the people. Use this sword once and it'll resound like a thunderclap throughout the four corners of the country and there'll be no one who wouldn't become obedient and obey the mandates of their ruler. That's the nobleman's sword."
The king said:
"What's the commoner's sword?"
"The commoner's sword is used by those who have unkempt hair that sticks out at their temples beneath their floppy hats, long tassels hanging from their chin straps and jackets that are cut short in front. They stare angrily and use vulgar language. It lashes out at those in front of it. Raise it upwards and it chops off heads at the neck. Point it downwards and it cuts out livers and lungs. Those who use the commoner's sword aren't any different than fighting cocks. In one day their lives can be snuffed out and they're of no use to the affairs of state. Now you have the position of an emperor yet you delight in the commoner's sword. I'm telling you privately that's way beneath you."
The king then led him by the hand into his upper hall. While the servant was serving dinner, the king walked in circles around the room three times.
Zhuangzi said:
"Sit down and rest yourself. The sword exhibition is already over."
Thereafter, King Wen didn't leave his palace for three months, and the swordsmen all committed suicide in their rooms.

३०|वह तलवारों की चर्चा

जहो का राजा 'वें' तलवारों का बड़ा शौकीन था| तीन हज़ार से ज्यादा तलवारबाज आकर उसके द्वार पर इकट्ठा हुए थे| वे उसकी उपस्तिथि में दिन रात एक दुसरे के साथ तलवार युद्ध में लगे हुए थे और यद्यपि मृत हुए और घायल हुओ की संख्या सैकड़ो में थी पर फिर भी वह इसे देखना इतना पसंद कर रहा था जैसे की उसे इस सभ की कोई परवाह नहीं था| तीन साल बाद राज्य का पतन होना शुरू हो गया और दुसरे राज्यों के सम्राट और राजकुमार उसमे घुसपैठ की योजना बनाने लगे|
युवराज कुई इसके बारे में चिंतित हो गया और उसने अपने सबसे अच्छे सलाहकारों को बुलाया और कहा :
"जो भी राजा को इन तलवार युद्धों को जारी रखने से बाहर निकलेगा उसको इनाम में हज़ार सोने के टुकड़े दिए जायेगे|"

उसके सलाहकारों ने कहा :
"ज्हुंग्ज़ी ऐसा करने में योग्य है|"

युवराज ने एक सन्देश वाहक को हज़ार सोने के टुकडो की पेशकश के साथ ज्हुंग्ज़ी के पास भेजा| ज्हुंग्ज़ी ने इन्हें स्वीकार करने से मना कर दिया लेकिन युवराज से मिलने के लिए उस सन्देश वाहक के साथ आया और उससे कहा:
"तुम मुझ से क्या चाहते हो की तुम मुझे एक हज़ार सोने के टुकड़े देने के लिए राजी हो गए इसे पूरा करवाने के लिए?"

युवराज ने कहा :
"मैंने सुना है की तुम एक प्रबुद्ध साधू हो इसलिए मैंने निष्ठा पूर्वक आपको एक हज़ार सोने के टुकडो का प्रस्ताव किया ताकि आप अपने अनुयायीओ के खर्चे का वहन कर सको| चूँकि आपने उसे स्वीकार नहीं किया फिर मैं आप से क्या करवाने का साहस रख सकता हूँ?"

ज्हुन्ग्ज्ही ने कहा :
"मैंने सुना है तुम मुझे मूल्य देना चाहते थे क्योंकि तुम मुझसे राजा की तलवार के खेल से लत को छुटवान चाहते हो| यदि मैं गया और राजा से बात की और जो मैंने उसे कहा उसे पसंद नहीं आया और तुम परिणामो से खुश नहीं हुए तो निश्चित ही मुझे फांसी पर लटका दिया जाएगा| इस प्रसंग में मेरे लिए उस सोने की क्या ज़रुरत रह जाती हैं? यदि मैं राजा से बात करने गया और वह खुश हो गया जो मैंने कहा और इससे तुम भी खुश हो गए तब पुरे जहो राज्य मैं ऐसे कोई चीज़ नहीं होगी जिसे मैं मांगू और आप देने से इंकार कर दे|"

युवराज ने कहा :
"बिलकुल सही कहा है आपने| लेकिन एक दिक्कत यह है की राजा जिनसे मिलता है और मिलना चाहता है वे केवल तलवार बाज होते है|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"हाँ, यह यथार्थ है लेकिन मैं वास्तव में तलवार के साथ बहुत ही अच्छा हूँ|"

युवराज ने कहा :
"यह तो अच्छा है| हालांकि, वह तलवार बाज जिन्हें राजा देखेन पसंद करता है उसके बाल बिखरे हुए होते है उसकी बड़ी टोपी के निचे, बड़ी दाढ़ी का गुच्छा उसकी थोड़ी से लटकता होगा और उसकी जैकेट सामने से छोटी कटी होगी| वे क्रोध पूर्वक एक दुसरे को देखते है और भद्दी भाषा का उपयोग करते है, यह वह है जिसे राजा पसंद करता है| अब यदि तुम राजा के सामने एक विद्वान् के परिधान और आचरण के साथ जाते हो तो निश्चित ही वह तुम्हे अस्वीकार कर देगा|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"मैं जाकर किसी को खोजुगा अपने लिए तलवार बाज की पोशाक के लिए|"

तीन दिन बाद वह वापस आया युवराज से मिलने के लिए पूरी तरह से एक तलवार बाज की वेशभूषा धारण करके| युवराज उसे राजा से मिलाने के लिए ले गया| राजा उसके लिए प्रतीक्षा कर रहा था अपनी तलवार को म्यान से बाहर निकले| ज्हुंग्ज़ी ने धीरे

धीरे कदम रखते हुए द्वार से कक्ष में प्रवेश किया| जब उसने राजा को देखा तो उसने प्रणाम नहीं किया और न ही उसके सम्मान में झुका|

राजा ने कहा :
"युवराज ने मुझे पहले बताया था की तुम आना चाहते हो और मुझे कुछ सिखाना चाहते हो| वह क्या है?"

"मैंने सुना है की आपको तलवारे बहुत पसंद है इसलिए मैं आपको दिखने के लिए एक तलवार लाया हूँ|"

राजा ने कहा :
"यह तुम्हारी तलवार, कैसे दुसरो के सामने टिक सकती है?"

"मेरी तलवार दस कदमो में एक आदमी को हरा सकती है और यह ऐसा तीन सौ मिल तक कर सकती है बिना असफल हुए|"

राजा बड़े प्रताप से हंसा और कहा :
"तब तो ऐसा कोई नहीं है इस संसार में जो इसका मुकाबला कर सके!"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"यह तलवार पहले अपने प्रतिद्वंदी को एक प्रारंभन प्रदान करती है ताकि वह हमला कर सके, और इस आक्रमण को करते हुए उसे आश्वस्त अनुभव करवाती है लेकिन यह केवल तब तक होता है जब तक उस प्रतिद्वंदी को अपना पैर आगे बढ़ाते हुए यह अनुभव न हो जाये की उसे मार दिया गया है| मैं आपके सामने इसका प्रदर्शन करना चाहुगा की यह कैसे होता है|"

राजा ने कहा :
"जाओ और कक्ष में जाकर विश्राम को और मेरे आदेश की प्रतीक्षा करो| मैं इसके लिए प्रबंध करूगा और फिर तुम्हे बुलाया जाएगा|"

राजा ने सात दिनों तक तलवार युद्ध करवाए और इस दौरान उनमे से करीब साठ तलवार बाज मारे गए या फिर घायल हो गए| उसने उन बचे हुओ में से सबसे बेहतर पांच या छह को चुना और उन्हें मैदान में तैयार रहने के लिए कहा गया|
तब उसने ज्हुंग्ज़ी को बुलाया और कहा :
"आज मैं तुम्हे तुम्हारा कौशल दिखाने की अनुमति देता हूँ इन योद्धाओं के सामने|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"मैं इसके लिए तैयार हूँ|"

राजा ने कहा :
"किस प्रकार की तलवार तुम्हे उपयुक्त लगती है - एक छोटे वाली या फिर एक बड़ी?"

"मैं उनमे से किसी का भी उपयोग करने में सक्षम हूँ| हालाँकि मेरे पास तीन तलवारे हैं जिन्हें आप उपयोगी पा सकते है| क्या आप उनके बारे में सुनना चाहोगे इससे पहले की हम शुरुआत करे?"

"हाँ, मैं उनके बारे में सुनना पसंद करूगा|"

"उनमे से एक शासक की तलवार हैं, एक पुण्य व्यक्ति की और एक साधारण मनुष्य की|"

राजा ने कहा :
"एक शासक की तलवार क्या है?"

"एक शासक की तलवार उपयोग करती है यांक्सी झील का और शिचेंग पर्वत का अपने ब्लेड (पैनी धातु) की तरह, 'की' राज्य के दी पर्वत को अपनी धार की तरह और जिन और वेई राज्य को अपनी रीढ़ की तरह, ज्होऊ की राजधानी और सोंग को अपने हाथ

के कवच की तरह और हाँ और वेई राज्य को अपने मुठ की तरह| (ये सभी जगह चीन के क्षेत्र में ऐसे ही इसी कर्म और इसी तरह तलवार की आक्रति के समान स्तिथ है)

इसे घेरा हुआ है जंगली कबीलों द्वारा (पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में)| इसमें चारो ऋतुए अंतर्विष्ट है| यह अभिषिक्त है 'बी-है' समुद्र से और कसी गयी है मध्य में हेंग पर्वत श्रंखला से| इसका संचालन किया जाता हैं पांचो तत्वों से (धातु, लकड़ी, जल, अग्नि और पृथ्वी) मार्गदर्शन किया जाता है दंड और दयालुता से, संचालन होता है यिन और यंग से| वसंत और ग्रीष्म द्वारा यह अनुरक्षित है और पतझड़ और शरद द्वारा यह प्रेरित है| इस सीधा पकड़ो और इसके सामने कुछ नहीं टिक सकेगा| इसे ऊपर उठाओ तो इसके निचे कुछ नहीं बचेगा| इसका मुंह निचे करो तो गहराईयों तक कुछ नहीं बचेगा| इसे आस पास घुमाओ तो इसके दोनों तरफ कुछ नहीं रहेगा| अपनी ऊँचाईयो पर यह बहते हुए बादलो को भी चिर देती है और अपनी गहराईयों में यह प्रथ्वी के केंद्र को भी छेद सकती है| इस तलवार का उपयोग एक बार करो तो सभी सामंत अपनी गलतियों के लिए माफ़ी मांगेगे और यह सम्पूर्ण संसार तुम्हारी आज्ञा का पालन करेगा| यही है एक शासक की तलवार|"

राजा वें अचंभित रह गया और एक क्षण के लिए तो कही खो गया, फिर तब उसने कहा :
"एक पुण्य व्यक्ति की तलवार क्यां है?"

"पुण्य व्यक्ति की तलवार चतुर और बहादुर सिपाहियों को अपने ब्लेड की तरह इस्तेमाल करती है, इमानदार और धार्मिक सिपाहियों को अपनी धुरी की तरह, महत्वकारी और योग्य सिपाहियों को अपनी रीढ़ की तरह, निष्ठावान और विख्यात योद्धाओं को अपनी हाथ के कवच की तरह और वीर और सहासी योद्धाओं को अपने मुठ की तरह| इस तलवार में भी दूसरी की तरह समान गुण है| इस सीधा पकड़ो और इसके सामने कुछ नहीं टिक सकेगा| इसे ऊपर उठाओ तो इसके निचे कुछ नहीं बचेगा| इसका मुंह निचे की और करो तो गहराईयों तक कुछ नहीं बचेगा| इसे आसपास घुमाओ तो इसके दोनों तरफ कुछ नहीं रहेगा| अपनी ऊँचाईयो पर उठते हुए यह जाती है तीन चमकदार प्रकाश तक (सूर्य, चन्द्र और ध्रुव तारा), अपनी गहराईयों में यह चारो ऋतुओ के प्रकृतिक आयात का अनुगमन करती है और उनके सभी हिस्सों में शांति की स्थापना करती है, लोगो की इच्छाओ से सामंजस्य स्थापित करके| इस तलवार का उपयोग एक बार करो और यह राज्य के सभी कोनो में तूफान की तरह गर्जना करेगी और ऐसा कोई नहीं होगा जो अपने राजा की आज्ञा की अवहेलना कर सके या फिर नियमो को न माने| यही है एक पुण्य व्यक्ति की तलवार|"

राजा ने कहा :
"एक साधारण मनुष्य की तलवार क्या है?"

"साधारण मनुष्य की तलवार का उपयोग उन द्वारा किया जात है जिनके बाल बिखरे हुए होते है उनकी बड़ी टोपी के निचे, बड़ी दाढ़ी का गुच्छा उनकी थोड़ी से लटकता होता है और उसकी जैकेट सामने से छोटी कटी होती है| वे क्रोध पूर्वक एक दुसरे को देखते है| और भद्दी भाषा का उपयोग करते है| यह टुकड़े कर देती है जो इसके सामने होता है| इसे ऊपर उठाओ और यह सर को धड से अलग कर देगी| इसे निचे की तरफ करो और यह पेट और आंतो को काट देगी| जो इसका उपयोग करते है वे लड़ते झगड़ते मुर्गो से भिन्न नहीं होते है| एक दिन में उनका जीवन समाप्त हो जाता है और राज्य के प्रसंगों का कोई महत्व नहीं रह जाता है| अब जबकि आप एक शासक के गद्दी पर बैठे है और फिर भी एक साधारण मनुष्य की तलवार में आनंद पाते है| मैं आपको गुप्त रूप से यह बता रहा हूँ की यह रास्ता जरूर ही एक दिन आपको अयोग्य बना देगा|"

राजा उसे अपने साथ उपरी कक्ष में ले गया| जब सेवक भोजन तैयार कर रहे थे, राजा ने गोल घूमकर में कमरे के तीन चक्कर काटे|

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"बैठ जाइये और स्वयं को विश्राम दीजिये| तलवार प्रदर्शनी समाप्त हो चुकी हैं|"

इसके पश्चात राजा वें तीन महीनो तक अपने महल से बाहर नहीं निकला और सभी तलवारबाजो ने अपने कक्षों में ही आत्महत्या कर ली|

31.The Old Fisherman

Kong Zi (Confucius) was traveling through a forest on Zi Wei Mountain. He stopped to rest on a platform beneath an apricot tree. His disciples were nearby reading their books while Kong Zi strummed his zither and sang a song. He hadn't gotten halfway through the song before an old fisherman appeared in the distance. He stepped out of his boat and approached them. The hair on his temples and eyebrows was pure white, his hair hung down over his shoulders and the sleeves of his robes flapped loosely at his sides. He walked up the embankment and stopped when he reached the top. He placed his left hand on his knee and cradled his chin in his right hand while he listened to the music. When the song ended he beckoned to Zi Gong and Zi Lu (two of Confucius' disciples), and both men went over to him.
The visitor pointed to Kong Zi and asked:
"What does that man do?"
Zi Lu replied:
"He's a nobleman from the state of Lu."
When the visitor asked which family (nationality) he belonged to, Zi Lu said:
"He's from the Kong family."
The visitor asked:
"What does Mr. Kong do?"
Before Zi Lu could respond Zi Gong said:
"Mr. Kong is a naturally faithful and loyal person who devotes himself to benevolence and righteousness. He takes great effort to sustain ancient rituals and music and to promote human ethics. When dealing with those in high positions he's loyal to the rulers of the times, and when dealing with those in lower positions he adapts to the normal standards of the people. That's because he wants to bring benefits to the whole world. That's what Mr. Kong does."
The man continued with his questions:
"Is he a nobleman in charge of a specific area of land?"
Zi Gong said:
"No."
"Is he an adviser to a king or marquis?"
Zi Gong said:
"No."
The visitor then laughed and turned to leave, saying as he was going:
"If you say he's benevolent, then he must be benevolent. However, I'm afraid he won't be able to escape with his body in tact. By causing so much trouble to his heart and fatiguing his physical form he's putting his genuineness in danger. Unfortunately, he's moved very far away from Dao."
Zi Gong went back and told Kong Zi about the conversation. Kong Zi pushed aside his musical instruments and got up, saying:
"That man was a sage."
He got down from his platform and went to look for the man. When he arrived at the riverbank the man was about to push his boat off from the shore with an oar. He looked up and saw Kong Zi, so he returned to the bank and stood next to him. Kong Zi took a few steps back, respectfully bowed twice, then moved closer to him.
The visitor said:
"What do you want from me?"
Kong Zi said:
"A little while ago you said just a few words then left. I'm such an unworthy numbskull that I haven't been able to figure out what you meant. If I could just eavesdrop on your words, standing downwind so some of the spittle from your mouth might reach me, then I might finally learn something from you."
The visitor said:
"Oh my! Your passion for learning is really extreme."

Kong Zi bowed deeply twice and rose slowly saying:
"From the time I was very young I pursued learning. Now here I am sixty-nine years old, and I still haven't heard the most enlightening teachings. I wouldn't dare to not keep my heart open at this point."
The visitor said:
"Those of similar types follow one another. Those who make similar sounds respond to one another. That's the natural course of the principles of the heavens. If I tried to explain my own position to you then I'd mislead you from your own path. What you've taken as your path is to be involved in the affairs of humans - emperors, noblemen, administrators and common people. People in these four groups who rectify themselves are thus good at governing. If people in those four groups abandoned their positions then nothing but chaos would prevail. If the officials stay within the bounds of their own duties and the common people see to their own affairs, then neither would cause difficulty to the other.
"Therefore, if fields aren't tended, roofs are leaking, there isn't enough clothing or food, taxes can't be paid, wives and daughters-in-law don't get along, children and elders are out of accord with each other - these are the concerns of common people. Inability to fulfill their responsibilities, official business that's been neglected, deals that drag on without clear settlements, underlings that are incompetent and lazy, not having achieved beautiful results, not being able to hold onto rank and position - these are the concerns of administrators. The lack of loyal ministers in the royal court, chaos and disorder within the families of the state, an unskilled work force, contributions of tribute items (for the king) that are below par, being given a lower precedence at the spring and autumn meetings (with the ruler), being considered disobedient to the emperor - these are the concerns of the feudal dukes. Yin and Yang being discordant, the coolness of winter and the warmth of summer not arriving at the proper time causing damage to all things, feudal dukes revolting in chaos and attacking each other at random without authorization thus injuring innocent people, unrestrained and improper performance of rituals and music, deficient coffers in the treasury, deterioration of people's morals, the families in the state acting licentious and promiscuous - these are the concerns of the emperor's chancellors.
"Now you've already taken a superior position for yourself without having the power of a prince, marquis or chancellor. You've also taken a lower position for yourself without having the office of a minister who's in charge of those affairs. Without authorization you try to adorn rituals and music, choose proper morals for the people and change the way they relate to each other. You're not creating peace in any of the areas where you put in your own two cents!
"Furthermore, people have eight defects and their affairs are beset by four afflictions that they shouldn't ignore.
"Meddling: Sticking your nose into other people's business that doesn't concern you.
"Intruding: Pushing yourself into situations where you haven't been invited.
"Currying favor: Praising someone because you want to get something from them.
"Flattery: Paying no attention to what's right or wrong about someone you're trying to get on the better side of.
"Slander: Saying bad things about another person.
"Troublemaking: Trying to cause rifts between friends or family members.
"Deceitfulness: Giving false kudos to someone while putting them down behind their backs.
"Taking advantage: Not differentiating between acting kind or unkind, but thinking it's fine to be two-faced in order to prey on other people's desires.
"One who engages in these eight defects causes disorder to others and harm to themselves. A nobleman wouldn't have someone like that as a friend nor would an enlightened ruler appoint them as a minister.
"The four afflictions are:
"Ambitious greed: To be constantly altering, amending or transforming what have already been accepted practices in order to try to further one's notoriety and fame.
"Plagiarism: To adopt the concepts of others and claim them as your own in order to appear more intelligent and world-wise.
"Conceit: To be told of your own shortcomings but rather than addressing them, not giving them a second thought.
"Bigotry: Approving of someone who is the same as you, but rejecting those who aren't the same by claiming their good points are actually evils.

"Those are the four afflictions. It's only by being able to get rid of the eight defects and not engage in the four afflictions can one begin to be taught what you're asking about."
Kong Zi got a sad look on his face and sighed. He bowed twice and said as he was preparing to leave:
"I've been twice kicked out of Lu, had all traces of me removed from Wei, had a drum tree chopped down on me in Song, and was detained between the states of Chen and Cai. I don't know why I've had to go through these losses and be slandered those four times. Do you?"
The visitor became saddened then changed his expression and said:
"How very hard it is for you to wake up. There was a man who was afraid of his shadow and he thought his footprints were the tracks of something evil following him. Every time he raised his foot to get away the number of footprints increased, and no matter how fast he ran the shadow remained right behind him. He thought he might be running too slowly so he ran faster and faster until his strength ran out and he died. He couldn't figure out that he would be able to rest in the shade of his shadow and that if he stayed still the footprints would stop. That's how extremely stupid he was!
"You carefully examine what you consider to be benevolent and righteous, observe the boundaries which separate what's alike and what's dissimilar, contemplate the changes between movement and stillness, determine what's appropriate to give and receive, establish conditions on the principles of good and evil, restrict the acceptance of happiness and anger, and have barely been able to escape calamity.
"If you sincerely cultivate your external self and carefully guard what's genuine within, things and people will evolve in their own way. Then there would be nothing to run you ragged. Now, by not cultivating your own external self but still expecting others to do it, aren't you just concerned with what's outside of your own self?"
Kong asked with a sad look:
"May I ask what you mean by 'genuine'?"
The visitor said:
"What's genuine comes from utmost naturalness and sincerity. What isn't natural or sincere doesn't have the ability to move anyone. Therefore, forced tears however much they express sorrow fail to sadden. A forced tantrum however severe it might be fails to cause alarm. Forced intimacy however much a person may smile fails to bring people in tune with each other. Genuine sorrow can sadden without uttering a sound. Genuine anger can cause alarm before any sign is given. Genuine intimacy can bring people in tune with each other before a smile appears. When genuineness exists within and is expressed outwardly through the spirit, that's the true value of genuineness.
"The ways it's expressed when dealing with other people are: it's loving and dutiful when engaged in intimate relationships; it's loyal and steadfast when engaged in matters involving those in positions of authority; it's filled with joy and lightheartedness when drinking wine; it's sad and sorrowful when dealing with periods of mourning. The primary concern of loyalty and steadfastness is to be of beneficial service. The primary concern of drinking wine is to be lighthearted. The primary concern in times of mourning is feeling sad. The primary concern in intimate relationships is being in tune with each other. The beauty of succeeding at being of beneficial service is that it doesn't leave one trace behind. When people are in tune with each other in intimate relationships they don't have to try to figure out how it happened. If one is lighthearted when drinking wine they they don't put any thought into the selection of a proper wine glass. When one is overcome by sorrow in times of mourning they don't ask what's the proper etiquette to observe. Proper etiquette is a reflection of the society at the time, whereas genuineness is something that's received from the heavens. That kind of spontaneity can't be changed by the changing times. Therefore, a wise person models himself on what's natural, values what's genuine and doesn't restrain it by the customs of society. A stupid person does the opposite of that. Being unable to model himself on what's natural, he pities the plight of humans. Not having enough sense to value what's genuine, he makes notes on everything and allows himself to be transformed along with the customs of society. Therefore, he'll never be satisfied.
"It's such a pity! You were deeply engrossed in the hypocrisy coming from people at such an early age, and only heard about great Dao at this late stage."
Kong Zi again bowed twice and said as he straightened up:

"Meeting you today has been like a stroke of luck from the heavens. Master, if you wouldn't be too ashamed of me as compared to the others who are your loyal servants, and take me on as a student, I'd dare to ask you where you live. Please consider accepting me in your school and educating me about the great Dao."

The visitor said:

"I've heard it said that if you come upon someone with whom you can walk on the Way, then go along with him into the mysterious Dao. If you come upon someone with whom you can't walk on the Way, who has no knowledge of this Dao, then be cautious and absolutely don't walk along with him. Only in that way can you remain blameless (for their own failings). You're going to have to do your own work yourself. I'm leaving you now! I'm leaving you now!" With that he shoved off his boat and left, wending his way between the reeds of the river.

Yan Yuan brought around the carriage and Zi Lu reached out to hand him the strap for mounting the carriage, but Kong Zi ignored them. He stood there waiting for the ripples in the water to subside and for the sound of the man's poling through the river to vanish before he dared to board the carriage.

Zi Lu stood at the side of the carriage and asked:

"I've been your servant for a long time but I've never seen you so in awe of anyone you've ever met. When you've been in the presence of a king with ten thousand chariots or a prince with a thousand chariots, even though they offer you a seat in their royal hall, treat you as a peer and allow you to share in their rituals, you still maintain a haughty manner. Today a simple old fisherman leaning on his pole stood there obstinately and you bent over as though you were beating a low chime stone, bowing repeatedly before uttering a word. Isn't that going a bit too far? All your disciples thought that was very strange behavior for you. Why should an old fisherman be treated that way?"

Kong Zi leaned over the handrail of the carriage, sighed, and said:

"How very hard it is for you to change. You've been so deeply involved in looking into etiquette and righteousness, yet so far you haven't gone beyond having the simple mind of a scornful person. Come closer and I'll try to explain it to you. If you meet with an older person and don't show the proper respect then you're lacking in etiquette. If you meet a worthy person and don't show them proper honor then you're lacking in benevolence. If that man hadn't been an achieved person he wouldn't have been able to make others bow down to him. If you refused to bow down to him then you'd be opposing what's natural, not get closer to being genuine, and in that way cause injury to yourself for a long time. It's such a pity! There's no greater misfortune that could come to a person than to lack benevolence, but you alone fully choose that for yourself.

"Furthermore, the source of all things is Dao. If any of those things lose it they die, and if they retain it they live. If their affairs are contrary to it then they fail, but if they are in accord with it they succeed. Since Dao supports existence a wise person has respect for it. Now, it can safely be said that the old fisherman has Dao. How could I dare not to show him respect?"

३१|बुढा मछुआरा

कोंग-ज़ि वेई पर्वत पर एक जंगल में से यात्रा कर रहा था| वह एक खुबानी के पेड़ की निचे बने हुए एक मंच पर विश्राम करने के लिए रुका| उसके शिष्य आस पास अपनी पुस्तके पढने लगे और कोंग-ज़ि अपने ज़िठेर को बजाकर गाना गाने लगा| वह अभी अपने आधे गाने को भी पूरा नहीं कर पाया था की उसने सामने थोड़ी दूर पर एक बुढा व्यक्ति आया| वह अपनी नाव से उतरा और उस तक पंहुचा| उसके कानो और भौंहो के बाल बिलकुल श्वेत हो चुके थे और उसके बाल निचे उसके कंधो तक लटके हुए थे और उसके वस्त्रो के दोनों आवरण (बांह - बाजू का कपडा) उसके दोनों तरफ लटके हुए थे| वह किनारे पर पंहुचा और सबसे ऊँचे स्थान पर गया| उसने अपने दाए हाथ को अपने घुटने पर रखा और बाए हाथ से अपनी थोड़ी को सहलाने लगा उस संगीत को सुनते हुए| संगीत समाप्त हो गया तो उसने गोंग-जी और ज़ि-लू दोनों को संकेत से बुलाया और वे दोनों उसकी तरफ चल दिए|
उस आगंतुक बूढ़े व्यक्ति ने कोंग-ज़ि की तरफ संकेत करते हुए पूछा :
"यह आदमी क्या करता हैं?"

ज़ि-लू ने जवाब दिया :
"ये लू राज्य से एक पुण्यात्मा व्यक्ति है|"

जब उस आगंतुक ने पूछा किस कूल से वह सम्बन्ध रखता है तो ज़ि-लू ने कहा :
"वह 'कोंग' कूल से है|"

आगंतुक ने पूछा :
"श्रीमान कोंग क्या करते है?"

इससे पहले की ज़ि-लू कोई जवाब देता ज़ि-गोंग ने कहा :
"श्रीमान कोंग स्वभाविक रूपसे एक इमानदार और निष्ठावान व्यक्ति है जिन्होंने स्वयं को धर्म और दया के प्रति तत्पर किया हुआ है| उन्होंने बहुत ही कदम उठाये है पौराणिक रस्मो, रिवाजो, संगीत और मूल्यों को बनाये रखने के लिए| जब वे अपने से उच्च मनुष्यों से सरोकार होते है तो वे उनके प्रति वफादार होते है, और जब अपने से निम्न मनुष्यों से सरोकार होते है तो उनके नियमो के अनुकूल हो जाते है| यह इसलिए की वो इस सम्पूर्ण संसार को लाभ पहुचना चाहते है| यही है जो श्रीमान कोंग करते है|"

उस व्यक्ति ने अपने प्रशनो को जारी रखा और पूछा :
"क्या एक पुण्यात्मा व्यक्ति किसी विशिष्ट क्षेत्र का अधिकारी होता है?"

ज़ि-गोंग ने कहा: "नहीं|"

"क्या वह एक राजा या सामंत का सलाहकार होता है?"

ज़ि-गोंग ने कहा: "नहीं|"

तब वह आगंतुक हंसा और जाने के लिए मुडा यह कहते हुआ की वह अब जा रहा है :
"यदि तुम कहते हो की वह दयालु है तब जरूर ही वह दयालु है| हालाँकि मुझे भय है की वह अपने शरीर को इससे निकलने में योग्य नहीं है| अपने हृदय को इतनी क्षति पहुचकर और अपने भौतिक शरीर को कष्टों में दालकर वह अपनी विशुद्धता को खतरे में दाल रहा है| दुर्भाग्य से वह ताओ से बहुत ही दूर चला गया है|"
ज़ि-गोंग वापस गया और कोंग-ज़ि को यह वृतांत कहा| कोंग-ज़ि ने अपने वाद्ययंत्र को निचे रखा और उठकर बोला :
"वह व्यक्ति एक साधू था|"

वह अपने मंच से निचे उतरा और उस व्यक्ति की खोज में चल दिया| जब वह नदी के तट पर पंहुचा तब वह व्यक्ति एक चप्पू के सहारे अपनी नाव को धकेल रहा था| उसने ऊपर देखा तो उसने कोंग-ज़ि देखा इसलिए वह किनारे पर वापस आ गया और

उसके सामने आकर खड़ा हो गया| कोंग-ज़ि ने कुछ कदम पीछे लिए और आदर सहित झुक कर दो बार प्रणाम किया और उसके निकट आ गया|
उस आगंतुक ने कहा :
"तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

कोंग-ज़ि ने कहा :
"कुछ समय पहले आपने कुछ शब्द कहे और चले गए| मैं इतना मुर्ख और दम्भी हूँ की मैं उनके अर्थ का पता लगाने में भी सक्षम नहीं हो सका| यदि मैं आपकी बातो को सुन सको यहा निचे खड़ा होकर तो जरूर ही उनमे से कुछ मेरे कानो से मेरे ह्रदय तक पहुच सकती है तब मैं संभवत आपसे कुछ सिख सकता हूँ|"

उस आगंतुक ने कहा;
"ओह प्रिय! तुम्हारा सिखने का उत्साह तो अत्यंत है|"

कोंग-ज़ि ने फिर से झुककर दो बार प्रणाम किया और धीरे से ऊपर उठते हुई कहा :
"उस समय से जब मैं जवान था मैं हमेशा सिखाने पर तत्पर हूँ| अब मैं उनहत्तर वर्ष बुढा हो चूका हूँ और अब भी मैंने सबसे प्रबुद्ध शब्दों को नहीं सुना है| मैं इस बात को अपने ह्रदय को हटा नहीं पा रहा हूँ|"

उस आगंतुक ने कहा :
“वे जो एक समान होते है वे एक दुसरे का अनुगमन करते है| वे जो एक जैसे ध्वनी निकलते है एक दुसरे को प्रतिक्रिया देते है| यही स्वर्ग के सिद्धांतो का प्रकृतिक पथ है| यदि मैं तुम्हारे सामने अपने पथ का व्यख्यान करता हूँ तो मैं तुम्हे तुम्हारे पथ से भटका रहा होता हूँ| जो तुमने मार्ग अपनाया है मनुष्य के विषयों और प्रसंगो में निहित होने का - शासको, पुण्य व्यक्तियों का, अधिकारियो का और साधारन मनुष्यो का| लोग जो इन चार समूहों में होते है अपने को परिशुद्ध करके शासन और नियंत्रण में अच्छे होते है| यदि इन चार समूहों में रहने वाले लोग अपने स्थानों और पदों को छोड़ तो कुछ नहीं होगा केवल कोलाहल होगा| यदि अधिकारी अपने कर्तव्य का पालन करे और साधारन मनुष्य अपने विषयों को सही ढंग से निर्वाह करे तो इनमे से कोई भी एक दुसरे को हानि नहीं पहुचायेगा|
"यदि खेतो को बोया नहीं जाए और छते टपकती हो तो खाने और पहनने के लिये पर्याप्त नहीं होता है, करो को चुकाया नहीं जाता, बीवी और बेटीयाँ अकेली पड जाती है, बच्चे और बुढे एक दुसरे के तालमेल में नहीं होते है - यही साधारण मनुष्य के विषय होते है| अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में अयोग्यता, अधिकृत कार्य जिसे नकार दिया गया हो, समझोते जो अस्पष्ट होते हो, अधीनस्थ सेवक जो आलसी और निष्क्रिय हो, मनमाफिक परिणामो को प्राप्त न करना, पद और स्थानों पर कायम न रह पाना - ये एक अधिकारी के विषय होते है| दरबार में वफादार मंत्रियो का आभाव होना, राज्य के कुलो के बिच अशांति होना, अप्रशिक्षित कर्मचारियों का होना, उन पुरुस्कारों को देना जो समूल्य से निम्न हो, वसंत और पतझड़ में होने वाली बैठकों को महत्व नहीं देना, शासक की अवहेलना करना - ये सामंतो के चिंता विषय होते है| यिन और यंग का प्रतिकूल होना, सर्दी और गर्मी का समय पर न आना जिससे की सभी वस्तुओ को क्षति पहुचती हैं, सामंतो का एक दुसरे का झगडा और राजा की आज्ञा न मानना, अव्यवस्थित और बिना नियमो के रस्मो रिवाजो का पालन करना, खजाने में अपर्याप्त धन होना, लोगो के मूल्यों का भ्रष्ट होना, राज्य के परिवारों का बेलगाम और विवेक शुन्य व्यवहार - ये एक शासक के चिंता के विषय होते है|
"अब तुम पहले ही स्वयं को एक ऊँचे स्थान पर मानते हो बिना एक सामंत, राजकुमार या फिर सलाहकार के स्थान पर स्थापित हुए| तुम स्वयं को निचे स्थान पर भी मानते हो बिना अपने ऊपर किसी अधिकारी को समझे| बिना किसी प्राधिकरण के तुम लोगो को रस्मो और संगीत से विभूषित करते हो, लोगो के लिए सही मूल्यों का निर्धारण करते हो और उसे बदलते हो जिस प्रकार वे एक दुसरे से व्यवहार करते है| तुम किसी भी क्षेत्र में शांति नहीं स्थापित कर रहे हो जहाँ पर भी तुम अपने कदम रखते हो!
"इसके आलावा, लोगो के पास आठ विकार होते है और उनके विषय घिरे हुए होते है चार प्रकार के दुखो से जिन्हें वे नदारंदाज़ नहीं कर सकते है|
"हस्तक्षेप करना: औरो के काम में अपनी टांग अडाना जहाँ तुम्हारा कोई मतलब नहीं होता है|
"घुसपैठ करना: अपने आप को ऐसे परिस्तिथियों में धकेलना जहाँ तुम्हे बुलाया ही नहीं गया हो|
"पक्ष लेना: किसी को प्रोत्साहन देना इसलिए की उससे तुम कुछ पा सकते हो|
"चापलूसी करना: सही और गलत पर ध्यान नहीं देना जब तुम एक पक्ष क तरफदारी करने का प्रयत्न कर रहे होते हो|

"अपवाद करना: किसी और को भला बुरा कहना उसकी निंदा करना|
"मुसीबते खडी करना: अपने मित्रो और परिवार के सदस्यों के बिच झगडा करने का प्रयत्न करना|
"कपट करना: किसी का झूठा गुणगान करना जबकि तुम उसे पीछे धकेलना चाहते हो|
"लाभ उठाना: अच्छे और बुरे व्यवहार में भेद नहीं करना जबकि ये सोचना की दोनों पक्षों का साथ देकर तुम दोनों तरफ के लोगो की इछाओ के अनुसार होगे|
"वह जो इन आठ अवगुणों में लिप्त होता है अशांति और अव्यवस्था उत्पन्न करता है और स्वयं को भी क्षति पहुचता है| एक पुण्य व्यक्ति का ऐसा मित्र नही होता है और न ही एक प्रबुद्ध शासक एक ऐसे व्यक्ति को अपना मंत्री बनता है|

आठ कष्ट इस प्रकार है :
"अभिलाषी और लालसा: निरंतर फेरबदल करते रहना और संसोधन कर परिवर्तन करना उसका जिसे तुम पहले ही स्वीकार कर चुके हो ताकि तुम ख्याति और सम्मान पा सको|
"साहित्यिक चोरी: औरो के विचारो को और सिद्धांतो को अपनाना और उन्हें अपना होने का दावा करना ताकि तुम ज्यादा बुद्धिमान और ज्ञानी प्रतीत हो सको|
"मिथ्याभिमान: अपनी कमियों के बारे में किसी द्वारा बताया जाना लेकिन स्वयं द्वारा उस पर ध्यान ही नहीं देना|
"कट्टरता: उन्हें तो स्वीकार करना जो तुम्हारे जैसे है लेकिन उन्हें नकार देना जो तुम्हारे जैसे नहीं है उनकी अच्छी बातो को बुरा साबित करते हुए|
"ये सभ चार कष्ट है| यह तभी हो सकता है जब तुम इन आठ अवगुणों और चार विकारो से मुक्त हो जाओ तब मैं तुम्हे बताना शुरू करू जो तुम पूछ रहे हो|"

कोंग-ज़ि के मुख पर उदासी आ गयी और उसने दीर्घ आह भरी| उसने झुककर दो बार प्रणाम किया और जाने की तैयारी करने लगा :
"मुझे दो बार 'लू' से बाहर फ़ेंक दिया गया, वेई से मेरे सारे चिन्ह मिटा दिए गए, सोंग में मेरे ऊपर एक ड्रम गिराया गया और चेन और की के बीच मुझे नजरबन्द कर दिया गया| मुझे नहीं पता की मेरे साथ ऐसा क्यों होता है और मुझे इतनी बदनामी क्यों मिलती है| क्या आपको पता है?

वह आगंतुक उदास हो गया लेकिन फिर अपने भावो को बदलते हुए कहा :
"यह तुम्हारे लिए कितना कठिन है ऊपर उठना| एक आदमी था जो अपनी परछाई से भयभीत होता था और अपने पीछे पद चिन्हों को सोचता था की ये किसी शैतान के पैरो के निशान है जो उसका पीछा कर रहा है और तब चाहे वह जितना भी तेज चले वे हमेशा उसके पीछे ही रहते थे| उसने सोचा की वो धीरे चल रहा है इस कारण वह और तेज भगा जितना हो सके उतनी तेज भगा और फलस्वरूप वह शक्तिहीन हो गया और मर गया| वह यह पता नहीं लगा पा रहा था की यदि वह अपनी परछाई की छाव में विश्राम कर सकता है और क्या यदि वह रुकेगा तो वे पदचिन्ह समाप्त हो जायेगे| ऐसे ही इतना मुर्ख था वह!
"तुम ध्यान से निरिक्षण करते हो जिसे तुम धर्म और परोपकार समझते हो, उन सीमओं का अवलोकन करते हो जो उसमे भेद करती जो एक समान है और पृथक है, स्थिरता और चंचलता के बिच के क्षणों का विचार करते हो, निर्धारण करते हो की क्या प्रदान करने और स्वीकार करने के लिए सही है, बुरे और अच्छे क्या है इन सिद्धांतो की स्थापना करते हो, सुख और दुःख की स्वीकृति को निषेध करते हो, और कभी कभार ही तुम इस प्रकार आपदाओ से बच पाते हो|
यदि तुम निष्ठा से साधना करते हो तुम्हारे बाह्य स्वरूप की और सावधानी से रक्षा करते हो जो तुम्हारे अंदर शुद्ध रूप से निहित है, तब वस्तुओ और लोग स्वयं से ही समापन हो जाते है| तब ऐसा कुछ नहीं होगा जो तुम्हे क्षति पंहुचा सके| अब अपने बाह्य स्वरूप के लिए तुमने साधना नहीं की है और तुम दुसरो से इसकी उम्मीद रखते हो, क्या तुम केवल उसके लिए चिंतित नहीं हो जो तुम्हारे बाह्य स्थित है?"

कोंग-ज़ि ने उदासीन हुए मुख से पूछा :
"क्या मैं आपसे यह पूछ सकता हूँ की शुद्ध से आपका क्या तात्पर्य हैं?"

उस आगंतुक ने कहा :
"जो शुद्ध होता है वह उत्पन्न होता है पूर्ण निष्ठा और श्रद्धा से| जो प्राकृतिक और निष्ठावान नहीं होता है उसके पास किसी चीज़ को हिलाने की योग्यता भी नहीं होती है| कृतिम आंसू चाहे वे कितने ही दुःख के भाव से आये हो उदासीन नहीं करते है|

बलपूर्वक आया गुस्से का आवेश चाहे वह कितना ही गंभीर न हो मुद्दे से दूर होता है| कृतिम मित्रता चाहे वह कितना भी हंसाती हो लोगो को एक सूत्र में बंधने में असफल होती है| वास्तविक दुःख उदास कर सकता है बिना कोई शब्द कहे| वास्तविक गुस्सा बिना किसी संकेत के चेतावनी दे सकता है| वास्तविक मित्रता लोगो को एक साथ मिला सकती है बिना किसी के हँसे| जब वास्तविकता अंदर निहित होती है और आत्मा द्वारा व्यक्त होती है यही तो यथार्थ में वास्तविकता होती है|
"यह है जिन तरीको से वह व्यक्त होती है लोगो से सरोकार करते समय वे है: यह स्नेही और कर्तव्य निष्ठ होती है जब यह घनिष्ठ संबंधो में निहित होती है| यह वफादार और स्थिर होती है जब यह उन मुद्दों में निहित होती है जो अधिकारों से सरोकार करते है| यह आनंद और उल्लास से भर होती है मदिरा पीते हुए| यह उदास और दुखी होती शोक मनाने के समय| वफ़ादारी और स्थिरता का मुख्या विषय हितकारी सेवा है| मदिरा पीने का मुख्य विषय उल्लासमय होना है| शोक के समय का मुख्य विषय उदास होना होता है| और घनिष्ट संबंधो का मुख्य विषय एक दुसरे के साथ सामंजस्य में होना है| हितकारी सेवा में निहित होने का विशिष्ट गुण है की यह अपने पीछे कोई चिन्ह नहीं छोडती| जब लोग एक दुसरे के साथ घनिष्ट संबंधो में सामन्जस्य में होते है तो उन्हें नहीं पता होता की यह कैसे हुआ| यदि कोई उल्लासित मदिरा पीता है तो वह यह विचार नहीं करता है की उसने कौनसा गिलास उठाया है| जब कोई उदास होता है शोक मनाते समय तो वह किसी को इसका अवलोकन करने के लिए नहीं कहता है की क्या यह सही शिष्ट रूप से है या नहीं| पूर्ण शिष्टाचार तो उस समय समाज का प्रतिबिम्ब होता है, जहाँ वास्तविकता (शुद्धता) तो वह होती है जो स्वर्ग से प्राप्त होती है| यह इस प्रकार की निरंतरत बदलते हुए समय के साथ बदलती है| इसलिए एक बुद्धिमान व्यक्ति अपने को प्रकृति के अनुसार ही करता है, और महत्व देता है उसे जो वास्तविक होता है तथा इस समाज के नियमो को बंधन नहीं मानता है| एक मुर्ख व्यक्ति इसके विपरीत होता है| स्वयं को प्रकृति के अनुरूप कर सकने में योग्य न होने के कारण वह मनुष्यों की दुर्दशा पर दया दिखता है| इसकी समझ न होने के कारण की क्या वास्तविक है वह प्रत्येक चीज़ को याद रखन चाहता है और स्वयं को समाज के नियमो के अनुरूप बदलने की स्वीकृति देता है| इस प्रकार वह कभी संतुष्ट नहीं होता है|
"क्या यह दयनीय नहीं है! तुम शुरू में पूरी तरह से लिप्त होते हो लोगो से आने वाले पाखंडो में और बाद में ताओ के बारे में सुनते है|"

कोंग-ज़ि ने दो बार झुककर प्रणाम किया और खड़े होते हुए कहा :
"आपसे आज इस तरह मिलना तो जरूर ही मेरा सौभाग्य था जो स्वर्ग ने मुझे प्रदान किया था| आचार्य यदि आप मुझे अपने दुसरो सेवको की तरह स्वीकार करने में लज्जित न हो तो मुझे अपने शिष्य की तरह स्वीकार कीजिये, मैं आपसे यह पूछने का साहस करता हूँ की आप कहाँ रहते है| कृपया मुझे अपने साथ ले जाये और मुझे महान ताओ के बारे में सिखाये|"

उस आगंतुक ने कहा :
"मैंने यह सुना है की यदि तुम किसी से मिलते हो जिसके साथ तुम उस मार्ग पर चल सकते हो तब उसके साथ रहस्यमयी ताओ के लिए चलो| यदि तुम किसी से मिलते हो जिसके साथ तुम उस मार्ग पर नहीं चल सकते हो, जिसके पास ताओ का कोई ज्ञान नहीं है तो सावधान रहो और उसके साथ बिलकुल मत चलो| इसे मार्ग पर चलकर तुम दोष रहित हो सकते हो (असफल नहीं होगे)| तुम्हे अपना कार्य स्वयं करना पड़ेगा| मैं तुम्हे अब छोड़ रहा हूँ! मैं तुम्हे अब छोड़ रहा हूँ!"

इसके साथ ही उसने अपनी नाव को पानी में उतारा और नदी की घास में से अपना रास्ता बनाता हुआ चल दिया|
यां-युआन रथ ले आया और ज़ि-लू उसके उसके पास घोड़ो की लगाम अपने नियंत्रण में करने पंहुचा लेकिन कोंग-ज़ि ने उन दोनों को नदारंदाज़ कर दिया| वह वहां खड़ा रहा लहरों की तरंगो के समाप्त होने तक और उस व्यक्ति की नाव की आवाज़ के चले जाने तक और तभी इसके बाद वह रथ पर चढ़ा|
ज़ि-लू घोडा गाड़ी के साथ में खड़ा हो गया और पूछा :
"मैं बहुत दिनों से आपका सेवक हूँ लेकिन मैंने आपको किसी के जाने के लिए इतने भय में कभी नहीं देखा| जब आप दस हज़ार रथो का वहन करने वाले राजा या दस हज़ार रथो का अधिकार रखने वाले राजकुमार की उपस्तिथि में भी होते है वे भी तब आपको बैठने के लिए राज दरबार में स्थान देते है| आज एक साधारण मछुअरा जो की अपनी छड़ी पर झुका हुआ था और हट पूर्वक खड़ा हुआ था और आप निचे झुके हुए थे जैसे की आप 'चाइम' पत्थरो को पिट रहे हो, और आप बार बार उसके सामने झुककर प्रणाम कर रहे थे बिना कोई शब्द कहे| क्या यह कुछ ज्यादा नहीं हो गया? आपके सभी शिष्यों ने सोचा की यह आपका बहुत ही अजीब व्यवहार है| आपने उस बूढ़े मछुआरे के सामने ऐसा आचरण किस कारण से किया?"

कोंग-जी उस घोडा गाडी के बगल के डंडे को पकड़ते हुए उठा और आह भरते हुए कहा :

"यह तुम्हारे लिए कितना मुश्किल है बदलाव करना| तुम बहुत ही गहनता से शिष्ट आचार और धार्मिकता को देखने में निहित हो फिर भी तुम अब तक निन्दात्मक व्यक्ति जैसे साधारण मन से आगे नहीं आ पाए हो| निकट आओ और मैं इसे तुम्हे समझाता हूँ| यदि आप एक बुजुर्ग व्यक्ति से मिलते है और उसके प्रति उचित आदर नहीं दिखाते हो तो तुममें शिष्टाचार का आभाव है| यदि तुम एक मूल्यवान व्यक्ति से मिलते हो और उसे उचित सम्मान नहीं देते हो तो तुममे विनम्रता का आभाव है| यदि वह व्यक्ति एक सिद्ध पुरुष नहीं होता तो वह अपने सामने इस तरह लोगो को झुकने योग्य नहीं कर सकता था| यदि तुम उसके सामने झुकने से मना करते हो तो तुम उसकी अवहेलना कर रहे होते हो जो प्राक्रतिक है और तब तुम वास्तविकता के निकट भी नहीं होते हो तथा इस प्रकार से तुम स्वयं को ही लम्बे समय के लिए क्षति पंहुचा रहे होते हो| क्या यह दयनीय नहीं है! ऐसा कोई दुर्भाग्य नहीं है जो उस व्यक्ति के लिए आये जिसमे विनम्रता का आभाव है, लेकिन तुम अकेले स्वयं से ही इसे चुन रहे होते हो अपने लिए|

"इसके आलावा सभी वस्तुओ का स्त्रोत ताओ है| यदि कोई भी वस्तु इसे छोड़ देती है तो समाप्त हो जाती है और यदि बनाये रखती है तो जीवित रहती है| यदि उनके विषय इसके विपरीत होते है तो वे असफल हो जाती है और यदि वे इसके अनुसार होती है तो सफल हो जाती है| चूँकि ताओ अस्तित्व का आधार है इसलिए एक बुद्धिमान व्यक्ति इस चीज़ का आदर करता है| अब यह स्पष्ट कहा जा सकता है की उस बूढ़े मछुआरे के पास ताओ थी| फिर मैं कैसे उनका आदर नहीं करने का साहस कर सकता था?"

32.Lie Yu Kou (aka Liezi)

Lie Yu Kou (Liezi) was on his way to the state of Qi, but in the middle of his journey he turned back and ran into Bo Hun Mao Ren (Professor Confused Nonentity).
Bo Hun Mao Ren asked him:
"What made you change directions and come back?"
"I was startled by something."
"What startled you?"
"I stopped to eat some food in ten different inns and in five of them I was served before anyone else."
Bo Hun Mao Ren said:
"What was so startling about that?"

"Even when your inside honesty and sincerity isn't displayed to others, sometimes the actions you take with your body reveals your inner light. At that point people you come into contact with can open their minds to being influenced by you, and without a second thought set you up as a paragon. That's what worried me. When the innkeepers gave me special treatment and served me their finest soup, I thought it might get even worse by the time I got to Qi. If those who had so little were willing to give me so much and without a second thought treated me as though I was powerful, then how much more would a king with ten thousand chariots try to heap on me! His body worn out from defending the state and his knowledge at the brink of exhaustion by dealing with all the state's affairs, he'd appoint me to be in charge of something and demand my services expecting a successful outcome. The realization of that is what startled me."
Bo Hun Mao Ren said:
"Very good insights! However, being as you are, people will still try to serve you."
When he went to pay him a visit on a later date he found that there were sandals (of guests) lined up outside his door. Bo Hun Mao Ren turned away and stood there tapping his walking stick. His brow was creased pensively and the corners of his mouth drooped in consternation. He stood there idly without saying a word then left.
The person in charge of greeting guests went in and told Liezi about the visitor. He grabbed up his sandals and went running barefoot to the outer gate where he caught up with him and said:
"Master, you've just arrived and now you're going to leave without offering me a remedy for my ills?"
"I already told you that people would try to serve you, and that's exactly what's happened. It's not that you go out of your way to make people serve you, but that you're not able to make people stop serving you. You're probably finding something useful about their emotional enthusiasm toward you, as you keep encouraging them. If you must have this kind of emotional reaction around you then it'll continue to agitate the core of your own nature. That goes without saying. And yet you keep on following this course. You know, no one will point this out to you, as they all just share petty words with you, and you lap it all up. None of them wants to learn to see anything nor wake up to anything, so what could they possibly share with each other! The clever ones keep working hard at being clever and the knowledgeable ones worry about how knowledgeable they are. Those without any talents whatsoever have no concept of looking for anything. They're satisfied with having a good meal and go drifting from there. They float about as though they're on an unmoored boat, dwell in a void and are drifters and wanderers."

There was a man named Huan (Monotonous) in the state of Zheng who memorized and recited texts in the district of Quishi. In only three years Huan had elevated himself to the position of a Confucian scholar. As easily as the Yellow River moistens the land extending for three miles beyond where it flows, he showered blessings on the three levels of his family relations. He helped enable his younger brother to pursue his interest in Mohism. The Confucian and the Mohist engaged in hearty debates about their different philosophies, and their father substantiated what was set forth by Di (the younger brother - Dazzling). Ten years later Huan committed suicide.
He came to his father in a dream and said:

"I'm the one who helped enable him to become a Mohist scholar. When are you ever going to come to the realization of how good I am? Even now (buried in my grave) I'm assisting in the growth of the oaks which will produce seeds in the autumn."
When the creator of things gave people their various attributes, they weren't attributes based on how to become human, but based on what's natural to humans. Each person is therefore enabled to become what they are. When a person thinks they've become more special than others they end up looking down on even their own family members and will push them out of the way when trying to get a drink at a well. It's said that nowadays all people are like Huan. Actually, if one truly possesses virtue they aren't aware of it, and that would be even more true for one who possesses Dao! Before modern teachings came about, that was known as freedom from being punished by what's natural.
A wise person is safe in what's secure, but doesn't look for safety in what isn't secure. Everybody else looks for safety in what isn't secure, but doesn't seek safety in what's secure.
Zhuangzi said:
"Realizing Dao is easy, but trying not to speak about it is difficult. To have the realization but not try to put it into words is allowing what's natural to occur on its own. To have the realization and try to put it into words is trying to affect the human condition. People in ancient times followed what was natural for them, not what came from other people."

There was a man in the state of Song named Cao Shang (Businessman Cao) who was sent by the King of Song on a mission to the state of Qin. When he left he was provided with several chariots as an escort. The King of Qin was so pleased with him that he provided him with an additional hundred chariots for his return trip.
When he got back to Song he saw Zhuangzi and said to him:
"To live on a seedy street in a run down neighborhood, tediously weaving straw sandals with a wrinkled neck and a sallow complexion is something I wouldn't do very well. To only once awaken a king with ten thousand chariots and be given a hundred chariots for doing that is something I do best."
Zhuangzi said:
"When the King of Qin was sick he requested his doctors to come see him. If a doctor could remove a tooth and drain the abscess, he would receive one chariot. To one who would lick his hemorrhoids he'd give five chariots. The further down the cure, the more carriages one would get. How could you have possibly cured his hemorrhoids? Then what is it you did to receive so many carriages? Go away!"

Duke Ai of Lu asked Yan He:
"If I were to put Zhong Ni (Confucius) in charge of making my ministers loyal would the state be cured of its ills?"
"That would be dangerous! Zhong Ni spouts garbage. He tends to decorate issues with soft feathers and intricate paintings, engages in glorious speeches and uses minute details to get his points across. He's merciless when making judgments on other people and is neither knowledgeable nor trustworthy. He readily accepts what comes from his mind but butchers his spirit. What does he have that could possibly put him above other people? Do you really think he's suitable for the job? Would you give him a nod? It would be a grave mistake to do that. If you were to cause the people to turn away from what's real and instead study what's hypocritical, then there's no way to really see into what the people are actually feeling. That would go on for many more generations and there wouldn't seem to be a stop to it. Only disaster would come from that kind of governing."

To do favors for others and not forget what was done is contrary to the way the heavens distribute things. When involved in making a deal a businessman doesn't gnash his teeth. Even though the affair at hand might make him feel like gnashing his teeth, he expends his energy not to do it. He becomes tortured from the outside by keeping records of the money owed him, and he becomes tortured from the inside by trying to keep tabs of what false moves he might make. At night people try to let go of what's torturing them from the outside, but their minds keep questioning their tallies and coffers; they try to let go of what's torturing them from the inside, but yin and yang

keep eating away at them. To be exempt from being tortured from the outside and the inside - only a perfected person would be able to do that.

Kong Zi (Confucius) said:
"The minds of human beings can be more dangerous to traverse than mountains and rivers, and more difficult to understand than the heavens. The heavens, at least, have their periods of spring and autumn, winter and summer and dawn and sunset. People have pretentious mannerisms covering deep seated emotions. Therefore, they might show an honest outward appearance but are only out to get everything they can lay their hands on; might present themselves as being authoritative even though they're completely inept; might seem anxious to please simply in order to gain a position; might appear to be firmly set in their attitude but are actually wishy-washy; might appear to be relaxed but are actually hiding ferocity. Therefore, those who strive for righteousness as though it were a cool drink in a desert would just as easily run from it as though it was a hot blaze burning them.

"Therefore, a nobleman will test people's true feelings by sending them on a mission far away to see how loyal they'll remain; give them a task to do close at hand to observe how respectful they are; present them with a puzzling problem to see how capable they are, then suddenly pose another question to see how knowledgeable they really are; give them an urgent task that has to be accomplished in a short period of time to see how quickly they can come up with a plan of action; entrust them with taking charge of vast sums of money to see if they'll be fair with others; tell them of an impending crisis to see if they can economize and prepare for it; get them drunk on wine to see what they do when inebriated; place them in a situation with the opposite sex to see how much they're ruled by their sexual appetite. Through these nine tests, one who is unworthy may be found out."

When Zheng Kao Fu (Proper Old Father) received his first appointment to office he bowed his head. When he received his second promotion he bowed from the waist. When he received a third promotion he bowed all the way to the ground and backed out of the room. Who would dare not to follow his example! If the same thing happened to an ordinary person, at their first appointment they'd stand up straight and proud. At their second promotion they'd dance on top of their carriage. By their third promotion they'd give titles to their male relatives. How much more power they must think they wield than Tang and Xu You!

The greatest harm that can be done to one's virtue is to dwell on thoughts and to be narrow minded. If one is narrow minded and inspects everything closely from that personal viewpoint then that personal viewpoint will be destructive. There are five dangers to one's virtue and the one that pierces virtue the most leads to all the others. Which is the one that pierces one's virtue the most? The one that pierces the most is to have such a sense of self-esteem that one would discredit what others do.

There are eight extremes that will cause hardships, three requirements for prominence and six areas of punishment. To be physically attractive, to have a full lush beard, to be tall, to be well-built, to be robust, to have perfect proportions, to be brave and to be overly confident - to have all of these six attributes in excess of others will cause one to have hardships. To follow along compliantly at the skirts of another, to bow down with deep respect and to timidly act as though one wasn't on a par with others - to be expert at all three of these things will cause one to reach prominence. To be knowledgeable and wise, to show oneself to be an expert, to take courageous actions, to hold many grudges, to be benevolent and righteous, to take on responsibility for correcting perceived wrongs - to have any one of these qualities would bring punishments. One who masters their emotional reactions to situations that arise in life becomes a puppet. One who masters knowledge in a specific area becomes a scion. One who masters a position of authority becomes a follower. One who masters an inferior position becomes a cynic.

There was a man who went to see the king of Song and had been awarded ten carriages. Like a proud child, he went to show them off to Zhuangzi.
Zhuangzi said:

"Above the Yellow River there's a family who earns enough to provide them with food by weaving articles out of marsh reeds and branches. The son dove into the depths of the river and came up with a pearl worth a thousand pieces of gold. His father said to him: 'Take a rock and smash it. A valuable pearl like that must have been lodged under the chin of a black dragon who lives in the ninefold depths. The reason you got hold of that pearl must have been because it was asleep. If the black dragon would have awakened, do you think there would have been a shred of you left?' The depths of the state of Song are no less than the ninefold depths of the abyss, and the ferocity of the king of Song is no less than that of the black dragon. The reason you got hold of those chariots must have been because he was asleep. If the king of Song would have awakened, you would have been pulverized!"

Someone brought an invitation to Zhuangzi to attend a royal affair. Zhuangzi responded to the messenger, saying: "Have you ever observed the sacrifice of an ox? It's clothed in an embroidered robe, fed on the finest hay and grains, then it's led along by a leash to the Imperial Temple. Even though it would rather just be left alone to grow up as an ox, at that point could it achieve that?"

When Zhuangzi was on the verge of death his disciples wanted to plan for a magnificent burial.
Zhuangzi said:
"I'll use the heavens and earth as my inner and outer coffins, the sun and moon as my linked jade discs, the stars as my pearls and precious jewels, and the ten thousand things as my parting gifts. With all of these tools readily available for my burial, how could I not already be prepared? What more could I possibly need?"
(Note: Inner and outer coffins were provided for renowned people to prevent animals and insects from getting to their corpses. Linked jade discs were a symbol of their authority and position in life. Pearls and precious jewels were adornments. Parting gifts were offerings from friends. Some people believed these things could protect the soul of the person after death.)
A disciple said:
"We're afraid crows and vultures will come feed on you."
Zhuangzi said:
"Above ground I would become food for crows and vultures while under the ground I would feed crickets and ants. To deprive one group over another of the feast - wouldn't that be showing partiality?"

If you use what's erratic to try to make things level, then what was level would become erratic. If you use what's unprovable to try to prove something, then what can be proven will become unprovable. One who sees things with great clarity will only be influenced by what he perceives. One who sees things from their spirit will find all the proof they need. One who prefers to understand everything can't bear to dwell in their spirits for very long and they stupidly depend on the manifestations they see coming from others, so anything they succeed at is merely on the outside. Isn't that sad!

३२|लिए यु कोऊ (लिएज़ी)

लिए-यु-कोऊ ‘की’ राज्य जाने के लिए अपने मार्ग में था लेकिन अपनी यात्रा के मध्य वह वापस मुड गया और बो-हूँ-मो-रेन के पास चला गया|
बो-हूँ-मो-रेन ने उससे पूछा :
"किस चीज़ ने आपको अपनी दिशा बदलकर वापस आने को बाध्य कर दिया?"

"मैं किसी चीज़ से व्याकुल हो गया था|"

"आपको किस चीज़ ने व्याकुल किया है|"
"मैं भोजन करने के लिए दस धर्मशालओ में रुका और उनमे से पांच में मुझे किसी और से पहले भोजन परोसा गया|"

बो-हूँ-मो-रेन ने कहा;
"इसमें परेशान होने वाली क्या बात है?"

"तब भी जब आप अपनी ईमानदारी और शुद्धता का प्रदर्शन औरो के सामने नहीं कर रहे होते हो, कई बार आपके कार्यो के द्वारा आपका शरीर आपकी अच्छाई को प्रकाशित कर ही देता है| इस समय पर लोग जो आपके संपर्क में आते है वे अपने मनो को आपसे प्रभावित हुआ कहते है और बिना कोई दूसरा विचार किये आपको आदर्श माननने लगते है| यही है जो मुझे चिंतित कर रहा है| जब उस धर्मशाला के संचालक ने मुझ से विशिष्ट व्यवहार किया और मुझे सबसे बेहतर सूप प्रदान किया तब मैंने सोचा की यह उससे भी बुरा होता जाएगा जब तक मैं ‘की’ राज्य में पहुचुगा| यदि वे जिनके पास थोडा सा है और मुझे अधिक देने के चेष्टा रखते है और बिना एक क्षण सोचे वे मुझे शक्तिशाली मान बैठते है तब कितना ज्यादा ढेर मेरे लिए लगा देगा एक राजा जिससे मेरी भेंट होगी और जो दस हज़ार रथो का स्वामी होता है! उसके (राजा के) शरीर में घाव हो चुके है राज्य की रक्षा करते करते और उसका ज्ञान समाप्त होने के कगार पर है राज्य के मुद्दों और विषयों से सरोकार करते हुए, वह मुझे किसी कार्य प्रभारी की तरह के लिए नियुक्त करेगा और मेरे कार्यो द्वारा सफलता की उम्मीद करेगा| इसका अनुभव ही है जो मुझे परेशान कर रहा है|"

बो-हूँ-मो-रेन ने कहा :
"बहुत ही अच्छी अंतर्दृष्टि है! हालाँकि जैसे की तुम हो लोग अब भी तुम्हारी सेवा करने का प्रयत्न करेगे|"

जब वह बाद में दोबारा उनसे मिलने गया उसने पाया की उसके द्वार के बाहर चप्पले एक पंक्ति में लगे हुए है|
बो-हूँ-मो-रेन पीछे हट गया और खड़ा हो गया अपनी छड़ी को बजाता हुआ| उसकी बौंहे विचारमग्न होने के जैसे चढ़ गयी और उसका मुख संत्रास में डूब गया| वह वहा पर निष्क्रिय खड़ा रहा और बिना कुछ कहे चला गया|
जो वहां के मेहमानों का प्रबंधक था वह अंदर गया और इस आगंतुक के बारे में लिएज़ी को बताया| वह अपनी चप्पले पहने बिना नंगे पैर दौड़ा और बाहर के दरवाजे पर पहुचने से पहले उसे रोक लिया और कहा :
"आचार्य, आप अभी आये थे और अब जा रहे है बिना मुझको मेरी व्याधियों और कष्टों का निवारण किये?"

"मैंने पहले ही तुम्हे बताया थी की लोग तुम्हारी सेवा का प्रयत्न करेगे और यही है जो हो रहा है| ऐसा नहीं है लोगो को तुमने ऐसा करने के लिए बाध्य किया है लेकिन इसलिए की तुम उनको अपनी सेवा करने से रोक नहीं पाए| तुम संभवतः तुहारे लिए कुछ उपयोगी पा रहे हो उनके भावात्मक उत्साह में क्योंकि तुम उन्हें प्रोत्साहित ही कर रहे थे| यदि तुम्हारा ऐसा ही भावनात्मक प्रतिक्रिया अपने चारो और रही तब तुम निरंतर ही अपनी मूल प्रकृति को बाधित कर रहे हो| यह बिना कहे ही हुआ जा रहा है| और तब भी तुम इस मार्ग का अनुगमन करने में लगे हुए हो| तुम जानते हो की कोई तुम्हे यह नहीं बताएगा क्योंकि वे सभ तुम्हारे साथ तुम्हारे तुच्छ शब्दों को साँझा करते है और तुम यह सभ होने देते हो| उनमे से कोई भी किसी भी चीज़ को सही ढंग से देखना सीखना नहीं चाहता और न ही वे किसी चीज़ के प्रति जागरूक होना चाहते है इस प्रकार ऐसा क्या हो सकता है जिसे वे दुसरो के साथ साँझा कर सकते है! जो चतुर होते है वे और चतुर होने के लिए प्रयास करते रहते है और जो ज्ञानी होते है उन्हें इसी बात की चिंता रहती है की वे कितने ज्ञानी है| जिनके पास कोई प्रतिभा नहीं होती या कुछ भी उनके लिए किसी भी

वस्तु को खोजने का कोई विचार नहीं होता है| वे अच्छे भोजन से संतुष्ट हो जाते है और आवारा की तरह घूमते है| वे ऐसे बहते है जैसे की एक बिना लंगर की नाव बहती है, शुन्य में केन्द्रित हुए वे आवारा हुए और घूमते हुए|"

एक व्यक्ति था ज्हेंग राज्य में हुआन नाम का जो की कुइशी जनपद में आलेखों को याद करता था और उन्हें बार बार दोहराता था| तीन वर्षो में ही उसने एक कांफुसियन विद्वान् के पद तक उन्नति हासिल कर ली| इतनी आसानी से जैसे की येल्लो नदी का पानी तीन मिल तक भूमि को नम रखता जहाँ से वो बहती है, वह पारिवारिक संबंधो के तीन स्तरों तक अपना आशीर्वाद बनाये रखे होता था| उसने अपने छोटे भाई को मोहिस्म मत में उसकी रूचि बढ़ने के लिए सहायता की| कांफुसियन्स और मोहिस्त अपने दार्शनिक विचारो के कारण एक दुसरे से वाद विवाद में उलझ गए| और उनके पिता ने उसे सही बताया जो की छोटे भाई द्वारा कहा गया था| दस साल बाद हुआन ने आत्हत्या कर ली|
वह अपने पिता के पास एक स्वप्न में आया और कहा :
"'मैंने ही उसकी एक मोहिस्त विद्वान् बनाने में सहायता की| आप कब इस चीज़ का अनुभव करोगे की मैं कितना अच्छा और सही था? अब भी मैं कब्र में दफ़न हुआ अपने ऊपर ओक वृक्षों की उत्पत्ति में सहायक हूँ और इससे वसंत में विभिन्न बीजो की उत्पत्ति होती है|"

जब वस्तुओ को बनाने वाले ने वस्तुओ को गुण प्रदान किये तो वे इस बात पर आधारित नहीं थे की कैसे इन्हें एक मनुष्य के लिए बना जाए लेकिन वे उस पर निर्भर था जो मनुष्यों के लिए प्राकृतिक था| हर व्यक्ति को इस प्रकार होने दिया गया जो वे होना चाहते है| जब एक व्यक्ति सोचता है की वह औरो से से विशिस्ट है तब वह अपने परिवार के सदस्यों को भी तुच्छ दृष्टि से देखता है और अच्छा भोजन पाने के लिए उन्हें भी अपने रास्ते से धकेल देता है|| यह कहा जाता की आजकल सभी लोग हुआन जैसे है| वास्तव में यदि किसी के पास सामर्थ्य होता है तो वे इससे अवगत नहीं होते है, और यह उसके लिए तो और भी यथार्थ होता है जो ताओ का आधिपत्य रखते है! उससे पहले की ये आधुनिक विचार और मत आये थे इसे कहा जाता था प्रकृति द्वारा मिलने वाले दंड से मुक्ति| एक बुद्धिमान व्यक्ति सकुशल अनुभव करता है उससे जो सुरक्षित होता है लेकिन वह सकुशलता को उसमे नहीं देखता है जो सुरक्षित नहीं होता है| इसके आलावा हर कोई खोजता है कुशलता को जो सुरक्षित होता है उसमे, लेकिन वह कुशलता को नहीं खोजता है उसमे जो सुरक्षित नहीं होता है|

ज्हुंज्ही ने कहा :
"ताओ का अनुभव होना आसन है लेकिन इसके बारे में बात करने का प्रयत्न नहीं करना मुश्किल होता है| जिसका अनुभव होता है उसे अपने शब्दों द्वारा ढालने का प्रयत्न नहीं करना यही है जो प्राक्रतिक होता है और जो स्वयं से होता है| अनुभव का होना और उसे शब्दों में व्यक्त करने का प्रयत्न करना यह तो मनुष्य की परिस्तिथियों को प्रभावित करने जैसा होता है| प्राचीन समय में लोग उसका अनुगमन करते थे जो प्राकृतिक होता था न की उसका जो लोग कहते थे|"

सोंग राज्य में एक व्यक्ति था जिसका नाम को-शांग था तथा जिसे सोंग के राजा के द्वारा किन राज्य में एक विशेष कार्य के लिए भेजा गया| जब वह गया तो उसे बहुत सारे रथ अनुरक्षण के लिए प्रदान किये गए| किन का राजा उससे इतना खुश हो गया की जब वह वापस आया तो उसे एक हज़ार और अतिरिक्त रथ उसकी वापसी के लिए प्रदान किये गए|
जब वह सोंग में वापस आया तो उसने ज्हुंग्ज़ी को देखा और कहा :
“एक टूटे फूटे सड़क पर रहना, फटे हुए जुते पहनना तथा झुरियो वाली गर्दन और ऐसा ही व्यवहार होना, यह तो कुछ ऐसा है जिसे मैं अच्छी तरह से नहीं कर सकता हूँ| एक राजा को जागरूक करना और ऐसा कुछ कार्य को करने के लिए दस हज़ार रथो का होना यह है जिसे मैं बेहतर ढंग से करता हूँ|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"जब किन का राजा बीमार था तो उसने कुछ चिकात्सिको को उसे आकर देखने को कहा| उसने घोषणा की यदि कोई चिकित्सक एक दांत को हटा देता है और जिससे उसका दर्द मिट जाता है तो उसे एक रथ इनाम ने दिया जाएगा| वह जो अर्श को मिटाएगा उसे पांच रथ प्रदान किये जायेगे| जितना अधिक उपचार होगा उतने ज्यादा ही रथ उसे मिलेगे| फिर संभवतः कैसे तुम तब भी उनके लिए (रथो के लिए) उसके अर्श का उपचार कर सकते हो? और तब तुम क्या कर रहे होगे उन रथ गाडियों को पाने के लिए? चले जाओ यहाँ से!"

लू के सम्राट ‘ई’ ने यां-हे से पूछा :
"यदि मैं ज्होंग-नि को अपने मंत्रियो को वफादार बनाने का भार सौंपू तो क्या यह राज्य की समस्याओ का समाधान कर देगा?"

"यह बहुत ही खतरनाक होगा! ज्होंग-नि हमेशा कूड़ा ही बाहर निकलता है| वह हमेशा विषयों को अपनी सोच से रंग भरता है और प्रभावशाली भाषण देने में सलन्गित होता है तथा अपने विचार को रखने के लिए हर संभव प्रयास करता है |वह दयाहीन होता है जब वह दुसरे लोगो के लिए निर्णय लेता है तथा न ही वह ज्ञानी है और न ही विश्वशनीय| वह आसानी से स्वीकार करता है जो उसके मन में उत्पन्न होता है और अपनी आत्मा की आवाज़ को दबा देता है| ऐसा संभवतः क्या है जो उसको दुसरो से ऊँचे स्थान पर रखता है? क्या तुम वास्तव में यह सोचते हो की वह इस कार्य के लिये योग्य है? क्या तुम उसे इसकी आज्ञा दोगे? यह बहुत बड़ी गलती होगी ऐसा करना| यदि तुम लोगो को वास्तविकता से दूर करना चाहते हो और ढोंग और पाखंड में लिप्त करना चाहते हो तो तब लोग वास्तव में क्या अनुभव करते है इसे देखने का कोई मार्ग नहीं है| यह बहुत सारी पीढियों से ऐसे ही चल रहा है और इसके रुकने का कोई स्थान प्रतीत नहीं हो रहा है| इस प्रकार के शासन से केवल विपत्तियां ही उत्पन्न होती है|"

पक्ष लेना और जो हुआ है उसे नहीं भूलना यह विपरीत है जिस तरह से स्वर्ग ने वस्तुओ को वितरित किया है| जब एक व्यापारी वस्तुओ के लिए समझोता करता है तब वह इसमें अपने दांत नहीं फंसाता है (ज्यादा हस्तक्षेप नहीं करता है)| यद्यपि जो विषय होते है वे उसे ऐसा करने का अनुभव करते है पर वह अपनी उर्जा को ऐसा करने में व्यर्थ नहीं करता है| उसे बाहय तौर पर तो उससे कष्ट पहुचता है जो धन उसने उधर लिया है और आंतरिक तौर पर उससे कष्ट पहुचता है जो गलत कार्य उसने किये है| हर रात्री को लोग जो उन्हें बाहय तौर पर कष्ट पहुचता है उससे मुक्त होने में सफल हो जाता है लेकिन जो उनके मन में होता है वह लगातार उनसे उनके हिसाब और भण्डारो के अनुरूप प्रश्न पूछता रहता है; वे उससे मुक्त होने का प्रयत्न करते है जो उन्हें आंतरिक तौर पर कष्ट पहुचता है लेकिन यिन और यंग तो अपना कार्य निरंतर करते रहते है| इन कष्टों से मुक्त होना जो बाहय तथा आंतरिक दोनों होते है - केवल एक सिद्ध पुरुष ही ऐसा करने में समर्थ होता है|

कोंग-ज़ि ने कहा;
"मनुष्यों का मन पर्वतो और नदियों को लांघने से भी ज्यादा खतरनाक हो सकता है और स्वर्ग को समझने से भी ज्यादा मुश्किल हो सकता है| स्वर्ग के पास कम से कम वसंत और पतझड़, सर्दी और गर्मी, सूर्योदय और सूर्यास्त के लिए निर्धारित समय होता है| लोगो के पास पाखंड भरा व्यवहार होता है उनके गहरे छिपे भावो को ढकने के लिए| इस प्रकार चाहे वे स्वयं को इमानदार रूप से व्यक्त करे लेकिन वे हर उस चीज़ को समेट लेना चाहते है जहाँ तक उनके हाथ पहुचे; वे स्वयं को अधिकारिक ही दिखान कहते है चाहे वे इसके लिए योग्य ही क्यों न हो; वे चिंतित होते है लोगो को खुश करने के लिए व् अपने लिए ऊँचे पदों को प्राप्त करने के लिए; अपने व्यवहार में दृढ दिखना पसंद करते है लेकन वास्तव में बहुत ही कमजोर होते है; सहज दिखना पसंद करते है लेकिन वास्तव में अपने क्रोध को छिपा रहे होते है| इस प्रकार जो धर्म को इस तरह अपनाना चाहते है जैसे की वह एक रेगिस्तान के बिच में ठंडा पानी हो और इस प्रकार वे इससे इस तरह से दूर भाग जाते है जैसे की यह कोई आग उन्हें जला रही हो|

"इस प्रकार एक सज्जन व्यक्ति लोगो का परिक्षण करने के लिए उन्हें दूर विशेष कार्यो के लिए भेजता है यह जानने के लिए की वे कितने इमानदार आखिर में रह सकते है; वह उन्हें अपने निकट कार्य प्रदान करता है यह जांचने के लिए की वे कितना आदर सम्मान करते है; उन्हें उलझी हुई समस्याओ का समाधान करने को देता है यह जानने के लिए की वे कितने योग्य है और तभी उनके सामने दूसरा प्रश्न रख देता है यह जानने के लिए की वे कितने ज्ञानी है; उन्हें एक शीघ्रता से करने वाला कार्य देता है कम समय में करने के लिए यह देखने के लिए की वे कितनी जल्दी प्रतिक्रिया दे सकते है; उन पर विश्वास कर उन्हें धन का भर सौंपता है यह देखने के लिए की क्या वे दुसरो के साथ सही है; उनके सामने अचानक से संकट खड़ा कर देता है यह देखने के लिए की क्या वे इसके लिए तैयार है; उन्हें मदिरा और शराब का सेवन करता है यह देखने के लिए की वे नशे में क्या कर सकते है; उन्हें विपरीत लिंग के सामने उपस्थित करता है यह जानने के लिए की वे अपनी वासनाओ में कितना नियंत्रित होते है| इन नौ परीक्षणों में से जो योग्य नहीं होता है उस बाहर किया जा सकता है|'

जब ज्हेंग-को-फु को पहली बार पद पर नियुक्त किया गया तो उसने अपने सिर को झुकाकर इसे स्वीकार किया| जब उसे दूसरी बार पदोन्नति मिली तो उसने अपनी कमर पर से झुककर इसे स्वीकार किया| जब उसे तीसरी बार पदोन्नति मिली तो वह पूरी तरह से लेट गया और फिर कक्ष से बाहर आ गया| कौन इस उदहारण का अनुशरण करने का सहास नहीं करेगा| यदि यही एक साधारण मनुष्य के साथ होता तो पहली बार नियुक्त होने पर वह सीधा खड़ा होता और स्वयं पर गर्व करता| दुसरी बार पदोन्नति होने पर वह अपने स्थान पर नाचने लग जाता| तीसरी बार पदोन्नति होने पर वह स्वयं को उपाधि ही दे डालता| तब कितनी ज्यादा शक्ति वे पाया हुआ वे स्वयं को सोचते है तंग और क्सु-यू से!

सबसे ज्यादा हानि किसी के भी सामर्थ्य को पहुच सकती है वह है अपने विचारो पर केन्द्रित होने से या फिर संकुचित सोच रखने से| यदि कोई संकुचित विचारधारा का होता है और वस्तुओ का निरिक्षण अपने दृष्टिकोण से करता है तब यह दृष्टिकोण विध्वंसकारी ही होता है| किसी के सामर्थ्य के लिए पांच संकट मुख्य होते है और उनमे से से जो सबसे ज्यादा क्षति पहुचता है वह दुसरो संकटो के होने का भी कारण बनता है, वह क्या है जो सबसे ज्यादा सामर्थ्य को क्षति पहुचता है? वह जो सबसे ज्यादा क्षति पहुचता है वह है अपने ऊपर इतना अभिमान होना की दुसरे जो करे उसे एक सिरे से ही नकार देना|

यहाँ पर आठ अधिकताये होती है जो कष्ट पहुचाती है, प्राथमिकताओ के लिए तीन आवश्यकताए होती है, और दंड के छह क्षेत्र होते है| शारीरिक तौर पर आकर्षक होना, लम्बी घनी ढाढ़ी का होना, लम्बा चोडा होना, घनिष्ट होना, रोबदार होना, सभी चीजों का पूर्ण अनुपात होना, साहसी होना और अत्यधिक विस्वास का होना - इन सभी गुणों का औरो से ज्यादा होना कष्ट ही पहुचता है| दुसरो के तरीको का नम्रतापूर्वक अनुशरण करना, आदर सहित झुकना, डरते डरते ऐसे व्यवहार करना यह सोचते हुए की तुम दुसरो के समान नहीं हो - इन तीनो चीजों का होना आपको इन तीन प्राथमिकताओ के होने का कारण होता है| ज्ञान का होना और बुद्धिमान होना, अपने आप को हर चीज़ में निपुण समझना, साहसी कार्य करना, बहुत सारा द्वेष रखना, धार्मिक और परोपकारी होना, गलत चीजों को सही करने के लिए ज़िम्मेदारी का होना - इनमे से किसी भी गुण के होने पर आखिर में दण्डित ही होना पड़ता है| वह जो परिस्तिथियों के अनुरूप होकर इनमे से किसी भी भाव को अपनाता है वह जीवन में एक कठपुतली बनकर रह जाता है और वह जो एक विशिष्ट क्षेत्र में ज्ञान में माहिर होता है वह एक पल्लव बन जाता है| वह जो जीवन में एक अधिकारिक पद प्राप्त करता है वह आखिर में एक अनुयायी बनकर रह जाता है| वह जो एक निम्न पद को अपनाता है वह आखिर में एक निंदक ही बनकर रह जाता है|

एक व्यक्ति था जो सोंग के राजा को मिलने गया और उसे वहा पर दस रथ गाड़िया इनाम के तौर पर दी गयी| एक गौरवान्वित बच्चे की तरह जब व आया तो उसने इसका दिखावा ज्हुंग्ज़ी के सामने किया|

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"येल्लो नदी के किनारे एक परिवार रहता है जो अपने लिए पर्याप्त भोजन संग्रह कर लेता है नरकट घास और पेड़ो की टहनियों से कुछ वस्तुओ को बना के| एक बार उसके पुत्र ने नदी की गहराई में गोता लगाया और उसे वहा पर एक मोती मिला जिसका मूल्य हज़ार सोने के हिस्सों से भी ज्यादा था| उसके पिता ने उससे कहा:'एक पत्थर लो और इसे तोड़ दो| एक इस जैसे मूल्यवान मोती को जरूर ही नौ स्तर वाले गहरे जल में ड्रैगन के पास सुरक्षित होना चाहिए| तुम इसे खोज पाए इसका कारण जरूर ही यह है की वह ड्रैगन सौ रहा था| यदि वह काला ड्रैगन जाग गया तो तुम्हे इसका अनुमान भी है की क्या तुम्हारा कोई हिस्सा बचेगा?' सोंग राज्य की गहराई भी किसी नौ स्तर वाली गहरे जल जैसे ही है और उसके राजा का क्रोध किसी काले ड्रैगन से कम नहीं है| इस प्रकार यदि राजा जाग गया तो तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर देगा!"

किसी ने ज्हुंग्ज़ी को एक शाही प्रसंग में हिस्सा लेने का निमंत्रण दिया, ज्हुंग्ज़ी ने उस संदेशवाहक को यह कहते हुए प्रतिक्रिया दी:
"क्या तुमने कभी एक बैल की बलि को नहीं देखा है? उसे नक्काशीदार कपड़ो में सजाया जाता है, सबसे उत्तम अनाज और भोजन कराया जाता है और तब उसे राज मंदिर में ले जाया जाता है| यद्यपि उसे एक बैल की तरह विकसित होने के लिए छोड़ा जा सकता है पर इस समय क्या वह उसे प्राप्त कर पाता है?"

जब ज्हुंग्ज़ी मरने की कगार पर था उसके शिष्य उसके लिए एक बहुत ही भव्य अंत्येष्टि करना चाहते थे|
ज्हुंग्ज़ी ने कहा :
"मैं स्वर्ग और धरती का उपयोग अपने कफ़न की तरह करूगा, सूर्य और चंद्रमा का उपयोग जुडी हुई जेड डिस्क की तरह, तारो को मेरे मोती और कीमती हीरो की तरह और दस हज़ार वस्तुओ का उपयोग मेरे जाने के उपहार स्वरूप| इन सभ साधनों के मेरे लिए होते हुए, कैसे मैं पहले से तैयार नहीं हो सकता हूँ? और इससे ज्यादा मुझे क्या चाहिए?"

एक शिष्य ने कहा :
"हमे भय है की चील और कौवे आपको अपना भोजन बनायेगे|"

ज्हुंग्ज़ी ने कहा :

"ज़मीन के ऊपर मैं चील और कौवो का भोजन बनुगा और ज़मीन के निचे कीड़ो और चीटियों का| इनमे से एक समूह को दुसरे के कारण वंचित करना - क्या यह भेदभाव का कारण नहीं है?"

जब तुम जो अनियमित है उसका उपयोग वस्तुओ को सही एक सम स्तर पर करने के लिए करते हो तब जो सम स्तर पर होता है वह भी वह भी अनियमित हो जाता है| जब तुम जो अप्रमाणित है उसका उपोग किसी चीज़ को प्रमाणित करने के लिए करते हो तब जिसे प्रमाणित किया जा सकता है वह भी अप्रमाणित हो जाता है| वह जो वस्तुओ को पूर्ण स्पष्टता से देखता है वह केवल उससे प्रभावित होता है जिसका उसे बोध होता ही| वह जो वस्तुओ को अपनी आत्मा द्वारा देखता है उसे वह प्रमाण मिल जाता है जिसकी उसे आवश्यकता होती है| वह जो सभी वस्तुओ को समझना चाहता है वह ज्यादा देर तक अपनी आत्मा में चित को स्थिर नहीं कर सकता है और वह मुर्खता से उस अभिव्यक्ति पर निर्भर होता है जो वे दुसरो से आती हुई देखते है इस प्रकार जिस किसी भी चीज़ में वे सफल होते है वह केवल वस्तुओ का बाह्य प्रारूप होता है| क्या यह उदासीन नहीं है!

33.The World

There are many people who've come up with ideas about the best method to govern the world, and all of them believe they have the ultimate answer. Those in ancient times called this method Dao. What exists as a result of it? There isn't anything that doesn't exist because of it. How did the spirits descend into everything? How did brightness exude from everything? The sage finds his place in living life and the king finds his place in accomplishing things. All things originally arose from the same source. One who doesn't depart from their ancestors is called a heavenly person. One who doesn't depart from their own essence is called a spiritual person. One who doesn't depart from what is genuine is called a perfected person. One who takes the heavens as their ancestor, virtue as their roots, Dao as their gateway, and is able to foresee that changes will transform things is called a sage. One who takes benevolence as an imperative, righteousness as a mandate, rituals as proper etiquette, music as a means for creating harmony and who has an aura of kindness and benevolence is called a gentleman. One who uses laws as a means of discrimination, notoriety as a model, conduct as a measuring stick, observable faults as a means for severing relationships and places everything into categories of how valuable they are can be likened to the hundreds of officials who are constantly gnashing at each other. To see their affairs as being ordinary, to see clothing and food as their mainstay, to have children, to raise animals, to store up their harvests, to care for the old, weak, orphaned and widowed while making sure everyone has sufficient nourishment are the principles most people live by.
The people in ancient times were fully equipped with everything they needed. They blended the spiritual and the intellectual, retained the purity of the heavens and the earth, tended to all living things and brought harmony to the world. Good fortune extended to all the various families. Understanding existed between those who came from different genealogies. Bonds were formed between those who couldn't contribute anything and those who contributed a lot. They were unimpeded in the six directions while mastering the four seasons. Small or large, refined or rough around the edges - they were all carried along together since there wasn't anything that didn't exist because of it (Dao).
Those who found clarity and uses for the various theories passed down the methods used through the generations and caused many others to have great esteem for them. In the states of Zhou and Lu there are scholars wearing belts pinching their robes in at the waist (common garb to denote a scholar from the rest of the people) who study under many masters who have the ability to decipher the texts of the Shi, Shu, Li and Yue.
The Shi (Shi Jing "Book of Odes") explains the aspirations of the emotions.
The Shu (Shu Jing "Book of History") explains historical records.
The Li (Li Ji "Book of Rites") explains proper behavior and etiquette.
The Yue (Yue Jing "Book of Music") explains how to use music to create harmony.
The Yi (Yi Jing "Book of Changes") explains the transformations of Yin and Yang.
The Chun Qui ("Spring and Autumn Annals") explains the hierarchy of official positions.
They've spread these teachings throughout the world and set up practices involving them within China. Hundreds of philosophical schools have sprung up over time and many of them follow what's included in those books.

The world is in a state of great chaos, the worthy and the wise can bring no clarity, and Dao and virtue have been separated. Throughout the world most people latch on to one way of seeing things and use it to promote themselves over others. As an analogy: The ears, eyes, nose and mouth each impart something to the rest of the body, but they can't impart things to each other. And yet the hundred different schools with their various methods all claim to have the best doctrine and look for the opportunity to show how useful they are. With all this going on you wouldn't be able to find a single one of them anywhere who might admit they're wrong about anything they believe. They criticize the inherent goodness of the heavens and the earth, divide and analyze the principles of all living things, and go into great detail inspecting how perfect the ancient people might have been. Few of them have the ability to find the goodness in the heavens and the earth or to tolerate the insights inherent in their own spirits.

That's why those who have wisdom keep it within while submitting to the control of the rulers around them. They hide their insights and tightly prevent them from issuing forth while the rest of the people in the world go about

fulfilling their own desires and claiming their way is the only way. It's so sad that the hundred schools keep on expanding without taking a look back and won't shut up! The scholars in future generations unfortunately won't be able to see the pure simplicity of the heavens and earth, nor the great system followed by the ancient people. Instead those who become skillful expounding on Dao will shatter the world.

Not to pass on the necessity for extravagances to future generations, not to disregard any of the other living things in this world, not to try to evaluate everything through one's own perceptions of weighing out their value, to restrain oneself with codes of conduct and to be prepared for the anxieties that might occur in the future. The ancients thought this was a completely adequate method to move forward with Dao.

Mo Di (Mozi) and Qin Gu Li (one of Mozi's closest disciples) learned of these practices and were delighted. However, they got very carried away with trying to add to what were already great concepts. Mozi wrote a piece called "Against Music" and made a definitive statement in "Moderation in Expenditure", saying that life should not be filled with song and there should be no special preparations made for death.

(Note: Both "Against Music" and "Moderation in Expenditure" were aimed at criticizing the wealthy and the rulers for spending so much money on fancy musical instruments and expensive coffins and clothing for their corpses to the detriment of the rest of the people. Mozi went to the extreme of condemning all music and funeral rites.)

Mozi exuded love and consideration for others and was against the idea of warfare. His Way was to not get angry, to have a fondness for learning and to express love universally. In that way he didn't differ from the ancient rulers and was similar to them in most respects, except for the fact that he tore down their rituals and music.

Huang Di had his Xian Chi music, King Yao had his Da Zhang, King Shun had his Da Shao, King Yu had his Da Xia, King Tang had his Da Huo, and King Wen had the music of the Bi Yong, while King Wu and Zhou Gong fashioned the Wu music. Funeral ceremonies in ancient times prescribed the proper rituals for the eminent and the humble and the different regulations that applied to those who were superior and those who were inferior. The emperor was allotted seven layers of inner and outer coffins, the feudal dukes and princes were allotted five, high ministers were allotted three, and knights were allotted two. Now Mozi single-handedly tried to do away with all singing and all funeral rituals. Having a plain wooden coffin three inches thick with no outer coffins was what he considered should be set up as the rule. By telling others to do those things I'm afraid he really didn't love people, and by doing those things himself I doubt he had any love for himself either. In the end Mozi's Way was defeated because when people wanted to sing he wouldn't let them, when they wanted to shed tears he wouldn't let them, and when they wanted to listen to music he wouldn't let them. It makes you wonder which species of life he belonged to! To be weighted down with hardships in life, cast aside like rubbish at death and to be in constant fear of retribution along the way makes people depressed and pessimistic, and everything they go through seems fraught with disaster. I'm afraid this couldn't possibly be considered the path of a sage. To go counter to the hearts of those in the world is something the world just couldn't endure. Mozi himself may have been able to live that way, but who else in the world could do it? By removing himself so far from what was actually happening in the world, he was also very far away from being able to guide it in any way.

Mozi made this statement of praiseworthy actions:

"In ancient times Yu stopped the waters that were flooding the countryside by dredging new channels for the Yangtze and Yellow Rivers which allowed the waters to flow into the channels in four directions throughout China. This created three hundred rivers, three thousand streams and countless small rivulets. Yu personally carried baskets and dug with shovels in order to make trenches that would connect all the rivers in the world. The flesh was scraped off his calves and the hair was rubbed off his shins. Heavy rains washed through the hair on his head and strong winds combed it while he was working hard to set up the numerous small states. Yu was a great sage and the toils he went through to help the world can't be matched."

And so it came to pass that those who followed Mozi's precepts went to the extreme by wearing untanned animal skins and coarse clothing, shuffling along on torn sandals, never stopping to take a rest day or night and driving themselves to the most excessive suffering. They say: "If we're not able to exemplify those things then we wouldn't be following Yu's Way and we'd be too lacking in effort to be called Mohists."

The disciples of Xianli Qin, the followers of Wu Hou, and the Mohists of the south such as Ruo Huo, Yi Chi, Deng Linzi, and their like all recite the Mohist Canon, but they put each other down by citing their differences and claiming that the other sects aren't true Mohists. They slander each other with arguments about the "hard and white" and "sameness and difference". They responded to each other with comparisons of the incompatibility of "odds and evens". They each regarded their own Grand Master to be a sage, all of whom wished to be given the position of ultimate authority and hoped to be revered for centuries to come. Even to this time that issue hasn't been resolved. Modi (Mozi) and Qin Gu Li were right in their ideas but wrong in their practices. This caused later Mohists to feel that all they had to do was suffer to the extent of being without flesh on their calves and hair on their shins to prove they outshone others. Chaos reigned and order descended. Although Mozi had the best intentions in trying to help the world, he never attained what he was seeking. Although he became withered and worn in his pursuits, he never gave up trying. He definitely had the ability of a scholarly person.

Not to accumulate a set of rules for others, not to adorn oneself with pretentious things, not to be without regard for other people, not to be jealous of what other people have, sincerely hoping for the world to be a safe place where everyone could live in peace, and to stop when nourishment for others and oneself is sufficient - all of these things depict a purified heart. The ancients thought this was a completely adequate method to move forward with Dao.

Song Jian and Yin Wen learned of these practices and were delighted. They went about their business wearing hats in the shape of Mount Hua to distinguish themselves.

(Note: Philosophers of different schools wore hats of various shapes to distinguish themselves from others, and it's been said that Song Jian and Yin Wen chose to wear a hat that was flat on top, like Mount Hua, to denote equality - that no one should be considered to be higher than another.)

When dealing with all the living things they started out by accepting and forgiving those who felt alienated. They set forth the idea that "the heart is enduring" and instructed that the heart behaves naturally in that way. Feeling that anything entering the ears can bring cheerfulness and by transferring that feeling to whatever one comes across within the four seas (the world) they wanted to instigate an acceptance of those ideas as the law of the land. By getting the people to see that they didn't have to feel humiliated if someone insulted them they hoped to help people stop fighting with each other. By getting the people to stop attacking each other within the confines of their own homes they hoped to help future generations do away with war. They advanced these ideas by traveling throughout the world, speaking to those in positions of authority and teaching the common people. Even though their words weren't met with a warm reception in the world, they made a lot of noise and wouldn't abandon their mission. Therefore it was said about them: "The high and the lowly are sick of the sight of them and yet they still demand to be seen."

Although they kept trying to do so many things for other people, they did very little for themselves. They'd say: "We'd be pleased to accept just five pints of rice. That's quite sufficient." The teachers probably never got their fill and surely their disciples went around hungry all the time, but they never forgot their zeal for helping the rest of the world and wouldn't stop to take a rest day or night, saying: "We must keep saving other's lives!" What high intentions these scholars had for rescuing future generations! They'd say: "A gentleman doesn't look to criticize others nor does he adorn himself with pretentious things." They figured that if someone was not bringing benefits to the rest of the world, they shone an inadequate light. Their outer work consisted of putting an end to aggression and warfare in others, and their inner work consisted of putting an end to desires and passions within. When dealing with small or large matters, with minor details or general theories, their whole existence revolved around those ideals and nothing more.

Being impartial instead of favoring a specific ideal, to change easily instead of sticking to a previous perception, being independent instead of following the mandates of another, showing delight in things as they are without being two-faced, not trying to come to conclusions, not using cleverness to create schemes, and not showing favoritism between things - these things show an ability to join with anything. The ancients thought this was a completely adequate method to move forward with Dao.

Peng Meng, Tian Pian and Shen Dao learned of these practices and were delighted. Their main gist was to equalize all the ten thousand things. They said: "The heavens is able to provide a cover for things but it isn't able to provide support from below. The earth is able to provide support from below for things but it isn't able to provide a cover. The great Dao is able to contain things and it isn't able to reject any of them." They knew that all things have that which they accept and that which they don't accept. Therefore they said: "By choosing one thing over another, something is cast aside. By sticking to one doctrine over another, something is missed. By connecting with Dao nothing is lost."

So Shen Dao decided to give up on trying to understand anything, let go of his sense of self and follow along with whatever happened to occur. He just let things wash over him in an undisturbed way, considering that to be the basic principle of Dao. He said: "Those who think they know what they don't know have very shallow knowledge and will end up causing harm to themselves and everyone around them." Sparse with his words and actions, he accepted no position of authority and laughed at those who were esteemed as being worthy by the world. Setting himself free from restrictions, he didn't take on any specific demeanor and denied the authority placed in the sages by the world. Hammering and chopping away at what was already established as appropriate, he rolled and flowed along with other things. Abandoning all concepts of what is and what isn't, his indifference allowed him to avoid being involved in affairs. Not having a Master to set up as an exemplar and having no understanding of what should come first or last, he merely looked up to what came naturally. He'd respond if he was pushed and go along if he was dragged. He seemed like the wind floating in any direction, like a feather spinning, like a grinding stone revolving - perfectly attuned to the moment and not giving any opposition. He was never at fault whether he was in motion or keeping still, so he never got blamed for anything. How could that be? Because being without knowledge of anything, without establishing rules for oneself to cause anxiety and without using knowledge to try to tie everything together, whether one is still or in motion they don't depart from the principles of nature. In that way they can spend their whole lives not being praised for anything.
Therefore Shen Dao said:
"If I can merely be someone who has no knowledge of anything, then I'd have no use for worthiness or sagehood. A lump of earth doesn't lose Dao."
The powerful and talented scholars would get together and laugh at him, saying:
"The Dao of Shen Dao goes contrary to the behavior of a living person and is more suited for the conduct of a dead person."
It's no wonder he's been regarded as strange.
Tian Pian was on a similar path. He studied under Peng Meng, but what he received wasn't a teaching at all. Peng Meng's teacher would say: "The people of Dao in ancient times reached the pinnacle where nothing was right and nothing was wrong and saw no need to go any further." They (Tian Pian and Peng Meng) were like wind blowing through a cavernous space. What more could they say? People were always coming up with opposing viewpoints, and since they wouldn't take one side over another they couldn't avoid having their own theories carved up like old fish. Anything they claimed to be Dao was discredited as not being Dao and since they couldn't say they were right they couldn't avoid being considered wrong. Tian Pian, Peng Meng and Shan Dao did have a knowledge of Dao, but even so, those who hear about their theories take it all with a grain of salt.

To take the root as being perfect and the things which arise from it as being unrefined, to consider accumulation as a lack, and to be indifferent to anything other than residing with insights into the spirit. The ancients thought this was a completely adequate method to move forward with Dao.
Guan Yin and Lao Dan (Laozi) learned of these practices and were delighted. They established their theories on the concept that there was a constant vacuity in existence, made their primary ideal that of a Great Unity, used as their model suppleness, weakness, humility and ineptness, and retained a sense of emptiness so as not to destroy the true nature of any living thing.
Guan Yin said:

"By not being self-absorbed, all things will reveal themselves. When in motion be like water, when keeping still be like a mirror and when responding be like the natural sounds emanating from all around. Be without a trace, as though having vanished. Be still and silent like water in an undisturbed pond. One who is adaptable experiences harmony. One who grasps experiences loss. Never be at the lead but always stay behind."
Lao Dan said:
"Know the ways in which you act aggressively but guard your passivity. Become a conduit in the world. Know the ways in which you receive honor but guard your disgrace. Become a valley to the world."
Everyone else tried to take the lead, but he alone trailed at the rear, saying that he would accept the dregs of the world. Everyone else tried to grasp the Truth, but he alone remained in vacuity without filling up his internal storehouses. In that way he had more than enough of everything and was quite secure in having more than enough. The movements of his body were slow and relaxed, not expending excess energy, as he was without any specific goals and he laughed at the idea of being clever. Everyone else was busy seeking their fortunes, but he alone by being flexible remained whole, saying that naturally reacting to what happens in each moment allows one one to avoid being blamed for anything. He penetrated deeply to the roots of things and restrained himself from discipline, saying that what's hard will be smashed into powder and what's sharp will be filed down. He was always tolerant toward things and didn't manipulate people. It can be said that he'd reached the pinnacle. Guan Yin and Lao Dan found the abundance of those in the past and were the most genuine among people!

To be indistinct and boundless without a form while transforming and changing without consistency, to join as easily with death as with life, to join equally with the heavens and earth, to join in moving along with both the spirit and intelligence, and to absentmindedly forget why things are the way they are and have no sense of a destination while realizing that all things are naturally grouped together effortlessly. The ancients thought this was a completely adequate method to move forward with Dao.

Zhuang Zhou (Zhuangzi) learned of these practices and was delighted. With his exaggeratedly drawn-out stories, his absurd and light-hearted words and his unevenly irregular phrases he continuously spoke freely and openly without regard to favoring anyone yet he didn't promote extremely unorthodox opinions about anything. Since he thought the world was so mired in the mud that they wouldn't be able to understand serious language, he used words that were gracefully redundant, repeatedly reiterating what would ring true and told fables most people could find a way to relate to. He took only the heavens and earth to be the pure spirits that flow in and out among us, but didn't treat the rest of the living things as inept infants who were barely able to walk and didn't scold anyone for being right or wrong. In that way he left room for future generations to expand. His writings, although rare and precious, and continuously seem to be lashing out at something, don't actually cause damage. His phrases, although uneven and irregular and seem to be giving advice, can be observed from many angles. So, what he says can be fully substantiated as his own writings and not as referring to what has already been said by others.
Above he wanders with creation, and below he makes friends with what's outside the realms of life and death and without a beginning or an end. As to the source, he penetrates it right to its roots, going recklessly into its vast bowels. As for the ancestors, it could be said that he made adjustments to what they deemed was proper and went beyond what they were satisfied with. Besides that, he comfortably responded to change and easily separated himself from things. The concepts he presents are inexhaustible and what he brings to the table can't be ignored. His sharpness may be difficult to get to the bottom of, but one would never stop trying.

Hui Shi had many different ways of looking at things, and his writings could fill five chariots. His path was to oppose and contradict, and his words were meant to throw people off their mark. He would try to elaborate on the ideas of others by saying things like:
"What's called the biggest of all things is so large that nothing exists outside of it. What's called the smallest of all things is so small that nothing exists inside of it.
"What's without depth can't accumulate anything even though it's a thousand miles across.
"The heavens are as low as the earth and the tops of mountains are level with swamplands.

"When the sun reaches its apex it starts to descend, and when a thing is born it starts to die.
"On a grand scale things are quite similar but on a smaller scale things are different, so when viewed from the smallest scale things are quite different. If all living things gradually develop similarities and differences, then when seen from a larger scale things eventually become quite different.
"Going in a southerly direction one would eventually come to the end of the earth, but there actually is no end to the earth. So one could go to Yue today and could be said have arrived yesterday.
"A concentric circle has a starting point and an ending point.
"We know the world has a central point, as a bird that flies to the north will end up in the south.
"Since all things revolve around a common love, the heavens and earth are made of one substance."
Hui Shi thought these statements were great, and when the rest of the world took heed of them it opened up a whole new area for disagreements. Those who enjoyed debates had a great time adding some of their own:
An egg has hair.
Chickens have three feet.
The whole world is contained within the city of Ying.
A dog can be considered to be a sheep.
Horses lay eggs.
Toads have tails.
Fire isn't hot.
Mountains arose from holes.
Wheels don't spin on the ground.
Eyes don't see.
Fingers can't touch anything.
What is touched can't be released.
A tortoise is as long as a snake.
A t-square doesn't make a right angle.
A compass can't be used to draw a circle.
A chisel can't penetrate a piece of wood.
The shadow of a bird in flight never moves.
The metal tip of a swiftly moving arrow can at the same time be going forward and staying still.
Not all dogs are dogs.
A yellow horse and a black ox make three.
A white dog is black.
An orphaned colt never had a mother.
A stick measuring one foot in length can be broken in half every day and in a thousand years some of it will still remain.

The debaters of the times could join in discussions about these things with Hui Shi for their whole lives without getting tired of it. Huan Tuan and Gong Sun Long were debaters like that. They could dazzle people's minds and change their outlooks, but even though they were able to out-talk anyone with their cleverness they weren't able to reach into their hearts. That was the limitation of those kinds of debaters.
Hui Shi could go all day debating with others using his cleverness, and he used his special abilities to debate even the strangest things with anyone in the world. That was as deep as he went. Nevertheless, he kept chattering and considered himself to be an extremely worthy person because of that ability and would say that he was as magnificent as the heavens and earth! Shi was pretty outspokenly aggressive, but he was without any real skills.

Down in the south there was an eccentric person named Huang Liao who asked why the heavens don't fall down, why the earth doesn't collapse and what caused there to be wind, rain and thunderstorms. Hui Shi didn't shrink from the challenge to give a response. He didn't hesitate for a moment before offering up answers. He went on a tirade about all the ten thousand things, going on and on without taking a break. Even though he thoroughly covered so

many issues, he thought he might have missed a few, so he went on talking about other things that hadn't even been brought up. He contradicted the things others believed in order to get a reputation for himself, and there wasn't a single group of people who didn't find him offensive. His virtue was so weak and his bombasity was so strong that what he came out with was muddy and difficult to understand. If we look at Hui Shi's abilities from the perspective of the way of the heavens and earth it could be compared to the labors of a single mosquito or house fly. How could they possibly be of use to do anything!

He was quite adequate in the one area for which he was praised, but it could be said that if he'd paid more attention to Dao he would have gone much further. Hui Shi wasn't able to be satisfied within himself with what he was doing, so he went on continuously trying to take apart everything and ended up simply getting a reputation as a good debater. The poor guy! Hui Shi spent most of his time displaying his talents like a show horse who doesn't really get anywhere. He just ran around in circles looking to contradict everything. He energetically tried to outshout his own echo and move faster than his own shadow. How sad!

३३|यह संसार

बहुत सारे लोग है जिनके पास विभिन्न विचार और मत होते है की इस संसार का नियंत्रण कैसे किया जाए, और वे सभी सोचते है की उनके पास सबसे सही जवाब है| लेकिन प्राचीन समय में इस तरीके को ताओ कहा जाता था| इसके कारण स्वरूप ही सभी वस्तुओ का अस्तित्व हुआ? ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो इसके कारण अस्तित्व में नहीं आई है| आत्माए कैसे सभी वस्तुओ में निचे आ गयी? कैसे सभी वस्तुओ से प्रकाश का उदय हुआ? एक साधू अपना स्थान जीवन को जीने में पाता है और एक राजा अपना स्थान वस्तुओ को प्राप्त करने में पाता है| वास्तव में सभी वस्तुओ की उत्पत्ति एक ही स्त्रोत से हुई है| वह जो अपने पूर्वज से अलग नहीं होता है उसे नैसर्गिक कहा जाता है| वह जो अपने मूल तत्व से भिन्न नहीं होता है उसे अध्यात्मिक व्यक्ति कहा जाता है| वह जो वास्तविकता से अलग नहीं होता है उसे सिद्ध पुरुष कहा जाता है| वह जो स्वर्ग को अपना पूर्वज मानता है, सामर्थ्य को अपना मूल और जो ताओ व् इसके द्वारा और वस्तुओ में होने वाले परिवर्तनों को देख सकता है उसे एक साधू कहा जाता है| वह जो परोपकार को आवश्यक मानता है, धर्म को अनिवार्य मानता है, रस्मो को आधार मूल्य मानता है, संगीत को सामंजस्य स्थापित करने का साधन मानता है तथा जिसके पास धर्म और परोपकार का एक प्रभामंडल सा होता है उसे एक सज्जन पुरुष कहा जाता है| वह जो कानून का उपयोग भेद भाव करने में करता है, कुख्याति को एक प्रारूप की तरह, आचरण को मापने का साधन की किस तरह दोषों को संबंधो के बिच देखता है और सभी वस्तुओ को उनके मूल्य के अनुसार श्रेणीबद्ध करता है उन्हें हजारो अधिकारियो की तरह देखा जा सकता है जो निरंतर एक दुसरे की निंदा करते रहते है| विषयों को साधारण रूप से देखना, भोजन और वस्त्रो को आधार मानना, बच्चो का होना, जानवरों को पालना, अपने अनाज का भण्डारण करना, बुजर्गो, कमजोरो, विधवाओ, अनाथो की देखभाल करना यह देखते हुए की क्या उन्हें सही पोषण मिल रहा है या नहीं यही सिद्धांत है जिसके अनुसार बहुत सारे लोग जीते है| पुराने समय में लोगो के पास वह पर्याप्त होता था जिसकी उन्हें आवश्यकता होती थी, वे जो अध्यात्मिक और ज्ञानी होते थे उनके(लोगो के) साथ एक होते थे, स्वर्ग और धरती की शुद्धता को बनाये रखते थे, सभी जीवित वस्तुओ के प्रति सही होते थे और संसार में सामंजस्य स्थापित करते थे| सौभाग्य सभी परिवारों पर अपनी कृपा करता था| जो विभिन्न वंशावली से होते थे उनके बीच समझ होती थी| जो लोग कुछ योगदान नहीं दे सकते थे और जो बहुत कुछ योगदान दे सकते थे उनके बीच एक मेल भाव सा स्थापित होता था| वे चारो ऋतुओ पर स्वामित्व करते हुए सभी दिशाओ में बेरोक घूमते थे| छोटा या बड़ा, किनारों पर से कठोर या मुलायम - सभ कुछ एक साथ होता था चूँकि वहा ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जिसका अस्तित्व उसके (ताओ) के कारण नहीं था| वे जिन्होंने स्पष्टता को प्राप्त कर लिया था और विभिन्न सिद्धांतो के लिए इसका उपयोग किया, जिन्होंने विभिन्न तरीको को पीढियों से आगे बढाया और बहुत सारे लोगो को अभिमानित होने का कारण दिया|

ज्होऊ और लू राज्य में बहुत सारे विद्वान् अपनी कमर पर पुस्तके बांधे फिरते है और विशेष प्रकार के परिधान धारण करते है, वे है जो बहुत सारे आचार्यो से शिक्षण प्राप्त करते है और सही, शु, ली और युए के आलेखों को पढ़ते है|

सही-जिंग(कसीदो की पुस्तक)- भावो की महत्वाक्षाओ की व्याख्या करती है|

शु-जिंग(इतिहास की पुस्तक) - विभिन्न एतिहासिक आलेखों की व्याख्या करती है|

ली-जी(अनुष्ठानो की पुस्तक) - सही आचरण और मूल्यों की व्याख्या करती है|

युए-जिंग(संगीत की पुस्तक)- व्याख्या करती है की कैसे संगीत का उपयोग माधुर्य स्थापित करने के लिए किया जाए|

यी-जिंग (परिवर्तनों की पुस्तक) - यिन और यंग के परिवर्तनो की व्याख्या करती है|

वसंत और पतझड़ की कथा - विभिन्न अधिकारिक पदों के कर्म की व्याख्या करती है|

उन्होंने इन शिक्षाओ को सम्पूर्ण संसार में विस्तृत किया और उनमे कहे गए अभ्यास को पुरे चीन में स्थापित किया| सैकड़ो मतों के पंथ इनसे उत्पन्न हुए और जो इनमे लिखा है उसका अनुगमन कर रहे है|

यह संसार बहुत ही कोलाहल की स्थिति में है, जो बुद्धिमान और ज्ञानी है वो किसी स्पष्टता को प्राप्त किये हुए नहीं है, ताओ और सामर्थ्य को अलग कर दिया गया है| इस संसार में ज्यादातर लोग वस्तुओ को देखने के एक ही दृष्टिकोण में लिप्त है और इसका उपयोग स्वय को दुसरो से ऊँचा स्थापित करने में लगे हुए है| एक समानता के तहत: आँख, कान, नाक और मुंह इस शरीर का भाग होते है लेकिन तब वे एक दुसरे का भाग नहीं होते है| फिर भी विभिन्न सिद्धांतो को मानने वाले मत उत्पन्न हो गए है और उनमे से प्रत्येक अपने तरीके को दुसरो से बेहतर बताता है और हमेशा इस अवसर में रहता है की कैसे उनका प्रदर्शन किया जाए| इस सभके ऐसे ही चलते रहने के साथ तुम उनमे से किसी एक को भी नहीं खोज सकते हो जो यह मानने को तैयार हो जाये की जिसे वह मानता है उसमे से एक भी चीज गलत है| वे स्वर्ग और प्रथ्वी की निहित माधुर्य की निंदा करते है, सभी

जीवित वस्तुओ के सिद्धांत का मूल्यांकन करते है तथा उसे विभाजित करते है, और निरिक्षण करते हुए हर पहलु को ध्यान से देखते है की प्राचीन लोग कितने सिद्ध हो सकते थे| उनमे से कुछ के पास ही स्वर्ग और पृथ्वी के निहित माधुर्य को देखने की योग्यता और अपनी आत्मा को जानने की आंतरिक दृष्टि होती है|

यही कारण है की जिनके पास ज्ञान होता है वे इसे अपने अंदर ही रखते है और स्वयं को इस संसार के शासको के सामने प्रस्तुत कर देते है| वे अपनी सूक्ष्म दृष्टि को छिपा लेते है और इसे बाहर प्रकट होने से बचाते है जबकि इस संसार में बाकि लोग अपनी इछाओ की पूर्ति में लगे हुए होते है और अपने ही मार्ग को सर्वश्रेष्ट बताते है|यह बहुत ही उदासिन है की ये विभिन्न प्रकार के मत लगातार बढ़ते ही जा रहे है और कही पर इनके रुकने की भी संभवना नजर नहीं आ रही है! अगली पीढियों में आने वाले विद्वान् स्वर्ग और पृथ्वी के सादेपन को देखने में समर्थ नहीं होगे और न ही इस महान मार्ग का पुराने लोगो द्वारा अनुगमन किया गया| इसके आलावा जो ताओ की बड़ी कुशलता से व्याख्या करते है वे इस संसार को खंडित कर देते है|

अपव्यय की जरूरतों को भविष्य की पीढियों तक नहीं पहुचना, और किसी भी जीवित वस्तु की इस संसार में उपेक्षा नहीं करना, वस्तुओ का अपने दृष्टिकोण से मुल्यांकन नहीं करना, स्वयं को आचार संहिता में रखना और भविष्य में होने वाली चिंता और दुविधाओ के लिए तैयार रहना - प्राचीन लोग सोचते थे की यह बिलकुल पूर्ण तरीका है ताओ के साथ आगे बढ़ने का|
मो-दी (मोजी)और उसका सबसे प्रिय शिष्य किन-गु-ली ने इन साधनाओ को सिखा था और बहुत ही खुश थे| हालाँकि उन्होंने इसमें और ज्यादा जोड़ने की कौशिश की जो पहले से ही पूर्ण है| मोजी ने एक चीज़ (पुस्तक) लिखी जिसे कहा जाता है "संगीत के विपरीत" और एक और पुस्तक में अपने वाक्यों को कहा जिसे हम (व्यय में संयम) के नाम कहते है, यह कहते हुए की जीवन को संगीत से नहीं भरना चाहिए और मृत्यु के लिए कोई विशिष्ट तैयारी नहीं करनी चाहिए| (ये दोनों पुस्तके शासको और अमीरों की उनके खर्चो के लिए निंदा करती थी जो वे अपने वाद्ययंत्रो और मृत्यु के बाद आलिशान कफन पर खर्च करते थे, मोजी ने सभी प्रकार के संगीत और अंत्येष्टि अनुष्ठानो का विरोध किया था)
मोजी ने प्रेम और दुसरो को समझने को महत्व दिया और वह युद्ध संघर्ष के विरोद्ध में रहा| उसका मार्ग क्रोधित होने का नहीं था, सिखने की चाहत रखना और सभ के लिए एक प्रेम का होना था| इस प्रकार से वह प्राचीन शासको से भिन्न नहीं था और बहुत सारे भावो में उनके अनुरूप था, इसे छोड़कर की उसने संगीत और अनुष्ठानो की अवहेलना की थी|
हुंग-दी के पास उसका क्सियन-ची संगीत था, राजा याओ के पास उसका डा-जहाँग, राजा शुन के पास उसका डा-शो, राजा यु के पास उसका डा-क्सिया, राजा तंग के पास उसका डा-हो और राजा वें के पास उसका बी-योंग संगीत था, जबकि राजा वू और राजा ज्होऊ 'वू' संगीत में रुचिकर थे| प्राचीन समय में अंत्येष्टि संस्कारो, निर्धारित अनुष्ठानो को विशिष्ट और विनम्र लोगो के लिए कहते थे जबकि जो ऊँचे स्थान पर होते हे और निचे स्थान पर होते थे उनके लिये अलग अलग नियम होते थे| एक शासक को सात कफनो द्वारा ढका जाता था, सामंतो को पांच कफ़न प्रदान किये जाते थे, उच्च अधिकारियो को तीन और सिपाहियों को दो| और अब मोजी ने सभी प्रकार के संगीत और अंत्येष्टि रशमो को स्वयं अकेले से ही हटाने का प्रयत्न किया है| एक सीधे तीन इंच मोटे लकड़ी जैसे कफ़न का होना है जो वह सभ के लिए लागु करना चाहता है| उसके द्वारा और लोगो को ऐसा बताने की कौशिश करना, मुझ भय है की वह वास्तव में लोगो से प्रेम नहीं करता है और उसके द्वारा अपने लिए ऐसे चीजों को करते हुए देखना मुझे यह भी भय है की वह स्वयं को भी प्रेम नहीं करता है| इस प्रकार होकर वह स्वयं को ही असफल कर रहा है क्योंकि जब लोग गाना चाहते है तब वह उन्हें गाने नहीं देता, जब वे आंसू बहाना चाहते है तब वह उन्हें रोने नहीं देता, जब वे संगीत सुनना चाहते है वह उन्हें सुनाने नहीं देता| यह आपको यह सोचने के लिए मजबूर करता है की वह किस प्रजाति का जीव है! जीवन के कष्टों से दबे हुए होना, मृत्यु को निरर्थक मानना और प्रतिकार करने का निरंतर भय बने रहना यह लोगो को उनके मार्ग पर चिंतित और निराशावादी बना देता है और हर चीज़ को जिसे वे देखते है संकट से घिर जाती है| मुझे भय है की यह एक साधू का मार्ग नहीं है| इस संसार में रहने वे लोगो के विपरीत होना एक ऐसे चीज़ है जिसे यह संसार सहन नहीं कर सकता है| मोजी स्वयं ऐसे जीने में योग्य हो सकता है लेकिन उसके आलावा कौन ऐसा कर सकता है? अपने आप को वास्तव में जो हो रहा है उससे इतना दूर कर वह इस मार्ग में मार्गदर्शन करने से ही दूर हो गया है| मोजी ने अपने वाक्यों में प्रशंसनीय कार्यो को भर दिया है |

"प्राचीन समय में यु ने अपने राज्य में जल को रोक दिया था नयी नहरे बनाकर जो की यांगतज़े और येल्लो नदी से गुजरती थी जिसके फलस्वरूप पुर चीन में चारो दिशाओ में जल का प्रवाह हुआ| इसने तीन सौ नदियों को जन्म दिया, तीन हज़ार धाराओ को और छोटे छोटे जलाशयों को| यु ने व्यकिगत तौर पर मिटटी को हटाया और कुदाल से उसे खोदा ताकि वह संसार की सारी नदियों को आपस में जोड़ सके| उसका मांस उसके शरीर पर से हट गया और उसके बाल उसकी पिंडलियों तक आ गए| जब वह बहुत से छोटे राज्यों को स्थापत करने का प्रयत्न कर रहा था और कठोर मेहनत कर रहा था भारी वर्षा ने उसके पुरे सर पर से

बालो को धोया और तेज आंधी ने उनको कंघा किया| यु एक बहुत ही महान साधू था और जिन कष्टों को उसने सहन किया है इस संसार को सहायता पहुचने के लिए उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता है|"

और जब इसे आगे ले जाने की बात आई तो वे जिन्होंने मोजी के विचारो का अनुगमन किया था, वे नित्यंत तक गए पहने हुए अपनी झुलसी हुई जानवरों की खालो को और अशिष्ट परिधानों को, अपने फटे हुए जूतों में इधर उधर घूमते हुए, दिन रात बिना विश्राम के लिए रुके और ले गए अपने आप को सबसे कठोर कष्टों और पीड़ा तक| वे कहते है:'यदि हम ऐसा उद्धरण (कष्टों को सहने का) देने में सफल नहीं होते है तो हम यु (राजा यु) के मार्ग का अनुशरण नहीं कर रहे है और तब हम मोहिस्त कहलाने के लायक भी नहीं है|"
क्सिंली-किन के शिष्य, वू-होऊ के अनुयायी और दक्षिण के मोहिस्ट्स जैसे की रो-हो, यी-ची, देंग-लिंजी ये सभी एक ही मोहिस्त मत को मानते है लेकिन फिर भी एक दुसरे की विषमताओ और पृथकताओ को चिल्लाते है एक दुसरे को यह कहते हुए की तुम एक सचे मोहिस्त नहीं हो| वे एक दुसरे को सही या गलत कहकर अपवाद करते है और अपने बीच की विषमताओ का व्याखान करते है| वे एक दूसरी के साथ विभिन्न संदर्भो में तुलना करते है जैसे की उनमे क्या अच्छा है और क्या बुरा है| वे अपने बड़े आचार्य को ही एक साधू मानते है उनमे से हर कोई चाहता है की उन्हें ही परम सत्ता हासिल हो और उनका गुण गान आने वाली सदियों में भी किया जाए| इस समय तक भी इस मुद्दे का समाधान नहीं हो पाया है| मोजी और किन-गु-ली अपने सिद्धांतो में तो सही है लेकिन अपनी साधना में सही नहीं है| इस के कारण आगे आने वाले मोहिस्त सोचते है की उन्हें आखिर तक कष्टों को भोगना होगा बिना उनके शरीर पर कोई मांस बचे और बिना उनके बाल की चमक के यह प्रमाणित करने के लिए की वे ही सबसे उत्तम है| कोलाहल का राज चारो और हो गया है और कर्म व्यवस्था बिगड़ गयी है| यद्यपि मोजी की सारी इच्छा इस संसार की सहायता करने की थी लेकिन उसे कभी नहीं मिला जो वह चाहता था| यद्यपि वह अपने कार्य में मलिन और जीर्ण हो गया लेकिन उसने कभी कौशिश करनी नहीं छोड़ी| निश्चित ही उसके पास एक विदुर व्यक्ति के गुण थे|

दुसरो के लिए नियमो को नहीं बनाना, स्वयं को बनावटी परिधानों से नहीं सजाना, लोगो के प्रति किसी द्वेष से मुक्त होना, जो और लोगो के पास है इस कारण उनसे इर्ष्या नहीं करना, और इसकी उम्मीद लगाये रखना की यह संसार जीने के लिए एक सुरक्षित स्थान है जहाँ हर कोई शांति से रह सकता है तथा जब दुसरो का और स्वयं का पर्याप्त पोषण हो रहा हो तब रुकना जानना - ये सभी चीज़े एक शुद्ध ह्रदय में स्थापित होती| प्राचीन लोग सोचते थे की यह ताओ के साथ बढ़ने का बिलकुल पूर्ण मार्ग है|
सोंग-जियन और यिन-वें ने इस साधना को सिखा और वे आनंदित हो गए| वे दोनों अपने सिरों पर हुआ पर्वत जैसी टोपिया पहन कर निकले अपने भेदों को दिखाने के लिए|(उस समय अलग अलग मत के विद्वान् आग अलग टोपी पहनते थे अपने भेदों को दिखने के लिए लेकिन ये दोनों एक जैसे टोपी पहन कर निकले यह दिखाने के लिए की वे अब एक है)

जब वस्तुओ के साथ सरोकार होते है वे उन्हें स्वीकार करना और क्षमा करना जानते है| उन्होंने इस सिद्धांत को सभमे बांटा है की 'यह ह्रदय चिरस्थायी है' और यह बताया है की इसी प्रकार से यह प्राकृतिक रूप से व्यवहार करता है| यह अनुभव होन की जो भी तुम सुनते हो वह आनंद प्रदान करता है और उस अनुभव को सभ के साथ बांटना जो भी इस संसार में तुम्हारे सामने आये तब लोग इन विचारो को इस भूमि के नियमो की तरह स्वीकार करेगे| लोगो को यह दिखाने में सक्ष्म होकर की जब उन्हें नीचा दिखाया जाता है तब वे अपमानित नहीं होते है तो तब वह उन्हें आपस में लड़ाई करने से रोकता है| और इस तरह से लोगो को लड़ाई से दूर रखकर अपने से ही सीमित करकर वह आने वाली पीढियों को युद्ध संघर्ष से बचाता है| उन्होंने इन विचारो को इस संसार में घूमते घूमते ग्रहण किया है, जो उच्च पदों पर है उनसे बात करके और जो साधारण मनुष्य है उनको सिखाकर| यद्यपि उनके शब्दों को इस संसार में कोई प्रशंसा नहीं मिलती है, वे ज्यादा हो हल्ला मचाते है लेकिन कभी अपने लक्ष्य को नहीं छोड़ते है| इसीलिए तो उनके बारे में यह कहा गया है :'जो उच्च तथा निम्न होते है वे उनके होने से थक चुके होते है लेकिन फिर भी वे उन्हें देखना चाहते है|'

यद्यपि वे दुसरो के लिए बहुत सारी चीजों को करने का प्रयत्न करते रहते है लेकिन फिर भी अपने लिए बहुत कम करते है| वे कहते है:'हम केवल चावल के पांच दाने स्वीकार करके भी खुश है, यह बिलकुल पर्याप्त है|' उनके आचार्यो की तृष्णा इस प्रकार कभी पूर्ण नहीं होती और शिष्य हर समय भूखे ही रहते है लेकिन फिर भी वे इस संसार की सहायता करने की अपनी महत्वंक्षा को नहीं छोड़ते है, दिन और रात बिना विश्राम किये लगे रहते है यह कहते हुए :'हमे निरंतर दुसरो के जीवन को बचने में लगे रहना चाहिए!' कितनी तीव्र इन विद्वानों की आने वाली पीढियों को बचने की इच्छा है! वे कहते है :'एक सज्जन पुरुष न ही तो दुसरो की निंदा करता है और न ही स्वयं को बनावटी परिधानों में सजाता है और न ही पाखंड करता है|' उन्होंने पता लगाया है

की यदि कोई इस संसार को पर्याप्त लाभ नहीं पहुचता है तो उन्हें उसे मार्ग दिखाना चाहिए| उनके बाह्य कार्य सम्मिलित होते है लोगो की उतेजना और युद्ध पर विराम लगाने के और और उनके आंतरिक कार्य सम्मिलित होते है अपनी इच्छाओ और वासनाओ को शांत करने के| जब वे बड़े या छोटे विषयों के साथ सरोकर होते है, तब आम सिद्धांतो या फिर छोटी छोटी जानकारियों से उनका सारा अस्तित्व आदर्शो के चारो और ही घुमता है और इससे ज्यादा कुछ नहीं होता है|

तटस्थ होना बजाय इसके की किसी एक मत को माना जाए, आसानी से बदलाव कर लेना बजाय इसके की पुराणी चीजों पर ही अटका रहा जाए, स्वतंत्र होना बजाय इसके की औरो द्वारा स्थापित किये गए नियमो को ही सही माना जाए, वस्तुओ में आनंदित होना उनके दोनों पहलुओ को भी देखते हुए, निष्कर्षो पर पहुचने का प्रयत्न नही करना, षड्यंत्र नहीं बनाना और कपट नहीं करना, वस्तुओ के बीच पक्ष नहीं लेना - ये चीज़े आपको सभी वस्तुओ के साथ जुड़ने की योग्यता को दिखाती है| प्राचीन लोग सोचते थे की यह ताओ के साथ आगे बढ़ने का बिलकुल पूर्ण तरीका है|
पेंग-मेंग, तियन-पियन और शेन-दो ने इस साधना को सिखा और आनंदित हो गए| इन सभी का मुख्य भाव सभी दस हजार वस्तुओ को एक करने का था| वे कहते थे :"स्वर्ग सभी चीजों को ऊपर से ढकने में समर्थ है लेकिन वह उनको निचे से सहारा नहीं दे सकता है| पृथ्वी सभी वस्तुओ को निचे से सहारा देने में समर्थ है लेकिन वह उनकी ऊपर से रक्षा नहीं कर सकती है| ताओ सभी वस्तुओ को समाविष्ट करने में सक्षम है और वह किसी वस्तु का त्याग भी नहीं करती है |"
वे जानते थे की सभी वस्तुओ के पास कुछ होता है जिसे वह स्वीकार करती है और जिसे वह स्वीकार नहीं करती है| इसीलिए यह कहा गया है :'एक वस्तु को चुनने की जगह दूसरी का चुनाव करना, यह कुछ है जिसे अलग रख देना चाहिए| एक पंथ को दुसरे के स्थान पर चुनना तब कुछ न कुछ तो नदारंदाज़ होता ही है| लेकिन ताओ के साथ जुड़ कर आप सभी चीजों को समाविष्ट कर लेते है|'

इसीलिए शेन-दो ने किस भी वस्तु को समझने के अपने विचार को त्याग दिया और इसका प्रयत्न करना छोड़ दिया, उसने अपने बोद्ध्शक्ति को त्याग दिया और उसी के साथ बहने लगा जो कुछ भी हो रहा था| उसने बिना किसी हस्त्क्षेप के वस्तुओ को होने दिया और इसे ही ताओ का मूल सिद्धांत माना| उसने कहा:"जो लोग सोचते है की वे जानते है जिसे वे नहीं जानते है उनके पास बहुत ही सतही ज्ञान होता है और वे स्वयं को तथा दुसरो को जो उनके आस पास होते है क्षति ही पहुचाते है|' अपने शब्दों और कार्यो से विरल होकर उसने किसी भी अधिकार के पद को स्वीकार नहीं किया और वह उन पर हँसता था जिन्हें इस संसार द्वारा मूल्यवान समझा जाता था| अपने आप को सीमओं से स्वतंत्र करके, उसने किसी विशिष्ट आचरण को नहीं पकडे हुए था और उसने एक साधू को इस संसार द्वारा दिए जाने वाले अधिकारों को पूरी तरह से नकार दिय था| उसको नकारते हुए जो पहले ही सही मान लिया गया है वह सभी वस्तुओ को साथ चला और उनके साथ प्रवाहित हुआ| सभी विचारो का त्याग करते हुए की क्या है और क्या नहीं है उसके सम भाव ने उसे किसी भी प्रकार के विषयों में लिप्त होने से बचाया| एक आचार्य या गुरु को अपने आदर्श के तौर पर हुए बिना उसे कोई समझ नहीं थी की किस चीज़ को पहले होना चाहिए और किसे उसके बाद, वह किंचित ही देखता था की क्या प्राकृतिक है और क्या नहीं| वह प्रतिक्रिया देता था यदि उसे धकेला जाए और चलता था वैसे ही जब उसे खिंचा जाए| वह प्रतीत होता था जैसे पवन किसी भी दिशा में बहने लगती है, जैसे की एक पंख हवा में उड़ता है, जैसे की एक पत्थर घूमता है - पूर्ण रूप से अनुरूप लय में होकर बिना किसी प्रतिरोध के| वह कभी भी दोष युक्त नहीं होता था चाहे वह गति में हो या फिर स्थिर हो| यह कैसे हो सकता था? क्योंकि बिना किसी चीज़ के लिए किसी ज्ञान के हुए, बिना अपने लिए नियमो को स्थापित किये और बिना सभी वस्तुओ को जोड़ने के लिए ज्ञान का उपयोग किये, तब चाहे वह गति में हो या फिर स्थिर वह प्रकृति के सिद्धांतो से भिन्न नहीं था| इस प्रकार से वे अपने सम्पूर्ण जीवन को बिना किसी चीज़ में सम्मिलित हुए बिता सकते है|

इस प्रकार शेन-दो ने कहा :
"अगर मैं किंचित मात्र भी वह हूँ जिसे कुछ ज्ञान है तब मेरे लिए साधूत्व का कोई अर्थ नहीं है| एक भूमि का टुकड़ा भी कभी ताओ को नहीं खोता है|"
शक्तिशाली और प्रतिभावान विद्वान् उस पर हंसने लग गए यह कहते हुए :
"शेन-दो की यह ताओ किसी भी जीवित व्यक्ति के आचरण के बिलकुल विपरीत है लेकिन जरूर ही यह किसी मृत के आचरण से ज्यादा मेल खाती है |

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है की उसे असमान्य समझा गया|

तियन-पियन भी इसी मार्ग पर था| उसने पेंग-मेंग से शिक्षा ली लेकिन उसने सिखा की वास्तव में वह कोई शिक्षा नहीं थी| पेंग-मेंग का आचर्य ने कहा होगा:'प्राचीन समय के लोगो की ताओ उस क्रम तक पहुची जहाँ न तो कोई सही था और न ही कोई गलत था और उन्होंने इससे आगे जाने की कोई आवश्यकता नहीं समझी|' वे (तियन-पियन और पेंग-मेंग) ऐसे थे जैसे 'हां' (हाँ आत्मा) स्वतंत्र रूप से गुफाओ वाले स्थान में विचरण करती है| इससे ज्यादा वे और क्या कहे जा सकते है? लोग हमेशा प्रतिवादी दृष्टिकोण से आते है चूँकि वे एक मत को दुसरे की जगह स्थान देते है इसलिए वे अपने खुद के सिद्धांतो को उत्पन्न होने से रोक नहीं सकते है और इस प्रकार वे एक अकेली गोते खा रही मछली की तरह होते है| किसी भी चीज़ को जिसे वे ताओ होने का दावा करते है उसे ताओ नहीं है की तरह नकार दिया जाता है और चूँकि वे नहीं कह सकते की वे सही है इस प्रकार वे उनके गलत होने की सम्भावना को भी नहीं नकार सकते है| तियन-पियन, पेंग-मेंग और शान-दो के पास ताओ का ज्ञान था लेकिन इसके होते हुए भी जो उनके सिद्धांतो के बारे में सुनते है वे उसे चावल के दानो की तरह अपना लेते है|

अपने मूल को पूर्ण मानना और जो चीज़े इससे उत्पन होती है उन्हें अपरिष्कृत समझना, संचय को आभाव मानना, और अपनी आत्मा में निवास करने के सिवाय किसी भी चीज़ से पृथक नहीं होना| प्राचीन लोग समझते थे यह बिलकुल पूर्ण मार्ग है ताओ के साथ आगे बढ़ने का|

गुआन-यिन और लाओ-दान ने इस साधना को सिखा और आनंदित हो गए| उन्होंने अपने इस सिद्धांत को स्थापित किया की यहाँ अस्तित्व में एक निरंतर निस्सारता (शुन्यता) है, उन्होंने अपने आदर्श की महान एकता को माना तथा लचीलेपन, झुकाव, विनम्रता, अयोग्यता को प्रारूप की तरह उपयोग किया और उन्होंने शुन्यता की एक बोध को बनाये रखा जिससे की उन्होंने किसी भी चीज़ की वास्तविक प्राकृतिकता को क्षति नहीं पहुचाई|
गुआन-यिन ने कहा :
"अपने अंदर लिप्त नहीं होकर, हर वस्तु स्वयं को प्रकट करती ही| जब गति में हो तो जल की तरह हो और जब स्थिर हो तब एक दर्पण की तरह हो और जब प्रतिक्रिया दो तो ऐसे की जैसे प्राकृतिक ध्वनीया हमारे चारो तरफ से निकलती है| बिना किस चिन्ह के होओ जैसे की वो समाप्त हो गए है| एक मर्तबान के जल की भांति स्थिर और शांत रहो| वह जो सारुप्य होता है वह माधुर्य का अनुभव करता है| वह जो हासिल करना चाहता है वह असफलता का अनुभव करता है| कभी भी आगे मत रहो लेकिन पीछा करो|"

लाओ-दान ने कहा :
"उन तरीको को जानो जब तुम आक्रमकता को अपनाते हो लेकिन अपनी निष्क्रियता का रक्षण करो| इस संसार में एक वाहक नली की तरह हो जाओ| उन तरीको को जानो जब तुम सम्मान पाते हो लेकिन अपने अपमान का भी रक्षण करो| इस संसार के लिए एक गति की तरह हो जाओ|

हर कोई इसके आलावा अगुवाई करना चाहता है लेकिन वह अकेला पीछे रहता है यह कहते हुए की वह इस संसार के मेल को स्वीकार करेगा| हर कोई उसके आलावा यथार्थ को जानना चाहता है लेकिन वह अकेला निस्सारता में तत्पर रहता है बिना अपनी आंतरिक को विचलित किये| इस तरीके से उसके पास पर्याप्त से भी अधिक होता है हर वस्तु के लिए और वह इस अधिक होने में भी सुरक्षित होता है| उसके शरीर की गति और चाल धीमी और शिथिल होती है, वह अपनी बहुतायत उर्जा को विस्तृत नहीं करता चूँकि वह बिना किन्ही विशिष्ट लक्ष्यों के होता है इस प्रकार वह चतुर होने के विचार पर भी हँसता है| उसके आलावा हर कोई अपने भाग्य को जानने में लगा हुआ होता है लेकिन वह अकेला इस प्रकार लचीला होकर पूर्ण रह पाता है यह कहते हुए की हर क्षण में जो होता है उसे स्वाभाविक प्रतिक्रिया देना आपको किसी भी चीज़ के लिए दोषी होने से बचाता है| वह वस्तुओ के मूल तक बहुत गहरे से पुहूँचा हुआ होता है और स्वयं को अनुशासन से नियांत्रित किया हुआ होता है यह कहते हुए की जो कठोर है उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए जाते है और जो नुकीला है उसे चोटिल किया जा सकता है| वह वस्तुए के प्रति सहनशील होत्ता है और लोगो के लिए जोड़ तोड़ का कार्य नहीं करता| यह कहा जा सकता है की वह चरम पर पंहुचा हुआ होता है| गुआन-यिन और लाओ-दान ने जो भूतकाल में थे उनमे इसे प्राप्त किया और वे मनुष्यों में सबसे विशुद्ध थे!

असीम और अव्यक्त होना बिना किसी रूप के जबकि बदलते हुए और प्रवर्तित होते हुए बिना किसी स्थिरता के, जन्म और मृत्यु से उतनी ही आसानी से जुड़ना, स्वर्ग और पृथ्वी से उसी समानता से जुड़े हुए होना, आत्मा और बुद्धि के साथ भी वैसे ही चलते जाने में जुड़े हुए होना और मनहीन होकर भूल जाना की वस्तुए ऐसे क्यों है जिस तरह से वे है और न ही किसी मंजिल का बोध

होना ज इस अनुभव के होते की सभी वस्तुए बिना किसी चेष्टा के एक दुसरे के साथ जुडी हुई है| प्राचीन लोग सोचते थे की यह बिलकुल पूर्ण मार्ग है ताओ के साथ आगे बढ़ने का|

ज्हुंग-ज्होऊ (ज्हुंग्ज़ी) ने इस साधना को जाना और आनंदित हो गया| अपनी अतिरंजना से गढ़ी हुई कहानियो के साथ, अपने हास्यापद और सार्थक शब्दों के साथ और अपने असमान और अव्यवस्थित वाक्यांशों के साथ उसने निरंतर स्वतंत्र होकर बोलना जारी रखा बिना कोई पक्ष लेने की चाहत के तब भी उसने कभी किसी चीज़ के बारे में अपरम्परागत विचारो को नहीं कहा| चूँकि वह सोचता था की यह संसार मिटटी के कीचड़ में इतना फंसा हुआ है की वे गंभीर भाषा और इसके शब्दों को समझने में योग्य नहीं है उसने उन शब्दों का उपयोग किया जो बड़ी सुन्दरता से निरर्थक थे, बार बार वही दोहरा रहे थे जो यथार्थ को प्रकट करता था और उसकी कथाए वे होती थी जिनके साथ ज्यादातर लोग स्वयं को जोड़ कर देखते थे| उसने केवल स्वर्ग और धरती को पवित्र आत्माओ की तरह माना था जो हमारे अन्दर और बाहर विचरण करती है लेकिन उसने कभी भी किसी भी जीवित वस्तुओ के ऐसे व्यवहार नहीं किया जैसे की वो एक असक्ष्म नवजात शिशु है तथा चलने में समर्थ नहीं है और न ही उसने कभी भी किसी को ही सही या गलत होने के लिए दोषी ठहराया| इस प्रकार उसने आने वाली पीढियों के लिए विस्तार करने के लिए स्थान छोड़ दिया| उसके लेख यद्यपि दुर्लभ और बेशकीमती होते थे और निरंतर ही किसी चीज़ को दंड देते हुए प्रतीत हो रहे थे लेकिन वास्तविक रूप में किसी भी चीज़ को कोई हानि नहीं कर रहे थे| उसके वाक्यांश यद्यपि असमान और अव्यवस्थित थे और अच्छे सुझाव देते हुए प्रतीत होते थे तथा उनका कई दृष्टिकोणों से अवलोकन किया जा सकता था| इस प्रकार जो उसने कहा वह पूर्ण रूप से उसके ही लेखो के रूप में सिद्ध माना जा सकता है तथा वह भी जो पहले कभी दुसरो द्वारा नहीं कह गया है|

ऊपर वह घूमता है बिना किसी रचना के और निचे मित्र बनाता है उसे जो जीवन और मृत्यु के क्षेत्र से बाहर है और जो बिना किसी अंत या शुरुआत के है| इस सभ के स्त्रोत के सन्दर्भ में वह इसके मूल की गहराई तक जाता है और बेरोक होकर इस विशाल अथाह शुन्यता में विचरण करता है| पूर्वजो के संदर्भ में यह कहा जा सकता है की उसने समायोजन किया उसका जिसे वे पूर्ण मानते थे और उसके भी परे गया जहाँ वे संतुष्ट हो गए थे| इसके आलावा उसने बड़ी सहजता से बदलावों और परिवर्तनों को प्रतिक्रिया दी और बड़े आराम से स्वयं को वस्तुओ से पृथक कर लिया| जो विचार उसने व्यक्त किये वे बिलकुल ही अक्षय थे और जो उसने यहाँ प्रदान किया है उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है| उसके बोध की गहराई तक पहुचना किसी के लिए भी बहुत मुश्किल हो सकता है लेकिन कोई भी कभी प्रयत्न करना नहीं छोड़ेगा|

हुई-सही के वस्तुओ को देखने के बहुत सारे दृष्टिकोण थे और उसके लेख पांच रथो को भी पूर्ण करने वाले थे उसका मार्ग विरोद्ध व् प्रतिवाद करने वाला था और उसके शब्द लोगो को उनसे पदों से हटाने वाले अर्थ से के प्रतीत होते थे| वह दुसरो के सिद्धांतो का विस्तार (अपने मतों को जोड़कर) करने का प्रयत्न करता था इन चीजों को कह कर:
"वह जो वस्तुओ में सबसे बड़ा है वह इतना विशाल है की उसके बाहर कुछ नहीं हो सकता है| वह जो वस्तुओ में सबसे छोटा है वह इतना छोटा ही की उसके अंदर कुछ भी समाहित नहीं हो सकता है|
"वह जो बिना किसी गहराई के है, वस्तुओ का संचय नहीं कर सकता है यद्यपि यह हजारो मिल विशाल है|
"स्वर्ग इतना निचे है जितना की पृथ्वी है और ऊँचे पर्वत जल मग्न भूमि जैसे एक समान है|
"जब सूर्य अपने शीर्ष बिंदु पर पहुचता है तब वह ढलना शुरू हो जाता है और जब वस्तुए जन्म लेती है तो उनकी मृत्यु होना शुरू हो जाता है|
"एक बड़े पैमाने पर सभी वस्तुए एक समान है लेकिन छोटे पैमाने पर वे पृथक है इस प्रकार जब उन्हें छोटे पैमाने पर देखा जाता है तो उनमे भिन्नताए होती है| यदि सभी वस्तुए निरंतर समानता और विषमताओ की उत्पत्ति करे तब बड़े पैमाने से भी देखने पर वस्युए फलतः बिलकुल भिन्न ही हो जाती है|
"पृथ्वी की दक्षिण दिशा में निरंतर जाने पर फलतः कोई इस पृथ्वी के अंतिम छोर पर पहुच जाता है| लेकिन वास्तव में इस पृथ्वी का कोई अंत नहीं है| इस प्रकार कोई युए (एक शहर) के लिए आज निकलता है और कल वहा पहुच जाता है (एक कहावत)|
"हर एक सकिन्द्रिक वृत्त का एक प्रारम्भिक बिंदु होता है और एक अंतिम बिंदु होता है|
"हम जानते है की इस संसार का एक केंद्र बिंदु है जैसे की एक पक्षी जो उत्तर से उड़ना प्रारंभ होता है फलतः वह दक्षिण में पहुच जाता है|
"चूँकि सभी वस्तुओ एक सार्वलौकिक प्रेम के ही चारो और घुमती है, और यह स्वर्ग और पृथ्वी एक ही तत्व से बनी हुई है|

"हुई-सही ने सोचा की ये कथन महान है और जब बाकी संसार ने इस चीज पर ध्यान दिया तो इसने असहमतियो का एक पूरा क्षेत्र ही उत्पन्न कर दिया| वे जो वाद विवादों में आनंद पाते है वे इनमे अपने भी कुछ जोड़ देते है (जैसे):
एक अंडे के बाल होते है|
मुर्गे की तीन टाँगे होती है|
यह पूरा संसार यिंग शहर में समाहित हो सकता है|
एक कुत्ते को एक भेड समझा जा सकता है|
घोड़े अंडे देते है|
मेंडक की पूंछ होती है|
अग्नि गर्म नहीं होती है|
पर्वतो की उत्पत्ति छेद में से होती है|
पहिया ज़मीन पर घुमता नहीं है|
आँखे देखती नहीं है|
उंगलिया छु नहीं सकती|
जिसे छूया जा सकता है उसे छोड़ा नहीं जा सकता|
एक कछुआ एक सांप जितना लम्बा होता है|
एक वर्ग में कोई कोण नहीं होता|
एक प्रकार का उपयोग वृत बनाने के लिए नहीं किया जाता है|
एक छिनी, लकड़ी में छेड़ नहीं कर सकती|
एक कमान से निकला तीर एक ही समय पर गति में हो सकता है और स्थिर हो सकता है|
सभी कुत्ते, कुत्ते नहीं होते है|
एक पीले घोड़े और काले बैल को मिलकर तीन बनते है|
एक अनाथ बछड़े की कभी कोई माँ नहीं थी|
एक छड़ी जो की एक फुट माप को मापती है उसे रोज एक हज़ार साल तक आधे आधे हिस्सों में तोडा जा सकता है और फिर भी उसमे से कुछ बच जाएगा|

समय समय के ये वाद विवाद हुई-सही के साथ अपने सम्पूर्ण जीवन बिना थके हुए चर्चा में सम्मिलित हो सकते है| हुआन-तुआन और गोंग-सु इस तरह के ही तर्क बहस करने वाले थे| वे लोगो के मन को चकाचोंध कर देते थे और उनके बाह्य रूप को भी बदल देते थे, यद्यपि अपनी चतुराई के कारण वे लोगो को किसी भी तर्क में मात देने में सक्ष्म थे लेकिन फिर भी वे कभी भी लोगो के ह्रदय तक नहीं पहुच सकते थे| यही सीमा होती है उस प्रकार के वाद वाद करने वालो की|
हुई-सही पूरा दिन वाद विवाद कर सकता था बिना अपनी चतुराई का उपयोग किये और वह अपनी विशिष्ट योग्यताओ का उपयोग इस संसार की सबसे अनोखी वस्तु के लिए भी वाद विवाद करने में कर सकता था| यह इतना ही गहन था, जहाँ तक वह जाता था| फिर भी वह बोलना जारी रख सकता था और स्वयं को अपनी इस योग्यता के कारण बहुत ही मूल्यवान व्यक्ति समझता था और कहता था की वह स्वर्ग और धरती जितना अद्‌भुत है! 'सही' बिलकुल आक्रमकता से ही स्पष्टवादी था लेकिन वह बिना किसी वास्तविक कौशल के था|

दक्षिण में वहा निचे की और एक सनकी व्यक्ति रहता था जिसका नाम हुंग-लियाओ था, वह पूछता था की यह स्वर्ग निचे क्यों नहीं गिरता, यह पृथ्वी टकराती क्यों नहीं है तथा हवा, वर्षा, तूफान के होने का क्या कारण है| हुई-सही इस चुनौती की प्रतिक्रिया देने से भी पीछे नहीं हटा| वह एक क्षण भी इनका उत्तर देने के लिए नहीं झिझका| वह दस हज़ार वस्तुओ के बारे में भाषण देता ही चला गया और वह लगातार चलता ही रहा बिना रुके| यद्यपि उसने बहुत सारे विषयों को पूरी तह से सम्मिलित कर लिया था लेकिन उसने सोचा की वह कुछ को अब भी छोड़ रहा है इसलिए वह उन चीजों के बारे में भी कहने लगा जिन्हें अब तक जाना भी नहीं गया है| उसने और लोग (दुसरे लोग) जिन वस्तुओ को मानते थे उनका प्रतिवाद किया ताकि वह स्वयं के लिए यश पा सके, और तब फिर भी वहा लोगो का एक समूह भी नहीं था जो उसे रोषकारी नहीं मानता था| उसका सामर्थ्य दुर्बल था और वह इतना आडम्बरी था की जो भी कुछ उसके मुख से आता था वह धुंधला और समझने में मुश्किल था| यदि हम हुई-सही की योग्यताओ को स्वर्ग और पृथ्वी के पथ के दृष्टिकोण से देखे तो उनकी तुलना एक मच्छर या मक्खी के श्रम से भी की जा सकती है| कैसे उनके उपयोग की कोई भी सम्भावना हो सकती है!

वह बिलकुल ही पूर्ण था जिस क्षेत्र में उसकी प्रशंसा की जाती थी लेकिन यह कहा जा सका है की यदि उसने ताओ पर और ध्यान दिया होता तो वह और आगे तक गया हुआ होता| हुई-सही स्वयं से तथा जो वह कर रहा था उससे संतुष्ट नहीं था इसलिए उसने लगातार हर वस्तु को पृथक करने का प्रयत्न किया और आखिर में फलस्वरूप एक अच्छे वाद विवाद करने वाले व्यक्ति के तौर पर ही जाना गया| कितना लाचार था वह! हुई सही ने अपना ज्यादातर समय अपने कौशल को दिखाने में बिताया जैसे की एक प्रदर्शन में लगा हुआ घोडा होता है जो कही नहीं जा पाता है केवल गोलधारे में ही घूमता है| वह केवल चक्र में घूमता रहा हर वस्तु का प्रतिवाद करता हुआ| उसने उर्जायुक्त होकर अपनी की प्रतिध्वनी को चिल्लाने का प्रयत्न किया और अपनी ही परछाई से तेज भागा| कितना उदासीनय है यह!

(३९१९१११३२०७४१०७१५०३७०१४०१९०३)